करवट

मूल्य : साठ रुपये (60.00)

संस्करण : 1987 © अमृतलाल नागर
राजपाल एण्ड सन्ज़, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 द्वारा प्रकाशित
KARWAT (Novel) by Amritlal Nagar

करवट

अमृतलाल नागर

स्कूल से अधिक पुस्तकालयों के सहपाठी,

मेरे प्रारंभिक लेखन-काल से आज तक के अभिन्न साथी

ज्ञानचन्द जैन

को

अपनी मैत्री के साठ वर्ष पूरे होने पर

8.7.1985

सप्रेम,

अमृत

निवेदनम्

समय का परिवर्तन इतिहास की पूंजी है। गदर के बाद अंग्रेजी शासन और शिक्षा के प्रभाव से हमारे समाज में एक नई मानसिकता का उदय हुआ था। संघर्ष की प्रक्रियाओं में पुरानी जातीय पंचायतों को नए जातीय 'असोसिएशनों' ने करारे धक्के ही नहीं दिए वरन् कालान्तर में उन्हें ध्वस्त ही कर डाला। इन जातीय संघर्षों से ही नई राष्ट्रीयता ने जन्म पाया था।

यह इतिहास ही इस उपन्यास में काल्पनिक पात्र-पात्रियों के द्वारा अंकित हुआ है। मेरा कथानायक खत्री जाति का है किंतु मैंने यह आवश्यक नहीं समझा कि उसके जीवन में आई हुई सभी घटनाएं भी केवल उसी जाति में घटित हुई हों। उदाहरण के तौर पर, मुकदमेबाजी की घटना किसी और बिरादरी में हुई थी; एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की इज्जत धूल में मिलाने के लिए उनकी सुशील और विवाहिता कन्या को दुष्टों के द्वारा उड़वा देने का काम किसी दूसरे नगर में हुआ था।

इस प्रकार इतिहास को कल्पना से जोड़ते हुए मैंने कई उचित परिवर्तन किए हैं। उपन्यास भानमती का कुनबा होता है—कही की ईंट, कही का रोड़ा। एक अंग्रेजी कहावत के अनुसार 'इतिहास में तारीखों के अलावा और सब कुछ गलत होता है और उपन्यास में तारीखों के अलावा और सब सच।' पाठक कृपया इसी दृष्टि से इसे देखें।

कथा क्षेत्र के रूप में इस बार भी मैंने अपने चौक क्षेत्र को ही उठाया है, महल्लों के नाम सही लिखे हैं किंतु उनके जुगराफिए में फेरबदल कर दिए हैं।

पुस्तक लिखने से पूर्व कई पुस्तकों का अध्ययन किया। कालाकांकर के पद्मश्री कुंवर सुरेश सिंह जी ने कई अलभ्य पुस्तकों का दान दिया। खत्री जाति से संबंधित सामग्री कानपुर के श्री विश्वेश्वरनाथ मेहरोत्रा से मिली। कलकत्ते की पुरानी खत्री बिरादरी और सेंसस रिपोर्ट पर बर्दवान के राजा बनविहारी कपूर द्वारा चलाए गए आंदोलन की घटनाएं पंडित विष्णुकांत शास्त्री से ज्ञात हुईं। प्रिय श्री लालजी टंडन तथा ज्ञानचंद जैन के सहयोग के लिए यदि धन्यवाद दूं तो वे बुरा मान जाएंगे।

—अमृतलाल नागर

1
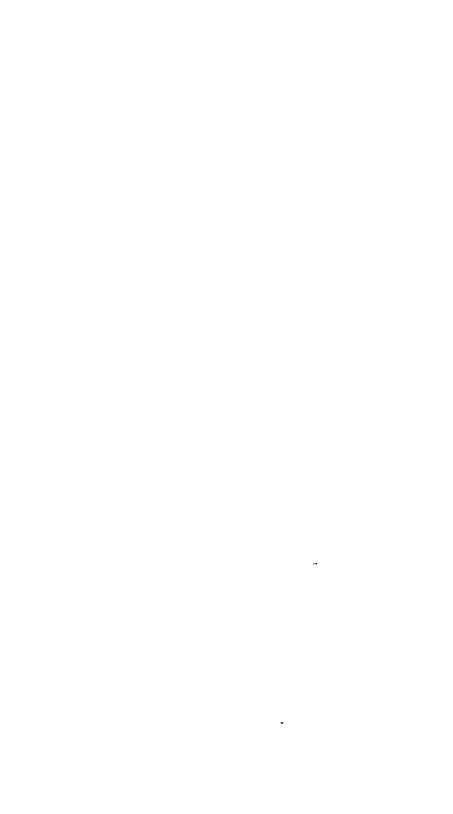
लक्खी सराय की रसूलबांदी दो घड़ी दिन चढ़े ही घर से निकल गयी थी। हैदरीखां जब घर से आए तो अज्जो ने बतलाया कि कल रात शाही महलों से उसके लिए बुलावा आया था।

हैदरीखां घबरा कर झल्ला उठे : "तो आज ही के दिन सगुन शायत निकली थी कैसरबाग जाने के लिए ? काले कोसों की दौड़। बैठे ठाले फिकर लग गयी साली। गई किसके साथ है ?"

"मडियांव छावनी का हरकारा कल रात आया था ना ? उसी की सांडनी पर गयी हैगी।"

हैदरीखां की मर्दानगी ताव खा गयी। हाथ बेसाख्ता तमंचे पर जा पड़ा, आंखें निकाल के पूछा : "जवान था ?"

अपने कत्थे-रंगे दांत झलकाती आंखें नचाते हुए अज्जो बोली : "गबरू।" फिर चटखारा लिया जैसे उस गबरू का सवाद आ गया हो।

"चिढ़ा मत हरामजादी, वरना बोटी-बोटी तराश दूंगा।"

"ऐ मैं क्यों चिढ़ाऊंगी मियां। जो पूछा सो बतला दिया। तलैया में ईंटें फेंकिएगा तो छींटे पड़ेंगी ही।" कहकर दालान में खड़ी खाट को पीठ पर लादकर गोदाम की ओर चल दी। हैदरीखां भी झल्लाते बड़बड़ाते अस्तबल की ओर चले गये।

लक्खी सराय और हैदरीखां का अस्तबल बड़ी मशहूर जगहें हैं। रिचर्डसन गोमती पार का बड़ा निलहा साहब था। रसूलबांदी की मां उसकी रैयत थी। रिचर्डसन ने पचास रुपयों में रसूलबांदी को खरीद लिया था। उम्र में पन्द्रह-बीस बरस बड़ा था मगर रसूलन को खूब ऐश कराये। रिचर्डसन को भद्दे मजाक बेहद पसन्द थे। वह अलिफलैला के बगदादी शाहज़ादे की तरह ऐश करना चाहता था। तीस-पैंतीस बरस की एक भठियारिन भी घर में डाल रक्खी थी। सराय बनवाने के लिए साहब को पटाया तो था भठियारिन ने मगर जीत रसूलबांदी की ही हुई। रोमन खम्भों के बरामदे और विलायती झिलमिलियादार दरवाजे थे। इमारत दूर से ही शानदार नजर आती थी। रुपये रोज से अशर्फी रोज तक के कमरे थे यानी कि मालदारों की सराय थी। फारसी हम्माम, खूबरू-हूरो गिल्मान, शाही महलों से टक्कर लेने वाले बावर्ची, मालिश करने वाले, किस्सागो, चौसर, शतरंज और मुसाहिबी के माहिर लोग वहां मौजूद रहते थे। निलहे

साहब ने विलायती दिमाग से हिन्दुस्तानी सराय को बनवाया था। सण्डीला, हरदोई, जौनपुर तक के रईसों को अपनी खिदमत और इन्तजाम से खुश किया। रिचर्डसन पांच बरस पहले सब बेचबाच के विलायत चले गए। रसूलबांदी के नाम लक्खी सराय लिख दी थी। उनके अस्तबल के दरोगा हैदरीखां ने जाते समय उनके घोड़े खरीद लिए थे। कीमती घोड़े-घोड़ियों से लेकर टट्टू-टट्टूओं तक को किराये पर चलाते थे। शिकरम की दो कम्पनियों से भी [illegible]
रुपये रोज की आमदनी [illegible]
घर मे घरवाली तो है [illegible]
के मुंह में ही अपनी ल[illegible]
यह होते हुए ऐसे मौके भी आये हैं जब रसूलन हैदरीखां के सामने पत्ते की तरह कांपती और गिड़गिड़ाती देखी गयी है।

आज भी वैसा ही दिन है। हैदरीखां सबेरे-ही-सबेरे अपनी गली में जलेबी वाले की दुकान पर यह सुन आये थे कि वज़ीरेआला नवाब अमीनुद्दौला जब आम दिनों की तरह सबेरे अपनी बग्घी पर बादशाह को सलाम करने चले तो रास्ते में फ़ज़लअली वगैरह कुल चार बांकों ने बीच सड़क पर उनकी बग्घी रोक ली। घोड़े खोलकर भगा दिए। खिदमतगार को गोली मार दी। दो आदमी भीड़ की तरफ़ बन्दूकें तानकर खड़े हो गए और दो वज़ीरेआला की छाती पर कटार रख के बैठ गए। कहा कि पच्चीस हजार रुपये लाओ और कानपुर गंगा पार इंगलिशों की रियासत में महफ़ूज पहुंचाने का करार करो तो तुम्हारी जां-बख्शी करें। शर्त यह भी है कि या तो खुद बादशाह जामिन हों या कम्पनी बहादुर के साहबे आलीशान, जनाब रेजीडेंट बहादुर। पता नहीं कहां क्या हुआ, क्या न हुआ हो और ऐसे मे रसूलबांदी शाही महलों में गयी है। सूरत के कड़ियल दिखाई पड़ने पर भी हैदरीखां के होश फाख्ता हो रहे थे।

नवाबी लखनऊ, कैसरबाग की तरफ बहुत ही रौनकभरा और शानदार था। हजरतगंज से चीनी बाजार और चौलक्खी तक सब एक। सआदतअली खां के फाटक के बाहर बाजार था जिसमे तरह-तरह की दूकानें थी। महल के दूसरे फाटक के दरवाजे के सामने एक बड़े अहाते में तरह-तरह के बाजे वालो की एक छोटी-सी फौज रहा करती [illegible]

आज वजीरेआला अमीनुद्दौला बहादुर की तोंद पर रखी हुई कटार पर ही नजरें गड़ाये हुए है कि देखें कब वह गोल तरबूज-सी तोंद चाक होती है। बांके, तिरछे रिसाले और अख्तरी, नादिरी पल्टनें इस सारे हादसे पर निकम्मी और खामोश हैं। नए लखनऊ का वह तमाम इलाका अफवाहों और भय की सनसनाहटों से भरा हुआ है। मगर शाही महलों की चहल-पहल और रौनक पर उसका कोई भी असर नहीं।

शाही महलों में रसूलबांदी की सगी फुफेरी बहन हसीना—हस्सो—इस समय जाने आलम नवाब वाजिदअली शाह साहब की दिलचोर नवाब चुलबुली बेगम बनी हुई हैं। रसूलन ही उसे गांव से लायी और तालीम दिलवायी थी। हस्सो होशियार और हाजिरजवाब थी और गला इतना सुरीला पाया था कि सुनकर हुस्न व इश्क की नाव के खेवैया जानेआलम पिया अपना दिल गंवा बैठे। मुताह की रस्म अदायगी हो गयी, हस्सो को बेगम बना लिया। रसूलबांदी की किस्मत के सितारे सातवें फलक पर चमक उठे। महलों में किसी भी समय आने-जाने के लिए परवाना मिला। गज भर की दूरी बनाये

रखने के बावजूद दरोगा बंदे अली का मेंहदी रंगा बुढ़ापा यही समझता रहा कि रसूलबांदी उन्हें इश्को हुस्न के मैदान का रुस्तम या सिकन्दर मानकर सौ जान से उन पर निछावर है। शराब पिला-पिला कर हजार बहानों से रसूलन ने उसे काठ का उल्लू बना रक्खा है। महलों में नौकर बांदियां आये दिन चोरिया करते हैं। वन्दे अली की बूढी गोद में बैठकर रसूलन उस ठगी में भी अपना हिस्सा वसूल करती है। हैदरीखां को रसूलन पर भरोसा तो है मगर बन्दे अली से खार खाते हैं। लेकिन बेबस हैं, अच्छे घोडे खरीदे तो जाते है शाही अस्तबल के वास्ते और पहुंच जाते हैं अस्तबल हैदरीखां मे। घोडों की खरीद पर खजाने से जो रकम मिली उसे खजांची से लेकर दरोगा अस्तबल माशूक हुसेन तक खा गए। दरोगा बन्दे अली की दल्लाली भी पक्की हुई। रसूलबांदी ने अपने उल्लू और अकलमन्द दोनों ही आशिकों को फायदा करवा रक्खा था। हस्सो के दरोगा के जरिये नवाब खास महल के दीवान गुलशनराय से दोस्ती पटा रहा है। बादशाह के एक ससुर मछरेहटा के नवाब अलीनकीखां का भरोसेमन्द और खैरख्वाह गोयन्दा बनने की फिराक में भी है। रसूलबांदी के बहाने से ही हैदरीखां भी इस समय ऊंचे-ऊंचे मे अपने दांव पेंच खेल रहा है। कहानी के काले देव की जान जैसे जादुई गुफा में सोने के पिंजरे में रखे तोते में होती है, वैसे ही हैदरीखां की जान रसूलन में है। दगे के दिन, उचक्कों का राज, क्या हो क्या न हो, इसीलिए पठान आशिक का दिल माशूक के लिए मुर्गी के चूजे सा फड़-फड़ा रहा था। बारे, खुदा-खुदा करके चार सवारों के साथ शाही झूल से सजी हथनी पर बेगम की तरह बी रसूलबांदी साहबा की पर्देदार अंबारी आती हुई दिखलाई दी। हैदरीखां के चेहरे पर फिर से रौनक लौटी। हथिनी अपनी सराय पर न उतरवा कर मेरे फाटक पर लायी है। पर्दे से उतर कर रसूलनबांदी हैदरीखां के दालान में तख्त के पीछे हुक्के की कोठरी में घुस गयी गोया दिखला रही हो कि जनानखाने में गयी है। सिपाहियो को पानी पिलाने और इनाम बख्शिश मिलने के बाद विदा होने में पाव घड़ी के लगभग लग गयी। बी रसूलन के लिए उस कोठरी मे सांस लेना भारी पड गया। कौड़े में कण्डे धुंआं रहे थे, महलो के माहौल में रोजमर्राह के जो शब्द अटक कर रह गए थे वह धुंये के बहाने झुंझलाकर भठियारिन के मुंह से फुटफुटाये। जब तक बाहर शाही सवार और महावत रहे तब तक दीवार के कोने में अपने बुर्क को चौपर्ता करके दबे मुंह से खांसती रही। जब गए तो हैदरीखां ने आवाज दी। रसूलन तोप के गोले-सी छूटकर बाहर आई और गुस्से में अपना रेशमी बुरका तख्त पर बैठे हुए हैदरीखां के मुंह पर खीच मारा। कहा : "खांसते-खांसते दम निकल गया मेरा, हां नहीं तो। कितनी बख्शिश ले गए निगोड़े ?"

"यह सब बेकार की बातें हैं, पहले यह बतलाओ कि शहर मे दंगे फसाद की क्या हालत है ?"

"दंगा फसाद ? किस भड़वे ने तुम्हारे भेजे में ये चना फोड़ दिया है ? सब अमन चैन है, रास्ते बाजार आम दिनों जैसे गुलजार हैंगे।"

"मगर वजीरेआला नवाब अमीनुद्दौला बहादुर ?"

"अरे वह तो महज एक सड़क की वारदात है। उसका कोई असर न शहर पर पड़ा और न बादशाह पर। हस्सो की एक खास बांदी खबर लायी थी, बादशाह ने फरमाया कि मैं क्यों जमानत लू, जिसकी शतरंज है वही खेले। रजीडन्ड बहादुर के कने जाओ। खबर देने वाले को डांटकर भगा दिया।"

"मरे नवाब अमीनुद्दौला बहादुर। अल्ला जाने क्या हुआ होगा। हां, तू अपनी बतला, हस्सो ने तुझको क्यो बुलाया था ?"

"वह भी बहुत घबरायी हुई है। शहर की हालत बहुत खराब है। रजीडन्ड

बहादुर का कोई खत बादशाह के पास पहुंचा है। उस खत की जबान इतनी सख्त है कि डर लगता है कि कल को सल्तनत कम्पनी की हो गयी तो इस इतने बड़े हरम का निभाव कैसे होगा।"

"हूं। तब फिर?"

"वह कहती है, रुपया कम्पनी सरकार में जमा करा दूंगी।"

"किसकी मार्फत?"

सराय के बरामदे में अज्जो फिर किसी कोठरी में घुसती दिखलायी दी। हैदरीखां के हाथ से हुक्के का नैचा लेकर अज्जो से कहा : "अरी अज्जो, मेरा पानदान ले आ लपक के और एक कटोरा पानी भी लाना, गला तर कर लूं।" कह के हुक्के की कश खींचने लगे। हैदरीखां को जवाब नहीं मिला था, इसलिए फिर कहा : "बतलाया नहीं तुमने?"

"आजकल नायब वजीर उसकी जवानी को नूर बख्शते हैं।"

"नायब वजीर से कहां मिलती है हुस्सो?"

"मैंने पूछा नहीं वैसे बन्दे अली···"

"एक बात तुझसे कहूं रसूलन।"

अज्जो पानी का कटोरा और पानदान ले आई। पानी पीकर कटोरे की बची बूंदें उछालीं। कटोरी अज्जो के हाथ में दी और दोनों टांगें फैलाकर पानदान बीच में रखकर हैदरीखां की तरफ देखते हुए पूछा : "क्या कहते हो?"

"हुस्सो से कह देना कि किसी भी खानदानी रईस को मुंह न लगाये। ये हरामजादे जो शरीफ कहलाते हैं, हम गरीबों को उठते हुए देख नहीं सकते। उनसे बढ़कर चोर बदकार और बेईमान कोई नहीं होता, समझी। नायब साहब कहते होंगे कि मालमता हमें सौंप दो, जौहरियों से दाम लगवा के बेच देंगे, रुपया कम्पनी में जमा···"

"तुम तो जैसे मन पढ़ लेते हो। यही कहा था उन्होंने।" रीझी नजरों से देखते हुए दो पान हैदरीखां की ओर बढा दिए। पान मुंह में रखकर हुक्का अपनी ओर घुमाते हुए हैदरीखां उसी संजीदगी के साथ बात करते रहे : "नवाबजादे भले ही हों पर हैं तो साले महरियों के जाए। मैं इन खानदानी लोगों की खस्लत पहचानता हूं।"

"चच्चा सलाम। सलाम चच्ची।"

"उमर हजारी हो बेटे। चांदको जी जाओगे।"

"जी हां, कल अमावस है न?"

"हां-हां, वो तो तुम्हारा हर महीने का नेम हैगा। और बतलाओ, अमीनुद्दौला बहादुर के हगामे की कोई खबर सुनी?"

"तस्फिया हो गया चच्चा।"

"हो गया! क्या हुआ, बादशाह सलामत ने जमानत ली या रजीडंट···"

"अजी न बादशाह न रेजीडेन्ट। उनके नायब आये थे सुना, नायब के घरवालों से पचास हजार दिलवाये और एक हाथी। गोरों के पहरे में कानपुर गए हैं फजलअली वगैरह।"

"हद हो गई बरखुरदार, अच्छे-अच्छे खानदानों के पढ़े लिखे लड़के और यह करतूतें?"

"फिर करें क्या चच्चा, आप ही बतलाइये। पढे लिखे बेचारे मारे-मारे फिर रहे हैं और सरकारी नौकरियां रिश्वतों और सिफारिशों पर नाकाबिलों को दी जा रही हैं। यह जो तमाम रंडी, भंडुवे और जालसाज एक शरीफ और भोले बादशाह को अपनी खुशामदी बोलियों का निशाना बनाकर महलों से लेकर दरबार सरकार तक में घेरे हुए

है, वे सबके सब कम्पनी की बिछाई बारूद पर अपने ख्वाबों के महल बना रहे हैं। एक दिन चिथड़े-चिथड़े होकर उड़ जायेंगे, उनका नाम निशान तक न बचेगा।"

बंसीधर उर्फ तनकुन की जोशीली बातों का हैदरीखां पर जादुई असर पड़ा। रसूलबांदी भी घुटने पर हाथ और हाथ पर ठोढ़ी टेके बहुत गौर से सुन रही थी। बात खत्म करते ही तनकुन ने तख्त से उठते हुए कहा : "और यह तो जिन्दगी है। आप लोग तो बफ़ज्ले खुदा आधी पार कर आए हैं मगर हमें तो अभी पूरी उम्र पापड़ बेलने हैं चच्चा। लाइये, हमारी घोड़ी कसवाइये। वही लाल घोड़ी दीजियेगा।"

"अरे गफ़ूरवे, ललकौनिया कस दे तनकुन भैया के वास्ते। चनों का तोबड़ा जरूर लटका देना भला।"

"अच्छा मियां।"

"और कह दीजिए कि जल्दी लाए। शाम ढलने से पहले जंगल पार कर जाना चाहता हूं।"

"हां-हां, ठीक है। गफ़ूरे, जल्दी करना बे। हां·· बैठो, बैठो, तनकुन भैया। (रसूलन से) ये लाला मुसद्दीमल बजाज के साहबजादे हैं। बारह बरस की उम्र में उर्दू, फारसी के आलिम फाजिल हो गए थे यह। आजकल गोरों की जबान सीख रहे हैं। इन्हें कोरा लड़का न समझ लेना। आलिमों के कान काटता है ये नौजवान। खुदा इसकी उम्र दराज करे। अल्लाहताला की रहमत का साया सदा तुम पर रहे बरखुरदार। एक बात बतलाओ कि नवाब अमीनुद्दौला साहब पर आज जो हादसा गुजरा है तो, क्या उनसे वजारत का कलमदान वापस ले लिया जायेगा?"

"वह तो, समझ लीजिए कि बुरी तकदीर के तवेले में बंध गए, अब देखना है यह कि (चारों तरफ देखकर, धीरे से) बादशाह का क्या होगा?"

"हाय अल्ला, तो भैया क्या जानेआलम को भी हटाया जा सकता है?" रसूलन ने आगे बढ़कर धीरे से पूछा।

"हो सकता है कम्पनी और रियासतों की तरह यहां भी अपनी हुकूमत कायम कर ले।"

"सुना रसूलन, हस्सो ठीक कहती थी। तनकुन भैया, एक बात बतलाओ, यहां के जौहरियों में किस पे भरोसा किया जा सकता है?"

"महताबराय तो शाही जौहरी ··"

"अरे वह तो हैं ही, कोई और बतलाओ। तुम्हारे मोहल्ले में भी एक हैंगे। क्या भला-सा नाम हैगा उनका!"

"लाला इन्दरचन्द रिखबदास। चच्चा, आपको माल खरीदना है या बेचना है?" घोड़ी आ गयी थी, तनकुन उठ खड़ा हुआ।

"अमा, हम पूछते हैं, उनका मिजाज कैसा है?" तनकुन हंसा, कमरबन्द में खुसा हुआ बटुआ निकाला और अधेला के पैसे गिनकर हैदरीखां के सामने रखे, कहा : "आप इत्मीनान रखिए चच्चा, यह ललकौनी अब मेरी भी दोस्त हो गयी है। बख्शी जी के ताल से इसके लिए घास बराबर खरीद लेता हूं।"

"मैं जानता हू, जानता हूं तभी तो इसे तुम्हारे सिवा किसी को हाथ नही लगाने देता। मेरे मंझले बेटे वसीम को भी इससे बहुत लगाव हैगा।"

तनकुन ने ललकौनी को थपथपाया और सवार हो गया।

हैदरीखां ने भी अपनी गद्दी से उचक के पूछा : "अमां तुमने हमारे सवाल का जवाब नहीं दिया?"

रुख न मिलाते हुए तनकुन ने कहा : "अगर कुछ बेचना हो तो इन चच्ची साहिबा को ले जाइयेगा और खरीदना हो तो आप जाइयेगा।" जवान कुंवारी ललकौनी जवान और ब्याहे मगर कुंआरे जैसे सवार लेकर मचलती हुई चल पड़ी।

हैदरीखां रसूलन के पास खिसक आए और धीरे से कहा : "कल कैसरबाग चली जाओ। हस्सो से कहना कि नवाबजादों की सलाह पर न चलें। यह खुद ही सबसे बड़े डाकू और जालसाज हैं। पहले कुछ जेवर ले आओ। तनकुन भैया को साथ लेकर इन्दरचन्द से मिल आऊंगा कि एक बेगम साहिबा अपने कुछ जवाहरात और जेवर बेचना चाहती हैं। फिर तुम सिंगार करके चलना। कैसे अदब से और कैसी माकूल सलाह दे गया।"

"हाय, मैं वारी जाऊं, मेरे तो मन बस गया है लड़का। अपनी नवाब चुलबुली बेगम से जो इसकी आंख लड़वा दूं तो दोनों अपने बस में रहेंगे। उम्र भी करीब-करीब बराबर है। तन्दुरुस्ती में भी दोनों ही एक-दूसरे के जवाब हैं। हस्सो का चुलबुलापन···"

"अमां बन्द करो अपनी ख्याली लनतरानियां, यह लड़का अंग्रेजी की जबान पढ़ रहा है, अपना नया मुस्तकबिल बना रहा हैगा, समझीं?"

2

भाग्यदेवी को प्रसन्न करने के लिए ही बंसीधर टण्डन उर्फ तनकुन पिछले दो वर्षों से हर अमावस को चन्द्रिका जी के दर्शन करने जाता है। उसे घर से बाहर रहते अब यह चौथा वर्ष चल रहा है। नायब रेजीडेन्ट की इच्छा से शम्सुल उलेमा ने जिस दिन मकतब-ए-सुलतानियां में शहर के तमाम सरकारी गैर सरकारी उर्दू फारसी के मदरसों के फारसी छात्रों का बहस मुबाहसा करवाया था, मुन्शी हिम्मत बहादुर के शागिर्द और लाला मुसद्दीमल बजाज के चौथे बेटे बंसीधर टण्डन ने बारह वर्ष की छोटी सी उम्र में ही अव्वल इनाम और सनद पाई थी। घर पहुंचने से पहले ही गली-गली में जिस दिन उसकी धूम मची हुई थी उसी दिन बाबू (पिता) से गर्मागर्मी हो जाने पर उसने अपना घर छोड़ा था। मुंशी हिम्मत बहादुर ने नगरिया के ठाकुर राम जियावन सिंह के यहां उनके लड़कों और भतीजे को पढ़ाने के लिए उसकी सिफारिश कर दी थी। रहने के लिए कोठरी, दो समय का भोजन, और पांच रुपये जेब खर्च मिलता है।

पिता से उसका झगड़ा हुआ ब्याह के कारण। नौ वर्ष की आयु में एक विवाह नवाबगंज में हुआ था। बारहवें बरस में गौना भी जाने वाला था। नाऊ के हाथों समधियाने में चिट्ठी भी भेज दी गयी थी कि नौरातों में पंचमी के दिन बिदा होयेगी, और हमारा लड़का चिरंजीव बंसीधर दूज की दोपहर तक इक्के से नवाबगंज पहुंच जायेगा सो जानना। इस बीच में विधि का विधान कुछ ऐसा हुआ कि बंसीधर के सनद और इनाम पाने की खबर कालियन टोले वाली मन्नो बीबी को पहले मिली, मुसद्दीमल के यहां बहुत

बाद मे पहुंची। तीन चार लाख की हैसियत वाली मन्नो बीबी अपनी इकलौती कन्या के लिए पिछले तीन वर्षों से बिरादरी मे ऐसा वर देख रही थी जो कायदे का हो और जिसे घर दामाद बनाकर रक्खा जा सके। तनकुन की जन्मपत्री चुन्नो से मिल तो पहले ही से गई थी पर उस समय ग्रह नक्षत्र कुछ ऐसे उल्टे-पुल्टे थे कि मन्नो बीबी को मुसद्दीमल से समधियाना जोड़ना अच्छा न लगा। कभी उनकी जन्मपत्री भी मुसद्दीमल से मिली थी मगर मुसद्दीमल के बाप उस समय चूकि बड़े आदमी थे और किसी बड़े घर की बेटी से अपना बेटा ब्याहना चाहते थे, इसलिये ब्याह न हुआ। आजकल जब मुसद्दीमल फेरीवाले बजाज हो गए हैं तो उनके लड़के से कौन नाता जोड़े। उधर तो तनकुन का ब्याह भी हो गया और इधर मन्नो बीबी को अपने मन का दामाद अब तक न मिल सका। हारे को हरिनाम की तरह अचानक तनकुन के बड़ा आलिम हो जाने का शोर सुनकर मन्नो बीबी ने एक झटके में यह निश्चय किया कि तनकुन भले ही एक बार ब्याहा जा चुका हो मगर उसे ही घर दामाद बनाएगी। मुसद्दीमल को रुपयो के रोब से रिझाना आसान है, यह सोचकर घर की डोली पर बैठकर चल दी। दो लठैत भी साथ चले।

मुसद्दीमल राजी हो गए। खाली बहुआ (मा) को ही आपत्ति थी कि लड़का ससुराल में रहेगा। मुसद्दीमल ने अपनी बात ही रक्खी। खुशियों से भरे तनकुन उर्फ बंसीधर ने घर जाकर मां बाप के पैर छुए। पिता ने उसके कीर्तिशाली होने की बात को कम और मन्नो बीबी के आगमन और प्रस्ताव को बहुत महत्व दिया। तनकुन का भेजा चढ गया। वह बोला : "मेरा ब्याह हो चुका है। मैं अब दूसरी शादी करके किसी का घर जमाई नही बनूगा। मैं इस मामले मे अपनी ही मर्जी से चलूंगा।" मुसद्दीमल सुनकर पागल हो गये। मारपीट पर आमादा हो गए। तनकुन ने उसी समय घर छोड़ दिया। भाग्य से उस्ताद ने रहने की जगह दिला दी। इनाम मे पाये रुपयों मे से कुछ कपड़ो मे खर्चे क्योंकि घर मे कुछ लेकर चला नही था। बहरहाल घर छोड़ने के बाद भी तनकुन ने पूरी दृढ़ता के साथ अपना भविष्य अपनी बनायी योजना के अनुसार ही ढालने का निश्चय किया। तनकुन के चार शिष्यों में एक तो उसकी आयु मे बड़ा, दो बच्चो का बाप, शिवरतन सिंह था। फारसी का प्रारंभिक अभ्यास उसे था लेकिन बाद में छूट गया। अब सरकारी कामकाज में फारसी का बोलबाला देखा तो सोचा इसे सीख ही डालें। वह अपने छोटे भाइयों से अलग सीखता था। बंसीधर की अंग्रेजी पढ़ने की इच्छा जानी तो बोला, इसे भी सीख लेना चाहिए। यह आने वाली सरकारी जबान है। नजरबाग के पास ही फादर जेकिन्स का अंग्रेजी स्कूल था। नीची मानी जाने वाली हिन्दू मुसलमान जातियों के आठ नये ईसाई लड़के थे जिनकी पढ़ाई के लिए 25 रुपया मिशन देता था। इनके अतिरिक्त अंग्रेज-ईरानी खून का एक लडका डगलस था, एक जौहरी का बेटा सुभागचन्द, एक पंडित किशनलाल कौल और अब यह दो और भी जुड़ गए। पांच रुपये फीस थी। कहां तो रुपये बाहर गण्डे में फारसी पढ़ाने वाले अच्छे से अच्छे उस्ताद मिल जाते थे, कहां पांच रुपये। बहुत थे। असल मे मिशन ने लखनऊ स्थित अंग्रेज बच्चों की पढ़ाई का स्वप्न देखा था जो पूरा न हो सका। दो वर्षों से स्कूल बन्द था। फादर जेकिन्स जवान और जोशीले थे। उन्होंने चर्च से उक्त स्कूल को अपने ढग से चलाने की आज्ञा मांगी जो मिल गयी। किन्तु फीस के संबंध में बड़े मिशनरी पदाधिकारियों का यही निश्चित मत था कि फीस पुरानी ही रक्खी जायेगी। चर्च के बड़े-बड़े प्रतिबन्धो के बावजूद चर्च से कुछ दूर अपने बंगले पर फादर जेकिन्स ने जब पांच रुपये वाले तीन भारतीय छात्र पटा लिये तब मिशन ने भी पच्चीस रुपये फीस लेकर आठ छात्र लाद दिये। अब यह दो छात्र और आ गये। स्कूल चल निकला। ठाकुर रामजियावन सिंह जमींदार की बग्घी पर दोनो आते थे।

फादर जेकिन्स में दो ऐब थे, एक तो हिन्दू देवी देवताओं की, कभी कभी मुसलमानों को भी गालियां देकर प्रभु यीशु की महिमा बखानते थे, दूसरे किशोरों के प्रति उनकी अनुरक्ति विशेष थी। कुंअर शिवरतन सिंह जो दो बच्चों के बाप हो चुके थे, बड़े डीलडौल के रोबीले मूछोंवाले थे और बंसीधर बहुत सुन्दर होने के बावजूद कसरती और रोबीले थे। कुंवर शिवरतन का क्षात्र तेज उबल-उबल पड़ता था किन्तु बंसीधर उन्हें हमेशा संभाल लेता था। उनसे कहता : "छोटे भैया, ये हमारे शाह के भी शाहों की कौम का है। शहजोर हमेशा कमजोरों को दबाते ही आये हैं। इसलिए इनकी बकवास को भूल जाइये। चूंकि हमारा मुस्तकबिल अंग्रेजी जबान से ही निखर सकता है इसलिए चुप होकर पढ लीजिये। जब पढ़ाई पूरी हो जाये तो साले की टांग तोड़ देंगे।"

मगर पौने दो बरस से अधिक इन लोगों की पढ़ाई न चल सकी। एक दिन फादर जेकिन्स ने अपने नव ईसाई विद्यार्थियों की ओर मुखातिब होकर कहा : "इन हिन्दुओं से बढ़कर जंगली और बेहूदा कौम सारी दुनिया में और कही नही है। इनकी तो माला लक्कड़ शंकर कंकड़ गंगा बुरबक पानी। राम कृष्ण सब झूठे लोगो, चारों वेद कहानी", कहकर जेकिन्स हो-हो करके हंस पड़ा।

शिवरतन सिंह अपने को सम्भाल न सके, अग्निवर्ण होकर खड़े हो गये। बंसीधर ने फिर शिवरतन का हाथ पकड़ा, कहा "शान्त रहें छोटे भैया, जाने दें।"

कुंवर शिवरतन फिर भी चुप न रह सके। गरज कर बोले : "ऐ पादरी साहब, अब जो फिर हमारे देवतों के खिलाफ कहा, आपको जमीन में खोदकर गाड़ दूंगा। चाहे मुझे फांसी भले हो जाये।"

पादरी जेकिन्स भी ताव खा गया, घूमकर अलमारी की ओर गया। पिस्तौल निकाली, एक शिष्य से कहा : "टामस, मेरे जूते खोलो और दिखाओ इन जाहिलों को, इनका खुदा मेरे जूतों में रहता है। दिखाओ इनको।" पिस्तौल का निशाना शिवरतन की ओर करके कुर्सी पर बैठे पादरी अध्यापक के जूते टामस ने खोले। वह देखकर मुस्कराया। दूसरे ईसाई लड़कों ने भी दिखलाया, वे हंसे, फिर शिवरतन के पास न जाकर दूर ही से दोनों जूतों को दिखलाया कि देख लो, तुम्हारे दोनों राम और कृष्ण की तस्वीरें चिपकी हुई हैं। सब लड़के हंस पड़े।

कुंवर शिवरतन के क्रोध को रोकने में बंसीधर को कठिन संघर्ष करना पड़ा। जौहरी का बेटा भी उनसे आग्रह करने लगा : "जाओ-जाओ, झगड़ा मत करो। बंसीधर, इन्हें ले जाओ।" शिवरतन और बंसीधर बंगले से बाहर निकल आये और अपनी बग्घी पर बैठकर चल पड़े। शिवरतन ने तपे हुए स्वर में कहा, "जेकिन्स की अगर मैंने दुर्दशा न की तो क्षत्रिय का बेटा नही।"

परसों रात पादरी जेकिन्स के बगले पर चार-पांच लोगों ने धावा किया। सबके चेहरे ढंके हुए थे। जेकिन्स की जीभ और नाक काटी गयी तथा दोनो हाथों और पैरो की हड्डियां तोड़ डाली गयी। कल दिन भर बड़ी सनसनी फैली रही। बंसीधर ने शिवरतन के पिता ठाकुर राम जियावन सिंह को सारी घटना सविस्तार बतला दी थी और बड़े कुंवर साहब कही गायब कर दिये गये थे। अफवाह भी फैलायी गयी कि पादरी के द्वारा किये गये अपने देवताओं के अपमान को बड़े कुंवर सह न सके और रास्ते में ही बग्घी से उतर कर कहीं चल दिये। नकटे, जीभकटे और निकम्मे हाथ पैरों वाले होकर जेकिन्स रेजीडेन्सी के अस्पताल में पड़े हैं। रेजीडेन्ट ने नवाब वाजिदअली शाह के दरबार के वजीरेआला को कल शिकायत लिखकर भेजी थी। वजीर अमीनुद्दौला ने ठाकुर रामजियावन सिंह के यहां शिवरतन को गिरफ्तार करने के लिए सिपाही भेजे थे। उन्हें

रिश्वत चटा दी गयी और दरबार मे यह खबर पहुंचायी गयी कि ठाकुर रामजियावन सिंह के यहां तो स्यापा पड़ा है। बड़े कुंवर तो दो रोज से घर ही नही आये और रामजियावन सिंह ने कहा कि मेरा लड़का क्षुब्ध हो संन्यासी होकर कहीं निकल गया है और बंसीधर को मैंने अपने घर से निकाल दिया है। रिश्वत के जाल मे फंसकर सारा मामला उलझ गया और आज सबेरे वजीरेआला पर खुद आफत आ पड़ी। इन मामलो मे बसीधर यूं भी बेदाग माना गया था। लड़कों की गवाही के अनुसार वह शिवरतन को बराबर समझा बुझाकर रोकता ही रहा था।

ललकौनी घोड़ी पर सवार होकर बंसीधर टण्डन उर्फ तनकुन पाटे नाले से जौहरी महल्ले और घड़ियाली टोले वाली गली से सामने गुजरता हुआ मछली वाली बारादरी की ओर चला। नवाबी सरकार और कम्पनी की राजनीतिक शतरंज मे चूंकि इधर गहरे दाव पेंच और तनाव के दिन गुजर रहे हैं इसलिए नगर मे दरअसल बांको का ही असली राज है। गोल दरवाजे के दोनों तरफ हलवाइयों, पसारियों, पटुवों, बेलबूटे के ठप्पे बनाने और बेचने वाले दुकानदारों से रुस्तम पहलवान और उनके शागिर्द रोज का महसूल वसूलते थे। चांदी बाजार के बाके मालिक गुलाम नबी थे और बाजार इस्माइल खां के बिसाती और गोटाफरोश बांके कप्तान शमशेर अली और उनके शागिर्दो के आगे सदा थर-थर कापते हाथ जोड़े ही खड़े रहते थे। इस तरह तीन बाकों का राज था।

चौक मे मंकू हलवाई के यहा से खस्ता और दालमोट लेने के लिए बंसीधर घोड़ी से उतरा और रास पकड़े हुये डोलवाले महराज की तरफ बढ़ा: "लाल महराज, पांव लागी।"

"अरे जियो भैयाजी, बाकी आज से हमे लाल महराज कहके न पुकारना भैया।"

"अरे क्यों-क्यो? अपने नाम से ही चिढ़ गये एकाएक!"

"चिढ़ै विढ़ै नही भैया जी, मुला बात ये भई कि समसेर अली कपतान ने ये अडर निकाल दिया है।"

"अडर। ये अडर क्या ला—महराज?"

"कपतान समसेर अली गोरी पल्टन जैसी उरदी पहनते हैं। कल सिले हुए लंगोट चोबी वाले की दुकान पर गये। एक पहलवान इनके आने के पहले ही दो लाल रंग के लंगोटो का सौदा कर चुका था। इन्हें भी लाल लगोटों की ही जरूरत थी। समसेर अली के अखाडे मे अली के साथ बजरंगबली का नाम भी पुजता है। हर मंगल को किसी से गुडधानी का भोग छाछू कुए पर लगवाकर खुद ग्रहण करते हैं, अपने शागिर्दों मे भी तकसीम करते है, फकीरों को भी बांटते है। जिस पहलवान ने लंगोट खरीदे थे उससे कहा कि रख दे और भाग जा। मौत का नचाया पहलवान न माना और वहीं का वहीं मारा गया। तब कपतान का नादिरशाही हुक्म हुआ कि अब से उनके सिवा कोई लाल रंग का इस्तेमाल न कर पायेगा।"

सारा इतिहास सुनाकर, लाल महराज बोले: "हमरा कहा मानो तनकुन भैया तो बाजार से न जाओ आप। लाल घोड़ी पे सायद कुछ झगड़ा फसाद हुई जाये।"

"ठीक कहते है आप। फिर तो मच्छी भवन के किनारे-किनारे घूमकर पत्थरवाले पुल से जायें। बड़ा चक्कर पड़ जायेगा, खैर।"

बाजार की राह न जाकर तनकुन ने मीनाशाह की दरगाह की ओर घोड़ी मोड़ दी और निमहरे शेखो की बस्ती पार करके सूरजकुण्ड के पास नाव वाले पुल से गोमती पार की। मन चिड़चिड़ा रहा था। कैसे बुरे समय मे जनम पाया है उसने, घर बाहर कही

शान्ति नही। चारों ओर लूटपाट-मारकाट, निर्बल पर सबल का विषम अंकुश। आदमी-आदमी को खा रहा है।

मलिकाए आलिया हनुमान जी का नया मन्दिर बनवा रही है। उन्होने अपने पुत्र नवाब वाजिदअली शाह बहादुर की स्वास्थ्य कामना के हेतु इस मन्दिर के निर्माण मे धन से सहायता दी है। गांव का नाम हनुमान गंज से अब अलीगंज भले ही हो गया हो पर बजरगबली की प्रतिष्ठा तनिक भी कम नही हुई है। पुराने हनुमानजी की मठिया के पास से बख्शी के ताल की ओर बढ रहा था कि अपनी घोड़ी पर सवार एक पंडितजी का साथ भी हो गया।

बातें होने लगी। आज की घटना का जिक्र छिड़ा। पडितजी बोले : "नवाबी राज तो अब गवा समुझो। अब तो कम्पनी बहादुर का राज होई। हम सुना रहै कि परौ रात मा कौनो अग्रेज पादरी केर जीभ नाकु काटिके, हाथ पाव टूरि गवा रहै। कहत हैं कि नगरिया के ठाकुर का बेटवा मारिस है।"

सुनकर तनकुन सहम गया। परसो रात वाली घटना की बात कितनी दूर-दूर तक फैल गई है। सम्भल कर बोला · "नही पंडितजी। नगरिया के ठाकुर और उनके बडे कुवर तो बड़े ही भले और शरीफ आदमी हैं। असल मे वह पादरी बड़ा बदजबान था। अपने जूतों में हमारे भगवानो की तस्वीरें चिपकाकर सबको दिखलाता और हमारे देवी देवतों का मजाक उड़ाता था। किसी ने मार दिया होगा। अब आज ही देखिये, दिन दहाड़े वजीरेआला को भरे बाजार में जलील कर दिया बदमाशो ने। क्या कहा जाय।"

"हमारी ज्योतिष गणना तो यूं बतावत है कि वाजिदअलीसाह बास्साय कैद-खाना मा डारे जहियें।"

बादशाह के कैद मे डाले जाने की बात सुनकर बसीधर उर्फ तनकुन का कलेजा धक से उड़ गया। बादशाह कैद मे डाला जायेगा, यह बात ही ऐसी भयप्रद थी कि क्षण भर के लिए उसे लगा जैसे चलते हुए तमाशे के बीच में तमाशा दिखाने वाला ही एकाएक गिरकर मर गया हो। पिछले साल बक़रईद के जुलूस मे उसने बादशाह वाजिदअली, पिया जानेआलम को, ईदगाह जाते हुए देखा था। प्यादे, घुड़सवार, हाथियों और तोपखाने के साथ बादशाह कुर्बानी की रस्म अदा करने के लिए जा रहे थे। आगे-आगे ऊंटों पर निशान और बेशकीमत सजावट के साथ शानदार घोड़े पर सवार डंका बजाता हुआ चल रहा था, उनके पीछे-पीछे रेजिडेन्ट और रेजिडेन्सी के दूसरे अंग्रेज अफसर, नवाब के वजीर और दरबारी चल रहे थे। बादशाह पिया जानेआलम चाँदी से मढ़ी हुई जिस बड़ी सी गाड़ी पर सवार थे उसे सजे-बजे हाथी खीच रहे थे। क्या शान थी बादशाह की···और वही बादशाह इस ज्योतिषी के कथनानुसार अंग्रेजो की कैद मे डाला जायगा!

बसीधर चुप हो गया। उसका मन बड़ा ही अस्तव्यस्त था। आज ठाकुर राम-जियावन सिंह ने भी उसे अपने घर से हट जाने को कहा है। उसे बीस रुपये दिए और कहा कि दो चार महीने अपना इन्तजाम अलग रक्खो। मामला दब जाने पर तुम्हें बुलवा लूगा। बसीधर आज दोपहर से ही अपने रहने के लिए किसी जगह की तलाश कर रहा है। वह अपने पिता मुसद्दीमल के यहा नही जायेगा। फिर वह कहा रहे, जीविका का ठौर ठिकाना क्या होगा, यही सब बातें उसे अत्यन्त चिन्ताकुल बना रही थीं। हरे-भरे मैदान और अमराइयाँ पार करते हुए आधी घड़ी मे बख्शी टिपडचन्द के ताल पर पहुंच गये। टिपडचन्द अर्थात बख्शी त्रिपुरचन्द राजा महानारायण के अनुज और स्वर्गीय नसीरुद्दीन हैदर शाह के समय मे दीवान थे। लाखो की लूट पर नजर न लगे इसलिए

बख्शीजी ने दिठौने के रूप में जन कल्याण के लिए यह ताल बनवा दिया था। पास ही गांव भी है जहां सप्ताह में एक दिन पैंठ भी लगती है। थोड़ी बहुत चहल-पहल यहां हमेशा ही बनी रहती है। गांव के पास ही किसी धर्मात्मा ने जानवरों के पानी पीने हेतु एक कुण्डी बनवा दी थी, वहां घोड़ी को पानी पिलाया। पंडितजी को प्रणाम कर उनसे विदा ली और अज्योर गाव की ओर चल पड़ा।

आज बातों-बातों मे सड़क के चक्कर के कारण समय अधिक हो गया लेकिन तनकुन ने सोचा कि अभी ऐसा अन्धेरा नही हुआ कि जंगल न पार किया जा सके। घोड़ी तेज की, गांव के सीमांत और जगल की सीमा के आरम्भ होने वाले स्थल पर उन्हें एक अंग्रेज घुड़सवार नजर आया। उसके आस-पास कुछ आदमी खड़े हुए बातें कर रहे थे। पास पहुचते ही एक आदमी ने आगे बढ़कर हाथ उठाया और कहा—"जगल मा न जायो साहेब।"

"क्यों, क्या हुआ भइया, अभी तो वहुत उजेला है, शेर तो रात मे निकलता है भाई ?"

"अरे एकै बाघु ध्वारे है, तीन-तीन आंय। औरु जड़ीवाला बाघु सार अन्धेर उजियार ध्वारो देखत है।"

बंसीधर उर्फ तनकुन की बातें सुनकर अंग्रेज घुडसवार भी पास ही आ गया। वह हाल ही में विलायत से आया था। अभी हिन्दी भाषा से उसका कोई परिचय नही हुआ था और उसमें भी यह अवधी तो उसके लिए बिल्कुल ही अपरिचित थी। अंग्रेज युवक को अपने पास आया हुआ देखकर तनकुन ने सलाम किया और अंग्रेजी में कहा : "यह लोग इस समय जंगल में जाने से मना कर रहे हैं क्योंकि जंगल में यहां आजकल तीन शेर आ गये हैं।"

एक देहाती बोला—"हुजूर ते वताये देव भइया कि एक तो चन्द्रिको जी क्यार बाघु है और दुई ससुरे पूछ कटे घुसि गये है। उई सार रात मां गाव महियां घुसि आवत हैं।"

[illegible] की ओर देख रहा था। तनकुन ने गांव वालो [illegible] ?"

[illegible] नाही होत है। उयि मनई आय, जड़ी खाय के बाघ बने हैं।"

तनकुन ने यह पहेली भरी बात भी अंग्रेजी में उल्था करके साहब को बतला दी। वह हंसने लगा, बोला : "कैसा अनोखा आश्चर्य है, यह कौन सी जड़ी है जिसे खाकर आदमी बाघ बन जाता है ?"

पता चला है कि जंगल में दो ऐसी जड़ियां पास-पास लगी हैं जिनमे एक को खा लेने से मनुष्य सिंह देह धारण कर लेता है और दूसरी को खाने से फिर मनुष्य हो जाता है। कुछ महीनों पहले यहां एक जोगी आया था। उसने इन जड़ियो को पहचाना। जब वह अपने एक शिष्य को बतला रहा था तब गांव के सोमेश्वर महराज भी उनके साथ ही थे, उन्होंने भी जड़ियों को देख लिया। सुनते हैं, जोगी ने चेले को आदेश देकर सिंह बनने वाली जड़ी खायी परन्तु चेला उन्हें मनुष्य बनने वाली जड़ी घिसकर चटाने के पहले ही डरकर भागने लगा। जोगी ने अपने चेले को तुरत ही लपककर चीर-फाड़कर खा डाला। इधर सोमेश्वर भी जड़ियां लेकर घर आ.ए थे। उन्होंने अपनी पत्नी को बताया और कहा कि तुम डरना मत, दूसरी जड़ी तैयार रखो, मैं उसे चाटकर फिर आदमी बन जाऊंगा। परन्तु पत्नी.भी अपने पति को सिह के रूप मे देखकर भयभीत हो गयी। चीखकर भागी, सिह रूपी सोमेश्वर क्रोध मे आकर अपनी पत्नी को खा गये, बच्चे मार

डाले, अपनी भैंस को भी मारा, पड़ोस के लाटू महाराज की जान ली और तीर बन्दूकों की धमकियों से बड़ी कठिनाई से वह जंगल में भगाये गये। रात में कभी-कभी धोका देकर गांव पर हमला भी करते हैं। इसीलिए जमीदार ने गांव में यह पहरा और हांका भी लगवा रक्खा है। अंग्रेज कुछ भयभीत और विनोदी मुद्रा में बंसीधर से बोला : "यह तो बड़ी ही विचित्र कथा है। आप हिन्दुस्तानी लोग ऐसी कथाओं पर बहुत जल्दी विश्वास कर लेते हैं। लेकिन मैं तो जंगल पार करूंगा। क्या आप मेरे साथ-साथ चलेंगे ? मेरे पास ये बन्दूक है और मैं बहुत अच्छा निशानेबाज भी हूं।"

"आपके साथ चलने में मुझे कोई भय नहीं लगेगा और मैं अन्धविश्वासी भी नहीं हूं। लेकिन हमे कुछ तथ्यों पर भी विचार कर लेना चाहिए। शेर के आक्रमण से इस गांव के दो-तीन आदमी और जानवर मारे जा चुके हैं। जड़ी से बननेवाले शेरों की कथा भले ही झूठी हो लेकिन यह मानने से इन्कार नहीं किया जा सकता कि जंगल का शेर आदमखोर हो चुका है और वह हम लोगों पर हमला भी कर सकता है।" अंग्रेज युवक कुछ सोचकर बोला : "आपकी यह बात विश्वसनीय जरूर लगती है लेकिन इनसे पूछिये कि रात में हम लोग रहेंगे कहां ?"

तनकुन ने एक गांव वाले से कहा: "साहब पूछते हैं कि वह रात में यहां कहां रहेंगे ?"

"अरे सरकार, साहेब के बदे सब इन्तजाम परबन्धु महल मां हुई जाई। इनते कहो हमरे साथ चलें।" अंग्रेजी बोलने वाले भारतीय युवक को वह अंग्रेज छोड़ना नहीं चाहता था। बोला, "आप भी मेरे साथ ही रात गुजारिए। सुबह हम लोग जंगल पार कर लेंगे।"

राजा चन्द्रिका बख्श सिंह का महल मिट्टी का बना हुआ था। बड़ा भारी फाटक, उसके अन्दर बहोत लम्बा मैदान और एक तरफ भवनों की पंक्ति और दूसरी ओर मंदिर और गोशाला और घुड़साल बनी थी। हाथीखाना फाटक में घुसते ही दाहिनी ओर था। साथ लाने वाला देहाती दौड़कर महलों के उस कोने वाले हिस्से में गया जो कि पक्की ईंटों का बना हुआ था। उसके ऊपर दो-चार कलश कंगूरे भी नजर आ रहे थे। अंग्रेज का नाम सुनते ही राजा चन्द्रिका बख्श सिंह स्वयं अपने हाली-महालियों के साथ भागे-भागे वहां आये और दोनों हाथों से झुककर अंग्रेज को सलाम किया। दोनों को पक्के महल में ले गये। उनके घोड़े घुड़साल मे बंधवा दिये गये। अंग्रेजी बोलने वाले बंसीधर से भी राजा साहब बहुत प्रभावित थे। धीरे से पूछा : "ये कौन से हाकिम हैं ?" बंसीधर बोला : "ये रेजीडेन्ट बहादुर के नये सेक्रेटरी होकर अभी हाल में विलायत से आये हैं। हमारी जबान बिल्कुल नहीं समझते, और मैं तो लखनऊ शहर में ही रहता हूं। हर महीने अमावस के दिन चन्द्रिका जी के दर्शन करने आता हूं। इस बार इन दुमकटे शेरों ने मुझे भी साहेब के साथ ही साथ इस रात भर के संकट मे डाल दिया है।"

"संकट कैसा, बबुआ, आराम से रहो। इनसे कहो कि विलायती दारू तो हम इन्हें पिलाय नहीं सकेंगे बाकी देशी बढ़िया से बढ़िया पिलायेंगे।"

राजा साहेब अधेड़ वय के थे। मिस्टर पार्किन्सन ने तनकुन से कहा, "इनसे कहिए कि जायें और आराम करें, और यह भी बता दीजिये कि मुझे किसी विशेष प्रबन्ध की आवश्यकता नहीं।"

राजा साहेब हंसे : "अरे राजा के घरे राजा क्यार नुमाइन्दा आवे और विसेस परबन्धु न होय, यू कैसे हुई सकत है भला।" राजा साहेब सलामें झुकाकर चलने लगे। एकाएक तनकुन को कुछ ख्याल आया, आगे बढ़कर बोला—"महाराज, मैं दारू वगैरह

कुछ नहीं पीता और शाकाहारी हूं।" राजा साहेब मुस्कराये और बगैर कुछ कहे ही चले गये। रात को बंसीधर और पाकिन्सन में खूब बातें हुई। पाकिन्सन बोला : "ऐसा लगता है मिस्टर बंसीढर कि तुम्हारा देश पुंसत्वहीन हो चुका है। आज नगर मे होने वाली नवाब अमीनुद्दौला बहादुर की घटना तो आपने भी सुनी ही होगी ?"

बंसीधर ने लज्जा से सिर झुकाकर कहा : "जी हां।"

"प्राइम मिनिस्टर शब्द के साथ बहादुर शब्द लगता है और मुझे बताया गया है कि बहादुर 'ब्रेव' को कहते हैं।" कहकर पाकिन्सन व्यग्य से हंस पड़ा। कुछ थम कर उसने फिर कहना शुरू किया : "आपके लोगों मे अब सच्चाई और ईमानदारी भी बहुत कम रह गयी है। मैं आज जिस अकरम अली की तफतीश करने जा रहा था वह एक नम्बर का चोर और डाकू था। उसने कमजोर लोगों की जमीनें हड़प कर अपनी जमींदारी बनायी। संयोग से नाजिम से उसकी कुछ खटपट हो गयी और वह कैदखाने मे डाल दिया गया। जाने उसने वहां क्या पड्यंत्र किया कि कैदखाने से छूटा और नायब वजीर को दो खरीदी हुई सुन्दरी तरुणियां भेंट कर वह हुजूर तहसील मे बहुत से गाव पा गया। अब फिर शिकायतें आयी हैं, रेजीडेन्ट साहब ने मुझे हुक्म दिया कि जाकर मामले की जांच पड़ताल करूं और उन्हें रिपोर्ट दू।"

बातों-बातों में जब पाकिन्सन को यह मालूम हुआ कि बंसीधर फारसी का पंडित है तो खुश होकर उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया, और बोला : "ओह मिस्टर बंसीढर, मैं कितना खुशकिस्मत हूं कि आपसे भेंट हो गयी। हमारी रेजीडेन्सी का फारसीनवीस हेड मुन्शी बडा शैतान है। मुझे नया जानकर वह कुछ गलत-सलत सूचनायें भी मुझे देता रहता है। आप परसों रेजीडेन्सी में मेरे पास जरूर आइये। मैं आपको फारसी का एक महत्वपूर्ण पत्र दिखलाऊंगा। वह राजनीतिक महत्व का है। मैं आपका कुछ आर्थिक लाभ भी करवा दूंगा।"

पाकिन्सन ने यह भी कहा : "रेजीडेंसी के दफ्तर में आने के बजाय आप मि० सैंडहर्स्ट के क्वार्टर में आयें। उनकी पत्नी से मिलें। अभी हिन्दोस्तान मे अंग्रेजी जानने वाले लोग बहुत कम हैं। आप हमारे लिये बहुत फायदेमन्द साबित होंगे।" बंसीधर ने हामी भर ली।

रात में राजा साहब के कच्चे महल के एक कमरे में लेटे हुये बंसीधर के मन में तरह-तरह की सुखद कल्पनायें नाच रही थी, चन्द्रिका मैया ने उसके ऊपर असीम कृपा करके ही आज उसे पाकिन्सन से भेंट करायी है। देखो, आगे क्या होता है!

3

राजा चंद्रिका बख्श सिंह के महलों मे अंग्रेज 'सिकत्तर बहादर' से अंग्रेजी मे बातें करने वाले, गोरे सुन्दर और अपनी कसरती देह से नौजवानी को निखार देने वाले, आकर्षक

व्यक्तित्वशाली साधारण बजाज के बेटे बंसीधर टंडन उर्फ तनकुन की खातिरदारी भी आला हाकिमों की तरह ही हो रही थी। अपने-अपने कमरों में व्यवस्थित हो जाने के बाद जरूरी कामों से फारिग होकर पार्किन्सन की सेवा में नियुक्त राजा का एक नौकर आया और कमर झुकाकर सलाम किया, फिर हाथ जोड़कर सिर झुकाए हुए बोला: "साहेब क्यार बेटवा जिए हजूर, उयि बड़े साहेब जौन हजूर के साथे आए है, उयि आपका सलाम बोलिन हैं सरकार।"

"सलाम बोला है। क्या मतलब?"

"आपका बलाइन है हजूर। बड़े कुंवर साहबौ आए गए हैं साहेब क्यार बेटवा जिए। ई गोरन की सराबनोसी का टैम होत है न सरकार, आप तो सब जानते हुइयो हजूर, हैं: हैं:"

"*तुम्हारा क्या नाम है?*"

"गोबरधन पांडे साहेब क्यार···"

"पांडे, तुम यहां नौकर हो मगर ब्राह्मण भी हो। मैं खत्री हूं। कभी शराबनोशी नही की। इनकी संगत भी नही की। लेकिन आज लगता है, पीनी ही पड़ेगी। क्या तुम अपने तजरबे से बता सकते हो कि एक गिलास मे कितनी शराब और कितना पानी मिलाने से नशा मामूली चढ़ता है।"

"हम समुझ गए सरकार, साहेब क्यार बेटवा जिए. (पास आकर धीमे स्वर में) आपकी कुर्सी के लगे नीचे लामचीनी क्यार बिलैती उगालदान चुप्पे ते धरि जाब, जित्ती चाहे पियें सरकार बाकी बहिमा नायं देयं। सत्तौ रहि जाई और धरमो रहि जाई, साहेब क्यार बेटवा जिए।"

बड़े कुंवरजी नगरिया के शिवरतन सिंह की उमरों के ही थे और दोनों में जान पहचान भी थी। एक हसीना बांदी चादी की थाली में मीनाकारी किए हुए सागर और विलायती शीशे के गिलास लेकर आई। बात पार्किन्सन की तरफ से शुरू हुई, 'हिन्डोस्टान' की प्रशंसा से शुरू हुई। उसने संस्कृत भाषा के भी बड़े-बड़े माहात्म्य गाए और यह भी कहा कि यहां के लोग स्वयं अपना ही महत्व भूल बैठे हैं, हालांकि यहां के लोगों का दावा है कि वही अस्ली आर्य हैं।

"मैं आपकी इस बात का जवाब देने की जुरअत तो नहीं कर सकता हुजूर, मगर मैं यह जरूर कह सकता हूं कि संस्कृत और फारसी ज़बानें कहीं आपस मे बहुत एका रखती हैं। आपकी इंग्लिश जबान में भी गौ-काऊ, भ्रातृ-बिरादर, ब्रदर···"

"ओह, आप तो मेरी पसंद के विषय पर आ गए मिस्टर बसीढर। आजकल हमारे इंग्लैंड मे तुलनात्मक भाषा विज्ञान की एक बड़ी जोरदार लहर आई हुई है। जर्मनी के प्रोफेसर मैक्समूलर आजकल हमारे देश में रहते हैं। उन्होंने वेद का अनुवाद किया है। फ्रांस के प्रोफेसर बर्नाफ ने पारसी मजहब की पुरानी किताब अवेस्टा (अवेस्ता) का अनुवाद किया है। वेद और अवेस्टा की भाषा करीब-करीब मिलती है, उनकी कवितायें भी मिलती हैं। खाली उच्चारण और कुछ शब्दों का फर्क है।"

"भाषाओं के घने रिश्ते से यह बहुत फैला हुआ संसार शायद एक दिन हमारी मुट्ठी मे सिमट आए। मेरे पड़ोस में एक बहुत पुराना वेदपाठी पंडितो का परिवार रहता था। उनसे मैंने भगवद्गीता की एक बात याद की थी—'वसुधैव कुटुम्बकम'—सारी दुनिया एक कुटुम्ब है।"

"वहोत अच्छी बात है मिस्टर बंसीढर। इसी पर मुझे आपसे एक जरूरी बात कहने की याद आ गई। अगर आप पंडितों से मुझे संस्कृत की पुरानी पोथियां लाकर दे

सकें तो मैं उनमें से कुछ किताबें खरीदने की कोशिश भी करूंगा।"

"मैं आपकी यह सेवा करने की पूरी कोशिश करूंगा, हुजूर।"

खाने मे बंसीधर शाकाहारी ही रहा। उसके खाने का इंतजाम अलग हुआ। पार्किन्सन और बंसीधर की इल्मी बातें बड़े कुंअर के लिए नशाउखाड थी। साकी बनाकर पेश की गई अपनी 'नौकर' तवायफ बेनज़ीर के साथ पीते रहे। बंसीधर गोवरधन पांडे की तरकीब से नशे की महफिल मे शामिल होकर भी बच गया, हालांकि नशे का गुलाबी असर तो महसूस किया ही।

राजा चन्द्रिका बख्श सिंह के महलों में 'सिकत्तर बहादर' के साथ अंग्रेजी बोलने वाले बंसीधर की भी बडी खातिरें हुई। बंसीधर सुबह जब पार्किन्सन से विदा लेने गया तो उसने मुस्करा कर कहा: "थोडी देर और ठहरो मेरे दोस्त। मैं तुम्हारे साथ ही जंगल पार करूंगा।"

"ठीक है सर, आप तैयार हो लें। मैं बाहर आपका इंतजार करूंगा।" कहकर बंसी कमरे से बाहर जाने लगा।

"रुको रुको मेरे दोस्त, मेरे साथ चौकलेट पियो।" बंसी के चेहरे पर हल्की-सी परेशानी नजर आई तो हंस कर कहा: "यू शैल नाट लूज़ योर 'धरम' बाई ड्रिंकिंग चॉकलेट विद मी। यह शुद्ध शाकाहारी पेय है।"

बंसीधर के मुख पर संकोच की हल्की-सी झलक झलकी, किन्तु उसने शीघ्र ही उस पर वश पा लिया और हंस कर कहा—"मुझे तनिक भी आपत्ति नही, मिस्टर पार्किन्सन। आप तो मुझे बड़ी इज्जत बख्श रहे हैं। लेकिन मैंने उस चौकलेट नाम के पेय पदार्थ को कभी पिया नही है। हमारे यहां यह नाम भी कोई नही जानता।"

"ओह! मैं समझा। इंग्लैण्ड और योरोप मे भी अभी यह काफी मंहगी मिलती है, सिर्फ रईस लोग ही पीते हैं। अमेरिका की खोज के बाद इसे वहां से लाया गया था।"

"मगर यह चीज क्या है, हुजूर?"

"यह कोका की फलियां होती हैं, कोकाबीन्स। पहले तो इन्हें उबालकर यों ही पिया जाता था, मगर अब तो हम लोग इसमें दूध और शक्कर मिलाकर पीते हैं। लेकिन साथ ही साथ इसके बजाय अब 'टी' का फैशन चला है। चीन की चीज है, एक कली दो पत्ती, इसे भी उबाल कर ही पिया जाता है। पहले यह भी मंहगी थी, मगर 1834 से हम लोगों ने इसे आसाम मे भी उगाना शुरू किया। अब तो यह सस्ती हो चली है। एक दिन तुमको 'टी' भी पिलाऊगा। बड़ा स्फूर्तिदायक पेय है।"

रेजीडेन्ट साहब का विशेष सचिव होते हुए भी पार्किन्सन का चित्त बड़ा ही सरल था। दोनों की आयु मे लगभग आठ-दस वर्ष का अन्तर होने पर भी वह फारसी के विद्वान और अंग्रेजी के जानकार, एक प्रतिभाशाली भारतीय नवयुवक से बहुत घुल-मिल रहा था। खुश था। बातचीत के दौर में एक बार उसने यह भी कह दिया, "मिस्टर बसीढर, तुम्हारी यह टूटी-फूटी अंग्रेजी भी मुझे 'किंग्ज इंग्लिश' जैसी प्यारी लग रही है। कल रात मुझे बेदुम के शेरों की वजह से यहां मजबूरन रुकना पड़ा मगर तुमसे परिचय पाने के कारण वह मुझे अब तनिक भी नही खल रहा है। तुम कल आओ, जरूर आओ मैं तुम्हारी मुलाकात मिसेज माल्कम से कराऊंगा। वे लखनऊ में मेरी बहुत अच्छी दोस्त हैं। असल में फारसी की वह चिट्ठी है जिसे मैं तुमसे पढवाना चाहता हूं, उन्हीं की एक आया कैसरबाग के महलों से लायी थी। उसमें कुछ रहस्य की बात जरूर है। किसी बेगम ने किसी बहुत बडी दरबारी साजिश पर रेजीडेन्ट के नाम खत लिखा है। मिसेज माल्कम बेचारी उसे पढ़वाने के लिए तीन-चार दिन से बेकरार हैं। ईश्वर ने ही

तुमसे मेरी अचानक भेंट करा दी, तुम जरूर आना।"

"मैं जरूर आऊंगा मि० पार्किन्सन। और ये मिसेज माल्कम उन माल्कम साहब की पत्नी तो नहीं है जो कि रेजीडेन्सी के दफ्तर के हेड क्लार्क⋯"

"बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक। तुम माल्कम को जानते हो बंसीधर। वह हेड क्लार्क नहीं, आफिस सुप्रिटेंडेंट हैं।"

"मैं उन्हें जानता तो नहीं पर अपने पिता से उनका नाम कई बार सुना है। मेरे पिता कपड़े के व्यापारी हैं और वह उसके बंगले पर जाया भी करते थे। बेलीगारद के पिछवाड़े⋯"

"बिल्कुल ठीक। माल्कम ब्रेकफास्ट के बाद ही आफिस चला जाता है। तुम ठीक साढ़े नौ बजे मिसेज माल्कम के पास पहुच जाना।"

"मुझे अफसोस है मि० पार्किन्सन कि मेरे पास आप लोगों जैसी विलायती घड़ी नहीं है।"

"ओह! समझा। खैर, तुम सवेरे पहुंच जाना और इस बात का ध्यान जरूर रखना कि माल्कम जब घर से रेजीडेन्सी के लिए रवाना हो जाए तभी तुम मिसेज माल्कम के पास जाना। वो बुड्ढा माल्कम बड़ा बदमाश है, मिसेज माल्कम वेचारी बहुत शरीफ हैं। बहुत जवान और खूबसूरत भी हैं। मैं उनसे आज ही तुम्हारे बारे मे कह दूगा। लेकिन इस बात का ध्यान जरूर रखना कि उस स्काउंड्रल माल्कम को तुम्हारे आने का जरा भी पता न लगने पाए।"

इस तरह बातचीत करते हुए उन्होंने कोस दो कोस में फैला हुआ जंगल पार कर लिया। दोनों ने एक दूसरे से बहुत गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाकर बिदा ली।

चन्द्रिका जी का मन्दिर प्राचीन और माहात्म्य भरा है। प्रति अमावस्या को आस-पास के गांवों से चन्द्रिका जी के दर्शन करने के लिए भारी भीड़ आती है। मन्दिर के पास ही एक छोटा तालाब भी है, जिसमे स्नान करके ही लोग देवी के दर्शन के लिए जाया करते हैं। बंसी जिस समय वहां पहुंचा, उस समय कोई युवती, नहाते समय तालाब की काई में फिसलकर डूब गयी थी। वहां बड़ा कोआरोर मच रहा था। शव को ढूढ़ने के लिए तालाब में जाल भी फेंका गया था। युवती का जवान पति और उसका तीन-चार वर्ष का बेटा किनारे पर धाड़ें मार-मार कर रो रहे थे। बंसी ने अपनी चिर परिचित हलवाई की दूकान के पास ही नीम के पेड से अपनी घोड़ी बांधी और घास का पूला उसके आगे डालकर तालाब की तरफ गया। कोई व्यक्ति डूबने वाली युवती के क्रन्दन करते हुए पति को सान्त्वना दे रहा था: "अरे भइया, जौन होनी रही सो तो हुई गई, चांदिको मैया वहिकी भेंट लै लिहिन। अब घरे जायके दूसर बिहाओ कर लिहो।" सुनकर बंसीधर का मन एकाएक कड़वा हो गया। उस स्त्री का शव तक अभी बाहर नहीं निकाला जा सका और यह आदमी कह रहा है कि घर जाकर दूसरा विवाह कर लेना। कितनी नगण्य है वेचारी औरत की जात, जैसे उसका कोई मूल्य ही नहीं। अचानक बंसीधर को अपने पिता की याद भी आयी। जिस पत्नी को बंसी ने अभी तक देखा नहीं था उसका महत्व घटाकर वे उसके लिए और भी नई धनाढ्य पत्नी ला रहे थे। धन की लिप्सावश हमारा कुलीन समाज तीन-तीन, चार-चार विवाह कर लेता है। न जाने कितने घरों में आए दिन सौतों की कलह और उनके बच्चों के झगड़े हुआ करते हैं। बहुत ही पतित और निर्बुद्ध हो गया है हमारा समाज।

समाज के प्रति अपनी चिढ़ में बंसीधर के ध्यान में अपने पिता की कटु स्मृति ही अधिक आती रही। वह नन्दराम हलवाई की दूकान पर रखे हुए अपने थैले से धोती-

अंगोछा निकालने के लिए चला। तभी तालाब के किनारे शोर मचा कि औरत की लाश निकल आयी है। चन्द्रिका जी के दर्शन करने के लिए आयी हुई भीड़ निरर्थक उत्सुकता-वश लाश के दर्शन के लिए किनारे की ओर बढ़ चली। वितृष्णावश उसने तालाब में न नहाने का निर्णय लिया और नन्दू हलवाई से कलसा-लोटा मांगकर कुएं पर ही नहाया, देवी के दर्शन किए, मनौती मानी कि हे देवी मैया, जब मेरा काम-धाम लग जाएगा तो अपनी पत्नी को लेकर तुम्हारे दर्शन के लिए एक बार अवश्य आऊंगा। कभी न देखी हुई पत्नी के प्रति उसकी सुप्त लालसाएं जाग रही थी। पास ही तालाब किनारे एक बालक और पति अपनी सद्यः मृत पत्नी के लिए धाड़ें मार-मार कर रो रहा था।

जलेबी, सुहाल खरीदते समय नन्दू हलवाई ने पूछा : "तनकुन मैया, हम सुना रहे कि अबकी महर्रम महियां बाजिदअलीशाय बादशाय अपने गले मां ढोल लटकाय के जलूस मां निकले रहैं।"

सुनकर बंसीधर को ऐसी लज्जा आयी मानो इसके लिए वही अपराधी हो। चिढ़कर सोचा कि जिस देश के शासको को अपनी ऐसी बदनामी भी सुहानी लगे वह देश रसातल में जाने के योग्य ही है।

लौटते समय उसके मन मे केवल एक ही चिन्ता थी, अब वह कहां रहेगा। ठाकुर रामजियावन सिंह के घर के द्वार फिलहाल उसके लिए बन्द हो चुके हैं। पिता के घर वह जायेगा नही, फिर कहां जायेगा आखिर। ठाकुर रामजियावन सिंह का घर छोड़ने पर वह अपनी सन्दूकची माली खां की सराय मे रग्घू तबोली के यहां रख आया था। उसी से पूछने पर शायद कोई नया ठिकाना मिल जाए। कल पार्किन्सन ने उसे रेजीडेन्सी में बुलाया है, शायद वही कही उसे ठिकाना मिल जाए या शायद कही···शायद-शायद शायद ··? इस शब्द में कैसी मृग मरीचिका समायी हुई है। आखिर कब तक वह इन मृग मरीचिकाओं के पीछे दौड़ेगा। क्या यह उचित न होगा कि वह अपनी ससुराल नवाबगंज चला जाए। नही, ऐसी हालत में ससुराल जाना अनुचित है। उसके ससुराल वाले कदाचित उसका अपमान कर दें। यह सोचकर बंसी का मन फिर बुझ गया।

ललकौनिया जंगल में प्रवेश कर रही थी, बंसी ने अपना तमंचा सम्हाल लिया, शायद कहीं शेर मिल जाए। जड़ी खा कर बने हुए वेदुम के शेर भी मिल सकते हैं।··· वेदुम वाले शेरों की कल्पना करके बंसी को अनायास हंसी आ गई। कैसे लगते होंगे ये शेर, और क्या ये सच है कि आदमी एक विशेष जड़ी खाकर शेर बन जाता है। उसे लगा कि शायद यह मिथ्या प्रचार ही है। हम भारतवासी अब कायर ही नही नितान्त निर्बुद्ध भी हो चुके हैं।

जंगल पार कर लिया, न वेदुम के शेर मिले और न दुमदार। बख्शी के ताल पर *घोड़ी रोककर एक हलवाई के यहां पूरी साग खरीदकर खाया, घोडी को दाना चारा* दिया और दोपहर होने तक हैदरीखां के अस्तबल मे पहुंच गया।

खा साहब हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। "सलाम चच्चा।"

"जियो वेटे, उमर हजारी हो तुम्हारी, मैं अभी-अभी तुम्हें याद कर रहा था तनकुन बेटे।"

"किसलिए?"

"अरे वही इन्दर चन्द जौहरी के यहां जाना है, दोपहर बाद तुम कहां मिलोगे भइया? असल मे तुम्हें साथ लेकर ही वहां जाना चाहता हू।"

"क्या बतलाऊं चच्चा, इस बक्त तो लामकां हूं। नगरिया के ठाकुर साहब के

यहां रहता था, मगर अब वह जगह छूट चुकी है।"

"अपने घर में नही रहते तुम ?"

"जी नही।"

"क्यों ?"

बंसी ने सिर झुका लिया, कुछ क्षण चुप रहने के बाद कहा : "वालिद साहब मेरी दूसरी शादी करना चाहते थे। मैंने इंकार कर दिया इसलिए इन्होने मुझे घर से निकाल दिया। पिछले चार वर्षों से मैं अपने घर मे नही रहता हूं।"

"ओहो, तो यह बात है। खैर, अगर एतराज न हो तो फिलहाल अपनी चच्ची की सराय में ही आराम करो। वह महलों मे गई है, यकीन है शाम तक लौट आएगी। मगर खाना-आना न खाया हो तो लोटन महाराज को बुलाकर कच्ची-पक्की जैसी चाहो बनवा दू।"

"शुक्रिया चच्चा, खाना तो बख्शी जी के ताल पर हलवाई के यहां खा आया ?"

"तो फिर ठीक है, आराम करो।"

बंसी हंसा : "दिन भर तो आराम करूंगा चच्चा, मगर रात को कहां रहूंगा।"

"अमां यही रहोगे, और कहां।"

"एक दिन, ज्यादा-से-ज्यादा दो दिन, चच्ची मुफतुल्ले गाहक को कब तक अपनी सराय में रखेंगी।"

"अरे बरखुरदार, जब तक जी चाहे रहो। वैसे चाहोगे तो मैं तुम्हारे लिए घर का इंतजाम करवा दूंगा।"

"बड़ी मेहरबानी होगी आपकी। दरअस्ल कल सिकत्तर साहेब मिल गये। उन्होंने कल मुझे बेलीगारद में बुलवाया है।"

"यह सिकत्तर क्या बला होती है, बेटे ?"

"अंग्रेज साहबो के खास कारकून को सिकत्तर कहते हैं, चच्चा।"

"वल्लाह, तो यह कहो साहबे आलीशान तक तुम्हारी पहुंच हो गई है। जियो। तरक्की करो, खूब तरक्की करो। तब फिर क्या है, दो-चार दिन यही अपनी चच्ची की सराय में आराम करो। अरे इंगिलशो की जबान पढ़ ली है तुमने। तुम्हारी तकदीर के फाटक तो खुल ही चुके हैं बरखुरदार। (बंसी के कान के पास मुह ले जाकर धीरे से) जरा यह भी पता लगाना कि बादशाह सलामत तो गद्दी से नहीं हटाये जायेंगे। कल को तुम्हारी चच्ची महलों से खबर लायी थी कि रजीडंड बहादर ने जाने आलम को कोई रुक्का भिजवाया हैगा। सुना है बहुत कुछ सख्त-सुस्त लिखा हैगा उन्होने।"

"पता नही चच्चा, मगर मुझे लगता है कि बादशाह सलामत इस बार जो महर्रम के जलूस मे ढोल बजाते निकले थे, शायद उसी पर अपनी नाराजी का इजहार किया होगा।"

हैदरीखां चुप हो गये, फिर कहा : "हद हो गयी है, मियां, अपने मुल्क मे बादशाह अपनी मर्जी के काम नही कर सकता। उनकी खोपडी पर भी रजीडेंट का डंडा सवार रहेगा। यह भला कहां का इन्साफ है ?"

"इन्साफी गैर-इन्साफी की बात तो छोड़िए चच्चा, ये दिन-दहाड़े जो गली-गली में लूटपाट होती है, शरीफ और पढ़े-लिखे लोग बेकार घूम रहे हैं, ये भला कहां का इन्साफ है ? अरे दकन में टीपू सुल्तान का राज हथिया लिया और निजाम हैदराबाद को भी बेबस कर दिया। न जाने कितनी रियासतों पर कपनी बहादुर अपना कब्जा जमा चुकी है—तो यहां भी क्या वह छोड़ देगी।"

अज्जो को बुलवाकर हैदरीखां ने तनकुन भैया को एक अच्छे से कमरे में टिका दिया। लगभग तीसरे पहर रसूलन के साथ हैदरीखां वहां आए। रसूलन ने बतलाया कि चुलबुली बेगम साहिबा जन्नतमकानी मुहम्मदअली शाह की एक विधवा मुख्तार बेगम के यहां आकर ठहरी है, फिलहाल दो-चार रोज उधर ही रहेंगी। रसूलन खुद ही बेगम साहिबा को वहां पहुंचाकर आयी है। जवाहरात उसके साथ ही हैं। वह इन्दर चन्द जौहरी के बेटे रिखबदास से एक बार पहले भी मिल चुकी है। तनकुन अगर उसे रिखब से मिलवा दें तो काम बन जाने पर बेगम साहिबा उसका भी लाभ करा देंगी। तनकुन उर्फ बंसीधर ने वैसा ही प्रबंध करा देने का वचन दिया। इन्दर चन्द रिखबदास की हवेली उसी मुइयामल की गली मे थी जिसमें उसका पैतृक घर था।

मुंइयामल की गली के फाटक मे प्रवेश करते ही तनकुन का कलेजा उमड पड़ा। इसी गली मे जनम लिया, पला-बढा और आज वह पराई है।

रिखब अकेला बैठा था।

"अमां आओ जी तनकुन। तुम तो ईद का चांद हो गए हो यार। कहां हो आजकल। सुना, इगरेजी भी पढ डाली तुमने।"

"अमां पढ़ नही डाली, अब भी पढ़ रहा हू।"

"तुम तो नगरिया के ठाकुर साहब के यहां पढ़ते हो, और वही रहते भी हो हमने सुना है।"

"रहता था बड़े भाई अब तो लामकां हूं। ठाकुर साहब के लडके ने पादरी जेंकिन्स को मार डाला था न?"

"अमां हा, वह खबर तो दो-तीन रोज से बडी गरम है शहर में। तो तुम भी उसी पादरी से पढ़ते थे तनकुन?"

"हां जी, अब क्या कहें उस्ताद है हमारा, मगर अव्वल नम्बर का हरामी था साला। हमारे देवी देवतो को गाली देता था उल्लू का पट्ठा। ठाकुर बच्चा खून खौल गया शिवरतन का। साले की जबान काटी, नाक-कान काटे और हाथ-पैर भी तोड़ दिए।"

"हां-हां, वह हमारे लालचंद का लड़का महताब भी तो तुम्हारे साथ ही पढ़ता था न। उससे ही कल सब हाल मालूम किए थे मैंने। अरे यार, बड़ा तहलका मचा डाला तुम लोगों ने तो। मगर रामजियावन का लड़का पकड़ा तो नही गया।"

"वह तो परसों रात से ही गायब है। ठाकुर साहब ने खबर उड़वा दी कि शिव-रतन फादर की धर्म विरोधी बातो से नाराज होकर कही सन्यासी होकर चला गया है।"

"अच्छा सबक दिया उस अंग्रेज साले को। सुना कि बहुत से मुसलमान भी उससे नाखुश थे।"

"अरे बड़ा बदमाश है। कुंवर साहब ने अच्छा सबक दे दिया उसे।"

"तो इसीलिए ठाकुर साहब ने तुम्हें भी घर से हटा दिया होगा। मगर तुम्हारे खिलाफ कोई इल्जाम तो लगा नही है यार, कम-से-कम मेरे सुनने मे तो यही आया।"

"नही, मैं तो इस वारदात में शामिल नही किया गया।"

"खैर जी, हम तो कहते है कि अच्छा किया, बहुत अच्छा किया, इन सालों को सबक तो मिलना ही चाहिए। साले हिन्दू मुसलमानों के मुल्क में ही रहकर दौलत कमायेंगे और हमारे ही धर्म की बुराई करेंगे। खैर कहो, इस वक्त कैसे आए?"

"आया तो तुम्हारे ही पास हू। तुम्हारी एक चहेती बेगम ने तुम्हें याद किया है।"

तनकुन के पास सरक कर रिखब ने धीरे से पूछा : "अमां किसने ?"

"नवाब चुलबुली बेगम साहिबा।"

"हाय! अमां वह लक्खी सराय वाली की बहन है, हस्सो। बड़ी चक्कूमार हसीना है। तुम्हें कहां मिल गई ?"

तनकुन ने हैदरीखां और रसूलन से हुई अपनी भेंट के सबंध में बतलाया।

रिखब बोला : "मैं आज ही हुसैनाबाद जाऊंगा।"

लौटते समय महताब चद ने उसके रहने के लिए चौपड़ी टोले में अपने मुनीम जी की एक विधवा भावज के यहां व्यवस्था करवा दी। खाना भी वही बना दिया करेगी। किराये और भोजन की व्यवस्था के लिए तनकुन को दो रुपया महीना देना होगा।

तनकुन राजी हो गया। यू तो गली में आकर अपने घर जाने तथा मां, भावजों से मिलने के लिए बहुत फड़फड़ाया किन्तु मकान की बात अधिक आवश्यक थी इसलिए मुनीम जी के साथ चौपडी टोले चला गया। घर की व्यवस्था हो जाने से तनकुन उर्फ बसीधर बहुत प्रसन्न हुआ। उसी शाम वह अपनी सन्दूकची उठा लाया और नए घर में डेरा डाल दिया।

सवेरे नहा-धोके सीधे छोटी कालीजी के दर्शन करने गया और गोलागंज की तरफ जाने वाले एक इक्के पर सवार हो गया। उसने देवीजी के मन्दिर में यह मनौती मानी थी कि अगर बेलीगारद के साहबों से उसकी जान-पहचान गहरी और लाभप्रद सिद्ध हुई तो वह सवा मन दूध से कालीजी का स्नान कराके इनका फूल शृंगार कराएगा।

समय का सही-सही अन्दाज न होने पर भी बंसीधर लगभग समय से पहले ही साहब के बगले पर पहुच गया। बेलीगारद मे आठ के गजर उसके पहुचने के बाद ही बजे थे। ठीक साढ़े नौ बजे माल्कम साहब टोप लगाये हुए अपने बंगले से निकले। फाटक पर पालकी कहार, साहब की प्रतीक्षा कर रहे थे। अधेड़ और मोटे थुलथुल माल्कम के साथ एक तन्वंगी गौरवर्णा सुन्दरी युवती भी बाहर आई। पालकी पर बैठने से पहले माल्कम ने उस सुन्दरी का चुम्बन लिया। तनकुन आश्वस्त हो गया कि यही वह श्रीमती माल्कम हैं जिनसे उसको मिलना है। माल्कम के साथ उस गौरांगी को देखकर तनकुन को न जाने क्यों बड़ी चिढ़ के साथ एक देसी कहावत की याद आयी—"छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।"

साहब की पालकी भीम के अखाडे की ओर बढ़ गई। वह दरबान के पास गया, अधेली टिकाई और कहा : "हुजूर मेम साहब से जाकर कहो कि पार्किन्सन साहब का भेजा हुआ आदमी खिदमत में हाजिर हुआ है।"

जब तक तनकुन अपने मन मे यह निश्चय भी न कर पाया था कि दरबान उससे अधेली पाकर मुस्कुराया था या पार्किन्सन का नाम सुनकर, तब तक दरबान बगले के भीतर से लौट भी आया और बडे अदब के साथ झुककर उसे भीतर का रास्ता दिखलाने लगा। भीतर कमरे में श्रीमती नैन्सी माल्कम बैठी हुई थी। तनकुन को देखकर मुस्कुराई, एक कुर्सी की तरफ इशारा करके बैठने को कहा। बंसीधर अदब से बैठ गया।

नैन्सी माल्कम बोली : "मिस्टर पार्किन्सन ने कल शाम को मुझे क्लब में बतलाया था कि आप अंग्रेजी भी जानते हैं।"

"जी, किसी हद तक बोल समझ तो लेता हूं और यह इच्छा भी है कि आपकी इस शानदार जबान को उर्दू, फारसी की तरह ही बोल सकू।"

नैन्सी माल्कम बंसीधर को टकटकी लगाए हुए देख रही थी। बोली : "मेरी आया को महलों से एक खत मिला है, बादशाह की किसी बेगम का है वह खत। बहुत

ही खुफिया दस्तावेज है जो खास रेजीडेंट साहब को देने के लिये भेजा गया है। मैं यह जानना चाहती हूं कि क्या वह पत्र उन्हें देने के काबिल है।"

"आपके दफ्तर मे भी कोई फारसीदां मुंशी···"

"है तो, मगर मैं उससे पढ़वाना नहीं चाहती। वह बहुत बदमाश है। और मैं अपने पति को भी कुछ बताना नहीं चाहती जब तक कि मुझे भी उस पत्र के बारे में जानकारी न हो जाए। मैंने इसीलिए मोंटी, आई मीन मिस्टर पार्किन्सन से किसी पर्शियन पढ़ने वाले की मांग की थी। मैं वह खत लाऊं?"

"जी हां, और आप चाहें तो उसका अनुवाद भी लिख लें।"

पत्र वाजिदअली शाह की उमराव बेगम ने रेजीडेन्ट बहादुर की सेवा में भेजा था। उसमें यह शिकायत भी की गई थी कि, वह दो पत्र पहले भी उनकी खिदमत में भेजवा चुकी हैं मगर उन्हें साहब की तरफ से कोई उत्तर नहीं मिला। इसलिए उन्हें शक है कि वह पहले खत उनके पास तक शायद नहीं पहुंचे हैं। तभी दूसरे जरिए से यह खत भिजवाया जा रहा है। मामला बहुत संगीन है। रामपुर का कोई सादिकअली नामक एक गुंडा पिछले तीन-चार महीनों से इस शहर में है, और नवाब सआदत अली खा के मकबरे में रहने वाले गवइयों से मिलकर उसने रज़ीउद्दौला को अपने षड्यंत्र में मिला लिया है। बादशाह की एक दूसरी बेगम सरफराज महल भी इस षड्यंत्र मे शामिल हैं। इन लोगों ने मिलकर महल्ले मुफ़्तीगंज के एक मकान में अमीरुजिन्नात शाह सुलेमान का ढोंग करके सादिक को छिपा रखा है। वे दो-तीन बार बादशाह को मुफ़्तीगंज वाले मकान में ले जा चुके हैं और बादशाह सलामत उस जिन्नातों के ढोंगी बादशाह से बड़े प्रभावित हो चुके हैं। अब तक वे लोग भोले बादशाह से लगभग दो लाख रुपये लूट चुके हैं और उन्हें इंग्लिश साहबान तथा कुछ बड़े-बड़े स्वामिभक्त ओहदेदारों के खिलाफ झूठी सच्ची शिकायतें करके और भी रुपया लूटना चाहते हैं। इनसे बादशाह की जान को भी कुछ खतरा हो सकता है। साहबे आलीशान बहादुर ने अगर इस पर जल्द कोई कारवाई नहीं की तो शायद कोई बड़ी दुर्घटना भी हो सकती है।

उमराव बेगम का वह पत्र बड़ा विस्फोटक था। नैन्सी ने अंग्रेजी में उसका अनुवाद किया और फिर बंसीधर से बोली: "मैं पिछले कई दिनों से इस पत्र को पढ़ाने के लिए परेशान थी, इसको पढ़ने के लिए मैं आपको क्या नजर करूं मि० बंसीढर?"

बंसीधर बोला: "आप तो मुझे शर्मिन्दा करती हैं हुजूर। इस खत को पढ़ने के बहाने मैं आपके पास तक आ सका यही बहुत बड़ा इनाम मुझे मिला है। अब इजाजत दीजिए और फिर जब कभी कोई काम हो तो अपने इस गुलाम को फौरन बुलवा लीजिएगा। मैं अपना पता दिए जाता हूं।"

बिदा देते समय नैन्सी मुस्कुराकर बोली: "पर्शियन स्कालर के नाम पर मैंने तो *समझा था कि कोई सफ़ेद बुर्राक़, दाढ़ी मूंछोंवाला खुर्राट किस्म का मुल्ला मौलवी* आएगा। मगर आप तो बहुत जवान और खूबसूरत निकले। एक बार कल शाम चार बजे आप मुझसे फिर मिल लीजिए तब मैं आपको बतलाऊंगी कि आपकी इस मेहनत का क्या फल निकला।"

"जी, बहुत अच्छा।"

"और मिस्टर बंसीढर, मेरे कलकत्ते के एक दोस्त पर्शियन और संस्कृत की पुरानी किताबें खरीदने के बहुत उत्सुक हैं। उम्दा किताबों पर उम्दा दाम भी मिलेंगे और आपको कमीशन भी बहुत अच्छा दिया जाएगा।"

बंसीधर प्रसन्न होकर बोला: "इस काम में मैं आपकी मदद कर सकता हूं

हुजूर। जल्द ही कुछ किताबें लेकर खिदमत मे हाजिर होऊंगा। मगर मुझे यहां पहुंचने मे अगर कुछ देर सबेर हो जाए तो हुजूर मुझे माफ करें। मेरे पास विलायती घड़ी नहीं है। इसलिए आप लोगो की तरह से वक्त की ठीक पाबंदी नहीं कर पाता हूं।"

"ओह, ठहरिए, मैं आपको एक बहुत अच्छी घड़ी प्रेजेंट करती हूं।"

नैन्सी माल्कम दूसरे कमरे मे गई और कुछ देर के बाद सोने की चेनदार एक घड़ी उसे लाकर दी। कहा . "इसे खोलिए।" हाथ से हाथ का स्पर्श हुआ, बिजली-सी दौड़ गई। तनकुन ने जब ढकना खोला तो सनाका खा गया। घड़ी में नर-नारी रति का अपूर्व सक्रिय जोड़ा बना हुआ था।

नैन्सी ने आंख नचाकर कहा : "ओह आपने तो राग साइड खोल ली। टाइम (समय) तो इस ओर बताया जाता है।" कहकर उसने घड़ी का दूसरी ओर का ढक्कन खोल दिया।

दो-दो बार हाथों का स्पर्श मिला, आंखो से आंखो का। गुदगुदी भरी पहेली-सा आनन्द बोध हुआ। बसीधर मन-ही-मन घबरा गया और बंगले से बाहर चला आया।

4

श्रीमती नैन्सी माल्कम के बगले मे चलकर बंसीधर माली खां की सराय की ओर पैदल ही बढा। सकरी गलियां, वह भी कीचड़ और बदबू से भरी हुई। सड़क के घर सुथरे और खुशनुमा हैं। जब से कैसरे अवध नवाब वाजिदअली शाह ने कैसरबाग के महलो को पीले केसरिया रग मे रगवाने का चलन चलाया है, तब से अधिकतर रईसों ने अपनी हवेलियो को पीले रंग से ही पुतवा रखा है।

मच्छी भवन का किला, नवाब आसफुद्दौला का इमामबाड़ा, कोतवाली, रूमी दरवाजा, कुरियाघाट और हुसैनाबाद के मुहम्मदअली शाही इमामबाड़े के किनारे-किनारे से गुजरता हुआ पीर बुखारे से होकर माली खां की सराय पहुचा। आसफुद्दौला के जमाने की कोठियां अब विधवाओं के सिंगार की तरह फीकी हो चली हैं। तनकुन सोचने लगा, हमारे यह बादशाह लोग कितने नालायक हो गए हैं कि नयी इमारतें बनवाने के जोश मे पुराने महलों को नजरअंदाज कर देते हैं। पादरी जैकिन्स अकसर यह कहा करता था कि विलायत वाले अपनी कदीमी चीजों की कद्र करते है। वहां का बादशाह अपने खानदानी महल बकिंघम पैलेस मे ही रहता है। वहा की सड़कें और गलियां साफ-सुथरी और सलीके की हैं। वह दु ख के साथ सोचने लगा कि हमारे देश मे भी क्या कभी अच्छे दिन आ सकेंगे'''यह औले-दौले दरबारी रईस भला क्या किसी अच्छे प्रबन्ध को करने की बुद्धि रखते हैं। मूर्ख हैं सबके सब। अफीम और शराब नौशी मे अपने आपको तबाह किए हुए यह रईस सच पूछो तो हमारे अवध के लिए शाप बन गए हैं। इनके ऐश के साधन जुटाने के लिए शहरों और गावो की दीन-दुर्बल प्रजा की दौलत और खूबसूरत

लड़के लड़कियां आए दिन लूटे जाते है। लूट-पाट, व्यभिचार, नशाखोरी और रिश्वतखोरी ही यहां का धर्म और कर्म है। वह चिढकर सोचने लगा कि यहा के हिन्दू और मुसलमान दोनो ही उल्लू के पट्ठे हो गए हैं। अंग्रेज ही इन्हें जूते मार-मार कर अक्ल सिखलायेंगे।

घुड़सवारो, पालकियों, डोलियो और इक्कों की चहल-पहल, हाथ पर बाज बैठाये या बटेरों को मुठियाते हुए लोग, बुर्केवालियां, तीखी कनखियों और जबानों वाली, इतरा-इतरा कर चलने वाली छमक छल्लो महरिया रास्तो को रंगीन और गुलजार बना रही थी। उनकी रंगीनी अठारह बरस के नवजवान बंसीधर उर्फ तनकुन के दिल मे ताजी-ताजी बसी हुई नैन्सी माल्कम की मोहनी मूरत की बार-बार याद दिला देती थी। क्या नायाब घडी दी है उस विलायती सुन्दरी ने। कितनी आजाद तबियत वाली होती हैं यह विलायती मेमें कि पहली ही जान पहचान में शर्मोहिजाब के ताले तोड़कर बेझिझक किसी से भी आंखें लड़ा लेती है। बसी ने अपने जवान मन की गुलाबी आशाओ और इच्छाओं को समझ और संयम की लगाम दी। सोचा, कि नैन्सी मेमसाहब प्यार तो करती है रेजीडेन्ट के सिकत्तर साहब पार्किन्सन को, मगर आंखें शायद हर खूबसूरत जवान से लड़ा लेती हैं। तनकुन को इस बात का एहसास है कि वह सुन्दर है। हसरत-भरी प्यासी निगाहो से उसको देखने वाली ऐय्याश औरतो से दो-चार बार उसका साबका पड़ चुका है मगर वह हमेशा बच के निकल आया'''लेकिन, मान लो तनकुन, कि यह विलायती हुस्न आगे भी घड़ी भेंट करने की तरह उसे बहानो-बहानो से रिझाये और ललचाये तो क्या वह उससे बच सकेगा। सिकत्तर पार्किन्सन ने कल उसे चौकलेट पिलायी थी, उसने पी भी ली मगर आगे ये नैन्सी मेमसाहब उसे अपने हाथो से गोश्त खिलाये या शराब पिलाये, या अपनी जोशे जवानी मे दस-पांच कदम और भी आगे बढ़ने की कोशिश करे तो क्या तनकुन इन्कार कर देगा ? '''हां'''ना ''। संयम सधा मन, पोली हथेली मे पकड़ी मछली-सा फिसल-फिसल पड़ता था। नैन्सी शराब की तरह उसके जवान दिल और दिमाग पर छायी हुई थी। रग्घू तबोली के यहां दो बीड़े पान खाये और दो पुड़िया में बंधवाकर रख लिए। उसने रग्घू से पूछा—"अमा, इधर कोई पण्डित मौलवी ऐसा तो नही रहता जिसके घर में पुरानी पोथियां हो और वह उन्हें बेचना चाहता हो ?"

"हमें तो कुछ ज्यादा मालूम नही है भैया। बाकी पता जरूर लगायेंगे।" फिर एकाएक कुछ याद आने पर कहा : "कश्मीरी मोहल्ले में एक रैना पण्डित रहते हैं, उनके यहां सुना है कि पुरानी सस्कीरत की पोथियां बहुत थी, चाहो तो वहा पता लगाओ भैया। मगर वह बड़ा पगलोट पंडित है, तनकुन भैया। कोई आठ-दस बरस हुए उनका खानदान लखीमपुर में किसी रिश्तेदारी में गया था। कशमीरी औरतें तुम जानते हो कि खूबसूरत तो होती ही हैं। रस्ते में किसी नवाब ने उनकी गाड़ी लुटवा दी, पडत जी के दो नौजवान लड़के साथ मे थे, बेचारे मारे गए। औरतें कहां गईं किसी को मालूम नही। तभी से पगला गए हैं। कीमिया से सोना बनाने के चक्कर में रहते हैं। ऐसा करो तनकुन भैया कि कश्मीरी महल्ले में हमारे एक जान पहचानी की दूकान है, स्यामा तेली नाम हैगा उसका। सारा महल्ला जानता है उसको, उससे पूछोगे तो कीमिया वाले पंडत जी का पता तुम्हें जरूर मिल जायेगा।"

लगभग दिन ढले वह अपने चौपडी टोले वाले नये डेरे पर पहुंच गया। मकान मालकिन रुक्को पुरतानी से मालूम हुआ कि इन्दर चन्द की कोठी मे उसके लिए रिक्खब भैया का यह संदेसा आया था कि जब तुम आओ तो संदेशा पाते ही लक्खी सराय जरूर चले जाना।

बंसी यह तो समझ गया कि रसूलन या हैदरी खां ने बुलवाया होगा। वह खुद भी

उनसे जल्द से जल्द मिलना चाहता था, मगर चलते-चलते वह इतना थक गया था कि आराम करना चाहता था। पुरतानी चाची की बनायी हुई पिट्ठी की परौंठियां और घुइयां की तरकारी खाकर वह अपनी खटिया पर लेट गया। सिरहाने की ओर दीवट की ओर रखे दिये की लौ मे उसने घड़ी निकाली। उस समय उसकी घड़ी में रात के आठ बजकर चौदह मिनट हुए थे। थोड़ी ही देर मे पुरतानी चच्ची यह खबर लाई कि शाही महलो का कोई हरकारा दरवाजे पर खड़ा उसे पूछ रहा है। आश्चर्य हुआ शाही महलों से हरकारा क्यों आया। वहां तो उसकी कोई जान-पहचान भी नही है। खैर, हरकारे से मिलना तो पड़ेगा ही। हरकारे ने उसे एक थैली दी और एक रुक्के पर यह रसीद लिखवायी कि अशफाकुसुल्तान, जनाब उमराव बेगम साहिबा से सोने की सौ अर्शफिया बतौर इनाम के पाईं और यह रसीद लिख दी ताकि सनद रहे और वक्त जरूरत काम आये।

तनकुन ने रसीद लिख दी और अर्शफियों की थैली लेकर ऊपर अपने कमरे में आया। यह अर्शफियां उसे उमराव बेगम ने भेजी हैं या नैन्सी मेम ने भिजवायी हैं? जो भी हो, इससे यह प्रकट हो गया कि बेगम साहिबा का खत साहबे आलीशान तक पहुच गया है और उसी की खुशी में बंशीधर को यह इनाम नैन्सी मालकम की सिफारिश से भेजा गया है।

नैन्सी की याद मे उसकी नीद गायब हो गयी। सबेरे तड़के ही उठ बैठा। निकट के कुएं से पानी खीचा, नहाया, ग्यारह बार गायत्री मन्त्र जपा। अपने पट्टेदार बालो पर कंघी की, टोपी, अंगरखा, पायजामा पहना और नीचे आंगन में खड़े होकर आवाज लगायी—"चाची, हम ऊपर आय जाएं?"

"आ जाओ बेटा, तुमरा कोई परदा हैगा हियन।"

ऊपर ठाकुर जी के दालान में रुक्को पुरतानी चौकी पर अपने ढेर सारे ठाकुर जी काठ के दो सिंहासनों से उठा-उठा के रख रही थी। साथ ही उनके टूटे-फूटे संस्कृत के श्लोकों का छकडा भी चल रहा था—

"सान्ताकारं भचक सैनं पदंनाभम सुरेसम···"

"चाची, हम तुमरे लिए ये रुपैया रखे जात हैं, आज भी दिन मे तो हम आ न सकेंगे, हा, ब्यालू के बखत तलक जरूरें आ जायेंगे। कोई हमे पूछे आयँ तो बताय देना।"

"अरे बेटा, खर्चे खातिर अधेली तो कल्है हमे दै गये रहे। ई रुपैया का का होई?"

"रख लेओ चाची, काम ही आयेगा।"

निकला तो इस इरादे से था कि जिन मुन्शी नाबीना के यहां से उसके उस्ताद मुन्शी हिम्मत बहादुर किताब खरीदा करते थे उनके यहां से जाकर कुछ माल टटोल देखें। लेकिन फिर एकाएक कुछ याद आ जाने से सीधे लक्खी सराय की ओर ही कदम बढ़ा दिए। हैदरीखा अभी घर से अस्तबल नही आए थे, बी रसूलन बांदी सराय के पिछवाड़े बने अपने रिहायशी कमरे में नहारी (जलपान) कर रही थी। बंसी ने नौकर से जाकर कहा: "चच्ची से कह दो कि मुसद्दीमल बजाज का बेटा बंसीधर आया है और उन्ही से एक जरूरी बात कहनी है।"

रसूलन बांदी ने उसे अपने पास बुलवा लिया। उसे देखते ही अपनी कत्थे रंगी बत्तीसी चमका के बोली: "आओ-आओ बरखुर्दार, तुम्हारे चच्चा तो आजकल घर में ही सोते हैंगे, उनके आने मे अभी कम-से-कम आधा पहर तो और लगेगा ही।"

"मुझे बात आप ही से करनी है, चच्ची।" फिर उमराव बेगम की सारी कथा

सुनायी और कहा : "वह खत रजीडेंट बहादुर तक जरूर पहुच गया होगा। आप अगर मुनासिब समझें तो अपनी बहन साहिबा के जरिये ये खबर बादशाह सलामत तक पहुंचा दें। इससे पहले कि बेलीगारद से कोई संदेशा हुजूर जानेआलम तक आये, उससे पहले ही बादशाह सलामत अपना फैसला कर लें।"

बी रसूलन घ्यान से उसकी बातें सुन रही थी, फिर कुछ सोच कर बोली : "तुमने यह बिल्कुल सही बतलाया कि रजीउद्दौला और उसकी बहन का हाथ भी इस कारनामे के पीछे है। लाखों लूट रहे हैं निगोडे, और वह हरामजादी सरफराज महल भी इन्ही के साथ मिली हुई अपने रिश्तेदारों का भला करवा रही हैगी। ये रजीउद्दौला निगोड़ा कल तक तो तबला बजाता था और आज बड़े-बडे लोगो से अपने सामने सलामे झुकवाता है दईमारा, किसी की सुनता ही नही। जानेआलम पर ऐसा जादू कर दिया हैगा कमबखत ने कि उसके आगे वह किसी की सुनते ही नही हैंगे।"

"मेरी राय नाकिस में आप अपनी बहन बेगम साहिबा को यह सलाह देने के लिए उकसाइये कि बादशाह सादिकअली को रेजिडेंट बहादुर का हुक्म आने से पहले ही गिरफ्तार कर लें। इससे साहबे आलीशान पर अच्छा असर पड़ सकता है।"

"हा, ये बात तो तुमने लाख रुपये की कही, तनकुन बेटे। फिर तो इस कलमुंही सरफराज महल की नाक चोटी कट के ही रहेगी। निगोड़ी बहुत खार खाती है हमारी हस्सो से। अभी तक तो उसी के सुरीले गले पर निछावर थे हमारे हुजूर। अब जब से वह मेरी हस्सो की बलइयां लेने लगे है तब से उस हरामजादी के तनबदन मे आग की लपटें उठा करती हैं। खुदा उसे दोजख में भी कभू चैन न लेने दे।"

"मेरे ख्याल मे चच्ची, आप यह मशिवरा अपनी बहन को अभी जाकर दें, मेरे ख्याल में आज दोपहर या तीसरे पहर तक बेलीगारद से हुजूर बादशाह सलामत की खिदमत मे भी कुछ हिदायतें जरूर भेजी जायेंगी और बादशाह सलामत को यह कहने का मौका मिल जायेगा कि मेरी सरकार बदमाशो और जालसाज़ो के खिलाफ पहले से ही चौकन्नी रहती है। इसके अलावा चच्ची, एक बात और है, हुजूर रेजीडेन्ट बहादुर के पास इससे पहले भी दो बार शिकायतें भेजी गयी थी मगर वो दफ्तर में ही दबा ली गयी। उससे लगता है कि इग्लिशों के दफ्तर का फ़ारसी मुन्शी भी रजीउद्दौला वगैरह से मिला हुआ है। कहीं पहले से ही सादिकअली को अपनी गिरफ्तारी की भनक अगर पड़ गई तो मामला फिर कुछ-का-कुछ हो जायेगा।"

"ये सलाह तुम्हारी करोड़ों रुपये की लगती है बरखुर्दार। मैं अभी जाती हूं महलो में।"

"एक मेहरबानी मेरे ऊपर और करती जाइये चच्ची, अपने किसी मातबर आदमी को मुन्शी नावीना के घर भिजवाकर फारसी की कोई उम्दा इश्क़िया रंग की किताब खूबसूरत-सी मंगवा दीजिए। उसमें तस्वीरें हों तो और भी अच्छा। मैं साहबे-आलीशान के सिकत्तर बहादुर को नजर करूंगा, उनसे बडे-बडे काम निकालने हैं। दो-चार-पांच अशर्फियों तक खर्च करने को तैयार हूं।"

"रजीडड साहेब का वो सिकत्तर बहादर जो अभी बिलायत से आया हैगा, उसके वास्ते ?"

"जी हां—जी हां।"

"अरे भइया, उसको पटाने के खातिर तो और किसको कहें खुद खास महल साहेबा भी···अब क्या कहूं तुमसे, बच्चे हो। मगर एक बात कहू, मेरी हस्सो के गोयन्दे यह खबर भी लाए हैं कि वह सिकत्तर बहादुर बेलीगारद के कारकुनेखास की जुरुवा को

फंसाये हैगा, किसी और की तरफ देखता ही नहीं।"

"उससे मेरी बहुत दोस्ती हो गई है, चच्ची। फारसी किताबों का शौकीन है।"

"अरे, ऐसी किताबें तो हमारे मेहमानों की तफरीह के लिए भी खरीदी गयी थी। ऐसा करो कि मैं अज्जो को बुलवाये देती हूं। तुम उसके साथ हमारे कुतुबखाने में चले जाओ, जो मुनासिब समझो वह किताब ले जाना। मैं अब जाती हूं।"

नौकरानी ने बेसन से रसूलन के हाथ शिलाबची मे धुलवाये। उससे कहा : "भैया को अज्जो के पास ले जाओ और अस्तबल मे जाकर कहो कि एक घोड़ी नई बग्घी भी मेरे लिए फौरन से पेश्तर तैयार कर दी जाए, मैं महलों में जाऊंगी।"

"एक मेहरबानी मेरे ऊपर भी कीजिए, चच्ची, हो सके तो मेरी ललकौनी घोड़ी भी कसवा दीजिए। आज दिन भर शहर मे इधर से उधर दौड़ना है। ये रुपया रखे जाता हूं, चच्चा को···"

"रखो अपना रुपया अपने पास," फिर बादी से कहा : "ललकौनिया हो तो उसे भी कसवा दे, नही तो कोई दूसरी घोड़ी भइया के लिए फौरन से पेश्तर तैयार करवा दी जाए।" रसूलन बी झटपट कपडे बदलने के लिए दूसरे कमरे मे चली गयीं। नहारी की झूठी तश्तरिया उठाते हुए बांदी ने अपनी शरबती कनखियों से तनकुन को अपने साथ चलने का इशारा किया। अज्जो भी आंख मारकर उसे कुतुबखाने मे ले गयी। 'शाहेनामा' और 'मसनवी शीरी-फरहाद' उसने पसन्द की। बहुत ही खूबसूरत ढंग से सुनहरे हरफों से लिखी गयी किताबें थी।

चलते वक्त उन्हें चच्ची को दिखलाया। चच्ची बोली : "अरे बेटे, जो तुम्हें मुनासिब लगे वो ले जाओ। तुम्हारी बदौलत उस रिखब दास जौहरी से भी हमारी बडी फायदेमद बातें हुई और आगे भी उससे बहुत फायदे होने की उम्मीद है। तुम्हारे चच्चा तुम्हारी बड़ी तारीफ कर रहे थे। एक बार शाम को आना जरूर।"

"जी हा, जरूर आऊगा।"

अपनी ललकौनिया को देखकर बसीधर खुश हो गया। उसे थपथपाया, प्यार से चूमा और लपक कर चढ़ गया।

कश्मीरी महल्ले जाकर ही दम लिया। श्यामा तेली की दूकान का पता आसानी से मिल गया। रैना पडत की हवेली श्यामा तेली की दूकान की सामने वाली गली मे ही थी। चार मजिल की बड़ी इमारत के सारे दरवाजे नीचे से लेकर ऊपर तक बंद थे। जगह-जगह से चूने के पर्त उखड चुके थे और लखौरिया स्वर्गीय रईसों, नवाबो की खस्ता-हाल रखैलों की तरह मनहूस दिखलाई पड़ने लगी थी। दो-तीन जगह पीपल के पेड़ भी उगते नजर आ रहे थे। बड़ी देर तक कुण्डा खटखटाने के बाद भीतर से आवाज आई : "कौन हैं?"

"आपका एक गुलाम है पडतजी, जरूरी काम है, दरवाजा खोलिए।"

गोरे, चिट्टे, लम्बे और खिचडी बालो के पडत तरलोचन नाथ रैना, हाथ मे *पखिया लिए हुए बाहर आए। दरवाजा खोला। थोड़ी देर तक पखिया डुलाते हुए* बंसीधर को देखते रहे, फिर मुस्कुराते हुए कहा : "क्या गर्मी है!"

बंसीधर कुछ जवाब न दे सका। ढलते कातिक की हल्की ठड भरी सुबह किसी सूरत मे भी गर्म तो कही ही नही जा सकती थी, तिस पर पडत साहब का पखिया डुलाना बंसीधर के लिए ताज्जुब भरा था। बंसीधर कुछ जवाब न दे सका। रैना पंडत का मुंह देखने लगा। पडत साहब फिर बोले : "कहिए, क्या काम है? मैंने आपको पहचाना नही।" तनकुन ने अपने कमरबद मे खुसा हुआ छोटा बटुआ निकाला, उसमे से पाच रुपये

"चेखुश ! गोया की लिल्ली घोड़ी लाल लगाम । यह अंग्रेज लोग सल्तनतें भले ही लूट लें मगर क्या खा के अरबी जबान पढ़ेंगे साले।"

"पंडत जी, आप बिल्कुल बजा फरमा रहे हैं। मगर वह बात ऐसी है कि इस गोरे का वालिद इंग्लिशमैन था और वालिदा अरबी नस्ल की। इसीलिए ईसाई होते हुए भी अपने बेटे को कलामे पाक पढ़वाया, अरबी पढ़ाई। और ये किताब भी मेरा ख्याल है, उसको अपनी वालिदा से ही मिली होगी।"

पंडत तरलोचन नाथ रैना कुछ सोच मे पड़ गए। उनकी पखिया हिलने-डुलने लगी। बोले : "वह किताब आपने देखी है ?"

"जी, बिल्कुल अपनी आंखो से देखकर आया हूं पंडित जी। पचास दीनारों में किताब शराबी इंग्लिशमैन से खरीद सकते हैं।"

"उल्लू का पट्ठा होगा वह साला अंग्रेज जो ऐसी बेशकीमत किताब बेच रहा है।"

"बजा फरमाया आपने, लेकिन वह महज उल्लू का पट्ठा ही नही, जोरू का गुलाम भी है। चूंकि नुस्खा उसे याद है, पचासों बार सोना बना चुका है इसलिए किताब बेचने को तैयार है।"

"मगर मैं उसे पचास दीनारें कैसे दे सकता हू। जनाब ये मेरी इतनी बडी हवेली जरूर है। बकौल कसे हैं चार तिनके मगर आशियाना है। इसे बेच दू तो रहूंगा कहां ? सोना कैसे बनाऊंगा ?"

"पंडत जी, वो पुरानी सस्कृत की किताबें बेच दीजिए। मैं पचास दीनारें आपको नगद दूगा।"

कई बार गर्मी-गर्मी कहकर पखिया डोलाने के बाद पंडित जी अपने पोथियों का भण्डार दिखलाने के लिए राजी हो गए। लगभग तीन-चार हजार पुस्तकें थी जिसमे से करीब-करीब एक चौथाई तो नष्ट ही हो चुकी थी। पडित जी बताने लगे कि उनके कई पुरखे बड़े विद्वान थे। बड़े-बड़े राजा महाराजाओं में उनका बड़ा मान था। शाहजहां बादशाह के वक्त में कश्मीर छोड़कर इधर आ गए। किसी 'वजहेखास' से उन्हे हिन्दू धर्म, संस्कृत भाषा और तमाम देवी देवताओं से नफरत हो गई है। इस हवेली मे अकेले रहते हुए 20-22 वर्षो मे घर की बहुत कुछ संपदा बेचकर अब तक खा चुके हैं। किसी से मिलना-जुलना या बात करना भी उन्हें अधिक पसन्द नही, सिर्फ एक सोना बनाने का नुस्खा जानने की महत्वाकांक्षा है। कुछ किताबें शारदा लिपि में लिखी हुई थी जो लगभग आठ नौ-सौ बरस पुरानी थी। कुछ मुगलो के जमाने की थी, महाभारत, श्रीमद्भागवत, वाल्मीकि रामायण, वात्स्यायन का कामसूत्र, पतन्जलि का राजयोग आदि कई अनमोल पुस्तकें बसीधर को देखने को मिली। कई सुनहरे हरफों मे लिखी और सचित्र भी थी। वात्स्यायन का कामसूत्र भी सुन्दर लिखावट का और सचित्र ही था। उसे देखकर बसी को नैन्सी माल्कम की घडी याद आ गई। उसने पंडत जी से पूछा : "इनकी क्या कीमत लेंगे आप ?"

"अजी कीमत ईमत क्या, मैंने इन सालियो मे कुत्ते का पाखाना तक उठा के न फेंकूं, इनसे इतनी नफरत हो गई है मुझे। आपके देवी देवताओ से, आपके मजहब से। कुत्तों का मजहब है साला। मुझे दुनिया के तमाम मजहबो से भी सख्त नफरत है। बस, सोना एक बार बना के देखना चाहता हूं।"

"तो इसकी पचास मोहरें पेश करूं पडत जी ?"

"अजी पचास मे तो मैं हरगिज-हरगिज नही दूंगा, भले इन सालियों को दीमको

से घटवा दूं।"

पंडित जी पंखिया डुलाते हुए कुछ झल्लाहट भरे स्वर मे बोले : "जी नही, मुझे इक्यावन अर्शाफियां दीजिए या एक सौ एक। मुझे शुभ रकम ही चाहिए। लेना हो तो लीजिए वर्ना एक-दो-तीन हो जाइए।" तनकुन ने झटपट थैलियां खोली और अर्शाफियां गिननी शुरू कर दी। पंडत रैना बोले : "तो उन गोरे साहब से मुझे कब मिलाइएगा ? मुझे उस किताब की सख्त जरूरत है।"

"कल या परसों मैं उनको लेकर आऊंगा, आप उनसे किताब खरीद लीजिएगा।"

"बेहतर है। अब इस कूड़े को फौरन से पेश्तर मेरे घर से ले जाइए। चलिए-चलिए, फौरन पंसाखा बढ़ाइए अपना। मेरे पास फुर्सत नही है'''क्या गर्मी है !"

पोथियां निकालकर बाहर चबूतरे पर रखी, सब्जी मंडी से एक खड़खड़े वाला खाली लौट रहा था, उसे पटाया, किताबें लादी और फूलवाली गली मे मजदूरों पर लदवा कर उन्हें चौपड़ी टोले के अपने मकान मे लाया। बसीधर बहुत खुश था। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसे अपार सपदा मिल गई हो। उसने सोचा कि घडी की मेंट का एहसान वह कामसूत्र की भेंट से उतार देगा। मगर उस खूबसूरत मेम को भी ये किताबें वह एक साथ नही देगा। सोचा, कामसूत्र तो भेंट कर दूगा और भागवत, महाभारत आदि पोथियों का कम-से-कम पच्चीस या तीस अर्शाफियों मे सौदा करूंगा। उसके प्रेमी को खुश करने के लिए मैंने फारसी की किताबें भी ले ली हैं।'''वो मेमियां उल्लू की पट्ठी यह समझती है कि मुझे बेवकूफ बना लेगी मगर वह यह नही जानती कि मैं खत्री का बेटा हूं, राजा टोडरमल के कुनबे का, जिसके यहां पचास-सौ या उससे भी ज्यादह पीढियो से शिवजी की पूजा होती है।'''यह गर्व भरा सोच आते ही तनकुन उर्फ बंसीधर टंडन तन मन के भीतर दर भीतर लौकिक से पारलौकिक हो उठा। उसी अनुभूति के साथ उसने निश्चय किया कि पहली ही भेंट में उसने मुझे ललचाया, मैं भी आज उसे यह कामसूत्र नजर करके उस लालच को आगे बढाऊं या न बढ़ाऊं, यह अहम् सवाल है। पार्किन्सन शरीफ ईमानदार और समझदार सुलझा हुआ आदमी लगता है मगर उस बूढे थुलथुल की जवान जुरुवा ही किसी जवान के पीछे पड़ जाए तो वह बेचारा क्या करे ! ताजा टका विलायत से आया है। औरत की जरूरत और उसका लालच भला किसे नही (मन के गले में मानो उच्छू चला गया)— स—ताता। मन को खुद अपने ही सामने स्वीकार करना पड़ा कि अनदेखे सबसे बड़े सपने को साकार करने का खुला निमंत्रण देकर नैन्सी ने बंसी के मन में बड़ी सुरीली और मादक तान सुनाई है। पुरुष बनने के जोश से भरी सारी कल्पनाओं में नैन्सी ही अभी प्रमुख सूत्रधारिणी रही और वह लजीली कठपुतली-सा (शिष्यवत् भी) केवल उसका अनुगमन मात्र करने मे कल्पना में अपनी सार्थकता अनुभव करता था। किन्तु अपनी आस्तिकता के गर्व भरे संस्कार ने क्षण भर मे ही उसकी बुद्धि को गधे से घोड़ा बना दिया। इतनी उम्र में इतनी सुन्दरता देकर भी कुल के इष्टदेव महादेव ने उसे सुरक्षित रखा है तो अपनी कभी न देखी हुई बाला पत्नी के सौभाग्य से इस अंग्रेज सुन्दरी के मकडजाल से भी बे-दाग वापस निकल आएगा। ब्रह्मचर्य में बड़ी शक्ति होती है, उस शक्ति का उसे आगे चलकर अच्छा इस्तेमाल करना है। उसे इन अंग्रेजों को जीतना है। वह इनकी जबान सीखेगा, अदबो-आदाब सीखेगा और इन्ही की बदौलत अपनी तकदीर बनाएगा। अंग्रेज कल का हाकिम है। जो इनको ही पहले से साध लेगा वही हिन्दू या मुसलमान जवान अपना नसीबा भी खोल सकता है। और लगता है कि ये मेरे नसीबे का कोई ऊंचा सितारा ही जागा है जो खास रेजिडेन्ट के सेक्रेटरी से भेंट हो गई। मालकम की बीबी से मुलाकात हुई, घड़ी के रूप में बहुत बड़ा उपहार और सांकेतिक निमत्रण भी

मिला, इतने बडे राजनीतिक महत्व का रहस्य हाथ लगा। सबसे ज्यादह तो उस दीवाने कश्मीरी पडत की बेशकीमत दौलत सिर्फ पचास सोने की अशर्फियों में मिल गई। इस बार चन्द्रिको देवी की कृपा से भाग्य अपनी छटा पर छटा दिखलाए चला जा रहा है। बस्तों की छाट कर रहा था कि ऊपर रुक्को पुरतानी आ गई। "हम कहा तनकुन मैंया तो आज बहुत सारे पोथी पतरन के साथ आए हैं। सोचा लाव हमहू देख आवें। ई सब फारसी की हुइहैं भइया ?"

"नही चाची, ई सब संस्कृत की और कश्मीरी जबान की पोथियां हैं।"

रुक्को पुरतानी पल्ले से अपने दातों को ढांक कर हंसी : "अरे फारसी के तो अलम फजल जाने का हुई गए हो, हमरे देवर बतावत रहें कि अंग्रेजन की बोलियो सीखि लियँ हो, अब संस्करतो पढियो ? कित्ता पढ़ियो बचुआ। अब तो मन्नो बीबी की विटेवा का बिहाव हुई गवा, अपने बाप ते समझौता करि लेय।"

तनकुन रुक्को चाची को आश्चर्य से देखने लगा। "इसके माने आप सब जानती हैं चाची ?"

रुक्को पुरतानी फिर हंसी : "अरे तुमका कौन नहीं जानत है तनकुन मैंया, इत्ती छोटी उमिर मा अलम फजल भए, सरकार से सनद मिली और ऊपर से मन्नो बीबी के लाखन रुपए की माया तियाग के चले गए। भला तुमका कौन नही जानत हैगा। और दुसरी बात यह है—" कहकर फिर पल्ले से दांत ढांककर हंसी और कहा : "अरे जिजमानी के रिस्ते से तुम हमरे दामादौ लगत हो।" फिर हंसी। तनकुन चौंक कर उनका मुंह देखने लगा। वह बोली : "नबाबगंज वाले लाला सुगनामल हमरे जेठ के जिजमान हैंगे। हम लोग नबाबगज के तौ हैंए भइया। ऊ तौ कहौ ई दोनो भाई मुनीमत के काम सीख के यहां चले आए। बाकी तुमरे ससुर की पुरताई हम ही करत हैंगे। सारस्वत ब्राह्मण हैंगे हम लोग।"

बंसीधर ठूठ जैसा सिर पकड़े बैठा रहा। इधर कुछ दिनों से उसके जीवन में घटनाएं कितनी तेजी से घटी हैं और घट रही हैं···और अब यह मकान मालकिन रुक्को चाची उसके ससुराल की घनिष्ठ निकल आईं। इन बातो से उसका दिमाग चकरा गया है।

रुक्को चाची अब कमरे के भीतर आ गई थी। रुक्को पुरतानी और बंसीधर के बीच में बस्तों की एक छोटी-सी दीवार थी। पुरतानी जी बडे अपुनपौ के साथ अपने दोनों हाथ बस्ते पे इस तरह रखे हुए कह रही थी कि मानो वह हाथ तनकुन के कधों पर रखे हो, कहने लगीं : "तुम ई जान लेव तनकुन मैंया की साल भरे मे दुई-तीन फेरे हम नबाबगज के लगावत हैंगे, हमरे देवर भी जात हैंगे। हम जब नबाबगज जात हैं तो सुगनामल की घरवाली से जरूरे जरूर मिलं जात हैं। तुमरे सास और ससुर तो तुमसे बहुत ही खुस हैंगे, हमें सब मालूम हैगा। बाकी तुमरे बाप से उनकी ठन गई है। उनके घर यह अपनी चमेलो का न भेजहैं, मगर जो हम जाय के कहैं कि लाला जी, तनकुन मैंया हमरे घर में किराएदार बनकर आए गए हैंगे तो वो तुमरी बहुरिया को भेजने से इन्कार न करिहैं।"

"आपकी बातें बिल्कुल सही और मुनासिब हैं। जरा मेरा काम-धाम लग जाने दीजिए, यहो बुलाकर रखूंगा। और आप जब इस बार नबाबगंज जाएं तो मेरी ओर से कुछ तोहफे जरूर ले जाएं।"

"अरे भइया, सिरी राधा किसुन तुम्हरी उमिर हजारी करें। हम तो नबाबगंज जाए खातिर उधार खाए बैठे हैं। हमरे जेठ अब बहुत बुढाय गए हैं भइया। साठ से ऊपर चले गए हैंगे। अब ही तलक तंदरुस्ती अच्छी रहै, बहुत नीकी रहै, बाकी दुइ बरस भए

जब हमरे घर वाले, तुमरे चाचा, अचानक पूजा में बैठे-बैठे बैकुण्ठ चले गए। तब ते—" कहकर पल्ले से आंखें पोंछने लगी।

"अच्छा, चाचा पूजा करते-करते ही बैकुण्ठवासी हुए थे?"

बिलखती आवाज में चाची बोली: "हां भइया, कबहूं मूड़ो न पिरावा उनका, मजे से गल्ले की दलाली करत रहै। भगवान हमका कौनो लडका-बिटिया नही दिहिन, बाकी तुमरे चाचा हमका ऐसा हाथन पर रक्खिन रहा कि तुमसे क्या कहैं। अबही चार साल पहले तो यह मकान खरीदा रहै। का कहैं अब।" एक बार फिर आखें पोंछी और फिर बिलखता स्वर अचानक सध भी गया। उदासी बनी रही। कहने लगी: "आज चार-छह दिनन से रोज हमका सपना मां आय के उई कहते हैंगे कि रुक्मिन जाओ, बड़े भइया के दर्सन करि आवौ। कहां से जाय भइया। देवर हमरे और सब तौ ठीक हैं, पर रुपैया पैसा से कबहूं मदद नाही किहिन। गिरहस्ती भी बड़ी है। क्या करें बिचारे?"

"तुम कब नवाबगंज जाना चाहती हो चाची?"

"अरे हमतौ कल्हें जाय सकत हैंगे भइया। बाकी एक तौ खर्चा भी हमरे पास कम हैगा, दूसरे तुमरे खान-पियन की भी फिकिर लग गई है अब तो।"

"आप दोनों फिक्रें छोड़ें, मेरी ससुराल मे मेरी बीवी से छोटे कितने बच्चे हैं?"

"छोटे? भइया, ई जानि लेव कि दुइ तो तुमरे साले है मन्नो और धन्नो, और दुइ बच्चे तुमरे बडे साले के हैं। एक कोई सात बरस का और एक गोदी की बिटिया है। और दुइ ही तुमरी सलहजे है। छुटकी के कौनो बाल बच्चा नाही भया अबही तलक।"

"अच्छा चाची, इस वक्त तो मैं जा रहा हू। इशाअल्लाह चिराग जले तक वापस लौट आऊंगा। और अपने आने-जाने या मेरे खाने-पीने की तकलीफो की चिन्ता न करना। तुम नवाबगंज जाओ। खर्च की फिक्र न करना।"

रुक्को पुरतानी प्रसन्नता से खिलकर बोली: "ई अल्ला-अल्ला का होत हैं भइया, अरे तुम तो···"

बंसीधर झेंपकर खडे होते हुए बोला: "संगत का कुछ-न-कुछ असर पड़ ही जाता है चाची वैसे—खैर, तो मैं अब चलता हूं।"

"ई घोड़ी जो दरवज्जे पर बधी है, का मोल लिए हो भइया?"

"नहीं चाची, इसे लौटाने भी जा रहा हू। मेरी इन किताबों को चूहों से बचाइएगा।"

"निसाखातिर रहो, अरे कल रात में जो सब बातें हमरे दिल में लौट-लौट के आई तब ही से तुम हमरे किरायेदार कम, बेटे जादा हुई गए होगे। हम तुमरी खातिर तिमजिले का सब खाली कर देंगे। अब ऊपर बरतै वाला कौन रहा। बाकी ई बैठिका के कमिरा मा भी मूस ऊस कमें आवत हैंगे।"

बंसीधर ललकौनी पर सवार होकर अपनी गलियो से निकला, सब्जी मण्डी होकर मेवों की सराय से आगे नखास की ओर निकल गया। लक्खी सराय दौलतपुरे के पास थी। दिन का तीसरा पहर ढलान पर आ रहा था। संयोग से हैदरीखां अपने तख्त पर थे। रसूलन भी अपना पानदान फैलाए बैठी थी। हैदरीखां ने पालकी उचका कर तनकुन का स्वागत किया: "अरे आओ-आओ बरखुर्दार, तुम्हारी उमिर हजारी होये। तुम्हारी चच्ची अभी तुम्हारा ही जिक्र कर रही थी।"

"ये हमारी प्यारी ललकौनियां सम्भालिए चच्चा।" कहकर घोड़ी की गर्दन थपथपाई और उसे चूमा।

"गफ़ुरवा बे, ललकौनियां भीतर ले जा।"

"तुम उसे छोड़कर यही आ जाओ भइया। वह कहीं जाएगी नहीं। बड़ी समझ-दार घोड़ी है।"

रसूलबादी की बांछें खिली-खिली पड़ रही थी। बंसीधर को अपने पास बैठाया और उसकी पीठ सहलाते हुए कहा—"तुमने तो आज मेरी हस्सो का रुतबा आला कर दिया बेटा।"

"हां, यही सब तो मैं जानने के लिए इस वक्त आया हूं। क्या हुआ ?"

"वही तो बतला रही हू मेरे नूरेनजर। मैं फौरन ही गई, हस्सो से सब हाल कहा, हस्सो मुझे अपने यहां बैठाल के खुद सुल्तान बेगम के यहां पहुंची। फिर दोनो ने जानेआलम को अलग ले जाकर बात की। यो नही कहा कि हमने खत भेजे थे बल्कि यों कहा कि माल्कम साहब की आया का शौहर चुलबुली बेगम के यहां खिदमतगार है, वह खबर लाया है कि आप अमीरुजिन्नात से मिलने मुफतीगंज जाते थे। उनके गोयन्दों ने यह पता लगा लिया है कि यब सब कारसाजी रामपुर के उस सादिक अली की है जो जाहिरा तौर पर आपका मुह लगा है और अमीरुजिन्नात का ढोंग करके भी आपको लूट रहा है। बादशाह झिड़क कर बोले, क्या कहती हो, सादिक अली ऐसा हो ही नही सकता। मैंने फतेगंज मे कोई विलायती ठेठर नही देखा था। चुलबुली यानी मेरी हस्सो बादशाह से लिपट कर बोली आप हम लोगो की बात मान लीजिए और सादिक अली को तुरन्त ही गिरफ्तार करा लीजिए, ताकि वेलोगारद वालो से यह कहने को हो जाए कि आपने पहले ही साजिश पकड ली है। अश्फाकुस्सुल्तान भी बोली कि हा, यही तो चाल हैगी कि बादशाह पर इल्जाम लगे और उन्हें गद्दी से हटा दिया जाय। जानेआलम बोले कि सच कहती हो मगर रजीउद्दौला आड़े हाथों आएगा। बेगम साहिबा बोली कि अभी तो सादिक अली अपने घर में ही होगा। ठीक दोपहरी मे तो उठता है कमबख्त, अपने आदमियों से फौरन उसे गिरफ्तार करवा लें, रजीउद्दौला को जब खबर लगेगी तब लगेगी। तब तक साहबे आलीशान का हुकमनामा भी आपके पास आ जाएगा। बहरहाल किस्सा ये है कि सादिकअली गिरफ्तार कर लिया गया है, बेलोगारद से हुकम भी आ गया है और बादशाह सलामत अभी दो घड़ी पहले ही खुद मेरी हस्सो के महलो मे तशरीफ लाए और उसे बार-बार छाती से लगाकर चूमने लगे, कहा कि तुमने आज मेरी इज्जत बचा ली।"

जवाहरात के बेचने के संबंध में भी रसूलन ने बतलाया कि रिखबदास से चुल-बुली बेगम की बातचीत बहुत अच्छी रही और वह उसके जेवर खरीद लेगा। और जो जेवरात दूसरों की बिकवायेगा उसकी दलाली का एक धेला भी न लेगा। बहुत शरीफ आदमी है। हैदरीखां ने कलेजे से लगाकर उसे बिदा दी और कान मे कहा : "रिखबदास जौहरी चुलबुली बेगम से दोस्ती करना चाहते हैं, बहुत बेकरार हैं। उनसे कहना भइया कि अभी दो चार महीने और गम खायें, उसके कुछ जेवरात बिकवायें जिससे कि वह एकाध हवेली बनवा सके या वो खुदी बनवा दें। अल्लाह ताला ने उन्हें क्या कुछ कम दिया है। बहरहाल तुम उन्हें भरोसा दिला देना कि हैदरीखां उनके शाही माशूक को एक दिन उनकी बगल में लाकर जरूर बिठला देगा।"

बंसीधर ने हां तो जरूर कहा मगर एक स्त्री और प्रेम की चर्चा से उसके भूखे मन का उसका ध्यान दूर नवाबगंज में बैठी अपनी न देखी हुई पत्नी पर ही जा टिका। रुक्को पुरतानी बतला रही थी कि परियो जैसी खूबसूरत है। दुलकी चाल से बजाजे की तरफ चला। दो थान रेशम के लिए, जरी की तीन साड़ियां खरीदीं, उनमें एक भारी काम की थी। सलूके के लिए विलायती मखमल और स्तम्बोल वगैरह खरीदा। पांच सेर मेवा, दस सेर मिठाई, पुरतानी चच्ची के लिए भी दो धोतियां और कुछ कपड़ा खरीदा।

उनके जेठ के घरवालों के लिए भी दो सेर मिठाई अलग से खरीदी और एक मजदूर के सिर पर लदवाकर घर आया। चाची को सब चीजें समझा कर सहेजी कि यह इसके है और यह इसके। सास ससुर को पैलगी कहलाई और यह भी कहा कि अंग्रेजों के यहां उसके काम-काज का कुछ सिलसिला शायद जल्दी ही लग जायेगा, तब बिदा करा लाऊंगा। रुक्को चाची अपने लिये लायी गई भेंटें और मिठाई पाकर बहुत प्रसन्न हुई। उन्हें खर्च के लिए भी रुपये अलग से दिये।

दूसरे दिन सबेरे नवाबगंज के लिए पूरा इक्का करके चाची को बिदा किया और कहा कि जल्दी आ जाना। फिर घर आकर आठ-दस ग्रन्थ उठाए, उनमें एक सचित्र कामसूत्र भी था और कपड़े पहनकर पोथियों का गट्ठर लेकर नौ बजे घर से निकला। जब माल्कम साहब के बंगले पर पहुंचा तो वह जा चुके थे। नैन्सी मेमसाहब खानसामा के द्वारा लाये हुए गृहस्थी के सामान को खुद अपने सामने तौलवाकर यह जांच रही थी कि सामान कम अथवा घटिया तो नहीं है। बंसीधर के आने की खबर मिलते ही मेम-साहब ने उसे कमरे मे बुला लिया। देखकर मुस्कुराई : "सो यू हैव कम माई फ्रैन्ड। मैं तुम्हारी बाट ही देख रही थी। इस बण्डल मे क्या लाये हो बंसीढर?"

"हुजूर के लिए कुछ संस्कृत की पोथियां लाया हू।" कहकर पोटली खोलने लगा। कामसूत्र की पोथी सबके ऊपर ही रखी हुई थी। "दिस बुक फार यू मेमसाहब एण्ड नो दाम फार इट। वेरी कीमती सर, माई ग्रेन्डफादर्स ग्रेट ग्रेन्डफादर परचेस दिस बुक।"

नैन्सी उसकी बातें सुनकर खिलखिला पड़ी। उसने दाम के लिए 'प्राइस' और औरतों के लिए 'सर' के बजाय 'मैडम' कहने की सिखावन दी। सामान तुल गया, आया को उसे भण्डारघर में ले जाने को कहा, और खानसामा को किताबों का ढेर लेकर उनके खास कमरे के आगे वाले बरामदे में पहुचाने को कहा। कामसूत्र की पोथी हाथ में लेकर बंसीधर के साथ पीछे वाले बरामदे में चली गयी।

अकेलापन हुआ, नैन्सी किताब की कल्मी तस्वीरें देखती चली जाती और उसकी उत्तेजना तथा मुस्कुराहटें भी क्रमशः बढ़ती जाती थी। बीच-बीच मे बंसीधर को भी रसीली कनखियों से झांक लेती, थोड़ी देर बाद उसने देखते-देखते एकाएक पोथी बंद कर दी और कहा : "इस खूबसूरत किताब की कीमत आपने क्या बताई?" बंसी बोला : "आपकी खुशी ही इसकी कीमत है। नाचीज का यह तोहफा कबूल फरमाया जाय। मैं जनाब पार्किन्सन साहब के लिए भी दो फारसी की किताबें लाया हूं, इनकी भी कोई कीमत उनसे न लूंगा। आप उन्हें देने की इनायत फरमायें।"

किताबें लेकर नैन्सी अन्दर चली गयी, लौट कर कहा : "बंसीढर, मैं तुमसे बहुत खुश हूं। मेरे साथ एक ग्लास बियर पियो।" बंसीधर के धार्मिक संस्कार फिर खतरे में पड़ गये, मगर नैन्सी माल्कम ने यह कहकर कि बीयर शराब नहीं है, गिलास उसके होंठों से लगा दिया।-क्या करता बेचारा, वह कड़ुवा घूंट उसे पीना ही पड़ा। आया से एक तश्तरी मे कुछ काजू और किसमिसें भी मंगवाकर रखी। एक ही प्लेट से दोनों उठाकर टूग रहे हैं, बंसीधर की मिसरी सी मीठी और चमकदार आंखें नैन्सी के आग्रहों से नशीली होती चली जा रही हैं। नैन्सी भी चुप, बंसी भी खामोश। नजरें जरूर कुछ बूझी कुछ अनबूझी बातें कर रही हैं। नैन्सी जब नया घूंट भरने के लिए गिलास उठाती तो बंसी से भी इशारा करती। बंसी कठपुतले की तरह उसके आदेश पर वह जौ के नशीले पानी का घूंट भर लेता। दोनो के लगभग आधे-आधे गिलास खाली हो गये। नैन्सी बोली : "उस दिन मैंने जो तुम्हें घड़ी दी थी उसका मतलब तुम कुछ गलत लगा गये, प्यारे नौ-

जवान। तुमने घड़ी मागी। मेरे पास ऐसी दस-बारह घड़ियां है। मैं एक सौ पिछत्तर रुपये के हिसाब से ये घड़ियां बेचना चाहती हू। इन्हें बिकवा दोगे तो घड़ी फ्री और तुम्हें पन्द्रह रुपये मेहनताने के भी मिलेंगे।"

रंगीन ख्यालों से बनाया गया खुशनुमा महल पल भर मे ही रेत बनकर ढह गया। चेहरा उदास हुआ मगर फौरन ही अपने को सम्हाल कर उसने कहा: "जी हां, जरूर-जरूर।"

नैन्सी माल्कम बंसी के चेहरे के एक-एक उतार चढ़ाव को अपनी तेज कनखियो से देख-देख कर मजा ले रही थी। उसने फिर गिलास उठाया, एक घूंट लिया, गिलास मेज पर रखा, और उठ खड़ी हुई। बंसी का गिलास उठाया और उसकी कुर्सी के पास जाकर चारों तरफ एक चौकन्नी नजर डाली, फिर उसके होंठो पर अपने होंठ रख दिये, कहा: "लो पियो। तुम बहुत प्यारे हो मेरे दोस्त, शर्मीले और खूबसूरत भी हो। अगर मुझे पार्किन्सन से प्यार न हो गया होता तो मैं तुम्हारी नजरो के कुंआरे ख्वाबो को अपने रगों से भर-भर देती। खैर, हर हालत में तुम मुझे अपना दोस्त समझना।"

नैन्सी को माल्कम के अचानक आ जाने की खबर तब लगी जब वह खानसामा से यह कहते हुए सुनाई पड़े कि "रेजीडेन्सी से अगर कोई आदमी आये तो कह देना कि मैं सख्त बीमार हू, किसी से नही मिलूगा, अण्डरस्टैण्ड ?"

नैन्सी उठकर दरवाजे की ओर चली। साहब उधर ही आ रहे थे। उन्होंने बंसीधर को प्रश्नभरी दृष्टि से देखा।

"यह मि० बंसीढर टण्डन मेरे लिये संस्कृत की 'रेयर मैनस्क्रिप्ट्स' लेकर आये हैं।"

बंसीधर खड़ा हो गया, सलामे झुकाकर और हड़बड़ा कर बोला: "आई एम मुसद्दीमल बजाजेस सन। ही कम्स हियर टू सेल इण्डियन क्लोथ्स।"

"ओहो समझा। नैन्सी, क्या तुम मेरे लिए बियर मंगाओगी ? आज मैं बहुत परेशान हूं।"

"क्यों, क्या बात है ? और तुम इतनी जल्दी घर क्यो वापस आ गये ?"

"ओह! डार्लिंग, पूछो मत। रेजीडेन्सी में कोई मेरा छुपा दुश्मन जरूर बन गया है।"

"अच्छा, तो मैं अब आपसे इजाजत लू हुजूर मेमसाहब।"

"लेकिन अभी इन किताबों का सौदा तो हुआ नही आपसे।"

"अरे हुजूर, नो वरी। सी बुक्स। आई शैल कम अगेन, ह्वेन यू आर्डर मी। यू हैव एड्रेस आफ योर दिस सर्वेंट।"

"तुम कल फिर आओ, बंसीढर। कल तुम ठीक साढे ग्यारह बजे आ जाओ, मैं ये किताबें खरीदूंगी और तुम्हें कुछ विलायती सामान भी दिखलाऊंगी। तुम उन्हें यहां बेचने की कोशिश करो, तुम्हें अच्छा कमीशन मिल जायेगा।"

बंसीधर ने सिर झुकाकर दोनों को अदब से सलाम किया, नैन्सी ने मुस्कुराकर बड़ी गर्मजोशी के साथ उससे हाथ मिलाया। वह चला गया।

गोरा माल्कम बहुत उदास था। नैन्सी ने उसकी कुर्सी के पीछे खड़े होकर उसके मोटे-मोटे गालों पर प्यार से उंगलियां फेरीं। फिर पूछा: "बात क्या है ? मुझे कुछ तो बतलाओ, डियर।"

"क्या बतलाऊं, शाही महलो मे एक बेगम के शिकायती खत रेजीडेन्सी मे आ रहे थे। रजीउद्दौला के कहने पर मैंने वो खत रेजीडेंट तक पहुंचने न दिये, फिर भी न जाने

कैसे स्लीमैन साहब को खबर मिल गयी और रजीउद्दौला, सादिक अली, सरफराज महल, वह तमाम लोग जिनका मैं ख्याल करता था वह सबके सब बडी मुसीबत मे आ गये हैं। बादशाह ने सादिकअली को गिरफ्तार कर लिया है।"

नैन्सी यह सब सुनकर मन ही मन बहुत प्रसन्न हुई, लेकिन ऊपरी तौर पर अपने बूढ़े खसम का गाल चूमते हुए कहा, "परेशान न हो डार्लिंग, मैं आज पार्किन्सन को चाय के वक्त बुलवाकर पूछूंगी कि हमारा कौन दुश्मन पैदा हो गया है। ठहरो, मैं तुम्हारे लिये बियर लाती हूं।" कहकर नैन्सी मुस्कुराते हुए बरामदे से चली गयी।

5

लगभग सवा साल पहले कुमारी नैन्सी आसबोर्न पाच हजार पौण्ड का दहेज लेकर इंग्लैण्ड से कलकत्ते आयी थी। सुन्दरी और धनवती—सोने में सुहागा। फोर्ट विलियम के सभी कुआरे पदाधिकारी उसे हथियाने के लिए अपने-अपने दांव-पेंच लगाने लगे। नैन्सी घबराकर गवर्नर जनरल के एक सचिव मि० लायन्स की पत्नी की शरण मे गयी, श्रीमती लायन्स ने उसे अपने घर मे पनाह दे दी। उनकी इच्छा थी कि नैन्सी का विवाह उनके लडके के साथ हो, जो उन दिनों सरकारी काम से पटना गया हुआ था। लेकिन नैन्सी को देखकर मि० लॉयन्स के बूढ़े मुह पर भी मुहासे फूटने लगे। जिन दिनो मि० माल्कम कलकत्ते आये थे, उन दिनो नैन्सी बहुत ही परेशान थी। बानक कुछ ऐसे बने कि विवाहित पुरुष की असंतुष्ट रक्षिता बनने के बजाय वह विधुर माल्कम की विवाहिता होकर लखनऊ चली आयी। उसी के रुपयो से माल्कम ने विलायती सामान खरीदकर लखनऊ मे बेचने का प्रबन्ध करवाया। छोटी-बडी घड़ियां, शीशे का सामान, विलायती मखमल आदि वस्तुएँ आती, जिन्हें वह नवाबी दरबार के रईसों के यहां बिकवाता था। किसी समय के कुशल तबलावादक और अब नवाब मिर्ज़ा वाजिदअली शाह के बड़े मुंहलगे जनाब रजीउद्दौला बहादुर से माल्कम की खूब पटती थी। माल्कम रजीउद्दौला बहादुर के हितों की रक्षा करता था और रजीउद्दौला तथा उसकी बहन बहार की बदौलत माल्कम हिन्दुस्तानी रईसों से टके कमाता था। बहारुन्निसा माल्कम से कनखियो के कनकौवे भी खूब लड़ाती थी।

उस दिन सादिकअली की गिरफ्तारी के दो घण्टे के बाद ही जब रजीउद्दौला भी शाही गुस्से की चपेट में आये तो माल्कम का दिल कांप उठा। अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए रजीउद्दौला माल्कम के घर मे आकर छिप गया। मोटा अधेड माल्कम घबराता हुआ अपनी पत्नी के पास आया, और कहा: "डार्लिंग, तुमने पार्किन्सन को यहां आने के लिए बुलावा भेज दिया है?"

"हां, तुमसे बात होने के बाद ही मैंने उनको चिट्ठी भेज दी थी। वह चार बजे यहां आयेंगे।"

"ओह, तब तो बड़ी मुश्किल होगी। वह कमबख्त यहां आकर छुप गया है। अगर मि० पार्किन्सन को उसकी तनिक भी टोह लग गयी तो मेरा मुंह काला ही जाएगा, स्लीमैन साहब मुझे कहीं का भी नहीं रखेंगे।"

नैन्सी मन ही मन में प्रसन्न हुई, उजागर में कहा : "चिन्ता मत करो डियरेस्ट, मैंने संस्कृत की किताबें बेचने वाले बंसीधर को दो बजे बुला रखा है। पार्किन्सन को भी पुरानी किताबों में बड़ी रुचि है। मैं बंसीधर को लेकर पार्किन्सन के क्वार्टर में चली जाऊंगी और उनसे यह पता भी लगा लूंगी कि तुम्हारा कौन दुश्मन पैदा हुआ है।" अपनी घबराहट में माल्कम ने स्वीकृति दे दी।

निश्चित समय पर बंसीधर को अपनी बग्घी पर बिठलाकर नैन्सी माल्कम पार्किन्सन के घर गयी। पार्किन्सन रेजीडेन्सी में ही रहता था।

पार्किन्सन ने साढ़े चार सौ रुपयों मे तनकुन से बारह ग्रन्थ खरीदे। वह चला गया। नैन्सी के रहने से पार्किन्सन को घर का सुख मिला। माल्कम का मज़ाक भी उड़ाया गया और पार्किन्सन ने यह चाल भी चली कि जब वह और नैन्सी क्लब में हों तब रेजीडेन्ट के बड़े सेक्रेटरी के हुक्मनामे के साथ शाही सिपाही रजीउद्दौला को पकड़ने के लिए माल्कम के घर जायें।

जब रजीउद्दौला को सरकारी सिपाही ले गये तो माल्कम बहुत ही घबराया। रजीउद्दौला उनसे कह गया था, "मैं तो खैर छूट जाऊंगा, मगर मेरे दुश्मन को पकड़कर अगर तुमने उसे कोई सजा न दिलवाई माल्कम साहब, तो कसम खुदा की, तुम्हारी खूबसूरत बीबी को पकड़वाकर कस्बियों के बाजार में बिकवा दूंगा और तुम शायद कब्र में भी पनाह न पा सकोगे।"

उधर सादिकअली रजीउद्दौला पर सारे इल्जाम थोपकर बरी हो गया।

बहारुन्निसा ने बादशाह की छाती से लिपट कर उनके आगे बड़े-बड़े टेसुवे बहाये। अपने भाई को गोरे रेजीडेन्ट के गुस्से की आग से तो वह बचा ले गयी, लेकिन उनकी नौकरी फिर से बहाल न करवा पाई।

उसी दिन पार्किन्सन ने यह कहा : "रेजीडेंसी कम्पाउण्ड मे बनी सारी इमारतों की ईंटें तक कर्नल स्लीमैन की जासूस हैं। कल सवेरे जब सैर पर जाऊंगा तो चौक की हिंदू बस्ती में बंसीधर को तलाश करूंगा। उसमे किसी गुप्त जगह का प्रबंध करवाऊंगा। हो सका तो कल ही, नहीं तो परसों हमारी मिलने की जगह का अवश्य ही प्रबंध होगा। रोज बहाने बदलती रहना। यह कहना कि दो-तीन घंटे मेरे क्वार्टर मे मेरी प्रतीक्षा करती रही, न मिला तो लौट आई। परसों कह देना कि खबर बिल्कुल पक्की तो नहीं मगर साजिश मे अलीनकी खां की सास का हाथ है। अगले दिन फिर कोई और बहाना बना लेंगे।" यह कहकर दोनों खूब हंसे थे। और आज तीन दिनों से वह हुसैनाबाद की एक खस्ताहाल बारहदरी में हंसी खुशियों से भरा समय गुजारते हैं। रसूलन और हैदरीखां ने ही उन्हें यह जगह दिलवाई थी।

तनकुन की दौड़ रसूलन तक, उसने रसूलन से यह कहा कि बेलीगारद के साहबे आलीशान रजीडंड बहादर सलीमन साहेब के सिकत्तर बहादर को ऐसी इश्कगाह चाहिये जो जमाने की नज़रों से दूर हो। तनकुन ने यह भी कहा कि माल्कम साहब की मेम को उनके बंगले मे इश्कगाह तक पहुचाने और वापस लाने का खुफिया और पुख्ता प्रबंध भी उसे ही करना होगा। और इस काम के लिए सिकत्तर और मेम दोनो बहादरो ने अच्छा इनाम देने का वादा भी किया है। सुनकर रसूलन बोली : "मुझे इनाम बख्शिश कुछ न चाहिए। साहबे आलीशान तक सीधी पहुच रखने वाला एक आदमी मिल रहा है, यही

क्या कम है। मेरे भैया, तेरी बलाये लूं, इनाम तो वक्त आयेगा तब मैं तुझे दूगी। तेरे चच्चा को अभी घर से बुलवाती हूं।"

बस, उसी दिन आनन फानन हथेली पर सरसों जम गई, कोठी क़लां के आगे स्व० बादशाह गाजीउद्दीन हैदर की एक खस्तादम मुताही बेगम की खस्ताहाल बारहदरी थी। चौवन पचपन बरस पहले के बादशाह को भला कौन पूछता है। रसूलन कभी उस गरजमद बूढ़ी के यहां से अपनी सराय के वास्ते सजावट का बहुत सा कीमती सामान पानी के मोल खरीद लाई थी। वहीं पहुची, सब कुछ तय किया। हैदरी खां ने बुर्के का इंतजाम किया। निमहरे के अडडे तक पहुचने के लिए डोली, वहां से ले जाने के लिए बंद गाड़ी, सब कुछ ठीक करके दोपहर बीतते न बीतते रसूलन माल्कम की मेम के बंगले पर सलाम भी बोल आई। उसी शाम को पति की जानकारी में वह अपनी मंज़िले इश्क सर करने गई मगर मिलने की जगह गलत बतलाई। घर आकर पति से उदास चेहरा बनाकर कहा: "दो घण्टे इतज़ार करती रही, पार्किन्सन आया ही नहीं। जब लौटकर आ रही थी तो रास्ते मे उनका हरकारा मिला और यह रुक्का दिया कि सरकारी नौकरी से मजबूर होकर आपकी नौकरी बजाने न आ सका। कल जरूर आऊंगा और तुम्हारे लिये शैम्पेन और अपने लिये ह्विस्की भी लाऊगा।"

माल्कम का लाल चेहरा और भी लाल भभूका हो गया मगर फिर निसांस छोड़ कर कहा: "जाना ही पड़ेगा, रज़ीउद्दौला मेरी और तुम्हारी इज्जत और जान लेने की धमकी दे चुका है। आज भी आया था। हालांकि पार्किन्सन ने तुम्हें शराबनोशी की दावत देकर मेरी इज्ज़त पर सीधा हमला किया है। और वक़्त होता तो मैं उसे 'डुएल' के लिए चैलेंज करता मगर मैं समझता हूं कि रज़ीउद्दौला जैसे कमीने तबलिये और उसके गुण्डों से अपमानित होने के बजाय यह अपमान ही अधिक सम्मानजनक है। उससे दोस्ती करके रज़ीउद्दौला के ज़हर के दात फौरन से पेश्तर तुड़वाने की कोशिश करो।"

इन तीन चार दिनों में जो कुछ हुआ या हो रहा है वह माल्कम की जानकारी में है। पार्किन्सन की ओर से अपमान की आग और रज़ीउद्दौला की ओर से मृत्यु भय के आतंक से वह इतना अधिक पीड़ित था कि दफ़्तर में भी ऊटपटांग काम कर बैठता। रेजिडेंट के बड़े सेक्रेटरी ने इन्हें किसी वजह से परेशान जान कर दो रोज़ की छुट्टी जब्रिया दिलवायी और फारसी के मुंशी करामत अली से कहा: "इनको घर पहुंचा दो।" बंगले के फाटक में घुसे ही थे कि पिस्तौल चली, मुंशी करामत अली 'या अल्लाह' कहकर वहीं ढेर हो गए। गोली सिर्फ एक ही चलीं थी फिर भी माल्कम झाड़ियो में छिपते-छिपते ही अपने बंगले में घुसे।

सुप्रिटेंडेंट साहब के बंगले के बाहर रेजिडेंसी के फारसी मुशी का कत्ल हुआ यह खबर शहर कोतवाल के लिए इतनी अहम् थी कि वह मौके पर खुद तशरीफ लाए। उनके साथ एक और दाढ़ीवाले हाकिम आए थे, जो बंगले के नौकरों से दरवाजे खुलवा कर सीधे माल्कम के पास पहुंच गए। माल्कम उन्हें देखते ही परेशान होकर बोला: "मैं करामत अली के क़त्ल के बारे में कुछ नहीं बता सकता। मैं बच गया यही खुदा का शुक्र है। मगर मैं बहुत परेशान हूं। मेरा···"

"मैं अब तुम्हारा दुश्मन नहीं, दोस्त बन गया हूं साहब।" कहकर उसने नक्ली दाढ़ी हटा ली। रज़ीउद्दौला सामने था। माल्कम को चक्कर आ गया। वह कुरसी से लुढ़कने वाला ही था कि रज़ीउद्दौला ने उसे दोनों हाथों से पकड़ लिया, धीमी आवाज मे डपट कर कहा: "होश सम्हालो साहब, मैंने अपने और तुम्हारे दुश्मन का पता लगा लिया है।"

"क-क-कौन है वह !"

"रेजीडेंट का नया सिकत्तर पार्किन्सन।"

"मगर वो-वो तो कहता था कि बादशाह के ससुर सास—"

"बकवास बंद करो साहब। तुम्हारी आया मासूमन का शौहर चुलबुली बेगम का नौकर है। उमराव बेगम की महरी खैरातन ने उसको मिलाया। उसकी मार्फ़त वह खत तुम्हारी बीवी को पहुंचाया गया।"

"मेरी पत्नी को उससे क्या लेना देना था ? वह मुझे देती और मैं···"

"तुम्हारी बीवी और पार्किन्सन जोड़ा मिलाते हैं बूढ़े खबीस। दुनिया भर की खबर रखते हो मगर घर की खबर ही नही। पार्किन्सन इस वक़्त भी तुम्हारी छमकछल्लो के साथ गुलछर्रे उड़ा रहा है।"

"नही, वह रेजीडेंसी मे ही लारेंस के अर्दली जब्बार खां की कोठरी मे हैं। मेरी जानकारी मे बराबर चार दिनो से जाती है। जब्बार मेरा आदमी है···"

"वह तेरी रंडी का भड़वा हैगा साला। तुम्हारी कुतिया इस वक़्त पार्किन्सन के साथ हुसैनाबाद से भी आगे है मिया। मैंने तुम्हारी आया और उसके शौहर साले को खूब पिटवाया और सब कबुलवा लिया। इसी कमरे में वह खत पढवाया गया और यही मेरे और तुम्हारे खिलाफ साज़िश हुई।"

माल्कम उत्तेजित हो उठा—"मैं उस धोखेबाज औरत का खून कर दूंगा।"

"उसकी फिक्र छोड़ो। उसके तो ··के चिथड़े उड़वाकर मैं क़त्ल करूंगा। मेरे साथ चलो, पार्किन्सन का खून करो, चलो।"

माल्कम की आत्मा लड़खड़ाई। स्वयं उसी ने अपने स्वार्थवश नैन्सी को पार्किन्सन की इच्छा पूरी करने भेजा था।···मगर नही, यह सब उनका षड्यंत्र था।···क्रोध चढ़ा, फिर ठंडा हो गया। उसे मार कर क्या मैं बच पाऊंगा।

"चलो उठो साहेब।"

"मगर-मगर अदालत मुझे भी तो फांसी···"

"तुम तो वैसे भी आज रात मार डाले जाओगे। करामतअली को तो मारना ही था। वह मेरे खिलाफ जाने लगा था। मैं नही चाहता कि मैं उस पार्किन्सन के खून से हाथ रंग के कंपनी की सियासती गिरफ्त में आऊं। तुम्हारी कौम में तो लिखत-पढ़त के साथ गवाहो के सामने लड़ाई होती है। मार डालो बदमाश को, मैं तुम्हारी जान बचा लूंगा। तुम्हारी आड लेकर मैं सिर्फ उसे खतम करना चाहता हूं।"

इस अवैध संबंध मे अपनी स्वीकारोक्ति देने के बाद भी माल्कम पार्किन्सन के प्रति खार खाये बैठा था। उसके ही घर मे बैठकर पार्किन्सन ने उसे घर और दफ़्तर दोनों ही जगहों में अपमानित करने का षड्यंत्र किया। वह उसे ज़िंदा नहीं छोड़ेगा। रज़ीउद्दौला उसकी जान बचा लेगा। माल्कम चलने के लिए राज़ी हो गया। बाहर कोतवाल साहब ने तफ़तीश की, लाश मुंशी के रिश्तेदारों को सौंपी। माल्कम के बंगले पर आठ सिपाहियों का पहरा बैठा था और वह अपने दोस्त रज़ीउद्दौला और माल्कम को साथ लेकर कोतवाली तशरीफ ले गये।

गवाहों के बतौर दो नायब और सुरक्षा के लिए चार सिपाहियों के साथ रज़ीउद्दौला अपने तीन चार आदमी भी लेकर माल्कम के साथ नैन्सी और पार्किन्सन की इश्कगाह की तरफ चला।

चौकसी और इंतजाम की देखभाल के वास्ते सिकत्तर बहादुर और उनकी माशूका के रहते समय हैदरीखां खुद भी बारहदरी का एक चक्कर लगाता था। इसी

बहाने साहब को सलाम करने का मौका मिल जाता था। उस दिन जब वह बारहदरी के खंडहर अस्तबल में अपना घोड़ा बाध कर सीढ़ियां चढ़ रहा था, तभी घोड़ों की टापें नजदीक आती सुनीं। दूर से माल्कम और कोतवाली के आदमी आते देखे तो उसके पांवों को पंख लग गए।

उस दिन पार्किन्सन और नैन्सी की इच्छा से वंसीधर एक संस्कृत के पंडित को साथ लेकर बारहदरी में आया था। नैन्सी ने पंडित के सामने बैठना मुनासिब न समझा, वह आड़ में बैठी सुनने लगी। पण्डित कामसूत्र की व्याख्या करते, बसीधर शर्माते, सकुचाते हुए टूटी-फूटी अंग्रेजी मे उसका उल्था कर रहा था और पार्किन्सन फिर रसीले ढंग से इतनी ऊंची आवाज में उसके अनुवाद की रंगीन व्याख्या करके आड़ मे बैठी हुई अपनी प्रियतमा को सुना रहा था। समय सुख से बीत रहा था।

हैदरीखां बवण्डर-सा कमरे में घुसा. "हजूर, माल्कम साहेब कोतवाली के सिपाहियों के साथ आ रहे है। मेमसाहब कहा है?"

नैन्सी सामने आ गई। हैदरीखां ने तनकुन और पडित को भी साथ लिया। अज्जो और अब्दुल्ला को वही खिदमत मे छोड़ा और फिर यह जा वह जा। बूढ़ी नौकरानी से छिपने की जगह पूछी। जानकार पुरानी बादी अच्छी खानम ने अफीमची बेगम के कमरे की दीवार मे बने चोर दरवाजे से सुरंग का रास्ता दिखला दिया।

जब तक माल्कम और बाकी लोग आयें-आयें तब तक नैन्सी अपने पर्देदार इक्के पर सवार हो चुकी थी। घबराई हुई नैन्सी की जिद से बसी भी उसके साथ ही पर्दे मे बैठा। हैदरीखां खुद तमंचा सम्हाले इक्केवान के साथ बैठ गया। पंडित को दो रुपये टिकाये, कहा, रास्ता नापो।

मोटा माल्कम सबके साथ ऊपर चढ़ा। दरवाजे पर अब्दुल्ला खड़ा था। उसे पिस्तौल दिखला कर 'खामोश' कहा और पर्दा उठाकर सब लोग भीतर घुसे। पार्किन्सन गद्दे पर आंखें मूदे लेटा पेंचवान गुड़गुड़ा रहा था। सजी-संवरी अज्जो उसका सिर दबा रही थी। कमरे में आने की आहटें सुनकर पार्किन्सन ने आखें खोलीं।

"ओह मि० माल्कम, आप? कैसे तकलीफ की?"

"नैन्सी कहां है?"

"वह यहां कहां। हां, जब्बार खां अर्दली के यहां मिली जरूर थी।"

"यू बास्टर्ड, तुमने मुझे धोखा दिया। तुमने और नैन्सी ने उमराव बेगम का खत मेरी आया से मंगवाया था। उसे रेजीडेंट को पेश किया। मेरी बीवी को मेरे खिलाफ···"

"मिस्टर माल्कम, अपना गुस्सा काबू में कीजिए। नैन्सी माल्कम ने मेरे साथ कोई साज़िश नही की। आप मुझ पर गलत इल्जाम···"

"नैन्सी कहां है?"

"वह यहां नही है।"

"तुमने उसे छिपा दिया है।"

"पुलिस आपके साथ है, तलाशी ले लीजिए।"

"फिर उसका यह वैनिटी बैग और यह छतरी यहां कैसे आई?"

पार्किन्सन हंसा, कहा: "ओ हां, यह तो वह जब्बार खां के जहां जल्दी में भूल आई थी। मैं अपने साथ लेता आया कि लौटते वक्त आपके यहां उन्हें दे दूगा। हमारा कोई छिपा रिश्ता तो है नही। सिर्फ काम से वह मुझसे छिपे तौर पर मिलने आती हैं।"

सुनकर माल्कम अपनी ही अपराध जड़ित भावना से भभक पड़ा: "कुत्ते, तूने मेरी इज्जत पर डाका डाला है। मैं तुझे मार डालूगा।" कहकर माल्कम ने अपनी

पिस्तौल निकाली। पार्किन्सन भी तन गया, तकिये के नीचे से अपनी पिस्तौल निकाल ली, कहा : "आपने मुझे दो बार गालियां दी···"

"मैं तुझे और गालियां दूगा। रंडी की औलाद···" दोनों पिस्तौल के ट्रिगर करीब-करीब साथ-साथ दबे। पार्किन्सन का निशाना अचूक माल्कम की छाती पर लगा लेकिन माल्कम का निशाना चूक गया। रजीउद्दौला ने उसी समय दूसरी गोली दाग दी।

पर्देदार इक्के में बंसीधर के साथ सटी हुई बैठी नैन्सी एक ओर जहां अपने आप ही में परेशान थी, वहीं दूसरी ओर वह बसी के लिए भी बड़ी उलझनों का कारण बन गई थी। अनुभवाकाक्षी किंतु अनुभवहीन युवक के मन में नारी स्पर्श ऐसी तरंगें उठा रहा था जो तात्कालिक घटना के भय से प्रायः जड़वत् हो गयी थी।

"यह सब कैसे हो गया बंसीढर ? मेरे पति को वहां का पता कैसे मालूम हुआ ?"

"देअर इज सम षडजन्तर मेम साहब आई-मीन···"

"मगर मैं तो माल्कम की जानकारी में पार्किन्सन से मिलने आई थी, फिर वह पुलिस को लेकर क्यों आया ?"

"दिस इज ह्वाई आई से सम षडजन्तर। आई-मीन साजिश, आई मीन···"

"साजिश, मैं समझ गई—यानी कांसपिरेसी। पर कौन करेगा, कौन कर सकता है ?"

बंसीधर कुछ सोच में पड़ गया, फिर बोला : "कह नहीं सकता मेमसाहब पर हालात के हिसाब से यह कह सकता हूं कि इस साजिश आई मीन कान्सपिरेसी में कहीं न कहीं उस बदमाश रजीउद्दौला का हाथ जरूर है।"

नैन्सी सुनकर एकाएक भयस्तब्ध हो गयी। फिर उसके गले में हाथ डालकर चिपटती हुई लड़खड़ाई, घुटी सिसकती सी धीमी आवाज में बोली : "मुझे उस राक्षस से बचा लो। बचा लो यंग मैन, मैं तुम्हें खुश कर दूगी, बहुत खुश कर दूगी। मुझे बचा लो, बचा लो माई डियर।"

नैन्सी की आखों में आसू छलछला उठे। उसने प्यार से कहा : "आप घबराइए मत, मेमसाहब, जब तक मेरी जान में जान है तब तक आपका कोई कुछ न बिगाड़ सकेगा।"

पर्दे के अंदर यह सब होता रहा। इक्का निमहरे के अड्डे पर आ पहुचा। नैन्सी घबराहट में छतरी और बैग के साथ ही अपना बुर्का भी बारहदरी में ही छोड़ आई थी। बोली : "मैं सबके सामने पैदल कैसे जाऊंगी, बसीधर ?"

बसीधर ने हैदरीखां से कहा : "मुनासिब समझें चच्चा तो आप यहीं उतर जाइए, मैं मेमसाहब को उनके बगले पर छोड़ आऊंगा।"

हैदरीखां ने इक्केवाले से कहा : "जुम्मन, मेमसाहब और भैया को बंगले पर छोड़कर यहीं आना, मैं तुम्हारे साथ ही लक्खीसराय वापस चलूगा। मेरा घोड़ा तो बारादरी में ही बंधा है।"

"अभी आता हूं मियां, तब तक आप चुनिया तम्बोलिन की दूकान पर दो बीड़े पान खाइये।"

अपने बंगले पर पहुंच कर नौकरों से मेमसाहब को बहुत कुछ मालूम हुआ। मुंशी करामतअली का कत्ल, फिर कोतवाल का आना, एक हाकिम से साहब की बातें हुई और वह चले गए, अभी तक नहीं आये, यह सब बातें सुनकर भौंचक्की सी रह गई।

"आपकी वह आया मासूमा कहां है मेमसाहेब ? उसे जरा बुलवायें।" बंसी ने कहा।

"मसूमन तो हुजूर डेढ़ पहर दिन चढे ही अपने शौहर के बुलावे पर चली गयी थी। उस वक्त आप भी तो तशरीफ रखती थी हुजूर। आपसे क्या उसने पूछा नही था ?"

नैन्सी मेमसाहब ने सिर हिलाकर इन्कार किया और बसीधर का हाथ पकड़े निजी कमरे मे जाते हुए पूछा . "तुमने आया के बारे मे क्यो पूछा, बंसीधर ?"

"मेरा शक और भी पुख्ता हो रहा है हुजूर, करामतअली के कत्ल और माल्कम साहब के जाने के पीछे कोई राज है।"

नैन्सी ने घबराकर कहा : "हे भगवान, जाने क्या होगा ! मैं रहमान को उसके यहा भेजकर उसे बुलवाती हू।"

नैन्सी ने बाहर जाकर अपने नौकर को आदेश दिया और फिर आ गई। वह बेहद घबराई हुई थी। निढाल-सी अपने कोच पर लेट गई। उसकी आखें बद थी, हंफनी तेज चल रही थी। बंसी सामने कुर्सी पर बैठा हुआ उस परेशान हुस्न को देख रहा था। सहसा झटके के साथ उठते हुए नैन्सी बोली : "माल्कम आयेगा तो जरूर मेरा कत्ल कर डालेगा।"

"खातिरजमा रखें हुजूर, मैं अपनी जान देकर भी आपकी जान बचाऊगा।"

"अगर पार्किन्सन को कुछ हो गया तो रेजीडेंसी मे बड़ा हगामा मचेगा। माल्कम गिरफ्तार होगा, मेरा नाम उछाला जाएगा। ओह गॉड !" नैन्सी लड़खड़ाती हुई उठी, शराब की बोतल और दो प्याले उठा लाई।

"मेरे लिए नही मेमसाहब, मुझे यह रास नही आती।"

नैन्सी ने आग्रह न किया, चुपचाप एक ही घूट मे पी गई। फिर एक गहरी सांस खीचकर कहा · "आह, आह ! औरत का जीवन भी क्या कोई जीवन है ! यह माल्कम मुझे कलकत्ते से ठग लाया था। मेरे पांच हजार पौण्ड भी इसी ने दबा लिए। और अगर वह पार्किन्सन को मार के आया ! ···"

"ऐसा कुछ न होगा, मेमसाहब। मुशी करामत के मारे जाने से रज़ीउद्दौला पर अब मेरा शक गहराता जा रहा है। हो न हो, रज़ीउद्दौला की कोतवाली वालो से जरूर कुछ साठ-गाठ है, मुझे अंदेशा है कि पार्किन्सन साहब और माल्कम साहब कही दोनो ही न मार डाले गए हों।"

लगभग आधे पहर के भीतर ही मासूम आया के यहा गया हुआ नौकर लौट आया। पता लगा कि आया और उसका शौहर दोनो ही बुरी तरह से घायल हैं, रज़ीउद्दौला ने उन्हें पिटवाकर सारी हक़ीकत जान ली है। लगभग पाव घड़ी के बाद ही रेजीडेंसी के बड़े सिकत्तर बहादुर साहेब आए। बंसीधर फौरन बाहर के कमरे मे जाकर बैठ गया। मि० माल्कम के कमरे मे बैठे नये चेहरे को देखा तो पूछा : "कौन हो ?"

"बुकसेलर, सर। साहब गान आउट एण्ड आई वेटिंग फार मेमसाहब।"

"कहां हैं मिसेज माल्कम ?"

"इन द रूम, सर।"

नैन्सी तब तक उस कमरे मे आ चुकी थी। प्रिंसिपल सेक्रेटरी से माल्कम और पार्किन्सन दोनों की मृत्यु का समाचार सुना। कोतवाली के हाकिमों की बात से जाना कि दोनो मे द्वन्द्व युद्ध (डुएल) हुआ था। माल्कम ने कोतवाली में रिपोर्ट लिखाई थी। "वह शाही पुलिस अफसरो के साथ वहा गया था, आपका बैग और छतरी वहां मिली, पर आप कब चली आयी मिसेज माल्कम ?"

"मैं तो वहां गई भी नही थी, हां, माल्कम के कहने पर पार्किन्सन से मिलने

रेजीडेंसी जरूर गई थी। शायद वहीं भूल आई हूंगी।"

"मगर यह चीजें इतनी दूर कैसे पहुंच गयी?"

"मैं क्या जानूं, मैं तो रेजीडेंसी से यहीं आ गई थी। लौटकर आने पर सुना कि मुंशी मारा गया और मेरे हसबेंड शाही पुलिसवालों के साथ कहीं गए हुए हैं।"

"माफ कीजिएगा, मिसेज माल्कम, पार्किन्सन से आपका कुछ···।"

नैन्सी ने अपना सिर झुका लिया। कहा: "हां, मैं कबूल करती हूं हमारे बीच मे कुछ बात जरूर बढ रही थी, मगर हमने अभी तक शील शिष्टाचार की कोई मर्यादा भंग नहीं की। मुझे पार्किन्सन और अपने पति की हत्या···" अधिक न कह रूमाल से आंखें ढक ली।

एकाएक साहब की नजर बंसीधर की ओर गई, "अरे अभी तक यहीं बैठे हो। जाओ यहां से।"

नैन्सी ने भी सुबुकते हुए कहा: "हां, तुम जाओ बंसीधर, तुमने सुना नहीं मेरे पति की हत्या हो गई है। हो सके तो एक बार कल सबेरे या दोपहर मे मेरे पास आ जाना।"

बंसीधर ने बड़े साहब और मेमसाहब को झुककर सलाम किया और कमरे से बाहर निकल गया।

6

घर पहुंचा तो पता चला कि रुक्को पुरतानी नवाबगज से लौट आयी हैं। पुरतानी जी बेहद खुश थीं। तनकुन की बलायें ले-लेकर ससुराल के हाल सुनाये। कहा: "तुमरी सास औ ससुर तो ऐसे खुश भये भैया कि तुमसे क्या बतायें। औ सब चीज बस्त जो ले गए रहें, उससे सब जने बड़े खुसी भये। औ तुम्हरी दून्हौ सलहजों ने हमरी चमेलो बिटिया की ऐसी बेल बांधी—ऐसी बेल बांधी कि हाय-राम, बिचारी सरमाय-सरमाय जाए। और तुमरे खातिर ई सब खान पियन की चीजें, कपड़े के थान औ दुसाला भेजा हैगा तुमरे सास ससुर ने। औ तुम्हें होली पै जरूल-जरूल बुलाया हैगा। अरे बड़े खुस भये हैंगे सब लोग। औरतुमरी सास भी हमसे कसम धराय कै कहिन कि भौजी तनकुन भैया का जरूरै-जरूल लैयो।"

"लेकिन बुलावा तो हमारे अम्मा बाबू के पास···"

"उनके पास काहे भेजें। तुमरी सास हमसे बोली कि हमरी बिटिया के खातिर उन्हें अपने घर से निकाल दिया हैगा तो अब उनसे हमरा मतबल क्या रहा। तुमरे ससुरी कहिन कि भौजी, हमरे दमाद का कौनौं तकलीफ न होय, उनकी खातिर हम थैलियन के मूं खोल देवेंगे।"

बारहदरी में हुई घटनाओं के कारण भारी हुआ मन अपने ससुराली समाचारों

से कुछ देर के लिए हरा और ताज़ा हुआ। ससुराल की मेवे मिठाइयां भी खाईं, मगर तनकुन का मन अब इस गुंताड़े में घुस गया कि मेरे भविष्य का क्या होगा। पार्किन्सन मिला, नैन्सी माल्कम मिले। सोचा था कि अंग्रेजों से अचानक हुई जान-पहचान बड़ी भाग्यशाली सिद्ध होगी। उसे आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे, पर आज की घटनाओं से सब कुछ उलट-पुलट गया। अगर पार्किन्सन जीवित रहता तो नैन्सी भी उसके काम आ सकती थी। मगर अब वह भला क्या कर पायेगी, अधिक-से-अधिक अपना जनाना लालच ही मुझे दे सकती है। उस लोभ के लिए भी उसके वास्ते सही दरवाज़े खुल गए है। क्यो न वह अपने ससुर के निमंत्रण को स्वीकार करके नवाबगंज चला जाए।

रात इन्ही सब चिन्ताओं में बीत गयी। दिन में खा-पीकर वह फिर नैन्सी माल्कम की कोठी पर पहुचा।

रेजीडेन्सी और शहर मे रहने वाले कुछ अंग्रेज परिवारो के लोग मातमपुर्सी के लिए आए थे, जनाज़े की तैयारियां हो रही थीं। पादरी आ चुके थे। बंसीधर ने बंगले के भीतर जाना मुनासिब न समझा। अनजानों की भीड़ थी, हालांकि वेलीगारद में रहने वाले कुछ हिन्दोस्तानी लोग भी वहां हमदर्द तमाशबीन बनकर मौजूद थे।

घर से निकल ही पड़ा था, सोचने लगा कि अब कहां जाए। लखनऊ मे कांगड़े से आकर बसे हुए एक विद्वान पंडित आर्यानन्द जी के बेटे देवीदत्त जी शर्मा का उन दिनों बड़ा नाम फैला हुआ था। उनकी पाठशाला मे दूर-दूर के विद्यार्थी आते थे। तनकुन ने सोचा वहां चलें शायद कुछ ग्रंथो का सौदा हो जाए। रैना पंडित के यहां से तनकुन जो ग्रंथ लाया था, जिसमें से तीस पोथिया पार्किन्सन के हाथों बेचकर उसने साढे चार सौ रुपये कमाये, यह धन्धा उसे बहोत अच्छा लगा, इसमे उसे लाभ ही लाभ नजर आता था। नैन्सी मेमसाहब भी ऐसी पोथियों की गाहक हैं। सोंधी टोले में देवीदत्त जी के घर पहुंचने पर उनका नौ-दस वर्ष का पुत्र गली के बाहर ही कुछ विद्यार्थियों से बातें करता मिल गया। तनकुन ने उसमें एक से पूछा : "पंडित जी महराज घर में तशरीफ रखते है ?"

तेजस्वी मुख वाले बालक ज्ञानेश्वर ने पूछा : "आप उनके पास किस कार्य से आए हैं ?"

"यही कुछ पुरानी संस्कृत की पोथियां-वोथियां वह बेचना चाहें तो उन्हें खरीदना चाहता हूं।"

"हमारे यहां पोथियों का विक्रय नही होता।"

"लेकिन एक बार मैं उनसे बातें करना चाहता हूं।"

"ज्ञान चर्चा के अतिरिक्त वह अपरिचितो से और किसी प्रकार का वार्तालाप नही करते," ज्ञानेश्वर ने कहा।

"अच्छा, तो अगर आप ही लोगों में किसी को मालूम हो कि कोई पंडित अगर अपनी पोथियां वगैरह'' "

इस बार बालक ज्ञानेश्वर ने सतेज स्वर मे कहा : "ऐसे अभागे ब्राह्मण यहां नही रहते, आप जा सकते हैं। कुलीन हिन्दू होकर भी गोरों से टके कमाने के लोभ में जो अज्ञानी लोग घूमते हैं उनका मुख देखना भी पाप है।"

यह अपमानजनक तीखा वाक्य सुनकर बंसीधर के मन को धक्का लगा। उसे लगा कि शायद उस बालक की बात ठीक ही है। बाहर की लक्ष्मी लाने के लिए घर की सरस्वती को निकालना गलत काम है, शायद पाप ही है लेकिन शायद यह पाप नही भी है। वे पंडित जिनके वंशज अब कचालू मटर बेचते हैं, पानी पांड़े बने डोलते हैं, सर्राफे मे मुनीमत या दल्लाली करके, रंडियों की कोठी पर उनके सातो जात से जुठारे हुए होठो

को चूमने का लालच रखते हैं, जिनके यहां पुरखों की किताबें दीमकों के द्वारा नष्ट हो रही है या अंध श्रद्धावश पूजा अर्चा से गली जा रही है, वे ब्राह्मण पापी हैं। स्वर्गीय पार्किन्सन ने जिन प्रोफेसर मैक्समूलर साहब का ज़िक्र किया था, और भी अंग्रेजों के नाम बतलाये थे, जो हमारे वेद और पुरानी पोथियां पढ़-पढ़कर दुनिया को नए ज्ञान का उजाला दे रहे है, वे पुण्यात्मा हैं। ऐसे ज्ञानार्थियों के लिए वह किताबें खरीदेगा, उससे पैसे दो पैसे कमाकर अपना पेट भी भरेगा। यह कोई पाप नही करता।···चलूं वाजपेइयो के टोले मे शायद कुछ काम बन जाए।

दोपहर ढलने लगी पर तनकुन को कही भी सफलता हाथ न लगी। घर लौट आया, भोजन किया, फिर अपने कमरे मे रैना पंडित के यहा से लाई हुई पोथियो को बड़ी देर तक सहेजता रहा। पुस्तको, नैन्सी माल्कम और अपनी न देखी हुई बाला पत्नी का ध्यान आपस मे बट-बंट कर उसके मन को निरन्तर मथता ही रहा, फिर विचार आया कि जो पुस्तकें उसने पार्किन्सन के हाथों बेची थी वह उनके मर जाने से बेकार हो गईं। वह नैन्सी माल्कम को अगर यह सलाह दे कि उन पोथियों को स्वर्गीय पार्किन्सन के यहां से ले आए तो उन्हे कही दूसरी बार भी बेचा जा सकता है।···लेकिन अगर उसने यह सलाह मान भी ली तो वसी को क्या मिलेगा। बिके हुए माल को फिर मे बेचकर नैन्सी जो राशि पाएगी भला वह उसे क्यों देगी। नैन्सी सुन्दर है, मादक भी। वह शुरू से ही उसके प्रति आकृष्ट भी हो रही है। नैन्सी के प्रति मन मे लालच जागा तो सहसा अपनी न देखी हुई पत्नी की याद के साथ उसकी अपराध-जनित भावना भी उमड़ी।···यह गलत है बसीधर, बहुत गलत है, पर मैं बेचारा क्या करू। चमेली के लिए मैंने दूसरे विवाह का प्रस्ताव ठुकरा दिया, घर बार छोड दिया, पांच-छह लाख की जायदाद का प्रलोभन भी त्यागा। लेकिन आजीविका के लिए कुछ-न-कुछ तो करना ही पड़ता है। स्वार्थ-परमार्थ, पाप-पुण्य, नीति-अनीति के दोहरे भवर जाल मे नाचते-नाचते उसे नीद आ गई। सुबह नहा-धोकर तनकुन घर से निकला और गोल दरवाजे से इक्का करके माल्कम के बगले पर पहुंच गया। नैन्सी मातमी पोशाक में उदास और अकेली बैठी हुई थी, बंसी को देखकर उसका मुखड़ा खिल उठा।

"हैलो। मैं तुमको बहोत याद कर रही थी।"

"मैं हाजिर हू, मेमसाहब। हुक्म दीजिए।"

"हुक्म, हुक्म?" नैन्सी हसी, फिर कहा: "अब न मैं माल्कम की पत्नी हूं और न पार्किन्सन ही मेरे दुर्भाग्य से जिन्दा बच सका। जब हाकिम ही नही रहे तो मेरी हुक्म देने की स्थिति भी नही रही।"

सहानुभूतिवश तनकुन खुशामदी बन गया, कहा: "मेरी निगाह मे आपका दर्जा दुनिया भर के शाहों, बादशाहो, रेजीडेंसी के साहबे आलीशान और कलकत्ते के शाह-बेअली मुश्शान से भी ज्यादह ऊंचा है। एक बार हुक्म तो दीजिए, फिर देखिए कि यह गुलाम···"

नैन्सी माल्कम उसे पैनी नजरों से भाप रही थी। कुर्सी से उठकर बसी के पास आई, उसके कन्धे पर हाथ रखकर बोली: "आनरेबुल रेज़ीडेन्ट साहब ने मुझे यह सलाह दी है कि इन दुर्घटनाओं को देखते हुए मैं अगर लखनऊ छोड़ दू तो मेरे हक मे बेहतर होगा।"

"क्या रेजीडेन्ट साहब मातमपुर्सी के लिए यहां तशरीफ लाए थे?"

"नही, मिस्टर हॉपकिंस की मार्फत मुझे कहलाया था।"

"तो अब आपका क्या इरादा है?"

"मैं भी यही मुनासिब समझती हूं, कि कलकत्ते वापस चली जाऊं। अब तो माल्कम की जमा जायदाद भी मेरी हो गई है।···समझ लो कि पाच-सात दिनो मे हो ही जाएगी, फिर···"

"कताकलाम होता है, हुजूर, वह सस्कृत की पोथियां जो स्वर्गीय पार्किन्सन साहब ने खरीदी थी, उन्हें अगर आप ला सकें तो कलकत्ते मे उन्हे फिर बेच सकती हैं।"

"सलाह अच्छी है, ले आऊंगी। लेकिन बंसीधर, तुम्हें भी मेरे साथ-साथ कलकत्ते चलना होगा।"

"जी ?" सुनकर तनकुन चौक गया।

नैन्सी बोली "तुम जानते हो कि वह पागल कुत्ता रजीउद्दौला मुझसे खार खाता है। एक बड़ी दौलत के साथ अकेले जाने पर वह मुझे लूटने की कोशिश भी कर सकता है···हर तरह से लूटने की। तुम साथ रहोगे तो भरोसे से जा सकूंगी। चलोगे मेरे साथ ?"

कलकत्ते चलने के सबध मे बंसीधर का मन सहसा कुछ निश्चय न कर पाया, फिर भी तकल्लुफ की हड़बड़ाहट मे कह गया, "आपकी खिदमत मे मैं लन्दन तक जा सकता हू हुजूर, कलकत्ते की तो बात क्या है, मगर···" कहते-कहते रुक गया।

प्यार भरी शराबी नजरों से देखकर हौले-हौले उसकी छाती पर हाथ फेरकर मुस्कुराते हुए नैन्सी बोली : "घबराओ मत खूबसूरत जवान, अभी यहा का सब हिसाब-किताब करते और उस दोज़ख में जाने वाले बूढे बन्दर के रुपए बटोरने में ही मुझे लगभग एक महीना लग जाएगा। और मेरे लिए रुपया वसूली का उलझन भरा कठिन काम भी तुम्हें ही करना पड़ेगा। तुम्हारे बिना मैं लाचार हो जाऊंगी, हैण्डसम।"

बंसीधर के चेहरे पर तरलता आ गई। बोला : "आप जो हुक्म फरमाएंगी उसे बसरोचश्म बजा लाऊंगा।"

"ओह, तुम कितने अच्छे हो हैण्डसम। इत्मीनान रखो तुम घाटे मे नही रहोगे। कलकत्ते तक पहुचते-पहुचते तुम्हारा अंग्रेजी बोलने का अभ्यास भी बढ़ जाएगा। मैं अच्छे-अच्छे लोगों से तुम्हारी भेंट भी कराऊंगी और अगर चाहोगे तो तुम्हारे पढने का प्रबन्ध भी कुछ-न-कुछ करवा दूगी।"

एक अंग्रेज दम्पति माल्कम की विधवा से मिलने आ गया। नैन्सी बोली : "इस वक्त जाओ। आज रात आठ बजे आ सकोगे ? मुझे तुमसे बहुत-सी जरूरी बातें करनी हैं।"

नैन्सी की बात सुनकर बंसी को अचानक अपनी पत्नी का ध्यान आया। परन्तु नैन्सी की नजरों की शराब इतनी तेज थी कि पत्नी की याद मन ही मे दब गई। कमरे से बाहर जाते हुए वह इस तरह से चली कि उसकी देह से देह की रगड़ हो ही गई, ऊपर से कटीली चितवनें और मोहक मुस्कान। बंसीधर बेबस हो गया। कहा : "आठ बजे आ जाऊंगा।"

चौक के कई महल्लों में, खत्री, ब्राह्मण सातों जात में यह खबर फैल गयी कि मुसद्दीमल का बेटा तनकुन बेलीगारद की एक मेम को लेकर कलकत्ते जा रहा है। सरकारी काम मिला है, कलकत्ते में सबसे बड़े गवन्नर-जण्डैल से मुलाकात होगी। बात का बातन्ना हो गया। उसी में यह भी उभरा कि तनकुन गोरों के यहां पुरानी पोथियां बेचता है बड़ा नफ़ा कमाता है। बातें तनकुन की मां के कानों में भी पड़ीं। बड़ी बहू ने छत की

मुण्डेर से अपनी पडोसिन से यह सुना कि तनकुन लाला मेम के साथ कलकत्ते आ रहे हैं और बिरादरी मे अभी से ही तुमरे घर को जात बाहर करने की बात भी धीरे-धीरे पक रही है। सुनते ही दौडी-दौड़ी सास के पास आई।

"बौआजी, बौआजी, हाय, गजब हुइ गया।"

"अरे भया क्या ई बताओ, कि खाली गजबै गजब करत रहोगी।"

"हाय बौआजी, बुंदो से सुनके हमरा तौ कलेजा धड़धड़ धड़ करने लगा। अबही तलक धड़क रहा हैगा।"

"ऊंह बतौती है नोही और—"

"तनकुन लाला मेम को लैके कलकत्ते जाए रहे हैंगे।"

"हैं ? कौन मेम ?"

"बेलीगारद का कोई भारी ओहदेदार रहा, ऊ मर गया तो सबसे बड़े हाकिम कहिन की राड भई मेम का कलकत्ते पहुंचाओ। मेम जवान है, खूबसूरत है, हुकुम भया कि अकेले न जाए। मेम कहिस की बंसीधर हमरे-के-हियन पुरानी चीजें बेचत हैंगे, हमरे भरोसे के आदमी हैंगे। हम इन्ही के संग जैयें। हाकिम ने कहा, ठीक है, जाओ। अरे बौआ-जी, कुछ पहले से सांठगांठ हुइहै। हमरे तनकुन लाला क्या किसी से कम खूबसूरत हैं। ऊपर से इत्ता पढे-लिखे बौआजी, लाला तौ हमरे हाथ से अब गैए-गए समझो। कलकत्ते जाए के किरिस्तान हुई जैंए। तुम लोगन की दुसरा ब्याव करन की जिद्द मे हमरी विचारी नबाबगंजवाली देउरानी का जलम बिगड़ गया।"

तनकुन की मा सुनती ही रही, बोली नही। आगे आने वाली सूचनाओ को सुन-सुनकर तो होश ही गवां बठी। प्यारी खबर लाई कि तनकुन और अपनी मेम को ऐब करते बिरिया देख के साहेब को धक्का लगा। छाती खोल के गोली दाग दिहिन। अब बड़े हाकिम कहिन कि दूनौ का पकड के कलकत्ते लै जाओ। कौनों बड़े जण्डैल अण्डैल फैसला करिहैं। "···खैर, जो होय पर धरम तौ भरस्ट करै चुका हैगा तुमरा लड़का।"

तनकुन की बहुआ न श्री न कृष्ण, एक शब्द भी अपने मुख से न बोली।

एक दिन मुसद्दीमल के दूर के रिश्ते से फुफेरे भाई और भारी भरकम आदमी, लाला नकछेदी लाल सबेरे-सबेरे ही मुसद्दीमल के यहां आ धमके। उमर में सात बरस बड़े, इतनी दूर से चलकर आए थे, खातिरदारी में हलुवा बना, नत्था हलवाई के गरमा-गरम समोसे मंगाए गए। सब तरह से निश्चिन्त होकर नकछेदी लाला बोले: "हमारे पास महादतगंज के पुत्तन बाबू आए थे। बहुत उबल रहे थे। कहने लगे, मुसद्दीमल के सारे खानदान को बिरादरी से बाहर निकाल देना चाहिए। मैंने कहा कि वह लड़का तो आप ही मां-बाप के घर से तीन बरस पहले निकल गया, तब से वह बिरादरी में किसी शादी गमी मे शरीक नही हुआ। वैसे आलिमफाजिल लड़का है, बिरादरी का नाम रोशन कर सकता है। उससे यों बिगाड़ न किया जाए, बल्कि हम लोग पहले उसे समझाए कि भई ये सब क्या कर रहे हौगे।"

"आप जो मुनासिब समझते हों वोई करें। चौपड़ी टोले मे एकको पुरतानी के घर में रहता हैगा।"

"ठीक है, हमारी ये राय है कि पहले लडके को बुलवा के सब बात पूछी जाए। देखें वह क्या कहता है।"

"देखो नकछेदी भैया, आप बडे हैंगे, आपके हुकुम से हम बाहर नही। बाकी हमरे भी अपने कुछ असूल हैंगे, समझे आप। जो लड़का अपनी हेकड़ी में आपै घर छोड़-कर चला जाए उसे हम नही बुलावेंगे। पढ़-पढ़ के साले का दिमाग पगलाय गया है।

फारसी पढ़िन, हम कहा अच्छा भई पढ़ ले, अब ऊपर से अंग्रेजी औ पढ़ै लगे। विद्या पर विद्या सो भी ससरै मलेच्छन की। दिमाग तौ पगलैए करी।"

छः बरस का पोता परतब्बे कमरे में आया और नकछेदी लाला से बोला : "बड़े बाबा-बड़े बाबा, हमरी दद्दा कहत हैंगी तनकुन चाचा का बुलावै खातिर गुमानी चाचा गए हैंगे।"

मुसद्दीमल सुनते ही भड़क पड़े : "वह अब हमरे घर मे नही आवैगा।"

बैठके के दरवाजे की कुन्डी खड़की और मुसद्दीमल की पत्नी की आवाज आयी : "परतब्बे, अपने बाबा से कहि देओ कि अगर तुमरे चाचा का आवना उन्हें अच्छा नाहीं लगत है तौ ऊपर जाए के बैठे। हमने तो अपने बेटे को बुलावा है।"

मुसद्दीमल कुछ कहने के लिए उचके ही थे कि नकछेदी लाला हाथ बढ़ा के बोले : "तुम थोड़ी देर चुप रहो भाई, सान्त रहो, एक बार हम अपनी बहू की बात सुन लें, पीछे जो मन में आवै सो कहना। हां बहू तुम क्या कहती हो ?"

तनकुन की बौआ का स्वर नरम पड़ा। बोली : "सतवारे भरे से हम रोज तरै-तरों की बातें सुन रहे हैंगे। ऊ चाहै जो करै, बाकी अपने धरम-ईमान का बड़ा पक्का हैगा। आपकी यह सल्ला हमैं ठीक जंची कि पहले उससे बुलाए के पूछ लिया जाए।"

पत्नी की बातें सुनकर मुसद्दीमल मुंह के मुंह मे बड़बडाने लगे और फिर सिर झुका कर बैठ गए। थोड़ी देर में ही गुमानी और तनकुन ने घर मे प्रवेश किया। बौआ दहलीज में ही खड़ी थी, तनकुन को देखकर बौआ का चेहरा चांद-सूरज से भी सौ गुना अधिक चमक उठा। तनकुन मां के चरण छूने के लिए झुका तो उन्होंने उसे बीच ही में उठा के छाती से चिपका लिया। आंखें छलछला उठी, कंठ भर आया। गुमानी ने बैठके के अन्दर जाकर बतलाया, "तनकुन आय गया है, तायाजी।" मुसद्दीमल और भी सिर झुकाकर बैठ गए।

बैठके में जाते हुए तनकुन से बहुआ ने धीमे स्वर में कहा : "बेटा, बिरादरी तुम्हें चाहे रखै चाहे न रख पर तुमरी बौआ तुम्हे छाती में छिपाए के रखेगी। हम तुम्हें नही छोड़ेंगे।"

मां की बात मन को छू गई, बैठके में पहुंच के बाप-ताऊ के चरण छुए और खड़ा हो गया। नकछेदी बोले : "बैठो-बैठो।"

तनकुन तख्त के कोने में बैठ गया।

"कलकत्ते कब जा रहे होगे ?"

"अभी दस पन्द्रह दिन तो और लग ही जाएंगे, तायाजी, माल्कम साहब का पैसा बटोरना है। कलकत्ते से विलायती सामान मंगवाते थे, यहां 'जान्सन एण्ड जान्सन' कम्पनी की मार्फत उसे बिकवाते थे। उस सब का हिसाब-किताब वसूल करना है।"

"ये किसके हुकुम से वसूल करोगे, भैया ?"

"माल्कम साहब के मरने के बाद उनकी मेम ने मुझे डेढ़ सौ रुपए महीने पर अपनी नौकरी में रख लिया है और मुझे नुमाइन्दगी करने के अख्तियारात दे दिए हैं।"

"हूं, हूं। हमने सुना था कि मेम की किसी और गोरे से आशनाई रही, दोनों में गोली चली।"

उत्तर देने मे पहले तनकुन सम्हला, फिर धीरे से कहा : "देखिए तायाजी, मुझे इन सब पचडो से मतलब नही, ठाकुर रामजियावन सिंह के लड़के शिवरतन ने हमारे धरम की बेइज्जती करने पर पादरी जेकिन्स को मारा। उसमे मेरा कोई हाथ नही था, होता तो आज मैं भी शिवरतन की तरह भागा-भागा फिरता, आपके सामने नही होता।"

"वो तो खैर ठीक है।"

"फिर चन्द्रिको जी जाते हुए हमारी पार्किन्सन साहब से अचानक मुलाकात हो गई। बड़ा आलिम और काबिल इंग्लिशमैन था। उसकी सलाह से पुरानी संस्कृत की पोथियों को खरीदने-बेचने का धन्धा मैंने शुरू किया, माल्कम साहब की बीबी भी यही सब धन्धे करती है। अरे बाबू तो जानते हैंगे। इनका नाम लेते ही माल्कम साहब और उनकी मेम हमें पहचान गई। माल्कम और मेम दोनों ने हमसे कहा कि तुम्हारे पिता हमारे यहां कपड़ा बेचने आते हैं। तो इस तरह से हमारा आना-जाना शुरू हुआ। मेमसाहब के यहा हमने भी तरह-तरह के हुल्लड़ सुने है। अब उन दोनों के बीच में क्या था क्या नही था इससे हमें क्या मतलब है भला।"

"हमने सुना कि तुम मेम के साथ खाते पीते···"

"तायाजी, आप रुक्को पुरतानी के यहां पुछवा लें। वह मेरे लिए खाना बनाती हैं। इंग्लिशों के यहां जाते तो बाबू भी बहुत रहे हैं। पूछिए इनसे, क्या इन्होंने कहीं एक बूंद पानी भी पिया है जो इनका कोई लड़का पिएगा। मुझे अंग्रेजी पढ़ने का शौक है और मैं पढूंगा। अंग्रेजी से रसूख भी रखूगा, क्योंकि मैं जानता हूं, आगे इन्ही की हुकूमत होगी।"

"तुम नाव पर मेम के साथ जाओगे, तब तो खाना-पीना··"

"जी नही एक मिसिरजी मेरा खाना बनाने के लिए साथ जा रहे है।"

सुनकर लाला नकछेदी लाल गम्भीर हुए, फिर उठते हुए कहा: "हमारा मन आज साफ हो गया बेटा! तुम शौक से कलकत्ते जाओ और वहां सुनापट्टी में हमारे एक साले रहते है, रामचन्दर खन्ने, उनकी वहा बिलैती कपड़े की दलाली होत हैगी। बल्कि रामचन्दर जो हैं वह तुम्हरे ससुर की बुआ के लडके हैं। उनसे हमारा नाम लेओगे तो तुम्हारे लिए रहने जीमने का बन्दोबस्त हो जाएगा। उनसे हमारी जयशंकरजी कहना।"

तीन बरस बाद घर आया था, घरवालों ने तनकुन को जाने न दिया। मुसद्दीमल बेटे से तो नहीं पर उसकी मां से बोले: "इसको ठीक तरह से खिलाए-पिलाए देना भाई। और चूंकि इसने अपनी मर्जी से घर छोड़ा हैगा तो हम तो अपने मुंह से नहीं कहेंगे, बाकी ये रहना चाहे तो अपने घर में रहे। जात बिरादरी वालो को मैं देख लूगा।" लाल नकछेदी लाल के जाने के बाद लाला मुसद्दीमल अपनी रोज की फेरी लगाने चले गए।

7

कम्पनी के आठ सिपाही रेजीडेन्ड साहब के हुक्म से श्रीमती नैन्सी माल्कम को सुरक्षित रूप मे कानपुर गंगाघाट तक पहुचाने के हेतु साथ थे और आठ सिपाहियों का प्रबन्ध हैदरीखां ने करवा दिया था। दो दासियां, बावर्ची, अर्दली और बसीघर की रसोई बनाने के लिए एक मिस्सर महाराज भी साथ थे। एक बग्घी में नैन्सी और बसी तथा हीरे,

जवाहरात और राहखर्च के लिए रुपयों की थैलियां थीं। एक दूसरी शिकरम में नौकर-चाकर बाकी सामान और रात के पड़ाव के लिए तंबू, छोलदारियां थीं। निजी सिपाहियों की निगरानी में शिकरम पहले से रवाना हुई, ताकि खिरैया झील के किनारे पड़ाव डालकर खाने-पीने का जोगाड़ करें। आया और अर्दली, मेमसाहब की बग्घी पर कोचवान के साथ थे और बग्घी के दोनों ओर कम्पनी के चार-चार घुड़सवार चल रहे थे। बंसीधर के लिए नैन्सी ने जिद करके अंग्रेजी पोशाक खरीदी थी। बंसी उसमें बहुत फबता था। पास बैठी हुई नैन्सी की कनखियां कभी-कभी उसे ललचाई हुई नजरों से देखकर बंसी के युवा मन को तपा-तपा जाती थीं। वह सोचने लगा कि कब तक अपने को बचा सकेगा। पिछले 28-29 दिनों तक चारों तरफ आग की लपटों के बीच रहकर भी उसने अपने आपको प्रह्लाद की तरह बचाया है। माल्कम की मौत के बाद मातमपुर्सी के दिनों में जिस रात नैन्सी ने बंसी को बुलाया था, उस रात बंसी ने बड़ी विनम्रता किन्तु दृढ़ता के साथ शराब पीने और नैन्सी के साथ सोने, बूढ़े माल्कम की मौत की खुशियां मनाने से इन्कार कर दिया था। कहा था : "हिन्दू विश्वासों के अनुसार तेरह दिनों तक मरने वाले का प्रेत धरती पर ही भटकता है। वह हम लोगों का नुकसान भी कर सकता है।" कामातुरा नैन्सी होशियार थी, वह बिना कुछ कहे हुए ही मौके तलाशकर तब से बराबर अपनी नजरों की शराब पिलाती चली आयी है और बंसीधर भी इससे इन्कार नहीं कर सकता है कि काया से वह अपने आप को भले ही अब तक बचा सका हो, किन्तु मन से नहीं बचा सका। पुरुष की पहली भूख उत्तरोत्तर बढ़ती ही गयी। बंसी का एक मन अपनी न देखी हुई पत्नी से बेहद लगाव रखता था।

लखनऊ से कलकत्ते चलने की तैयारियों में इन पिछले 28-29 दिनों में उसने रुक्को पुरतानी को दो बार अपने खर्च से नवाबगंज भेजा था। पहली बार जब लखनऊ की खत्री बिरादरी में उसके मेम के साथ झूठे किस्से उड़े थे और उसको बिरादरी से बाहर निकालने की चर्चा भी हुई थी, तब उसने अपनी ससुरालवालों को यह आश्वासन दिलवाया कि वह इन बातों पर तनिक भी अपने कान न दें। वह मात्र धन कमाने की इच्छा से उसके साथ जा रहा है, अपना धर्म गंवाने के लिए नहीं। दूसरी बात, रुक्को पुरतानी को इसलिए भेजा कि वह अपने बूढ़े जेठ से नवाबगंज के इर्द-गिर्द पोथियों वाले फटेहाल पंडितों की कुछ जानकारी प्राप्त कर आये, ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह खुद भी इस बहाने से दो रोज के लिए नवाबगंज के चक्कर लगा सके। पोथियों की खोज के संबंध में वह अपनी कल्पना के अनुसार नवाबगंज जाने का अवसर तो न पा सका किन्तु अपने ससुर से प्राप्त जानकारी के अनुसार उसे लखनऊ के पास कुर्सी नामक गांव में लगभग सौ ग्रंथ प्राप्त हो गये। धनुर्वेद, अश्वशास्त्र, न्याय और वैशेषिक के कुछ अलभ्य ग्रंथ उसे वहां से सस्ते दामों में मिल गये थे। काकोरी से तंत्रशास्त्र की दो पुस्तकें ले आया जिसे लखनऊ में पंडित गंगाधर शास्त्री को दिखलाने पर जाना कि बड़ी बहुमूल्य और अलभ्य पोथियां हैं। पुराने नवाबों और बादशाहों की भूखी मरती बेशुमार रखैलों के घरों से चित्र और पुरानी सुन्दर वस्तुओं को भी नैन्सी के सुझाव पर बड़ी दौड़ धूप और चतुराई से खरीदा। नैन्सी ने लिखित रूप से उससे यह करार किया था कि इस धंधे के मुनाफे में बंसीधर टंडन आधे का हकदार होगा। माल्कम की मौत के बाद मिलन की पहली रात के लिए आमंत्रित बंसी का हठीला रुख देखकर डियर डियरेस्ट आदि शब्दों से संबोधित करते हुए भी नैन्सी ने नजरों के खेल की चौसर समेट ली थी। पुस्तकों और क्यूरियो की वस्तुओं के व्यापार, कलकत्ते के वर्णनों, कलकत्ते में उसकी अंग्रेजी पढ़ाई की व्यवस्था अथवा कभी भारतीय समाज की बाबत बातें किया करती थी। हर शाम काम

की दौड़-धूप के बाद वह उसे देर तक बातों में फंसाये रखती, उसके लिए फलों की तश्तरी खुद लाती, खुद तराशती, पानी भी कई बार शीशे के गिलास में लाकर उसे पिलाया। इस हद तक बंसी ने अपने धरम आचार विचार को बेझिझक त्यागा। मुंशी हिम्मत बहादुर के यहां पढ़ते हुए उसने कभी उनके यहां पानी भी नही पिया था। इतने मुसलमान दोस्त हैं, मगर धरम की यारी उनसे भी नही की। ठाकुर रामजियावन सिंह के घर खान पान के संबंध में उसका कोई जातीय प्रतिबंध न था पर शिवरतन सिंह से याराना-सा हो जाने की बदौलत वह कभी-कभी गोश्त और प्याज़ खाने लगा जो लखनऊ की खत्री बिरादरी मे वर्जित था। इतनी प्रगतिशीलता के बाद नैन्सी के हाथों दी जाने वाली शराब के लिए तो वह इंकार कर सका परन्तु पानी और फलो को अपने धार्मिकता से अछूता रखा। एक ही तश्तरी से वह भी कभी-कभी दो-चार टुकड़े खा लिया करती थी।

इन चंद दिनों मे ज़ाहिरा तौर से कोई वार न होते हुये भी बंसी के 'क्वांरे' कलेजे में कई घाव लगे थे। परसों जब स्व० मालकम का हिसाब किताब साफ करके जानसन एंड जान्सन की दूकान पर गया तो मालिक कंपनी ने इंग्लैण्ड की सिली दो सुन्दर मर्दानी पोशाकें उसकी नाप लेकर दीं, कहा कि यह पोशाकें मिसेज मालकम के किसी ऐसे दोस्त के लिए हैं जिसकी नाप बंसी की नाप से मेल खाती है और इसके रुपये वह नकद भुगतान कर गई थी। रुपया और सामान लेकर जब नैन्सी के यहां पहुंचा तो डेढ़ पहर रात बीते विदा लेते समय बंसी को रोक वह अंग्रेजी लिबास पहनने का आग्रह किया। न मानी, पहनाया, खुद भी उसे पहनने में कहीं-कहीं सहायता दी। पहना कर ऐसी नजरों से देखा कि कलेजा कामाग्नि से दहक उठा। बिजली की तरह पैंतरा बदलकर वह उसके सामने से बगल में आ गई और बांह में बांह डालकर उसे कदे आदम आईने के सामने ले गई। अपनी जुगलजोड़ी का प्रतिबिंब देखकर तनकुन आप ही रीझ उठा। आगे की बात मन में उठते-उठते ही दब गई और नैन्सी बिजली की तरह दूर, कमरे के दरवाज़े के पास जा खड़ी हुई, बोली : "यह पोशाक उतार दो और हिंदू बनकर घर जाओ। काफी देर हो गई है। कल का दिन तो मेरे ख्याल से तुम अपने रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ बिताना पसंद करोगे, लेकिन रात मे अपना सामान लेकर यही आ जाना। आजकल पिछली रात में चांदनी निकलती है, इसलिए हम लोग ठीक चार बजे यहां से कानपुर के लिए रवाना हो जायेंगे। सूरज उगने तक हरौनी से कुछ आगे पहुंच जायेंगे। वहा एक घण्टे का रेस्ट। तुम चॉकलेट लेना पसंद करोगे या टी?"

"चॉकलेट का जायका लेट मि० पार्किन्सन की बदौलत मिल चुका है, टी पिलायें। मैंने सुना है, अब तो आपके मुल्क के धनी लोगों ने हमारे आसाम के इलाके में इसके बागान बना लिये हैं।"

"हा, प्यारे हिंडोस्टानी, तुम्हारा ढरम नही जायेगा।" कहकर ऐसी खिलखिला-कर हंसी कि छुरियों से ज्यादह कारी घाव कर गई। कपड़े बदलने के लिए दरवाजे बंद कर बाहर चली गई। दूसरा दिन अपने घरवालों, मुंशी हिम्मत बहादुर नगरिया के ठाकुर आदि के यहां मिलने-जुलने में बिताया। लौट रहे थे तो पीछे से किसी ने दौड़कर पकड़ लिया। बंसी ने मुड़कर देखा तो पंडित तरलोचन नाथ रैना हाथ मे अपनी पंखिया लिये खड़े हैं : "क्यों जनाब आप ही तो ये जो मुझसे 25 अशर्फियों में सस्कीरत की पोथियां खरीद ले गये थे और कीमियाई की किताबें लेकर कल आने का वादा किया था जनाब ने। वह कल आज तलक नही आया जनाबे वाला।…क्या गर्मी है!" पंखिया करकराने लगी।

बंसी ने उन्हें अचरज से देखते हुए अदब से कहा : "बेअदबी मुआफ, आपको

ग़लतफ़हमी हुई है शायद। मैं तो नवाबगंज के मुंशी हिम्मत बहादुर साहब का शागिर्द हूं। मुझे सस्कीरत और कीमियागीरी की किताबों से क्या निस्बत ?"

"क्या गर्मी है, नज़रें सरीहन पहचान रही हैं आपको। आप ही थे जनाब।"

"ओह, अब मैं समझा, मुझे देखकर आप बेलीगारद के गोयन्दे बालकिशुन खत्री का धोखा खा गये। वह लाल घोड़ी पर घूमता है..."

"हां, हां।"

"वह बेलीगारद का गोयंदा है। आपके यहां सोने की टोह लेने आया होगा। पोथियां भी ले गया। वह है तो साहब हमारी ही बिरादरी का मगर उसे ज़ात बाहर कर दिया गया है। उसकी सूरत मुझसे बहुत मिलती जुलती है। अक्सर धोखा हो गया है लोगों को। मगर हमारे बीच में एक बड़ा बारीक फ़र्क़ यह है कि मेरी दाहिनी आंख की निचली पलकों के पास यह लाल तिल है। इसे ग़ौर से देख लीजिए ताकि आयन्दा आप परेशानी में न पड़ें। अच्छा, तो अब इजाज़त दें, मुझे जरूरी काम से जाना है। आदाब।"

"क्या गर्मी है!" रैना पंडित पंखिया डुलाते देर तक अचभे में पड़े रहे। किंतु यह सब करते हुए भी बंसी का कलेजा नैन्सी के ध्यान में रहा। रैना पंडित की बात इसलिए और भी मज़ा दे गई कि जब नैन्सी को सुनायेगा तो कितना मज़ा आएगा।

माल्कम के बंगले में रात बेक़रारी के साथ बीती। कलकत्ते चलने के लिए पूरी तौर से अपनी विलायती जादूगरनी के पास आकर, उसके साथ कहकहों और कनखियों की फुलवारी में जवानी के फूलों की मादक महक से मख़मूर होने पर भी दोनों के बीच की दूरी बनी ही रही। लगभग तीन बजे उठ बैठा, तैयार हुआ, नैन्सी के आदेशानुसार विलायती पोशाक पहनी और उसके बुलावे की बाट में अंग्रेज बना कमरे में टहलता रहा। अंग्रेज़ी पोशाक हिन्दुस्तानी पोशाक से अधिक चुस्त होती है। आदमी शानदार लगता है। और इस वक्त तो इस पोशाक की ऐसी शान है कि इसके आगे शाहों बादशाहों के हीरे मोतियों जड़ी जरी मख़मल की पोशाकें भी झेंप जाती हैं। बंसीधर इस समय अपने आपको मिस्टर बंसीढर ही महसूस कर रहा था। उसकी राष्ट्रीय भावनाओं पर नैन्सी की क़ौम का ऐसा मुलम्मा चढ़ चुका था कि उसके अन्दर हिन्दुस्तान और उसकी हर वस्तु के लिए हीनता ही अनुभव होती थी, हिन्दुस्तानियों में यदि कोई ऊंचा पूरा अंग्रेज बहादुर जैसा नसीबेवर शख़्स था तो वह एक अकेला बंसीधर टण्डन उर्फ़ तनकुन उर्फ़ बंसीढर ही था।—कुछ भी हो, नैन्सी ख़ूबसूरत है, काबिल आदमी की क़दर करना जानती है, नैन्सी मेरा नसीबा है। और लो, सजी बजी नैन्सी भी उसके कमरे के दरवाजे पर परदा सरकाकर खड़ी थी। उसने बड़े प्यार से देखा, और इठलाते हुए आगे बढ़ कर बोली : "इस वक्त कौन कह सकता है कि तुम निगर हिन्दोस्टानी हो।" कहकर करीब आयी। पोशाक पहनने की कुछ खामियां दूर कीं और इस बहाने जगह-जगह उसका स्पर्श किया। बंसी टकटकी बांधकर उसके रूप को बेसुध होकर देख रहा था, एकाएक सारी झिझक तोड़कर बंसी ने नैन्सी को अपनी बांहों में कस लिया। उपहार में नैन्सी का प्रथम चुम्बन, जीवन का प्रथम नारी चुम्बन मिला। और उसी चुम्बन, आलिंगन की रेशम डोर में बंधे हुए तमाम दिन वह बग़ैर हांके हंकता चला गया। बेगम गंज में चाय के लिए पड़ाव पड़ा था। नौकरों और सामान से लदी हुई शिकरम किराये के सिपाहियों के साथ चिरैया झील के किनारे और खाना वग़ैरह बनाने के लिए एक घण्टे पहले चली गयी थी। चाय बग्घी में बैठकर ही पी गयी, नाश्ता भी हुआ और बंसीधर यह भूल गया कि वह सदियों से आस्तिक, धर्मप्राण, शैव खत्री है, उसे म्लेच्छ के साथ चीनी मिट्टी की प्लेट में नहीं खाना चाहिए। नैन्सी ने उसे कांटे छुरी का इस्तेमाल भी सिखलाया और यह सब

करते हुए बंसीधर की 'आत्मा' बहुत 'साफ' थी—"जैसा देश वैसा भेस" अपनाना ही चाहिए। तमाम दिन इश्क के नशे में गुजरा और उसी इश्किया झोंकों में कुछ अदबी, इल्मी और सियासी बातें भी होती रहीं।

चिरैया झील दूर न थी, दिन के भोजन के समय तक पहुंच गये। रंग-बिरंगी, तरह-तरह की आवाजों वाली, छोटी-बड़ी चिड़ियों से वह इलाका चहक रहा था। इश्क की रंगीन ख्यालियों में चहकते हुए यह दो पंछी अभी कुछ देर और भी ठहरते, मगर ढलते कार्तिक के सूरज की तेजी बर्दाश्त न हुई, दोनों चले आये। एक ही टेबुल पर डिनर हुआ। मिस्सर ने साहब के लिए हिन्दुआनी खाना बनाया था और मुमताज मियां बावर्ची ने मेम साहब के लिए। तंबू पर पर्दा पड़ा हुआ था। नौकर आवाज दिये बिना भीतर नहीं आते थे। इस बीच में हिन्दुआनी थाली म्लेच्छ मेम ने कितनी बार जूठी की और धार्मिक संस्कारों वाले तनकुन टण्डन ने कितनी बार म्लेच्छ की जूठी की गयी और म्लेच्छ के हाथों बनी चीजों का स्वाद लिया, उसका हिसाब-किताब मुन्शी चित्रगुप्त की बहियों में ही होगा। खाना खाकर दोनों अपने-अपने तम्बुओं में सोये। शाम को चार बजे फिर भेंट हुई। इस बार दोनों ही घरेलू विलायती पोशाकों में थे। दिन भर के बाद चिड़ियों के झुंड के झुंड झील किनारे के पेड़ों पर अपने रैन बसेरे के लिए क्रमशः लौटने लगे थे। झील के पानी में सारस और बत्तख, कुछ जल मुर्गाबियां तैर रही थीं। पंछियों के कलरव से जंगल सनसना रहा था। सूरज पश्चिम की दिशा में ढलान पर आ चला था, पीछे-पीछे कुछ दूरी पर आते हुए अर्दली को मेमसाहब ने सफरी कुर्सियां लाने का हुक्म दिया। दोनों बैठ गए। बंसी की हथेली को अपनी हथेली से सहलाते और दबाते हुए नैन्सी ने कहा : "हिन्दुस्तान में तुम लोग इस आजाद मोहब्बत को सिर्फ अपनी तवायफों के साथ ही महसूस कर सकते हो, शरीफ औरतों के साथ नहीं।"

"मैं समझता हूं कि अंग्रेज कौम में भी कुछ ऐसी पाबंदियां तो होती ही हैं। इश्को-मुहब्बत तुम्हारे यहां अगर पूरी तरह से आजाद होती तो बेचारा पार्किन्सन इस तरह क्यों मरता ?"

"अरे, वह तो शादी के बाद करीब-करीब हर देश में पाबंदी है, मगर मैं इस समय आजाद हूं। मैं मिसेज नैन्सी माल्कम नहीं बल्कि मिस नैन्सी आसबोर्न हूं और तुमसे मिलने की पूरी आजादी भोग रही हूं। लेकिन कोई मेरी जैसी जवान हिन्दोस्तानी विधवा अपने लिए नये मित्र की कल्पना भी नहीं कर सकती। वह अगर मजबूर होगी तो सिर्फ व्यभिचारिणी बनने के लिए ही। क्या मैं गलत कहती हूं ?"

बंसी गंभीर होकर बोला : "शायद तुम्हारी बात ठीक ही है। मगर यह तो मानना ही होगा कि हमारी धार्मिक पाबंदियों के पीछे बहुत बुलन्द आदर्श हैं।"

नैन्सी हंसी. "हुआ करें, मगर उनका पालन कितने लोग करते हैं यह भी तो सोचो। मेरी साथ आनेवाली आया खैरातन मेरे यहां काम करने से पहले किसी नवाब के यहां नौकर थी। वह अच्छे-अच्छे हिन्दोस्तानी घरानों के किस्से मुझे सुना चुकी है। कुछ ऊंचे हिन्दू घरों की बात भी उसे मालूम है।"

"तुम्हारी बात से मैं इन्कार नहीं करता नैन्सी, हमारे गली महल्लों में किसी जवान और सुन्दर औरत के विधवा होते ही खुद उसकी बिरादरी के, घर के, देवर, जेठ, ससुर, और तमाम दूसरे रिश्तेदार वगैरह भी क्वार कार्तिक के कुत्तों की तरह घेरने लगते हैं। मगर ऐसी भी हजारों मिसालें दी जा सकती हैं जिनमें हमारी स्त्रियों और पुरुषों का चरित्र आसमान की ऊंचाइयों को छूता है।"

. "खैर, जो हो, मगर मेरा ख्याल है, हिन्दुस्तानी लोग प्रेम करना नहीं जानते।"

"घरेलू औरत किसी किस्म का इश्किया इज़हार करना न जानती हो, मगर वह अपने पति पर जान निछावर कर सकती है। वह अपनी खुशी से अपने पति की लाश के साथ जल कर सती हो जाती है।"

नैन्सी हंस पड़ी, कहा : "पिछली बार अपने कलकत्ते में रहने के पन्द्रह महीनों मे मैंने तीन चार मर्तबा यह सुना कि ऊंचे खानदान वाले अपनी आबरूदारी की शान दिखलाने के लिए बेवाओं को नशे मे धुत्त बनाकर उसे लाश के साथ जिंदा जला देते हैं, और उसकी चीखें दबाने के लिए ढोल ताशे बजाते हैं। यह तो राक्षसो का काम है।"

वंसी एक बार तो लाजवाब हो गया, फिर कहा : "हा, यह बात भी है, मगर मैं तो आदर्श की बात बतला रहा हू।"

"आदर्श शराब के जाम में झलकने वाला एक हसीन नजारा है—कोरा काल्पनिक —जिसे अस्लियत बतलाकर ढोंग किया जाता है। हम विज्ञान और उद्योग के तेजी से बढ़ते हुए दौर से गुजर रहे हैं डियर, यह मत भूलो। हमारे ब्रिटेन मे, सारे योरप में करीब डेढ़ दो सदियो से भद्र और कुलीन ऊंचे घरानो की औरतो ने अपने ऐयाश पतियों के इस नादान गुमान को छिप-छिप कर इस क़दर तोड़ा है···"

"जैसे मिसेज माल्कम होकर तुमने पार्किन्सन से नाता जोड़ा था।"

नैन्सी हस पड़ी, कुर्सी से उठते हुए कहा : "अरे, वह तो पूरा एक ड्रामा था। कभी फुरसत से सुनाऊंगी। मगर फिलहाल यह जरूर समझ लो कि मैंने और पार्किन्सन ने उस रिश्वतख़ोर मोटे चूहे माल्कम की पूरी जानकारी मे ही प्रेम का खेल खेला था।"

पीछे काफी दूर पर खड़े अर्दली के हाथ में अब एक मशाल भी आ गई थी। उसे मशाल देने के लिए आती हुई काली छाया को देखकर नैन्सी उठी थी। बंसी की कुर्सी के पास आकर उसके गालों को छूते हुए कहा : "आओ, शाम रंगीन करें। मौसम सुहाना है—बांहों मे बंधने-बांधने लायक है।" बंसी उठा तो नैन्सी की बाहों से बंध गया। गहराते अंधेरे और सपने भरे धुंधलके मे कुछ देर दोनों बंधे-बंधे चुम्बनों का आदान प्रदान करते रहे।

खेमे तक आते हुए रात में बंसी बोला : "तुम्हें देखकर मुझे यह लगता है कि तुम अंग्रेज औरतों को मर्द के दिल व दिमाग की मलिका बन जाने की तालीम भी दी जाती होगी।"

"हूं, मां के गर्भ में ही मिल जाती है।"

"और शायद मां के गर्भ मे ही तुम्हें यह जादू भी मिला होगा कि किस तरह मर्द के प्यार को अपना हक़ समझ कर वस मे कर लो।"

दोनों खेमे के पास आ चुके थे। नैन्सी ने उसे भर कनखियों से देखा और दबी लजीली आवाज मे कहा : "अंदर चलो। धीरे-धीरे खुद ही महसूस कर लोगे।"

बंसी के जी मे आया कि यह कहे कि ईस्ट इंडिया कंपनी भी यही करती है, पर तब तक वह "अथातो काम जिज्ञासा" में इतना अकड़ चुका था कि होश को बेहोश बना देना ही उसे अच्छा लगा।

8

जहाजों और महलों का शहर कलकत्ता। लखनऊ से आ रही अपनी प्रिय सहेली कुमारी नैन्सी आसबोर्न का स्वागत करने के लिए बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गर्वनर की मुख्य परिचारिका मिसेज लायन्स अपने प्रिय मित्र मिस्टर विलियम पिन्काट के साथ स्टीमर घाट पर खडी थी। नैन्सी के आते ही मिसेज लायन्स उनसे बड़े आडम्बर भरे आग्रह के साथ गले मिली। अपनी प्रेम भरी चिड़िया-चू-चू करने के बाद रोज़ी लायन्स को पिन्काट की याद आई। जवान, खूबसूरत और गम्भीर मुख वाले पिन्काट का नैन्सी से परिचय हुआ, रोज़ी ने यह भी बतलाया कि इण्डियन 'टट्रास' (तंत्र) की पोथियो की मांग उन्होंने इन्ही पिन्काट के आग्रह से की थी। फिर पूछा, क्या वह उन पुस्तकों को लाई है।

नैन्सी बोली—"हां, कुछ एक तो मेरा सहायक संग्रह कर सका है। मैं आपको और भी कई अलभ्य मैनस्क्रिप्ट्स दिखलाऊगी, मिस्टर पिन्काट। मेरे पास कुछ किताबें कश्मीर की पुरानी शारदा लिपि मे भी हैं और रोज़ी तुम्हारे लिए मैं 'कामसूत्र' की एक बड़ी ही सुन्दर, तस्वीरोंदार मेनस्क्रिप्ट् लाई हूं। तुम देखोगी तो (कान मे) आजकल किससे तुम्हारी इंटिमेसी है उसे दिखलाओगी···" रोज़ी ने हसकर उसे प्यार से धक्का दिया।

तीन अंग्रेजों की बातें चलती रही, और लखनऊ से अंग्रेज बनकर आया हुआ बंसीधर टण्डन पीछे अदब से खड़ा-खड़ा ऊबता रहा। लखनऊ से यहां तक रास्ते भर उसके देशवासियों ने उसे विदेशी अंग्रेज मानकर भय और अदब से झुक-झुककर सलामें की थी, लेकिन यहा आकर अपनी सारी कायिक और कपड़ो की सुन्दरता के बावजूद यह अनुभव हुआ कि वह 'डर्टी निगर' ही है। नैन्सी जिसने यात्रा मे हर रोज रिझा-रिझाकर बोतल और अपने जवान जिस्म की शराब पिलाई थी, इस समय अपनी जाति के लोगो में मिलकर उसे बिल्कुल भूल गई। नैन्सी ने बंसी को अपने अंग्रेज मित्रों से परिचय कराने योग्य भी नही समझा। यह बात उसे मन-ही-मन बहुत अखर रही थी। भड़कीली वर्दी पहने हुए रोज़ी मेम साहब का खास अर्दली उनके पास आया, और अदब से कुछ निवेदन किया। तीनों हसते हुए बाहर की ओर चलने लगे। बंसीधर अपने आप में प्रश्नचिह्न बना खड़ा ही रहा, बिना कुछ कहे सुने जाने वाली नैन्सी के लिए। बंसी के मन में क्रोध की बारूद-सी भडक उठी। तभी चलते-चलते एकाएक नैन्सी ने उसकी ओर पलट के देखा, उसे इशारे से बुलाया। रोज़ी और पिन्काट से परिचय कराते हुए कहा कि यह फारसी जबान की ऊंची-से-ऊची डिग्री पाए हुए अंग्रेजी और अंग्रेजों के भक्त एक बड़े ही कुलीन वंश के युवक हैं, और यही उसके लिए संस्कृत की पुस्तकें और क्यूरियो का सामान भी लाते हैं। "रोज़ी, तुम इनके ठहरने का इन्तजाम कर दो।"

रोज़ी ने कहा : "मैं इन्हें अपने एक हिन्दू परिचित के यहां भिजवाए देती हू। वह इनके ठहरने का प्रबन्ध कर देगा।" नैन्सी ने बंसी से कहा कि तुम सुबह दस बजे छोटे लाल साहब की कोठी पर पहुच जाना।

"मगर मुझे भीतर कौन आने देगा, मिसेज माल्कम ?"

रोज़ी बोली कि उसके लिए गार्ड रूम मे आदेश दे दिए जाएंगे।

किराए की गाड़ी पर अर्दली बंसी को एक देशी रईस के यहां ले गया। रईस ने

अपना नौकर साथ दिया, वह उसे जूट के एक गोदाम में ले गया, और गोदाम के आदमी ने उसके लिए एक छोटा-सा कमरा खोल दिया। वह कमरा बहुत ही मैला, पलस्तर उखड़ा हुआ और घुटन भरा सा था। एक मामूली-सी चारपाई लाकर बिछा दी गई। छोटे लाट के सुनहरे झब्बेदार बंगाली अर्दली ने अंग्रेजी पोशाक पहने बंसी को लौटते समय सलाम करने की जरूरत भी नहीं समझी।

बंसी को नैन्सी पर बड़ा क्रोध आ रहा था। इतनी दूर लाकर और रास्ते भर उससे प्रेम भरा व्यवहार करके नैन्सी यहां आकर उसकी यों उपेक्षा करेगी, इसकी उसने कल्पना तक नहीं की थी। अंग्रेजों के बीच मे आते ही उसने उसे भुला दिया, कैसी स्वार्थी है यह जाति ! यह विलायती सुन्दरता भी वस्तुतः कितनी असुन्दर होती है; जी चाहता है कि उसके मुह पर थूककर घर लौट जाए।

लेकिन विलायती गोरी चमड़ी के ऊपर थूक कर क्या वह अपनी देसी, गोरी, चमड़ी का सिर अपने धड़ पर कायम रख सकेगा ? सारे भारत मे इनकी कूट-नीतियों का कुचक्र चल रहा है। भारत के बड़े-से-बड़े राजे, सम्राट और सरदार इनकी चालाकियों के मकड़जाल में मक्खियों और पतगों की तरह फंसे हुए फड़फड़ा रहे हैं। फिर भला इनसे बचकर वह कहां जा सकता है। अंग्रेज, अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी पोशाक ही आज के निराशाजनक वातावरण मे किसी उच्चाकांक्षी भारतीय युवक का सुनहरा भविष्य बन सकती है, यह सोचते ही बंसी का क्रोध दूध के उबाल की तरह पटक गया। बांस की खटोलिया पर बैठकर अपनी विलायती पोशाक उतारी, नहाकर उसे अपने काठ के संदूक में रखा, कुर्ता, धोती, अंगरखा, दुपट्टा और दोपल्ली टोपी निकालकर बाहर रखी, अंगोछा पहन कर निबटा-नहाया और गोदाम के रखवाले से सूतापटटी का पता पूछा।

.जगह पास ही थी। बडे बाजार के नुक्कड पर एक देसी हलवाई की दूकान पर जलपान किया और सूतापट्टी में नकछेदी ताया और अपनी ससुराल के नजदीकी रिश्तेदार लाला राम चन्दर खन्ना का मकान खोजने लगा। एक पुरानी इमारत के तिमंजिले पर खन्नाजी दो कमरों वाले मकान में रहते थे। परिचय पाकर बहुत खुश हुए, कहने लगे : "अभी दो दिन पहले नबाब गंज से चिट्ठी आई रही कि आप कलकत्तें पहुचन वाले हैं, पर ये नहीं लिखा कि कब पहुंचियें और कहां मिलियें। बस यही लिखा कि कोई अंग्रेज हाकिम की मेम के साथ पहुंचैवाले हैंगे। अब हम आपकी चाची से कहै, कि कैसे पता चलै। यहां ससुरी कित्ती मेमें आवती-जावती हैंगी, किससे पूछें कि क्या तुम ही हमरे दमाद का भगाय के लाई हो।" अपने मजाक पर खुद ही हंसे और फिर पूछा : "आप का असबाब, समान कहां रखा है भैया ?"

"एक कोई बल्लभदास अगरवाले हैं, उन्हीं के जूट के गोदाम में रख आया हूं। बगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर की सेक्रेटरी मिसेज लायंस ने वहीं जगह दिलवाई।"

"रोटी खाय के फिर चलेंगे, समान यहीं उठा लावेंगे।"

"असल में मैंने अभी बहुत तगड़ा जलपान कर लिया है चाचा जी। इस समय तो मुझे माफ कीजिए. हां, शाम को ब्यालू जरूर करूगा। और यह मेहरबानी भी मेरे ऊपर कीजिए कि यहीं पास-पड़ोस में एक कमरा मुझे भी भाड़े पर दिलवा दें। यहां कुछ बरस रहना चाहता हूं। अंग्रेजी कार-बार, इनकी जबान और इनके तौर-तरीकों को समझना चाहता हूं।"

"कमरा तो हम आपको अबहियें दिलाय देगें। हमरे मकान के पड़ोसै में यह मिर्जापुर वालों की बिल्डिंग हैगी, उसमे कल ही एक कमरा खाली भया है, हम आपको दिलाए देंगे।"

"और चाचा जी, मुझे किसी ऐसे बंगाली पंडित से भी मिलवा दीजिए जो निर्धन विद्वानों के घर से संस्कृत की पोथियां खरीदवाने मे मुझे मदद दे सके।"

खन्ना जी बोले, "आप निसाखातिर रहैं।"

मिर्जापुर बाड़ी की पहली मंजिल मे बंसी को तीन रुपया मासिक का एक कमरा मिल गया। चार रुपए की अच्छी चारपाई भी दिन मे ही ले आया। जूट गोदाम से अपना काठ का सन्दूक भी उठवा लाया।

मिर्जापुर बाड़ी नामक उस बहुत-से घरों वाली तिखंडी इमारत के मैनेजर ने एक नौकर दे दिया, जो कमरे की धुलाई-सफाई कर गया। कलकत्ते मे अपने आपको व्यवस्थित करते हुए तीसरा पहर बीत गया। बंसी बाबू आज तो बर्तन-भाड़े रहित स्थिति में थे, इसलिए बिल्डिंग के मैनेजर ने अपने नौकर से उसके लिए दो बाल्टी पानी खींच लाने को कह दिया। किन्तु बंसी सोचने लगा कि कल से मुझे एक नौकर की व्यवस्था करनी होगी, और गिरस्ती का कुछ जरूरी सामान भी खरीदना पड़ेगा।

इमारत के मैनेजर ने बंसी को एक मारवाड़ी ढाबे का पता दिया जहां भोजन की उत्तम व्यवस्था होती है। नहा-धोकर बंसी धोती, अंगरखा, दुपट्टा और दुपल्ली और पैरो में जरीदार घेतली जूतियां पहन कर शहर की सैर करने निकला। शहर को देखकर बंसीधर के मन में यह बात आई कि हमारा लखनऊ शहर रौनकदार तो है, मीनारों और गुम्बदों से सजा है, फिर भी कलकत्ते से उसका कोई मुकाबला नही हो सकता। यहां के भवनों की बनावट ही कुछ और है, रहने-बसने का ढंग भी नया है, यहां एक इमारत मे ही इतने घर होते हैं कि वह अपने आप मे ही एक पूरा महल्ला बन जाती है।

एकाएक, एक कपड़े वाले की दूकान पर खन्ना जी बैठे मिल गए। जिनकी दूकान पर खन्नाजी बैठे थे वह भी लखनऊ के थे और खत्री बिरादरी के एक सम्पन्न और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनका नाम विशम्भर नाथ खत्री था, लखनऊ से भी उनका नाता जुड़ा है, यह सुनकर युवा बंसीधर ने पचास-पचपन वर्षीय खत्रीजी से पूछा : "लखनऊ मे आपका दौलतखाना किस महल्ले में है?"

"अरे बेटे, मैंने तो तुम्हारे लाख-नाउओ वाले शहर को कभी देखा ही नहीं है। हा, हमारे परबाबा···सुना है कि सोंधी टोले मे रहते थे और उनके बाप दादे भी। घर मे कुछ कहा सुनी हुई, सो कम्पनी की फौज में भर्ती हो गए, जब रिटायर हुए तो यहीं बस गए। हमाई तो तीन पुश्तें यहीं काली मैया के चरनों में बीत गईं।"

बंसीधर ने पूछा : "तब तो आपको यहां का इतिहास-पुरुष कहना चाहिए।"

लाला विशम्भर नाथ हंसे, बोले : "हां, हुमने अपनी महतारी और दद्दा से सुना जरूर हैगा, कि पहले इंग्लिश लोगों की कोठी यहां बनी, तब काली मैया ने लछमी जी को भी यहां बुला लिया और फिर जब लछमी मैया यहां आयी तो काली मैया ने सरसुती जी को भी यहां आन के बसने का न्योता दिया। सब गोरो का प्रताप है मैया, इस समय इन्ही का सितारा चमक रहा है। सिराजुद्दौला और मीर जाफर जाने कितने बड़े-बड़े बादशाहों, सूबेदारों को अपना ही थूक चटा दिया गोरों ने।"

बातों-बातों में खत्रियों के कलकत्ते आ बसने का इतिहास जाना। कुछ कंपनी की फ़ौज में आए, अधिकतर उसके साथ व्यापार करने के लिए आ बसे। विलायती सूत और ऊन का काम, कोयले की खानें, जहाजरानी का काम, महाजनी, साहूकारी, दलाली आदि में खत्रियों का वैभव बढ़ा, इतना बढ़ा कि बड़ी-बड़ी जमींदारियां खरीद लीं। लक्ष्मी इस समय फत्तू के द्वारे एक पैर से खड़ी है। फत्तू अर्थात द्वारकानाथ खत्री सूत के धंधे मे और जहाजरानी के काम मे भी बहुत बड़े आदमी हो गए हैं। अंग्रेज कंपनी के बेनियन

बनकर निक्केमल भी इस समय अच्छा कमा रहे हैं। सब धधों मे खत्रियो का सितारा इस समय चमक रहा है। मगर अब ऐयाश हो चले हैं, काम काज मे ध्यान कम लगता है। बहुत-सी बातें करके अंत मे बसी की पीठ थपथपाते हुए लाला विशम्भर बोले : "अंग्रेजो की सोहबत से आगे बढ जाओगे। कोई अपना और अपनी बिरादरी का तो पहुंचेगा बड़ा हाकिम बनके। क्यों भई रामचन्दर, कोई झूठ कहा हमने ?"

"नहीं भइए, बावन तोले, पाव रत्ती सही है आपकी बात। और हमारी तो आप समझें कि नवाबगंज मे, इनके ससुर लाला सुगनामल हमारे सगे फुफेरे भाई हैं। और दूसरी तरफ इनके पिता के एक ममेरे भाई लाला नकछेदी लाल से हमारी बड़ी अम्मा की लडकी ब्याही रहो, अब तो मर गई बिचारी। बहरहाल अव ये आपकी सरण मे आए हैं भइए। और जैसा कि आपने कहा कि अंग्रेजी लिखत-पढ़त सीख के ये हमारी बिरादरी का नाम रोसन करेंगे। इन्हें मिर्जापुर बाड़ी मे घर दिलाय दिया है।"

"ठीक है, तुम्हारा चूंकि अंग्रेजों से सीधा ब्योहार हैगा, इसलिए उन्हीं की मार्फत उनकी विद्या सीखने मे भलाई है। बाकी भैया जिउका के रूप मे हमाई समझ मे तुम्हारी ये पुरानी पोथियों का धन्धा कुछ बहुत जचता नही है।"

"तब फिर आपकी राय मे मुझे और क्या करना चाहिए ?"

"जतन करने से किसी बगाली वकील के यहां फारसी काम की नौकरी भी मिल सकती है।"

लाला विशम्भर नाथ की बातों से बंसी बहुत प्रभावित हुआ, उसने कहा : "आपकी यह बात मेरे मन में उजाले-सी चमक उठी है। पुरानी पोथियो का धधा फसल के आमों जैसा ही है।"

लाला रामचन्दर अपना दिन का काम लगभग समाप्त कर चुके थे। बंसी को साथ लेकर अपने घर आए। दूसरी मजिल पर दो कमरों का घर ही सही पर भरा पूरा रौनकदार था। खन्नाजी की दो बेटिया तो अपने घरबार वाली हो गईं। एक बेटा विपिन चंद्र ही माता पिता के पास रहता है। चिरजीव विपिन बाबू "ओना मासी धम्, बाप पढ़े ना हम" वाले आदर्श पर चले। पिता के साथ विलायती सूत की दलाली शुरू की मगर अब स्वयं भी दूसरे नए-नए विलायती सामानो की दलाली करता है। सौ-पचास रुपए महीने मे कमा ही लेता है। चौदह वर्ष की आयु मे ही विपिन चन्द्र की आर्थिक व्यावहारिक बुद्धि बड़े-बड़ों के कान काटती है। टूटी-फूटी अंग्रेजी ऐसे ठाठ से बोलता है, कि लगे जैसे अपनी मातृभाषा में ही बोल रहा है। बंगला भाषा भी उसे खूब आती है। बंसी ने अपनी चचिया सास से कहा : "आपने अभी तक विपिन भाई की शादी नहीं की चाची जी ?"

सुनकर खन्ना जी की पत्नी खिसिया-सी गईं। कहा : "अरे भइया, ये अपना देस तो है नही कि पुर्खों के बताए रीति-रिवाजों से एब काम होवे। हियां तो निगोड़े बरम्हमता की बातें चल पडी है। ई सब नए जमाने के लड़के न हमरी सुनें न अपने बाप की सुनें।"

"नो-यूज हियरिंग ओल्ड मैन। इंग्लिश मैन वोमैन मैरी व्हेन यंग, एण्ड नाट व्हेन स्माल बायज। अन्डरस्टैण्ड ?"

सुनकर बसी हंस पड़ा। हिन्दी में बोला : "पर अभी हमारे समझदार नहीं हुए भइया।"

"नो, आई मैरी व्हेन आई बिकम एट्टीन इयर ओल्ड।"

"क्या कहते हैंगे विपिन ?" विपिन की मां ने पूछा।

"कहते हैं अठारह बरस की उम्र में करूंगा।"

"फिर बराबर की लड़कियां कहां मिलेंगी ?" मां ने तमक कर पूछा।

"उसकी हमको बेसी चिन्ता नहीं, जीजाजी बर्द्धमान का राजा अपनी खत्री बिरादरी का है, उनके यहां श्राह्मो ऐंडियाज वाला दो एक खत्री फैमिली भी है। जदी देस वाला न मिला तो हम हुआ बीबा कर लेंगे। बीडो मैरेज कर लेंगे। बिरादरी वाले बेसी विरोध करेंगे तो ब्रह्मो या क्रिस्तान हो जायेंगे। हम अम्मा को यह बात बोल दिया है कि बार-बार पूछ के हमरा देमाक खराब करना अम्मा बाबू किसी के लिए भी अच्छा नहीं होएगा।"

बंसीधर सोचने लगा कि यह ताजगी और विचार स्वातन्त्र्य हमारे उधर के युवकों में नहीं है। बंगाल कितनी तेजी से बदल रहा है ! जो समय के साथ न चलेगा वह पिछड़ जाएगा। सोचने लगा कि एक बार यहां जम जाए तो पत्नी को यहीं बुलवा लेगा। अच्छी शिक्षा दिलाएगा, अंग्रेजी भी सिखाएगा। वह तो चाहता है कि उसकी पत्नी मेमों की तरह आजादी का जीवन बिताए पर शायद यह संभव नहीं। बढ़ते हुए समय के साथ-साथ हमारे समाज को भी बदलना ही पडेगा। अभी हम लोग समय से बहुत पीछे हैं, और इसी पिछड़ेपन के कारण ही चतुर अंग्रेज हमसे कोसों आगे निकल गए। ये मुट्ठीभर लाल मुह वाले हमारे चतुर से चतुर देसवालों को खड़े-खड़े बुद्धू बना देते हैं।

खन्नाजी के यहां भोजन आदि करके तनकुन जब अपने 'घर' लौटा तब उसका मन नए विचारों की हलचल से भरा हुआ था। उसे ऐसा लगता था कि कलकत्ते आकर उसका दूसरा जन्म हो रहा है। लखनऊ में अभी तक उर्दू, अरबी, फारसी का बड़ा माहात्म्य है लेकिन कलकत्ते में बेपढ़े लोगों के मुह से भी अंग्रेजी के शब्द आम हो चले हैं। कलकत्ते मे अंग्रेजी चेतना ने इंग्लैण्ड के बाद जैसे अपना दूसरा घर ही बना लिया है। यहां उसकी फारसी पढाई की कोई कद्र नहीं, अंग्रेजी का बोलबाला है। राजा राममोहन राय और ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन और प्रिंस द्वारकानाथ, देवेन्द्र नाथ ठाकुर जैसे बड़े-बड़े अंग्रेजी के विद्वान हिन्दू यहां हुए हैं। यहां के लोग उद्योग-धन्धों में लगे हैं और हमारे यहां तीतर-बटेरबाजी, ठल्लेनवीसी और बुरी लतों से ही जवानों को फुर्सत नहीं मिलती।

लखनऊ और कलकत्ते के सामाजिक वातावरण के अतिरिक्त उसके मन मे नैन्सी की बेरुखी और न देखी हुई पत्नी के प्रति अपनी अपराध भावना भी तेजी से उमड़ी।··· फिर भी नैन्सी ऑसबोर्न अभी उसके लिए आवश्यक है। अंग्रेज जाति के ऊपर भरोसा नहीं किया जा सकता। ये बाहर से मीठे बनकर भीतर-ही-भीतर हमारा सारा जीवन मूल्य ही हमसे छीन लेते हैं। इनसे सावधानी से ही व्यवहार करना चाहिए·· पर कुछ भी कहो, अंग्रेज अंग्रेज ही है। अपनी विद्या, बुद्धि और चतुराई के चमत्कार से सारी दुनिया पर इस समय छा गया है। इस जाति का सहारा लिए बिना उन्नति नहीं हो सकती।

सुबह निपट-नहाकर जीवन मे पहली बार अपने कमरे में बैठकर उंगलियों पर ग्यारह बार गायत्री और बारह बार 'ॐ नमः शिवाय' जपा। जप करते में यह ध्यान भी आया कि उसका जनेऊ इतनी छोटी उमर मे हो गया था कि गायत्री मंत्र ठीक तरह से याद ही नहीं हुआ। फिर सोहबत, संगत, इल्म, विचार सब पर मुसलमानी प्रभाव पड़ा, फिर अंग्रेजी का जुनून चढ़ा। धरम-करम एक तरह से छूट ही गए। हां, धर्म और शिव रूपी ईश्वर पर आस्था बनी रही। घर छूटने के बाद एक बार गऊघाट पर रहने वाले एक बूढ़े ज्योतिषी ने कहा था, कि तुम हर अमावस को कठवारे की चन्द्रिका जी के दर्शन

नियम से करो, तुम्हारा कल्याण होगा। सच, वहीं जाने के बहाने से कल्याण हुआ। पार्किन्सन मिला, नैन्सी मिली, ये कलकत्ता शहर उसकी जीवन पोथी के नए पृष्ठ की तरह खुलकर आ गया'''। हे मातेश्वरी, हे बाबा भोलेनाथ, मैं निपट अग्यानी हूं। स्वार्थवश किए गए मेरे पापों को क्षमा करें। एक बार मुझे मेरी मनचाही तकदीर मिल जाए, फिर मैं केवल आप ही के चरणों का ध्यान करूंगा। पालथी मारकर की गई पूजा में बारह गिनतियों वाले 'ॐ नमः शिवाय' जप के सिवा उसने ईश्वर का जितना ध्यान किया वह केवल अपनी लौकिक आकांक्षाओं का खेल भर था।

उठा, अंग्रेज के घर जाना है इसलिए अंग्रेजी पोशाक पहनेगा। सन्दूक से विलायती पोशाक निकाली, फिर रख दी। सोचा कि अंग्रेज बनकर अपने देसी महल्ले से निकलना उचित नहीं होगा। अंग्रेज पोशाक अंग्रेज कौम अंग्रेजों की रीत-नीत सब में छल-कपट है। ये बाहर से गोरे और भीतर से काले हैं। पर कुछ भी हो, अब तो राज इन्हीं का आएगा, इन्हीं से काम पड़ेगा इसलिए मन चाहे या न चाहे मुझे इन्हीं की रीति-नीति अपनानी पड़ेगी। जो हो, आज हिन्दोस्तानी पोशाक में ही जाऊंगा। नैन्सी को वह पोशाक भले ही अच्छी लगे पर दूसरे अंग्रेजों की नजर में विलायती पोशाक मेरी गुलामी की निशानी होगी।

स्वाधीनता की अटपटी दोमुखी परिभाषाओं से बंधा हुआ युवा मन एकाएक झटककर भारतीय हो गया। अंगरखा, चूड़ीदार पायजामा, दुपट्टा, दुपल्ली टोपी और अपना देसी जरीदार जूता पहनकर निकला। उसे इस बात का दुःख था कि नैन्सी ने उसके पट्टेदार बाल काटकर छोटे कर दिए थे। अपनी देसी पगड़ी या दोपल्ली के साथ अगर सिर पर पट्टेदार जुल्फें न हों तो इन्सान ऐसा लगता है जैसे अंग्रेजों के साथ घूमने वाला कटी दुम का कुत्ता।

बड़े बाजार में एक हलवाई की दूकान पर जलपान करके बंसीधर छोटे लाट साहब की कोठी पर पहुंच गया। चूंकि मिसेज रोजी लायन्स के आदेश पहुंच चुके थे, इसलिए राजद्वार का एक सिपाही उसे उनकी काटेज में छोड़ आया।

कमरे में नैन्सी आसबोर्न अकेली ही थी, बंसी को देखते ही उठी, पास आयी, शर्बती कनखियों से देखकर कहा : "कल रात कहां बिताई ?"

"अपने घर में।"

"अपना ? यानी कि आते ही घर भी खरीद लिया।"

बंसी ने तनिक मुस्कुराकर कुर्सी पर बैठते हुए कहा : "नहीं, अभी तो भाड़े का है।"

"भाड़े की घरवाली भी मिल गई ?"

बंसी एक बार तो अटपटाया, फिर बोला : "जिस जगह घर मिला है वहां के लोग सिर्फ अपनी बाजाप्ता घरवाली के साथ ही रह सकते हैं।" अपनी बात के चढ़े तेवर से आप ही डर गया। पट से बात को खुशामदी मोड दे दिया : "बहारे बहिश्त देने वाली मेरी मालकिन, मेरी जादूगरनी तो कल से राजमहल में रहने लगी है।"

नैन्सी अपनी विजय-दृष्टि से मुस्कुराई, फिर दबे स्वर में कहा : "मैंने तुम्हारी पत्नी का पहला सुख छीन लिया है, तुम्हें इसका अफसोस तो नहीं है ?"

नैन्सी ने प्यासी नजरों से देखकर फिर कहा : "रोजी मुझे कोई अच्छी-सी काटेज दो-एक दिन में दिलवा देगी, तब फिर'''और हां, मि० पिन्काट अभी आते ही होंगे। उन्होंने तुम्हारी 'टान्ट्रा बुक्स' हर एक्सिलेन्सी को दिखलाई थी। शी हैज परचेज्ड योर इलस्ट्रेटेड, कामासूट्रा। इंडियन फिलासफी की और किताबें भी उन्होंने खरीदने की इच्छा प्रकट की

है। लेकिन उसके साथ ही साथ उन्होंने कुछ किताबों के नाम भी लिखवाए हैं। तुम जानते हो हर एक्सिलेन्सी बंगाल की जादू की बहुत कायल हैं और उनका यह पूरा विश्वास है कि तंत्र की किताबों मे बंगाल के जादू का रहस्य छिपा हुआ है।"

"अगर तुम कहो तो मैं एक बंगाली तान्त्रिक को भी यहां ला सकता हूं।"

"ओह्, तुमने इतनी जल्दी आते ही जान पहचान भी कर ली।"

"यह जरूरी था, क्योंकि किताबों का सुराग मुझे इन्ही लोगो से मिल सकता है। क्या ले आऊं उस तान्त्रिक को ?"

"हर एक्सिलेन्सी के लिए नही। लेकिन उससे मेरी मुलाकात करा दो।"

"तुम क्या करोगी ?"

"जादू के जोर से एक खूबसूरत और प्यारे जवान को तोता बनाकर अपने पिंजरे मे रखना चाहती हू ताकि वह हरदम मेरे पास रहे और लोगों की नज़रो से बचा भी रहे।"

बसीधर गर्व के गुमान से मदमत्त हो गया। मुस्कुराकर कहा : "उसके लिए बंगाल के जादूगर की जरूरत ही क्या है ? अंग्रेज कौम का जादू सारी दुनिया को अपने बस में कर सकता है, एक बेचारा, अदना हिन्दोस्तानी बगैर तोता बने ही आपकी सिखाई बोली बोल रहा है।"

नैन्सी की आखो मे मिठास और स्वर मे गहराई आई। दबे स्वर मे कहा : "मुझे तुम्हारा पूरा भरोसा है। माल्कम के नरक की जिस अंधी सुरग मे मैं कैद हो गई थी, उसमे स्व० पार्किन्सन के बहाने तुम रोशनी बनकर आए थे। मैं तुम्हें कभी नही भूलूगी डार्लिंग। और यह भी सच है कि मैं तुम्हें घर नही दे सकूगी, पर तुम्हारे घर को स्वर्ग बनाने के लिए तुम्हारा भाग्य नक्षत्र बनकर ऐसी चमकूगी कि तुम भी मुझे कभी भूल नही पाओगे। ये बंगाल के गवर्नर की पत्नी जो है ना, अरे, बड़ी गन्दी औरत है। रोज़ी बतलाती थी कि पाच-छ. साल पहले जब ये हिन्दोस्तान आई थी तो बिल्कुल दुबली-पतली, सूखी सब्ज़ी-सी बदसूरत लगती थी और अब देखो तो तर माल खा-खा कर हथिनी जैसी मोटी हो गई है। और उसका गर्व तो ऐसा बढ़ गया है कि बेचारे हिज एक्सिलेन्सी को अपना दुम हिलाऊ कुत्ता बनाकर रखना चाहती है। और मेरी रोज़ी से तो वह ऐसा खार खाती है, ऐसा खार खाती है कि क्या बतलाऊं।"

"उनसे क्यों जलती हैं, हर एक्सिलेन्सी ?"

"हिज एक्सिलेन्सी कलात्मक मिज़ाज के हैं, उन्हें फूहड़पन पसन्द नही। रोज़ी उनके मिज़ाज को खूब समझती है और वे भी उसे चाहते हैं।"

"तो पहली वाली को तलाक देकर इनसे शादी कर लें, आपके यहा तो वह आसान बात है।"

"तलाक इतना आसान भी नही है। हिज एक्सिलेन्सी की इज़्ज़त बहुत भारी है, उन्हें शायद अभी और ऊंचा ओहदा मिल सकता है। और उनकी वह बेडौल मोटी मेम जो है ना, वह आनरेबुल कम्पनी के डायरेक्टर की भतीजी है।"

"हिन्दुस्तान के तांत्रिक अपने तंत्र-मंत्रो से किसी का जान भी ले सकते हैं।"

"हां, मैंने भी यह सुना है, लेकिन मेरी यह सहेली इतने अच्छे दिल की है कि तुमसे क्या तारीफ करूं। होशियार भी खूब है। वह गवर्नर की बीबी के कड़वे, तीखे शब्द सुनकर भी सह लेती है। उस बदसूरत मेम के चारे के लिए ही उसने पिन्काट जैसे गरीफ बुद्धू को उसके आगे डाल दिया है। हिज एक्सिलेन्सी रोज़ी के इस कारनामे को जानते हैं और अपनी मेम को भी यह धमका चुके हैं, कि अगर उसने उनके खिलाफ कोई चर्चा की

तो वह भी उसका भण्डाफोड़ कर देंगे। वह बदबख्त मोटी हथिनी अपने शिकन्जे में आप ही कस गई है।"

बंसी रोजी के संबंध मे सोचने लगा कि कितनी चालाक है वह औरत। गालियां खाके भी अपनी सौत की मीठी बनी है। विधुर भोले पिन्काट को शिकार बनाकर उसके सामने फोड दिया, और इस प्रकार स्वयं उसे ही अपने महाजाल में जकड़ लिया। नैन्सी भी रोजी की तरह ही चालबाज है। होगा, उसे क्या, वह भी अपना काम निकालने के लिए ही नैन्सी के साथ आया है, आवश्यकता होगी तो रोजी के तलवे भी चाट लेगा।

मि० पिन्काट के आने की सूचना मिली, वह बगाल के हिज एक्सिलेन्सी के एक सचिव हैं। संस्कृत और फारसी दोनों ही भाषाओं के कुछ-कुछ जानकार हैं। पढने की लत ही उनकी इल्लत है। साथ ही लौकिक महत्वाकांक्षाओं का कागा भी इनके मड की मुंडेर पर बैठा कांव-कांव करता है। किसी करवट भी पूरा चैन इन्हें नहीं मिलता। राज कर्मचारियों के बीच में बुद्धू बैल के नाम से उसने अच्छी ख्याति कमा रखी है। पिन्काट को कमरे में प्रवेश करते देखकर बंसी उठ खडा हुआ। नैन्सी अपनी 'रॉकिंग चेयर' पर बैठी झूलती रही। पिन्काट को देखकर मुस्कुराई, कहा: "हलो गोल्डी, तुम पन्द्रह मिनट देर से आए हो।"

"मैं-मैं—क्या करता मिस आसबोर्न, हर एक्सिलेन्सी ने मुझे कुछ फारसी की कविताओं का अनुवाद करने का हुक्म दिया था और वो खुद भी मेरे साथ बैठकर एक-एक शब्द पर विचार कर रही थी। मैं मजबूर था, फिर भी आपसे माफी मांगना मेरा फर्ज है।"

"हर एक्सिलेन्सी के हुक्म से आप उनका दिल बहलाव कर रहे थे, मैं उनके सुख के लिए आपसे कोई शिकायत नही कर सकती। वह फारसी कविताएं प्रेम की थी, या फिलास्फी से संबंधित?"

पिन्काट चुप रहा।

"अगर फारसी में आपको कोई दिक्कत हो, तो मेरे दोस्त मिस्टर बंसीधर से आप पूछ सकते हैं। आप जानते हैं, इन्होंने फारसी की ऊंची-से-ऊंची डिग्री हासिल कर ली है।"

सराहना की दृष्टि से बंसीधर की ओर देखकर पिन्काट टूटी-फूटी भाषा में बोले: "आप क्या संस्कृत भी जानते हैं?"

बंसीधर झेंप गया, बोला: "बदनसीबी से मैं उस मुकद्दस जबान को नही जानता। मगर आप हुक्म दें तो मैं किसी संस्कृत के आलिम को आपके लिए यहां ले आऊं।"

पिन्काट गड़बड़ा गए, कहा: "नईं-नईं-नही, उसे बुलाने की जरूरत नही।"

नैन्सी समझ गई, मुस्कुराकर कहा: "मेरे पास 'कामासूत्र' की एक बगैर तस्वीरों वाली प्रतिलिपि और भी है। आप अगर मुझसे कहने में शरमाएं तो सीधे मिस्टर बंसीधर को ही बतला दें। यह उन सूत्रों का तर्जुमा कराके ले आएंगे और आप हर एक्सिलेन्सी को सुना दीजिएगा।"

"नहीं-नही, उसकी कोई खास जरूरत नही है, फिलहाल, मगर आप जादू तंत्र की उन कुछ किताबों को मेरे वास्ते ला दें तो आपका बहुत एहसान होगा। हर एक्सिलेन्सी के पिता को उन किताबों की जरूरत है, उनके कोई बहुत नजदीकी दोस्त भारतीय तंत्र साहित्य पर शोध कर रहे हैं।"

पिन्काट को छेड़कर मजा लेने की गरज से नैन्सी ने बंसी की ओर देखकर कहा: "यह हमारे मिस्टर पिन्काट चलती फिरती एन्साइक्लोपीडिया की किताब हैं। बस एक

है। लेकिन उसके साथ ही साथ उन्होंने कुछ किताबों के नाम भी लिखवाए हैं। तुम जानते हो हर एक्सिलेन्सी बंगाल के जादू की बहुत कायल हैं और उनका यह पूरा विश्वास है कि तंत्र की किताबो मे बंगाल के जादू का रहस्य छिपा हुआ है।"

"अगर तुम कहो तो मैं एक बंगाली तांत्रिक को भी यहां ला सकता हूं।"

"ओह्, तुमने इतनी जल्दी आते ही जान पहचान भी कर ली।"

"यह जरूरी था, क्योंकि किताबों का सुराग मुझे इन्ही लोगो से मिल सकता है। क्या ले आऊं उस तांत्रिक को ?"

"उर एक्सिलेन्सी के लिए नही। लेकिन उससे मेरी मुलाकात करा दो।"

"तुम क्या करोगी ?"

"जादू के जोर से एक खूबसूरत और प्यारे जवान को तोता बनाकर अपने पिंजरे मे रखना चाहती हूं ताकि वह हरदम मेरे पास रहे और लोगों की नजरों से बचा भी रहे।"

बसीघर गर्व के गुमान से मदमस्त हो गया। मुस्कुराकर कहा : "उसके लिए बंगाल के जादूगर की जरूरत ही क्या है ? अंग्रेज कौम का जादू सारी दुनिया को अपने बस में कर सकता है, एक बेचारा, अदना हिन्दोस्तानी बगैर तोता बने ही आपकी सिखाई बोली बोल रहा है।"

नैन्सी की आंखो में मिठास और स्वर मे गहराई आई। दबे स्वर मे कहा : "मुझे तुम्हारा पूरा भरोसा है। माल्कम के नरक की जिस अंधी सुरंग मे मैं कैद हो गई थी, उसमें स्व० पार्किन्सन के बहाने तुम रोशनी बनकर आए थे। मैं तुम्हें कभी नही भूलूंगी बसी डार्लिंग। और यह भी सच है कि मैं तुम्हें घर नही दे सकूंगी, पर तुम्हारे घर को स्वर्ग बनाने के लिए तुम्हारा भाग्य नक्षत्र बनकर ऐसी चमकूंगी कि तुम भी मुझे कभी भूल नही पाओगे। ये बंगाल के गवर्नर की पत्नी जो है ना, अरे, बड़ी गन्दी औरत है। रोज़ी बतलाती थी कि पाच-छ. साल पहले जब ये हिन्दोस्तान आई थी तो बिल्कुल दुबली-पतली, सूखी सब्ज़ी-सी बदसूरत लगती थी और अब देखो तो तर माल खा-खा कर हथिनी जैसी मोटी हो गई है। और उसका गर्व तो ऐसा बढ़ गया है कि बेचारे हिज एक्सिलेन्सी को अपना दुम हिलाऊ कुत्ता बनाकर रखना चाहती है। और मेरी रोज़ी से तो वह ऐसा खार खाती है, ऐसा खार खाती है कि क्या बतलाऊं।"

"उनसे क्यों जलती हैं, हर एक्सिलेन्सी ?"

"हिज एक्सिलेन्सी कलात्मक मिज़ाज के हैं, उन्हें फूहड़पन पसन्द नही। रोज़ी उनके मिजाज को खूब समझती है और वे भी उसे चाहते है।"

"तो पहली वाली को तलाक देकर इनसे शादी कर लें, आपके यहां तो वह आसान बात है।"

"तलाक इतना आसान भी नही है। हिज एक्सिलेन्सी की इज़्ज़त बहुत भारी है, उन्हें शायद अभी और ऊंचा ओहदा मिल सकता है। और उनकी वह बेडौल मोटी मेंस जो है ना, वह आनरेबुल कम्पनी के डायरेक्टर की भतीजी है।"

"हिन्दुस्तान के तांत्रिक अपने तंत्र-मंत्रो से किसी का जान भी ले सकते हैं।"

"हां, मैंने भी यह सुना है, लेकिन मेरी यह सहेली इतने अच्छे दिल की है कि तुमसे क्या तारीफ करूं। होशियार भी खूब है। वह गवर्नर की बीबी के कड़वे, तीखे शब्द सुनकर भी सह लेती है। उस बदसूरत मेंस के चारे के लिए ही उसने पिन्काट जैसे शरीफ बुड्ढ को उसके आगे डाल दिया है। हिज एक्सिलेन्सी रोजी के इस कारनामे को जानते हैं और अपनी मेंस को भी यह धमका चुके हैं, कि अगर उसने उनके खिलाफ कोई चर्चा की

तो वह भी उसका भण्डाफोड़ कर देंगे। वह बदबख्त मोटी हथिनी अपने शिकन्जे में आप ही कस गई है।"

बसी रोजी के संबंध मे सोचने लगा कि कितनी चालाक है वह औरत। गालियां खाके भी अपनी सौत की मीठी बनी है। विधुर भोले पिन्काट को शिकार बनाकर उसके सामने फोड दिया, और इस प्रकार स्वयं उसे ही अपने महाजाल मे जकड़ लिया। नैन्सी भी रोज़ी की तरह ही चालबाज है। होगा, उसे क्या, वह भी अपना काम निकालने के लिए ही नैन्सी के साथ आया है, आवश्यकता होगी तो रोजी के तलवे भी चाट लेगा।

मि० पिन्काट के आने की सूचना मिली, वह बंगाल के हिज एक्सिलेन्सी के एक सचिव हैं। संस्कृत और फारसी दोनों ही भाषाओं के कुछ-कुछ जानकार हैं। पढने की लत ही उनकी इल्लत है। साथ ही लौकिक महत्वाकांक्षाओं का कागा भी इनके मुड की मुंडेर पर बैठा काव-कांव करता है। किसी करवट भी पूरा चैन इन्हें नही मिलता। राज कर्मचारियों के बीच मे बुद्धू बैल के नाम से उसने अच्छी ख्याति कमा रखी है। पिन्काट को कमरे में प्रवेश करते देखकर बसी उठ खडा हुआ। नैन्सी अपनी 'रॉकिंग चेयर' पर बैठी झूलती रही। पिन्काट को देखकर मुस्कुराई, कहा: "हलो गोल्डी, तुम पन्द्रह मिनट देर से आए हो।"

"मैं-मैं—क्या करता मिस आसबोर्न, हर एक्सिलेन्सी ने मुझे कुछ फारसी की कविताओं का अनुवाद करने का हुक्म दिया था और वो खुद भी मेरे साथ बैठकर एक-एक शब्द पर विचार कर रही थीं। मैं मजबूर था, फिर भी आपसे माफी मांगना मेरा फर्ज है।"

"हर एक्सिलेन्सी के हुक्म से आप उनका दिल बहलाव कर रहे थे, मैं उनके सुख के लिए आपसे कोई शिकायत नही कर सकती। वह फारसी कविताएं प्रेम की थी, या फिलास्फी से संबधित?"

पिन्काट चुप रहा।

"अगर फारसी मे आपको कोई दिक्कत हो, तो मेरे दोस्त मिस्टर बंसीधर से आप पूछ सकते हैं। आप जानते हैं, इन्होंने फारसी की ऊची-से-ऊंची डिग्री हासिल कर ली है।"

सराहना की दृष्टि से बंसीधर की ओर देखकर पिन्काट टूटी-फूटी भाषा में बोले: "आप क्या संस्कृत भी जानते हैं?"

बसीधर झेंप गया, बोला: "बदनसीबी से मैं उस मुकद्दस जबान को नही जानता। मगर आप हुक्म दें तो मैं किसी संस्कृत के आलिम को आपके लिए यहां ले आऊं।"

पिन्काट गड़बड़ा गए, कहा: "नई-नई-नही, उसे बुलाने की जरूरत नही।"

नैन्सी समझ गई, मुस्कुराकर कहा: "मेरे पास 'कामासूत्र' की एक बगैर तस्वीरो वाली प्रतिलिपि और भी है। आप अगर मुझसे कहने में शरमाएं तो सीधे मिस्टर बंसीधर को ही बतला दें। यह उन सूत्रों का तर्जुमा कराके ले आएंगे और आप हर एक्सिलेन्सी को सुना दीजिएगा।"

"नही-नही, उसकी कोई खास जरूरत नही है, फिलहाल, मगर आप जादू तंत्र की उन कुछ किताबो को मेरे वास्ते ला दें तो आपका बहुत एहसान होगा। हर एक्सिलेन्सी के पिता को उन किताबों की जरूरत है, उनके कोई बहुत नजदीकी दोस्त भारतीय तंत्र साहित्य पर शोध कर रहे हैं।"

पिन्काट को छेड़कर मज़ा लेने की गरज से नैन्सी ने बंसी की ओर देखकर कहा: "यह हमारे मिस्टर पिन्काट चलती फिरती एन्साइक्लोपीडिया की किताब हैं। बस एक

कमी रह गई, इनका प्रेम ज्ञान शुरू से बिल्कुल जीरो रहा। रोज़ी कल बतलाती थी कि इनकी बीवी ने इन्हें तलाक दे दिया था। यहां आकर इन्होंने एक युरेशियन लड़की से शादी की। वह बेचारी इसलिए तलाक न दे पाई कि उसे बच्चा पैदा करने के साथ ही साथ मरना भी पड़ा और वह बच्चा भी मर गया। बड़े गमगीन रहते थे हमारे यह दोस्त, मगर भला हो हर एक्सिलेन्सी का जिन्होंने अपना प्यार-दुलार देकर इनके जीवन मे बहार ला दी।"

एक पराये आदमी के सामने गोपनीय बातों के प्रकट होने से पिन्काट बहुत परेशान हुए, बोले : "लेकिन-लेकिन, शायद तुमने यह ठीक नही किया है नैन्सी। मैं समझता हू यानी कि मेरा ख्याल है कि हर एक्सिलेन्सी जैसी बड़ी शख्सियत को ..."

प्यार मे झिडक कर नैन्सी बोली : "प्यारे गोल्डी, रोजी ने कल ठीक ही कहा था कि बहुत पढने से आदमी बेवकूफ हो जाता है। प्यारे दोस्त, मैं सच्चे दिल से उनकी तारीफ कर रही हू, और तुम्हारी इस बात की भी प्रशंसा करती हू कि तुम बड़ी शराफत और सहनशीलता के साथ उस बदमिजाज औरत के सच्चे मजनू बने हो। कल रात मैं और रोजी बड़ी देर तक तुम्हारी तारीफ करती रही। मैंने सुना है कि एक दिन शराब के नशे में हर एक्सिलेन्सी ने तुम्हें चुम्बनो के बजाय चांटे दिये और तुम उसकी मार खाके भी बराबर अपनी मोहब्बत का इजहार ही करते रहे।"

पिन्काट कुछ देर चुप रहा, फिर बोला . "मिस आसबोर्न, आपने अभी जो बात कही है वो आपको रोज़ी ने तो नही बतलाई होगी, क्योंकि वह बेचारी उस वक्त तो वहा थी भी नहीं। तब ये बात आपको कैसे मालूम हुई ?"

पिन्काट के बुद्धूपन पर बसी को हंसी आई, मगर अदब से मुंह फेरकर उसे दबा गया। नैन्सी तुरत मुस्कराते हुए उठकर शोख अदा से उसके पास आई, और प्यार से उसके गाल थपथपाकर कहा : "तो तुम इस बात को स्वीकार करते हो ?"

पिन्काट झेंप गया, नैन्सी का हाथ अपने गाल से अलग हटाते हुए बोला : "तुम्हें किसी ने मजाक बनाकर इस बात को सुनाया है। दरअसल यह बात कुछ और थी", पिन्काट ने बडे भोलेपन के साथ कहा : "हम एक खेल के मूड में थे, और यह जानना चाहते थे कि चुम्बनो और चाटों मे कौन अधिक तीखा है। एण्ड माई डियर मिस नैन्सी आसबोर्न, तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि हर एक्सिलेन्सी को यह स्वीकार करना पड़ा कि मेरे चुम्बनों की मार सीधे उनके दिल पर ही लगती है और ज्यादह तीखी है।" कोच पर बगल में बैठे-बैठे ही नैन्सी ने पिन्काट को अपनी बगल से सटा लिया और चहक कर खुशी के लहजे में बोली : "ओह गोल्डी, यू आर ग्रेट, तुम एक काम करो।"

"क्या ?"

"लेकिन ठहरो, प्यास लगी है, एक-एक ग्लास बियर हो जाय।" बैरा को बुला कर तीन बियर लाने का आदेश दिया और फिर पिन्काट की जांघ पर मुलामियत से हाथ धर कर बोली : "देखो गोल्डी, अगर तुम मेरी तीन सो पोथियां मेरे बतलाए हुए दाम पर अपनी उस हथिनी के हाथों बिकवा सको तो मैं तुम्हें दस पर्सेन्ट कमीशन दूंगी।"

पिन्काट कुछ-कुछ नाराज़ स्वर में बोले : "देखो बेबी, तुम हर एक्सिलेन्सी की शान में हथिनी जैसा शब्द प्रयोग करोगी तो मुझे वाकई बड़ा दुख होगा। मैं उनका बडा आदर करता हूं और—और तुम रोज़ी की गहरी दोस्त हो, यह तुम्हारे दोस्त है, बात बाहर नहीं जायेगी, इसलिए तुम्हारे सामने मैं यह भी स्वीकार करता हू कि मुझे मेरी से प्यार हो गया है।"

अपनी हंसी बंसी की हंसती आंखों में उंडेलकर बड़े अभिनय के साथ नैन्सी ने

कहा : "मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है गोल्डी कि किसी से इश्क तो कर लेते हो। मुझे तुम्हारी उस कुप्पे जैसी माशूका से भी ईर्ष्या हो रही है जो तुम्हारे जैसा सच्चा आशिक पा सकी।"

बसीधर अपनी हंसी न रोक सका, तेजी से उठकर कमरे के बाहर चला गया। नैन्सी अभी पिन्काट का सुख लेने की मौज मे थी, बोली . "यह भैंस अब तुम्हें छोडेगी नही, गोल्डी, यही मौका है तुम अपनी हैसियत बना लो। देखो, जो मैनस्क्रिप्ट्स मैंने तुम्हें दिखाने को दी हैं वो इतनी कीमती हैं कि उन्हें खरीदने में मुझे आठ सौ पौण्ड खर्चने पड़े। अगर मुझे उनके दो हजार पौण्ड न मिले तो मुझे क्या फायदा होगा। और यह बेचारा हिन्दोस्तानी जो हमारे साथ साझे मे धंधा करता है, इसे क्या मिलेगा और तुमको दस परसेन्ट कहां से दूगी। उस तस्वीरों वाली कामसूत्र के लिए वह हजार पौण्ड मांग रहा था, बड़ी मुश्किल से तीन सौ पौण्ड में खरीदी है मैंने। उस किताब को तो तुम्हारी भैंस अपने ही लिए खरीदेगी।"

"देखो नैन्सी, तुम बार-बार मेरी के लिए हथिनी, भैंस और कुप्पा जैसे शब्द प्रयोग कर रही हो. इससे मेरे दिल को बहुत ठेस पहुंचती है। वह--"

"आल राइट, आल राइट—अब मैं तुम्हारी प्रियतमा के लिए ऐसे शब्द प्रयोग नही करूगी। बोलो, वह कामसूत्र बिकवाते हो उसके हाथो ?"

"तस्वीरें तो बहुत उम्दा हैं, मगर उसमे लिखा क्या है ?"

"ओह गोल्डी, मैं तुमसे क्या कहूं, वह किताब कितनी अनमोल है। मैं उसे अपने लवर के साथ रोज एक पंडित से ट्रांसलेशन करवा के सुनती थी। तुम चाहो तो मैं उसके दो चार सूट्रास ट्रांसलेट करवा के तुम्हें दे दू ताकि तुम्हारी प्रियतमा उसके पांच सौ पौण्ड मुझे देने के लिए राजी हो जाय।"

"कोशिश करूगा।"

"कोशिश नही, वचन दो कि करोगे। मैंने सुना है कि तुम्हारी शीरी तुम्हारी किसी बात को मानने से इन्कार नही करती।"

"नैन्सी, अपने इन हिन्दोस्तानी की मार्फत तुम मुझे तंत्र की कुछ किताबें जिनके नाम मैं दूगा, अगर मंगवा दो तो मैं तुम्हारी सब किताबें बिकवा दूगा। मेरी के पिता और उनके मित्रगण बहुत अमीर लोग हैं, अर्ल और काउन्ट, तुम्हारी किताबें बिकवा दूगा।"

खुशी में उछल पड़ने का अभिनय-सा करते हुए नैन्सी ने पिन्काट का गाल चूम लिया। "तुम कितने अच्छे हो गोल्डी, अब तुम्हारी भैंस को मैं कभी भैंस नहीं कहूंगी।"

"देखो-देखो नैन्सी, अब तुम फिर—"

"अरे दुधारू भैंस है, उसे दोहना है भाई, मुझे भी, तुम्हें भी, बुरा क्यों मानते हो ?" कहकर हंस पड़ी। पिन्काट को भी कुछ न सूझा तो हस पड़ा। नैन्सी ने बंसी को बुलाकर किताबो के नाम दिये और कहा : "देखो बंसी, कुछ भी करो, कही से भी लाओ मगर ये किताबें जल्द से जल्द मेरे पास आ जानी चाहिए। अगर लाए तो इतने चुम्बन दूगी जितने मिस्टर पिन्काट ने अपनी प्रियतमा को नही दिये होंगे। और न लाये तो इतने चांटे लगाऊंगी, जितने इनकी प्रियतमा ने भी न लगाये होगे।"

कमरा जोरदार हंसी से गुलजार हो उठा।

9

कालीपद बान्डुज्ये की बैठक को बैठक कहने के बजाय एक प्रकार का मन्दिर कहना ही अधिक उचित होगा। बैठक की सारी दीवारें विभिन्न मुद्राओं में काली के चित्रों से रंगी पड़ी थीं। तख्त पर एक टूटी चटाई, घिसी मृगछाला तथा लोहे की एक छोटी सी सन्दूकची रखी हुई थी। लाल टीका लगाये और चौड़ी लाल पाड़ वाली धोती पहने, गले में स्फटिक और रुद्राक्ष की मालाएं लहराते हुए अपनी चौकी को अंगोछे से झाड़ते-झटकारते गम्भीर स्वर में घर के भीतर किसी को जोर-जोर से कुछ कह रहे थे, तभी लाला रामचन्दर बंसी को लेकर पहुंच गये।

"ओहो, लालाजी। आशुन-आशुन, बेसी दिनों बाद आया।"

लाला जी और बंसी ने पैर छुए और फल, मिठाई की भेंट अर्पित की। बंसी ने सवा रुपये भी उनके चरणों में चढ़ाये।

"अरे लालाजी, ओई तुम्हार शोत्रु का क्या भया? तुम हमसे जोन्त्र ले गया था?"

"अरे पंडित जी, उसका तो आपके चरनों की कृपा से बुरा हाल हुआ। उसकी घरवाली पागल हो गई और उसको लकड़ी से पीटते-पीटते घर से बाहर निकाल दिया। आप की किरपा से जब से आपका वह जन्तर धारन किया हैगा, तब से मेरे काम सुफल हो रहे हैं।"

"होगा-होगा, ओवश्श होगा। अउर तुमरा शाथ में ये कोन भोद्रो लोग आया हाय। आमिओ के चीनते पाच्चीनेइ।"

"पंडित जी, मैं लखनऊ का रहने वाला हूं।"

"ओ, मां! लोकनाऊ माने लोकनऊ, डिल्ली, माने हिन्दुस्थान में थेके ऐशेछेन आपनी।"

"जी हां।"

"भालो, भालो जीश पुरुष पर मां दाया कोरता हाय ओ एई खाने ओबोश्श आता हाय। की कोष्ट होयेछे तोमाय?"

"पंडित जी, दरअसल मुझे तंत्र और उसके दर्शनों के कुछ ग्रन्थ खरीदने हैं। चाचा जी ने बतलाया कि आपसे शायद उन पोथियों का पता मिल सके।"

कालीपद महाराज ने सुनकर अपनी पालथी बदली और मां-मां उच्चारते हुए गंभीर मुद्रा में सोचने लगे। फिर कहा : "हम नोदिया जैला का हाय। नोदिया माने बूझो —नोबोद्वीप (नवदीप)—बांगालेर काशी गौरांग महाप्रभूर जोन्मोभूमि।" हाथ जोड़ आंखें मूंद कर प्रणाम किया।

"जी, सब समझ गया पंडित जी। मुझे इन किताबों की···"

"केताब-केताब की बोल्चेन मोशाइ। आरे, आमार गोराचान्देर टाइमे—गोराचान्द बूझलेन? चोईतन्यो महाप्रभु। उसका काल में एक कश्मीरी पोन्डित आमार नोदिया में आया रहा। मोहाप्रभु ओके शास्त्रार्थ में पोराजित कोर दिया। आपना शोब पोथी-पत्रा छोड़के भाग गया। हः हः हः, मोहाप्रभु आपने बाबा का बाबा का ओई पोथी शोब दान कर दिया। आमरा पोरीबार में काश्मीर का दोर्शनपूथी भी हाय।"

बंसी ने अपनी अचकन की जेब से एक कागज निकालकर पुस्तकों के नाम

बताये। सुनकर कालीपद महाशय बोले : "शौब मिलेगा, शौब मिलेगा। हामरा घर मां दू सहस्त्रो ग्रोन्थो हाय। आपना के पूथी केया, इंरेज कूठी का वास्ते मांगता हाय।"

"जी हां पंडितजी, यहा की अंग्रेज कोठी के लिए नही बल्कि ठेठ इंग्लिस्तान के एक बड़े भारी विद्वान ने यह किताबें मुझसे मंगवायी हैं।"

"देगा-देगा, शोब देगा, हमरा पारिबारिक बाड़ी मे दू शहस्त्रो-आलोम्भ ग्रन्थो हाय किन्तु बेचने खातिर नेईं हाय।"

"पंडित जी, मैं आपसे बेचने की बात करता ही नही हूं। इन पोथियों की नकल करवा दीजिए, लिखाई के अलावा हम आपको इन छहो पोथियो की एक सौ इक्यावन रुपये दक्षिणा देंगे।"

लाला रामचन्दर समझा के बोले : "पडित जी, आपके यहां उन पोथियों को पढ़ने वाला कोई है।"

"आरे, हामरा पोरिबार में हामरा का छांड़के शवो शाला भोइश चराता हाय, कोई पोन्डित नहीं निकला।"

"अरे तो पंडितजी, हम आपको यह सलाह देंगे कि सब पोथियां वेंच दीजिये इनके हाथ। चार पांच सौ अपने घर वालों को दे दीजिएगा और दो ढाई हजार रुपया अपने पास रखियेगा।"

"चाचाजी ठीक कह रहे हैं पंडितजी। भैंस चराने वाले को चार-पांच सौ रुपया काफी है। आप पंडित आदमी हैं, आपको बडी रकम मिलनी चाहिए। और एक बात मैं आपसे और अर्ज कर दूं कि अगर ये छह किताबें मुझे मिल गई तो इनके पचास रुपये और दूंगा।"

सुनकर पंडित कालीपद की आंखें फट गईं। आश्चर्यचकित स्वर में बोले : "दू हजार, अढाई हजार टाका। बेश-बेश। किन्तु हाम ग्रोन्थ नही वेचेगा। हमारा पूर्वज लोग स्वर्ग में हामशे क्या बोलेगा।"

लालाजी उनके पैरो पे हाथ रखते हुए बोले: "अरे वो सब लोग आपको आशीर्वाद देगा पंडित जी।। भैंस चराने वालों के पास तो पोथिया दीमक चाट जायेंगी, आपको एक धेला भी नही मिलेगा।"

"और पंडित जी, अंग्रेज लोग आजकल हमारी सरस्वती को बहुत सम्भालकर रखते हैं। कांच की अलमारियों मे रहती है सब पोथी। फिर इग्लिस्तान तो ठंडा मुल्क है। वहां दीमकें नही होती। फिर दो हजार रुपयों का लाभ होगा आपको।"

"दू हजार नही अढाई हजार तुम बोला।"

"हां, हां, पंडितजी अढ़ाई हजार। पांच सौ भैंस वालों के, दो हजार आपके। और अगर वो छह किताबें भी उनमें हुई तो हरेक के पचास **रुपये अलग** से दूगा। तीन सौ रुपये आपको अलग से ज्यादा मिल जायेंगे।"

"बेश-बेश। नोदिया जाने का भाड़ा कौन देगा?"

"अरे मैं आपके साथ चलूंगा पंडितजी, खर्चा-वर्चा

पंडित कालीपद बन्द्योपाध्याय खुशी-खुशी शर्त लगाई कि रुपया नगद लेंगे। उन्होंने यह शर्त भी भाई-भतीजों को नगद देना होगा, उनके सामने लेकिन यहां आकर वे पोथियां तभी देंगे, जब उन्हें दो जाएगा।

चौथे दिन नदिया जाने की तिथि निश्चित

कोठी पर पहुंचा। उसे झील के पास मिस नैन्सी आसबोर्न के नये बंगले का पता दिया गया। अंग्रेजों की बस्ती शान्त और रौनकदार थी। चौड़ी सड़क के दोनों ओर छोटे-बड़े बंगले बने थे। बंगले भले ही छोटे हों परन्तु उनके अहाते बहुत बड़े-बड़े थे। फूस के छप्पर, पिरामिड की शकल के बंगले, अहाते के एक ओर अस्तबल और नौकरों चाकरों के रहने के लिए कोठरिया थी। नौकरों का जुलूस देखकर ही ऐसा रौब बैठता था, कि बंसी की आंखें झंप-झंप जाती थी। बंगले का नाम था 'बुलबुल का घोंसला'। नैन्सी अपने नये घर को सजाने और सुव्यवस्थित करने में व्यस्त थी। बंसी को देखकर उसी आत्मीयता से मिली जैसी लखनऊ से कलकत्ते की यात्रा मे वह उससे मिलती आयी थी।

"तुम्हारा बंगला खूबसूरत है।"

"मुझसे ज्यादह?" शोख कनखियों से ताककर नैन्सी मुस्कुराती हुई बोली: "यह एक अस्थाई पड़ाव है प्रिय। हमारी नाव की यात्रा की तरह सुन्दर किन्तु सपने जैसा, यादों से लिपट जाने वाला।"

बंसी का चेहरा उतर गया। यद्यपि नैन्सी के द्वारा कही गयी इस बात के सत्य को वह शुरू से ही समझता था, फिर भी उसे इस समय सुनकर ठेस लगी। उदास स्वर में कहा—"हमारी भाषा मे एक कहावत है—चार दिन की चांदनी फिर अंधेरा पाख।"

"ओह नो, डार्लिंग, तुम्हारे अंधेरे पाख के दिन अब गुजर चुके। तुम्हारा भविष्य मेरे प्यार की तरह सदा चमकेगा।"

"इस पहेली को मैं समझा नही, नैन्सी।"

"रोजी ने तुम्हारे लिए कल, मिस्टर मोन्टीथ से मेरी बात करा दी है, वे तुम्हें अंग्रेजी पढ़ायेंगे। लेकिन उनकी फीस थोडी अधिक है। फिर भी मेरा विश्वास है कि मुझे याद रखने के लिए पचास रुपये महीने तुम्हें महगे नही पड़ेंगे।"

"पचास! कलकत्ते के लिए इतना खर्च मैं लाऊंगा कहां से। मकान का किराया, खाना, कपड़ा ··"

"उसके लिए भी तुम्हारा स्थायी प्रबन्ध हो जायगा। ये बतलाओ कि किताबों के बारे मे तुमने क्या किया।"

"उनके लिए बात कर आया हूं, मुझे जाना पड़ेगा। उम्मीद है कि तीन हजार खर्च करके तुम लगभग दस हजार रुपये कमा सकोगी।"

"मुझे अफसोस है बंसी, मैं तुम्हें तीन हजार रुपये फिलहाल न दे पाऊंगी। मेरे पास नगद रुपया इस समय दुर्भाग्यवश कम है। आनरेबुल कम्पनी से माल्कम का पैसा वसूल होने में अभी कम से कम पन्द्रह रोज और लगेंगे।"

बंसी कुछ परेशान होकर बोला, "तब फिर वह सौदा कैसे होगा? मेरे पास सिर्फ हजार रुपये हैं, तुम अगर मुझे बाकी राशि नही दोगी—"

"दूंगी डियर, दूगी, लेकिन उसके लिए मुझे कर्ज लेना होगा। उस पर जो ब्याज की रकम पड़ेगी उसका विचार कर रही हू। मुझे कलकत्ते मे अब अपनी जिन्दगी व्यवस्थित करनी होगी बंसी। किसी ऊंचे ओहदेदार से शादी करके जब तक अपना मुस्तकिल घर बार नहीं पाऊगी, तब तक मुझे अपना ही खर्च करना होगा। मेरे लिए एक-एक पैसा इस समय एक-एक गिन्नी के बराबर है।"

इतने दिनों के साथ में बंसी, नैन्सी को खूब परख चुका है। वह जितनी सुन्दर है उतनी ही मीठी बातें भी कर लेती है। लेकिन उसकी मिठास केवल मिठास का आभास मात्र है। व्यवहार में कठोर है। उसने कहा: "वादे के अनुसार आधी रकम तो तुम दोगी ही, मेरे पांच सौ रुपयों पर ब्याज लगा लेना।"

हल्की सी झेंप का अनुभव करते हुए नैन्सी ने कहा : "खैर उसकी बात छोड़ो, वह प्रबन्ध हो जाएगा। तो मैं मिस्टर मोन्टीथ से तुम्हारी ट्यूशन के बारे में पक्की बातचीत कर लू ? उनसे पढ़ने में तुम्हें बहुत से लाभ होंगे। अब यहां युनिवर्सिटी से मेट्रिकुलेशन की परीक्षा आरम्भ होगी, तुम्हें उनकी मार्फत उस परीक्षा में बैठने की इजाजत मिल सकती है।"

"इससे बढ़कर भला और क्या चाहिए, लेकिन बात फिर वही-की-वही रह गई, मिस आसबोर्न। मैं कलकत्ते का खर्च आखिर कैसे उठा पाऊंगा। पुरानी किताबों का धन्धा जब तक बड़े पैमाने पर न किया जाए, गांव-गांव घूमकर पुरानी किताबों की तलाश करने वाले एजेन्ट मेरे पास न हों, तब तक मैं अकेला कुछ नही कर पाऊंगा। यह सच है कि कई पुश्तों से मेरे खानदान मे ब्योपार ही होता आया है। वह आदत खून में तो है मगर दिल में नहीं। मैं अपनी पढाई जारी रखने के लिए ही इस धंधे मे पड़ा हू।"

"तुम इन पोथियों का सौदा करके आओ तो तुम्हारी जीविका के लिए भी कोई राह खोलूंगी। मेरे ख्याल में इन किताबों की बिक्री से तुम्हें भी कुछ लाभ हो ही जाएगा।···क्या बतलाऊं, इस समय मेरी हालत भी कुछ ऐसी है कि···बहरहाल जब तक मैं अपने जीवन को सुव्यवस्थित नही कर लेती, तब तक अपने पास की सम्पदा को निकालने में मुझे संकोच ही बना रहेगा। कलकत्ते में जान पहचान बढ़ाने के लिए मुझे पार्टियां वगैरह···"

"वह मैं सब समझता हूं, लेकिन सवाल यह है कि अगर इन किताबों की बात को आगे बढ़ाना है तो तुम्हें रुपयों का इन्तजाम करना ही होगा, वर्ना इस जंजाल को आगे ही क्यों बढ़ाऊं ?"

"ठीक है, रुपया तुम्हें अभी दे दूगी।"

"वह पाच सौ और पांच के लिए मैं तुम्हें एक प्रोनोट लिख दू, एक कागज दो।"

कुर्सी से उठती हुई नैन्सी झेंप के बोली : "मेरे लिए तुम्ही सजीव प्रोनोट हो और (अपने दिल की ओर संकेत करके) इस तिजोरी मे हिफ़ाजत से बन्द भी हो। मेरा खयाल है कि अगर तुम्हें छह किताबें जिनकी लिस्ट दी गई है, मिल गई तो लागत का रुपया फौरन ही निकाल लूगी।"

कालीपद, गौरीपद, तारापद, भवानीपद चार भाई और एक बहन थी बिन्दुबाला देवी। उनके पिता आद्याचरण बांड़ुज्ये अपने साधारण कर्म काण्ड और ज्योतिष विज्ञान के कारण पांच गांवों में घूम-घूमकर छोटे किसानों की जिजमानी से अपनी जीविका चलाते थे। उनके पुत्रों में ज्येष्ठ कालीपद को छोड़ कर और कोई भी पंडिताई पेशे में न आया। गौरीपद पहलवानी मे पड़ गए। जब दस-बीस कोस तक के नामी पट्ठों को पछाड़ दिया तो जमीदार देवेन्द्र पाल उनके पालक बन गए। इन्हीं की सेवा में कुछ गुण्डई भी सीख ली थी। एक 'माल' पर नील कोठी के छोटे साहब और गौरीपद में अदावत ठन गई। दस बरस पहले एक दिन ऐन जमीदार के द्वारे से कोठी के आठ-दस सिपाही आकर गौरी बांड़ुज्ये को पकड़ ले गए। रस्ते भर उसे पीटते ही ले गए और साहब के बगीचे में स्मिथ साहब के हुक्म से उसकी ऐसी पिटाई हुई कि अब वह खड़ा भी नही हो पाता। उसी गम में एक वर्ष के भीतर माता-पिता दोनों चल बसे। कुलीन होने के कारण यों विवाह तो उसके छह हुए थे पर विपत्ति पड़ने पर पहले विवाह की पत्नी ही काम आई और अब तक आ रही है। बांड़ुज्ये परिवार पर आई हुई भय

विपत्ति के दिनों मे ही तारापद अपनी पत्नी और दो नन्हें-नन्हें बच्चों को छोड़ कर एक बोष्टमी के चक्कर में 'राधे राधे' करता घर से भाग गया। माता-पिता के न रहने पर ज्येष्ठ पुत्र कालीपद भी अपनी गृहस्थी लेकर कलकत्ते जा बसे थे। भवानी जमीदार के स्व० अनुज की विधवा पत्नी का मुंह लगा चाकर है। यों तो वह आठो पहर वही रहता है परन्तु पैतृक घर में अपना हिस्सा नही छोडा। पैतृक पोथियों का भण्डार उसी के हिस्से मे है। गौरी उस्ताद की पत्नी ने अपने बड़े भाई के साले से बिंदो का विवाह करवा दिया था पर गौना भी नही हुआ था कि हैजे की महामारी उसे विधवा बना गई। बिन्दु बाला कभी न तो ससुराल मे बुलाई गई न कभी आप ही गई। किन्तु उसका आचरण बहुत ही स्तुत्य रहा। पडोस की क्षेत्रमणि मौसी चार जगह से अनाज पीसने के लिए लाती जिसे वे दोनों पीसती और अपनी रोटी प्राप्त करती। 'माशी मां' (क्षेत्रमणि) बुढ़ापे के कारण कुएं से पानी नही खीच पाती थी, इसलिए बिन्दुबाला सुबह-शाम कुएं से पानी भर कर लाया करती थी। बस इतना बाहर आना जाना ही उस बाईस वर्षीय कुमारी विधवा के लिए अभिशाप बन गया। काना ननी गोपाल स्मिथ साहब का विश्वस्त और प्रिय कारिन्दा था। गांव की गरीब स्त्रियों और युवतियों को साहब के मनोरंजनार्थ वही पटाता था। गांव की सीमा के बाहर रहने वाले डोम, बाग्दियों की ललनाएं तो मानो अंग्रेज साहबों और उनके बड़े विश्वस्त कुटिल कारिन्दो की उजागर सम्पत्ति थी। उन युवतियो के पतियों, पिताओं और भाई-बिरादरों की आंखों के सामने ही वे लोग उनकी आबरू से खिलवाड करते थे, और कोई चू भी नही कर सकता था। काना ननी रोज सध्या बेला कुएं के पास पीपल के चबूतरे पर बैठता, और अच्छे नैन-नक्श वाली युवतियो को धमकाने व पटाने की ताक में बैठा-बैठा भद्दे गीत गाया करता···"जौबने आज, फूल फूटेछे आशित्रे बोले रात्रि बेलाय।" नील कोठी के बड़े साहब मिस्टर गार्डन के मंझले बेटे ने एक दिन बिन्दुबाला को देख लिया, और काने ननी को उसे लाने की आज्ञा दी। ननी ने बिन्दु से कहा, "बड़े मालिक का मझला बेटा तुम पर रीझ गया है।"

सुनकर न बिन्दु बोली न साथवाली सरला।

"कहते थे कि बिन्दो मान जावे तो उसे गहने कपड़े से गुड़िया की तरह सजा के रखूगा।"

इस पर भी कोई न बोली। हां, दोनों के कदम जल्दी-जल्दी उठने लगे।

ननी बोला: "तुम्हें मेम बना के विलायत ले जाएगा विलायत! तब याद करोगी कि मैंने तुम्हे गधे से हाथी पर चढा दिया।"

काने का यह वाक्य पूरा भी न हुआ था, कि बिन्दो की बांह में दबा हुआ कलसा बिजली की तरह काने की कमर पर गिरा। पानी के गिरने से धरती पे कीचड़ हुई और कमर पे चोट खाया हुआ काना हड़बडाहट में उसी पर गिर पडा। ननी के गिरते ही बिन्दो के कलसे की मार उस पर पड़ने लगी। "अपनी बहू को ले जाके मेम बना, निगोड़े।"

"हाय मार डाला SSS। हाय कमर टूट गई। हाय बिन्दो तू मेरी मां की मां है, अब मुझे माफ कर।"

गांव की स्त्रियों की आबरू के खुले-खिलाड़ी कुख्यात काने को अपने सत्यावेश मे बिन्दो कलसों-कलसों, धमाधम पीटती ही चली गई। ननी की हाय गुहार सुनकर गांव के कुछ स्त्री-पुरुष वहां आ गए थे। छैल-चिकनिया काना इस समय कीचड़ से लथपथ होकर इस समय घिनौने सुअर जैसा लग रहा था। इतनी भीड़ का सहारा पाकर वह उठा और भाग गया। दूर जाकर उसने बिन्दो को भद्दी से भद्दी गाली दी और कहा: "कि तेरे

सतीपने को अगर मैंने गांव की कुतिया बनाकर न दिखाया तो मेरा नाम ननी गोपाल परमानिक नही।"

उसके बाद अभी दो दिन पहले बड़ा साहब गोरा मिस्टर गार्डन ननी और अपने आठ-दस सिपाहियों, मजदूरों के साथ आया था। खेत्रो मौसी के घर के दरवाज़े तुड़वा दिए। बूढ़ी क्षेत्रमणि बचाने दौड़ी तो सिपाहियों ने उसे धक्का देकर बाहर गिरा दिया। मोटा गार्डन बिन्दुबाला को पकड़कर निर्वस्त्र करने लगा।

"शाएब-शाएब, दाया करुन, आमि तोमार छेल, तुमी आमार बाबा शाएब, आमा के छेड़े दिन।"

"चोप कर, आमी टोमरा बाबा नेई। छेल आमि टोमरा खावा बनेगा यू बिच"

बिन्दुबाला के हाथ पैर उसी की धोती से बांधे गए रास्ते भर वह चीखती रही। गाव के घरो के दरवाज़े बन्द रहे और बिन्दुबाला कोठी ले जाकर स्त्री से कुतिया बना दी गई। आज दो दिनों से वह कोठी के अहाते की किसी बंगले मे ऐश का माल बनकर कैद है, सारे गांव मे आतंक छाया है।

बंसीधर को लेकर ऐसे ही मनहूस दिन के तीसरे पहर में बाडुज्ये परिवार के ज्येष्ठ पुरुष पंडित कालीपद अपने गाव मे पहुचे। पिछले आठ-नौ वर्षो से कलकत्ता निवासी बन जाने के बाद काली बांडुज्ये केवल एक बार तारापद के बेटो का उपनयन संस्कार कराने के लिए आए थे। उन्हे देखकर घने निराशान्धकार में भी गौरी की आंखों के सामने हल्का उजाला आ गया। बैठे-ही-बैठे खिसकते हुए खण्डहर चण्डी मण्डप मे आए। भाई के चरणो में हाथ जोड़कर बिलख कर बोले "की बोलबो दादा, एके बारे भीषन बज्रपात हुए गेछे। आज दो दिन हो गए ओई शाला ब्याटा हमारी बिन्दो को, खेत्रो माशीमा के घर से उठा ले गया। हमारे पन्द्रह पीढ़ियों के प्रतिष्ठित बांडुज्ये बश की नाक काट डाली उस नराधम ने।" कह कर गौरी उस्ताद फूट-फूट कर रोने लगे।

नील कोठी के साहबों ने भारतीय प्रजा पर बड़े-बड़े ज़ुल्म ढाए हैं। बड़े जमीदारो से उनके गावों की लगान वसूली के पट्टे लिखवाकर उनके मुकर्री बन जाते हैं और फिर किसानो पर मन माने अत्याचार करते है। उनके खेतों मे जबरदस्ती नील बोवाते हैं, न बोने वाले परिवारो को तरह-तरह से सताते है, उनके कच्चे घरो को तोड़ देते हैं, उन्हें ठोकरें मारते है, उनके बच्चो को उठा-उठा के पटकते हैं। और उनके घरों की युवतियों को···

बंसी सोचने लगा उन गोरों ने बंगाल से लेकर अवध तक के गांवों में ऐसे ही राक्षसी अत्याचार फैला रखे है। इस देश मे जहां-जहां इन लाल मुंह के कठोर व्यापारियों ने ऐसे ही अनाचार फैला रखे होगे। सब बातें सुन और उन्हें काली पंडित से समझकर बंसीधर का खून खौलने लगा। इन मुट्ठी भर अग्रेजो ने भारत के बड़े-से-बड़े राजाओं, महाराजाओं, बादशाहों से लेकर जन साधारण तक को कितना निर्बल और अपंग बना दिया है। जनता के दुखो का बखान करते हुए गौरी उस्ताद ने उन्हें बतलाया कि पिछले चालीस पचास वर्षो मे गोरों ने बंगाल के चतुर बुनकर जुलाहों के अंगूठे कटवा दिए है, जिससे कि वे कपडे न बुन सकें और बिलायत का माल यहां अधिकाधिक खप सके। नील बोवाने का ऐसा दुश्चक्र फैला रखा है कि किसान खाने को धान नही उगा सकते हैं। बनिया राजा हो गया है, तो प्रजा के व्यापारों को नष्ट करके अपने उद्योग-धन्धों को बढ़ा रहा है। बड़े-बड़े सिराजुद्दौला, शुजाउद्दौला—*दुनिया भर के ऐसे वैसे अपनी शक्ति* आजमा कर रह गए। आवेश अपने चरम पर पहुंचकर थमा फिर सोचने लगे···और दूसरी तरफ ऐसे भी अंग्रेज है जो भारत की लुप्त प्राचीन विद्या को खोज-खोज कर

सुरक्षित कर रहे हैं और हमारे वेदों, उपनिषदों की महिमाएं गाते नहीं अघाते। इनमें से कौन-सा अंग्रेज राष्ट्र का सही प्रतीक माना जा सकता है ?

बड़े भाई से बंसीधर के आने का कारण जानकर गौरी बोला : "मैं भले ही पढ-लिख न सका, दादा, पर अपने पुरखों के ग्रन्थ भण्डार को देखकर मुझे अपार गौरव बोध होता है। पर क्या किया जाय। आप ठीक ही कहते हैं, भारत के ब्राह्मणों का तप-पुण्य और तेज अब समाप्त हो गया, मां वीणा-पाणि अब हमारा संग छोड़कर उन्ही के देश में जाकर बसना चाहती हैं। मां की इच्छा। क्या किया जाय। अच्छा है, बेच दो दादा। कुछ दिनो, कुछ वर्षों के लिए खाने-पीने की चिन्ता से मुक्त हो जाएंगे हम लोग, किन्तु सुसरा भवानी बड़ा कानून बाज है। जमींदार घर की विलासिनी स्त्री का माल खा-खा कर खूब मोटा भी हो गया है। अपने को साक्षात गुरु बृहस्पति का अवतार मानता है। किसी की भी नही सुनता है और ये तारापद की घरवाली जो है न, वह भी पूछो मत, पूरी लंका की ककाला है, बड़ो दा। जाने कितने पाण्डवों की द्रौपदी है साली। लड़के भी वैसे ही मूर्ख, तुम उनके जनेऊ करा गए थे न। सालों ने तोड के फेंक दिए हैं। गांजा पीते हैं। अब तो सच कहता हूं कि मुझे भी तुम अपने साथ ही कलकत्ते ले चलो बड़ो दा। तुम्हारी बहू किसी धनवान के घर नौकरी कर लेगी, तो हम दोनों का पेट भी पल जाएगा। मां इस समस्त म्लेच्छो का वंश नाश करें, सालों ने मुझे तो किसी काम के लायक ही नही रखा।"

तारापद का बड़ा बेटा चण्डी चरण जमींदार के घर जाकर अपने भवानी-काका को सूचना दे आया था। भवानीपद आए, बड़े भाइयों के पैर छुए, बंसी को सलाम किया, सारी बात सुनकर बोला : "ना, ना, ना, आमी देबो ना।"

"अरे नहीं देगा मूरख तो पोथियां पड़े-पड़े सड़ जाएंगी, दीमकें खा जाएंगी, फिर कानी कौडी की भी वसूल न कर पाओगे बाछा (बच्चा)। जरा होश में बातें करो भवानी, पाच सौ रुपए देने को कहते हैं, तुम तीनों आपस मे बांट लेना। मैं एक धेला भी नहीं लूगा। जगदम्बा, जगद्धात्री की असीम अनुकम्पा से मेरा और मेरे बाल-बच्चो का पेट तो भर ही जाता है..."

बात काटकर भवानी बोला : "पर तीन आदमियों मे पांच सौ रुपया कैसे बंटेगा बड़ो दा। हजार रुपए से कम नही लूगा।"

"मूर्ख हुआ है रे, पुराने कागज पोथियो के पांच सौ बहुत हैं और जो सयाने बने बेटा, तो कल ये भी नही मिलेंगे।"

भवानी कुछ सोचकर बड़े भाई के कान मे मुंह लगाके बोले 'तब ऐसा करो बडो दा कि सात सौ दिलवा दो, तीन सौ मुझे और दो-दो सौ मंझले और संझले के हिस्से में चले जाएगे।"

"तेरे हिस्से में तीन सौ क्यो रे ?"

"मेरे ही घर मे तो वो भण्डार बन्द है। भाड़ा नही लूंगा इतने दिनों का ?"

काली बाड़ुज्ये शान्त स्वर मे बोले—"देखो भवानी, इन्हें लाट साहब की मेम ने भेजा है। अभी तो दाम मिल भी रहे है पर कल को यदि ये बिन्दो की तरह ही हमारे घर की पोथिया भी ले जाए तो क्या कर लोगे बेटा ?"

भवानी चुप हो गया। बोला : "अच्छा, सवेरे आकर बात करूंगा।"

सवेरे पांच सौ के बजाय छह सौ रुपए देकर बंसी ने सौदा कर लिया। सौभाग्य से लाटसाहब की मेम के द्वारा दी गई सूची की सभी पुस्तकें भी प्राप्त हो गईं। बंसी इस सौदे से बड़ा खुश था। अपने मूर्ख भाइयो को धोखा देकर कालीपद ने गहरी रकम हथिया ली इसलिए वह भी बहुत प्रसन्न था।

10

बंगाल की लाटनी को इच्छित पुस्तकें मिल गईं। वह इंग्लैण्ड में अपने प्रभावशाली रिश्ते-दारों और मित्रों के आगे अपना मुह उजला कर सकेगी, इसलिए बहुत प्रसन्न थी। हुजूर लाटनी महोदया ने प्रसन्न होकर पिन्काट से कहा : "गोल्डी, जिसने तुमको ये किताबें लाकर दी हैं, क्या वह बंगाली है ?"

"नहीं, वह मिस नैन्सी आसबोर्न के साथ लखनऊ से आया है, फारसी का बहुत बड़ा स्कालर है, और अंग्रेजी भी काम चलाऊ जानता है।"

"तब तो वह बहुत बूढ़ा आदमी होगा ?"

"इसके विपरीत वह बहुत जवान है, मेरी।"

"सच।" पूछते हुए मेरी की मोटी थुलथुल देह भूकम्प की धरती-सी हिल उठी।

"मैं आपसे झूठ कैसे कहूंगा, योर एक्सिलेन्सी।"

दब्बू और पालतू कुत्ते जैसे विद्यानुरागी पिन्काट के 'योर एक्सिलेन्सी' कहने में एक मीठा-सा व्यंग्य आए बिना न रह सका।

लाटनी महोदया अपने प्रेमी सेवक की इस तानामेजी को सह गईं, पूछा : "तुम उसको कल मेरे पास ला सकते हो ? दस से ग्यारह बजे तक का वक्त मेरे पास खाली है, उस वक्त उसे बुला लो।"

पिन्काट ने हड़बड़ा कर कहा : "मगर मेरी, इसके लिए इस समय वचन देना मेरे लिए बहुत मुश्किल है।"

"क्यों ?" मोटी लाटनी की त्योरियां चढ़ गईं।

"मुश्किल इसलिए कि पहले मैं नैन्सी के यहां जाऊ, और उससे बसीधर का पता पूछूं। फिलहाल तो यह भी नहीं कह सकता कि नैन्सी आसबोर्न को उसके घर का पता···।"

"मैं कुछ सुनना नहीं चाहती, मैंने कल दस से ग्यारह बजे तक का वक्त उसके लिए तुमसे खाली रखने को कहा है, और उस वक्त उसे हाजिर होना ही चाहिए।"

यह संयोग था कि नैन्सी के बंगले से बाहर ही बंसीधर इमली के पेड़ के नीचे किराए की पालकी से उतरता हुआ दिखलाई दे गया। पिन्काट को देखकर बंसीधर ने अदब से सलाम किया। पिन्काट ने भी मुस्कुराते हुए अपने हाथ उठाकर उसके प्रति आदर दिखलाया, और घोड़े की चाल तेज करके पास आते हुए हंस के कहा : "मैंने इस समय यदि खुदा से विश्व का राज्य मांगा होता तो उसे पाकर भी मुझे इतनी खुशी न होती, जितनी तुमसे मिलकर इस समय हुई है।"

"मैं अपनी खुशनसीबी के सितारे को आप के चेहरे पर चमकती हुई इस खुशी में देख रहा हूं। हुक्म फरमाइए, नाचीज को आपने किस लिए याद किया था ?"

"मिस्टर बंसीधर, शायद आपकी खुशनसीबी के सितारे ने ही परदेस में पड़े हुए मुझ गरीब अंग्रेज पर यह रहम किया, कि मुझे आप मिस आसबोर्न के बंगले के बाहर ही मिल गए। क्या आप मेरे साथ मेरे डेरे तक चल सकते हैं या यहां आपका समय निश्चित हो···"

"जी नही, चलिए।"

पिन्काट साहब ने बंगाली पालकी कहारों से कहा : "टूमी लोग आमार हार्स का पीछू चलबे। बूझला ?"

पालकी मजदूरो ने गर्दन कमर तक झुकाकर और बेभाव खीसें निपोड़कर, अपनी मूल्यहीन सहमति जतलाई। साहेब का घोड़ा टहलता हुआ आगे बढ़ चला और बसी की पालकी पीछे-पीछे। नैन्सी के बंगले से लगभग डेढ़ फर्लांग दूर पिन्काट का बंगला था। बंगाल के लाट का एक मह सचिव होने के नाते मिस्टर पिन्काट को अच्छी जगह मिली हुई थी। एक छोटी-सी पोखर के पास पेड़ो से घिरा हुआ उसका बंगला था जिसे पिन्काट की रुचि ने भारतीय रग का स्पर्श दे रखा था। बरामदे के आगे खुले में तुलसी मंडप और उनके पुस्तक मडित छोटी-सी लाइब्रेरी मे शिव, काली, भैरव और हनुमान के चित्र लगे थे। मेज पर कागज-पत्तर दबाने के लिए एक शंख का इस्तेमाल भी उसने किया था। पुस्तकालय वाले कमरे मे एक सुखद कुर्सी लाकर नौकरों ने रख दी, दोनो बैठ गए। बसीधर पिन्काट द्वारा दिए गए इस समादर को देखकर स्वर्गीय पार्किन्सन को याद किए बिना न रहा। अग्रेजो में एक वर्ग निर्मम, मुनाफाखोर, जल्लाद, बनियों का है जो जुलाहो के अगूठे कटवा देते हैं, और जो किसानों को अनन्त नरक यन्त्रणाओ से भर देती है।

अचकन, पायजामा, पगड़ी और लाल कमर पट्टी धारण किए हुए नौकर थाली मे सजाकर तर खस के डब्बों मे रखी हुई बियर की दो बोतलें और गिलास रख गया। बियर पीते हुए पिन्काट ने कहा : "हर एक्सिलेन्सी ने कल सुबह दस से ग्यारह बजे तक का समय आपसे मिलने के लिए निश्चित कर दिया है। मैं इस मुश्किल मे था कि आप को कहा ढूढ़ूगा। लार्ड शिवा से मनाकर चला था कि मुझे आपका पता, ठिकाना मिल ही जाए, वर्ना मा काली के हाथ की तलवार मेरी गर्दन ही उड़ा देगी।" कहकर पिन्काट हस पड़ा, बसीधर ने भी सहयोग दिया।

"मिस्टर पिन्काट, सर।"

"ओह, नो सर, एट्सेट्रा प्लीज, फ्राम दिस मोमेंट। मैं भी साधारण नौकर आदमी हू। बरमिंघम मे मेरे पिता की एक छोटी-सी पसारी की दूकान है, गरीबी मे पढ़ा लिखा। किसमत ने मुझे यहां भेज दिया, मगर हू तो नौकर ही। एक गुलाम और वह भी अपनी ही जाति के मालिक का।"

बंसी के मन में पिन्काट के प्रति सहानुभूति जागी, बोला, "मालिक अग्रेज हो या हिन्दोस्तानी, या और किसी देश या कौम का हो···मगर मालिक, मालिक होता है।"

"तो बस समझ लीजिए या कहिए कि मालकिन के हुक्म से मुझे आपकी तलाश थी और आप मिल भी गए।"

"आखिर वह मुझ कमनसीब को इतनी बड़ी इज्जत क्यो बख्शना चाहती हैं, कुछ बतला सकेंगे ?"

"देखिए, ये हमारे माननीय लेफ्टिनेण्ट गवर्नर की पत्नी के चचा ने लन्दन मे एक प्लानचेट सोसायटी बना रखी है। उसमे लकडी की और लकड़ी की ही कीलों से ठुकी हुई तीन पायों की चौकी पर मरे हुए लोगों की रुहों को बुलाया जाता है। कुछ रईस लोग इस पर बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं और रिसर्च करा रहे हैं। कोई लार्ड या काउन्ट इन भूत प्रेतो वाली तत्र की किताबो को बतलाने वाला मिल गया होगा। बस, फरमाइश हो गई। बड़ो की फरमाइशें हम छोटे लोगों की जिन्दगी का गुनाह बेलज्जत होती है।"

बंसी के मन मे पिन्काट के प्रति और अधिक सवेदना जागी, यद्यपि उसे कभी

किसी की चाकरी करने का दुर्भाग्य अब तक नही मिला था, किन्तु एक भारतीय प्रजाजन होने के नाते दासता की विवशता को खूब समझता था। बियर की हल्की तरंगों में अंग्रेज जाति के एक विवश व्यक्ति के प्रति आत्मीयता का संवेग तेजी से बढ़ रहा था, तभी पिन्काट ने कहा : "आपने मिस आसबोर्न को यह बतलाया था कि आपने किसी बंगाली तांत्रिक की मार्फत यह पाण्डुलिपियां पाईं ?"

"जी हा।"

"देखो बसी, अगर हर एक्सिलेन्सी तुमसे कोई ऐसे जादू-टोने वाले तान्त्रिकों की बातें करें तो तुम उनसे साफ कह देना कि मैं ऐसे किसी आदमी को नही जानता हूं। कह देना कि मैंने तो यह किताबें एक जान पहचान के कबाड़ी की मार्फ़त खरीदी हैं।"

बसी ने रज़ामदी का सिर हिलाया। नशे की हल्की तरग मे मुख पर घृणा की गहरी छाप छप गई, पिन्काट बोला : "हर एक्सिलेन्सी गदी औरत है। इसीलिए तो हिज एक्सिलेन्सी उसे पसन्द नही करते। वह बड़े इन्साफपसन्द और पढ़ने के भी बड़े शौकीन हैं। हमारी रोज़ी उनके मिज़ाज को खूब जानती है।"

बसी ने पीकर गिलास रखा और मुस्कुराते हुए कहा : "मिस आसबोर्न ने मुझे बतलाया था कि आपका उन पर खासा असर है।"

"नूर खां।"

"हुजूर।" और कहने के साथ ही नूर खां अदब से कमरे में दाखिल हो गया।

"आप एक बियर और लेंगे मिस्टर बंसीधर ?"

"जी नही, शुक्रिया मिस्टर पिन्काट।"

"आमरा लिए एकठा बियर लाओ शीघ्रार लाओ।" नूरखां गया और पिन्काट बंसी की तरफ मुड़ा, पूछा :"हा, तुम कुछ कह रहे थे बसीधर ?"

"मैं यह कह रहा था मिस्टर पिन्काट कि अपने असर से अगर आप मुझ गरीब का एक हजार रुपया दिलवा दीजिए तो इस कठिन समय मे परदेश मे मेरा काम चल जाएगा। यकीन मानिए, मैंने अपना मुनाफा नही मांगा है, इस काम मे मेरी पूजी के एक हजार लगे। वह मुझे मिल जाए तो बहुत काफी है।"

"मैं तुम्हारी बात समझ गया बंसीधर, लेकिन उस औरत से तुम्हारी रकम निकालने के लिए मुझे उनसे किसी रईस का गला कटवाना होगा।"

मुस्कुराकर बंसीधर बोला : "मैं जानता हू साहब, हाकिम चाहे अंग्रेज हो या हिन्दुस्तानी, अपना उधार पटाने के लिए वह हमेशा इसी तरह पैसे वाले बकरे और मुर्गे ही हलाल करवाता है, खुद कभी नही देता है। और हलाल होनेवालो के लिए सच मानिये मेरे मन मे कोई हमदर्दी नही है।"

"क्यो ?"

"आप मेरी इस बात का समर्थन करेंगे मिस्टर पिन्काट, कि राजा कभी लुटेरा नही कहला सकता क्योंकि वह सबसे पहले लुटेरों को ही लूटता है।"

बियर की नई बोतल आ गई, साहब का गिलास भरा जाने लगा, पिन्काट बोला : "तुम ठीक कहते हो, जिससे तुम्हें रुपया दिलवायेगी, वह हिज एक्सिलेन्सी से उस कुलटा औरत की मार्फत एक के दस कमा लेगा।" कहते हुए पिन्काट साहब का चेहरा कुछ देर के लिए विचारमग्न हो गया। इसी विचार मग्नता में बियर का गिलास उठा करके उसे एक सांस ही में पी गया। खाली गिलास मेज़ पर टप से पटका और फिर जरा तपाक से कहने लगा : "वह औरत शुरू से ही बदमिज़ाज और बदसूरत है और यह बात भी बहुत साफ है कि हिज एक्सिलेन्सी ने इसके बाप को खुश करके कंपनी में यह जगह

पाई होगी। तभी तो हिज एक्सिलेन्सी इस कमबख्त मुटल्लो 'मेरी' से डरते हैं। नैन्सी ने आपसे सच कहा था, मैं उसके काम मल को उठाने वाला मेहतर हूं।" कहते कहते पिन्काट की आंखें छलछला उठीं।

बंसी का दिल भर आया, आखिर वह भी अपने स्वार्थ के कारण ही लखनऊ से कलकत्ते की यात्रा में नैन्सी का इसी प्रकार का साथी रहा था। जो भी हो, पर अपने प्रथम सुख के उन दिनों की याद में बंसी नैन्सी के प्रति तनिक भी कटु नहीं है। वहां सेवक स्वामिनी का सम्बन्ध नहीं था, सखी सखा का था—भले ही वह अभिनय मात्र रहा हो। मन में कहीं दोनों के बीच में एक उद्देश्य था या थोड़ा बहुत अब भी है। और यही भांपकर बंसी ने कहा : "पिन्काट साहब, एक बात बतलाइये, आप अपने ऊपर यह जुल्म बर्दाश्त क्यों कर रहे हैं? मेरा ख्याल है कि अपनी तरक्की और बहबूदी के लिए यह जुल्म सह रहे हैं और जाहिर है कि आशिकी के ढोंग के साथ करते होंगे।"

पिन्काट हंसा, कहा : "ऐसा लगता है कि आपने किसी जादू में मुझे उस बेदुम की सफेद हथिनी के साथ बातें करते हुए देख लिया है। (हल्की हंसी) बाइ द वे आप को बतला दूं, मैं अपने बचपन से किसी बड़े पुस्तकालय का लाइब्रेरियन बनने के सपने देखता था ताकि मुझे खूब पढ़ने का मौका मिले और दुनिया में रहते हुए भी पाक दुनिया के साथ रहूं, नापाक दुनिया के साथ नहीं। मगर तकदीर न जाने क्या-क्या खेल खिला देती है। मेरी मजबूरी को हिज एक्सिलेन्सी शायद जानते हैं और वह अपनी अनिच्छाओं और नफरतों का बोझ ढोने के लिए मुझे टोकरा बना रहे हैं और शायद इसीलिए उन्होंने मेरे काम की सिफारिश करते हुए मेरी तरक्की करके मुझे अपना प्रथम प्राइवेट सेक्रेटरी बना कर मेरी तनख्वाह में पच्चीस रुपये की स्पेशल बढ़ोत्तरी भी दी है। प्रथम प्राइवेट सेक्रेटरी की हैसियत से मेरा काम उनका दफ्तर सम्भालने का नहीं बल्कि उनकी घरवाली को सम्हालना है। एक बार रोजी के सामने ही नशे की मौज में वह मुझसे कह गये कि विलियम, कम्पनी सरकार में तुम्हारी तरक्की इसी बात पर निर्भर करती है कि तुम उस मनहूस मोटी मैम का साया नाइन्टी नाइन प्वाइंट नाइन रेकरिंग मुझसे दूर रखने में सफल होते हो या नहीं।"

बंसी के मन में विनोद जागा, पूछा : "तो आपने कहां तक सफलता पाई ?"

"ह: ह: ह. ह.,"—बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के प्रथम व्यक्तिगत सचिव, दोस्तों में 'बुकवर्म' के नाम से मशहूर मिस्टर विलियम पिन्काट पर जैसे हंसी का दौरा ही पड़ गया। केवल बंसी ही नहीं साहब के नौकर चाकर भी पर्दों, किवाड़ों से झांकने लगे। पिन्काट हंसते-हंसते पेट पकड़ कर हांफने लगा था, आंखों से पानी बहने लगा। वह निढाल होकर आराम कुर्सी पर लेट गये। एक नौकर थाली में पानी का गिलास लेकर बिना कहे हाजिर हो गया। अपने को सम्भालने में उन्हें लगभग आधा मिनट लगा, फिर आंख खोली तो पानी का गिलास देखते ही दोनों हाथों से अपने गालों पर बह आया, आंखों का पानी पोंछा और फुर्ती से उठकर बैठ गया। पानी पिया, नौकर से कहा : "फिटन तैयार करो।" जब अकेलापन हुआ तो फिर संयम से हल्का सा हंस कर बोला : "अपनी इतनी बड़ी उम्र में मैं शायद इतना कभी नहीं हंसा। खैर, तो तुम्हारी बात का जवाब दूं कि मैं कम्पनी सरकार में शत प्रतिशत अपनी तरक्की पाने का हकदार हो चुका हूं। [illegible]"

[illegible] ...त्र चुने। पहली बात तो यह कि मन मिले प्रेमी के साथ रति सुख से ठीक वही शुद्ध अनुभूति प्राप्त होती

है जैसी आत्मा के परमात्मा से मिलन मे होती होगी। हिन्दू लोग इसे 'ब्रह्मानन्द सहोदर' कहते हैं। मेरा यह सूत्र मेरी पर जादू का सा असर कर गया। उसके स्वभाव में ऐसा कुछ है कि वह गुनाह तो करती है मगर उसे गुनाह मानकर नही। औरत के भीतर वाला वह चर्च का परमेश्वर उसके मन पर भी गहरी छाप छोड़े बैठा है।"

"और दूसरा सूत्र कौन सा था?"

"(हंस कर) वह ज्योतिष का था। मैं मेरी को यह समझाने मे सफल हो गया कि मैं एक बंगाली ज्योतिषी से पूछ चुका हू कि हिज एक्सिलेन्सी के सितारे बहुत ही खराब हैं, बेहद खराब हैं इसलिए उन्हे अपने नसीबे के चमकदार सितारों को म्लेच्छ तारो के स्पर्श से बचाना चाहिये। मैंने उनसे यह भी कहा कि तुम किसी पुरुष नौकर तक का मुख भी मत देखना। पाच बरस बाद तुम हिन्दोस्तान के गवर्नर जनरल की बीवी बन जाओगी। यानी मेरी तकदीर और हिज एक्सिलेन्सी की मनहूस तकदीर दोनों ही तुम्हारी एलेक्जेन्ड्रेनियन तकदीर के सहारे ही चमकेंगे, और तुम्हारी मजबूरी यही है कि तुम हमारे सहारे के बिना इन कालो के मुल्क की प्रथम महिमामयी महिला नही बन सकती।"

बंसीधर अपनी हंसी न रोक सका, "आपने तो बहुत अच्छा ड्रामा बना दिया।"

अलमारी से ताजे कपड़े निकालकर काली मोटी आया 'हसीना' हाथ मे लिये हुए परदे से बाहर आकर खड़ी हो गई थी।

पिन्काट ने उसे देखते ही चलते-चलते अन्तिम वाक्य जोड़ा : "मेरे इस नाटक की सफलता और अपनी पदोन्नतियों की आकाक्षा ही—यानी कि मेरा वरदान ही अभिशाप बन गया है। मैं ड्रेस चेन्ज करके अभी आया। आज शाम तुम्हारे साथ ही बिताना चाहता हूं, मैं तुम्हे तुम्हारे घर भी छोड़ आऊंगा। तुमने अपनी रकम के एक हजार रुपये मुझसे दिलाने को कहा है, मैं तुम्हे मुनाफे के एक हजार और दिलाऊंगा। हो सका तो आज ही दिला दूगा। पापी मे भी पुण्य करने की बड़ी शक्ति होती है, हः—हः—हः—।" कहता हुआ पर्दे के पीछे गुसलखाने में चला गया।

अकेले में बसीधर पिन्काट के बारे मे ही सोचता रहा। पढ़ने का शौकीन है, किसी बड़ी लाइब्रेरी का लाइब्रेरियन बनने की सरल आकाक्षा से जीविकावश उसकी चाहनायें ऊंची दर ऊची कुर्सियो की तरफ बढ़ी। सरल, भोला पिन्काट अपने हाकिम को जमीन का खुदा और पुस्तकों को आसमानी खुदा मानता था। अपनी शरणागति हेतु, विशेषकर लोकाचार के लिए वह प्रति रविवार नियमित रूप से चर्च जाता था। लेकिन उस पर भारतीयता की छाप देखकर लगता है कि उसका असली ईश्वर शायद भारत में ही रहता है। शायद अपने ईमान को अकेलेपन की घुटन से बचाने के लिए वह अचानक न जाने क्या समझ कर मेरी तरफ इतना खिच आया है। शायद उसने मेरी पहली तारीफ यही सुनी है कि मैंने हिन्दू होकर भी फारसी तालीम में आला इज्जत हासिल की है। इसे अपनी फलसफाना बातों से भी रिझाऊंगा'''वह मुझे दोस्ती का मौका दे रहा है, मैं भी क्यों न दोस्त की तरह मिलू, कौम तो आखिर अंग्रेज ही है। पार्किन्सन के बाद मुझ को काम कला से रिझाने का अनुभव करने वाली नैन्सी को भी देखा। अपनी न देखी हुई पत्नी के प्रति निष्ठा तोड़ी।—किसने तोडी—नैन्सी ने या स्वयं मैंने? उन्नति की चाहना में अंग्रेजी पढने का शौक जागा, भगवती चन्द्रिका जी की कृपा से अंग्रेजों का साथ भी मिल गया, अब तो इनकी ही सोहबत से अपनी तरक्कियो के झडे ऊंचे से ऊचे उठाऊंगा।'' विराम की परछाई सी छू गई। उसके मन में फिर प्रश्न उठा, कौन-सी तरक्की? रुहानी या जिस्मानी? झटका-सा लगा, शब्द फूटा, दोनों। लेकिन पहले

जिस्मानी क्योंकि मैं जवान हू, मेरी तमन्नायें जवान है। मैं सिर्फ औरतबाजी के चक्कर मे पड़कर अपनी जिन्दगी तबाह नही करूंगा। अंग्रेजी पढ़कर और अंग्रेजों की सोहबत मे इनके खुदा को पहचानने की कोशिश भी करूंगा। दुनियावी तरक्कियो की वजह से उन्हें हर्गिज जिवह नहो—मगर कही न कही गलत समझौते भी करने ही पड़ेंगे। वह तो करने ही पड़ेंगे, मगर उनकी हद तय करनी पड़ेगी। उम्र करा लेगी। फिलहाल तमन्नायें जवान है। बन्दा गुनहगार है। चन्द्रिका मैंया रक्षक हैं।

फोर्ट विलियम और चांदपाल घाट के बीच 'स्ट्रैण्ड' की सड़क जिस पर सुबह और शाम साहब लोग बग्घियों पर या घोड़ों पर घूमने जाते हैं। शाम को सभी तरह की सवारियां बंसीधर को नज़र आ रही थी। रईसों की शानदार गाड़ियों से लेकर नेटिव हिन्दुस्तानियो की किरांचियां तक दिखलाई दे रही थी। हर प्रकार के घोड़े, अरब और तुर्की से लेकर साधारण टट्टू तक उस सड़क पर नजर आ रहे थे। अपने स्वामियो की गाड़ियो के आगे-आगे "हट जाओ, हट जाओ" चिल्लाते हुए दर्जनों नौकर दौड़ते थे। गाड़ियो, पालकियो और घोड़ो पर सवार शानदार किस्म के लोगों के साथ-साथ बहुत से मामूली लोग पैदल चलते भी नज़र आ रहे थे।

पिन्काट बोला : "यहा तुम्हे पश्चिम की सभी जातियों के चेहरे नजर आयेंगे। अंग्रेज, स्काट, आयरिश, डच, जर्मन, फ्रेन्च, अमरीकन, पुर्तगीज, आर्मीनियन, ग्रीक, अरब, पर्शियन, यहूदी, अफगान, चीनी—यहां तक की मलाया के चेहरे भी तुम्हे सड़क झाकने से नज़र आ जाते हैं।"

बंसी बोला : "यानी कि तमाम दुनिया ही सिमट कर इस सड़क पर आ गयी है। आफताब जर्रे मे चमक रहा है।"

पिन्काट ने सराहना मे बसी के गले मे हाथ डालकर गर्दन से गर्दन मिला ली, फिर सीधे बैठते हुए भी उसकी बाह से हाथ न हटाया। सड़क की दुनिया चल रही थी। [illegible] पेरिस [illegible] थ मोटे [illegible] कपडा न था। कमर पर एक बारीक धोती जिसके भीतर से उसकी मोटी-मोटी जांघें झांकती थी। उस गाड़ी पर बैठे अग्रेज ने पिन्काट की ओर अचानक देखकर "हेऽऽ !" की हांक लगायी। बैठे हुए व्यक्ति को देखकर पिन्काट का मुख कमल सा खिल उठा। दोनो गाड़ियां पास-पास रुकी। अंग्रेजों का हस्तान्दोलन हुआ, दोनों की गाड़ी पर हिन्दोस्तानी, एक पांचों पोशाको मे है और दूसरा ठेठ सनातन भेस में। हा उसके गले में मोटे-मोटे पन्नों की माला है, दोनो हाथों की अगूठिया नग मण्डित हैं। पैरों के दोनों अंगूठे भी सोने के छल्ले से मण्डित हैं। बंसीधर को उनकी जूती-चेतली कहीं भी नजर न आई। उनको साथ लेकर चलने वाला साहब पिन्काट से कह रहा था : "गोल्डी, तुम इतने दिनो तक कहां गायब रहे? तुम्हारी बहन तुमको कई बार याद कर चुकी है।"

पिन्काट बोला : 'इधर हर एक्सिलेन्सी के लिए कुछ पुरानी हिन्दुस्तानी किताबो की तलाश मे बहुत व्यस्त रहा माइक। खैर, जूली से कह देना, मैं कल शाम ज़रूर आऊंगा, बल्कि कल शाम मेरी दावत भी तुम्हारे यहा ही रहेगी। और मेरे दोस्त से मिलो, मि० बंसीधर टंडन पर्शियन के स्कालर। और मेरे जीजा सर वाल्टर स्मिथ।"

'सर' से हस्तान्दोलन करने में बंसी को बडा गौरव बोध हुआ। छोटी मीठी बात के बाद दोनों बिदा हुए। बसी पिन्काट की शराफत से भी बहुत प्रभावित हुआ। समुद्र के किनारे की सड़क पर ताजी हवा के झोके बंसी के मन को नयी ताज़गी से भर

गये। बंदरगाह पर ठहरे हुए जहाज और धुआं उडाती चिमनियां नजर आ रहे थे। पिन्काट ने पूछा : "कुछ देर यहा चहल कदमी करने का इरादा है या तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा दू ?" फिर मुस्कराकर रसीली आखो से उसे देखते हुए उसने पूछा : "यहा तुमने क्या अपने लिए कोई इन्तजार करने वाली भी तलाश कर ली है ?"

फिटन से उतरते हुए बंसी झूम कर बोला . "फिलहाल तो अपनी खुशकिस्मती का ही इन्तजार कर रहा हू।"

फिटन से उतरते हुए पिन्काट का पैर औचक मे टेढा पडने की वजह से कुछ लचक गया। उसने फौरन ही बसी के कधे का सहारा लिया, और बंसी ने भी उसकी पीठ पर हाथ रखा, उसे सम्भाला, लेकिन ऐसी कोई खास बात न थी। सड़क पर उतरने के बाद पिन्काट के कदम सहज चाल से ही सध गये। समुद्र की तरफ हाथ वढाकर बोला "यह देखो, होम (इंग्लैण्ड) जाने वाले अपने दोस्तो और रिश्तेदारो के साथ बिदाई का भोज करके ये स्त्री-पुरुष जहाज से उतरकर डोंगियो पर किनारे आ रहे हैं।"

किनारे आ रही डोंगियों से उतरकर मदमस्त लडखडाते हुए स्त्री पुरुषो को महारा देने के लिए नेटिव हिन्दुस्तानी नाव वाले, कही-कही साहबों के नौकर पहले ही से मुस्तैद हो जाते थे।

बसी ने पूछा : "यह लोग अपने जाने वाले दोस्तो के साथ अपने देश की यादों का गम भुलाने की वजह से इतना ज्यादह पी कर लौटते है या बिदा लेने वालों दोस्तों से पिण्ड छूटने की खुशी मे ?"

पिन्काट खिलखिलाकर हमा, उसकी बांह पकड़कर दवाते हुए बोला : "अच्छा मवाल किया। मेरा ख्याल है इनमे से कुछ सचमुच भावुक हो जाते है मगर अधिकतर लोग भावुकता का अभिनय करने मे ही अधिक पी जाते है।"

बंसी ने देखा, लौटती हुई नावों और जहाज के डेक पर खड़े हुए नर-नारी एक दूसरे को हाथ और रूमाल हिला-हिला कर बिदाई दे रहे है।

कुछ हटकर देश के अन्दर ही आने जाने वाले स्टीमरों का घाट है। यही बंसी कुछ रोज पहले नैन्सी आसबोर्न के साथ उतरा था। यहां भी आने वाले प्रियजनों का स्वागत और जाने वाले लोगों को बिदाई देने के लिए कुछ भीड़ नजर आती थी। बंसी बोला : "यहां की भीड पियक्कडों की नजर नही आती।"

"यह लोग घर जाकर या जहाज मे बैठने के बाद पियेंगे। मगर तुमसे एक बात कहूं बंसीधर, ये कलकत्ते मे रहने वाले अग्रेज देखने में तो बड़े भारी पियक्कड़ लगते हैं लेकिन दरअस्ल इनको शराब पीने की तमीज नही है। ये अच्छी और बुरी शराबों की पहचान नही कर सकते। एक दिन मै तुम्हे 'वेक्स्ट्रा एन्जायज' की योरोप शाप की नायाब क्लेरेट पिलाऊंगा।"

"मैं तुम्हारी दावत इसी शर्त पर मजूर करूगा विलियम कि उस रात फिर तुम्हें मुझे अपने ही घर में सोने की जगह भी देनी पडेगी।"

"मिल जायगी मगर साथ में सोने वाली की फरमाइश मत करना दोस्त।" दोनों हस पड़े। अपनी फिटन की ओर बढ़ते हुए पिन्काट बोला : "चलो तुम्हारे रुपये तुम्हें दिलवा दू।"

"क्या तुम मुझे हर एक्सिलेन्सी के पास ले चलोगे ?"

"नही, हिज एक्सिलेन्सी के प्रथम निजी सचिव होने का लाभ उठाऊंगा, फिर तुम्हें तुम्हारे घर पर भी छोड़ आऊंगा।"

बाबू तीन कौड़ी घोष जंगलो के ठेकेदार थे। अंग्रेजों की अच्छी खातिरदारियां

करते हुए उनकी तोंद पर काफी चर्बी चढ़ आयी थी, मकान भी अच्छा खासा बनवा लिया था। उसके दरवाजे पर फिटन रुकी। पिन्काट साहब का अर्दली मकान के भीतर साहब का सलाम बोलने गया और काला नाटा, मोटा तीन कौड़ी दोनों हाथो से अपना दुपट्टा पकड़े खीसें निपोरता और तोद हिलाता हुआ बाहर आ गया। "ही ही. हि: शाएब, आशून आइये। एके बारे आमरा बाड़ी ते आपनार पायेर धूला पोड़ जाए शाएब ही: ही: ही: हि —"

"मिस्टर तीनकोरी एई देखों, शाएब को टू थाउजेन्ट रुपीज फौरन लाके डेदो। हर एक्सिलेन्सी का हुकुम हाय।"

"हे हें शायद एतो बड़ो रकम तो—"

"तुम्हारा ढाका जगल का कान्ट्रैक्ट कल कैन्सिल, खटम हो जाएगा, मालूम ?"

"नेई नई शाएब देगा, देगा (बंसी से) आपनार बाड़ी कोथाय बाबू, आमी आपन के।"

"मुझसे हिन्दोस्तानी मे कहिए। मैं बंगाली नही समझता।"

"बुझेछी बुझेछी हजूर हम आपका कूठी का ठेकाना पूछा।"

बंसीधर ने अपना पता बतलाया। पिन्काट बोला : "मि० टीनकोरी, कल मार्निंग मे हमारा पास साहेब का रिसीट लेकर टोमार आदमी पहुच जाय। वर्ना याद रखो…।"

हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए लाखो के तीन कौड़ी ने कानी कौडी की तरह साहब के बूटों का स्पर्श कर कहा "आपनी आमार माई बाप है हजूर, आपना का हुकूम आमार चोखेर ऊपर शाएब।"

बड़ा बाजार की तरफ गाड़ी पर चलते हुए पिन्काट बोला : "तुम्हारे हिन्दोस्तानियों मे स्वाभिमान शायद अब नही रहा।"

सुनकर बंसी के दिल को ठेस लगी, बोला : "आनरेबुल कम्पनी सरकार के आदमी भी जब यहां के नवाबों से मागने आये होगें तब वे भी शायद अपना स्वाभिमान खोकर ही आये होंगे।"

"ठीक कहते हो, तुम्हें देखकर लगता है कि हिन्दोस्तान मे स्वाभिमान…।"

"नही, विलियम मैंने भी मजबूरन कही कही अपना स्वाभिमान बेचकर स्वार्थ खरीदा है।"

"वह तो हम दोनो ही करते हैं दोस्त। (कुछ रुककर) दुनिया मे सताए हुए मजलूम लोगों और जुल्म करने वालो के बीच मे कुछ लोग ऐसे भी है जो चमगादड़ो की तरह चरिंदों और परिन्दो दोनो ही मे शामिल होने की कोशिश करते हैं। हम तुम मध्य वर्ग के लोग दुनिया मे सब जगह ऐसे ही होते हैं। मैं अपना अनजाने मे किया गया व्यंग्य वापस लेता हू और तुमसे क्षमा मांगता हूं।"

बंसीधर ने पिन्काट की बाह प्यार से दबाते हुए कहा : "मैंने तुम्हारे व्यक्तित्व [illegible] लखनऊ में एक मिस्टर

[illegible]

मकान कुछ नये कुछ पुराने नजर आने लगे। नीचे दूकानें ऊपर की मजिलो मे रिहायशी घर। कई घरो मे तिमजिले के ऊपर बने छज्जो के सहारे-सहारे चटाइयों से बने कमरे भी दिखलाई दे रहे थे। कलकत्ते की आबादी दिनों दिन बढ़ती जा रही है और रहने वालो के लिए ऐसी चटाई

फूस दार कोठरियों की संख्या भी छतों पर बढ़ती जा रही है। मकानों के आगे जनानी, मर्दानी धोतियां छज्जों पर सूख रही है। बहुतो ने खुले छज्जों पर टाट लगाकर उन पर अपने रसोई घर बना रखे हैं, जिनसे धुआ उठकर बाहर की ओर सड़क पर लहरा जाता है। कई नये मकान भी रंगे-पुते और भव्य दिखलाई दे रहे हैं, जिनमे विलायत से बनकर आने वाले लोहे के ढले, बेल फूलदार विक्टोरिया छाप छज्जे गौरवो में लगे हैं। कुछ बग्घियां, कुछ किराचिया, बंगाली और उत्तर भारतीय लोगों की भीड नजर आ रही है। मिर्ज़ापुर हाऊस के फाटक पर साहब की फिटन रुकी। बंसीधर ने विदा ली। विलियम पिन्काट का हाथ गर्मजोशी से पकडते हुए बसी ने कहा : "आज सचमुच मेरे लिए बड़े ही सौभाग्य का दिन है विलियम, तुमने मुझ अजनबी की ओर अपनी बेमिसाल दोस्ती का हाथ बढ़ाकर यकीन मानो, मुझे उम्र भर के लिए खरीद लिया है।"

अपना दूसरा हाथ बसी के हाथ पर रखते हुए पिन्काट ने भी स्नेहसिक्त आखों से उसकी ओर देखते हुए कहा : "मैंने भी तुममे अपना एक सच्चा दोस्त ही पाया है बसीधर, मैं अपने समाज मे इतना आदर पाता हूं कि अपने जी की घुटन और कुठाओं को किसी के आगे खोल नही पाता था। वचन दो कि मेरे रहस्य तुम अपने तक ही रखोगे।"

"तुम्हारे भेद अगर कुछ मेरे पास आ भी गये है तो वे अब मेरे हैं विलियम। तुम्हारी इज्जत अब मेरी इज्जत है। और मेरी इज्जत तो तुमने अपनी दोस्ती से जैसी बढ़ाई है उसके एहसान ··"

"ठहरो, ठहरो, अभी तुम्हारे एहसान चुकाने का समय नही आया है। अभी मैं तुम्हारा घर देखूंगा।" अंग्रेज साहब के साथ बसीधर को मिर्जापुर हाउस के सामने की सडक पर आते-आते हिन्दोस्तानियों की नजर ठिठक गई। साहब इमारत के भीतर साथ ही साथ चला। सीढ़ियो पर आते-जाते दो एक पुराने किरायेदारों ने कुछ दिन पहले आये हुए नये किरायेदार के साथ गोरे साहब को आते देखा तो अदब से सलाम करते हुए बीच के रास्ते से हट गये। बसीधर ने अपने कमरे का ताला खोला, प्राय: सामान रहित दो कमरे। आगे वाले कमरे में लाला रामचन्दर खन्ना के घर से आयी हुई चारपाई पर एक बिछावन पड़ा था और चारपाई के नीचे काठ का सन्दूक था।

"ओह बंसीधर, तुम तो अभी सफर में डाले गये खेमे के ही निवासी हो, तुम्हें अभी घर नही मिला। तुम्हारा किचेन कहां है ?"

"अभी तो बेसरो-सामान ही हूं विलियम, ये किताबों के फेर में मेरी बचत का एक हजार रुपया जो लग गया उसके बाद फिर···।"

"मगर अब तो वह तुम्हें मिल जायगा, बल्कि एक हजार ज्यादह, मुनाफे के साथ।"

"तुम्हारी दया से ये मुमकिन हुआ, अब थोडा बहुत सामान भी खरीद लूगा। मेरा खाना मेरे एक रिश्तेदार के यहां से बन के आ जाता है। फिलहाल तो इसी तरह बगैर घरवाली का घर रहेगा मेरा।"

पिन्काट हंसकर बोला, "तुम ब्रह्मचर्या में विश्वास रखते हु बंसीधर।"

"मजबूरी का नाम सदाचार है। वैसे मुझे यह कहते हुए शर्म आती है कि मेरी शादी हो चुकी है। लेकिन अपनी बीबी को मैंने अभी तक देखा भी नहीं है, उससे बात करना तो बहुत दूर की बात है।" दोनों हंसने लगे। बंसी बोला : "तुम्हें कुछ देर यहां अकेले बैठना होगा विलियम, मैं तुम्हारे लिये कुछ मिठाई ले आऊं।"

"ओह नो, नो, मैं जानता हूं तुम हिन्दोस्तानी लोग खातिरदारी करने मे बहुत

पट्ट हो। अरियन ने मेगास्थनीज के बयानों का हवाला देकर लिखा है कि सैन्ड्रोकोटस (चन्द्रगुप्त) के जमाने में यहा के लोग परदेसियो को अपने दरवाजे से दूध-मिठाई खिलाये बगैर आगे नही बढ़ने देते थे। मै फिर किसी दिन तुम्हारी मिठाई कुबूल करूगा। और ये भी चाहूगा कि तुम मुझे उस तान्त्रिक पंडित से भी मिलवा दो जिसके साथ तुम किताबें खरीदने गये थे।"

पिन्काट थोडी देर बैठकर चला गया, लेकिन आस-पास की भारतीय बस्ती मे उसके बंसी के यहा आने की चर्चा बडी देर तक होती रही। चार घड़ी बाद लाला रामचन्दर का लडका विपिन आया पूछा . "जीजा जी, आज आपके साथ कौन साहब आये थे ?"

"बगाल के लाट साहब के प्राइवेट सेक्रेटरी थे, मिस्टर विलियम पिन्काट साहब। बेचारे मुझे बहुत मानने लगे है।"

"ओह हो, आपने तो आते ही शेर के गले में हाथ डाल दिया।"

"हा भइया, असल मे अब मुझे अपनी अंग्रेजी पढाई लिखाई का डौल बैठाना है। ये किताबें जो खरीदने गया था उसमे मेरा हजार रुपया सीधा-सीधा फंस गया। उसे वसूल करने की जल्दी थी, इसी लिए डौल बिठाना पड़ा। श्री चन्द्रिको मइया मेरी बड़ी सहाय हैं; विलियम पिन्काट मेरा बडा दोस्त बनता जा रहा है। बंगाल के छोटे लाट का सेक्रेटरी ..."

विपिन बिहारी ने हाथ बढ़ा और आखे चमका कर कहा : "अरे जीजा जी, वह खाली छोटे लाट का सिकटरी ही नही, लक्ष्मीजी की सवारी का साला भी है।"

'क्या मतलब ?"

"ये आप का पिन्काट साहेब, बरमिंघम मिल के बड़े मनेजर सर वाल्टर स्मिथ का साला भी है। बाबू तरन तारन मित्रा इसी के बेनियन है, बीस बरसो में इसी की बदौलत वह साला तम्बाकू का पिन्डा करोड़पती बन गया है। खत्रियों के मुकाबले मे आ रहा है।"

बसीधर की आखो के सामने स्टैण्ड मे 'खत्रियो के मुकाबले का' कंठेदार बगाली और अग्रेज झांक गये। बसी ने कहा "मैंने आज उस बंगाली को वाल्टर स्मिथ के साथ देखा था। बल्कि सर वाल्टर स्मिथ से हाथ भी मिलाया।"

क्षण दो क्षण चप रहने के बाद जीजा जी की जांघ पर थपकी देकर विपिन बोला · "जीजा जी, इससे दोस्ती बढाइये, एक दिन इसे इन्डियन वैष्नो फूड खाने के लिये इन्वाइट कीजिये। यहीं बडे बाजार मे एक सूरत, गुजरात, का हलवाई आ बसा है, वेजिटेबुल के ऐसे सामान बनाता है कि गोश्त खाने वाला समझे कि वह गोश्त ही खा रहा है।"

"अच्छा, हमको भी खिलाना यार।"

विपिन जीजा की बात सुने बगैर अपने ही मन की उमग-तरंगों मे बहता हुआ कहने लगा : "जीजाजी, तकदीर ने आपका साथ तो दे ही दिया। और जदी आपके बहाने से मेरा भी साथ दे दिया तो सच मानिये ..अब क्या बतलाऊ, गौरी शकर बाबा प्रसन्न हो तभी मुह से कुछ कहूंगा जीजा जी, आप उसे खाने पर बुला लीजिये।"

बंसीधर मुस्कुराकर बोला : "अमां तुम तो एकदम सपनो के सौदागर हो गये हो। ऐसी कौन-सी बडी तरकीब सूझ गयी है तुम्हे ?"

"तरकीब। जीजा जी बरमिंघम के वाल्टर स्मिथ के पास अगर मेरा बराबर का आना-जाना हो जाय तो खाली इसी कारण से बाजार मे मेरी साख बढ जायगी।

देख लीजिएगा, एक दिन लाला रूपलाल सेठ मुझे न बुलवायें तब कहियेगा और मैं भी अपनी मूछों पे ताव देकर कहूंगा कि मैं आपके यहां नही आऊंगा।"

बंसीधर को हंसी आ गयी। बोला : "अमां, अभी तो तुम्हारी रेखें ही फूट रही हैं औ मूछों पे ताव देने की बात करने लगे।"

विपिनचंद्र खन्ना, बंसीधर टण्डन के दोनो पैरों के अगूठे छूकर बोला : "जीजा जी, आपको भगवान ने आलिम बनाया, इंग्लिशो से आपका नमस्कार-चमत्कार भी हो गया और मुझको काली मां ने आपका जदी सगा नही तो भी निकट का साला बना दिया। मैं तदबीर से तकदीर को बनाने वालो में हूं। अभी क्या कहूं। कभी सजोग मिला तो फिर इसी तरह आपके पायेर का धूला लूगा।"

उच्चाकाक्षी नवयुवक एक दूसरे उच्चाकांक्षी उगते हुए जवान की बातो से प्रभावित हुआ। यह लड़का विलायती झाड़ फानूस और दर्पण तथा लोहे के छज्जे, रेलिंग, खिडकियो आदि की दलाली का काम सीखते हुए अभी से ही सौ-सवा सौ-डेढ़ सौ रुपये महीने कमा लेता है। पिता के साथ कपड़े की दलाली मे भी अपने ज्ञान की पैठ करा रहा है। विपिन उसे अपने मन के अत्यन्त निकट लगा। पिन्काट के इस दूसरे महत्व का परिचय पाकर भी वह कम प्रभावित नही हुआ था। उसी रात तीनकौडी का आदमी दो हजार रुपये देकर उससे रसीद ले गया।

11

अंग्रेजी साहित्य और मैट्रिकुलेशन की परीक्षा के विषयों की पढ़ाई करते हुए बंसीधर को अब लगभग आठ महीने हो चले हैं। सप्ताह में दो दिन अंग्रेजी पढ़ते हुए वह दो दिवस मिस्टर मोन्टीथ को फारसी पढ़ाता था। नैन्सी और पिन्काट की सिफारिशो से प्रभावित होकर वह उससे फीस नही लेते। अन्य विषयों की पढाई के लिए मोन्टीथ साहब ने उसे एक-दूसरे शिक्षक के सुपुर्द कर रखा है, जिसे पैंतीस रुपया मासिक फीस देता है। पढाई बड़े करीने से और बडी लगन के साथ हो रही है। मोन्टीथ और पिन्काट दोनों ही फैशनेबुल क्लबों, समाजो से प्रायः दूर ही रहते हैं, हफ्ते में दो-तीन शामें साथ गुजारते हैं। इसीलिए आयु में बहुत बड़े होकर भी मि० मोन्टीथ मित्र भाव रखते हैं।

इस बीच बंसीधर इस बड़े नगर की चालढाल से अब लगभग परिचित हो चुका है। लखनऊ और कलकत्ते के नागरिक जीवन में उसे जमीन-आसमान का अन्तर नजर आने लगा है। लखनऊ का नागरिक जीवन बंद तालाब के सड़े, बदबूदार, काई भरे ठहरे हुए पानी-सा लगता है। रईसों के भोग-विलास और उनकी विकृत अहताओ के विस्फोट ही अधिक वहां होते रहते हैं, और नवाबी दरबार का शासन बडा दम घोटनेवाला महसूस होता है। तीतर, बटेर, कबूतरबाजी, रडीबाजी, लौंडेबाजी, जुए, शराब और कनकौओं का वह शहर भला कलकत्ते का क्या मुकाबला कर सकता है। बगाल के पढे लिखे समाज

में बातें करते हुए वहां की तत्कालीन मानसिकता से वह अत्यन्त प्रभावित होता है। शासन व्यवस्था इतनी सुन्दर है कि उसमें लोगों को प्राय: आत्मविकास के लिए पूरी गुंजाइश मिल जाती है। लखनऊ मे जहां अंग्रेजी पढे-लिखे हिन्दुस्तानी प्राय. इने-गिने ही हैं, वही कलकत्ते में बंगाल का नव साक्षर समाज अधिक संख्या मे है। बंगाली कारकुन अंग्रेजी दफ्तरों में काम करते हैं और अंग्रेज ईसाइयों की सगत मे अपने धर्म और समाज की बुराइयां अधिक देखने लगे हैं। कुलीन हिन्दुओं का एक वर्ग अब क्रमशः ख्रिस्तान मत को मानते हुए ईसाई धर्मी हो चला है। दबे कुचले समाज के लोग जीविका और आत्मसम्मान पाने के लालच मे प्राय: ईसाई हो गये हैं। स्वर्गीय राजा राममोहन राय के द्वारा स्थापित ब्रह्मसमाज ईसाई हो जाने वाला नवसाक्षर हिन्दुओं की भीड और उनके रूढिग्रस्त, सड़ांध भरे अन्धविश्वासी जीवन के बीच मे सदानीरा नदी के समान प्रवाहमान हो चला है। घर-घर मे नये-पुरानों की लडाई जोर पकड़ रही है।''

उस दिन शाम को मोन्टीथ और पिन्काट दोनो ही नैन्सी के विवाह की दावत मे बड़े लाट की कोठी पर आमन्त्रित थे। नैन्सी की सुन्दरता और उसके सौभाग्य ने उसका सम्बन्ध कलकत्ते के शासक वर्ग मे एक बहुत ही प्रतिष्ठित युवक से करा दिया था। आनरेबल ईस्ट इंडिया कम्पनी के एक प्रतिष्ठित डायरेक्टर के इकलौते पुत्र और गवर्नर जनरल के अत्यन्त विश्वासपात्र युवक की नवोढ़ा पत्नी भारत में आते ही बीमार पडी और फिर बच न सँकी, कालान्तर मे यही विधुर युवक नैन्सी का पति बना। बंसीधर उस दावत मे नही बुलाया गया था, इस कारण एक जगह उसके मन में कचोट भी थी। फिर सोचा, क्यो बुलाया जाऊ। आखिर बड़े लाट के महलो मे जाने की मेरी हैसियत ही क्या है। यह सोचकर अपने दिल मे वह भले ही खुश हो और गर्वित हो सकता है कि उसने एक बड़े अंग्रेज की पत्नी नैन्सी मे अन्तरग सुख के अनेक क्षण प्राप्त किये थे, पर क्या वह केवल इसी कारण मे नैन्सी की बराबरी कर सकता है। भोग-विलास प्रिय सम्पन्न सवर्ण, कुलीन पुरुष अकसर निम्नवर्णों की स्त्रियों से भी सुख प्राप्त कर लेते हैं। बड़े घरों की तन तृष्णा पीडिताएं अपने दासों से सन्तोष प्राप्त कर लेती हैं, मगर इससे दोनों के बीच बराबरी का सम्बन्ध तो नही होता, फिर बसी को दुःख क्यों हो? अंग्रेजों मे जहां-न्यायप्रियता तथा शासन और अनुशासन की प्रबल योग्यता है, वही उनमें विजेता का दभ भी भरपूर है।

सोचते हुए शाम के समय अपने सूने घर मे न जाकर वह लाला रामचन्दर के यहां आ पहुंचा। कमरे मे प्रवेश करते ही उसे चाची की क्रोध भरी आवाज सुनायी दी, "हम हजार बार तुमसे कह चुके हैं नन्हा, हमरे सामने जो तुम अब फिर कभी हमरे धरम-भगवान की बुराई करोगे तो हम सच्ची कहत हैं, छज्जे से सड़क पर कूद कर अपने प्रान दै देंगे।"

बंसी के आ जाने से क्रोध मे अटकाव आया। बसी बोला : "क्या बात है? विपिन बाबू, हमारी चाची को क्यो नाराज कर दिया?"

चाची झुंझलाकर बोली 'भले बखत से आय गए भइया, इनसे कहि देओ कि हमरे घर मे बरामा-क्रिस्टान मते की बातें न किया करें। हम ई सह नही सकत हैंगी।"

विपिन बोला · "मैं ब्राह्मो मत स्वीकार कर लूगा।"

"अच्छा-अच्छा, अब चलो यहा से, जो करना हो कर लेना। अभी से हमारी चाची बेचारी का दिमाग क्यों खराब करते हो।"

"अरे, अपनी बिरादरी में अब एक घर फूटा हैगा ना। तो और लडकन में भला काहे न ये बातें फैलेंगी।"

"कौन घर फूटा चाची, किसकी बातें कर रही है ?"

"अरे तुम्हें पता नही, गब्बोमल के मुन्डे ने सामपुकुर में भाड़े का मकान ले लिया है। वहीं रहन लगा है मोया, बिरादरी भरे में हड़कम्प मच रहा हैगा कल से।"

विपिन बोला . "अब आप ही बताइये जीजा जी, क्या पाप किया उसने ? कोई क्रिस्तान, मुसलमान तो नही लाया। ब्राह्मो समाजी आखिर है तो अपने हिन्दू ही। सच कहियेगा जीजा जी, इन ब्राह्मो समाजियों ने हमारे हिन्दू धर्म की रक्षा की है कि नही ?"

"विपिन, इस चर्चा को अब घर में बन्द करो भाई। हमारे यह नये ख्यालात किसी और जगह काम आयेंगे। चाची बेचारी को क्यो बेकार परेशान करते हो। तुमने कुछ सुना चाची, बंगालियों ने एक नई मिठाई बना ली है—रशोगोल्ला।"

"हां जीजाजी, सुना तो हमने भी है पर अभी खाई नही।"

"अरे यार, किसी अंग्रेज और हिन्दोस्तानी रईस मे लाग-डांट हो गयी, अंग्रेज ने कहा कि तुम्हारा हलवाई हमारे जैसा केक नही बना सकता, बिल्कुल स्पज होता है। हिन्दू रईस अकड़ गये। कहा, हमारे हलवाई आपसे बढिया स्पंज बनाते है। सो केक तो बना नही, उसके बजाय रोशोगोल्ला बन गया। सुना है, आज बडे लाट साहब के यहां दावत में यही हिन्दुस्तानी मिठाई मगाई गई है।"

"अरे भइया, अपना धर्म भी अब नई मिठाई जैसा हुई जैहै, पेट भरै की चीज नाहीं मिलेगी, खाली सवाद की चीजें मिलैंगी।" कहकर चाची बंसी के पानी पिलाव के लिए कुछ लाने को भीतर चली गयी।

बंसी ने विपिन से कहा : "विपिन, आगे कभी ऐसी नादानी मत करना। तुम अपने को भले बदल लो, चाची-चाचा को न बदल सकोगे।"

"मुझे आपकी यह पुतुल पूजा, काली, राधा किशन, गौरी शकर इन सबसे नफरत हो गयी है जीजा जी, अरे ईश्वर एक है या तेंतीस करोड ?"

"खैर एक हो या अनेक, यह बतलाओ, पिन्काट के जीजा से तुम्हारी कैसी छन रही है ?"

विपिनचहक कर बोला : "ओह सर स्मिथ, ही इज माई ग्रैण्ड फ्रैण्ड नाऊ। बहुआ से न कहियेगा हम तो उसके साथ बैठकर खाने पीने भी लगे है, आप से झूठ नही कहते। सर-स्मिथ हमसे बहुत-बहुत खुश हैगे। वह बंगलिया तरनतारन साला अब खाय-खाय के मुटाय गया है ना। ही नाऊ नाट केयर फार सर वाल्टर एण्ड नाट थिक व्हाट पोजीशन इज सर वाल्टर स्मिथ। परसों हमसे कहते थे, अब तो सर वाल्टर हमको नन्हा बोलते है। बोला नन्हा, न्यू डिजाइन कम फ्राम बरमिंघम, तुम बेचेगा। हम बोला, वह बंगाली बाबू साला बुरा मान जायगा सर। बोला, आई डू नाट केयर फार बंगाली, तुम बेचेगा ? हम बोला, यस सर। कल उसके दफ्तर जायेंगे, नया सैम्पुल लायेंगे। पर एक बात है जीजा जी, ये आपके पिन्काट साहेब की बहन अच्छी औरत नही हैगी। डोन्ट केयर फार हसबैन्ड। एक दिन हम देखा जीजा जी, उसका इण्डियन खानसामा उसका चूमा ले रहा था।"

"ऊंह, होगा यार, इन्सान कमजोरियों का पुतला है इसलिए सिर्फ हमे उसकी अच्छाइयों को ही देखना चाहिए। बुराइयां पहले अपने में देखनी चाहिए।" बंसी को सर वाल्टर और विपिन की प्रगाढता का संकेत पिन्काट से पहले ही मिल चुका था।

तभी लाला रामचन्दर भी बाहर से आये। बंसीधर ने उठकर उनके पैर छुए।

"कहो अच्छे हो भइया, तुम्हरी पढ़ाई कैसी चल रही है ?"

"बहुत अच्छी चाचा जी।"

"अच्छा है भाई, तरक्की करो खूब। मगर ऐसी तरक्की न करना भइया कि

हमरे सुगना भइया की बिटिया को छोड़ के कोई इरन्टी किरन्टी ब्याह लेओ और होटल-बोटल..."

"आप कैसी बातें करते हैं चाचा जी, ।"

दुपट्टा, कुर्ता, पगड़ी, उतार कर रखी और चटाई पर बैठकर अपने गजे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा : "ये अंग्रेज राज और तो सब तरह् से अच्छा है भइया, बाकी हमारे हिन्दू धरम की मट्टी पलीत करके रख दी है इसने। और इन बरम्हों ने तो हमारा सब मलियामेट ही कर दिया है। गब्बो भइये का लड़का साला बराम्हो हो गया कि नहीं? घर की औरत, दुई-दुई बच्चे, मां-बाप सबको छोड़ के बंगाली कायथ की लड़की से ब्याह रचाया। हद्द हुई गई ससुरी। दुई-चार लड़के ससुरे ऐसे और हुई जांय तो बिरादरी गई समझो।"

"तबदीलियां तो आयेंगी ही चाचा जी, मुसलमानी अमलदारी में बिगड़ने वाले लोग आखिर मुसलमान बन गये थे कि नहीं?"

चाची नमक अजवाइन पड़ी छोटी-छोटी पूरियां उतार कर तश्तरी में लोनचे के साथ ले आयीं। विपिन ने तुरत उठकर कोने की चौकी पर रखा लोटा और चिलमची उठा कर जीजा और पिता के हाथ धुलवाये, अपने भी धोये। लाला रामचन्दर कह रहे थे : "गब्बो भइये की आफत आ गई समझो। कमाऊ-धमाऊ लड़का कैसे मर-खपकर बिचारों ने कैलासो को अंग्रेजी पढ़ाई-लिखाई। और अब सब छोड़-छाड़ के बंगालिन के जादू में बंधा-बंधा चला गया, हद्द हुई गई।"

विपिन बोला : "एक बात कहूँ बाबू, बुरा न मानियेगा। खैराबाद के गांव की गंवार औरत के साथ कैलासो जैसा पढ़ा-लिखा आदमी कैसे निर्वाह करेगा। न अंग्रेजी जाने न बंगला, और गाने-रोने के नाम पर वही ससुरी 'छोटी बड़ी सुइयां रे जाली का मोरा काढ़ना।' कोई पढा-लिखा ये गंवारपन सहन नही कर सकता है।"

लाला रामचन्दर ने तश्तरी से पूरी का पहला कौर ही तोड़ा था कि हाथ नीचे ही रह गया। कुछ देर के लिए सनाका खा गये, फिर बोले : "देखो नन्हा, गब्बोमल के हियां तो समिस्या दूसरी हैगी, सबसे बड़ा कमाने वाला वही कैलासो हैगा। गब्बो बिचारे फालिज से लैचार, किसी काम-धाम के रहे नहीं, छुटका बिम्मी अबही पढ लिख ही रहा हैगा। अब ये बुढ़ापे मे क्या करिहैं और क्या खहिहैं। छुटका भी साला अंग्रेजी पढ रहा हैगा, कल जाने घर मे कौन सी नौबत आवे।"

विपिन जैसे अपने पिता को उत्तर देने के लिए तैयार ही था, बोला : "जब ऐसी ही मजबूरी रही तो झगडा काहे करत रहे कैलासो भैया के साथ, चित भी मेरी पट भी मेरी—वाह। अब ई बडो का झूठा अदब नही चलेगा। आप हमारी इज्जत करेंगे तो मैं आपकी करूंगा। मैं कहता हूं कि ठीक किया कैलासो भैया ने।"

लाला रामचन्दर का गोरा चेहरा फक्क पड गया। हाथ मे उठाई हुई तश्तरी नीचे रख के दूर सरका दी और तमक कर उठे, बाहर चले गये।

बंसी ने विपिन के हाथ पर अपना हाथ रखा और बोला : "बड़ों से इस तरह गर्मी से बात नही करनी चाहिए, भैया।"

"मैं अपनी तरफ से तेज नहीं होता जीजा जी, लेकिन हमारे बड़ो को भी यह बात समझनी होगी कि हम जुवको की भी अब कुछ अपनी लालसायें हैंगी। ताली दोनों हाथो से बजती है।"

लाला रामचन्दर की पत्नी कमरे के दरवाजे पर आकर खड़ी हो गई थी, बेटे की बात चुपचाप सुनती रहीं, फिर भीतर चली गयीं। बंसी उठा और बाहर जाकर

बरामदे मे उत्तेजित अवस्था में टहलते हुए अपने रिश्ते के चचिया ससुर से कहा : "भीतर चलिए, खाईए-पीजिए चाचा, आईए।"

लाला जी क्षण भर के लिए अपने रिश्ते के दामाद से आंखें मिलाये खड़े रहे, फिर तेजी से आंखें पानी भरी प्यालियो सी छलछला उठी। कुछ कहने के लिए होंठ फड़के, पर कहते न बना। बंसीधर ने उनकी बाह पकड़कर कहा . "आइए।"

दोनो भीतर चले आये। चाची फिर रसोईघर के दरवाजे पर आ गयी। बंसी ने तश्तरी उठाकर अपने चचिया ससुर के हाथ मे दे दी। तीनो चुपचाप खाने लगे, कोई कुछ न बोला। विपिन खाने के बजाय पूरिया निगल रहा था। चाची दूसरी बार पूड़ियां लाईं, लेकिन विपिन चद्र पहले ही तश्तरी जमीन पर रखकर अलग सरका चुका था। गट-गट गिलास से पानी पिया और पीछे के छज्जे मे जाकर हाथ धोने लगा। घर के सरस वातावरण मे कटुता का विष घुल गया था। बंसीधर सोचने लगा, समय कितनी तेजी से बदल रहा है। बड़े, छोटो को अपने ढर्रे पर ले जाना चाहते है, लेकिन नई हवा के विचार स्वातंत्र्य ने नयों की अस्मिता भी जगा दी है।" कलकत्ता तो खैर नया शहर है, पूरी तरह से विदेशी सस्कृति के प्रभाव मे आ चुका है, परन्तु लखनऊ मे भी अब दो पीढ़ियो का विद्रोह आरम्भ हो चुका है। स्वयम् उसने भी अपने पिता से अपना दूसरा विवाह करने के लिए विरोध प्रकट किया था, घर छोड़कर चला आया था।···

विपिन सन्दूक से नया धोती-कुर्ता निकाल रहा था, पहना, मांग पट्टी की, फिर रसोइघर के दरवाजे पर जाकर मा से कहा : "बहुआ हम अब जात हैगे, सर स्मिथ से हमारा अपोइन्टमेन्ट आठ बजे का है।"

बंसीधर ने तनाव की स्थिति को सरस बनाने के लिए मुस्कुराकर कहा : "अमां चाची को जूठी पट्टी क्यो पढाते हो यार। सर स्मिथ तो आज बड़े लाट साहब के यहा बोतलें चढ़ाने और बकरा गटकने के लिए जा रहे होगे इस वक्त। आज नैन्सी की शादी की दावत है।"

"कौन नैन्सी ?" अपने झूठ को नजरअन्दाज कराने के लिए विपिन ने रौब से पूछा।

"मेरी पुरानी मालकिन, जो मुझे लखनऊ से यहां लायी थी।"

"पर वह तो विडो रही।"

"अरे, पर अंग्रेजों मे कौन विडो अपने मरने वाले पती के साथ सती होती है, आज एक मरा कल फिर दूसरा ब्याह किया।" कहकर ठठाकर हंस पडा।

चाची तब तक फिर कमरे मे दरवाजे की चौखट से टिक कर बैठ गयी थी, बोली : "अब तुम भी हमरी भतीजी को यहा ले आओ बेटा, और घर बसाओ। जो तुमहू कोई अंगाली बंगाली, मेम-एम ले आये···"

हंसकर बंसी बोला—"मैं इतना खुदगरज नही हू चाची। कोई मुस्तकिल आमदनी का जरिया हो जाय, तो यहां घर बसाऊं। ठहरो विपिन, मैं भी तुम्हारे साथ ही चलता हूं।"

घर से निकलने के पहले विपिन का विवेक जागा। पिता के पैर छूकर बोला : "हम जो कुछ अशुद्ध बोला हो उसके लिए क्षमा कीजियेगा, बाबू। हम तो बात के लिए बात बोला रहा, कोई आप से बेअदबी नही किया।" पिता कुछ न बोले, केवल स्नेह-सिक्त आंखें उठाकर देख भर लिया। विपिन और बंसीधर बाहर चले आये।

कलकत्ते के उत्तर भारतीय क्षेत्र से निकलकर बंगाली बस्तियों में आये। वहा विपिन की तरह ही अनेक युवक नंगे सिर घूमते नजर आये। बंसीधर अब भी दोपल्ली

टोपी लगाये बगैर घर से बाहर नहीं निकलता था। लखनऊ में बचपन से ही उसे टोपी या साफा पहन कर घर से बाहर निकलने के सस्कार पड़े थे। उसे शुरू से ही यह नसीहत मिली थी कि गली मे नगे सिर नही जाया जाता, वरना शैतान चपत मार देता है।

बंसी मन ही मन हस के सोचने लगा, इन बंगाली जवानो को कोई शैतान चपत नही मारता। सजे बजे कोट पतलूनधारी एक जवान बाबू, अपनी युवा पत्नी के साथ, छडी लिए बड़ी शान से जा रहे थे। उन्हें देखते ही विपिन जोश से बोला : "ये देखिए ये हजबेन्ड एण्ड वाइफ कैसी आजादी के साथ घूम रहे हैंगे। इसमे बताइये भला क्या बुरी बात है?"

"बुरा कुछ नही। तुम से सच बतलाऊ, मेरी भी तबियत होती है, कि तुम्हारी चचेरी बहन को यहां लाकर इसी तरह आजादी से घूमूं।"

"तो ले आइए न, मैं आपके लिए खत्री, बहामनो के मोहल्ले में नही वरन किसी ब्राहमो लोकल्टी मे मकान दिला दूगा। ये हमारे पुरखे साले बड़े दकियानूसी है, जीजाजी। बडे ही सडे भये पुराने ऐडियाज है इन लोगो के। देखिए ब्रह्मो समाजियो ने बगालियो को कैसा नया बना दिया है।"

"हा यार, बात तो सही है तुम्हारी। केशवचन्द्र सेन बाबू के ब्राह्मो समाज ने हुलिया ही बदल दी है। गैर बिरादरियों के लड़के लड़कियो की शादियां होने लगी हैं। विधवाओं की शादियां होने लगी। जनेऊ की रसम उडा दी। हिन्दू सोसायटी मे कभी ऐसा रेवोल्यूशन नही आया जैसा आज आ रहा है।"

"अभी क्या है, देखते जाइये। केशव बाबू हमारी इण्डियन सोसायटी को इंगिलश सोसायटी जैसा अप टु डेट बना देंगे।"

तनकुन गंभीर था, कुछ रुक कर बोला : "कुछ भी हो विपिन, मगर अपने भाग सराहो कि तुम्हारे फादर-मदर पुराने होकर भी नयो से समझौता करते हैं। तुमको भी उनका लिहाज करना चाहिए। यह मानता हूं कि इन लोगों के अन्धे रीति-रिवाजो के दल-दल मे अपने आपको मत फंसाओ। मगर इस बात का खयाल जरूर रखो कि जैसे तुम अपने नये खयालात नही छोड़ सकते वैसे ही पुराने लोग भी अपने पुराने खयालात नही छोड़ सकते।"

विपिन को उपदेश देते हुए भी तनकुन के दिमाग मे केशवबाबू के उपदेश नाच रहे थे। "दुनिया धर्म क्षेत्र है। पवित्र हृदय से बढ़कर और कोई प्रभु मूर्ति नही, सत्य ही अविनश्वर धर्म ग्रन्थ है। स्वार्थ बुद्धि की बलि ही सच्चा बलि है।"

अंग्रेजों के वर्ग मे इस बात की जोरदार चर्चा था कि अवध से वाजिदअलीशाह की हुकूमत जल्द ही हटाई जाने वाली है। अयोध्या मे अमेठी का मौलवी मीर अमीर अली हनुमान गढी पर जेहाद बोल रहा है, और अवध के तमाम बड़े-बड़े हिन्दू-राजे-महराजे मिलकर उससे युद्ध कर रहे हैं। एक खबर यह भी छपी थी कि खास लखनऊ शहर में कुछ मुसलमान सिपाहियों ने हिन्दुओं का एक शिवाला और जैनियों का एक मन्दिर कुछ महीनों पहले गुस्से मे आकर तोड़ डाला था, उस बात को लेकर भी शहर में कुछ नई गर्मा-गर्मी बढायी जा रही है। लखनऊ और अवध की हालत बहुत खराब हो रही है। इन समाचारों से बंसीधर के मन मे जहा एक ओर लखनऊ के लिए हुड़क उठती थी, वहीं उसकी यह इच्छा भी हो रही थी कि किसी तरह अपनी पत्नी को कलकत्ते ले आये। लेकिन यह कैसे संभव हो? पढाई लायक खर्च तो उसके पास है, लेकिन गृहस्थी को बसाने के लिए उसे अधिक और निश्चित आय होनी चाहिए। संयोग से उन्ही दिनों

पिन्काट का एक छोटा सा पत्र उसे मिला : "आज मेरी बड़ी खुशियों का दिन है, शाम को मेरे साथ पियो और खाना खाओ। मैं निश्चित रूप से तो नही कह सकता परन्तु शायद रोज़ी भी मेरी इस बड़ी खुशी की छोटी सी दावत मे शरीक होगी।—तुम्हारा, डब्लू० पी०।"

उस दिन बंसी को मोन्टीथ साहब को फारसी पढ़ाने के लिए जाना था। वही खबर मिली कि बंगाल के पुराने छोटे लाट का तबादला हो गया है, और वे मद्रास के गवर्नर होकर जा रहे हैं तथा उनकी जगह बंसी की पुरानी प्रेमिका नैन्सी के पति बंगाल के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर नियुक्त हुए हैं। सुनकर बंसीधर को अपने मित्र पिन्काट साहब की खुशी का रहस्य मालूम हुआ।

अपनी पुरानी प्रेमिका की इस नवोन्नति पर ईर्ष्या हुई। शाम को जब पिन्काट के घर पहुंचा तो वह खुशी मे उससे लिपट गया, कहा: "आज मैं बहुत खुश हूं मेरे दोस्त, मुझे उस बदसूरत हथिनी से मुक्ति मिली।"

"अब तुम शादी कर लो विलियम।"

"करना तो चाहता हूं, पर तुम जानते हो कि मेरी पसन्द क्या है। मैं किसी सीधी-साधी ऐसी गरीब लड़की से विवाह करना चाहता हूं जो भारतीय नारियों की तरह मेरी देखभाल कर सके।"

"रोजी क्या हिज एक्सिलेन्सी के साथ जायेगी?"

"हां, वह जा रही है, क्योंकि मोटी हथिनी मुझसे कहती थी कि वह मद्रास जाने के बजाय सीधी इंग्लैण्ड चली जायेगी। अरे पूछो मत, वह औरत आज ऐसी बौखलाई हुई है कि अगर उसका बस चले तो अपने पति समेत अपने सभी विरोधियों का सर कलम करवा डाले। हः हः हः।"

गम्भीर भाव से सुनते हुए कुछ क्षणो के अन्तराल के बाद बंसीधर बोला : "औरत, कसाई और जर्राह दोनो ही की छुरी है। एक तरफ कसाई की बनकर मर्द की वह जान लेती है, और दूसरी तरफ जर्राह की छुरी बनकर वह जान बख्शती भी है।"

"मेरी मेरे लिए कसाई की छुरी थी। पता नही जर्राह की छुरी-सी औरत मेरी जिन्दगी में आएगी कि नही।"

पिन्काट की बात से बंसी का ध्यान तुरन्त अपनी न देखी हुई नव यौवना पत्नी की ओर चला गया। नैन्सी के अल्पकालिक साहचर्य ने उसके भीतर नारी काया की भूख जगा दी थी, मगर इसके लिए उसे नैन्सी या उसके जैसी काम सम्बन्धों की मूल्यहीनता वाली कोई नारी का संबध उसे नही चाहिए। उसके सस्कार अब ऐसा क्षणिक और नितान्त सतही सम्बन्ध स्वीकार नही कर सकते। बंसी को अपनी परिणीता चमेली ही चाहिए, जिसकी काल्पनिक महक मे मन रमाते हुए भी उसके मुख से अचानक एक दबी हुई बात फूट पड़ी। बोला : "हिन्दुस्तानी औरत बहुत अच्छी होकर भी जर्राह की छुरी नही होती विलियम, उसकी मूर्खता और रूढ संस्कार हम नयी चेतना वाले युवकों को चिढ़ा देते है। मेरी ही खत्री बिरादरी में अभी एक तमाशा हुआ, एक अच्छे पढ़े-लिखे नवजवान ने अपनी ब्याहता बीबी को छोडकर एक पढ़ी-लिखी ब्राह्मो लड़की से शादी कर ली। दोनों आजादी से बाहर घूमते हैं, साथ-साथ रहते हैं, खुश हैं। लेकिन मैं इस तरह की खुदपरस्त नयी तहजीब को भी नफरत की नजर से देखता हूं।"

"क्यों?"

"जिस पहली औरत को दो बच्चों की मां बनाकर वह छोड़ आया है, आखिर अपनी जिन्दगी कैसे बसर करेगी? मैं यह ग़ैरइन्सानी बेहूदगी बर्दाश्त नही कर सकता

दोस्त। मैं अपनी बीवी को यहां लाकर पढ़ाना चाहता हूं, उसे नयी दुनिया की औरत बनाकर सही माने मे अपनी शरीके-जिन्दगी बनाना चाहता हूं।"

"अच्छा खयाल है। तो फिर ले आओ मिसेज टण्डन को।"

"इसमें दो अड़चनें है, एक तो बीवी को लाने के बाद मेरा खर्च बढ़ जायगा, उसे क्योंकर पूरा करूंगा?"

"बहुत आसान है, मैं तुम्हें अनुवादक की नौकरी दिला सकता हूं।"

"वह मैं फिलहाल नही करना चाहता हूं, मैं पूरे दिल से अपनी मैट्रीकुलेशन की पढाई पूरी करके ही कोई अच्छी नौकरी करूंगा। मगर, फिलहाल आमदनी बढ़ाने की कोई तरकीब मुझे करनी ही चाहिए।"

"तुम संस्कृत की पुरानी किताबों की खोज करते रहो, खर्चे लायक जरूरत से ज्यादह पैसे कमा लोगे।"

"वह भी नही करना चाहता, दोस्त। मैं अपने देश का ज्ञान खजाना विदेशों मे पहुचाकर अपने मुल्क और अपनी कौम को गरीब नही बनाना चाहता। मैंने अपनी खुदगरज़ी की तग नजरी से बहुत पाप कर लिया, अब नही करूंगा।"

"मैं तुम्हारी इस बात से सहमत नही हूं बसी। जिन अमूल्य चिन्तन मणियों को तुम्हारे आज के मूर्ख देश भाई अधपूजा वश पानी और चन्दन चढ़ा-चढाकर नष्ट कर रहे हैं, उन्हें हमारे पश्चिम के विद्वान मेहनत से पढ़ और समझ कर मानवीय सभ्यताओ को एक नयी चेतना ज्योति प्रदान कर रहे हैं। तुम्हारे उपनिषद, जैन और बौद्ध धर्मों के अमूल्य ग्रन्थो की कद्र हम पश्चिम वाले करते है, तुम लोग नही।"

"तुम्हारी बात सही है विलियम, फिर भी न जाने क्यो इधर मेरा मन उस काम से उचट गया है।"

"खैर, मै तुमसे इस बात पर अधिक बहस नही करूंगा, फिर भी मैं समझता हूं कि मैं तुम्हारे लिए तीन चार हजार रुपए की सलाना आमदनी का उपाय करने मे सफल हो जाऊंगा।"

सुनकर बंसी की आखें प्रसन्नता से चमक पड़ी, बोला: "किस तरह?"

"ओह, सरकारी दफ्तरो में काम की कमी नही होती। मैं आने वाले नये लाट साहब से सिफारिश करूंगा कि पुराने पर्शियन रिकर्ड का अनुवाद हो जाना चाहिए। तुम्हारी पुरानी दोस्त नैन्सी अब चूकि मेरी नयी मालकिन होगी इसलिए वह भी मेरे प्रस्ताव पर अपने पति से स्वीकृति लेने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी। तुम बेफिक्र रहो, मैं एक हफ्ते में ही तुम्हें यह काम दिला दूगा।"

बसी ने भावावेश मे विलियम के दोनों हाथ प्यार से पकड़ लिए और कहा: "तुम मेरा बहुत उपकार करोगे विलियम, कलकत्ते मे रहते हुए मैं अपनी बीवी को अपने मन के मुताबिक यकीनन ढाल ले जाऊंगा। जबकि लखनऊ मे यह काम मेरे लिए हिमालय की चढाई जैसा कठिन होता। हिन्दू विश्वासो के मुताबिक तुम मेरे पिछले जनम के भाई हो, मेरा ब्रदर-इन-ला विपिन भी तुम्हारा बहुत ही शुक्रगुजार है।"

"अरे, तुम्हारे तेज़ चालाक मीठे और खूबसूरत ब्रदर-इन-ला ने तो मेरे ब्रदर-इन-ला को इतने ही दिनो मे बिल्कुल शीशे ही मे उतार लिया है। और सर वाल्टर ही नही उसने मेरी बहन जूली को भी अपने फेवर में किसी हद तक कर लिया है।"

सर वाल्टर स्मिथ उन दिनों अपने बगाली बेनियम तरनतारन मित्तर से काफी हद तक असंतुष्ट भी थे। उसकी सम्पत्ति बहुत बढ़ गयी थी। अपने लिलुआ स्थित बाग मे इंग्लैण्ड से आने वाले मिल के दो-तीन डायरेक्टरों की वह शाही खातिर कर चुका था।

यह अकेला बंगाली भारतीय था जिसने आनरेबुल ईस्ट इंडिया कम्पनी के एक प्रभावशाली डायरेक्टर को भी अपने खर्चीले आतिथ्य से बहुत प्रसन्न किया था। इस घमण्ड में तरनतारन बाबू कभी-कभी सर वाल्टर की इच्छाओं की बड़ी लापरवाही से उपेक्षा कर दिया करता था और यही उन्हें बेहद नापसन्द था। बर्मिंघम से नया माल आया था। सर वाल्टर ने तरनतारन से उसका चर्चा भी किया, परन्तु "अच्छा देख, लूगा।" कहने से अधिक बंगाली बाबू ने कोई विशेष रुचि न दिखलाई।

विपिन बोला : "आप मुझे सैम्पुल दीजिये सर, एक बार मैं भी उसे खपाने की कोशिश करके देख लूं।"

सर वाल्टर भी उस दिन ऐसे ताव में थे कि तरनतारन के प्रभाव की उपेक्षा करके विपिन को सैम्पुल दे दिया। दो ही दिनों में कलकत्ते के कपड़ा बाजार में नये माल की धूम मच गयी। तरनतारन को जैसे ही यह सूचना मिली कि उसके द्वारा नियुक्त एजेण्ट ने माल नहीं बेचा है तो क्रोध में भरकर सीधा सर वाल्टर के दफ्तर में पहुंचा। आमतौर से सर वाल्टर तरनतारन बाबू के आने की सूचना पाते ही उसे बुलवा लिया करते थे, पर आज उसे बाहर ही बिठला रखा। प्रतीक्षार्थियों के बैठने के लिए बेंच पड़ी थी उस पर ही उसे बिठलाया गया। कोई विशेष कुर्सी नहीं दी गई। प्रतीक्षा करते करते तरनतारन का क्रोध अटारी पर चढ़ने लगा। उसने दूसरी बार सूचना भेजी कि अगर साहब को टाइम नहीं तो मैं जाऊं और सीधे कम्पनी के डायरेक्टरों से ही पत्र व्यवहार करूं।

तब सर वाल्टर ने उसे बुलाया।

कमरे में पहुंचते ही तरनतारन अपने अंग्रेजी दुभाशिये की मार्फत बाग्ला में गरजा। कहा : "आपने मेरी स्वीकृति के बिना बाहरी आदमी से माल क्यों बिकवाया ?"

सर वाल्टर ने ठंडे स्वर में उत्तर दिया "मैंने आप से दो बार कहा, लेकिन आपने रुचि ही न दिखलाई।"

तरनतारन फिर भड़का, बोला : "आपने मेरे साथ अन्याय किया है।"

"मैंने कोई अन्याय नहीं किया है। नया माल जरूर दूसरे ने ही बाजर में खपाया है, लेकिन कमीशन तो आपको मिलेगा ही, फिर चिन्ता किस बात की।"

"आपने लंकाशायर के बेनियन के ऐजण्ट के लड़के से यह काम लिया है, मैं इंग्लैण्ड में इसकी शिकायत करूंगा।"

"शौक से कीजिए, मैं आपकी धमकियों से डरने वाला नहीं, मिस्टर टरनटारन मिट्टर। और अगर आपने अपने काम में ऐसी ही अरुचि दिखलाई तो मैं भविष्य में भी अपनी इच्छा के ऐजेण्ट से ही माल बिकवाऊंगा।"

"मैंने मिल को लाखों रुपया कमा के दिया है सर स्मिथ, और मैं आपके इस अन्याय को हरगिज सहन न करूंगा। आप मुझे समझते क्या है, मैं इसी समय त्यागपत्र लिख कर दे सकता हूं।"

सर वाल्टर की त्योरियां चढ़ गईं, घंटी बजाई, चपरासी आया तो कहा : "बाबू को एक कागज दो, और एक कलमदान भी लाकर इनके सामने रख दो।"

सुनकर बाबू तरनतारन मित्तर का चेहरा फक्क पड़ गया।

चपरासी कागज, कलमदान ले आया, साहब बोले : 'बाबू अपना त्यागपत्र लिखकर दे दो। लिखो।" जिस रूखेपन से सर वाल्टर ने तरनतारन की धमकी का जवाब दिया, उसे देखते हुए बंगाली बेनियन के स्वाभिमान की रक्षा का एक मात्र उपाय त्यागपत्र लिखना ही था। उसने अपने अंग्रेजी दुभाषिये से कहा : "लिखो मेरा त्यागपत्र और यह भी लिख दो कि मैं स्थानीय जनरल मैनेजर के विरुद्ध मिल के डायरेक्टरों से

शिकायत करने को स्वतन्त्र हूं।"

सर वाल्टर ने दुभाषिये बंगाली युवक से कहा: "कलमदान और कागज मेरे सेक्रेटरी के कमरे में ले जाओ, वहीं जाकर इनका त्यागपत्र लिखो।"

तरनतारन क्रोध में सुनता रहा। तेज और निस्तेज की हवाइयां-सी उसके चेहरे पर उड़ती रही।

त्यागपत्र आ गया। तरनतारन ने बांग्ला भाषा में बड़े ताव से उस पर दस्तखत किये और कागज सर वाल्टर की ओर फेंक-सा दिया।

सर वाल्टर ने घमकी भरा त्यागपत्र पढ़ा, और उस पर तुरंत लिख दिया, आपका त्यागपत्र स्वीकार किया जाता है। मिल के डायरेक्टरों से शिकायत करने के लिए आप स्वतन्त्र हैं। लिखकर कलम रखते हुए सर वाल्टर ने तरनतारन के दुभाषिये से कहा: "अपने मालिक से कह दो, मैंने उनका इस्तीफा मजूर कर लिया है, वे जायें।"

तरनतारन के आने जाने पर आम तौर से सर वाल्टर कुर्सी से उठकर उसका सम्मान करते थे, किन्तु इस समय उससे रुख भी न मिलाया, बैठे रहे। उन्होंने पूरी रिपोर्ट लिखकर उसी दिन विलायत रवाना कर दी और बिना जमानत लिए ही रामचन्द्र विपिनचद्र फर्म के नाम नयी बेनियनशिप भी प्रदान कर दी।

विपिन और लाला रामचन्दर दोनों ही उस शाम बंसी के पास पहुचे। विपिन ने पैर छुए, लालाजी बोले. 'भैया, यहा आकर तो तुमने हम लोगों की तकदीर ही खोल दी। किस तरह से तुम्हारा उपकार मानें। सारी बाजार में इस खबर से तहलका मच गया है। मैंने नन्हा से कह दिया है, हमारी फरम में तुम्हारी चार आने की पत्ती रहेगी।"

"नही नही चाचाजी, इनके काम में मैं किस लिये अपने मुनाफे का हिस्सा मजूर करूं? मैंने कुछ भी नही किया।"

चचिया ससुर से तो वह अधिक जिरह न कर सका पर उनके जाने के बाद विपिन से फिर ना-हां की बात चली।

विपिन बोला: "देखिए जीजाजी, मैं अब मन से करीब-करीब ब्राम्होसमाजी हो गया हूं। आपकी काली-काली, राम-श्याम को भले ही न मानता होऊं, मगर ब्राह्मो ईश्वर में मेरा भरपूर विस्वास हैगा।"

"मान लिया, पर इससे मेरी बात का क्या ताल्लुक है भाई।"

"तालुक यह है कि जो काम देता है वह भी साक्षात ईश्वर होता हैगा। आप न आते, तो मैं मामूली हैसियत के दलाल का बेटा इत्ते बड़े सर वाल्टर से भेंट कर पाने की सोच भी नहीं सकता था। बिना जमानत बेनियनशिप दे दी हमें, यह आपके मित्र पिन्काट साहब के बगैर भला कभी हो सकता था। नहीं-नहीं, हमारी बाबू से भी इस संबध में बातें हो चुकी हैं। आप यहां रहेंगे, पढ़ें-लिखेंगे तो कुछ खर्चा भी होगा कि नहीं। पत्ती तो आपके नाम से जोड़ी ही जायेगी।"

कलकत्ते के सुधारों की हवा में बसीधर भी बहुत कुछ ब्रह्म समाजी किस्म का हो चुका था। फिर भी उसे लगा कि यह सब जगदम्बा श्री चन्द्रिका महरानी की ही कृपा है। भगवती की अगर ऐसी ही दया रही, तो मैं उन्हें सोने का मुकुट चढ़ाऊंगा। कुछ क्षण सोचता रहकर बंसी बोला: "खैर, तुम जोर देते हो तो ठीक है।" फिर विपिन को अलग ले जाकर धीमे स्वर में कहा: "देखो भैये, मुझे तो कहते हुए शर्म आएगी लेकिन तुम चाचा जी से इशारा कर दो कि वह मेरे ससुर जी को तुम्हारी बहन को यहा बिदा कराने के लिए चिट्ठी लिख दें। यहा मेरे माता-पिता तो हैं नही, जो उनसे लिखवाऊं। मैं चाहता हूं कि अगले महीने मैं चला जाऊ और तुम किसी अच्छे महल्ले में एक मकान भी दिलवा

दो। तुम्हारी बहन को लेकर मैं बिरादरी के महल्ले में नही रहूंगा। उसे नये ढग से पढ़ाना लिखाना भी चाहता हू।"

जीजा की इच्छानुसार ही साले ने उचित व्यवस्था करने का वचन दे दिया। विपिन ने इस बात पर भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त की कि जीजा, जीजी को पढ़ा-लिखाकर नई चाल मे ढालेगे। उत्साह से कहा : "वेरी-वेरी गुड बात आपने कही जीजाजी, मैं भी जब कभी वाइफ लाऊंगा तो उसे आप ही की तरह बिरादरी के महल्ले में दूर एजूकेटेड सोसाइटी मे रखूगा। इन पुराने पोगापंथियों से मेरी तबियत अब फिरंट होती जाती हैगी और अगर मेरे ब्रम्हो ईस्वर की किरपा हुई तो आप यकीन मानिए, मैं अपनी वाइफ आइफ को लेकर इंगलैण्ड भी जाऊंगा।"

वसी ने प्रसन्न होकर उसकी पीठ थपथपाई, बोला : "कलकत्ते मे विलायती तहजीबो-तमद्दुन का दरवाजा लगभग एक सदी पहले खुल चुका है। इसलिए तुम यहां तक सोचने का हौसला रख सकते हो। मगर हमारा लखनऊ या नवाबगंज तो अभी कलकत्ते से दो हजार साल पिछडे हुए है। खैर, तुम चाचा जी से चिट्ठी लिखवा दो, वहा से जवाब आ जाय तो मैं नवाबगज, लखनऊ जाने की तारीख तय करू।"

वसीधर के मन मे नई उमगों का मेला-सा लग गया था।

12

कलकत्ते से नवाबगंज जाने का इरादा करते-करते तीन-चार महीने और टल गए। सर्दी का मौसम धीरे-धीरे आ ही पहुंचा। बंगाली बाबू दुलाई से लेकर दुशाले तक में लिपटे नजर आने लगे। कुछ अपने देसवाल अधेड़ और बूढे भी पूस के जाड़े के लिबास मे कलकत्ते का जाड़ा मनाने लगे, लेकिन बंसी को अभी यहां विशेष सर्दी महसूस नही हो रही। इसे लखनऊ की याद आ रही है। अपनी जन्मभूमि, अपना जाना पहचाना शहर, उसकी एक-एक गली कूचा फिर से देखने के लिए उसका जी अब तो अक्सर हुड़क-हुड़क पड़ता है। गोटे की चौड़ी पट्टी की तरह बहती हुई गोमती नदी, चौक, हुसैनाबाद, रामगंज, नवाजगज, ठाकुरगंज, बालागंज, रानी कटरा, चौपटिया, शहर के गुन्जान पश्चिमी क्षेत्र का एक व्यापक चित्र उसके ध्यान मे आ गया। चौक की गलियों में ही सुनी हुई धनाजोरगरम वाले की बानी की एक पंक्ति भी उसकी मानस तरंगों मे बह आई, 'चौपटियां, चौपट भई, बसा सआदतगंज'। लगता है, कभी किसी जमाने में चार पट्टियों का चौपटिया बाजार वडा रौनक भरा रहा होगा। अब सआदत गज की ओर भी बहुत कुछ नया बन गया है। काज़मैन है, हज़रत अब्बास की दरगाह है, और बहुत पुराने जमाने के मसानी देवी और शीतला देवी के मन्दिर भी हैं।···महलों, बंगलों, हाट और हवेलियों, बागीचों, मकबरो और कब्रों से भरा हुआ, गुंबदों और मीनारों से शानदार लगने वाला

अपना शहर, अपने लोग, दोस्त अहबाब, बड़ी तेजी से उसके दिल में गुदगुदी मचाने लगे हैं।

बंगाल के नए गवर्नर की पत्नी और बंसी को यौवन का प्रथम रस बोध कराने वाली नैन्सी ने एक दिन पिन्काट की मार्फत दावतनामा भेज कर बड़े आग्रह से बंसी को बुलवाया और अपने महामहिम पति से भेंट कराते हुए कहा : "मेरी मुसीबत के दिनों में इन्होंने मेरी बड़ी सहायता की थी। यह बड़े ऊंचे खानदान के हैं और फारसी के पंडित हैं, आजकल मिस्टर मोन्टीय से अंग्रेजी पढ़ रहे हैं और उन्हें फारसी का ज्ञान लाभ करा रहे हैं।"

उम्दा क्लैरेट की चुस्कियों के साथ पहले सूफी मत, फिर हिन्दू धर्म और हिन्दू रीति रिवाजों से फिसलती हुई लखनऊ पर बात उतर आई। नैन्सी बोल उठी : "शहर बहुत खूबसूरत है बागों में फूल महकते हैं मगर वहां जिन्दगी की महक उड़ चुकी है। वहां दौलत लूटी और उड़ाई जाती है, कलकत्ते की तरह कमाई नहीं जाती। इस जहालत भरी जिन्दगी में तरक्की कैसे हो सकती है ?"

हुजूर लाट साहब सुरूर में आ गए थे। खाने के लिए बंसी की बांह का सहारा लेकर उठते हुए शाहाना मनोतरंग में कह गए : "डोन्ट वरी, तुम्हारा वह नाकारा और ऐयाश बादशाह अब जल्द ही हटाया जाने वाला है। फिर सब ठीक हो जायगा।"

सुनकर बंसीधर के मन का करारा धक्का लगा, चलते-चलते ठिठक गया, फिर लाट साहब को अपनी पीड़ा की अनुभूति न होने देने के लिए तुरन्त बनावटी उत्साह और खुशामदी लहजे में कहा : "हम लोगों के लिए वह खुशनसीबी का दिन होगा योर एक्सिलेन्सी।"

रोजवुड की सुन्दर नक्काशीदार डाइनिंग टेबिल पर चीनी के बेशकीमत बर्तनों की सजावट देखकर बंसी को न जाने कैसे लखनऊ में सुना हुआ वाजिदअली शाह का एक शेर अचानक याद आ गया

"ऐ परीजादो तुम्हारी आग ने फूका ये घर।
काफ से ताकाफ शुहरा और फसाना हो गया।"

विदा देते समय नैन्सी ने विशेष अपनत्व दिखलाया, और कहा : "तुम्हारी शरीके जिन्दगी को देखने की तमन्ना है। उनके कलकत्ते आने पर एक बार मुझे जरूर खबर करना और मैं पिन्काट के जरिए तुम्हें दो एक अफसरों के नाम परिचय पत्र भी लिखकर भेज दूंगी।"

बंसी बोला : "वह शायद बेकार हो, क्योंकि तुम्हारे पति के ही मुताबिक अंग्रेजी निजाम जल्द ही वहां आने वाला है। फिर भी रेजीडेन्सी के कुछ ऐसे अफसरान जरूर होंगे जो कि नई हुकूमत में भी ऊंचे ओहदों पर ही रहेंगे। उनमें से किसी के लिए तुम लिख सको तो लिख देना। तुम्हारी दिल से दुआएं करता रहूंगा।"

धुवांगाड़ी का दर्शन करने आने वालों की भीड़ तो आती ही थी, इसके अलावा यात्री भी अब बढ़ गए थे। कोयले की खान में काम के इच्छुक मजदूर अधिक थे। कलकत्ते से रानीगंज तक रेल चलने लगी थी। रेल का नया अनुभव लेने के लिए चूंकि उसका दिल ललक रहा था, इसलिए रानीगंज तक उसी पर यात्रा की। धुआंगाड़ी पर चलने का शौक तो अवश्य पूरा हुआ, पर इस आठ घण्टे की यात्रा में कष्ट भी कुछ कम नहीं पाए। लोहे की पटरियों पर रेंगने वाले इन लकड़ी के कमरों में पाखाने पेशाब तक की कोई सुविधा न थी। धुआंगाड़ी चूंकि बैलगाड़ी से थोड़ी ही अधिक तेज चलती थी, इसलिए लोग बाग चलती रेलगाड़ी से उतरकर किनारे के मैदानों में पेशाब कर आते थे, फिर

दौड़कर अपने डिब्बों पर चढ जाते थे। स्टेशनों पर न पीने के पानी का कोई प्रबन्ध था और न खाने का। रानीगंज से डाकगाडी (शिकरम) पर बनारस आने मे दस दिन लगे और लगभग पन्द्रह दिन नवाबगज पहुचने मे। बनारस से नवाबगंज जाने के लिए उसे दो जगह शिकरमे बदलनी पड़ी। शिकरमों की हालत भी बेहद खराब थी। कही पहिए के बम टूट जाते, कही कोचवान किसी घसियारिनसे इश्क लड़ाता हुआ नशे में दो-दो, तीन-तीन घटे के लिए गायब हो जाता। राम-राम करके नवाबगंज पहुचा। काठ के दो बक्सों मे अपने ससुरालियों और घरवालों के लिए वह बड़े-बड़े सामान लाया था। विलायती कपड़े, साड़ियां, विलायती शीशे, चीनी और कांच के बने नए-नए खिलौने।

दामाद के आने से सुगनामल के घर में ही नही, सारे महल्ले मे एक हलचल-सी मच गई थी। साले, सालियां, सलहजें, बच्चे अपने लिए नए-नए उपहार देखकर बड़े प्रसन्न हुए।

जिस दिन पहुचे, उसके दो दिन बाद ही बसंत पचमी थी। ऐसे अवसर पर दामाद के घर मे आ जाने से रौनक छा गई। सास अपने दामाद की बलैंया लेते नही अघाती थी। ससुर ने कहा : "हमारी राय मे होली तक तुम यही रुको। लखनऊ की हालत बहुत खराब है। बादशाह ने अंग्रेजो की शर्तें नही मानी। राजीनामे पर दस्तखत नही किए इसलिए कम्पनी सरकार उन्हें बेइज्जत करने पर तुल गई है। बड़े-बड़े रईसो की मूछें पकड-पकड कर झुका दी इन साले अंग्रेजो ने। बेगमो से छतरमजिल खाली करा लिया गया। उनकी और उनके बच्चों की बडी बेआबरुई हुई और अभी हो ही रही है, भैया। अभी कल सझा के बखत ही हमें खबर मिली है कि बादशाह अगर उस सुलहनामे को नही मानेंगे तो उनसे गद्दी छीन ली जाएगी और उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। यह भी सुना है कि उनकी मा मलकेआलिया विलायत की मल्का टूरिया से फरियाद करने जाएगी। राम जाने क्या होने वाला है। बहरहाल, जब तक ऊट एक करवट नही बैठ जाता भैया, मैं तुम्हें लखनऊ नही जाने दूगा।"

सास ने समधियाने अर्थात बंसीधर के घर की भी कुछ कथा सुनाई। बसीधर के माता-पिता को यह खबर लग चुकी है कि उनका तनकुन बहू को विदा कराने के लिए नवाबगंज आने वाला है। वे बहुत नाराज है।

बसंत पचमी के दिन लाला सुगनामल ने अपने पुरोहित जी, लखनऊ की रुक्को पुरतानी के जेठ के यहा द्विरागगमन की रस्म अदायगी का सारा प्रबन्ध किया और लखनऊ से रुक्को को लाने का प्रबन्ध भी एक नौकर भेजकर कर दिया।

बसत के दिन सौभाग्यवती चमेली, चमेली-सी खिल उठी। बसीधर ने उसे नए सपनों के जादू से बांध दिया था। सुहागरात की रस्म हो जाने के बाद बंसी और उसकी पत्नी फिर सुगनामल के घर ही में आकर रहने लगे। दो-चार दिन इसी सलाह सूत में कटे कि तनकुन बाबू जब अपने घर जाएं तो उनके साथ चमेली भेजी जाय या नहीं। अंत में यही निश्चय हुआ कि चमेली फिलहाल ससुराल नही जाएगी। बंसी उसे सीधे कलकत्ते ही ले जाएगे।

होली आई पर न आई जैसी ही रही। अवध का ताजदार बादशाह अपने [illegible]
की धड़कनों से परेशान, बिस्तर पर पड़ा है। इनकी मां मलिका-ए [illegible] साहबे
शान की खिदमत में गिडगिड़ाहट भरे सदेश भेज रही हैं कि ' [illegible] अली
हो तो उनके छोटे भाई सिकन्दर हश्मत या वली अहद को [illegible]
मगर यों गद्दी छीनकर हमारे खानदान की इज्जत न लो [illegible]
की मां की फरियाद भला कौन सुनेगा। शहर में हर एक [illegible]

खेली जाय ? न कहीं झांझ करतालों की गूज न अरॅ-र-र-र-र-कबीर, न "फागुन में बाबा देवर लागें" जैसे लोक गीतों की गूज। बसन्त मे जगह-जगह मशहूर नाचने गाने वालियों को बुलवाकर रईम लोग अपने घर में बसन्त की महफिलें हर साल कराते थे लेकिन इस बार उनका भी कोई जिक्र न था। हां, घरों मे त्योहार की रस्म अदायगी अवश्य हुई। जीजा के साथ सालों-सलहजो और छोटी साली ने खूब रंग खेला। बंसी चमेली भी रस-रंग बहार में मदमाते हुए। होली आई न आई सी ही बीत गई। लेकिन ससुर अभी दामाद को अपने घर नही जाने दे रहे थे। कहने लगे : "कल बादशाह के ससुर अली नकी खां की सवारी सडक से गुजर रही थी, तो लोगों की भीड ने उन्हें घेर लिया और गद्दार फिरंगियो का कुत्ता वगैरह-वगैरह जाने क्या-क्या बातें कही। घोड़ों पर ढेले बरसाए, सईसों पर पत्थर फेंके, ताकि घोड़े बिदक जाएं, गाड़ी पलट जाय और वो अली नकी खां का कीमा बनाएं। बादशाह ने शहर से अपनी फौजें हटा ली हैं, सिपाहियों से बन्दूकें ले ली हैं, शरीफों का निकलना मुहाल है।"

आज ही तीसरे पहर तक कैसरबाग के महलो की यह खबर नवाबगंज के गली-कूचो तक आ पहुंची थी कि जानेआलम खुद ही गद्दी छोड़कर जा रहे हैं। उनका एक ताजा शेर भी अब तक गली-गली मे पहुंच गया है—

"यही तशवीश शबेरोज है बंगाले मे,
लखनऊ फिर भी दिखाएगा मुकद्दर मेरा।"

अफवाह गर्म थी कि बादशाह अब किसी से नहीं मिल रहे, बेगमों तक से नही। दो दिन बाद खबर आई कि नवाब खास महल पर्दा छोड़कर खुद उनके पास आई। बीबी हुजूर पहली बार ड्योढी पार करके तशरीफ लाई थी। बादशाह ने अपनी माता और खास महल की सलाह मानी और लखनऊ छोडने का पक्का इरादा कर लिया है। साहबे आलीशान को यह खबर भी भिजवा दी है। इसके एक रोज बाद ही रात के समय गली-गली मे यह खबर दौड़ गई कि लखनऊ मे ढाई घड़ी पहले जाने आलम ने अपना महल छोड़ दिया है। बादशाह और उनके भाई जिस गाडी में गए हैं उसके कोच बक्स पर खुद राजा युसुफ अली खां बैठे थे, वशीरुद्दौला और एहसानुद्दौला घोडे पर सवार थे, पीछे नवाब माशूक महल की गाडी थी मलिका-ए-आलिया और बाकी तमाम मुसाहब और रिश्तेदार जो बादशाह के साथ कलकत्ते गए हैं उन सबकी गाडियां थी। बादशाह महलो से बिल्कुल गुपचुप निकले थे फिर भी जाने कैसे खबर फैल गई और लगभग तीन-चार हजार आदमियो की भीड़ पीछे लगी कि "जाने आलम, वतन न छोडिए हम सब आपके साथ हैं।" और बादशाह ने कहा : "कि दरो-दीवार पे हसरत से नजर करते हैं—खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं।" सारा शहर रो रहा है। नवाबगंज और उसके कर्बोजवार से भी सैंकड़ों लोग अपने-अपने घोडो और घोडे गाडियों पर लखनऊ से कानपुर जाने वाली सड़क की तरफ दौड़ पड़े। सारी रात नवाबगंज में जगार रही, घर-घर यही चर्चे हो रहे थे।

इसके दूसरे ही दिन बंसीधर ने ज़िद की, ससुर से कहा : "मुझे एक बार घर हो आने की इजाजत दीजिए। मैं अब यहां एक मिनट भी नहीं रुक सकता।"

रुक्को पुरतानी जो सुगनामल के बुलावे पर यहां आ चुकी थी। अब मैंया के साथ लखनऊ जाने के लिए उतावली हो उठी। तनकुन मैया जाते वक्त अंग्रेजी पोशाक पहनने लगे तो ससुर ने मना किया, कहा : "आजकल वहां बच्चा-बच्चा भ्रगारा बना भया हैगा। बादशा-ससुरा कैसा भी रहा होय पर है तो अपना हिन्दुस्तानी भाई।"

रुक्को पुरतानी के साथ जब शिकरम पर बैठकर बंसी लखनऊ चला तो देश की

राजनीति के बजाय घरेलू राजनीति की चर्चा का ही महत्व रहा। चाची बतला रही थी : "जब कलकत्ते से तुमरी चिट्ठी आई तो तुमरे ससुर ने अपना नौकर भेज कर हमे लखनऊ से बुलवाया रहा। हम आए तो कहने लगे कि जिजिया, ऐसे-ऐसे कलकत्ते से चिट्ठी आई हैगी। बोलौ, क्या करें ? दमाद की इच्छा का मान रखें कि समधियन की आबरू सम्भालें। हम कहा, भाई हम तो अपने लडके को जानत हैगे। जैसा उसका नाम है बंसीधर, वैसेई उसका रंग रूप, वैसेई उसका सुभाव-पर चाचा-चाची (सास-ससुर) दोनों ही ने हमसे कहा कि तुम हमारे समधियाने मे जाके हमारी बेटी की सास को सब कुछ बतलाय आओ। हम नही गए रहे भैया, झूठ काहे बोलें। हमने तो नन्दो से कहलाय दिया, तुम्ही महतारी तो सिरी के किसुन कुछ नाही बोली, पर तुमरे बाबू तो भैया नौ-नौ बास उछलें रहैं। कहैं कि सुगनामल ने हमरे लरके से ही हम लोगन की नाकें कटवाय दी। बाप महतारी जानौ मर गए रहैं कि उनकी अम्मा के बिना आये गौना करावें खातिर चिट्ठी लिख दिहिन।"

बंसीधर घर पहुंचने पर इन समस्याओं के निराकरण करने के उपाय सोचने लगा।

रुक्को पुरतानी की बातें और आगे बढ़ी। तनकुन की बांह को हथेली से थपका कर कहा . "तुम्हें मन्नो बीबी का ध्यान तो जरूरै हुइये भैये।"

"हां-हां, क्या हुआ उन्हें ?"

"अरे न पूछो बेटा, उनकी और उनकी बिटिया के तो करम फूट गए। का कहैं ! तुमने तो मना किया कि हमरा ब्याह हुई गया हम अब इनकी बिटिया से नही करेंगे। और जो लडका अब उन्हें मिला है, सो तुम्हें क्या बतावें, गोरी मेम घर मां लाय के रखिस हैगा। सराब-कवाब-मुर्गा-मुर्गी···हाय राम हिन्दू का घर और ऐसा म्लेच्छपना हुअन होत हैगा कि मन्नो बीबी विचारी तो हवेली छोड के अपने ठाकुरद्वारे मे आय बसी हैंगी और धारौ-धार रोवत हैंगी बिचारी। तुमरे आवने की खबर सुनी तो हमसे बोलीं कि पुरतानी जी, तनकुन बेटा को एक बेर हमरे घर जरूर लैओ, लडका क्या है हमरी बिरादरी का हीरा हैगा। हम कहा कि भई तुमरी किस्मतै खराब है कोई क्या कहै ! बाकी बेटे तुम एक बार हमरे साथ उनके हियन जरूल-जरूल चलियो, तुमका लावैं खातिर उई हमैं भगवान जी की किसम धरवाय दिहिन हैं। बेटा, हमार धरम रखियो।"

घर परिवार की इन सब चिन्ताओं के साथ-साथ शिकरम की यात्रा ने भी उसे हलाकान कर दिया। रास्ते मे एक जगह एक पहिए का ब म टूट गया, सवारियों मे बमचख मच गई। कोचवान और चौकीदार एक-दूसरे पर गर्माने लगे। कोचवान कहे, तुम गांव जाकर लुहार ढूढकर लाओ, और चौकीदार कहे कि मैं क्यों जाऊं। कोचवान रंगीला था, थैले में दबी महुए की बोतल निकाली। एक घास वाली जा रही थी, उससे घास का सौदा पटाकर उसका बोझ घोडों के आगे डाला, और तन का सौदा पटाकर बोतल लेकर उसके साथ जंगल मे निकल गया। सवारियों ने पैसे देकर चौकीदार से खुशामद की, वह लुहार पकड के लाया। टूटे बम पर लोहे की पत्तियां ठोक कर किसी तरह काम लायक बनाया गया, फिर नशे में सोते हुए कोचवान की ढुढ़ाई हुई। वह जागा, देखा कि उसके इजार-बंद मे बंधे दस रुपए और बची खुची शराब की बोतल लेकर वह घसियारिन भाग चुकी थी। कोचवान घसियारिन और उसकी सातपुश्त को भद्दी से भद्दी गालियां देता हुआ किसी तरह गाड़ी पर सवार हुआ। कुल जमा सत्रह-अठारह मील की यात्रा मे सवेरे के चले रात के नौ बजे लखनऊ पहुंचे। वहां से इक्का लेकर चौक आए। रुक्को पुरतानी अपने घर गई, तनकुन अपने घर आए।

लाला मुसद्दीमल के घर में मानों रात ही में सूरज उग आया। चाची के कमरे में आले का दिया फिर से जला। बड़ी भावज अपने घर से पतीलसोच (फतीलसोज़-दीवट) उठा लाईं। छोटे भाई भावज अपने कमरे से दो मोमबत्तियां जलाकर ले आए। सब कपड़े बटे, बौआ के समधियाने से आई हुई फल मिठाई सबको बाटी। तनकुन की खातिर पूरी तरकारी बनाने के लिए तीसरी भावज गुमानी की बौटी ने कढ़ाई चढ़ाई। पहले मोहन भोग बनाया, फिर आलू, मटर, गोभी की सब्जी बनी। मंझली भौजाई ने आटा गूधा। तब तक बौआ के कमरे में सब भाई मिलकर कलकत्ते के हाल-चाल पूछने और यहां के बतलाने लगे।

तनकुन ने बड़ी शान और गंभीरता के साथ कहा : "बादशाह के हटाए जाने की खबर तो मुझे डेढ महीने पहले ही मालूम हो गई थी। खुद बगाल के छोटे लाट साहब ने ही मुझे यह बात बतलाई थी। मैं तो कहता हूं, एक तरह से अच्छा ही हुआ। अब यह देखो कि बगाल मे तो लगभग सौ वर्षों से अंग्रेजी राज्य चल रहा है। क्या अच्छा इंतजाम है वहां का। चलती सडक पर आपकी अशर्फी गिर जाय तो ढूढते हुए उसे आप ही उठाएगे, दूसरा कोई हाथ भी नही लगाएगा, यह इंतजाम है।"

मुसद्दीमल बोले "तुम्हें अगर बहू को कलकत्ते बुलाना ही था तो हमें चिट्ठी लिखते। हम क्या मर गए थे जो आप चिट्ठी लिखके गौना मागा।"

"बात तो असल मे दूसरी तरह से देखिए बाबू, मेरी दोस्ती की वजह से रामचन्दर खन्ना जी के लडके की तकदीर जाग उठी, उसे बरमिंघम के कपड़ो की बेनियनशिप मिल गई। उनकी अपने नकछेदी ताऊ से भी रिश्तेदारी है और क्या नाम कि, नवाबगंज ··"

"अरे, हमैं सबकी खबर हैगी। ये बाल साले कोई धूप में सफेद नही किए हैंगे।"

"अरे, पर मेरी भी तो कुछ सुनिए बाबू। चिट्ठी न मैंने लिखी और न लिखवाई, यह सब खन्नाजी और उनकी घरवाली ने किया है।"

बौआ बोली : "ऊ लोग कौन होत हैंगे, हमरे घर के कैंदे कानून में दखल देवै वाले।"

"बौआ, पहले बात समझो। बात ये है ··जा हां, तो जब बेनियनशिप मिली तो रामचन्दर चाचा हमसे बोले कि बेटा इस कारबार मे हम तुम्हारी चार आने की पत्ती भी रख रहे हैं, और नवाबगंज भी चिट्ठी लिख देते हैं। उन्होंने मेरे लिए एक अच्छा-सा घर ले दिया है। सब इतजाम कर दिया है, और मुझे तो आप समझिए अभी चार-पाच बरस और कलकत्ते मे रहना है। यहां आऊंगा तो किसी बड़े ओहदे पर आऊंगा। चादको मैया की किरपा से मेरी बडे-बडे अंग्रेजो से जान-पहचान है।"

"बस अंग्रेजो तलक ही रहिएगा। मेमो सालियों को अपने से सौ हाथ दूर रखिएगा, चेताए देता हूं। वह मन्नो बीबी का दामाद ससरा पराए धन पे लछमीनाराएन बोल रहा हैगा। एक किरटी मेम घर मे लाय के रक्खिस हैगा।"

"मैं सब सुन चुका हू बाबू, आप बेफिक्र रहिए। सिरी चांदको महरानी की किरपा से मैं आपके लिए जस ही लाऊंगा अपजस नही।"

सबेरे उठते ही बंसी ने निश्चय किया कि अमावस का फेरा जब लगेगा तब लगेगा पर उसे आज ही चादकोजी के दर्शन करने के लिए अवश्य जाना है। इसी बहाने हैदरीखां और रसूलबादी से भी भेंट हो जाएगी, शहर के ताजे हाल-चाल मिलेंगे। जल्दी से निपट-नहाकर एक गिलास दूध पिया और हैदरीखा के अस्तबल की ओर चल दिया।

तखत पर एक युवक बैठा था जिसकी शक्ल हैदरीखां से मिलती-जुलती थी।

आदाब करके बंसी ने कहा : "मेरा ख्याल है कि आप हैदरीखां चच्चा के नूर-ए-नजर हैं।"

"जी हां, फरमाइए।"

"चच्चा कहीं तशरीफ ले गए हैं ?"

"जी हां, कम्पू गए हैं।"

"उनकी वापसी कब तक होगी ?"

"कुछ बतला के नहीं गए हैं साहब।"

"और सराय की मालिकन र—।"

"मैं नहीं जानता, सराय में पूछ लीजिए।"

इन रूखे जवाबों से बंसीधर कुछ खिन्न हुआ और सराय की ओर बढ़ गया। अज्जो सामने बरामदे में ही अब्दुल गनी बावर्ची के साथ बतियाती हुई मिल गई। बंसी को देखकर बड़े भाव से हंसकर कहा : "ओ हो, तनकुन लाला हैं! जहेनसीब, जो हुजूर की यह बांकी छब फिर से देखने को तो मिली, क्या आप कहीं बाहर तशरीफ ले गए थे।"

"जी हां, आजकल कलकत्ते में रहता हूं। यहां महज दस-पन्द्रह रोज के लिए आया हूं।"

"आइए, आइए, ऊपर चलिए। खाला हुसैनाबाद अपनी बहन के यहां गई हैं, आती ही होंगी। पिछले दिनों आप को उन्होंने बहुत-बहुत याद किया था।"

तनकुन ने कहा : "ये बतलाइए, हैदरीखां के यहां तखत पर ये कौन जवान बैठे हैं ?"

"उनका लड़का है हुजूर। वो तो जिस दिन बादशाह सलामत की सवारी कम्पू तशरीफ ले गई उससे दो रोज पहले ही से वे जा चुके थे।"

"हुस्सो यानी कि चुलबुली बेगम साहिबा उनके साथ ही गई हैं कि नहीं ?"

दोनों जीने चढ़कर अंदर आए। अज्जो ने सामने वाला दरवाजा खोल दिया। विलायती कोच, विलायती आईने और झाड़ फानूस, दीवारों पर चीनी फूलदार तश्तरियों की सजावट और कमरे की दीवार पर एक शोख हसीना की विलायती क़लम की कदेआदम तस्वीर थी।

अज्जो हथेलियां रगड़ते हुए बोली : "आज तो कड़ी सर्दी है, आपकी क्या खातिर करूं हुजूर ?"

"जी, अस्ल में चांदकोजी के दर्शन करने के लिए जाना चाहता हूं। आने जाने के लिए मुझे एक घोड़ा चाहिए।"

"बन्ने मियां ने आपको मना कर दिया हैगा। बड़े अक्खड़ मिजाज का लड़का हैगा। मैं अभी चलकर आपको घोड़ा दिवाती हूं, हालांकि अब इनके यहां सवारी को घोड़े देना बंद कर दिया है। ये भी अब शिकरमें ही चलाते हैं। आपके लिए गर्मागरम कहवा···।"

"जी, उसकी तकलीफ न कीजिए, दर्शन किए बगैर मैं कुछ खाऊं-पिऊंगा नहीं।"

अज्जो बंसी के साथ फिर हैदरीखां के तखत पर पहुंची और कहा : "बन्ने मियां, इनको पहचानते नहीं हैं आप। मालिक के बड़े पुराने गाहक हैंगे, इन्हें चांदकोजी जाना है सवारी के लिए घोड़ा···"

"कोई खाली नहीं हैं, सब गाड़ियों में जुते हैं।"

बंसी बोला : "मेरे ख्याल में आपके यहां की ललकौनियां तो किसी गाड़ी में

जुतती नही होगी।"

"अच्छा-अच्छा, तो अब जाके समझा। आप ही तो उसे हर अमावस को कही ले जाते थे। अब्बा बतलाया करते थे। ठीक है, ले जाइए। लेकिन अब भाव बढ गए हैं, हुजूर। दिन-भर के लिए एक रुपया नजर करना होगा।"

"अरे भाई जान, पहले तो अधेली मे काम निपटता था।"

"वो जमाने गए लाला जी, जब से बादशाहत का भाव गिरा तब से हर चीज के दाम बढ गए हैं। ये साली अंग्रेज कौम (भद्दी गाली) जिन्दगी मुहाल कर दी है, लखनऊ वालों की। ऐसा डर बिठलाया है अवाम के दिल में सालों ने कि हर आम और खास सोचता है कि पैसा बटोर के रख लो, आड़े वक्त में वही काम आएगा।"

"मैंने सुना है कि फौज ने बड़ा घेरा डाल रखा है आजकल।"

अज्जो बोल पड़ी : "अरे लाला, इसकी तो कुछ न पूछो। चौपड अस्तबल गोरी फौज से भरी पडी है, इधर मूडीकाटे आसफी दौलतखाने में कब्जा जमाए बैठे हैं। शीशमहल को अस्मतोआबरू की कत्लगाह बना रखा हैगा दईमारों ने। उस पार मंडियाव तक गोरे ही गोरे हैं।"

बंसीधर ज्यों-ज्यों अपने नगर को नई स्थितियों से परिचित होता जाता था, वैसे-ही-वैसे उसकी चिन्ता भी गहराती जाती थी।

ललकौनी सामने आ गई, बंसी उसे देखकर खुश हुआ और वह भी उसकी थप-थपाहट पहचान कर जोर से हिनहिनाई और अगले दो पैर उठाकर खड़ी हो गई, फिर गर्दन झुकाकर उसकी छाती से थूथनी रगड़ी। बंसी ने खुश होकर उसे चूम लिया। फिर थपथपाकर अज्जो से कहा : "ये जानवर भी कितना प्यार देते हैं इन्सान को!"

"जानवर ही देते हैं ला, इन्सान तो अब इन्सान को खाने दौड़ता है। मैं लाला से कह रखूंगी, वह आपका इन्तजार करेंगी।"

सर्दी करारी पड़ रही थी, मगर धूप भी आज तीन-चार रोज की बदली बूंदी के बाद अच्छी निकली थी। बख्शी जी के ताल के पास पुरानी जान पहचान के हलवाई की दूकान थी। तनकुन को देखते ही खुश हुआ, बोला : "आज बहुत दिनो बाद दिखाई पडे लाला, क्या अब दर्शन करने नही आते हो?"

"आजकल कलकत्ते मे रहता हूं भइया। एक पखवारे भर के लिए आया हूं। तो सोचा दर्शन कर आऊं। लौट के आऊंगा तो तुम्हारे यहां ही खाऊंगा।"

"आप पुराने गाहक हैं, थोड़ा-सा आटा माढ़ के रखे लेता हूं। आजकल चार रोज से मेरी दूकान बिलकुल ठप्प पड़ी है। सवेरे थाल-दो-थाल जलेबी विक जाया करती थी, ससरी आज तो विस्वास मानो लाला इक्को गाहक नही आया, जाने क्या बात है।"

"असल मे मडियांव छावनी से आई हुई फौजों ने इस पार सड़क घेर रखी है, मुझे भी थोडा घूम के ही आना पड़ा। उन्ही के डर से। फिर एक सुबीता यह भी था कि मैं उनकी जबान जानता हूं। खैर, चिन्ता न करो दोस्त, ये तुम्हारी थाल भर की जितनी भी जलेबियां पांच-छ. सेर हैं, तौल कर रख लो और पांच छ. सेर दूध मे इन्हें भिगोकर रख दो, आते ही अपनी घोड़ी को खिलाऊंगा। लो, पैसे मुझसे अभी नगद ले लो।"

चन्द्रिकाजी के दर्शन करके और अपनी चहेती ललकौनियां को दूध जलेबियां खिलाकर बंसीधर जब हैदरीखां के अस्तबल में लौटे, तो तखत पर रुई का पाजामा और चोगा पहने हैदरीखा हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे।

"अरे आओ, आओ बरखुर्दार, तुम्हें तो देखने के लिए आखें तरस रही थी तुम्हारी कसम।" फिर अपने लड़के की तरफ देखकर कहा : "बन्ने, गल्ले मे से रुपया निकाल के

इन्हें लौटा दे।"

"अरे वाह चाचा, अभी बैठने को तो कहा नहीं आपने और आते ही रुपये का हिसाब-किताब करने लगे।"

"नहीं-नहीं तनकुन बेटे, दरअसल बात ये है कि इसको कुछ अदब-कायदा समझना चाहिए कि नहीं। अरे जब अज्जो ने खुद बतलाया कि तुम कौन हो, तब इसे रुपया नहीं लेना चाहिए था।"

बन्ने ने गल्ले से चांदी का एक रुपया निकाल कर तनकुन की हथेली पर रखा, जिसे उसने तुरन्त ही बन्ने के हाथ में लौटाते हुए हैदरीखां से कहा : "अपने छोटे भाई के हाथ मे रख रहा हूं, आप मना न कीजिएगा चच्चा। आज मैंने अपनी ललकौनी को भी बख्शी जी के ताल पर पसेरी भर दूध जलेबी खिलाई। बड़ी प्यारी घोड़ी है चच्चा। मुझे देखते ही ऐसी खिली कि आप से क्या कहूं!"

"आओ सराय चलें बरखुर्दार। हस्सो भी आ गई है मेरे साथ। चलो, उससे तुम्हारी मुलाकात कराऊं।"

पहली मंजिल के कोने वाले कमरे के दरवाजे पर दो मोटी-मोटी हब्शिनें, फौजी पोशाक पहने, भाले लिए हुई खड़ी थी। हैदरी खां को देखकर दोनों ने अपने-अपने भाले बाएं हाथ में लेकर दाहिने हाथों से झुककर सलाम किया। हैदरीखां ने पूछा : "बेगम साहिबा क्या कर रही हैं इस वक्त?"

"जी, बड़ी हुजूर के साथ गुफ्तगू कर रही हैं।"

"बड़ी हुजूर से कहो कि, कलकत्ते से तनकुन भैया तशरीफ लाए हैं।"

हैदरीखां तनकुन को साथ लेकर भीतर मिलने वाले कमरे मे चले गए। झाड-फानूस और बड़े-बड़े आईनों से जगमगाते हुए कमरे में मखमली विलायती कोच पर बंसी को बिठलाया। लक्खी सराय का यह कमरा सजावट में किसी शाही महल के कमरों से कम न था। रसूलन बांदी जल्दी ही उस कमरे में आ गई। बंसीधर ने उठकर सलाम किया।

"खुश रहो, उमर हजारी हो। ऐहै, मैं बलैया लू। आंखें तरस गई थी तुम्हें देखने के लिए। कब आए कलकत्ते से?"

"जी, कल आया था यहां, आज सुबह ही आपको और चच्चा को सलाम करने के लिए हाजिर हुआ। मगर पता चला कि चच्चा जनाब बेगम साहिबा के साथ कानपुर तशरीफ ले गए हैं और आप भी कहीं बाहर तशरीफ ले गई थी।"

"हां भैया, आफत मे पड़ गई हूं मैं तो। और कहो, वह माल्कम साहब की मेम जिसे लेकर तुम कलकत्ते गए थे?"

"जी, वह तो अब बंगाल के छोटे लाट बहादुर की बीबी हो गई है।"

तखत पर एक घुटना उठाए, दो उंगली से अपनी ठोढ़ी छूकर, आंखें चमकाती हुई रसूलन बोली : "ऐ है, इतना बड़ा शिकार फांस लिया। वह खसमखानी रण्डी है बड़ी खूबसूरत। निगोड़ी दो-दो आशिकों की लाशों पर पांव रखके लाटिनी बनी है, खुदा खैर करे!"

बात का रंग बदलते हुए बंसी ने हैदरीखां की ओर मुंह करके पूछा : "अपनी चुल-बुली बेगम साहिबा को जानेआलम अपने साथ कलकत्ते नहीं ले जाएंगे?"

हैदरीखां ठठाकर हंस पड़े, और अपनी तहमद का एक पर्त हटाकर अपनी जांघ की दाद जोर-जोर से खुजलाने लगे। खुजली की बावली तलब मिटाते-मिटाते उनके बात कहने का ढंग भी बदल गया। खुजलाने के बाद दाद पर पोला हाथ फेरते हुए हैदरीखां ने

कहा : "अरे बरखुरदार, अब जो बचा-खुचा है वह इंग्लिशमैन नोच-नोच के खाएंगे। इन नाचने-गाने वालियों से हजार गुना बड़े लुटेरों के चंगुल में फंस गए हैं जानेआलम। वहां, कानपुर में, एक अंग्रेज ब्योपारी हैगा बरेण्डन साहब। उसने सत्तर हजार रुपए ले के कानपुर से कलकत्ते तक आला हजरत और उनकी बेगमात के जाने का इन्तजाम किया है। एक दूसरे अंग्रेज बड़े साहब गवन्डर जन्डैल डलौजी साहब के दरबार में अपना वकील बना के भेजा है। वह मां का पिल्ला लन्दन के दरबारे इंग्लिशिया में भी शाहे अवध का वकील बनकर जाएगा। अब तक उसकी भी जेब में कोई चालीस-पचास हजार रुपया तो पहुंच ही गया होगा।"

रसूल बांदी बीच में ही बोल उठी : "दरअसल तनकुन भैया, मेरी हस्सो कलकत्ते जाने के इरादे से कानपुर नहीं गई थी, वह तो खाली···

इस इरादे से गई थी कि रो-गाकर बादशाह की छाती से लिपटकर उनकी आखिरी निशानी के तौर पर एक-आध बेशकीमत अंगूठी या गले का हार और झटक ले।" हैदरीखां ने कहा।

रुई का पूरी बांहों का फूलदार सलूका हाथ उठा और झटकार कर रसूलन बोली : —ऐ हटो, तुम तो बात को हीरे से कांच बनाकर पेश कर रहे हो। मेरी हस्सो ऐसी नहीं हैगी, आखिर इत्ते दिनों जाने आलम का साथ रहा, दिल-से-दिल मिले रहे तो क्या उनसे आखिरी बार मिलने भी न जाती ?"

इस डर से कि चच्चा और चच्ची की जवानी बटेरें आपस में कहीं लड़ न जायें, बसीधर पूछ बैठा. "बेगम साहिबा कैसरबाग के महलों से कब तशरीफ ले आयी थीं ?"

"अरे भैया, कोई महीने-डेढ़ महीने पहले ही वहां से चली आयी थीं, मेरी हस्सो। क्या करतीं आखिर ? अंग्रेजों ने शाही खजाने की तलाश में महल की बेगमात का खाना, पीना, सोना तलक दूभर कर दिया। अरे छतरमंजिल खाली कराते बखत शाही बेगमात से जिस बेइज्जती से पेश आये हैंगे यह लोग कि मैं तुमसे क्या बतलाऊं (धीमी आवाज में) तुम तो जानते ही हो भैया, परसाल तुम्हीं तो इन्दलचन्द जौहरी के बेटे से हमारी मुलाकात करवा गये थे। हमारी हस्सो को जाने आलम ने जो कुछ खुशी से दिया था, उसे तो हम पहले ही बाहर निकाल लाये थे, उसके महलों में बस मामूली जेवरात और सामान थे। मेरी हस्सो तलाशी लेने वाले अंग्रेज फौजदार से बेपर्दा होकर ऐसी लड़ी-ऐसी लड़ी कि वो भी बस उसकी सूरत ही देखता रह गया। उसी ताप-बाजी में वह सीधी जाने आलम की खिदमत में पहुंची और कहा कि हुजूर मुझे महलों से बाहर रहने की इजाजत दीजिए, इन गोरों का जुल्म तो अब बर्दाश्त नहीं होता। बादशाह बोले, कि तुम्हारी बातें सुनकर जी चाहता है कि अपनी इन बीवियों को बाहर रहने की इजाजत देना ही बेहतर होगा। यह लोग खानदाने मन्सूरिया के ताजदार, इस बेबस अख्तर की तौहीन करने पर तुले हुए हैं। इसके बाद मेरी हस्सो तो राजी खुशी यहां आके बस गयी और उसकी बदौलत ही बादशाह ने बहुतों को महलों से बाहर रहने की इजाजत दे दी, बहुतों को तलाक दे दिया। अरे बड़े बुरे दिन बिताये हैं, हम लोगों ने, भैया।"

हैदरीखां ने कहा : "और बाहर आ के भी उन दिनों भला कोई महफूज रह सकता था भैया। बादशाह ने अपनी गद्दी बचाने के लिए अपनी तमाम फौजें तोड़ दीं। फौजियों के बेकार हो जाने से शहर में लूटपाट बेहद बढ़ गयी। यह तो खुदा हमारे रिखबदास भैया की उम्र दराज हो, सैकड़ों हजारों बरस तक उनकी जवानी कायम रहे, पांच सौ लठैत उन्होंने इस लक्खीसराय की निगरानी के लिए तैनात कर दिये थे, तो हमारी हस्सो और ये सराय सब कुछ बच गया।"

रसूलन अपनी तरफ पानदान सरकाते हुए बोल उठी : "ए भैया, अब घर तो तुम जा ही रहे हो, रिखब्रदास से कहना कि हस्सो कानपुर से लौट आयी है और आपको याद करती है।"

रसूलन और हैदरीखां से अंग्रेजों के द्वारा शाही महलों और रईसों के घरों की लूट खसोट का हाल सुनकर बंसीधर को बंगाल के उस गांव की याद आ गयी जहां कालीपद बान्डुज्ये की बेबस बहन विन्दुवाला ने गोरे से कहा था कि साहब तुम तो मेरे पिता हो और साहब ने कहा था, मैं तुम्हारा नही तुम्हारे बच्चे का पिता बनूंगा। कमजोर और बुद्धिहीन जनो की स्त्रियों पर ये अंग्रेज जाति कैसे बर्बर व्यवहार करती है! लेकिन एक ओर ऐसे अंग्रेज हैं तो दूसरी ओर पिन्काट जैसे विद्या-रसिक मानव प्रेमी, न्यायप्रिय और सरल हृदय लोग भी है। लगता है कि दोष किसी जाति विशेष का नही वरन सत्ता और सम्पत्ति के लोभ का है। फिर खयाल आया, क्या इंग्लैण्ड में भी अफसर और धनी वर्ग अपने देशवासियों से ऐसा ही बर्बर व्यवहार करता होगा। शायद वहां नही कर सकता, वहां की जनता स्वतंत्र है। स्वतंत्र व्यक्ति का स्वाभिमान भी स्वस्थ और अधिक सतेज होता है। सत्ता के राजमुकुट पहने हुए संगठित डाकुओं से हमारा एक बादशाह त्रस्त और विवश होकर अपनी गद्दी छोड़कर भाग गया।'''एक ही क्या हिन्दुस्तान भर के तमाम राजे महराजे और शाह ही नही बल्कि शाहंशाह तक सब अंग्रेजों की चालबाजियों से विवश हैं, यह एक नये ढंग की राजनीति पुराने सियासतदानों को उठा-उठा कर बार-बार पछाड़ती और उन्हें पस्तहिम्मत करती चली जाती है। यह लोग हमारे लोगों में फूट डालकर राज हथियाते हैं। लेकिन हम फूटते क्यों हैं, संगठित होना क्यों नही जानते?

बंसीधर को लगा कि अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए अंग्रेजी पढ़ना बहुत ही आवश्यक है। लेकिन अंग्रेजी पढकर क्या बंसीधर उनसे लोहा लेगा? शायद नही, वह अपनी जीविका कमायेगा। वह अंग्रेजो के किसी दफ्तर में नौकरी भी कर सकता है और अध्यापक भी हो सकता है। सच पूछो तो वह अध्यापक ही होना चाहता है, इस तरह वह एक तीर से दो शिकार करेगा। सम्मानपूर्वक जीविका भी कमायेगा, साथ ही बहुत से नवयुवकों को अंग्रेजी पढ़ाकर उनके सोये हुए संस्कारों को जगायेगा, उनमें स्वतंत्रता की चेतना भरेगा। जहां हमारे शाह, बादशाह अपनी पुरानी और जड़ बुद्धि से काम लेकर हारते हैं, वही मेरे द्वारा भविष्य में पढ़ाई जाने वाली नयी पीढ़ी नवचेतना का संचार करेगी। ख्याली आदर्शों और बनावटी उमंगों में झूलता हुआ वह अपनी गली के मुहाने पर आ गया।

"ताता, हम भी मलाई मत्थन थेयें।"

"मरो, तुम आय पहुंची हियन भी।"

"नही नहीं, हम जलूल थैहे, तुमने तल्लू तो थिलाया, मुनौदा तो थिलाया, हम भी थायेंगे।"

"ई बताओ तुम मरोगी कब?"

"पहले मत्यन थाय लें।"

"चुन्नू देव भाई, दमड़ी का मक्खन इसके घोंघे में भी झोको। कहो भई तनकुन किधर से आय रहे हो।"

"कुछ नही, लखनऊ आया हूं तो चांदकोजी के दर्शन करने गया था।"

"अब लखनऊ में रह क्या गया है। हमारे बादशाह को तो पकड़ ले गये तुम्हारे अंग्रेज लोग।"

"अरे अभी न जाने कितनों को पकड़ेंगे बड़े भैया। हुकूमत करना अंग्रेज ही जानते हैं।"

' बड़े हिमायती हो फिरंगियों के; लेकिन बताये देते हैं तनकुन, अबकी इन लाल मुह वालों के धुरें उड़ाय दिये जायेंगे। ताल्लुकेदारों में आजकल बड़ी हलचल है। कल रामनगर घमेड़ी के राजा के हियन से साढ़े चार मन चांदी के बरतन हमरी दुकान पर बिक्री खातिर आय रहे। बतावत रहा कि जैसी इन्होंने हमरी राजे, ताल्लुकेदारन की गढ़िया तुड़वायी हैंगी वैसी ही इनकी बेलीगारद रिजडेंसी धूल में न मिलवायी तो कहना।"

"हम हिन्दुस्तानी आमतौर से बड़े डपोरशंख होते हैं, बड़े भैया। हां, अगर सब राजे-रजवाड़े हिन्दु मुसलमान एक होके लड़ें तो शायद जी जायं। फिर भी इनके विलायती हथियारों के आगे हमारी तोपें, बन्दूकें साली मिट्टी साबित होती हैं।"

"वह कुछ भी कहो, इन्होंने हमारे बादशाह को पकड़ा है तो अबकी गजब हो के रहेगा।"

घर की ओर बढ़ते हुए बंसी ने सोचा शायद कुछ गजब हो भी सकता है। इस बार शहर का वातावरण कुछ और ही तरह का लग रहा है।

ऊपर आते ही बौआ ने कहा : "तनकुन, तुमरी खातिर मन्नो बीबी के दामाद के हियन से तीन-चार बुलौए आय चुके हैंगे।"

बंसी मन्नो बीबी को जानता तो था, मगर कुछ बनावटी ढंग से पूछा : "कौन मन्नो बीबी ?"

"अरे वही,जो अपनी बिटिया ब्याहन खातिर तुम्हे चाहत रही।"

"लेकिन अब तो वो हमको दूसरा दामाद नहीं बना सकेंगी।"

"अरे, तुम तो मजाक करत होगे। उन्ने नहीं उनके दामाद ने बुलाया हैगा तुम्हें। वही जौन मेम रक्खिस हैगा।"

"मगर मेरी तो उनसे कभी कोई मुलाकात नही हुई, कोई जान पहचान भी नहीं, फिर क्यों बुलाया है ?"

"अब ई तो हम नाही जानत बेटा, बाकी जब तीन बुलौए आए हैं तो उनके हियां चले जाओ।"

बंसी नाक चढ़ाकर बोला : "ऊंह, कौन जाय। इस बार यहां सर्दी अच्छी पड़ी है, बौआ। लेओ, ये मेवा लाए हैं हम, बांट दो सबको। मैं बड़ी भाभी के पास जा रहा हूं।"

बंसी ने ऊपर अपनी भाभी के पास जाने के लिए ऊपर के जीने की तरफ कदम बढ़ाया ही था कि नीचे के खन में दहलीज से "लाला मुसद्दीमल जी साहेब" की पुकार हुई।

"अरे, कौन हैगा ?"

"हम बाबू तिल्लोकी नाथ जी के यहां से आये हैंगे, लाला तनकुनमल जी साहब आय गये ?"

अपने नाम के साथ मल जुड़ना तनकुन को तनिक भी पसन्द न आया। नीचे झांक कर कहा : "कौन साहब हैं ? अन्दर आ जाइये आंगन में।"

आंगन मे आकर उस आदमी ने ऊपर की ओर देखते हुए सलाम झुकाया, और फिर हाथ जोडकर कहा : "बाबू तिल्लोकीनाथ जी आपको कई बार याद कर चुके हैं, अगर तकलीफ न हो, तो हमारे साथ चले चलिये।"

"अब इस वक्त तो भई मैं कहीं आ जा न सकूंगा। त्रिलोकी बाबू से हमारा सलाम कहना और कह देना, फुर्सत मिली तो कल-वल किसी वक्त आकर मिल लूंगा।"

कह कर बंसी ऊपर चला गया।

आधी घड़ी के बाद ही दरवाजे पर फिर "लाला तनकुन मल जी साहेब" की गुहार लगी। इस बार दूसरी मंजिल के कटहरे से आंगन मे झाककर तनकुन ने कहा: "कहिये, अब क्या काम है, आपको ?"

"हे हें, हे तिल्लोकी बाबू तशरीफ लाये हैंगे, दरवज्जे पर खड़े हैंगे।"

तनकुन नीचे आया, दरवाजे पर सुन्दर समवयस्क त्रिलोकी नाथ चोपड़ा खड़े थे। एक वल्लमधारी नौकर उसके पीछे खड़ा था। दोनों ने आपस में एक दूसरे को सलाम किया। (हाथ जोडने का या पैर छूने का रिवाज उस समय केवल ब्राह्मणो, खास कर वढे बूढो के साथ ही वरता जाता था।) बसीघर ने हसते हुए बाबू त्रिलोकी नाथ चोपड़ा का हाथ पकड़ा, और अन्दर लाकर उन्हें बैठक में बिठलाया। उन्हें बैठाकर बसी ऊपर गया और मां से मेवे पान वगैरह लाने को कह कर लौट आया।

बाबू त्रिलोकीनाथ बोले: "मैंने सुना कि आप तशरीफ लाये हैं तो मिलने के लिए वेकरार हो गया। आइये, मेरे गरीबखाने पर तशरीफ ले चलिगे। आज मेरे ही घर अपनी जूठन गिराकर मुझे इज्जत बख्शिये।"

"अरे, जूठन-ऊठन की बात तो खैर छोडिये फिर किसी ।"

"किसी-विसी दिन की बात नही साहब, घर चलिये, वहा इत्मीनान मे बातें होयेंगी। आइये, चलिये आपको हमारी कसम।"

ऊपर से मेवे की तश्तरी और पानो का बिलहरा लेकर बहुआ आप नीचे आयी। त्रिलोकी नाथ ने उठकर उन्हें सलाम किया और कहा: "तनकुन बाबू मेरे साथ जा रहे हैं, वही खाना आना भी खा लेंगे, आप फिक्र न करियेगा।"

तनकुन ने मां के हाथों से पानों का बिलहरा और तम्बाकू की डिब्बी लेकर बिलहरे का ढकना खोला। त्रिलोकी ने पान खाये। और दोनों बिदा हुए।

मैगी अंग्रेज बाप और ईरानी मां की औलाद थी। नसीरुद्दीन हैदर शाह के जमाने में मैगी के पिता अवध के रेजिडेन्ट के सेक्रेटरी थे। शहर की दो मशहूर दल्लालाओं, अम्मन और इमामन की मार्फत मैकलीन साहब ने एक रईस की बेवा बेगम से नैना चार कर लिए थे। मैगी उन्ही की औलाद थी। मैगी बंसी बाबू से फर्राटेदार अंग्रेजी में बातें करने लगी। उसने बंसी को बतलाया कि लखनऊ से कानपुर जाते हुए गंगा मे नाव उलट जाने से उनके माता-पिता दोनो ही डूब गये, मैगी बच गयी।

शहर के मशहूर दूकानदार' मेरी एण्ड मारगन' के मालिक ने उन्हें पाला-पोसा, वही उसका कौमार्य भी भंग हुआ। जब त्रिलोकी नाथ से भेंट हुई, तब उसका संरक्षक बूढ़ा मर चुका था। विलायती झाड़-फानूसों, लोहे के बने हुए सामान और विलायती फर्नीचर की दूकान के नये मालिक ने चाचा की रखैल को अपनी सेक्रेटरी बनाकर दूकान मे नौकरी दे दी। वही त्रिलोकीनाथ से मैगी की भेंट हुई थी। मन्नो बीबी की हवेली मे नये फर्नीचर की सजावट करने के लिए बाबू साहब उसे लाये थे। हवेली के कुछ कमरों की सजावट करते-करते दो तीन रोज के भीतर ही मैगी त्रिलोकी नाथ के मन महल की सजावट भी करने लगी। बाद मे उसने नौकरी छोड़ दी और इन्ही के घर मे आकर करीब-करीब आधी हवेली की मालकिन बन गयी। आया, बैरा, मुसलमान बावर्ची सभी आ गये। मन्नो बीबी दुखी होकर अपना घर छोड़कर अपने ठाकुर द्वारे में आ बसी। उनकी इकलौती बेटी चुन्नो बीबी दो छोटे-छोटे बच्चों की मां बनकर अपने ही घर मे अनाथ सी रहने लगी। अपनी पत्नी की शिकायतें करते हुए त्रिलोकी बाबू ने तनकुन को बतलाया: "न बात करने का सलीका, न उठने-बैठते का शऊर, रंग जरूर गोरा है। मगर आप

उसकी सूरत देखिए तो कै आने लगे। अब सास साहिबा बिरादरी में झगड़ा उठा रही हैं कि मुझे बिरादरी से अलग किया जाय और मैंगी को घर से बाहर निकाला जाय, बतलाइये भला, जो औरत मेरी जिन्दगी मे बहार लायी, और जो मेरा कारखाना सम्हालती है, उसे मैं उस तरबूज सी गोल-मटोल उल्लू की पट्ठी के लिए छोड़ सकता हूं भला।"

बंसी बोला : "खैर यह तो आपके निजी और घरेलू मसले हैं, मैं भला इसमे आप की क्या मदद कर सकता हूं ?"

"देखिए तनकुन बाबू, मैंने सुना है कि मेरी वह हरामजादी सास आपको बहुत मानती है और शायद वह भी आज-कल में आपके पास पहुचने वाली है।"

"तो ?"

"मतलब यह कि आप उस खूसट की चाल-बाजियों में न आयें और इस बिरादरी की तड़बदियो मे न पड़ें।"

"देखिए त्रिलोकी बाबू, मैं चार रोज के वास्ते यहां आया हूं और इन तमाम बातो से मेरा कोई लेना देना भी नही है।"

मैंगी बोली, "देखिए, मैं भी बदकिस्मत औरत हूं, मिस्टर बंसीधर। ये मुझे प्यार करते हैं और मै इन पर सौ जान से निछावर हू। मुझे इनकी बीवी से कोई शिकायत नही मगर इनकी सास अगर मुझे यहा से निकालने की कोशिश करेंगी तो मैं भी बदला लिए बगैर नही रहूगी, ये आप उन्हें मेहरबानी करके समझा दीजियेगा। इनकी बीवी के दोनो बच्चे इन थोड़े ही दिनो में मुझसे बहुत ज्यादा हिल गये हैं।"

"यह ठीक कह रही हैं, तनकुन बाबू। मैं ईसाई होकर मैंगी से शादी कर लूगा और अपने दोनो बच्चों को भी ईसाई बना लूगा। यह आप उससे साफ-साफ बतला दीजियेगा।"

तरह-तरह की बातें होती रही, बंसी सोचने लगा, दुनिया तेजी से बदल रही है। अब तक मुसलमान तवायफों को घर में लाकर रखने के किस्से-कजिये पढ़ते थे, और अब यह अंग्रेजी हवा फैल रही है। कुछ सोचकर बोला : "त्रिलोकी बाबू, अपनी बिरादरी मे भी कुछ जवान अब नई रोशनी मे अपनी पुरानी दुनिया को देखने लगे हैं। उन्हें अपनी तरफ मिलाइये, बिरादरी के किस्से-कजिये तो अभी और बढ़ेंगे। अगर उन्हें दबाना है तो आप को भी नयी चालों से ही उनका सामना करना होगा। जैसे अंग्रेज फूट डालकर राज करते है वैसे ही आप भी बिरादरी और अपनी सास पर राज कीजिये। बहरहाल मन्नो बीबी के नवासों को ईसाई बनाने की आपकी धमकी मैं उन तक जरूर पहुंचा दूंगा।"

मन्नो बीबी, बिरादरी में घर-घर जाकर अपने दामाद और अपनी बेटी की फिरगी सौत के विरुद्ध बहुत सी बातें फैला रही थी। जिस दिन बंसी उनके दामाद से मिला था, उसी दिन रुक्को पुरतानी को बंसी के घर भेजकर उन्होने उसे बुलवाया। बसी स्वयं तो न गया पर यह जरूर कहा : "मामला बहुत टेढ़ा है चाची, त्रिलोकी बाबू ने कहा है कि अगर उनकी सास इसी तरह से उनके खिलाफ बातें फैलाती रहेंगी तो वह उस किरंटी मेम के साथ ब्याह करके ईसाई बन जायेंगे और उनके दोनों नवासों को भी ईसाई बनवा देंगे। राज अब अंग्रेजों का है, फिर मन्नो बीबी के यहा पादरी आया करेंगे। तमाम भिरस्टाचार फैल जायगा और उनकी लडकी को भी या तो ईसाई बनना होगा या फिर अपना ही घर छोड़ना पडेगा।"

रुक्को बोली : "हाय-हाय, हमरे धरम करम वाले हिन्दुअन के महल्ले मां पादरी अइहै, तब तो भैया, तुम जान लो कि ई पिरथी रसातल मे धस जायगी। पर चुन्नो के

दुलहे ऐसा कर न पइहै भइया। फिरंगी राज आया है तो क्या सब पुराना कैदा-कानूनै मिट जइहै। अरे, अंग्रेजन की जान-पहचानो अब अपनी बिरादरी के लोगन में बहुत हुई गई है। मन्नो बीबी दमाद से अपना मुख्तियारनामा वापिस लै लेगी। फिर का करिहैं तिरलोकी, जब कंगाल हुइ जइहैं तो ऊ हरामजादी मेमो उन्हें छोड़ के चली जायगी।" लक्को पुरतानी ने बड़ी अकड़ के साथ दोनों हाथ नचा-नचाकर कहा।

"मामला इतना आसान नहीं है चाची। खैर, मैं फिर बात करूंगा। लेकिन इतना आप लोग समझ लीजिये कि त्रिलोकी बाबू अपने लडको को भी साथ ले जायेंगे।"

"सत्यानास जाय मरे गोरन का जो हमरा धरम-करम बरबाद कर रहे हैंगे।"

धरम-करम का चर्चा शहर के आम हिन्दू-मुसलमान लोगो की जबानो पर चढ़ा हुआ था। पलटनो में यह अफवाह तेजी से फैल रही थी कि सरकार आटे मे हड्डियों का चूरा मिलाकर सिपाहियो को खिला रही है और जो नये कारतूस बनकर आये है उनमें गाय और सुअर की चर्बी लगी है। कारतूस को चूंकि दांतों से खोलना पडता है, इसलिए हर हिन्दू-मुसलमान सिपाही का धर्म नष्ट हो रहा है। उन्ही दिनो सयोग से छावनी के अस्पताल मे एक डाक्टर वेल्स ने अपने पेट मे गड़बड़ी होने के कारण दवाखाने मे एक शीशी उठाकर, उससे एक खुराक मुह लगाकर दवा पी ली। कुछ देसी सिपाहियो ने उसे देख लिया। क्रोध भडका कि अग्रेज अपनी जूठी दवाए हम लोगो को पिलाते है। सिपाहियों मे क्रोध की लहर फैल गयी, गोरे हाकिमो के कान खडे हुए। उन्होंने इस बात का भरसक यह प्रयत्न किया कि असतोष मिट जाय। दवा की वह शीशी जो डाक्टर वेल्स ने जूठी की थी, सिपाहियो के सामने ही तोड डाली गयी और बड़े अफसर ने डाक्टर साहब को बुलाकर सबके सामने ही फटकारा। फिर भी बात दूर-दूर तक पहुची। लोग कहते हैं कि इससे तो मुसलमान ही अच्छे, तलवार के जोर से जिसे चाहते उसे विधर्मी बना देते थे। मगर ये अग्रेज तो धोखे-धडी से सबका धरम बिगाड़ रहे है। अपने लखनऊ के एक पखवारे के प्रवास काल मे बसीधर ने यह भी अनुभव किया कि शहर के नौजवान अंग्रेजों के ही नही बल्कि अपने शहर, समाज के प्रति भी विद्रोही रुख अपना रहे है। एक दिन वह नगरिया के ठाकुर शिवरतन सिंह और उनके पिता रामजियावन सिंह से भी भेंट करने गया। वह बतला रहे थे कि अवध के ताल्लुकेदारो मे बडा असतोष फैला है। ऊपर से लेकर नीचे तक भारतीय मानस मे तरह-तरह से असंतोष व्याप्त हो रहा था। बंसी को लगा कि वह स्थिति एक दिन जरूर रंग लायेगी। उसे अंग्रेजो से तो घृणा थी किन्तु उनके प्रति आदर भाव भी बहुत था। पुराने शासक बेहद ऐयाश थे, वे अपने दुरभिमान मे तरह-तरह से स्वार्थी और पतित हो गये थे। अंग्रेजी हाकिम उनसे कहीं अधिक चतुर और संगठित हैं। विलासिता का दोष होने पर भी वह कभी अनुशासन भग नही करते और अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए हरदम चौकस बने रहते हैं।

नवाबगज जाने से पहले बंसी अपने सब परिचितो के यहा मिल आया। नगरिया के ठाकुर रामजियावन सिंह, शिवरतन सिंह और नवाबगज मे अपने उस्ताद मुन्शी हिम्मत बहादुर के यहा भी गया। संयोग से वाजिदअली शाह की पुरानी और रिखबदास की नयी प्रियतमा चुलबुली बेगम से भी महताब बाग में भेंट हुई। हस्सो उर्फ चुलबुली बड़े कटीले नाव-नखरा वाली और बला की खूबसूरत है। रिखबदास से चुराकर चुलबुली ने बंसी पर भी डोरे डाले। दूसरे दिन रसूलन ने उसे सराय मे भी बुलाया मगर बंसी न गया। पत्नी को पाकर अब वह किसी स्त्री से कभी सम्बन्ध नहीं रखेगा। कुछ ही दिनो के परिचय में बंसी अपनी पत्नी पर मुग्ध हो गया था। वह नैन्सी के समान चतुर, सुन्दरी भले ही न हो, चुलबुली के समान काम-कन्दला न हो फिर भी सुन्दर है और चमेली

का मन तो जितना सुन्दर है उसका पासंग भर मुकाबला भी यह वेश्यावत् सुन्दरियां नहीं कर सकतीं। पत्नी की याद ने बंसी को मथना शुरू कर दिया। रामनवमी के दिन लखनऊ में बिदा लेकर नवाबगंज आया। वहां भी अधिक न रुका। जिस दिन ससुराल पहुंचा था, उसी दिन रात में पत्नी से भेंट होने पर उसने कहा : 'देखो जी, अब हम तुमसे खुल के मिलना चाहते हैं इसलिए अपनी मां को तुम कल ही यह इशारा दे देना कि हमारे बिदा होने का महूरत तुरन्त निकलवाएं। कलकत्ते में मैं तुम्हारे पढ़ने-लिखने का इन्तजाम भी करूंगा। कलकत्ते की पढ़ी-लिखी लड़कियां अब पर्दा-वर्दा नहीं करतीं। अंग्रेजों की तरह पति-पत्नी घूमने, नाटक देखने जाते हैं। हमारे यहां की औरतों को इस पर्दे ने ख्वाहमख्वाह बुद्धू-दर-बुद्धू बना रखा है। मेरी चमेली ऐसी नहीं बनेगी।"

"आप जैसी आज्ञा करेंगे, मैं वैसी ही बनूंगी।"

"मैं तुम्हारा यह चमेली नाम भी बदल दूंगा, प्यारी। नये किस्म के नाम जैसे बंगालियों के होते हैं, वैसे ही रखूंगा। चंपकलता, कंचनबाला, हेमांगिनी, बसन्त कुमारी—तुम्हें इनमें से कौन सा नाम पसन्द आया?"

"पुकारना आपको है, जो आपकी पसन्द का नाम होगा वही।"

पति-पत्नी में थोड़ी देर तक नामों का खिलवाड़ हुआ और फिर बंसीधर तथा 'चंपकलता' एक दूसरे के प्रति समर्पित होकर लिपट कर सो गये। पूनो के दिन पति-पत्नी नवाबगंज से बनारस के लिए रवाना हो गये।

13

चमेली के लिए कलकत्ते का वातावरण, चाल-ढाल सब एकदम नया था। जैसे कुएं की कहावती मेढकी दरिया में आकर उसकी विशालता और व्यापकता देखकर भौचक्की हो रही हो। छोटा-सा कस्बा नवाबगंज, जहां बिरादरी के कुल जमा आठ-दस घर ही थे, और सारा जातीय लोक व्यवहार उसी सीमा में बंधा हुआ था। यह सच है कि नवाबगंज में रहते हुए भी रिश्तेदारियों के बहाने से वह अपनी माता आदि के साथ छह-सात बार लखनऊ भी हो आई थी। वहां बिरादरी के बहुत से घर हैं। लखनऊ और नवाबगंज की जातीय और सामाजिक दुनियाओं में फर्क तो था, किन्तु उसे ऐसा कभी नहीं लगा कि जैसे वह अलग-अलग हैं। लेकिन कलकत्ते की जातीय और सामाजिक दुनिया बिल्कुल बदली हुई है। बिरादरी के घरों में चमेली यहां अभी बहुत नहीं आई गई है, केवल अपने चाचा खन्नाजी का घर और उनकी पत्नी को ही विशेष रूप से जानती है। उसी इमारत की ऊपर-नीचे की मंजिलों में जो इने-गिने खत्री परिवार रहते हैं, उनमें से कुछ के घर भी चाची की बदौलत झांके हैं। जगह की कमी से सारी गृहस्थी थोड़े में सिमट आई है, यह अवश्य कहा जा सकता है, लेकिन छूत-छात, खान-पान, बात-व्यवहार में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं दिखलाई पड़ता। यही हाल लगभग अन्य हिन्दू परिवारों का भी है।

लेकिन सूतापट्टी से श्याम बाजार की यह दुनिया बहुत अलग है। यहां की चाल-ढाल-पहनावा, सब कुछ पहचाना हुआ हिन्दुस्तानी लगते हुए भी पराया है। नीचे वाले बंगाली आपस की बातों में मा-मा-मा कहते हुए भी कोई देवी, देवता, ठाकुर घर में नहीं रखते। नीचे की औरतें मजाक उड़ाती है कि पत्थर, पीतल की पुतलियो में भला कहीं भगवान बसते हैं। भगवान तो अनन्त, अखण्ड, अभेद, निराकार स्वरूप हैं। वह प्रार्थना से मिलते है, चन्दन, फूल चढाने से नही। इनकी स्त्रियां पर्दा नही करती, वे रोज अपने घर की खिड़कियों से झाकती है, सड़क पर बिना किसी पर्दे के पतियों के साथ, खुले मुह, खुले आम आती जाती है। चमेली उर्फ चपक ने अपनी समवयस्का बगाली तरुणियो को अन्य पुरुषो से भी मुक्त भाव से हंसते-बोलते देखा है। 'हसी सो फसी' वाली देसी कहावत कलकत्ते मे जैसे लागू ही नही की जा सकती।

"अब इस तरह की नवाबगजी रंग की बातें और ऐसे पुराने खयालों को भूल जाओ चमेली बीबी। यहां रहते-रहते कुछ दिनो बाद तुम्हें खुद ही यह लगने लगेगा कि यह सब नए सुधारों वाले चाल-चलन, पाप से ज्यादा पुन्न के काम हैं।" बंसी ने समझाया। पहला विराट परिवर्तन तो यह हुआ कि सौभाग्यवती चमेली बीबी आधुनिक चाल का नाम पाकर श्रीमती चंपकलता टंडन हो गईं।

नीचे की मंजिल मे रहने वाली भूतपूर्व विधवा और अब सौभाग्यवती गोकुल-मणि विवाह के बाद अपने कभी न देखे हुए दिवगत पति के खानदान की अल्ल 'घोष' छोडकर नए पति के वर्ण में आकर सान्याल हो गईं। उनका नाम भी बदल कर सुचरिता बाला सान्याल हो गया। मिसेस कार्नीलियस यहां भी उसे अंग्रेजी पढ़ाने आती थीं। चंपकलता टण्डन भी उनसे अंग्रेजी पढ़ने लगी।

नवीन ब्राह्म वातावरण की सौभाग्यवती सुचरिताबाला सान्याल अपने पूर्व गोकुल-मणि जीवन के संस्कारो को पति गृह के मीठे-व्यंग्य-विनोदों के कारण छोड़ने को बाध्य हो रही थी। चंपकलता भी अपने पति की रोक-टोक पर वैसे ही बाध्य होकर बदल रही थी। गोकुल उर्फ सुचरिता का एकादशी का व्रत छूटा, और उसके साथ ही साल भर होते रहने वाले अनेक उपवासों की कहानी भी बीत गई। लगभग ऐसा ही हाल चपकलता का भी हुआ। हरतालिका, वटसावित्री आदि अनेक व्रत उपवास उसे मजबूर होकर छोड़ने पड़े। सुचरिता और चंपकलता के मनोसंघर्ष का रूप लगभग एक ही था। इसीलिए वह दोनों आपस में एक-दूसरे के निकट भी आने लगी। देवी-देवतों के स्थान देखते ही हाथ जोड़ने का संस्कार भी धीरे-धीरे दोनो की मन की सतहों से मिटने लगा। पुतुल पुजा (मूर्तिपूजा) के प्रति इस नए ब्राह्म घर में बच्चो से लेकर बूढ़ों तक उपहास की भावना थी। बहुत कुछ छूट रहा था, लेकिन पति और उसके परिवार का प्रेम अबाध था, इसलिए बीता कल मीठे दर्द के साथ बिदा हो रहा था। यही हाल सौभाग्यवती चमेली उर्फ चपकलता टण्डन का भी था।

बंसी के आग्रह से जब पहली बार चद्दर उतार कर वह श्याम बाजार की सड़क पर पति के साथ टहलने निकली, तो ऐसा अटपटापन अनुभव कर रही थी कि चलते-चलते बेमतलब लाज से उसका बदन सिमट-सिमट उठता था। पैर घबराहट में लड़खड़ा जाते थे। बंसी झिड़कता, "धुत पगली, दिहातिन कहीं की।" कह कर बंसी उसकी बांह थाम लेता।

चलते रस्ते मे पति का इस प्रकार बाह थामना उसे और भी अधिक लज्जाजनक लगता। जल्दी से बांह छुड़ाकर अलग होने का प्रयत्न करते हुए धीमे स्वर मे उसे झिड़कती, "छोड़िए, कोई देख लेगा तो क्या कहेगा!"

"अरे, मां-बाप ने जिसकी बांह पकडा दी, उसी की तो पकड़ता हूं, किसी पराई औरत की नही।"

नए जमाने की औरत बनते-बनते भी एक बार चमेली ने बड़ा आग्रह किया, "हमे काली मैया के दरबार मे ले चलो, उनके दर्शन करेंगे।"

बंसी के मन मे आस्था-अनास्था के मिश्र संस्कार एक साथ उभरे। एक तरफ तो वह अपनी पत्नी को आधुनिक बनाने का तीव्र आग्रह रखता है, और दूसरी ओर माता देवी जगदम्बा जैसे शब्द कान मे पडते ही उसकी आस्था चंद्रिका मैया के साथ जुड़ जाती है। चंद्रिका मैया, बंसी की सौभाग्यप्रदायिनी शक्ति है। जब से वहां दर्शन करने जाने लगा, तब से उसे अंग्रेजी पढ़ने की ललक जागी, पार्किन्सन मिला, नैन्सी मिली, और यह कलकत्ते आने का अवसर मिला। यहां पिन्काट मिला और पिन्काट के बहाने से विपिन का भाग्य खुला। विपिन के भाग्योदय से वह निश्चिन्तमना होकर अपनी अंग्रेजी पढाई पूरी करने का यह स्वर्णिम अवसर पा गया है। जो नई चेतना उसे यहां मिल रही है, पत्नी के साथ जिस स्वतन्त्रता से वह आज यहा घूम रहा है, उसकी कल्पना भी वह लखनऊ के जीवन मे नही कर सकता था। यह सब सर्वशक्तिमयी, सुख-सौभाग्य-प्रदायिनी जगदम्बा की ही कृपा है। जगदम्बा किसी भी नाम या स्वरूप की हो, काली हो, दुर्गा हो, चंद्रिका हो, सीता, राधा, सरस्वती, पार्वती कोई भी हो, उनमें अन्तर नही है। मां एक है। वह अपनी पत्नी की यह इच्छा पूरी करेगा।

काली बाडी के द्वार पर चमेली ने देखा तो बंगालियों में भी उसे अपनी हिन्दू दुनिया नजर आई। बोल-चाल अलग होते हुए भी चमेली उर्फ चम्पक टण्डन उस भीड़ में अपने को बहुत अलग नही समझती थी। मन्दिर के भीतर अनजाना होते हुए भी वैसा ही जाना-पहचाना-सा वातावरण है। मां की भयावनी मूर्ति के आगे श्रद्धा से सिर झुकता है। नारियल फोड़े जा रहे है, दारू की बोतलों पर बोतलें चढ़ाई जा रही है, और बंगल मे···बलिवेदी पर बकरे और भैंसे···हे राम, हे मा ··पति पत्नी दोनो ही अपनी-अपनी श्रद्धा लेकर भागे।

रास्ते मे लौटते हुए चमेली बोली : "आपकी बात अब हमें भी ठीक लगत है।"

"लगत है नही, लगती है बोलो, दिहातिन कहीं की।"

चलते-चलते मान से पति को हल्का-सा धक्का देती हुई चमेली बोली : "हटो, हमरा नवाबगज कोई दिहात थोड़ी है; छोटा सहर हैगा आपके नखलऊ के मुकाबले में।"

"सहर नही शहर कहो। अच्छा अब अपनी बात भी कहो।"

"हम नही कहेंगे। पल-पल मे हमरी गल्तियां पकड के जो बात कहन को रही उसका हौसला ही ठंडा कर दिया, जाओ।"

बंसी बोला : "मैं जानता हू, तुम क्या कहना चाहती हो। मन्दिर मे बलि का वह सब घिनौना तमाशा देखकर तुम्हे भी यह महसूस हुआ होगा, कि हमारे हिन्दू समाज मे सुधारों की सख्त जरूरत है।"

"हां-सच्ची, यही बात मन मे आई थी।"

———चमेली

आ गई

क साडी

भी अब बंगाली ढग से पहनने लगी और नीचे के घर का कुत्ता "जैकी" भी अब उसके लिए अधर्म या नरक का प्रतीक न रहा। हां, खान-पान मे उसके पुराने परहेज न छूटे।

और सब बरतन-बरतूले तो कुछ पति और कुछ सुचरिता के घर वाले प्रभाव से छूट गए, पर देवी पूजा न छूटी। चंपकलता अपने पति के साथ बड़े बाजार जाकर शिव-पार्वती और राधा-कृष्ण के चित्र ले आई तथा नियमित रूप से उनकी पूजा करने लगी।

बंसी एक दिन अपनी पत्नी को पिन्काट के घर भी ले गया था। पिन्काट ने मित्र की पत्नी के प्रति बड़ा आदरभाव दिखलाया। प्लेटों में फल और मेवा आई। अंग्रेज के घर की प्लेटों में रखे फल और मेवे खाने में तथा शीशे के गिलास में पानी पीने में उसके हिन्दू मन में उसके भीतर-ही-भीतर कई उबकाइयां ली। परन्तु पति के अदब से उसे कुछ-न-कुछ टूगना ही पड़ा। पिन्काट के घर ही बंसी को खबर मिली कि शाहे अवध और उनका काफिला कलकत्ते आ गया है और लार्ड डलहौजी ने उनके कलकत्ता आगमन पर तोपों की सलामी देने का आर्डर भी पास कर दिया है। उनके लिए बागकटरा राजा बर्दवान में एक पाच सौ रुपए महीने की कोठी किराए पर ले ली गई है। वे लोग अब इंग्लैण्ड जाएंगे। पिन्काट ने कहा : "दोस्त, तुम्हारे बादशाह को हिज एक्सिलेन्सी का एक स्वागत पत्र देने के लिए मैं आज सुबह उनके यहां गया था। अरे, वह तो एकदम मंदे के लोंदे हैं। मगर है खूबसूरत और शरीफ। जहाज के सफर से बेहद थक गया है तुम्हारा बादशाह। फिर भी मुझसे मुलाकात की। और लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के लिए स्वागत करने का शुक्रिया भी अदा किया। यह भी कहा कि यह कोठी उनके लिए छोटी है, किसी बड़ी जगह का इतजाम अगर सरकारे बंगाल कर दे तो बेहतर होगा। मेरे यह बतलाने पर तुम्हारी नैन्सी ने भी बादशाह के लिए अच्छी जगह देने की सिफारिश की।"

बसी बोला. "कुछ भी कह लो विलियम, हमारे वाजिदअली शाह निहायत शरीफ और शायर तबियत के आदमी हैं। मैं तुमको तीन-चार बरस पहले की एक पुरानी बात सुनाता हूं। लखनऊ शहर में शाही जुलूस निकल रहा था, एक बेचारी अल्हड़ और कमसिन देहाती औरत अपने जवान शौहर के साथ शाही जुलूस को उचक-उचक कर देख रही थी। जोश में पर्दे का होश न रहा। सांवली जरूर थी, मगर नैन-नक्श ऐसा कि राजा इन्दर की हूरें भी उसके आगे पानी भरें। उसकी बड़ी-बड़ी शर्बती आंखें शाही नजरों से जा अटकीं। हुस्न की दौलत ने बादशाह को फकीर बना दिया। हुक्म फरमाया कि इस लड़की को उनके महलों में पहुंचा दिया जाय। लिहाजा लड़की महलों में और उसका शौहर कैदखाने में पहुचा दिए गए। फिर उस देहाती हसीना को लाखों रुपयों के जेवरात और बेशकीमत कपड़े पहनाकर बादशाह के सामने पेश किया गया। दौलते हुस्न के आगे नाखुदा-ए-किश्ती, हुस्नो-इश्क, पिया जानेआलम लुट-पुट गए। बड़ी खुशामदें की मगर वह टस से मस न हुई, कहा कि मुझे तुम्हारी दौलत नहीं चाहिए। मुझे मेरे शौहर के पास पहुचा दो। बादशाह न माने तो रातों-रात किसी तरकीब से महलों से सब गहने-कपड़े उतार कर भागी। उधर सिपाहियों ने यह सोचकर कि औरत तो अब महलों में पहुंच ही गई है, उसके बदनसीब शौहर को भी उसके सारे पैसे टके लेकर छोड़ दिया। रास्ते में दोनों की मुलाकात हो गई। बहुत ही खुश। और वे जल्दी-जल्दी अपने गांव की ओर जाने लगे। मगर सुबह जैसे ही बादशाह को खबर मिली कि लड़की भाग गई है तो इश्क के दीवाने ने उसे चार पहर के भीतर ढूंढ कर लाने का सख्त हुक्म दिया। दोनों बेचारे फिर गिरफ्तार होकर आए। बादशाह ने उस लड़की को बहुत-बहुत मनाया मगर वह टस से मस न हुई, कहा : "तुम्हारा महल मुझे अच्छा नहीं लगता। मेरी झोंपड़ी इससे लाख गुनी अच्छी है। और मेरा गरीब शौहर तुम्हारी बादशाहत से करोड़ गुना बेशकीमत है। मैं उसी के पास जाऊंगी वर्ना जान दे दूंगी।"

रसलीन होकर सुनता हुआ पिन्काट बोला : 'फिर क्या हुआ ?"

"बादशाह ने हुस्न के हठ से हार मान ली, उसके शौहर को कैदखाने से बुलाया, बहुत इनाम-इकराम दिया, और अपने कलेजे पर पत्थर रखकर दोनों को बाइज्जत विदा किया। ऐसे शरीफ और इन्साफ पसंद इन्सान को तुम अंग्रेजों ने अपनी चालबाजियों से नाकारा बना दिया और इस हालत पर पहुंचा दिया। तवारीख तुम्हारे इस काम को कभी माफ नहीं करेगी, दोस्त।"

इतिहास तेजी से बदलने लगा। लखनऊ, कानपुर, दिल्ली, मेरठ, दूर-दूर की खबरें आने लगी। उत्तर भारत में अंग्रेजों के खिलाफ एक जबरदस्त जन विद्रोह का विस्फोट हो चुका था। कलकत्ते के अंग्रेजी अखबारों में अफवाहों का बाजार गर्म हो उठा। अंग्रेज स्त्रियों और बच्चों पर तरह-तरह के अमानुषीय अत्याचारों के सच्ची से अधिक झूठी अफवाहें अंग्रेजो की बिरादरी में फैल-फैलकर उन्हें उत्तेजित कर रही थी। फलस्वरूप कलकत्ते के बेगुनाह बगालियों से भी अंग्रेजों ने बदले लेने शुरू कर दिये। दो अंग्रेज सैनिक जहाज से उतर कर कलकत्ते मे पैर रखते हैं, तभी वे दो मुसलमानों को देखते हैं जो बैलगाडी में बातें करते हुए जा रहे थे। उनमे से एक के मुंह से कानपुर शब्द निकलता है। अंग्रेज सैनिक ने अपने साथी से कहा : "तुमने सुना, उसने कानपुर का नाम लिया है, यह काले लोग हमारी कौम के लोगों का जीना दूभर कर रहे हैं। आओ इन बास्टर्ड्स की पालिश करें।" फिर दोनों अंग्रेज सिपाहियों ने उन मुसलमानों को गाड़ी से घसीटकर बडी बुरी तरह से मारा-पीटा।

मोचीखोले के मटियाबुर्ज में पांच हजार रुपये महावार के किराये पर बादशाह को कई कोठियां मिल गयी थी। वहां भी लखनऊ से खबरों की रेल दौड़ी चली आ रही थी। हाशिमअली दारोगा, लखनऊ मे हैदरीखां के यहां अकसर आया-जाया करता था। बंसी से पुरानी देखा देखी थी। एक दिन चौरंगी में उससे अचानक भेंट हो गयी। दो लखनवी मिले तो दिल में घुमड़ती हुई बातों की काली घटाएं बरसने लगीं। हाशिम मियां ने बतलाया . "इस [illegible]
पर कारतूसों के बिगड़ [illegible]
के कत्ल को यकजा हुई [illegible]
को समझाया लेकिन लोगो के खयाल में न आया। आखिर इन अहमको ने कई सौ योरोपियन निकाले और करीब शाम कत्ल की सिम्त को रवाना किया।"

हाशिम मियां ने बंसीधर के घर का पता पूछ लिया था। हालाकि मोचीखोला शहर से छह मील दूर था मगर हाशिम मियां जब तब शाही महलात के काम से शहर में आते ही रहते थे। एक बार सुनाया : "फिरंगियों के खिलाफ जहर उगला जा रहा है। नई-नई बातें सुनने मे आ रही हैं। दिल को हौल है कि देखिए फ़लक क्या-क्या रंग दिखलाता है। घासमंडी मे मौलवियों का जमाव है। सुना है, एक सूफी अहमदुल्ला शाह आये हुए हैं। नवाब चीनाटीन के साहब जादे कहलाते हैं। आगरे से आये हैं। ये भी सुना है कि उनके हजारहां मुरीद हैं और वो पालकी में निकलते हैं। आगे डंका बजता होता है। पीछे अजदहां बड़ा होता है। बशहतेनाक खबरों की गर्म बाजारी है।"

एकाएक शहर के अखबारो में खबर आयी कि नवाबे अवध फोर्ट विलियम मे नजरबन्द कर लिए गए हैं। सुनकर बंसीधर विचलित हो उठा। किराये की गाड़ी करके दौड़ा-दौड़ा मटियाबुर्ज पहुंचा। क्या छोटे क्या बडे, सभी के चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थी। बहुत तलाश करने पर हाशिम मियां मिले। बंसी को देखते ही तनकुन बाबू कहते हुए उसके सीने से लिपट गये, और बिलख-बिलख कर रोने लगे। बड़ी तसल्लियों और

समझाने-बुझाने से उनके दिल को कुछ करार आया। दामन मे आंसू पोंछते हुए कहा : "ये लाल मुंह वाले साले बंदरियों के पिल्ले, जाने आलम को कैद कर ले गये।" इसके बाद हाशिम मिया की जबान पर अंग्रेजों के लिए मल्लाही गालियों का दौरा पड़ा। फिर बोले : "एक तो सफर की हलाकानी, यहां आते ही आलाहजरत के दुश्मनों की तबियत बेहद नासाज रही। खैर। खुदा-खुदा करके तबरीद के बाद सेहत हुई, महलों में चौतरफा खुशियां छा गयी, जिस कदर नज़रों नियाज मानी गयी थी वे अब पूरी की गयी और कल रात जलसा हुआ। नाच गानों से हर दिल की कली खिल उठी। जाने आलम ख्वाबगाह में आराम फरमाने के लिए तशरीफ ले गए। हम लोग भी सब करीब-करीब निंदारे से हो रहे थे, मगर खुशियों के सावन मे चौधार नहाते हुए हमारी नींद आ-आकर भी उड़-उड़ जाती थी। रात मेरी समझ मे कोई चार घड़ी बाकी थी। कि एकाएक बाहर बड़ा गुल-गपाड़ा होने लगा, आंख खुलते ही हम हक्का बक्का रह गये।"

"मैं समझता हूं कि बादशाह को फोर्ट विलियम ले जाने के लिए फौज आयी होगी?"

"फौज? अजी पूरी पलटन की पलटन थी सालों की। चारों तरफ से टिड्डियो की तरह कोठी को घेर लिया। जाने आलम ने पूछा ये क्या गुल है। मैंने अर्ज किया कि अली नकी खां कैद हो गये। सुनकर बादशाह को गुस्ल की हाजत हुई। वे हम्माम मे तशरीफ ले गए। तब तक लाट साहब के सिक्रेटरी साहब तशरीफ दीवानखाने में आये। बादशाह जब नहा के कपड़े-वपड़े बदलकर तशरीफ लाए तो सिक्रेटरी साहब बोले कि मेरे साथ चलिए। बादशाह ने कहा कि 'आखिर कुछ सबब बतलाये।" वे बोले कि गवर्नमेन्ट को आप पर कुछ शुबह हो गया है। आला हजरत ने इर्शाद फरमाया कि "भई मेरी तरफ से शुबह बेकार है, मैं तो खुद झगड़ों से दूर भागता हूं। सिक्रेटरी बोले कि नहीं, आपको चलना होगा।" बादशाह ने कहा, "मैं तैयार हूं। उनके साथ हम सभी लोग चलने को तैयार हो गये तो सिक्रेटरी बोला कि खाली आठ आदमी चल सकते हैं। क्या कहें तनकुन बाबू, हमारे बादशाह को कैदखाने मे डालकर इन मां के पिल्लों ने हमारी नाक ऐन जड़ से ही काट डाली है सालों ने।"

बंसीधर के दिल को भी हाशिम मियां की यह बात गहरे में चुभी। भले ही बादशाह अशक्त हो मगर हम सबके स्वाभिमान का प्रतीक है। बंसी के अंग्रेज मित्र इन ऐयाश सामन्तों की बहुत निन्दा करते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि इन सामन्तों की बहुत सी बातें सार्वजनिक रूप से निन्दा के योग्य हैं। इस समाज को बदलना ही चाहिए। मगर वह शासन पद्धति बदले या हम लोग ही बदलें। बाहर वाला आकर हमें क्यों बदले। शेखी बघारते हैं, यह गोरे लोग कि हमने तुम्हारे देश के कोने-कोने में तार लगवाए, रेलें चलवायीं। जहां-जहां इन राजे-महराजे और शाहों-नवाबों की रियासतें हमने अपनी हुकूमत में शामिल कर ली हैं वहां-वहां अमन चैन हो गया है।—सब सच है। मगर कितनी चालबाजियों से ये राज अंग्रेजों ने हासिल किए हैं।

किन्तु इस सारे दुःख के साथ ही बंसीधर यह भी अनुभव कर रहा है कि हम हिन्दुस्तानियों को इसकी शासन पद्धति और रीति-नीतियों को अच्छी तरह समझकर इनकी शक्ति को टक्कर देनी चाहिए। कानून को कानून से ही तोड़ा जा सकता है, हीरे को हीरा ही काट सकता है और जहर की दवा जहर ही होता है। हमे नयी शक्ति पाने के लिए अपने आपको बहुत बदलना पड़ेगा। हमारा समाज काई और दुर्गन्ध से सड़ा हुआ बन्द तालाब-सा हो गया है, इस पानी को फिर से स्वच्छ करना ही होगा।

अपने समाज मे सड़े गले पन को बदलने का बुखार जो तेजी से बढ़ा तो एक दिन

विपिन और बंसी दोनों ही चंपक का हौसला बढ़ा-बढ़ा कर उसे जबर्दस्ती अपने घर, अपनी बिरादरी की बडी-बूढ़ियों के बीच में चादर घूघट आदि के बंधन तोड़कर ले गया था। उस दिन कैसे-कैसे भूचाल आये थे, चमेली उर्फ चंपक के मन में। मिथ्या लाज का पानी बड़ी मुश्किल से जम-जम कर नये आदर्श का पत्थर बना था।

मिस्टर मोन्टीथ जो कि आमतौर से भारत के प्रशंसक थे, इन दिनों अत्यधिक कटु हो गए हैं। उन्हें हर हिन्दुस्तानी से इतनी नफरत हो गयी है कि दो दिन पहले बंसीधर से खिजलाकर कहा था : "मिस्टर टण्डन, व्यक्तिगत रूप से मैं तुम्हें पसन्द करता हूं, तुम निहायत शरीफ और जहीन आदमी हो मगर एक हिन्दोस्तानी की हैसियत से तुम भी मेरी नफरत के काबिल ही हो। यह हिन्दुस्तानी लोग निहायत ही धोखेबाज और कमीने लोग हैं।" सुनकर बंसी का चेहरा लाल हो उठा, फिर भी अपने क्रोध को दबा गया। इस समय उसका स्वार्थ सिद्ध हो रहा है, और उसे छोड़कर अंग्रेजो से व्यर्थ की रार बढाने में कोई रुचि नही है। इसलिए क्रोध को पीकर खुशामदी लहजे में कहा : "आपकी बात सही है सर, मगर मेरी राय नाकिस मे हिन्दुस्तानियों से नफरत करने के बजाय उनकी जेहनियत बदलना ही ज्यादह मुनासिब होगा। लार्ड मकाले साहब दुरुस्त ही फरमा गये हैं कि हमारे दिल और दिमाग मे अंग्रेजियत समा जानी चाहिए, तभी हम सुधरेंगे।" यह झूठ बोलते हुए उसे मन ही मन अपने प्रति कैसी ग्लानि उपजी थी, इसका ध्यान आते ही वह इस समय भी लज्जित हो उठा। गदर के इन दिनों में जो अंग्रेज ओहदेदार भी दुश्मनों अर्थात् भारतीयो की शूरवीरता की तारीफ करते थे, उनसे भी औसत अंग्रेज नाराज हो जाता था। कहता था, यह सब कानपुर के नाना पेशवा के रिश्वतखोर हैं। उन दिनों अंग्रेजों से मिलने का अर्थ उनसे अपना अपमान कराना ही था। मगर विलियम पिन्काट बिल्कुल दूसरे मिजाज का आदमी था। बंसी और उसकी दोस्ती पर आंच न आयी। एक दिन बोला : "तुम चिन्ता न करो टण्डन, तुम्हारी पढाई पर कोई आंच न आएगी। मिस्टर मोन्टीथ सब मिलाकर अच्छे आदमी है। इस समय चूंकि अंग्रेजों के ऊपर हिन्दोस्तानियों के अत्याचार हो रहे हैं। इसलिए वे भी नाराज हैं। मगर सब ठीक हो जाएगा। तुम्हे जहां कही अडचन आये, मुझसे पूछ लेना। 58-59 के बीच मे मैं तुम्हें जरूर मैट्रीकुलेट करा दूगा, ये तुमसे वादा करता हूं।"

सौभाग्यवती चपकलता टण्डन और सौभाग्यवती सुचरिता सान्याल को अंग्रेजी पढाने वाली यूरेशियन महिला मिसेस कार्नीलियस के पिता यों तो इटालियन और माता तुर्की थी, मगर उसका जन्म भारत की भूमि पर ही हुआ था। अंग्रेज, पश्चिमी बच्चो और स्त्रियो पर अत्याचारों की खबरो से वे दुखी अवश्य थे। मगर इनके घर उनका आना-जाना बन्द नही हुआ था। आजकल आते ही वे भारतवासियों के धर्मों पर कटाक्षपात किया करती थी। प्रभु यीशू की करुणा के गुण गान हुआ करते थे। प्रभु हिन्दोस्तानियों को सन्मति प्रदान करें, उन्हें अपनी भेड़ो मे दाखिल करें, इसी मे भारतवासियो का कल्याण हो सकता है। एक दिन सुचरिता का ब्रह्म तेज चमक उठा, बोल उठी : "यीशू हो या और कोई, भारत के प्राचीन उपनिषदो में जिस ब्रह्म को बखाना गया है, वही सबसे श्रेष्ठ है। जीजस-बीजस आपके पश्चिम के सब पैगम्बर हमारे ब्रह्म की करुणा की छत्र छाया में ही पलते है।"

सुनकर कार्नीलियस का मुंह फूल गया, वे उठकर चली गयी। बंगाली प्रथा के अनुसार दोनो ही सहेलिया एक दूसरे को बकुल फूल के नाम से पुकारती थी। चपक बोली : "यह तूने अच्छा नही किया बकुल! बुढ़िया अब हमें पढ़ाने नहीं आएगी।"

"अरे, न आय मरी। कौन हमें अंग्रेजी पढ़कर नौकरी करनी है और कामचलाऊ

तो हम लोग थोड़ी बहुत पढ़ ही लेती हैं। अब संस्कृत पढूंगी और तुझे भी पढ़ाऊंगी। ये ख्रीस्ती धरमवालों से अपना ब्रह्मो धर्म बहुत अच्छा है। अपने भाव, अपने शब्द, अपने ईश्वर की प्रार्थना तो हम लोग करते हैं। मैंने तो मैया हिन्दू धर्म भी देख लिया। हमारे ब्रह्म समाज से बढ़कर और कोई सच्चा धरम नहीं है।"

चंपक बोली : "हमारे वह बतलाते थे कि यहां के दक्षिणेश्वर मंदिर में कोई काली माई के पुजारी हैं, रामकृष्ण देव। वो देखने मे तो पागल जैसे लगते हैं पर असल में पागल नहीं, बड़े भारी पहुचे हुए जोगी हैं। वो साक्षात काली मां से बातें करते हैं।"

"होंगे'''हां, मैंने भी कुछ उड़ती खबर सुनी है मगर मैं तो भाई बकुल फूल, अब उसी को सच्चा योगी महातमा मानती हूं जिसने ब्रह्म से साक्षात्कार कर लिया हो।"

सुचरिता की इच्छानुसार ही उसके ससुर परेश बाबू ने एक बूढ़े पंडित रामतनु भट्टाचार्य को संस्कृत पढ़ाने के लिए नियुक्त कर लिया। रामतनु आजीवन ब्रह्मचारी रहे। वे ब्रह्मोमत के तो नहीं हुए थे, फिर भी अनेक ब्रह्मो घरों के बच्चों को संस्कृत भाषा पढ़ाई थी। उपनिषदों आदि के प्रकाण्ड पण्डित थे और गंगा के तट पर ही पुराने घाट की एक कोठरी में रहा करते थे। उनके पास दो देसी कुत्ते थे, एक का नाम उन्होंने रखा था 'यम' दूसरे का 'संयम'। दोनों उनके अगल-बगल चला करते थे। जिनके यहां पढ़ाने जाते थे, उनसे यह करार रहता था कि वे दूध में सानकर चार-चार मैंदा की लुचियां यम और संयम को नियमित रूप से खिलाएंगे। अध्ययन, अध्यापन और व्यायाम यही उनके तीन व्यसन थे। सुचरिता सान्याल के साथ चंपकलता टंडन भी उनसे संस्कृत पढ़ने लगी। बसीधर के मन मे अपनी पत्नी को संस्कृत पढ़ते देखकर मन ही मन एक तरह की ईर्ष्या होती थी। वह फारसी का पडित बना, अंग्रेजी भी पढ़ रहा है, किन्तु सस्कृत नहीं जानता। बचपन मे पड़ोस के वाजपेयी जी के यहा सुन सुनकर संस्कृत के उसने कितने ही श्लोक याद कर लिए थे। वाजपेयीजी संस्कृत भाषा पढने के लिए उसे कितना प्रेरित करते थे--यह सब याद आता है तो मुंह से ठंडी सांस निकल जाती है। खैर, वह न सही परन्तु उसकी पत्नी तो पढ़ रही है। अच्छा है, बंगालियों के पड़ोस में रहने के कारण चंपक को एक यह लाभ भी हुआ कि वह अब बांग्ला बहुत अच्छी बोल लेती है यद्यपि पढ़ने मे अभी कच्ची है।

मिस्टर मोन्टीथ गदर की घटनाओं के कारण आजकल न तो उससे फारसी पढ़ रहे हैं और न उसे अंग्रेजी पढ़ा रहे हैं। इतिहास, गणित, भूगोल आदि के प्राइवेट स्कूल में उसकी पढ़ाई तो चल रही है, परन्तु बीच-बीच मे उसके आंग्ल गुरु कड़ुवा तीता बोलते ही रहते, इससे बंसी का मन बहुत ही खिन्न रहता है।

उसे ठाकुर शिवरतन के साथ लखनऊ में अपनी अंग्रेजी पढ़ाई के दिन याद आ जाते हैं। अंग्रेज जाति में घमण्ड बहुत है, अपने आगे किसी को कुछ समझते ही नहीं, जिन-जिन जगहों को उन्होंने फिर से जीत लिया है वहां भारतवासियों पर उनके ऐसे अमानुषिक अत्याचार हो रहे हैं कि उनकी बातें सुन-सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते, सांसें थर्रा उठती। सुना कि अंग्रेजों ने घेरा डाल-डाल कर गांव के गांव पूरे जला दिए। जलती आग से जो निरीह बाहर निकला उसे गोरों ने संगीनों से गोद-गोदकर फिर आग में ढकेल दिया। स्त्रियों और बच्चों की निर्मम हत्या की। उन्हें हवा में उछाल-उछाल कर किरचों से गोदा, घर के पुरुषों को खंभे से बांध-बांध कर घर की स्त्रियों के साथ बलात्कार किए, फिर उनके पति व बच्चों को मार डाला। कलकत्ते में जो खबर आती है वह दहलाने वाली ही होती है। दिल्ली का गदर सात महीनों में ही उलट गया। शहजादे मारे गये और शहंशाह बहादुरशाह तथा उसकी बेगम को कैद करके लाया जा रहा है। लखनऊ,

कानपुर अभी बागी है। बेगम हज़रत महल, मम्मू खां, नाना पेशवे, तांत्या टोपे, लक्ष्मीबाई, अज़ीमुल्ला खां तथा मौलवी डंकाशाह जैसे लोग अब भी विद्रोह की आग को भड़काये हुए हैं। कम्पनी की बागी फौजों के जनरल बरकत अहमद ने फौजी पार्लियामेन्ट बनायी थी।'''सब कुछ हुआ पर विद्रोही लोग आपस मे मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ न लड सके। बडे-बड़े नवाब सामन्तो की इसी आपसी फूट के कारण अंग्रेज जीतते गए, हिन्दुस्तानी हारते गए। भारतवासियों के लिए जगह-जगह प्रलय मची हुई थी।

कलकत्ते मे दूर बैठे हुए बसीधर के मन में भी प्रलय मची हुई थी। इन अंग्रेजों की नौकरी करने की महत्वाकांक्षा से उसका मन कभी-कभी उचाट हो जाता था। बंसीधर को लगता कि अंग्रेजों की नौकरी करके वह अपने देश के स्वाभिमान का गला घोंटेगा। एक दिन परेश बाबू ने उसे समझाया, "अंग्रेज बुरे है, फिर भी इनके राज्य मे ऐसी अच्छाइयां हैं जो नवाबी या बादशाहत में नही थी। देखिए, हमारे कलकत्ते की स्त्रियों मे भी अब शिक्षा का कितना प्रसार हो चला है। हमारी लड़कियां भी अब काफी पढने लगी हैं। इनका ईसाई मत कबूल न कीजिए पर उनके शासन को कबूल करना श्रेयस्कर है। उसे प्रभु की इच्छा मानकर सादर स्वीकार कीजिए।" लाला रामचन्दर भी उसे समझाते: "भैया, अंग्रेजों से ही तुम्हारी किस्मत खुली है और आगे भी खुलेगी। इन लोगों को झुक कर सलाम करते रहो, इसी मे तुम्हारी भलाई है।"

मगर बंसी का मन कभी-कभी उसे बुरी तरह से धिक्कारने लगता। उन्ही दिनो दिल्ली का बादशाह और बेगम कैद करके पहले कलकत्ते लाए गए, फिर जहाज उन्हें रंगून ले गया। बादशाह और बेगम को कैदी के रूप मे देखने के लिए ऊचे-ऊचे, अंग्रेज, मेमों और हाकिमों के मनों में वैसी ही ललक उठने लगी—जैसे चिड़ियाखाने के अजब जानवरों को देखने के लिए होती है। उस दिन बसी का मन दिन भर बेहद खिन्न रहा। लगभग चौथे पहर जब बसी मिस्टर मोन्टीथ को अपना नियमित सलाम करके लौटा ही था तब उसे अपने घर के दरवाजे पर विपिन चंद्र खन्ना की फिटन और कोचवान मिले। कमरे मे घुसते ही विपिन ने बंसी से पूछा: "आप के उस्ताद का मिजाज ठिकाने आया जीजा जी?"

बंसी ने फीकी हसी हसकर कहा: "हां, अब तो आ ही जाएगा। जैसे-जैसे अंग्रेजों की जीत होती जाती है वैसे-वैसे उनका मिजाज भी बदलता जाता है। अब तो कभी-कभी यह भी कह देते हैं कि हिन्दुस्तानी जाहिल बर्बर है, उन्हें दण्ड देना चाहिए पर इतना अत्याचार भी नहीं करना चाहिए उन पर। और कहो, आज इतनी जल्दी अपना आफिस छोड़कर कैसे चले आये? कहो, तुम्हारे सर वाल्टर के मिजाज में भी कुछ अंग्रेजी भूत समा गया है क्या?"

"अरे नही जीजा जी, सर वाल्टर इस तरह के दिमागी फितूर नही पालते, और वैसे भी वे मुझे बहुत प्यार करते हैं।"

"तब फिर चेहरे पर पौने सात क्यों बज रहे हैं?" विपिन चंद्र ने शरमा कर सिर खुजलाया फिर चेहरा सावधान किया और सभल-संभल कर शब्द बोलते हुए कहने लगा: "मैं आपसे और जिज्जी से एक सलाह करना चाहता हूं।"

"क्या सीरियस बात है?"

"यस, यस वेरी सीरियस फार मी, और शायद मेरे घरवालों के लिए भी हो जाय। इसीलिए आपके पास आया हूं।"

चंपकलता तब तक भाई के लिए एक तश्तरी मे चार सदेश और पानी का गिलास लेकर आ गयी।

"बैठो जिज्जी।"

चंपक बैठ गई। मौन के क्षण कुछ आवश्यकता से अधिक लम्बे हो गए। विपिन एक संदेश मुंह मे डालकर घुलाता हुआ मौन रहा। पति-पत्नी पहेली भरी दृष्टि से एक दूसरे को देख रहे थे। चंपक एकाएक बोली : "किसी बंगालिन ने तो जादू नही डाल दिया मेरे भैया पर ?"

"जादू, यस। लेकिन जादूगरनी बंगाल की नही, अपनी बिरादरी की ही है।"

चंपक बोली : "तब फिर किस बात की चिन्ता है भैया, मैं चाची से···"

विपिन हल्का-सा मुस्कुराकर पानी का गिलास उठाते हुए बोला : "बात इतनी सरल नही है चमेलो जिज्जी जितनी तुम समझ रही हो।"

विपिन ने जो बात सुनाई उसके कथासूत्र आज से अठारह-उन्नीस वर्ष पहले पड़े थे।

जूट के बड़े व्यापारी लाला निक्कूमल के एक छोटे भाई जीवित थे। उनकी दो लड़कियां थी। बडी का नाम कित्तो, छोटी का नाम मैना। निक्कूमल के भाई हस्सोमल की हैसियत मामूली थी और दोनों भाइयों मे बनाव भी बहुत कम था। दोनों की स्त्रियां ही अलगाव का मुख्य कारण थी। हस्सोमल की बड़ी बेटी कित्तो का ब्याह सददीमल के बेटे गोपीनाथ से तय हुआ। हालांकि ब्याह बहुत खर्चीला नही था, फिर भी हस्सोमल की छोटी सी गोटे पट्ठे की दूकान बिक गई। दूकान बेचने पर पत्नी से कलह हुई जिसके कारण हस्सोमल जहर खाकर मर गये। नये आए हुए वैधव्य का दुख, अपने मन की ग्लानि, और आर्थिक संकटो की विषमता ने हस्सोमल की पत्नी के प्राण भी अचानक ही ले लिए। किसी से बैठी बातें कर रही थी कि एकाएक कलेजे मे दर्द उठा और बैठे ही बैठे लुढक पडी। अनाथ भतीजी मैंनो को निक्कूमल अपनी पत्नी के विरोध के बावजूद घर ले आये। निक्कूमल की बौटी मैंनो से इसलिए भी बहुत अधिक जलती थी कि वह उसकी दोनो लडकियो से नाक नक्श में बहुत सुंदर थी। निक्कूमल की बौटी के एक दूर के रिश्तेदार रामदित्तामल का दूसरा लडका कैलासो भरी नौजवानी मे दिक का बीमार था इसलिए बिरादरी का कोई भी व्यक्ति अपनी लडकी उनके घर न देना चाहता था। निक्कूमल की बौटी ने सारे जोड़-तोड़ मिला कर बडे सस्ते में मैंनो का ब्याह निबटा दिया। विरोध केवल जीजा ने किया पर उसका कुछ प्रभाव न पडा क्योंकि निक्कूमल अपनी पत्नी से रार मोल न लेने की इच्छावश मौन थे। ब्याह के बाद मैंनो साल भर में ही एक कमज़ोर बच्चे की मां बनी। जन्म के दस ही दिन बाद वह बच्चा मरा और आगे कुछ महीनों के बाद ही उसका पति भी। ससुराल वाले चाहते थे कि उसे पति की लाश के साथ ही सती करा दें तो बिरादरी में इज्जत बढ़ जाएगी। परंतु अंग्रेज सती-प्रथा के खिलाफ कानून बना चुके थे। छिपाकर ही यह पुण्य लाभ किया जा सकता था, पर सद्य विधवा मैंनो के प्रबल विरोध के कारण यह संभव न हो सका। उसके जीजा गोपीनाथ ने भी मुर्दनी के दिन ऐसे किसी प्रसंग पर मैंनो की ससुराल वालों के ढोंग भरे धर्म पर कुछ तीव्र कटाक्ष किए। मैंनो की ससुरालवालों ने पति की मौत के दूसरे ही दिन उसे घर से निकाल दिया। बेचारी चाचा निक्कूमल के घर में पहुंची। किन्तु निक्कूमल की बौटी के भीषण विरोध के कारण उनके पति अपनी भतीजी को घर में टिका न सके। अपनी बग्घी पर उसे साथ लेकर गोपीनाथ के यहां गए। कित्तो तब तक दो बच्चों की मां बन चुकी थी, अपने घर में उसका भी पूर्ण वर्चस्व था। उसके पति छापाखाना चला रहे थे, धन्धा अच्छा चल रहा था। घर में माया महिमा भी बोल रही थी, उसमें एक अन्य स्त्री का आना, भले वह सगी बहन ही क्यो न हो, कित्तो के घमण्डी स्वभाव को अखरा। छोटी

बहन से गुलाम की तरह काम लेने लगी। कित्तो कभी-कभी बुरी तरह से झिड़क देती, झोटे भी नोच लिया करती थी। मां की देखा-देखी बच्चे भी मौसी से ऐसा ही व्यवहार करते थे। घर में गोपीनाथ ही ऐसे थे जो छिपकर अपनी साली को सान्त्वना देते, कभी-कभी खाने-पीने की वस्तुए भी चुपचाप लाकर उसे खिला दिया करते थे।

एक दिन कित्तो को शक हो गया, घर में कलह हुई। गोपीनाथ ने किसी तरह उल्टी-सीधी पट्टी पढ़ाकर अपनी पत्नी को ठण्डा किया। गोपीनाथ ने अपने लिए नया घर बनवाया। नीचे छापाखाना, ऊपर रहने का ठिकाना। यहां एक कमरा मैनो के लिए भी अलग बना था। इससे कित्तो एक बार फिर भड़की थी, किन्तु तब भी अपनी शंका के कारण वह फिर उल्लू सिद्ध हो गई। तीसरी बार ऐसा हुआ कि एक रात मैनो के बंद कमरे के अन्दर से फुसफुसाहटें सुनाई दी। कित्तो ने कान लगाए तो यह जाना कि मैनो के दो महीने चढ़ चुके हैं और वह गोपी से शीघ्र ही दाई का प्रबन्ध करने के लिए कह रही है। यह कानों मे पड़ना था, कि कित्तो ज्वालामाई का प्रचण्ड अवतार बन गई। कमरे का कुण्डा बाहर से चढ़ाया और खुले में जाकर चीखने चिल्लाने लगी : "दाई अब मैं बुलाऊंगी। अरे, मेरी छाती पे बैठके ये दोनों चक्की पीस रहे हैं, मैं तो पहले ही कहती थी, कि यह रांड़ मेरी बहन नही आई है, घर में सौतन आई है।"

आस-पास बिरादरी वालों की ही बस्ती थी, थोड़ी ही देर में कुछ हमदर्द तमाशाई 'क्या हुआ, क्या हुआ', कहते वहां आ पहुंचे। कमरे का दरवाजा खोला गया, गोपीनाथ तमक कर बाहर निकले और कहा : "जिस औरत ने मेरा जीना दूभर कर रखा है उसे मैं अब अपने साथ नहीं रखूंगा। खाना-खर्चा ले और चली जाय यहां से। मैनो मेरे पास रहेगी।"

इसके बाद बिरादरी की जनानी मर्दानी जबानों पर बड़े-बड़े लंका-दहन हुए। गोपीनाथ और मैनो बिरादरी से निकाल दिए गए और कित्तो और उसके बच्चे गोपीनाथ के घर से। इन्हें पचास रुपए महीने का गुजारा मिला, और मैनो इस घर की मालकिन हो गई। सप्ताह भर पहले उसी मैनो और गोपीनाथ सेठ की लगभग पन्द्रह-सोलह वर्षीया पुत्री मधुकान्ता सेठ को विपिन ने अपने एक ब्राह्मो मित्र के यहां देखा था। मित्र के घर की लड़कियों के अलावा उनकी सहेली मधुकान्ता सेठ ने भी वहां कुछ ब्राह्म भजन गाकर सुनाए थे। कण्ठ बहुत मधुर और सुन्दर भी लाखों में एक। व्यापार मे दिनो-दिन चढ़ते हुए नई रोशनी वाले विपिन चंद्र खन्ना को जब यह पता चला कि लडकी अपनी ही बिरादरी की है तो अपने मित्र से उसका पता ठिकाना भी पूछ लिया। एक बार अपने बिजनेस के कुछ कागज-पत्तर छपाने के इरादे से गोपी बाबू के प्रेस में भी जा पहुचे। गोपी बाबू से मधु के सुन्दर गाने का जिक्र भी किया, अपना परिचय भी बतलाया। गोपीनाथ सेठ अपनी बिरादरी के इस उज्ज्वल नक्षत्र को लेकर ऊपर मैनो से मिलाने भी ले गए। बरसों से खत्री बिरादरी का कोई स्त्री या पुरुष उनके यहां नही आता था। पहले आए इस बिरादरी के हीरे की बड़ी ही खातिरदारी हुई। विपिन ने भी मधु के उठने-बैठने, बातचीत के सलीके, और मधुर कण्ठ की बडी ही सराहना की। मधु के माता-पिता ने विपिन की बातों के दूरागत अर्थ निकाले। मधु प्राप्ति की कामना को लेकर विपिन की मनोभावनाएं अब कोसों आगे निकल गई थी। उसने कहा : "जीजाजी, जदी मैं बिरादरी मे शादी करूंगा तो इसी लड़की से वर्ना हिन्दू धर्म छोड़कर क्रिश्चियन हो जाऊंगा।"

चंपक, सुचरिता को मन से स्वीकार कर चुकी थी। उसका अधर्म विवाह यदि चंपक को अब धर्म जैसा ही लगता था तो इस विवाह के लिए भी उसे अब कोई आपत्ति नही दिखलाई पड़ती थी। पर वह अपने चाची-चाचा को भी किसी हद तक जान चुकी

थी, उन्हें यह विवाह स्वीकार न होगा। बिरादरी वाले तो अंगारों जैसे सुलग उठेंगे। चंपक की बातें सुनकर विपिन ने फिर कहा : "मगर जीजी, शादी तो मैं अब इसी लड़की से करूंगा। सूरज भले ही यह पूरब के बजाय पश्चिम से निकल पड़े, मगर विपिन खन्ना का यह विचार बदल नहीं सकता।"

बंसी बोला : "ठीक है, यही होना भी चाहिए। मगर हर काम अक्ल से किया जाता है साले साहब। बंगालियों की तरह बहुत भड़भड़ा के बातें न करो। हर काम के लिए तरकीब निकाली जाती है। मेरे ख्याल में अगर किसी पुराने पंडित या बुजुर्ग से पूछोगे तो अलाउद्दीन खिलजी के जमाने में विधवा विवाह के मसले को लेकर ही यह बावन घर, ढाईघर, आठ घर वगैरह के भेद खत्रियों में हुए थे। उसकी जांच-पड़ताल करके तब बिरादरी के नक्कुओं की नाक काटेंगे।"

बिरादरी के पढ़ने वाले लड़कों की सूची बनाई गई। उनकी संख्या तीस निकली। फिर कुछ नए विचारों वाले ऐसे युवकों की सूची बनी जो अब हठपूर्वक अपनी पत्नियों को शिक्षा देने के लिए घरों में मिशनरी मेमें बुलाते थे। उनके सहयोग से 'यंगमेन्स एसोसिएशन' बना। बंसीधर टण्डन की छत पर ही उसका अधिवेशन हुआ। बंसीधर ने बड़ा विचारोत्तेजक भाषण दिया। बंगाली आगे बढ़ रहे हैं, हम इसलिए पीछे पड़ते जा रहे हैं कि तुम अपने निकम्मे समाज के गलत बन्धनों को भी नहीं तोड़ सकते। उत्तर भारत में गदर की इन घटनाओं के बाद अब यह साबित होता चला जा रहा है कि भारत पर अंग्रेजों का राज होगा और इसलिए जैसे कलकत्ते में नया जमाना आ गया है, उसके काबिल नए बनने में अगर हम अगर मीर रहे तब तो ठीक है, वर्ना तबाह हो जाएंगे।

इस भाषण का गहरा असर हुआ। बिरादरी के बहुत से लोगों से एक साथ जान-पहचान प्राप्त करने का यह पहला ही अवसर बंसी को मिला था। विपिन ने खाने-पीने का भी सबका प्रबन्ध कर रखा था। अगले कुछ दिनों में बंसी ने बिरादरी के उन युवकों से फिर अलग-अलग भेंटें कीं।

कलकत्ते में कुछ खत्री और सारस्वत ब्राह्मण परिवार सीधे पंजाब से ही आकर बस गए थे। विपिन की मार्फत बंसी ने उनमें से कुछ पुराने लोगों से सम्पर्क स्थापित किया। खत्री बिरादरी केवल बनारस, फैजाबाद, लखनऊ, आगरे या दिल्ली तक ही नहीं, पूरे पंजाब और अफ़ग़ानिस्तान तक में फैली हुई है। बड़े-बड़े ओहदों पर खत्री लोग काम करते थे। महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में अनेक वजीर और ओहदेदार खत्री ही थे। पंजाब में साहूकारी, महाजनी और धन्धे रोजगार अधिकतर खत्री लोगों के हाथ में ही थे।

पंडितों के अनुसार परशुराम के इक्कीस बार क्षत्रिय संहार करने के बाद जो गर्भवती क्षत्राणियां, ब्राह्मण ऋषियों की शरणागत होकर छिप गई थीं, उन्हीं से उत्पन्न सन्तानें खत्री कहलाईं। कहते हैं कि अलाउद्दीन खिलजी के काल में उसके बहुत से खत्री शूर वीर दक्षिण की लड़ाई में मारे गए। तब खिलजी ने यह सुझाव रखा कि खत्रियों में विधवा विवाह का प्रचलन होना चाहिए जिससे कि एक शूर-वीर जाति का लोप न हो जाय। इसी बात पर पंचायत पड़ी। दीवान उजागरमल खत्री और चौधरी लल्लू और जगधर ने बड़ी पैरवी की, मगर किसी ने उनकी बात न मानी। तभी से 'ऐसी तैसी लल्लू जगधर' वाली कहावत चली।

खत्रियों में ढाई घर, चार घर, बारह घर, बावन घर, आदि भेद माने जाते हैं। ढाई घर वाले खत्री केवल ढाई घर वालों में ही अपनी कन्याएं देते हैं किन्तु चार घर वाले, चार घर वाले खत्रियों की कन्या ले लेते हैं। खत्रियों में सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी और

अग्निवंशी मुख्य हैं। मेहरा, मेहरोत्रा, धवन, कक्कड़, बेदी, सौंधी, सहगल, चोपड़ा, सूरी आदि सूर्यवंशी, खन्ना, कपूर आदि चन्द्रवंशी और टण्डन अग्निवंशी हैं। बंसीधर टण्डन को अपने टण्डन कहलाने के दो रोचक प्रमाण मिले। बिरादरी के एक मसखरे कपूर बुजुर्ग बोले : "अरे ये टण्डन असल में टन्नन हैं, बड़े टन्ने, लड़ाकू।"

दो पंडितों का यह मत था कि 'टण्डन' वह कहलाए जो कि युद्ध के लिए सदैव प्रस्तुत रहे। 'टन्टा' या 'टन' धातु युद्ध के अर्थ में ही बोध कराती है। इसलिए क्षत्रिय जाति में अधिक युद्ध प्रिय दल टण्डन कहलाए। दूसरे पंडित ने कहा कि ये शब्द मार्तण्डन्य मे निकला है। सूर्यवंश में अंगिरा ऋषि हुए, उनके बेटे हविर्भुजे, हविर्मुजे माने अग्नि। तीसरे टाण्डिनी गोत्र से टण्डनों का निकास बतलाते हैं।

इतिहास की पूछ-ताछ से बंसीधर को टण्डनों की युद्धप्रियता से स्फूर्ति मिली। इस बात से भी बल मिला कि अलाउद्दीन खिलजी के काल मे विधवा विवाह के प्रसंग को खत्री जाति मे एक बार बल मिल चुका है। कुछ ही वर्षों पहले कासम बाजार के राजा ने विधवा विवाह के संबंध मे बड़े-बड़े पंडितों का शास्त्रार्थ कराया था। विधवा-विवाह उस समय कलकत्ते के ब्राह्मधर्मियों मे प्रचलित भी हो चला था, इसलिए बंसीधर को अपने समाज के नव चेतना के प्रति उन्मुख लोगो मे एक तीव्र वैचारिक आन्दोलन चलाने का अवसर मिला। सौभाग्यवती चंपकलता भी अपने भाई और पति के पक्ष मे ही बोल रही थी। बंसीधर और चंपक समाज में नई चेतना के वाहक बन गए। बिरादरी में दो तड़ बन चुके थे, आपस मे खूब गर्मा-गर्मी और एक-आध जगह तो मारपीट भी हो गई। लेने के देने पड़ गए।

ग़दर दब चुका था, इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया ने कम्पनी से शासन के अधिकार ले लिए थे और वे अब भारत की साम्राज्ञी का पद ग्रहण कर चुकी थी। लखनऊ की बेगम हज़रत महल ग्यारह महीनों की मोर्चाबन्दी के बाद शहर छोड़कर अब दूर बौंडी रियासत मे बैठी हुई अवध का अन्तिम युद्ध मोर्चा सम्भाल रही थी।

यह सारी चिन्ताएं मन-ही-मन मे उलझा अवश्य लेती थी परन्तु बंसीधर अपनी आगामी मैट्रीकुलेशन की परीक्षा की चिन्ता ही को प्रमुख महत्व दे रहा था। पढ़ाई मेहनत से चल रही थी। उसकी खुशामदों से और विद्रोह के दमन में अंग्रेजों की सफलता के कारण मोन्टीथ साहब का मिज़ाज अब करीने पर आ गया था। भारत में गदर की हलचलों से व्याकुल, विलियम पिन्काट की इंग्लैण्ड में रहने वाली माता अपने एकमात्र पुत्र विलियम पिन्काट की चिन्ता में घुलते-घुलते बीमार हो गई थी। उसके अत्यन्त बेकली भरे पत्र पाकर अपनी बहन और जीजा के आग्रह से पिन्काट छुट्टी पर इंग्लैण्ड जा रहे थे। विपिन चन्द्र खन्ना ने अपने जीजा के परम मित्र और अपने उपकारी के सम्मान में एक शानदार विदाई भोज दिया। सर वाल्टर और उनकी पत्नी तो आए ही, बंगाल के छोटे लाट की पत्नी, पिन्कॉट और बंसी की मित्र नैन्सी भी आई। हाशिम मियां की सहायता से शाहे-अवध के बावर्चियों का सहयोग मिल गया था, इसलिए दावत बड़ी शानदार रही। नैन्सी ने चंपकलता को साग्रह अपने पास बिठलाया। उसकी सुन्दरता और टूटी-फूटी अंग्रेजी पर रीझ कर वह बार-बार हंस पड़ती थी। नैन्सी ने चंपक को मोतियों का एक हार भी भेंट में दिया। इसका सभी उपस्थित समाज पर बड़ा प्रभाव पड़ा। बिरादरी के लगभग सभी नवयुवक इस भोज में शामिल किए गए। निक्कूमल के बेटे परसोत्तम नाथ अपनी पत्नी के साथ अंग्रेजी पोशाक मे आए थे। इस समाचार की बिरादरी भर में बड़ी ही गर्म चर्चा रही—यह जो म्लेच्छों के साथ भोजन कर आए हैं, और परम पवित्र हिन्दू

जाति की दो सम्भ्रान्त महिलाएं तक उस भोज में शामिल हो आई हैं, उन सबका क्या किया जाय ? निक्कूमल जैसे बड़े आदमी के बेटे ने यह जो धर्म विरोधी कार्य किया है, उसका उसे क्या दण्ड दिया जा सकता है ? घरों-घरों मे जबानों की महनामथ मची हुई थी। बंसी ने विपिन से कहा : "तुम किसी तरह बर्दवान के राजपुरोहित या उसके किसी लड़के-वड़के को पकड़ लाओ। और हो सके तो बर्दवान के राजा बनविहारी कपूर का एक आशीर्वाद पत्र भी लेते आओ।"

विपिन बोला . "एक सहवारे मे यह सब काम हो जाएगा जीजाजी।"

"मैं निक्कूमल के बेटे बब्बू मैंए को पटाता हू। तुम्हारी होने वाली बीवी आखिर उस खानदान की दोहती है। तुम्हारी शादी के इन्तजाम मे गोपीबाबू के साथ उन्हें ऐक्टिवली नत्थी कर देना चाहता हू। पुराने लोग उनसे विगडे तो हैं ही, इस शादी से भड़क कर, देखें वे लोग क्या करते हैं।" यद्यपि सेठ निक्कूमल को अपने दोनों बेटो का विलायती रहन-सहन पसन्द नही आता था पर पिन्काट के विदाई भोज में सम्मिलित होने के कारण उनके बड़े बेटे और बहू का जो नाम उछाला गया, उससे वे नाराज थे। उन्होने बब्बू और झब्बू से कहा : "अपने लिलुआ वाले बगीचे की कोठी मे ब्याह का परबन्ध करो। भाडे की बग्घिया तीस-चालीस जित्ती मिलें, सब अभी से पक्की कर लो, और जित्ते बिरादरी वालों को तुम लाय सको ले आओ। मैंफिल तगडी होय, अच्छी-अच्छी तवायफो को अभी से ही साई दे दो, मैं इन सालों को नाकों चने चबवा दूगा।"

सर वाल्टर के प्रयत्न से गोरों का बैण्ड-बाजा भी तय हो गया। चार घोड़ों की खुली बग्घी पर विपिन चंद्र खन्ना सवार थे। लाला रामचन्दर को निक्कूमल के दबाव के कारण इस विवाह में शामिल होना पड़ा। बरात बड़ी धूम-धाम से निकली, लेन देन मे न गोपीनाथ ने कसर रखी और न लडकी के नाना लाला निक्कूमल ने। विपिन की मां चूकि अभी प्रबल विरोधी थी इसलिए बंसीधर के घर के पास ही बने हुए एक नए घर की दोनों ही मंजिलें किराए पर ले ली गई थी। विपिन विहारी नए रईस वन रहे थे, पिन्काट की बहन सर वाल्टर की पत्नी नि:सन्तान होने के कारण विपिन को अब पुत्रवत मानने लगी थी। नए घर की सजावट मे उन्ही का उत्साह भरा योगदान था।

नयो की चाल से बिरादरी के पुराने लोग बड़ी अर्दब में फस गए थे, जात बाहर करें तो किस-किस को करें ? पुरानी जबानें लखनऊ के बसीधर को कोस रही थी, जिसने यहां आकर यह 'घोर कलजुग' फैला दिया। और बंसीधर इस सामाजिक युद्ध में विजयी होकर ग़दर के पराजय की कुंठा से मानो उबर चुका था। उसकी मैंट्रीकुलेशन की परीक्षाएं आरम्भ हो गई थी।

जीजा जब परीक्षा में उत्तीर्ण हुए तो विपिन ने फिर एक शानदार दावत दी। उस अवसर पर आए मोन्टीथ साहब ने बंसी से कहा : *"टण्डन, तुमने कलकत्ते में रहने का फ़ैसला ही कर लिया है, या लखनऊ वापस जाना चाहोगे ?"*

बंसी बोला : "जरूर जाना चाहूंगा सर, लेकिन अगर वहां मुझको काम मिल जाय।"

"एक मिदान ने मुझसे लखनऊ में चार मिडिल स्कूल खोलने की योजना बनवाई है, मैं तुम्हें एक का हेड मास्टर बनवा सकता हूं। अंग्रेजी पढने वाले विद्यार्थी जितने अधिक-से-अधिक तुम ला सकोगे उतनी ही तुम्हारी सफलता मानी जायगी। और वेतनमान मे भी उसी प्रकार से बढोत्तरी होगी।"

घर आकर बंसी ने चंपक से सलाह की। उसके गर्भ का दूसरा महीना चल रहा था। यहां लाला रामचन्दर और उनकी पत्नी चूकि इन दोनों से असतुष्ट हो गए थे, इस-

लिए चंपक सोचती थी कि बच्चा होने के समय यदि उसकी ससुराल वालों ने भी सहयोग न दिया तो नवाबगंज से अपनी मां या भावज को बुलाने में उसे सुविधा होगी।

विपिन, मधु और नीचे का परेश परिवार विशेष रूप से विवेक और सुचरिता उनसे कलकत्ता न छोड़ने का आग्रह कर रहे थे, परन्तु लखनऊ जाना प्रायः निश्चित हो गया। ले जाने लायक सामान बांधा जाने लगा। डाक से लाला मुसद्दीमल को बंसी ने अपनी अवाई का पत्र भी भेज दिया। विदाई का दिन उंगलियों की पोरों पर आ चला था

14

कलकत्ते से पटने तक स्टीमर मे आये, वहा से बनारस तक छोटे स्टीमर मे। साथ लाए हुए सामान का बड़ा चक्कर था। विपिन ने हठ करके इनका विलायती फर्नीचर सब लखनऊ तक के लिए बुक करवा दिया था। बनारस से उसे माल ढोने वाली एक बड़ी नाव पर लादकर गोमती की राह से लखनऊ के लिए रवाना किया, और बसी, चमेलो तथा उनका प्रिय कुत्ता 'एन्जिल' डाक गाड़ी से रवाना हुए। उन दिनों पोस्टमास्टर को तीन चार दिन पहले ही सूचना देनी पडती थी कि कब प्रस्थान करेंगे, कहां-कहां ठहरेंगे, घोड़ा गाड़ी से यात्रा करेंगे या बैलगाड़ी अथवा पालकी से। डाक मास्टर तब कहारो का प्रबन्ध करता था। जो यात्री पालकियों में जाना पसन्द करते थे उन्हें पालकी और सामान ढोने वालो से आप ही सौदा तय करना पड़ता था। दो-दो कहार आगे-पीछे लगते हैं, और चार साथ चलते हैं जो कंधा बदलते हैं। रात में यात्रा के लिए दो मशालची भी साथ लिए जाते हैं। गर्मी मे पालकियो की छत और दरवाजो पर खस के पर्दे पड़े होते हैं, जिन्हें तर करने के लिए एक भिश्ती भी साथ-साथ चलता है। बनारस से ही जगह-जगह गदर में विध्वंस हुए क्षेत्र दिखलाई पडने लगे। घोड़ा गाडी में भारतीय यात्रियो की भीड़ कम थी, सयोग मे अंग्रेज यात्री भी केवल तीन ही थे, एक दंपति युगल और तीसरा फुट्टल जो आदमी से अधिक घी के कुप्पे सा लगता था। बीच-बीच मे सो भी जाता था, उसके खुर्राटे खर्र खोंऽ ओंऽ ओऽऽ ओऽऽ खुर्रः की आवाजो भरे इसे झटके से चढ़ते-उतरते थे कि टडन दंपति और अंग्रेज दंपति साथ ही साथ मुस्कुरा उठते थे। एंजिल उन हैवानी खुर्राटों पर एक बार जोर से भौंक पड़ा तो अंग्रेज पत्नी खिलखिला कर हस पड़ी। 'घी का कुप्पा', साहब चौंक कर जागा, और चंपक शरमा कर अपने कुत्ते को दबे मीठे स्वर में डांटने लगी। बंसीधर अंग्रेजी पोशाक मे था, और चंपकलता भी पर्दानशीन 'लेडी' न थी। अंग्रेज दंपति इस भारतीय दंपति से अंग्रेजी मे बातें करके बहुत ही प्रसन्न हुए। बसीधर बहुत ही नफीस और धाराप्रवाह अंग्रेजी भाषा मे बात करता था। चंपकलता सम्हल-सम्हल कर बोलती थी, लेकिन आम तौर से शुद्ध अंग्रेजी बोलती थी। बीच में दोनो दम्पतियों ने आपस में फलो का आदान प्रदान भी किया। शाम को फैजाबाद के डाक बंगले पर पहुंच गये।

अपने कमरे मे पहुंचकर बंसीधर कुछ देर आराम करने के बाद बाहर टहलने निकला। डाक बंगले से कुछ हटकर एक छोटी सी सराय-सी बनी थी, और उसके बहुत पास ही एक शिवाला था जिसके चबूतरे पर दो दालान और दो एक कोठरियां बनी थी। बैलगाड़ियां, दो तीन माल ढोने वाले खच्चर, कुछ घसियारे, फूस की झोपड़ी मे आबाद एक हलवाई की दूकान, शिवाले के चबूतरे पर एक भांग-ठंडाई वाले की दूकान थी जिसमे लगे हुए अथवा सादे पान, कत्था-चूना आदि सामान भी बिकता था। एक आध दो बहरूपिये, देहाती किस्म की नाचने-गाने वालियां, जो यात्रियो को रात्रि का सेज सुख देने के लिए भी ललचाकर अक्सर उन्हें लूट लेती थी। सराय के बाहर मैदान में तीन-चार खटियां डाले आठ-दस आदमी एक टीप दार आवाज वाले गवैये का गाना सुन रहे थे—

कैसा केसरबाग बनाया
मजा हजरत ने न पाया।
हाय रामा मजा न पाया।
लाले-लाले कपडे जोगियन का बाना
मेला रौनक दार लगाया, मजा हजरत ने न पाया।

एक पहलवान छाप सज्जन नंगे बदन, अंगोछा पहने ओजस्वी बाणी मे कवित्त सुना रहे थे :—

चहलारी को नरेश निजदल मो सलाह कीन,
तोप को पसारा जो समीपै दागि दीना है।
तेगन से मारि-मारि तोपन को छीन लेत,
गोरन को काटि-काटि गोधन को दीना है।
लंदन अंग्रेज तहां कंपनी की फौज बीच;
मारे तलवारिन के कीच करि दीना है।
बेटा श्रीपाल को अलेंदा बलभद्र सिंह,
साका रैंकवारी बीच बांका बांधि दीना है॥

भीड़ से कुछ हटकर चबूतरे के पच्छिमी कोने पर जगह-जगह यात्रियो के पड़ाव मे एक संड-मुस्तंड दढ़ियल जटाधारी साधू और उसके दो चेले एक कोने मे बैठे हुए दो पुरुष, दो स्त्रियों को शायद धर्म के उपदेश देने के बाद प्रसाद के लड्डू बाट रहा था। पड़ाव मे इधर-उधर टहलते हुए बंसीधर अकस्मात् उसी समय उधर पहुंच गया। साधू अपने भक्तों को बतला रहा था: "लेओ परसाद पाओ, अजुध्या जी की सीता रसोइया मा महरानी सुयम अपने कर कमलन ते सिरी-सिरी राम सरकार के खातिन जौन बिन्जन बनाय के परोसे रहे वहिका परसादु बड़े भाग ते मिलत है। तुमरे पंचन के बड़े भाग आएं, जो मिल रहा है इ परसाद। जै सियाराम।"

सोने के कड़े-छड़े आदि पहने दोनो स्त्रियां बड़ी श्रद्धा से उन लड्डूओ को अपने हाथ मे लेकर साधू बाबा को दण्डौत कर रही थी, कि बंसी कड़क कर बोला: "खबरदार, इन लड्डूओं को कोई खाना मत।"

"तू कौन है बाबू जो हमार भक्तिन का बहकाए रहा है?"

बंसी ने उसी रौब में कड़क कर पास बैठे पुरुष से कहा: "वह सामने गोरा साहब

खड़ा है, बुला लाओ जरा, अभी इनके लड्डूओं और परसाद की जांच कराता हूं।"

शोर सुनकर आसपास बैठे कुछ लोग आ गये। बंसी ने कहा : "पकड़ो इन बदमाशों को, ये जहर मिले लड्डू खिलाकर इन बेचारी शरीफ औरतों को लूटना चाहते हैं, बुलाओ पोस्ट मास्टर को। माताओ, अपने ये लड्डू फेंक दीजिए। ये परसाद-अरसाद कुछ नहीं ढोंग है।"

भीड के कुछ लोग बंसीधर की बात का समर्थन करने लगे। साधु और उसके चेले अपने चिमटे ले-लेकर झपटे। गदर के बाद हर डाक बंगले पर गोरे अफसर की कमान में आठ-दस सिपाही मौजूद रहते थे। क्योंकि डाक बंगले का एक भाग अंग्रेज यात्रियों के लिए सुरक्षित रखा जाता था, शोर सुनकर गोरा चबूतरे पर निकल आया। भीड में बंसीधर पर एक साधु को झपटते देखकर तुरन्त ही अपने सिपाहियों और बन्दूकों के साथ उस ओर झपटा। पास आते-आते तक उसने एक हवाई फायर का धमाका भी किया। देखते ही साधु पलटा, बंसीधर को धक्का देकर गिरा तो दिया, किन्तु स्वयं चेलों के साथ भागा। गोरे ने फायर किया, उसकी जांघ में गोली लगी, एक चेला गुरु को सम्हालने के लिए झपटा, उसके टखने पर भी दूसरी गोली लगी। तीसरा चेला बगटुट भागा। सिपाहियों ने साधू के झोले और चिमटे पर कब्जा कर लिया। झोले में कुछ लड्डू थे, धतूरे के बीज और एक डिबिया में संखिया का सफूफ भी मिला। गोरा साहब क्रोध से तमतमा उठा, अपने जूते की एक ठोकर घायल साधू की पीठ पर लगायी, किसी सिपाही ने प्रस्ताव किया कि साहब ये लड्डू इन्हीं साधुओं को खिलाइए। इस पर साधू गिड़गिड़ाने लगा। घायल साधुओं ने यह स्वीकार किया कि इन लड्डूओं में धतूरा मिला हुआ है। लोग-बाग चर्चा करने लगे। इलाहाबाद, जौनपुर, गाजीपुर, फैजाबाद आदि कई स्थानों में ठग लोग इसी तरह बैरागी बनकर यात्रियों को ठगते हैं। एक ने बतलाया कि कानपुर से पच्छिम इटावा-आगरे के रास्ते में ठग लोग ब्राह्मण या कायस्थ के वेष में भी यात्रियों में मिल जाते हैं और तरह-तरह से जान-माल लूटते हैं।

लखनऊ के पास पहुंचते ही मस्जिदों के ऊंचे कंगूरे और मीनारें दिखलाई देने लगीं। तनकुन का दिल उछलने लगा। लखनऊ—अपना लखनऊ—आ गया। थकन में भी ताजगी लिए हुए गाड़ी से उतरे। घोड़े बैलों के रथ, इक्के, दो-चार घोड़ा गाड़ियां और फीनसें यात्रियों की प्रतीक्षा में थीं। तनकुन एक बग्घीवाले से चौक के लिए भाड़ा पटाने लगा। तभी पीछे से आवाज आयी : "ए टोपवाले बाबू साहब, चुंगी का महसूल देते जाइये।"

"आता हूं यार, जरा तो गम खाओ।"

काठ के दो सन्दूक जनाने-मर्दाने कपड़ों से भरे थे, कुछ खिलौने थे, और एक काठ की पेटी में रसोईघर के बर्तन भांडे, कुछ आटा, दाल, चावल आदि की पोटलियां थीं।

"ये तो साहब सब बाहर का सामान है।"

"बाहर से क्या मतलब? अरे हम साढ़े-तीन चार बरस से कलकत्ते में रहते थे, तो बर्तन वहीं खरीदे।"

"जनाब, आपका फर्माना दुरुस्त है, मगर ये बर्तन चूंकि पहली बार लखनऊ आये हैं, इसलिए इन पर महसूल देना पड़ेगा।"

बंसी ताव खा गया, बोला : "आप कानून के खिलाफ हमसे चुंगी नहीं वसूल कर सकते। ये इस्तेमाल किया हुआ सामान है, ये पहने हुए कपड़े हैं। हां, ये खिलौने हम जरूर बच्चों के लिए लाए हैं इनका जो रुपया अधेली पड़ता हो लीजिए और जान छोड़िए।"

वह ठिगना सा काला आदमी जिसके पट्टेदार बालों में उस्तरे से एक नाली सी

बनी थी, बोला : "जी हां, इनका महसूल तो आपको देना ही होगा, मगर यह विलायती पोशाक जो आप पहने हुए है, ये जेवरात और अंगूठियां"

बंसीधर गुस्से से कांप उठा, फिर भी संयम के साथ किन्तु कड़क कर बोला : "खां साहब, आप जानते नहीं कि मैं कौन हूं। मैं इस शहर के नये अंग्रेजी स्कूल का हेडमास्टर बनकर आया हूं। क्या समझे ? मेरे लिए कलकत्ते के अफसर साहबान ने यहां के हाकिमान के लिए ख़त लिखकर दिए है। रिपोर्ट कर दूंगा तो कल आपकी नौकरी चली जाएगी।"

खां साहब बंसी को घूर कर देखने लगे, फिर कहा. "साहब, आपकी बात पर भरोसा करके छोड़े देता हूं। खिलौनों का एक रुपया नजर कर जाइये।"

बंसी ने रुपया देकर पीछा छुड़ाया।

"एक रुपया और इनायत फरमाइए, हुज़ूर।"

"वह किस बात का ?"

"अजी अधेली मे बाल बच्चों की परवरिश करके आप को दुआ दूंगा और अधेली के दिन भर पान खाऊंगा। आदाब-अर्ज है।"

बंसी की इच्छा अपनी पत्नी को साथ लेकर घर जाने की नही थी। उसका पर्दानशीन न होना, बनारस मे लेकर यहा तक तमाम रास्ते भर लगातार पहेलिया बुझवाता रहा है। एक देसी औरत की विलायती बेपर्दगी को वे देसी निगाहें घूर-घूरकर देखती रही। वह सोचने लगा कि ऐसी दशा मे हमारी गलियो, घर और बिरादरी मे क्या कुछ न कहा-सुना जाएगा। इसकी कल्पना से ही वह आतंकित था। किन्तु चपकलता अपने पति से अधिक हठीली सुधारवादी थी। उसने कहा : "एक बार चद्दर और घूघट हटाने मे मेरे मन ने जितना संकोच तुम्हारी आज्ञा से झेल लिया उसे अब तुम्हारी सलाह से भी अपने मन पर फिर न चढाऊंगी। वह भी झेला, यह भी झेलूंगी।"

बंसीधर फिर ऊपर से तो चुप हो गया था, परन्तु इस समय अपने शहर की सडकों से गुजर कर घर जाते हुए उसका संकोच उसके मन की घुटन रह-रह कर बढा रहा है। फिर भी रास्ते भर पत्नी के आगे जबान न खुली। जगह-जगह खण्डहर, कई जगहो पर तो गाड़ी का चलना भी ऐसा ऊंचा-नीचा और झटकेदार होता था कि गर्भवती पत्नी को लेकर आगे बढना बहुत ही कष्टदायक होता था। आगे कुछ दूर तक सडक पर गिरे हुए मलवे को पाट कर उसे ऊंची और सलोतर बनाया गया है जिससे पुरानी बची-खुची बस्तियां पाताल लोक मे बसी हुई-सी नजर आती है। आस-पास दिखलाई देने वाली गलियां संकरी और कीचड़भरी दिखलायी दी। कही-कही सडे हुए घूरे की दुर्गन्ध के भपके बड़ी जोर से नाक का स्पर्श करते है। मस्जिदें अधिक नही टूटी, अब भी बहुत-सी हैं। अक्सर कुछ शिवालो के शिखर भी दिखलाई दे जाते हैं। जहां पहले जौहरी बाजार और मीना बाजार थे, वहां अब गधे चरते है। इमामबाड़ो मे, किसी मे डाकघर, किसी में अस्पताल और छापेखाने खुल गये। जिन हौजों में कभी बेदमुश्क के सुगन्ध की लपटें उठा करती थी, वहां अब निर्लज्ज गोरे खड़े-खड़े पेशाब कर रहे हैं। लखनऊ की दुर्दशा देखकर बंसीधर का मन एक बार फिर अंग्रेजो के प्रति घृणा मे भर उठा। यह सच है कि कभी विलासी लखनऊ के हर तौर-तरीके पर वह चिढा करता था। यहा के आम लोगो की बातो में जवानों पर तवायफो के कोठो की सौतिया सियासत और हुस्न-इश्क की बेतुकी तमतरानियां सुनकर उसे अपने नगरवासियों, यहां के रईसों, नवाबो और बादशाह के प्रति घृणा जाग उठती थी, किन्तु आज अंग्रेजों द्वारा भ्रष्ट और निस्तेज किये गये अपने नगर का यह रूप देख कर उसे बेहद मानसिक कष्ट हो रहा था।

शहर को सुन्दर बनाने के नाम पर तेजी से बड़े-बड़े परिवर्तन किये गये। बेली-

गारद से दिलकुशा तक पुराना सब कुछ मिस्मार करके सड़क बनी, उसके दोनों तरफ पेड़ लगे। नालों के ऊपर पुल बने। मोतीमहल के पास मिर्जा की कोठी तोड़कर गोमती नदी पर पक्का पुल बना। जिसे बदरों की बहुतायत के कारण 'मंकीब्रिज' कहा जाने लगा। दिलकुशा के पास रेल का पुल बना। मोहम्मद बाग के पास बाईस गावों की जमीन चौरस कराके सदर छावनी बसी, सड़कें बनीं। बड़े इमामबाड़े के पास से दो चौड़ी सड़कें निकाली गईं; एक कर्बला तालकटोरा होती हुई आलमबाग तक और दूसरी चारबाग तक। यह दोनो कानपुर रोड से जोड़ी गईं। महल्ला संगीमहल, हुसनबाग सब मिट गये, बस चौक का गोल दरवाजा ही बाकी रहा। नवाबी इमारतें या तो अंग्रेज सरकार ने गिरवा दीं या फिर दारुलशफा, खुर्शेदमंजिल, कंकड़वाली कोठी जैसी इमारतें बेच दी गईं। गोलागंज के पच्छिम में पुराना शहर बचा, पूरब में अधिकतर अंग्रेज बस्ती, बीच-बीच मे हिन्दुस्तानी ओहदेदारों के इक्का-दुक्का बगले। कितना बदल गया है, लखनऊ।

शहर के आम लिबासो पर नजर पड़ने पर उसे कभी-कभी अपने अंग्रेजी लिबास पर झिझक भी हो उठती थी, मगर वह केवल एक सतही भावना का उच्छ्वास भर ही सिद्ध होती थी।

एक पुराने टूटे-फूटे मन्दिर और उसकी दीवार के किनारे से उगे हुए विशाल बरगद की छाव मे एक बड़ा भारी तखत पड़ा हुआ था। बग्घी वहीं आकर रुकी, सामान उतरा। तीन मजदूर तय किये, उनके सिरो पर अपना सामान लदवाया। फिर चूड़ीवाली गली, छोटी-कालीजी, भैरो वाली गली होते हुए अपने घर की ओर बढ़ा। गलियों में आते-जाते लोग छड़ी और कुत्ते की जंजीर पकड़े हुए एक 'साहब' और एक देशी मेम को देख-देखकर चौंकते थे। झुकी कमर के लठिया टेक कर चलते हुए, बड़ी-बड़ी मूछो वाले गब्बन गुरु भी नजर आये। वे तो आखें चुंधिया-चुंधिया कर इन्हें देखते ही रहे पर बंसी ने उन्हें पहचान लिया। फिर भी महल्लेदारी के चलन से पैर न छुए, आगे बढ़ गया। एक कहार का लड़का मस्ती मे गाता हुआ इनकी बगल से गुजरा—

"पल्लू ढाक के चलो री मेरी बन्नो
चक आलम लुट जायगा।"

"भौं-भौं," एंजिल भौंका। लड़का गाना छोड़कर तुरंत उछल कर दो हाथ पीछे हो गया। गलियों में चलती आवारा गायो से बचाव के लिये बसीधर अक्सर अपनी चंपक के दायें या बायें हो जाता था। आवारा कुत्ते टण्डन दम्पति के 'एन्जिल' को देखकर क्रोध भरे कर्कश स्वर में भौंक उठते, मानो देसी लोग विलायती विजेताओं के प्रति अपना आक्रोश दिखला रहे हों। बंसी की 'केन' उन्हे पास आने से रोक लेती। टीला पार किया और मुसद्दीमल का घर आ गया। बाहर की दीवार गोलियो और छोटे गोलो के निशानों से भरी पड़ी थी।

गदर के गोलो के दाग तो पुराने पड़ गये थे, मगर अफवाहों के गोले-गोलियों के ताजे निशान गली-गली, घर-घर के अनगिनत कलेजो मे जो शर्बती घाव कर रहे थे उनका अनुमान न बंसीधर को था और चपकलता को ही। "अरी नन्दो सुना, मुसद्दीमल का बेटा और बहुरिया कलकत्ते से आये हैं। हाय, उनका लड़का तो बिल्कुल गोरा जन्टूमैन हुई रहा हैगा, और उनकी बहुरिया भट्टा ऐसा मुंह खोले, कुत्ता साथ मे लिए आए रही हैगी। अरे ऐसी कलजुग की चालें दिखाई हैं कि हे ईसुरनाथ! अरे तुमसे क्या बतावैं ऊंची एडी का सलीपट्ट भी पहने हैगी। हाय-हाय, कैसा कलजुग दिखाया हैगा भगवान ने!"

"सच्ची कहती हैगी धन्नो।"

"अरे, हमसे किसम ले लो, जिसकी कहो उसकी किसम खाय जांय। हमें झूठ बोल-कर कोई पाप चढ़ावना है।" धन्नो बीबी ने अपने कान पकड़ के और आंखें ऊपर उठाकर फिर गंभीर होकर हाथ का पंजा नचाते हुए तनिक धीमे स्वर में बोली : "हमरी जान मां तो किरिस्टान होकर आये हैं ई लोग।"

"हुई सकत हैं, भाई।"

"फिर तो मास-मछली, सब निखिद्द चीजें जरूर खाए लगे हुइ हैं। हाय राम घोर कलजुग आय गया। अब बताओ नन्दो कि महल्ले बिरादरी मे रहैंगे तो दुसरे लरकन, बहुरियन पर असर पडेगा कि नहीं। ऐसेई जब से गदर पड़ा हैगा, तब से लरकन के दिमाग दूसरे हुइ गयें हैंगे। क्या होवैंगा परमात्मा। जान पड़त हैगा कि कलजुग चारो चरन टेक दिहिस हैगा अब तो।"

बसी ने अपने घर का कुण्डा खटखटाया, तभी गली के भीतर मे चुन्नू पहलवान आते हुए नजर आये। चुन्नू काया से तो सीक-सलाई जैसे थे लेकिन चलते थे पहलवानी ढब से। खिचड़ी मूंछें, घुंघराले पट्टे दार बाल जिनसे तेल चू-चू कर उनके कुर्ते पर टपकता था, आंखों में सुरमा डाले, तीतर का पिंजरा हाथ मे लिये चले जा रहे थे। घर कर देखा, आंखों के ऊपर हाथ लगाकर बहुत चुंधियाई दृष्टि से बंसी के मुख पर त्राटक साधा, और बोले : "अरे तनकुन, फैलकत्ते से कब आये भाई?"

"बस चला आ रहा हूं, देख तो रहे हो।"

"और ई साथ मां कौन है, कलकत्ते से कौनो बाई जी, आई जी लै के आये हो क्या?"

तनकुन का चेहरा लाल हो उठा, लेकिन कुछ न कहा।

"ओए होय, इ बिलैती कुत्ता भी लाए हौंगे ससुरा।"

तब तक दरवाजा खुल चुका था। भग्गो महरी उन्हे देखकर खिल पड़ी : "अरे आव-आव बड़े भाग।" फिर लौट कर आंगन की ओर भागी, और ऊपर मुंह उठाकर कहा : "अरे बौआ, देखो-देखो कौन आया हैगा।"

ऊपर से बौआ की आवाज आयी : "कौन है भग्गो?" बहुआ छज्जे पर आकर नीचे झाकी। साहबी पोशाक में बौआ अपने बेटे को एकाएक पहचान न सकी।

"अरे हम हैं बौआ, तनकुन।"

नीचे के घर का अंधेरा 'एन्जिल' को अटपटा लगा, वह भौंक उठा। ससुराल मे पहली बार आयी चंपकलता भी सनाका खाकर एन्जिल को धीरे से डांटकर चुप कराने *लगी। ब्याह के बाद बिदा होकर दो दिनों के लिए आयी थी, उसकी फूल चोटी हुई थी,* ढोलक के गीत हुए थे। मगर तब वह सात-आठ बरस की थी, और उसकी उस समय की स्मृतियां बहुत-कुछ धुंधला चुकी थीं। तनकुन और उनकी बौटी का आना सुनकर बड़के भैया, छुटके भैया और गुमानी भैया तीनों की पत्नियां और बच्चे धड़ाधड नीचे उतरने लगे। बौआ भी नीचे आयी तो अपनी चौथी पुत्रवधू को देखकर एकाएक ठिठककर खड़ी हो गयी। वह पैर छूने के लिये झुकी तो सिमट कर पीछे खड़ी हो गयी। "न, न हमे छुओ न बौटी, हम पूजा करत-करत उठ के आयी हैंगी। ओ तनकुन, अभी तुम लोग बाहर से आये हो, यही बैठक में बैठो। नहाए-धोए के धुले कपड़े पहन के ऊपर अइयो। और ई कुत्ता ऊपर न आवै। कहां का निखिब्द प्रानी ले आया, न धरम, न करम, न सरम। ई सब तुमरी बिलैती चाल हियां न चलिहै बेटा।" कहकर बौआ फिर ऊपर चली गयी।

तीनो जेठानियां भी उतर आयी थी, किन्तु सास का छुआछूत का विचार देखकर

चंपक ने उन्हें केवल हाथ भर जोड दिये, पैर न छुए। देवर, देवरानी का बैठक में प्रवेश कराकर सामान की पेटिया दालान मे रखवाकर बड़के, छुटके और गुमानी की बहुएं बैठक मे आयी। बडके की बौटी ने कहा: "तनकुन लाला, हमरी देवरानी से पर्दा-उर्दा नहीं करायो क्या ?"

उत्तर मे स्वय चंपक ही बोली: "कलकत्ते में पर्दा-वर्दा नही होता है जिठानी जी। जब मेरी आदत एक बार छूट गयी तो अब सदा के लिये छूट गयी समझिये।"

छुटके की बहू बोली: "पर यहा रहोगी तो सब करना पड़ेगा।"

"क्यो करना पड़ेगा ? ये बुरी आदतें तो मैं आप लोगों से भी छोडने को कहूंगी।"

"हममे तो भैया तुमरी ये अंग्रेजी मते की बातें कभी नाही हुई सकत हैंगी। हिन्दुअन के घर मे ई किरस्तानी वाल नही चलैंगी।"

नहाए-धोए कपड़े बदले। कुछ जलपान किया। कलकत्ते से लाए हुए उपहारो की बात सुन कर सब प्रसन्न भी हुए, लेकिन देवर देवरानी की किरस्तानी किसी के गले के नीचे न उतर सकी। बंसी ने घडी देखी, अभी कुल जमा एक बजा था। दिन का भोजन करने के बाद साहब लोग लगभग ढाई-तीन बजे अपने दफ्तरों मे लौटते हैं। बंसीधर ने नया सूट पहना, कलकत्ते के मिस्टर मौन्टीथ तथा अन्य साहबो से लायी गयी चिट्ठिया जेब मे रखी और बाहर चला गया।

चंपक ने कुत्ते को दूध रोटी मीज के डाली और नीचे ही दलान में खम्भे से बाध दिया। फिर नहाई धोई और कपड़े बदल के ऊपर गई। सबके लिये कलकत्ते से लाई हुई भेंटें दी। उन्हे देखके सबके चेहरे कुछ चिकने हुए। पर तरह-तरह की बातें, कुछ कटूक्तियां हुईं, कुछ सीधे प्रश्न भी पूछे गये। चंपक मन ही मन कुछ चिढी तो अवश्य पर दबग रही। उसने नये सुधारो और नये समय का समर्थन किया। कहा: 'ये तो यहां सरकार की तरफ से स्कूल खोलने आए हैं, लेकिन मै भी स्त्रियों के लिये स्कूल खोलूंगी। देखिये, कलकत्ते के बंगाली स्त्री पुरुष कितनी तेजी से तरक्की कर रहे हैं। मैं भी आप सब लोगों को, जो चाहेगी उन्हे अंग्रेजी पढाऊंगी, नागरी पढाऊंगी, संस्कृत भी पढाऊंगी।"

दिन ढले तक बात स्त्रियो में ही नही, सनातनी पुरुषो मे भी फैल गयी कि ये पति पत्नी दोनों क्रिस्टान हो के आये हैं। कुत्ता भी साथ लाये है, घर-घर का धरम बिगाडेंगे।

बेंदी वाली गली के पहले ही लाला भोलानाथ की हवेली पड़ती थी। भुल्ली बडे महाजन थे, बहुत मोटे थे, इतने कि आबदस्त भी नही ले सकते थे। दो नौकर उन्हें साफा लगाते थे। बडी-बडी सफेद मूछें, मुह में पान भरे हुए झरोखे में बैठे गली की ओर ही देखते रहते थे। उन्हें एक ही विनोद सदा सूझता था, गली में आते-जाते जिस किसी पर उनकी मौज आ जाती उस पर अपने पान की पीक थूक दिया करते। अगर वह चिढकर गाली देता तो भुल्ली लाला का एक तगड़ा नौकर जो दरबान के पास बैठा ही रहता था गली मे उतरकर उसकी अच्छी-खासी धुनाई कर देता था। लेकिन पान की पीक पड़ने पर कुछ न बोलने वाले को रोक कर लाला नयी धोती, कुर्ता, दुपट्टा, टोपी और एक अंगोछा भेंट किया करते थे। ऐसे ही पीक सने एक बुड्ढे ने ऊपर मुह उठाकर हंसते हुए कहा: "अरे लाला जी, अब तो अपनी बिरादरी वालो पर थूकिये, जो अपनी जुरुआ को बेपर्दा बनाय के और आप भी साहब जन्टमैन बन के आये हैं और कुत्ता भी साथ लाये हैंगे।"

नौकर उस व्यक्ति को दो चार हाथ लगाने के लिए गली में उतरा, मगर लाला ने ऊपर से मना कर दिया और कहा: "इसको नये कपडे लाकर दो।" फिर पीक पड़े हुए व्यक्ति से पूछा: "कौन आया हैगा रे ?"

"लाला मुसद्दीमल के साहिबजादे जो बड़े आलिम—फाजिल हैं, अंग्रेजी पढ़न

खातिर कलकत्ते गए रहे।"

भुल्ली लाला की त्योरिया चढ़ी "कौन, वह तनकुन ? कुत्ता लाय, हे ?"

नौकर के द्वारा दिये गये कपड़े हाथो मे लेकर वह व्यक्ति बोला : "अरे कुत्ता भो ऐसा गोरा चिट्टा हैगा कि जैसे मेम का पिल्ला होय। एक पावली और दिलवाओ लाला जी नसा पत्ती करें, गोमा जी जायके नहाय-निबटे तुम्हें दुआएं दें।"

ऊपर से कम्पनी सरकार का चलाया हुआ नया चार आने का सिक्का गली मे गिरा।

कहने वाला व्यक्ति तो सिक्का उठाकर चला गया, मगर भुल्ली लाला के गोल मटोल चेहरे पर गभीरता का तोबडा भी लटका गया। भीतर की ओर मुह करके आवाज लगाई : "कोई है ?"

नौकर बुधई तुरन्त हाजिर हुआ।

भुल्ली लाला बोले . "रजोले पाधा को जाये के बुला लाओ, कहना हमने फौरन बुलाया है।"

थोडी देर मे रजोले पाधा आये, और आते ही पूछा : "कहिये लाला, क्या हुकुम है ?"

"अरे भई हमने सुना हैगा कि कलकत्ते से मुसद्दीमल का पढा लिखा लडका आया हैगा।"

"जी हा लाला जी, सुना तो हमने भी यही है। एक गोरी चिट्टी औरत भी साथ है। अब राम जाने जुरुआ हैगी कि कोई बाई जी, आई जी लाये हैंग। साथ में कुत्ता भी हैंगा। पर ये सब अभी हमने अपनी आखों से देखा नही लाला जी, सुनी हुई बात है।"

"तो जायके तसदीक करो, इसीलिए हमने तुम्हें बुलाया हैगा। पता लगाओ कि क्या किरिस्टान हो गया है और वह औरत कौन है ? और कुत्ता क्या सचमुच आया हैगा ? और अगर ये खबर सच हैगी गुरु, तो मुसद्दी साले को रद्दी बनाय के बिरादरी से बाहर निकलवाय दूंगा।"

अन्नदाता जिजमान का हुकुम पाते ही रजोले पाधा मुसद्दीमल के घर पहुंचे। आगन में घुसते ही खम्बे से बंधे 'एंजिल' पर उनकी नजर पड़ी। एंजिल भी उन्हे देखकर भौं-भौं कर उठा। गुरु ऊपर की सीढ़ियां चढने से पहले ही बोल उठे : "अरे बहुआ, ई कुत्ता तुमरे घर मां कब से आया भाई ?" कहते हुए ऊपर गये। सामने तखत पर बैठी पखा झुलाती बहुआ से उन्होने फिर यही प्रश्न किया।

बहुआ शर्मा गयी, कहा : "कलकत्ते से तनकुन और उनकी बोटी आए हैंगे न, वही लाये हैंगे।"

"तो क्या धरम-उरम बदल दिया है, तुमरे बेटे ने ?"

"नही, ऐसी तो कोई बात नही हैगी महराज, हा, थोडी-बहुत नयी चाल के मते में आय गया हैगा।"

"वो सब ठीक हैगा बौआ, पर हमरे पवित्र सनातन धर्म के महल्लो मे अधर्म नही चलेगा। ई कुत्ता अबही की अबही घर से निकलवाए दो। बिरादरी वाले बहुत भडके हैं।"

चंपक तिमंजिले पर गुमानी की पत्नी के पास बैठी रजोले की बातें सुन रही थी। जब एंजिल को निकालने की बात उन्होंने दो बार कही तो तुरन्त नीचे उतर आयी। और हाथ जोडकर कहा : "महाराज, इस समय आप की आज्ञा का पालन नही हो सकता। जब तक मेरे पति नही आ जाएंगे, तब तक मेरे कुत्ते को कोई हाथ भी नही लगा सकता।"

एक युवती का इस तरह सतेज स्वर मे बोलना सुनकर पाधा जी एक बार सकपका

गये। फिर उनका ब्रह्म तेज उबल पड़ा : "नही निकालोगी, तो हम तुम सबों को जात से बाहर निकलवाय देंगे। हमारा पवित्र सनातन धर्म भ्रष्ट नही होगा।"

"ब्रह्म सबमे समान रूप से बिराजते हैं, और ये कुत्ता --देखिए कितना नहाया धोया साफ है, इसको आप अपवित्र कैसे कह सकते हैं ?"

पाधाजी और कुछ उखड़ी-उखड़ी बातें करने लगे, पर चंपक विनम्र किन्तु कठोर स्वर मे बोली : "आपकी सारी बातों का निर्णय मेरे पति के आने पर ही होगा, इस समय मैं कुछ भी न करने दूगी।"

बात इस घर में हुई, लेकिन तोप के गोलों की तरह उसका धमाका सात गलियों में सुनायी पड़ने लगा। चंपक की सास और छुटके-बड़के की पत्नियां उसकी तेजस्विता से अपने मन के क्रोध को न सम्हाल पायी। बडके की बौटी जो ऊपर के मंजिल मे छज्जे पर अपनी सास के साथ ही खडी थी, एकाएक जोर से बोली : "बहुआ घर की बड़ी तुम होगी, कि अबही दुई घडी की आई भई ई हमरी देवरानी हैंगी। पाधाजी से ऐसी बेजबानी हमरे घर के मरद तक नहीं कर सकत हैं, और ई नवाबगंज वालो उनके सामने फटाफट मूं चलाउत हैंगी। भला ई कोई कैदा है, चार दिन कलकत्ते क्या रह आई कि भट्ठा जैसे मुंह खोल के बडन के आगे चबड-चबड़ जबान चलाउत हैंगी। हमरा आजै हिस्सा बंटवारा कर देओ बीआ, हम नही रहैंगे इनके साथ।"

पीछे कहीं से छुटके की बौटी की आवाज आयी : "जब जिठानी जी बंटवारा कर रही हैं तो हम भी करैंगे, ई बात का फैसला आजै के आजै हुई जायगा, बीआ।"

बीआ जो अभी तक चुपचाप खड़ी नीचे की तरफ ही देख रही थी, अब छज्जे से हटकर यह कहते हुए पीछे लौट चली : "संझा बिरियां जब मरद-मानुस लोग घर मे आ जायेंगे तबही सब बातन का हेस-नेस होवैगा। जाओ सब लोग अपने काम में लगो। कहां की आई हमरे घर ई कुलच्छिनी !"

सास की बातें चंपक ने चुपचाप सुनी, और नीचे के खण्ड में उतर गयी। एंजिल उसे देखकर दुम हिलाने और पास आने के लिए उछलने लगा। चंपक को लगा कि पति ठीक ही कहते थे, इस घर मे आना उचित नहीं था। उसे कलकत्ते का मुक्त जीवन याद आ रहा था, लगता था कि जैसे स्वर्ग से निकल कर वह इस रौरव नरक मे आ पडी हो। उसके तन-मन के अन्दर पनपता हुआ अपना नया-नया मातृत्व मानो एन्जिल को प्रतीक मानकर उमडा पड रहा था। खम्बे से एन्जिल की जंजीर खोली और बैठक के कमरे मे चली गयी। तीसरे जेठ गुमानी की बौटी बैठक मे आई। एन्जिल ने भौंकने के लिए सर उठाया ही था कि चपक ने उसे दबा दिया। वह चुप होकर बैठ गया। गुमानी की बौटी बोली : "देवरानी और सब बातें तो बाद में होवैंगी, पहले ये बताओ कि हम तुम्हें देवरानी कह के पुकारें कि तुमरा नाम लेके पुकारें ?"

गुमानी की बौटी के मुख के हाव-भाव देखकर मन की कटुता मिसरी की डली सी मन मे घुलने लगी। वह हंस पडी। पति की सगत मे रहते-रहते खड़ी बोली बोलने का जो सहज अभ्यास उसे हो गया था, उसे वह सहज भूल गयी और अपने नवाबगंजी देसी बोली में कहा : "हमरे तो भई दुई नाम हैं जिठानी जी, एक मां-बाप ने रखा रहा, दुसरका तुमरे देवर ने कलकत्ते मे रखा। मा-बाप का धरा नाम चमेली हैगा, और ई हमे चंपकलता नामि दिहिन है।"

गुमानी की बौटी हंस पड़ी : "तुम बड़ी भागवान होगी। तुमरे मैके का नाम भी बहुत अच्छा हैगा, चमेली के फूल की तरह महकत भया। हमरे तो बाबा हमरा नाम बिटान रखिन रहा, सो मैंके मे तो वही पुकारा जात रहा, और यहा तो फलाने की बौटी—फलाने

की बौटी सब कहत हैंगे।"

चंपक ने मुस्कराकर उसे अपनी ओर खींचा, और अपनी बांह से चिपटा सा लिया। बोली : "हम तुम्हें जिज्जी कहेंगे तुम हमे चमेली, चमेलो जो जी चाहे पुकारो।"

गुमानी की बौटी के मन का परायापन भाग गया, बोली : "पहले-पहल तो ससुराल मां आई हो और तुमको कोई खान-पियन को भी नही पूछा हैगा। कैसा बुरा लगत है।"

चंपक ने मुस्कुराकर कहा : "अरे जिज्जी, कौन सी चिन्ता लगाई तुमने, देखो इत्ते फल अभी हमारे पास रखे हैं। लेओ ये लेओ, खाओ।"

उसकी बात को टालकर गुमानी की बौटी ने नया रुख मोड़ा, बोली : "अच्छा ये बताओ कि तनकुन लाला की तरह तुमहू अंग्रेजी में कुछ पास-ऊस करके आई होगी।"

"नही, मैंने तो वैसी अंग्रेजी नही पढी जीजी, हां थोड़ी बहुत जानती हूं। संस्कृत भाषा भी इन्होंने हमे पढ़ावी है।"

"संस्किरत! तबही तुम पाधाजी से जबान लडाय सकी।"

"मैंने उनसे कोई अभद्रता नही की जीजी, लेकिन बात का जवाब तो देना ही होगा। और तुम ऊपर जाकर सबसे कह दो, कि तुम्हारे देवर के आते ही मैं उनसे कह दूंगी कि कोई नया घर ढूंढ़ लेंगे।"

"अरे काहे जाओ नये घर में, ई घर में तुमरा भी हिस्सा हैगा, हमरा भी हिस्सा हैगा।…"

दहलीज से खरखराती हुई मर्दानी आवाज आयी : "अरे कहां हो?"

बैठक में एन्जिल ने भौंकने के लिए सिर उठाया। चंपक उसे दबाकर उठ खड़ी हुई और सिर पर हल्का सा घूंघट काढ कर बैठक से दालान मे आयी। ससुर के आगे झुककर ठोक दी। चंपक का घूघट इतना नीचा नही हुआ था कि मुंह न दिखायी पड़े। न देखे हुए चेहरे को एक झलक देखकर बोले : "अच्छा-अच्छा, कलकत्ते वाली है। हमने रस्ते में ही सुना कि बहू मेम की तरह चद्दर-उद्दर उतार के आयी हैं। सुना कुत्ता भी साथ लेके आयी है।"

चंपक चुपचाप खडी रही, तब तक गुमानी की बौटी बैठक के कमरे से लम्बा घूघट काढ़कर दालान से गुजरी, और ऊपर की सीढ़ियों पर तेजी से चढ गयी। मुसद्दीमल ने एक पैनी नजर से उसे देखा, और फिर आप भी सीढ़ियों की ओर पग बढाते हुए एकाएक पल भर ठिठक कर खड़े हुए, और शांत गम्भीर स्वर मे तनकुन की बौटी की ओर हल्का सा मुंह घुमाकर बोले : "हमें तुम्हारे बिलैती सुधारों की फिकर नही है बौटी, ये तुमरा दोष थोड़ी हैगा, हमरे तनकुन बाबू तो कलकत्ते जाने से पहले बिलैती मिजाज के हुई गये थे।"

मुसद्दीमल अभी जीने पर ही थे, कि ऊपर के खण्ड से बौआ की आवाज आने लगी: "कोई साहब बने या मेम, हमसे कोई मतलब नही हैगा। बाकी रजोले पाधा ये कह गये हैंगे, कि हमरे घर मां कुत्ता रहैगा तो सब के सब जात बिरादरी से बाहर कर दिये जायेंगे।"

चादी की मूंठ वाली छडी टेकते हुए, धोती, अंगरखा, दुपट्टा और पगड़ी पहने हुए, खिचड़ी मूंछों वाले, लाला मुसद्दीमल की त्योरियां ऊपर के दरवाजे तक पहुंचते-पहुंचते तन गयी थी। सीढ़ी के कोने में झट-पट जूते उतार कर भीतर आते हुए बोले : "पाधा—आधा कोई होयें साले, किसी को बाप को मजाल नही है जो हमें बिरादरी से बाहर कर सके। जब से अंग्रेजी राज्य आया हैगा कित्ते साले बिरादरी वाले अंग्रेजन के बंगलन पर आउत जात हैंगे। उत्ते-कुत्ते सब साले खसामद मे छुअत हैंगे। एक-एक की जन्मपत्री हम खोल के धर

देंगे।" कहते हुए सहन मे पड़ी खाट पर बैठकर अपनी पगड़ी, दुपट्टा उतारा और अगरखे के बंद खोलने लगे। बौआ ने कमरे से अंगोछा लाकर तखत पर रखा, और कहने लगी : "औरन की जन्मपत्री जब बिगाडोगे तब बिगाड़ोगे, तुमरे घर की तो अबहियन से बिगडी जात हैगी। बडके-छुटके की बौटिया बंटवारे के लिए कह रही हैंगी।"

मुसद्दीमल कुछ न बोले, अंगरखा उतारा, कुर्ता उतारा, फिर कहने लगे : "हमरा अंगोछा कहां है ?"

पास ही रखे हुए अंगोछे को हाथ से छूकर खाट पर बैठती हुई बौआ बोली : "ई मन्डे पर ही तो धरा हैगा। कैसी बौटी आयी हैगी निगोड़ी कि सात महल्लन मा हमरे घर की बदनामी आवतै आवतै ही फैलाय दिहिस। न लिहाज न सरम, भट्टे जैसा मुह खोल कर घर में आयी और मर्दन से जबान लडाये लगी।"

बौआ की जबान बड़ी देर तक चलती रही। लाला श्री कि कृष्ण, एक शब्द भी मुंह से न बोले। तनकुन का सबसे छोटा भाई गनेसो सामने खड़ा दिखलायी दिया। लाला बोले : "गनेसो, हमरा हुक्का ताजा करो।"

रात को घर पर मुसद्दीमल के सब लड़के मौजूद थे। छुटके की बौटी ने ब्यालू के लिए रोज की तरह उडद की पिट्ठी भरी परोठियां, आलू की रसेदार और घुइयां की सूखी तरकारियां बनायी थी। जब लाला ने पूछा तो यही बतला दिया गया। सुनकर बोले : "वाह, आज हमरे यहा त्योहार के ऐसा खुसी का दिन हैगा, झम्मो, लपक के हट्टीराम की चढाई पर जाओ और राम आसरे के यहां से चार आने का आम का मुरब्बा और चार आने की नौरतन चटनी ले आओ। और गनेसो, तुम जायके बुढ़िया के हियां से दुई सेर रबडी लै आओ।"

घर के कर्ता की आज्ञा के विरुद्ध भला कौन बोल सकता था। किन्तु अपनी पत्नी के द्वारा उल्टे-सीधे कान भरे जाने के कारण बड़के का मुह कुछ चढ़ा हुआ था, बोला : "*चाचा, अब इस घर मां हम सबका निभाव इकट्ठा नहीं होमेगा।*"

गुमानी भी अपनी पत्नी से अपनी दोनो बड़ी भाभियों की बातों के संबंध मे बहुत कुछ सुन आया था। तनकुन के प्रति पिता के कोमल भाव देखकर उसे भी कुछ शह मिली, बोला : "निबाह न होने की भला कौन बात है। एकाएक कौन-सी बड़ी खराबी आ गयी है इस घर में, जो निबाह न हो ?"

छुटके की पत्नी मे अभी कोई बात नही हुई थी, और वह अपने बड़े भैये की तरह अपनी जोरू का पूरा-पूरा दास भी नहीं हुआ था, इसलिए गुमानी की बात के समर्थन मे कहा : "निबाह खूब होता है। दिल में जगह चाहिए, अच्छे-अच्छे घरों के बच्चे साले गली के कुत्तों को छूते है, अपने हाथ से रोटिया खिलाते हैंगे साले…।"

"पर घर मे तो नही घुसाउत हैगे।"

"कीचड मे सने रहत हैंगे साले, हमरे तनकुन का कुत्ता तो एकदम लाट डलहौजी के बाप जैसा लगत हैगा। अबही गदर के कतले आम के बखत अंग्रेजो सालों ने किस-किस के घर में घुस के इज्जतें नही बिगाड़ी हैंगी, कोई जरा आयके हमरे सामने मुंह खोलें तो हम बतावैं।"

इस गर्मा-गर्मी को देखकर चुपचाप खाता हुआ तनकुन बोला, "बड़के भैये, छुटके भैये, आप लोग अपने मनो को शान्त रखें, मैं कल ही अलग मकान ले लूगा।"

मुसद्दीमल बोले : "कोई जरूरत नही। इन चोट्टी के आधे-पाधों की बातो से मैं दबने वाला नही हूं, बडके। इसी साले रजोले की भौजाई मुसलमान मनिहार के साथ भाग गई रही, तब हमने और मुन्नेमल ने खडे होकर इनको बिरादरी से बाहर होने से

बचाया था, तुम पैदा भी नहीं हुए थे तब तलक।"

तनकुन की बौटी सौभाग्यवती चंपकलता तब तक अपनी ससुराल की ऊपर की मंजिल में चढ़ी तक न थी। गुमानी की बौटी नीचे आयी, तब तक तनकुन भी नीचे आ चुका था। अपनी तीसरी भौजाई—भावज नम्बर तीन को देखकर मुस्कराया, कहा: "कहो भौजी गुमानी भैये से क्या लड़ाई कर आयी हो, क्या हमरे पास सोओगी?"

"अरे, हम तो अपनी चमेलो को ऊपर बुलावै खातिर आई रही, अब इससे संस्किरित पढ़ेंगे, अंग्रेजी पढ़ेंगे। चलो चमेलो, हमरे साथ ऊपर चलो, सा : में बैठकर खायेंगे दोनो जने।"

बाहर अंधेरी गली में कोई मन चला जोर-जोर से गाने से अधिक रेंकता हुआ चला जा रहा था। "बरेली के बजार में झुमका गिरा रे।"

15

रात बैठके में ही बीती। हालांकि गुमानी और उसकी पत्नी ने बहुत आग्रह किया कि ऊपर हमारे पास चलो। मुसद्दीमल ने भी कहलवाया कि तितल्ले में अपने कमरे में जाकर सोवो, पर एंजिल ऊपर नहीं जा सकता था इसलिए चंपक राजी न हुई। उसे भय था कि अकेले में 'एंजिल' के साथ कुछ दुश्मनी की कारस्तानी हो सकती है। अपने घरो और महल्लों के ईर्ष्या द्वेष जन्य कृत्यों से वह खूब परिचित है। बैठक में गर्मी थी। सीलन और मच्छर भी थे। मच्छर तो कलकत्ते में भी थे इसलिए मच्छरदानी बिस्तर में साथ ही आई थी। रात में अगल बगल लेटे पंखा डुलाते हुए पति ने पत्नी से कहा: "इसीलिए मैं सराय में ठहरने की बात कहता था।"

"वहां ठहरना इससे भी बुरा होता। यहां अपने लोगों से मिल तो ली। किससे कितनी निभेगी इसका अनुमान तो लग गया। आगे इन्ही सबसे काम पड़ेगा।"

"और जो बिरादरी से बाहर निकाल दिये गये तो? उस वक्त क्या यह सब लोग काम आयेंगे?"

"अब तक जैसा सबका हाल देखा है उससे तो यह लगता है कि चाचाजी, गुमानी जेठजी और उनकी बौटी यह सब हमारे पक्ष में रहेंगे।"

"चाचा पर बहुत भरोसा न करना, उनका मिजाज घडी के पेंडुलम की तरह अक्सर दायें बायें होता रहता है। बहुआ इस मौके पर भले भी तुमसे नाराज हो गई हों पर बड़ी काम आयेंगी···खैर, इस वक्त तो मुझे स्कूल खोलने की फिक्र है। आज चीफ कमिश्नर के सेक्रेटरी से मिल आया, उन्होंने फरमाया कि स्कूल के लिए कोई मौजू बगला तलाश करूं। कल सुबह बाबू त्रिलोकी नाथ के यहां जाऊंगा।"

"ये कौन हैं?"

"हमारे बिरादरी की एक बहुत रईस औरत है, मन्नो बीबी।"

"जिनकी बिटिया से तुमरा ब्याह होन वाला रहा ?" चंपक सहज घरेलू बोली में पूछ बैठी।

"ठीक समझी।"

"उसकी शादी इन्ही त्रिलोकी बाबू से हुई है। काम-काज में तो बहुत ही होशियार है। ससुराली रकम में कुछ न कुछ इजाफा ही किया है, मगर अपनी ब्याहता के अलावा एक युरेशियन औरत को रख छोड़ा है। फिलहाल ससुराल की हवेली के आधे हिस्से में ही उन्होंने अपनी विलायती रखैल को भी रख छोड़ा है। पिछली बार जब मैं तुम्हें बिदा कराने के इरादे से इधर आया था, तब उनसे जान-पहचान हुई थी। बिरादरी वाले तो खैर उनके बहुत खिलाफ हैं, मगर फिलहाल उन पर किसी का बस नहीं चल पाया। बड़े रसूक के आदमी हैं। उन्हीं के जरिये स्कूल के वास्ते भी जगह तलाश करूंगा और अपने रहने के लिए मकान भी।"

दूसरे दिन घर से कलेऊ करके त्रिलोकी बाबू के यहां जाने के लिए कपड़े पहन ही रहा था कि त्रिलोकी बाबू का बिल्ले चपरास वाला खानसामा आ पहुंचा। अदब से फर्शी सलाम झुकाकर बोला . "सरकार हुजूर को याद फरमा रहे हैं।"

"मैं उन्हीं के यहां जाने की तैयारी कर रहा हूं।"

"मैं हुजूर के लिए सवारी लेकर हाजिर हुआ हूं। फिटन गोल दरवाजे के पास ही खड़ी है।"

"क्या अब वह मन्नो बीबी की हवेली में नहीं रहते हैं ?"

"जी नहीं, सरकार। उन्होंने पुराने दौलतखाने के पास एक कोठी खरीद ली है, उसी में मेमसाहब के साथ रहते हैं।"

"और सेठानी साहिबा ?"

"जी, वह तो इसी पुरानी हवेली में तशरीफ रखती हैं। साहब उनके साथ यहां भी रहते हैं हुजूर।"

चंपकलता अभी ऊपर ही अपनी तीसरी जेठानी के साथ थी। रात में पति-पत्नी के बीच हुई बातों के अनुसार चंपक इस समय रुक्को पुरतानी के यहां जानेवाली थी, इसलिए आंगन में जाकर आवाज लगायी : "सुकरू।"

"आवत हूयि सरकार।"

"आने की जरूरत नहीं है, कलकत्ते वाली बहू जी से कह दो कि जल्दी आयें। मेरे बाहर जाने का वक्त हो गया है।"

रसोई बनाने के लिए आज गुमानी की बौटी की बारी थी। चंपक भी उसी के पास चौके के बाहर सहन में पीढ़े पर बैठी साग बना रही थी। वैसे तो उसकी इच्छा यह थी कि अपनी जेठानी के साथ वह भी खाना बनाये, परन्तु सबसे बड़ी जेठानी के आपत्ति करने पर वह चौके में नहीं घुसी थी। इसलिए पति की आवाज सुनकर जीने से उतर आयी, और पति से कहा : "रुक्को बुआ को मैं यहीं बुलवा लूंगी, जिज्जी आज मुझे कहीं जाने न देंगी।"

"तो मैं ऐसा करता हूं, एन्जिल को अपने साथ ही लिये जाता हूं। उसे फिलहाल त्रिलोकी बाबू के यहां ही छोड़ दूंगा। मेरे खाने के लिए इन्तजार न करना, आज दिन में मुझे बहुत से काम करने हैं।"

"[illegible] बड़ा संतोष रहेगा।" फिर

[illegible]"

[illegible] के सामने ही एक कोठी थी,

जो शायद कभी आसफी दौलतखाने से ही सम्बद्ध रही होगी। बाबू त्रिलोकी नाथ चोपड़ा ने गदर के बाद उसे पानी के मोल खरीद लिया था। जमीन बहुत थी और कोठी का ऊपरी भाग करीब-करीब ध्वस्त हो चुका था। किन्तु नीचे के तहखाने अब भी सुरक्षित थे। त्रिलोकी ने ऊपर के खण्डहरों की मरम्मत करवा के उसका रूप तो पुराना नवाबी ढंग का ही रखा, किन्तु सजावट नयी और विलायती की। साथ ही साथ पुराने ढंग का ऐश्वर्य प्रदान करके कमरे की शान को दोबाला चौबाला करवा दिया था। झाड़-फानूस, बड़े-बड़े आईने, खूबसूरत फ्रेमों में लगी विलायती तस्वीरें, गुलगुले गद्दोदार तख्त, बड़े-बड़े उगालदान—सभी कुछ करीने से रखे हुए थे। हाल में घुसते ही सामने एक अंग्रेज चित्रकार से बनवाया हुआ उनकी युरेशियन प्रिया मेंगी का आदमकद चित्र दिखलाई पड़ता था।

घोड़ों के आने की खबड़-खबड़ सुनकर तिल्लोकी बाबू तनकुन बाबू का स्वागत करने के लिए बाहर निकल आये। दोनों बाबू साहबान विलायती पोशाक में थे, दोनों ही गोरे-चिट्टे और सुन्दर भी, लिहाजा 'जैशंकरजी' की रस्म अदायगी भी गर्मजोशी से हाथ मिलाकर 'गुडमार्निंग, हाऊ डू यू डू' से हुई। फिर देसी बोली से बातों के दरवाजे खुले। फिर चोपड़ा साहब ने एंजिल को देखकर कहा: "ओ हो, इसे भी साथ लाये है, प्यारा कुत्ता है। क्या नाम रखा है आपने इसका?"

"एंजिल। सिडनी सिल्की डाग है। मैं इसे दो दिनों के वास्ते आपके यहां का 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' बनाकर लाया हूं।"

दोनों खुलकर हंसे। तिल्लोकी बाबू ने कहा: "अच्छा ही किया आपने; हमारी रोजी भी इसी नस्ल की है और अब जवान हो गयी है। मेंगी उसके वास्ते एक 'हाई पेडेगिरी' का शौहर चाहती भी थी।"

बंसीधर बोले: "क्या अजीब बात है कि मेरी वाइफ को पहले ही से इस बात का प्रिमानिशन-सा हो गया था। अभी चलते वक्त ही उन्होंने मुझसे कहा था कि मेमसाहब की कुतिया से बचाना। लेकिन देखता हू, बचा नही पाऊंगा। अभी बेचारा कल ही तो आया है मगर इसको लेकर घर और बिरादरी में अभी से ही चख-चख शुरू हो गयी है।"

"अजी, हम लोग बहुत ही पिछड़े हुए हैं। यह न होता तो यह मुट्ठी भर अंग्रेज भला हमें हरा सकते थे।" कहकर चोपड़ा साहब ने अपने खानसामा, अब्दुल को बुलाकर कहा: "इसे रोजी के पास छोड़ आओ। दोनों को खाना-दाना भी अच्छी तरह खिलाना।"

"आपकी बात किसी हद तक ठीक है। सच पूछिए तो हमारे पिछड़ेपन की वजह हमारा यह हिंदू धरम ही है। आई हेट इट—आई हेट इट फ्राम द वेरी बाटम आफ माई हार्ट एंड सोल।"

"ओपफोह, इतनी नफरत। ईसाई माशूक की सोहबत मे क्या ईसाई बनने···"

तिल्लोकी बाबू बीच मे ही हंस पड़े, कहा: "अजी बन तो आज जाऊं मगर मुझे और मेरी माशूक को दौलत का दूध पिलाने वाली वह बिरादरी ब्रांड दुधारू भैंस मेरे कब्जे से निकल जायेगी।" अपनी बात की प्रतिक्रिया जब मिस्टर टंडन के मुख पर मनोनुकूल झलकती न देखी तो मिस्टर चोपड़ा भी गंभीर हो गये, कहने लगे: "अगर आप म्यूटिनी के जमाने मे लखनऊ मे होते तो हिन्दुओ और मुसलमानो के जंगलीपन पर आपको भी रोना आ जाता। बेचारे अंग्रेजों, उनके मासूम बच्चों और उनकी खूबसूरत लेडीज को इतनी तकलीफें दी कि ओह गाड! हिन्दुस्तानी कौम जंगली है, जाहिल है।"

"माफ कीजिएगा मि० चोपड़ा, आपने सिर्फ हिन्दोस्तानियों की जुल्मो-जहालत का जिक्र किया, मगर अंग्रेजों के जुल्म नही देखे। पूरे गांव के गाव घेर कर आग लगा दी, जान बचाने के लिए औरतें मर्द और बच्चे भागे तो अंग्रेजो ने संगीनो से गोद-गोद कर उन्हें

आग मे ढकेल दिया।"

"ठीक है, ऐसा भी हुआ होगा। मगर मैं पूछता हूं, आखिर इन नालायकों को म्यूटिनी करने की जरूरत ही क्या थी? परमात्मा ने इंग्लिशमैनों को ही हुकूमत करने की अकल और ताकत दी है, यह जाहिल कौम इस बात को महसूस क्यों नही करती?"

बसीधर टंडन कुछ क्षण चुप रहे, फिर कहा: "हम हिन्दोस्तानी जाहिल हो गये हैं, लेकिन हमेशा ऐसे नही थे। आपको मालूम ही होगा कि योरप में संस्कृत जबान के स्कालर्स बढ़ रहे है। सर विलियम जोन्स, प्रोफेसर मैक्समूलर वगैरह क्या तारीफ करते हैं हमारे कंट्री और उसकी कल्चर की!"

"वह सब तो ठीक है मि० टंडन, मगर अब तो···"

"हां, मैं भी यह महसूस करता हूं कि अंग्रेजी जबान सीखना बहुत जरूरी है।"

बातें गर्माने लगी। बीच मे मैगी का अंदाज़ेमाशूक़ाना भी हलचल मचा गया। मैगी ने चाकलेट बना कर पेश की। बंसी ने अपने स्कूल की बात चलाई। लखनऊ के एक अंग्रेज व्यापारी मि० हैचर्ड ने एक बड़ा बारह कमरो का बंगला बनवाया था। लेकिन ग़दर से कुछ पहले ही अपना कारोबार समेट कर इंग्लैण्ड चले गये। वे कम्पनी सरकार में कुछ राशि भी जमा कर गये थे कि इससे लखनऊ में एक स्कूल खोला जाय।

"यह काम मैं मि० मोन्टीथ से करा लूगा। स्कूल उनके नाम से खुल जायगा और वह रकम मिशन को चली जायेगी।"

स्कूल के लिए इमारत की बातें हो चुकने पर पढ़ाने के लिए लड़के जुटाने का चर्चा आया।

"ठहरिए, अभी वह बात पूरी नही हुई।" त्रिलोकी चोपड़ा ने कहा और बात आगे बढ़ाई: "मि० हैचर्ड अपना बंगला एक ठाकुर साहब के हाथ बेच गये थे, उसे अब मैंने खरीद लिया है। बारह कमरों की इमारत है, और बीच में एक बड़ा डास हाल, लकड़ी से मढ़ा हुआ फर्श, छह आउट हाउसेज हैं। अस्तबल मैदान भी इतना कि आप ला मार्टीनियर के अंग्रेज लडको की तरह ही अपने 'नेटिव ब्वाएज' से स्पोर्ट्स करा सकें।"

"किराया?"

"अब आप से किराया क्या लूं, मैंने दरअस्ल ग़दर के बाद कुछ प्रापर्टियां इसलिए खरीद ली थी कि इनके किराये से या उनमें से कुछ को फिर बेचकर सास का रुपया सास को लौटा दूगा और बाकी अपनी मैगी और उसके बच्चों के लिए भी इन्तजाम कर दूंगा। अब आप जो मुनासिब समझें किराया मुकर्रर कर दें।"

"तो आइए फिर उस इमारत को देख लिया जाय। वैसे मैं आपको यह बतला दू कि चीफ कमिश्नर साहब के सेक्रेटरी मि० ग्राहम ने किराये की मद में सौ रुपया माहवार देना मंजूर किया है।"

तिल्लोकी बाबू खिला चेहरा लेकर कुर्सी से उठे। बोले: "आपने मेरे जी की बात कह दी मि० टण्डन, मुझे मंजूर है। चलिए आपको दिखला दूं।" तभी मैगी अपने छह सात बरस के बेटे डेविड के साथ आई। चोपडा को छड़ी स्टैण्ड से छड़ी निकालते हुए देखकर पूछा: "क्या कहीं जाने का प्रोग्राम है?"

"हां डियरेस्ट, मिस्टर टण्डन कैलकटा से एक ऐंग्लो वर्नाकुलर स्कूल खोलने के लिए यहां आए हैं।" चोपड़ा कुछ आगे भी कहने वाले थे पर बीच ही में मैगी खुशी से उछल उठी; "ओह, यह तो आप बहुत ही अच्छा काम कर रहे हैं—बहोत ही अच्छा काम कर रहे हैं। मैं अपने डेविड की पढ़ाई के लिए थोड़ी चिन्तित थी। ला मार्टीनियर वाले प्योर अंग्रेज बच्चों को लेते हैं। अभी तक तो मैं पढ़ा रही हूं···ये आप बहुत ही अच्छा काम कर

रहे हैं, मैं आपकी भरपूर मदद करूंगी।"

तिल्लोकी बाबू हँसे, बोले, "लीजिए आपको एक स्टूडेंट भी मिल गया।"

नन्हे डेविड के पास आकर उसका सिर सहलाते हुए बंसीधर ने कहा : "थैंक्यू मिसेज चोपड़ा। अब मेरे पास तीन स्टूडेंट्स भर्ती करने के लिए हो गये हैं, दो मेरे छोटे भाई गनेस, महेस और हमारा नन्हा दोस्त डेविड चोपड़ा। मैं मिस्टर मोन्टीथ से वादा करके आया हूं कि कम से कम बीस लड़के तो इसी साल जुटा लूंगा। देखिए अभी मुझे काफी दौड़-धूप करनी पड़ेगी। स्कूल बिल्डिंग की एक बड़ी प्राब्लम तो आपकी मेहरबानी से हल हो गयी, मिस्टर चोपड़ा। अपने घर मे अब हम लोग रहना नही चाहते। कल आते ही तो एंजिल को लेकर घर गली मे लंका काण्ड शुरू हो गया, और मेरी वाइफ अब सात या आठ महीने में मा बनने वाली हैं।"

"ओह !" दोनों हाथ खुशी से मींजते हुए अपनी बत्तीसी खिलाकर मैगी ने कहा : "बड़ी अच्छी खबर सुनायी है आपने। जीजस हमे वह मुबारक दिन दिखलाये। क्या मैं मिसेज टण्डन से मिल सकती हूं मिस्टर टण्डन ?"

"बड़ी खुशी से, मिसेज चोपड़ा, अब वह आपसे अंग्रेजी मे ही बात करेगी, हालांकि बहुत अच्छी नही बोल पाती।"

"मैं बहुत खुश, बहोत खुश हूं, मुझे बातें करने के लिए एक हिन्दोस्तानी सहेली की जरूरत थी। तब तो—"

"तब तो क्या ?" चोपड़ा ने पूछा।

"मैं सोचती हूं डियर कि जब मिसेज टण्डन इतनी प्रगतिशील हैं तो उन्हे अपनी आन्टी की काटेज में ही क्यों नही आबाद करवा दू। स्कूल की इमारत से ज्यादह दूर भी नहीं, मुश्किल से एक फर्लांग।"

बंसीधर की आंखें चमकी। तिल्लोकी बाबू ने सन्तोष से उप-पत्नी को देखा और कहा : "तुमने इनके रहने के वास्ते भी मुनासिब जगह बतलायी है मैगी।"

मैगी ने बंसी से पूछा : "मैं आपको अपनी आन्टी की आधी काटेज दिलवा दूंगी। लेकिन आप लोगों को एक ईसाई महिला के साथ रहने मे कोई आपत्ति तो न होगी ?"

"कतई नही। कलकत्ते मे एक ब्राह्मो फैमिली के साथ रहकर और एक यूरेशियन टीचर मिसेस कार्नीलियस से पढ़कर अब वह तमाम पुराने दकियानूसी ख्यालात उसके मन से निकल चुके हैं। लेकिन अपनी प्रोग्रेसिविज्म के बावजूद शी इज ए प्राउड हिंदू।"

बंसीधर और उनकी सौभाग्यवती उसी दिन अपना सामान लेकर बूढ़ी मिसेस हार्डी की आधी काटेज मे किरायेदार बनकर बस गये। सास ने कहा भी कि सबेरे पाधा से अच्छी सुगन सायत निकलवा के नये घर मे घटस्थापन करना, परन्तु पति से पहले चंपकलता बोल उठी, "हर दिन अच्छा होता है, बौआजी, सराय की तरह रहने से क्या लाभ है ? बाकी मैं आती-जाती तो रहूंगी ही। अपना घर, अपने बड़े-बूढ़े कहीं छूटते हैं।"

ससुराल से विदा होते समय बौआजी ने बेटे-बहू के टीका काढ़ के विदा किया, घर से कुछ बर्तन-भाड़े भी दिये। दो मजदूरों के सिर पर बिस्तर पेटिया लादकर घर से निकले तो परिचितों के सवाल-जवाब भी चलते चले "अमा कल ही तो आये हो, आज फिर कहां चल पड़े ?"

"कुछ नही बड़े भैया, स्कूल खोलना है न, तो उसके पास ही एक घर ले लिया है भैया।"

"अच्छा। ये अस्कूल क्या होता है भैया ?"

"जी, अंग्रेजी पढ़ाने की पाठशाला या मदरसा समझ लीजिए।"

"भला-भला तो तुम अंग्रेजी पढाओगे ? किरिस्तान ही पढ़ेंगे साले, और कोई धरम-करम वाले हिन्दू तो पढ़ेंगे नही।"

"नही नहीं, बाम्हन, खत्री सभी के लड़के पढ़ेंगे।"

"सत्यानास हो जायगा साला। सब भिरिस्टाचार ! हरे-राम, राम-राम।"

जैसे कल वैसे आज भी—सड़क पर पहुँचते वक्त गलियों में एक हिन्दू जवान औरत वेपर्दा जाते देखकर न जाने कितनी ही *आश्चर्य और प्रश्नचिह्न भरी निगाहें उठी। कही-*कही कटूक्तियां तक सुनने को मिली : "वारी अंग्रेजी, रंडियों और घरेलू औरतों में कोई फ़रक ही नही रह गया।"

सुन-सुनकर तनकुन का चेहरा कस-कस जाता था किन्तु चमेली के चेहरे पर कोई प्रभाव नजर नही आता था। छोटा भाई गनेसो घोड़ा-गाड़ी तय करने के लिए पहले ही सडक पर पहुंच चुका था। सामान लदा, दोनो गाड़ी पर बैठे। गनेसो ने दोनों के पैर छुए और कहा : "तनकुन भैया, मैं भी साथ चलूं, आपका नया घर देख आऊंगा।"

"फिर वहां से लौटोगे कैसे ?"

"अरे चौलक्खी से चौक के बहुत इक्के आते हैं, लौट आऊंगा।"

सड़क गुलजार जरूर थी मगर वह रौनक नही थी जो गदर के पहले अक्सर दिखलायी देती थी। अगूठे पर चमड़े की पट्टी बांध कर उस पर बैठे हुए बाज, हाथ में पिंजरा लटकाये हुए तीतरों, बटेरों के पिंजरे लिए हुए, मेहदी लगे पट्टे दार बाल और दाढी मूछें पुराने जमाने की झलक दे रही थी। सिरो मे उस्तरे से मूड़ी हुई चांदें अक्सर नजर आ जाती थी। किसी पर पान कटा है, किसी पर नाली और किसी चांद पर पूनो के चाद सा गोला नजर आ रहा था। गर्मी के मौसम में उन पर थोपा गया मक्खन पिघल-पिघल कर इधर-उधर बह रहा है। पान चबाते और सडक पर ही पिच से थूकते हुए लोगों के नजारे भी नजर आ रहे हैं। घेरेदार लहंगे, रग-बिरंगी ओढ़नियां भी नजर आ रही हैं। कही-कही टीपदार आवाज मे गाते हुए लोग भी नजर आ जाते हैं। शाही कैसरबाग के फाटकों पर पहरे अब भी बदस्तूर वैसे ही लगते हैं, लेकिन शाही महलों के आस-पास बंसी को वैसा ही अनुभव हुआ जैसे किसी घर से लाश निकल जाने के बाद वहां पर मनहूसियत और सन्नाटा नजर आता है। चौपड़ अस्तबल के पास फौजो की गारद पड़ी थी।

गाड़ी बंसीघर के नये आवास के सामने जा खड़ी हुई। छोटी सी फुलवारी, आठ कमरों की काटेज जिसके ऊपर फूस का छप्पर पड़ा था और दो चिमनियां भी नजर आ रही थी। गाडी के दरवाजे पर पहुंचते ही *अधेड़ मिसेज हार्डी बाहर निकल आयी।* पति-पत्नी से हाथ मिलाया और उनकी रिहाइश का हिस्सा दिखलाने लगी। बीस रुपये माहवार मे चार कमरे मिले थे। काठ की दो अलमारियां, दो-तीन कुर्सियां और एक पुरानी पालिश उखड़ी आरामकुर्सी भी घर के साथ ही मिली थी। चंपकलता ने मिसेस हार्डी से कहा : "कलकत्ते से हमारा फर्नीचर भी दो एक रोज में आ जाएगा, तब मैं आपका फर्नीचर आप को लौटा दूंगी।"

"चिन्ता मत कीजिए, मिसेज टण्डन। मेरे पास जरूरत *का काफी सामान है, ये* चीजें मैं आपको खुशी से दे रही हूं। मुझे तो आप बिलकुल मैगी जैसी ही लगती हैं। उसके पिता और मेरे पति एक ही परिवार के चचेरे भाई थे। बचपन मे मैंने ही मैगी को पाला था। क्या आप बहुत कट्टर हिन्दू हैं ?"

"जी नहीं, मिसेज हार्डी। हां, यह सच है कि मैं अपने धर्म के देवताओं को मानती हूं, मगर मुझे किसी भी धर्म के देवी-देवता के लिए सच्चे दिल से श्रद्धा है।"

"सुना है, तुम हिन्दू लोग प्याज, लहसुन को भी बदबूदार चीज समझते हो।"

तुम्हारे धर्म से बाहर है।"

चंपक हसी, कहा : "यह सच है कि हम लोग प्याज लहसुन वगैरह नही खाते है मगर उनके खाने वालो से मुझे तनिक भी परहेज नही। आप शौक से अपने घर मे पकाइए खाइए, हमारा क्या हर्ज है।"

"मैंने एक किचेन गार्डन भी बना रखा है मिसेज टण्डन।"

"ओह आन्टी, आप तो सचमुच बहुत अच्छी हैं। मैं आपसे बागवानी का हुनर जरूर सीखूंगी। आप सिखलाइएगा न?"

"जरूर सिखलाऊंगी। मेरी बच्ची, मुझे बहुत अच्छा लगा जो तुम लोग आ गये। मैगी के चले जाने के बाद मैं इस घर मे बेहद सन्नाटा महसूस करती थी।"

मिस्टर बंसीधर अपने स्कूल की व्यवस्था मे लगे। नयी अंग्रेज सरकार हिन्दुस्तानियो को अंग्रेजी शिक्षा देने के पक्ष मे तो थी, लेकिन वह बहुत अधिक लडको को शिक्षा देने के पक्ष मे नही थी। सरकार इतना ही चाहती थी कि उसके दफ्तरो का काम चलाने लायक कुछ क्लर्क अवश्य तैयार हो जायं। लेकिन इतने अधिक शिक्षित न हो कि अमेरिका की तरह यह देश भी स्वतन्त्र हो जाय। पर बसीधर कलकत्ते मे मिस्टर मोन्टीथ से यह बात पहले ही कह आया था कि वह जहा तक बनेगा समाज मे अंग्रेजो के प्रति तनिक विद्रोह न बढाते हुए भी अधिक विद्यार्थियो को पढाने का प्रबन्ध करेगा। उसकी इच्छा थी कि पहले वर्ष कम-से कम पन्द्रह या बीस छात्र उसे पढाने को मिल जायें। भूगोल, इतिहास और गणित पढाने के लिए उसने मिस्टर मोन्टीथ को चिट्ठी लिखकर बगाली अध्यापक भेजने के लिए पत्र लिख कर आग्रह किया था। अपने पुराने मित्र नगरिया के कुअर शिवरतन सिंह से भी सम्पर्क किया। शिवरतन के पिता ठाकुर रामजियावन सिह तब तक स्वर्गवासी हो चुके थे। शिवरतन ने अपने ही घर से उसे तीन विद्यार्थी देने का वचन दिया और कहा : "आस-पास के गावों के कुछ परिचित जमीदारो से भी वह उन्हे मिलवा देंगे, और वहा से भी छात्रो की कुछ भीड़ वह निश्चित रूप से इकट्ठा कर सकेंगे। कुअर शिवरतन ने बसी के स्कूल के प्रति बड़ा उत्साह दिखलाया।

किन्तु चपक ने नये घर में बैठकर भी गलियो और बिरादरी के किस्से कजियो से राहत न पायी। उस के देवर गनेसो और महेसो उसके और अपने तनकुन भैया के परम भक्त हो चुके थे। दोनो मे से कोई न कोई नित्य प्रति चौक से नजरबाग आता और अपनी भाभी की गृहस्थी के कुछ न कुछ आवश्यक कार्य कर जाया करता था। गली के किस्से भी सुनाता। दो बार रुक्को पुरतानी भी आयी थी। एक बार गुमानी की बौटी के साथ इक्के पर पर्दा डाल के चपक की सास बौआजी भी आयी थी। उनसे जब अपने पति के स्कूल के संबंध मे महल्लों का विरोधी तनाव पुराण सुना तो चपक खीझ गयी। कहा : "ऐसा लगता है कि अंग्रेजों के विरुद्ध जो जहर भर गया है, वही हम लोगो का बहाना लेकर घर-घर मे जबानी गदर मचा रहा है।"

भुल्ली लाला ने अपनी रईसी अकड़ से सचमुच ऐसी ही परिस्थिति उत्पन्न कर दी थी। जब चंपक ने पहले ही दिन रजोले गुरु से तेजस्विता के साथ स्पष्टोक्ति की थी तभी से भुल्ली लाला इन दोनो को सबक सिखाने के लिए तुल गये थे। रजोले पाधा ने जब उनसे आ कर यह कहा कि : "तनकुन की बहुरिया ने कुत्ते को घर से निकालने से इंकार कर दिया है, तभी उत्तेजित होकर बोले थे : "हमारी बात काटने की हिम्मत कैसे भई उस तोला भर की लड़की मे ?" गुरु, तुम मुनीम जी से पचास रुपये लो, पच्चीस तीस बाम्हन, खत्री लड़को को इकट्ठा करो और जबर्दस्ती मुसद्दी साले के घर मे घुस कर कुत्ते को मार डालो। यानी कि हमारे हुक्म की इज्जत कुछ भी नही और कुत्ते साले की इज्जत

है उनके मन में। मैं भी देख लूंगा सालों को।"

पाधा जी अपने मन मे कुछ-कुछ सहमे हुए थे। भुल्ली लाला का राजहठ देख कर वे कुछ क्षण मौन रहे, फिर ठंडे स्वर में कहा : "हमारी राय यह है लालाजी कि लौडे लप'डियों की बातों मे न पड़कर आप लाला मुसद्दीमल जी को ही अपने यहां बुलवाइए। उनसे कहिए कि बिरादरी से झगड़ा न करें, आपका कहा मान लेंगे।"

समझाने से लालाजी यह बात मान गये। बोले : "ठीक है तो तुम्हीं आज संध्या के वखत जायं के उनसे बात करना।"

रजोले पाधा उस शाम को मुसद्दीमल के यहां गए थे। तब तक तनकुन भी घर पहुंच चुके थे और पत्नी के द्वारा सब बातें जान कर अपने पिता को बतला भी चुके थे। इसलिए लाला जी ने पाधा जी से कहा : "सुन लो महराज, हम भुल्ली की अकड़ के आगे तनिक भी झुकने को तैयार नही हूंगे। मेरा बेटा गौरमिन्टी हुकुम से हेडमास्टर बन के आया हैगा, वह चाहे अपने साथ कुत्ता लावै या मुर्गी लावै। भुल्ली से कह देओ कि बात का बतंगड़ न बनावै। मेरा लड़का भी इस नई गौरमिन्ट मे ऊंची पहुंच वाला हैगा, ये समझ लें पहले। गरीबन पे बैठे-बैठे पान पीक थूकी और उसे पिटवाय। या कपड़े दिए, ये रहीसी बदमिजाजी मेरे लड़के से नहीं चलेगी।"

सुनकर पाधा जी गभीर हुए, उन्होने समझ लिया कि उनकी स्थिति बेचारी जीभ की तरह है, इधर बढ़ाये या उधर, बेचारी जीभ ही के कटने का अंदेसा है।

बोले : "दो बड़े लोगों के बीच की बात है लाला जी, हम क्यों पड़ें। उन्होने आपको बुलाया हैगा, आप ही उनसे मिल के सब बात समझाय सकेंगे।"

लाला बोले : "भुल्ली साला तीन पीढ़ियो का रहीस हैगा। मैं खानदानी रहीस का बेटा हू, मैं क्यों जाऊंगा साले के पास ?"

"तो मैं उनसे जायके क्या कह दू लाला जी ?"

"कह देव कि हमे आने की फर्सत नही, उन्हें आना होय तो आय जायं।"

रजोले उठते हुए बोले : "तो फिर यही कह दूं ?"

'हां-हां लफ़ज-ब-लफ़ज यही जाय के कह दो, उसका डर पड़ा है साले का!"

भुल्लो लाला की तोंद यह सुन कर बैठे-ही-बैठे नौ-नौ बांस उछल पड़ी। गरज के बोले : "मैं इन सालो को सबक सिखा के ही रहूंगा पाधा जी, आज तलक मेरी मर्जी के खिलाफ कोई नही जा सका हैगा।"

रजोले ठंडे खुशामदी स्वर मे बोले : "अरे आप के खिलाफ कौन जा सकता है भला। लक्ष्मी मैया का प्रताप है, तेजवान पुरुष हैंगे, आपके पेशाब से तो चिराग जलते हैं लालाजी, आपकी क्या बात है भला।"

भुल्ली बोले : "हम कल तीसरे पहर अपने यहां चार-छह लोगों को बुलावेंगे, तुम भी आना। प्रोहित जी की भी कहलवाय देंगे, चौधरी हंसराज, पन्नो, महादेव, गौरीसंकर इन सब लोगों को बुलाय के साले को बिरादरी से बाहर करवाता हूं। समझ क्या रखा हैगा साले फेरी वाले ने। उसके बेटे की गौरमिन्ट से भी नहीं डरता हू मैं।"

भुल्ली लाला के दंभी मिजाज ने इसे अपना व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया था। लेकिन दूसरे दिन जिस समय पंचों की यह अनौपचारिक बैठक हुई, उस समय तक तनकुन और उसकी पत्नी अपना पैतृक घर छोड़ कर अपने बगले मे जा चुके थे। तो चौधरी हंसराज ने कहा कि अब मुसद्दीमल के मामले मे कोई पचायत नहीं बुलायी जा सकती।

भुल्ली लाला गर्मा उठे, बोले : "ठीक है, मुसद्दी की बात छोड़ दो, मगर उस कल के

लौंडे और उसकी तोला भर की औरत ने जो यह सब भ्रष्टाचार फैलाया है, रंडी जैसा मुंह खोल के चलती है ससुरी, कुत्ता पालती है, मेम के साथ मेम बन के उसके घर किराये पर रहती है, ऐसे अधर्मी को हम भला बिरादरी मे रहन देंगे, हर्गिज-हर्गिज नही। क्यों भई गौरीसंकर, तुम्हारी क्या राय है?"

लाला गौरीशंकर से पहले लाला पन्नालाल बोल उठे: "इस मामले में गर्मी दिखाने की हमारी तो राय नही है, सच्ची कहें आप लोगों से। आजकल घर-घर में ऐसे ही किस्से-कजिये हो रहे हैं। लडके अपनी मेहरियन को पढ़ाने की खातिर काली मेमें बुलाय रहे हैं। बिलैती सराव छुप-छुपके के पियत हैंगे, बिलैती रंडियो के दीवाने हो रहे हैं। एक की इज्जत बिगाड़ने के पीछे चार घरों की इज्जत उघाड़ी होय ये हमारी समझ मे नही आता है।"

भुल्ली लाला के दुर्भाग्य से पुरोहित ज्वालाशकर तथा चौधरी हंसराज ने भी इसी तरह की बाते कही।

सुनकर भुल्ली लाला उखड गये। रजोले पाधा ने उन्हें थामते हुए कहा: "हमने यह माना कि लाला मुसद्दीमल के हेडमास्टर लड़के-बहुरिया को बिरादरी से न निकाला जाय, पर अपने पवित्र सनातन धर्म की रक्षा के लिए हम सब इतना तो कर ही सकते हैं कि अपने खत्री, ब्राह्मण और वैश्यादि वर्णो के लड़को को उसके अस्कूल मे पढ़ने से रोकें।"

सब लोगो ने हां-हां करके बात टाल दी और बैठक उठ गई।

लेकिन इस बैठक की चर्चा सब तरफ बड़ी जोरों मे फैली। कुछ लोग ऐसे भी थे जो अपने बच्चो को अंग्रेजी पढ़ा कर नये समय के अनुकूल बनाना चाहते थे। ब्राह्मण, खत्री, वैश्य सभी वर्णों में अंग्रेजी का भाव बढ रहा था। विरोध की बातें सुनकर ऐसे लोग कहते कि, अंग्रेजी राज मे उन्नति करने का यही तरीका है कि लोग उनकी सही चाल-ढाल को सीखें और अपनायें। हां, बुराइयों को और अंग्रेजों की हिन्दू धर्म विरोधी बातों को हमें अवश्य ही नही अपनाना चाहिए।

मिस्टर त्रिलोकीनाथ चोपड़ा अपनी मेम रखैल के बेटे को ही नही, बल्कि अपनी सास मन्नो बीबी के दोहते को भी बंसीधर के स्कूल मे भर्ती कराने की बात की चर्चा अपनी पत्नी से कर चुके थे। सुनकर मन्नो बीबी को लगा कि वह भी दामाद के द्वारा उनके घर का धरम बिगाड़ने की कोई चाल है। सुनकर बहुत घबरायी। जब से तिल्लोकी बाबू ने अपनी रखैल के लिए नया घर खरीदकर उनकी हवेली को छोड़ दिया था तब से मन्नो बीबी अपना ठाकुरद्वारा छोड़कर फिर से हवेली मे आ बसी थी। तिल्लोकी बाबू ससुराल की हवेली मे भी रहते थे और अपनी विलायती रखैल के यहा भी।

एक दिन मन्नो बीबी ने उनसे कहा: "भुल्ली ने कहलाया है कि हम मुनुआ को तनकुन के इसकूल मे भर्ती न करावें। और तुम उसे पढावने को कहत होगे। बोलो क्या करें?"

तिल्लोकी बाबू बोले, "हमारा मुनुआ स्कूल में तो पढ़ेगा ही भाभो, लेकिन उसके बाद मैं उसे विलायत भी भेजूगा।"

"लेकिन भैया, धरम-बिरादरी…"

"यह सब पुरानी बाते हैं भाभो, जमाना अब बहुत आगे बढ गया है। मैं अपने लड़के को ऊंचा ओहदेदार बनाऊंगा। वह विलायत से आई० सी० एस० पास हो के आवेगा। इसलिए आप से हाथ जोड़ता हूं कि इस मामले मे न बोलिए। और अगर जादा विरोध करेंगी तो सच कहता हूं कि मैं मुनुआ को आप के पास से हटा के माली खां की सराय ले जाऊंगा।"

दामाद के इस कथन ने मन्नो बीबी और उनकी सौभाग्यवती पुत्री को दहला दिया। घर मे रोना-धोना मच गया। मन्नो बीबी ने रुक्को पुरतानी को बुलवाया और किराये की बग्घी करके अपनी पुत्री और पुरतानी जी के साथ नजरबाग पहुंची। चंपकलता उनसे बहुत ही आदर और प्यार से मिली। समझाया : "सुनिये चाचीजी, आप इन बातो से जरा भी न घबराइये। न तो मैं और न मेरे यहां के लोग अपना धर्म छोड़ रहे हैं, और न किसी का धर्म छुडवाने की इच्छा रखते हैं। लेकिन पढाई-लिखाई के मामले में हम झूठ-मूठ के धरम को बिल्कुल नही मानेगे। बल्कि मैं तो अपनी इन बहन जी से भी कहूंगी कि ये भी पढें। आप अपनी हवेली में लडकियों का भी स्कूल खुलवा दें। मैं पढाने आऊंगी। विद्या पढने से धरम नही जाता, चाचीजी। आप तनिक भी न घबराइये, आपके दोहते का धर्म अंग्रेजी पढने से जरा भी नही बिगड़ेगा।"

उसी शाम को संयोग से मिस्टर चोपडा मिस्टर टण्डन से मिलने के लिए उनके बगले पर आये। उनकी बातों मे यह सब प्रसग तो छिड़े ही छिड़े, साथ मे भुल्ली लाला के रियासती क्रोध और हठभरी भावना की चर्चा भी चली। बंसीधर बोले : "कैसे बेवकूफ हैं हमारे लोग! भला बतलाइए मिस्टर चोपडा, भुल्ली जैसा जलील आदमी जो दूसरों पर पान की पीकें थूकता है, हमारे स्कूल की झूठी-सच्ची बुराइयां करता है कमबख्त! आप कहें तो चीफ-कमिश्नर साहब के सेक्रेटरी से कहकर उस चर्बी के मटके मे कुछ छेद करवा दूं।"

मिस्टर चोपडा मुस्कुरा कर बोले : "नही मिस्टर टण्डन, इसको ठीक करने की एक और तरकीब मेरे पास है।"

मिस्टर त्रिलोकी नाथ चोपडा और मि० बंसीधर टण्डन की आपसी राय हुई, दो-तीन ऐसे लोग छाटे गये जो कि भुल्ली लाला की पीक के शहीद हो चुके थे। मिस्टर चोपडा ने अपने घर ही के एक नौकर को पटाकर उसे नया सलूका और नई दुपल्ली टोपी पहनाकर भुल्ली बाबू की गली में भेजा। साजिश यहां तक हुई कि वह नौकर खुद भी पाने खाए हुए था और उसने जान-बूझ कर ही भुल्ली लाला की हवेली के सामने गली मे एक तरफ पिच्च से थूका। ऊपर से भुल्ली लाला की पिचकारी छूटी। तिल्लोकी के नौकर ने गाली दी, भुल्ली लाला का नौकर उसे मारने के लिए बढा। साथ आये हुए छद्मवेशी गवाहों ने भुल्ली के नौकर को पकड़ा, और उसे मारते हुए थाने की ओर ले चले। चोपडा और उनकी गोरी रखैल पहले ही जाकर थानेदार को रिश्वत और अपनी अंग्रेजियत से पटा आए थे। थाने मे रिपोर्ट लिखाई, फिर नौकर की तरफ से भुल्ली बाबू के खिलाफ हतक इज्जती का दावा भी दायर कर दिया गया। कोरट से सम्मन आया कि लाला भोलानाथ वल्द लाला भैरोनाथ कौम खत्री पेशा महाजनी अदालत मे हाजिर हो।

बिरादरी मे तहलका मच गया। नवाबी सरकार के अहलकारों और ओहदेदारो से रईसो के जो रसूक चलते थे वह अंग्रेजी सरकार में बासी और बेकार पड गए। नयी नौकरशाही में अधिकतर कुर्सियां गोरों के आधीन थी, चूंकि गदर की यादें ताजा थी इसलिए गोरे हिंदुस्तानी प्रजा से अधिकतर बेरुखी से ही व्यवहार किया करते थे। रईसों से पैसे लेना या कहा जाय कि लूट लेना हर अंग्रेज को अच्छा लगता था। किसी रईस को मुजरिम बन कर अदालत मे हाजिर होने का आदेश मिलना बिरादरी मे पहली घटना थी। भुल्ली लाला और उनके हमदर्दों के हाथ-पाव फूल गए। शहर में एक ही अंग्रेज वकील था, जिसे मिस्टर बंसीधर टण्डन की हेडमास्टरी और मिसेस कैथरीन चोपडा (मैगी) की गोरी चमडी और मिस्टर चोपडा द्वारा भेंट की गई विलायती शराब की बोतलों और फल, मेवों की डालियों ने पटा रखा था। वकील के बंगाली सहकारी घोष बाबू ने 'कमाए टोप वाला और लूटे धोती वाला' की कहावत के अनुसार ही भुल्ली लाला के लड़कों को लूटा-

"साहेब का फीस हमको तुरंत जमा करना मांगता। हन्ड्रेड रुपीस साहेब का फीस, ट्वेण्टी फाइव हमारा फीस सीधे-सीधे मेज पर रख दो, तब बात करेगा।"

रुपए मेज पर रखवाये, फिर कहा: "कल साहेब से टाइम पूछ कर बताएगा।" दूसरे दिन कहा "साहेब को टाइम नहीं, कल आना।" दो दिन घोष बाबू ने कल आना के लटकन मन पर मथाए। फिर कहा: "साहेब को हन्ड्रेड रुपीस फीस और मांगता, जमा करो तो हम बात कराने सकता।"

यह दूसरी बार पाये रुपए घोष बाबू ने साहेब की जेब में डाले। साहब ने भुल्ली के लड़कों को तब यह सलाह दी कि "आपस में समझौता कर लो वर्ना तुम्हारे बाप को अदालत में मुजरिम करार करके कम से कम जुर्माना तो अवश्य ही किया जायगा।"

किसी खानदानी रईस को अदालत से जुर्माने का दण्ड मिलना भी सामाजिक दृष्टि से बहुत अपमानजनक था। भुल्ली लाला के लड़कों को यह मालूम हो चुका था कि मुकदमा दायर करने वाला मन्नो बीबी के दामाद का नौकर है। लड़के मन्नो बीबी के यहां दौड़े, कि वह तस्फिया करा दें। मन्नो बीबी दामाद के पैरों पड़ी, माफीनामा लिखाया कि गलती से पीक नौकर पर पड़ी थी, उसे गंदा करने की नीयत नहीं थी।

इसके बाद भी चोपड़ा साहब ने यह कहा कि, "अंग्रेज मजिस्ट्रेट से बंसीधर की जान-पहचान है, उनसे सिफारिश कराओ।"

मन्नो बीबी की सौभाग्यवती सुपुत्री चुन्नो चंपकलता के पास खुशामद करने के लिए भेजी गयी। इस सारी घटना के तीन लाभ हुए। बिरादरी के और महल्ले के बहुत से लोगों में बंसीधर की हेडमास्टरी का रौब जम गया और चमेलो उर्फ चंपकलता तथा मन्नो नन्दिनी चुन्नो की आपसी दोस्ती बढ़ गई। इसके साथ ही साथ भुल्ली लाला का गली में पीक की पिचकारी मारना बंद हुआ, उन्होंने खिड़की में बैठना ही छोड़ दिया।

मन्नो बीबी अपनी चुन्नो के कहने से उसके लड़के को भी तनकुन के स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाने को राजी हो गयी। खुद चुन्नो भी थोड़ा बहुत पढ़ने लगी। इस प्रकार नये जमाने से पुराना जमाना ऊपरी तौर से तो अवश्य हार गया किंतु भुल्ली लाला, उनके पुत्रों और समर्थकों का सामंती अहम् भाव भीतर ही भीतर ज्वालामुखी की तरह भड़कता ही रहा।

16

एंग्लो वर्नाकुलर स्कूल के प्रतिष्ठित हेडमास्टर मिस्टर बी० डी० टण्डन पिछले छह महीनों में केवल हेडमास्टर ही नहीं बने, वरन नगर के धनी-मानी समाज में, विशेषकर इनके युवकों के बीच में, आकर्षण और आदर का स्थान भी प्राप्त करने लगे हैं। शहर के अंग्रेज हाकिम-हुक्कामों में भी उन्होंने और उनके मित्र, मिस्टर टी० एन० चोपड़ा ने अच्छा नाम कमा रखा है। चोपड़ा साहब की मँगी भी अपना फर्नीचर का धन्धा बढ़ाते हुए धन

कमा रही है और अपने संरक्षक 'पति' का दिल दिनोंदिन अपने बस में करती जा रही है। प्रति शनिवार को मिसेज कैथरीन चोपडा के यहां अंग्रेजों की पार्टी होती है। उसकी कोठी में लकडी के फर्श का एक शानदार 'डांसिंग हाल' बना है। वाजिदअली शाह के महलो से बेकार हो जाने वाले दो बावर्ची उस्ताद लखनऊ के गोरे स्वामियों को अपनी पाकचातुरी से प्रसन्न करके चोपड़ा युगल का यश बढ़ाते हैं। हेडमास्टर बंसीधर उस दिन थोड़ी-बहुत पीते हैं। इस मदिरापान मे लत से अधिक शिष्टाचार का विचार है।

प्रत्येक रविवार को अपने स्कूल के हाल में उन्होंने एक व्याख्यानमाला भी पिछले चार महीनो से चला रखी है। उसका नाम 'यंग थिंकर्स सोसायटी' है। शहर के लगभग पन्द्रह-बीस युवक, हिन्दू मुसलमान तथा एक पारसी सज्जन सभी आमंत्रित होते हैं। सर विलियम जोन्स, मैक्समूलर आदि विद्वानों के सम्बन्ध में भी बड़ी चर्चाएं होती हैं। स्वयं हेडमास्टर बंसीधर ने भी कलकत्ते के राजा राममोहन राय और उनके ब्रह्म समाज पर तीन व्याख्यान दिये, जिसकी प्रतिक्रिया में कलकत्ते से आए हुए इतिहास, भूगोल के अध्यापक मि० शिवप्रसाद मुखर्जी ने सनातन हिन्दू धर्म की महिमा बखानते हुए एक बड़ा ही ओजस्वी भाषण दिया। मुखर्जी महाशय अपनी वेषभूषा तो पूर्ण विलायती कर चुके हैं, किन्तु उनका मन सनातन ब्राह्मण ही है। "राममोहन राय को ब्रह्मोन नेई मानता। द्वारका नाथ टैगोर तो जाति बहिष्कृत इस्लामिया ब्रह्मोन हाय। दोक्खिन भारत का पोन्डीतबर सुब्रामनियम शास्त्री तो आज से दोश-बारो बोरश पीछू हामशे कलिकाता मे बोल गया था जे मिस्टर मुखर्जी हामरा मत हाय जे ब्राह्मोन सांगवेद नेई पोढ़ता, ओई शाला ब्राह्मोन नेई ब्रात्यो हाय। राममोहन और द्वारकानाथ टैगोर ब्रात्यो था। कोई ब्रात्यो धर्मोप्रोचार कोरने नेई शाक्ता। ऐशा किया तो दोनो का दोनों शाला लोग भारोतबोर्ष की पोबित्र भूमि पर नेई मरा, बिलायत जाके मरा।"

बंगाली बाबू अपनी उत्तेजना में तीन बार सामवेद विहीन ब्राह्मणों के लिए साला शब्द का प्रयोग कर गये थे। इससे सभा में उपस्थित दो ब्राह्मण उत्तेजित हो गये, स्वय बंसीधर राजा राममोहन और प्रिन्स द्वारका नाथ के सम्बन्ध में अप्रिय बातें सुनकर बुरा मान गये। सभा विसर्जित करते समय धन्यवाद देते हुए उन्होने कहा : "यो तो हमारी सभा मे सब तरह के विचारो को बड़े अदब के साथ सुना जाता है, और हम अपने आलिम दोस्त मिस्टर एस० पी० मुखर्जी के खयालात की भी बड़ी इज्जत करते है, मगर उन्हे किसी के लिए भद्दे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल करने की इज़ाजत आइन्दा कभी नही दी जायेगी। और मैं उनसे यह भी दर्खास्त करूंगा कि वे इसके लिए सभा से माफी मागें।"

मुखर्जी महाशय हंसते हुए मेज के पास आए और अंग्रेजी में कहा : "ब्राह्मण केवल एक ही काम नही कर सकता। वह क्षमा दे सकता है, क्षमा माग नही सकता। फिर भी मुझे नई सभ्यतावश अपने शब्द के लिए दु:ख है।" कहते-कहते अग्रेजी से अपनी बांग्ला मिश्रित हिन्दी पर उतर आए। "हम शाला बांगाली का ब्याटा, शाला शोब्द को ओभद्रो नेइ मानता। ओपमान सोम्बन्ध का शोब्द है, भोद्रो लोक नित्य व्यवहार करता है।" कहते हुए वे खुद भी हंस पडे और सभा के अन्य लोग भी। यों उस दिन तो मामला खतम हो गया, किन्तु बुधवार के दिन धनी भारतीय युवक समाज को चोपडा युगल के द्वारा दी जाने वाली पार्टी में शराब की चुस्कियों में मुखर्जी के व्यवहार को लेकर कुछ बहस चल पड़ी। मिस्टर मुलायम चन्द ने कहा, "ये ब्राह्मण लोग अपने आप को ऊंचा क्यों समझते हैं? हमारे सरावगी मुनो महाराज तो एक बार कह रहे थे कि हिन्दुओं मे सबसे ऊंचा क्षत्री, फिर वैश्य, फिर ब्राह्मण होता है।"

मिस्टर गजाधर पाण्डे का ब्राण्डी चढ़ा मिजाज सुनकर और भी चढ गया, वे बोले:

"ये सरावगी लोग झूठ बोलने में बड़े ही पक्के होते हैं। हमें बचपन मे गुरुजी इसीलिए रटाते थे कि "न पठेत् यावनी भाषा न गच्छेत् जैन मन्दिरम्।"

मिस्टर चोपडा ने हंसकर कहा : "अरे पाण्डे जी, तुम तो उर्दू-फारसी पढ़े हो।"

"हा, मगर जैन मन्दिर कभी नही गया, खाली एक सरावगी से मेरी दोस्ती जरूर है मगर उसको भी बीच-बीच में नीच कह लेता हूं।"

किशोरी खन्ना बोले : "अमां यारो नीच तो हम सभी लोग हैं। शराब पी रहे है जो हिन्दू मुसलमान सबके मजहबों में बुरी मानी जाती है।"

बंसीधर, जो कि बुधवार की पार्टियों मे दिखावटी तौर से भी शराब का गिलास हाथ मे नही लेता सिर्फ सोडावाटर पीता है, हंसकर बोला : "जी हां, पीने मे तो आप सब लोग एक ही तरह के नीच हैं, मगर खाते वक्त हममें से कुछ दोस्त शाकाहारी बनकर ऊंचे हो जाते हैं। हम हिन्दुस्तानी दोहरी जिन्दगी जी रहे हैं।"

यह बात मुंह से निकलकर स्वयं बंसीधर के कलेजे मे भी काटे की तरह गड़ गयी। वह भी तो कही न कहीं दोहरी जिन्दगी जीता है। शनिवार को अंग्रेजों की पार्टी मे शराब का गिलास हाथ में लेता है जिससे कि हाकिम अंग्रेज बुरा न मानें। उसने पत्नी को वचन दे रखा है कि वह मद्यपान कभी न करेगा। मन में यह विचार भी है कि अपनी उन्नति के लिए वह अंग्रेजो को कभी नाखुश भी न करेगा, इसलिए उनकी सगत में गिलास उठा लेता है। बीच-बीच मे दिखाने के लिए चुस्कियां भी लगानी ही पडती हैं। यह सच है कि वह जैसे नैन्सी के साथ पीता था वैसे अब नही पीता, मन से छोड़ चुका है, फिर भी क्या व्यवहार में छोडी है? उसके परिवार में मांसादि तो क्या, लहसुन प्याज का प्रयोग भी पिछली कई पीढ़ियों मे नही होता किन्तु उसने विलायती संगत में जो अभ्यास किया तो फिर अभी तक नही छूटा। वह छोडना चाहता है किन्तु छोड़ नही सकता क्योकि कायर है। अंग्रेजी सभ्यता में स्वार्थ लिप्त हम नए समाज के लोग कायर हैं। शूरता का दिखावा करते हुए भी नितान्त कायर हैं। हम अशक्त के आगे शूरवीर बनेंगे और सशक्त के आगे कुत्ते की तरह से दुम हिलाते हुए उनके तलवे चाटने लगेंगे। यह जितने भले-भले घरो के लोग यहां बैठे हुए हैं सभी मेरे जैसे ही हैं। मैंने तो खैर अंग्रेजी पढी है, तिल्लोकी भी ढैया छूने को तीन-पाच या छह दर्जे पढ़ा है, लेकिन यहां बैठे हुए अधिकांश लोग अंग्रेजी भाषा से अनभिज्ञ है, फिर भी व्यवहार मे सब अंग्रेज बन गये हैं। अंग्रेजी पोशाक, अंग्रेजी चाल-ढाल, यहां तक कि फैशन मे अखाद्य वस्तुओं का भोजन भी इन्हें ग्राह्य है। हम सब ढोंगी धार्मिक हैं, हममे से किसी का भी कोई धर्म नही है।

अन्तश्चेतना मे धर्म-अधर्म का यह चिन्ताकीट बंसी के मन में सारे स्वार्थजनित क्रिया कलापों की सुरंगों में रेंग और कही रह-रहकर काटता भी रहा।

इतवार का दिन था, सवेरे ही किराये की गाड़ी करके अपने पुराने मित्र कुंअर शिवरतन से मिलने के लिए ठाकुरगंज नगरिया जा रहा था। गाडी उजाड़ लखनऊ की सड़कों पर चली। गदर के टूटे-फूटे खण्डहर अब तेजी से साफ किये जा रहे हैं। नजरबाग से एक सडक सीधी कैसरबाग के महलों के दक्खिनी फाटक की तरफ से निकाली गई है जो रोशनुद्दौला की कोठी, जिसमे अब कचहरी लगती है, के सामने से गुजरती हुई टीला पीर जलील से होती हुई सीधी गोला गंज की सडक से जाकर मिल जाती है।

यह सच है कि बंसीधर नवाबी काल के कुप्रबन्धों और अराजकता से बेहद चिढा हुआ था। वह राज पलटा यह अच्छा हुआ, मगर पुराने दिनों की रौनक और गदर के समय नगर पर पड़ी विपदा की बातो से उसका मन भर आता है। कैसरबाग के महलों के सामने से गुजरते हुए उसे वे बातें सहसा याद आने लगीं, जो उसने कलकत्ते से लखनऊ

आकर सुनी थी "कैसरबाग के महलों पर गोले-बारूद गिरे, बेगमात और उनकी बांदियां "हाय अल्ला, हाय तौबा" करती हुई बेहाल, बदहवास-सी इधर-उधर भागती फिरीं। जल्द दौड़ने के लिए बड़े पायचों के दामन अपनी पतली कमरों से बांधे हुए, अपने बेशकीमत जेवरों और हीरे जवाहरों को बटोरती फिरीं। जिन हाथों ने कभी दूध या पानी भरे कटोरों से अधिक बोझ नहीं उठाया था, वे इस समय एक हाथ में अपना पानदान और दूसरी बाह मे अपने धन की बोझीली -गठरी को सम्हाले, गिरते-पड़ते-रोते हाय अल्ला चीखती भाग रही थीं। बिरजीस कदर को कालीनों में लपेटकर बाहर लाया गया था। हजरत महल और बिरजीस कदर वगैरह इसी गली से मौलवीगंज की ओर भागे थे जिसकी दाहिने ओर अब किसी मारे गये अंग्रेज कर्नल का स्मारक बनाया जा रहा है—

कर्नल के स्मारक की बात सोचकर बंसी को हंसी आ गयी। लखनऊ के लोगों ने अंग्रेज कर्नल को भी लखनवी 'कल्लन' बना लिया है। स्मारक को कल्लन की लाट के नाम से पुकारते है। जमाना कितना बदल गया है, अंग्रेज कितनी मुस्तैदी और तेजी से उस जमाने को बदल रहे हैं। पुराने शहर का नक्शा हमारे देखते ही देखते दस-पन्द्रह वर्षों मे इतना बदल जायगा कि हम लखनऊ वाले स्वय अपने ही पुराने शहर को न पहचान पायेंगे।

बग्घी राजा के बाजार से गुजरती हुई छाछू कुएं की ओर से गढी लखना के खण्डहरों की तरफ चली। बाज़ार नक्खास की ओर से हैदरीखां फिटन पर आते हुए दिखलाई दिये। बंसीधर ने फौरन ही गाड़ी वाले से कहा : "रोको-रोको, खां साहब, खां साहब, चच्चा।"

दोनों घोड़ा गाड़िया रुकीं। तनकुन को देखकर हैदरीखां की बांछें खिल गयीं। [illegible] बहुत ही याद आ [illegible] दिनों से आये

"जो नहा चच्चा, लखनऊ आने पर पहली बार मैं आपसे मिला था, याद होगा आपको। और एक बार करीब तीन महीने पहले गया था तो देखा कि मजदूर लक्खी सराय की इमारत ढा रहे हैं और आपने अपना अस्तबल भी बेच-बाच डाला है।"

"अरे क्या बतायें भैया, एक साला रिचर्डसन साहब पुलिस कप्तान बनके यहां आया था तुम्हें याद होगा?"

"मगर उसका तो तबादला भी हो गया है। वह तो यहा की आम रिआया और खास तौर से मुसलमानों को बहुत ही तकलीफ देता था। बदतमीजी से पेश आता था। [illegible]।"

[illegible] सा जलील कुत्ता था हरामी का पिल्ला [illegible]। साला मेरे पुराने मालिक उस निलहे रिचर्डसन साहब का लड़का था जिसने रसूलन को यह लक्खी सराय बनवा दी थी और मैंने जिसके घोड़े खरीद लिए थे। जब लखनऊ आया तो मुझे बुलाकर कहा कि तुम लोग मेरे वालिदे मरहूम की जायदाद पर नाजायज तौर से कब्जा किये हुए हो, इसे फौरन खाली कर दो। इस तमाम जायदाद का मालिक मैं हूं। मैंने कहा : नहीं सरकार, लक्खी सराय तो बड़े मालिक बकलमखुद कागज लिखकर अपनी कनीज रसूलबादी को वक्फ कर गये थे। हमारे पास पक्का पोढ़ा कागज हैगा और घोड़े खरीदने की रसीद हैगी। मगर साला अपनी बदर भपकियों से बाज न आया। वह तो कहो किस्मत अच्छी थी कि मैंने उसी दिन घर आये तुमाई चच्ची से कहा कि रसूलन, दस-बीस पचास—ज्यादा से ज्यादा मजदूर

लेकर इस सराय का तमाम कीमती माल-असबाब फौरन ही यहां से हटवा के हैदर बेग के हाते में भेज दो। तुम्हारे पुराने आशिक का लौंडा साला पुलिस कप्तान बन के आया हैगा, मुझे धमकियां दे रहा है। गदर के बाद मैंने वह हाता खरीद लिया था, उसी मे सामान पहुंचा दिया गया, क्या करते ?"

"ओ हो, यह तमाम बातें तो मुझे मालूम ही नहीं, आज मालूम हो रही हैं चच्चा।"

"अरे न पूछो तनकुन भैया। मैंने मोहर्रम अली वकील की सलाह से सब कागजात अंदरसन साहब अंग्रेज वकील को भी दिखलाए। नकद दो सौ रुपए, वो क्या कहते हैं साली, फीस अदा करनी पड़ी। अंदरसन साहब ने रिचडसन कप्तान से कह दिया कि अगर मुकदमा करोगे तो कानून तुम्हारा साथ न देगा। रिचडसन चिढ़ गया, दूसरे दिन हुकुम निकलवाया —इधर से सड़क निकलेगी, पुरानी इमारत तोड़ दी जाए। हरामी साला पक्की पोढ़ी इमारत झूठे सरकारी हुकुम से तुड़वाने लगा। उस वक्त सराय में दोयम दर्जे के कमरों में कुछ मुसाफिर ठहरे हुए थे। जल्दी-जल्दी उनको निकाला, कहा : आप लोग दूसरी सराय में इन्तजाम कर लीजिए। कुछ सामान साले ने तुड़वाया, लुटवाया, वह जगह छोड़नी पड़ी।"

"सुनके बहुत अफसोस हुआ चच्चा, तो अब आप और चच्ची कहां रहते हैं ?"

"शाही अस्पताल के पास ही हमारा गरीबखाना भी है। कहा जा रहे हो इस वक्त ?"

"जरा नगरिया ठाकुरगंज जा रहा हूं, एक ठाकुर दोस्त से मिलने।"

"अमा कभी हमाए यहा भी आओ बर्खुर्दार। औ उस्ताद—आलीशान होके ये किराये की गाड़ी पर जा रहे हो। अमा एक फिटन ले लो न। मैं तुम्हें सस्ते मे दिलवा दूंगा। क्या समझे ?"

"और मेरी ललकौनियां कहां है चच्चा?"

"बेच दी बेटे, एक ठाकुर साहब के यहा है, तुम्हारे पास सवारी को घोड़ा तो होगा ही ?"

"नही चच्चा, न घोड़ा है, न गाड़ी। खैर, अब आपकी मदद से वह भी खरीद लूगा और वह हमारी चच्ची की बहन नवाब चुलबुली बेगम कैसी हैं ?"

"बड़े आराम से हैं, रिक्खबदास के साथ ही रहती हैं, क्यो तुम्हारी मुलाकात नही हुई उसमे ? एक ही महल्ले में तो रहते हो।"

"मैं अब अपने वालिद के घर मे नही रहता चच्चा। नजरबाग में ही एक बंगलिया किराए पर ले ली है। खैर, मैं जल्द ही आपकी खिदमत मे हाजिर होऊंगा। तब इत्मीनान से बातें होंगी।"

दोनो रुखसत हुए। बंसी जब नगरिया में शिवरतन सिंह के यहां पहुंचा तो वह सो रहे थे। इस घर मे बंसीधर से किसी का पर्दा नही था, आदेश होने पर नौकर उन्हें अन्तःपुर में ले गया। "भौजी राम-राम" कहते हुए भीतर के आंगन में गया, और इधर उधर देखकर चिल्लाया : "अरे कहां हो भाई, यहां तो प्यास के मारे हलक सूखा जा रहा है और भौजी न जाने किस पर्दे में छिपी बैठी हैं।"

मौसी की सात-आठ बरस की लड़की दयावती सलूका घघरिया पहने हंसती हुई आयी : "चाचा, हमऊ तुम्हारे स्कूल मा पढ़िहैं।"

"का पढ़िहो ?"

"एन्बी-सी-डी-ई हप्प।"

बंसीधर खिलखिलाकर हंस पड़े और प्यार से उसे दबोच लिया, पूछा : "यह हप्प किसने सिखाया ?"

"बाबू ने।"

बंसीधर हसे, कहा : "अरे तू तो सारी अंग्रेजी विद्या हप्प कर गई—ऐं।"

भीतर से महरी को बहुत से आदेश देते हुए ठकुरानी साहबा बाहर आईं। पंचरंगी सुतली की बिनावट वाली मचिया पर बैठकर उन्होंने पीतल की चौकी पर रखा अपना चांदी का पानदान बेमतलब ही आगे घसीटा और सामने तखत पर दयावती की पीठ सहलाते हुए बंसीधर से पूछा : "हमरी देवरानी के का हाल है ?"

"चंगी हैं।"

"अरे, काल दुपहरिया मां हम तुम्हार भैया ते कहत रहें कि न होय तो हम अपन मौसिया का गांव ते बुलाय के तुमरे हिया पठै देईं। अरे तुमरी महतारी और बहू मां कौन-सी महाभारत ठनी है भई ? दयावती के बाप हमते कहत रहैं कि—"

बंसीधर क्षण भर चुप रहा। हाथ का कसाव ढीला पड़ा तो दयावती उसकी बांह से खिसक कर तखत पर अलग बैठ गई। बंसीधर कहने लगा : "किसी औसत घर में अगर कोई अलग शख्सियत का आदमी पैदा हो जाता है तो उसकी और तमाम घर वालों की हालत कुछ अजीब ही हो जाया करती है भाभी। मैं और मेरा घर इन्हीं अजायबों के दौर से गुजर रहा है।"

"हम तुम्हार यू फारसी नही समझो लाला, हमका ठीक-ठीक बताओ का भवा।"

"बात एक हो तो बतलाऊं, अस्ल में कई बातें एक साथ रस्सी की तरह बट गई हैं। और वह रस्सी इतनी मजबूत हो गई है कि तेज धार की छुरी से काटे बगैर कट नहीं सकती।"

तराशे हुए खरबूजों की तश्तरियां और दो चौकियां लेकर दो दासियों के लहंगे एक साथ दरवाजे के भीतर लहराये। चौकियां मालकिन और बंसीधर के सामने रखी गई, उन पर गुलाबजल छिड़के हुए खरबूजों की तश्तरियां आयीं और दोनों लहंगे दाएं से बाएं कमर लचकाते हुए, लहराते हुए झप्प से बाहर निकल गए। तखत पर चौकी रखे जाते समय ही दयावती जो सरकी तो उठकर फिर बाहर ही चली गई थी। खरबूजे का एक टुकड़ा मुंह में डालकर बंसी ने कहा : "मेरी दो बड़ी भाभियां आपकी देवरानी के बेपर्दापन से बहुत-बहुत नाराज हैं। इस नाराजगी में मेरा कुत्ता एंजिल और चंपक का मर्दों से बेझिझक बात करना वगैरह-वगैरह भी शामिल समझ लीजिए। वाह, खरबूजे बहुत मीठे हैं।" कहकर दूसरा टुकड़ा मुंह में डाल लिया। ठकुराइन साहिबा भी मचिया पर दोनों पैर फैलाए बैठी, चौकी को बिल्कुल अपने पास सरका कर जल्दी-जल्दी खरबूजों के टुकड़े अपने मुह में डाल रही थीं। बंसीधर ने कहा : "और इसके साथ एक बात और भी है, कि हमारी बड़ी भाभी के मुंह से जब एक बात निकल जाती है तो फिर 'प्रान जाए पर *बचन न जाए' वाला किस्सा हो जाता है। वह अब घर और जेवरों के बंटवारे पर तुल गई* हैं। हालांकि हम लोगों को घर छोड़े हुए भी लगभग छः महीने हो चुके हैं, मगर उनकी जिद ने मेरी बौआजी और बाबू का अभी तक पीछा नहीं छोड़ा। वह जिद अब छूत की तरह हमारी छोटी भाभी को भी लग गई है।"

"और उनके भतार तुमरे भाई लोग का कहत हैं ?"

"हा, वह भी सुनो। इसमे एक तीसरा अहम मसला और भी जुड़ जाता है जिससे घर और बिरादरी के तनाव हमारे घर में और भी बढ़ गए।"

खरबूजों को पेट में डालकर ठकुराइन साहिबा अब तश्तरी को लगभग साफ कर चुकी थी। चार-छह टुकड़े ही बाकी बचे थे। उनमे से एक टुकड़ा, फिर झप्प से दूसरा टुकड़ा भी उठाकर मुंह मे चबाते हुए ठकुराइन साहिबा ने पूछा: "हम सुना रहै कि देवरानी कौनों बुढ़ौनू के ब्याहे मा भाजी मारिन, कौनों परचा छपाय के बिरादरी मां बंटवाइन रहैं।"

बंसी मुस्कुराया, कहा: "तो यह बात भी आप तक पहुंच चुकी है।"

"हां, कुछ-कुछ पहुंची तो है, बाकी पूरा हवाल हमका नाही मालूम भवा। बताओ का बात है?"

फिर तश्तरी से हाथ खीचकर दरवाजे की ओर मुंह करके आवाज दी: "गेंदिया।"

गेंदिया दरवाजे पर झांकी, फिर भीतर गई; और गड़ुवा, अंगोछा लेकर बाहर आई। मचिया के बांई ओर लगभग इतना ही ऊंचा पीतल का एक उगालदान रखा हुआ था। उसी में हाथ धोए, कुल्ला किया। मुंह पोछा। बंसीधर यह देखकर अपनी तश्तरी जल्दी-जल्दी खाली करने लगे।

दूसरी दासी चांदी की थाली मे चांदी का ही गड़ुवा गिलास लेकर भीतर आई। तरबूज का शर्बत और वह भी खूब ठंडा। ठकुराइन की पनिहारे वाली कोठरी मे भी टाट का पंखा लगा है जो भोर हरे चार बजे मे आधी रात तक जब तक खाना-पीना नही निपट जाता, बालू में दबे मटकों पर निरंतर झला ही जाता है।

ठकुराइन तरबूज का शर्बत पीने लगी, इधर बंसीधर ने अपनी तश्तरी भी खाली की, बांदी इस बीच में दौडकर एक छोटी शिलाबची भी ले आयी। हाथ-मुह धुलाया, तब तक दूसरी उनके वास्ते शर्बते-तरबूज लेकर हाजिर हो गयी। दासियो का सेवा प्रकरण समाप्त होने और चौकिया हट जाने के बाद ठकुराइन साहिबा की मचिया के आगे पानदान की चौकी आयी और आगे का रोचक वृतान्त भी क्रमशः खुलने लगा।

जब से भुल्ली लाला को पीक पिचकारी मारने की आदत कानून से मजबूर होकर छोड़नी पडी है, तब से अपने अपमान पर वे आठों पहर उदास रहने लगे हैं। और सेर पर सवाया यह हुआ कि उनका इकलौता लड़का मैयादास और उसकी पत्नी उनके ऊपर हावी हो गये हैं। "आप की वजह से घर की बदनामी हुई", सुनते-सुनते उनके कान पक गये। प्रायः बैठक मे बैठना ही छोड दिया। शिकायत यहां तक बढ़ी कि अपना रसोइया और रसोईघर भी अलग कर दिया। उनके मुख्य मुसाहब रजोले पाधा ने उन्हे यह सलाह दी, "मेरी सलाह मानिए, आप दूसरा ब्याह कर लीजिये, लाला। अरे, अभी आपकी उमिर ही क्या है। घर में एक लड़का है, सो सब हुक उसकी बहुरिया को अपने आप चला गया। और जब घर में मालकिन आ जायेगी, उसके आगे भगवान की दया से दो-चार बच्चे हो जायेंगे तब भैया और बौटी के मिजाज अपने आप ठिकाने पर आ जाएंगे।" यह बात भुल्ली लाला के मन में भी उमगें भर गयी।

मन्नो बीबी के यहां से दो रुपये माहवार की सहायता पाने वाली लज्जो की महतारी के ऊपर रजोले पाधा का जोर पडा कि लज्जो की छोटी बहन रज्जो का ब्याह भुल्ली लाला से कर दिया जाय। ब्याह का खर्चा खुद लाला ही उठायेंगे। लज्जो की महतारी को कोई चिन्ता न करनी पड़ेगी। लज्जो के पति अपने ससुराली मकान में ही रहते थे, मोटे-पट्ठे की फेरी लगाते थे। वे अपनी साली को बूढ़े के साथ ब्याहने को राजी न हुए। लज्जो भी नही चाहती थी, घर में रगडा-झगड़ा चलने लगा तो लज्जो मन्नो बीबी के पास आयीं। वह घर में थी नही इसलिए चुन्नो बीबी के आगे ही अपने कलेजे की खौलन

सम्हालने से मना कर दिया था, इसलिए वह भी नही आ सकती थी। आठवा महीना लगभग पूरा हो रहा है। नवा आरभ होने को है, बसीधर के लिए यह चिन्ता भी अहम हो गयी। स्कूल चलाने के लिए अगले सत्र मे भर्ती करने के वास्ते विद्यार्थियो का जोगाड़ करना था। शिवरतन ने वादा किया था कि मझौना के जमीदार पडित मुमेसरदीन के यहा वह ले चलेंगे, खानदानी जान-पहचान है, दोनो की जमीदारिया भी लगभग आम ही पास हैं, उनके जोर डालने से गाव के कुछ ब्राह्मण, ठाकुर लडके तैयार हो जायेंगे। इसी के सबंध मे निश्चित कार्यक्रम बनाने के लिए वह आज यहा आया था। भौजाई, ठकुराइन साहिबा से इतनी देर बातें हो गयी, शर्बतपान का शिष्टाचार हो गया, बंसीधर की जेबी घडी मे दस बजकर पचास मिनट होने को आये, लेकिन कुअर शिवरतन के लिए अब भी भोर न हुई थी। झुंझलाकर ठकुराइन से कहा : "आप मुझे उनके सोने के कमरे मे ले चलिये, भैया की यह रईसी आदत मुझे बिल्कुल पसंद नही। चलिए, उनको आडे हाथो लेता हू।"

कुंवर साहब के शयन कक्ष मे पहुच गये। बसीधर ने उनके सिरहाने खडे होकर जोर-जोर से कहना शुरू किया : "उपनिषद मे लिखा है जो सोता है उसका नसीब भी सोता है, जो उठकर बैठ जाता है उसका नसीब बैठ जाता है। जो उठकर खडा हो जाता है, उसका नसीब खड़ा हो जाता है, और जो चलने लगता है, उसका नसीब,…"

"ए यार, हमसे हेडमास्टरी न छांटो। कित्ता बजा ?"

"आख खोलोगे तो घड़ी दिखाऊगा, फौरन उठ जाओ।"

कुअर साहब चुप पड़े रहे। ठकुराइन ने कहा "लाला, इनके मुहे पे सुराही केर पानी नाय देलो, तब ही उठिहैं।"

सुनकर झटपट उठते हुए कुंअर साहब ने कहा : "अरे बाप रे, वंदूक के साथ-साथ तोप भी आयी है। माइडाला।" कहकर चटपट उठ बैठे और खड़े होकर पत्नी को प्रणाम किया।

घंटा भर सबेरे की तैयारियों में लगा, फिर स्वस्थ होकर कुअर साहेब बोले : "तनकुन यार बड़ा गजब हो गया है।"

"क्या हुआ भैया ?"

"अमां मंझौना के जमीदार जिनके यहा हम लोग जाये का रहे।"

"तो, क्या हुआ उन्हे ?"

"अरे भवा का, दुबौना का लौडा सार मियंटा हुई गवा। खम्साबाद के नबाब की बिटेवा ते मैरेज करि लिहिस।"

पूछने पर यह जानकारी मिली कि जगदम्बासहाय दुबे का एकमात्र पुत्र त्रिवेणी सहाय अपने क्षेत्र के ताल्लुकेदार राजा रसूल अहमद खां के यहां अक्सर आता-जाता था। दोनों गौरी फौज मे गल्ला सप्लाई करने के धंधे में साझीदार थे। राजा साहब की इकलौती सन्तान उनकी विधवा पुत्री से सयोगवश त्रिवेणी सहाय की आंख लड गयी, राजा को पता लगा। उन्होंने चाल चली, कहा : "बर्खुरदार तुम मुसलमान हो जाओ, शादी भी हो जायेगी और मेरे बाद तुम खम्साबाद के राजा भी हो जाओगे। नारी और नारायण मे द्वंद्व। नारायण हारे और नारी जीत गयी। पडित त्रिवेणी सहाय द्विवेदी नवाबजादा बशीरअहमद खान हो गया। वह अपना घर, हिंदू पत्नी और पुत्र-पुत्री को त्याग कर खम्साबाद चला गया। उसके पिता पंडित जगदम्बा सहाय दुबे तबसे अपनी हवेली के एक कमरे में गुमसुम बैठे रहते हैं, सबसे मिलना-जुलना छोड दिया है।

कथा सुनाकर शिवरतन बोले : "दुबे जी के जोर पे हमका तुम्हरे बदे दुई चार स्टूडेंट मिलै की उम्मीद रही, मगर अब तो वह चमन ही न रहा जिसमे आशियाना था।"

तभी टी० एन० चोपडा साहब के यहां से एक घुड़सवार पत्रवाहक मिस्टर बंसीधर टण्डन के लिए एक पत्र लेकर आया। पत्र अंग्रेजी में था, लिखा था "माई डियर तनकुन बाबू, मेरी पत्नी ने अभी-अभी खबर यह मेरे पास भिजवायी है कि वह मिसेस टण्डन को अपने घर लाने के वास्ते तुम्हारे यहां पहुंच गयी हैं, लेकिन मिसेस टण्डन से यह जान कर कि तुम कुंअर साहब के यहां हो यह कहलवाया है कि मैं तुम्हें उनको ले जाने की सूचना दे दूं। उन्होंने यह भी कहलवाया है कि मिसेस टण्डन को वह बग्घी पर नहीं ले जायेंगी। उन्हें फीनस पर आराम से मेरी ससुराल के घर में पहुंचाया जाएगा। तुम किसी तरह की फिक्र न करना, लौटते हुए मेरी पत्नी के घर पर अपनी पत्नी से मिलते जाना। अगर दोपहर में आओगे तो मैं भी तुम्हें वहीं मिलूंगा।"

"आह" पत्र पढकर बंसी ने शांति की एक निःश्वास ली और कहा: "चुन्नो बीवी ने मेरी एक बहुत बड़ी फिक्र दूर कर दी है।—और तुम्हारे तिरबेनी दुबे के बशीरअहमद हो जाने से भी मुझे अब कोई परेशानी नहीं है। सुनो भैया, मैं कल सुबह ठीक साढ़े चार बजे तुम्हारे घर आ जाऊंगा।"

"अरे काहे गजब करत हो यार, मौसमे गर्मा मे सोने का मजा तो उसी वक्त मिलता है। और फिर हम पूछित हयि कि हुवां जाय के का करिहौ। दुबौना तो सार मियां हुई गवा।"

बंसीधर उठते हुए बोले: "मैं भाभी साहबा से कह जाऊंगा कि तुम्हें ठीक साढ़े चार बजे तैयार कर दे, दुबे के छब्बे बनने की मुझे परवाह नहीं। इतने बड़े जमींदार हो, क्या उस गांव में दो-चार भले घर के लोगों से तुम्हारी जान-पहचान न होगी? अलावा इसके हमें मुस्लिम स्टूडेन्ट्स भी तो चाहिए।"

"मुस्लिम फैमिलिया अपने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाने के खिलाफ हैं। कहते हैं कि पच्छुम की मार्डनियत इस्लामी उसूलों के खिलाफ है।"

"सैय्यद अहमदखां, सद्रेआला आजकल मुसलमानों को नई दुनिया में रहने के काबिल बनाना चाहते हैं। खूब लेख लिख रहे हैं।"

"अ-रे, कोऊ कुछ न कर सकी यार।"

"न सही, चलने से कुछ लड़के मिल भी सकते हैं।"

"यह तो ठीक है मगर ठहरेंगे कहा यार?"

"दुबे जी के यहां, और कहां? तुम उस बेचारे दुखिया बूढ़े से कुछ तसल्ली भरी बातें भी कर लेना। आखिर शराफत का भी कोई तकाजा है कि नहीं। सो यू शैल बी रेडी एट फोर थर्टी ए० एम०। मैं भाभी से कहने जाता हूं।"

बग्घी चौक मे 'तखत' के पास जा रुकी। बंसीधर ने किराया चुकाया, कोचवान को बख्शिश भी दी और गली की तरफ मुड़ा ही था कि गोल दरवाजे की तरफ एक खस के पर्दे पड़ी फीनस आती दिखलायी पड़ी। आठ पालकी कहार और दो भिश्ती साथ चल रहे थे, जो कि बीच-बीच में खस पर हल्का छिड़काव करते चलते थे। बंसीधर के मन में हुआ कि इस पालकी पर शायद उसकी पत्नी ही जा रही है। नजर बाग से चौक तक फीनस को पहुंचने मे लगभग उतना ही समय लगेगा, जितना समय वह शिवरतन सिंह के यहा बिताकर आ रहा है। बंसीधर अपनी पतली, खुशनुमा छड़ी उठाकर पालकी के पीछे, तेज कदम चला। पालकी कहारों और भिश्तियो के साथ मन्नो बीबी के घर का एक नौकर भी था। उसने हेडमास्टर साहब को पहचान लिया और झुक कर सलाम की। कहा: "आपै के बंगले ते आय रहे हैं, सरकार। बहूजी साहेब फीनसै मां तशरीफ रखें हैं। फीनस रुकवाई हजूर, बात करिहौ आप?"

"नही, उन्हें खबर करने की जरूरत भी नही। मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।"

हाथ में उठी हुई नक्काशीदार खुशनुमा छड़ी फिर जमीन मे टिक कर चलने लगी। हेडमास्टर साहब इस समय कलकतिया लिबास में थे, चुन्नटदार धोती जिसका एक सिरा कुर्ते की जेब में और चुनी हुई बांहो वाला मलमल का कुर्ता जिसके गले और कन्धों पर चिकन की नफीस कलियां बनी हुई थी, सिर पर दुपल्ली टोपी थी। पोशाक हिंदुस्तानी होने पर भी चाल मे अंग्रेजों की शान और नपे-तुले सधे कदम बढ रहे थे। गले में मुठियाया हुआ सफेद दुपट्टा हार की तरह झूल रहा था। दो-चार जान पहचानी लोग भी मिले, एक परिचित पंडितजी भी मिल गये। उनके हाथ जोड़े, पैलगी की, बाकी सबसे सलाम बन्दगी। मन्नो बीबी की हवेली के सामने फीनस रुकी। पत्नी को सहारा देकर बाहर लाने के वास्ते बंसीधर तुरंत आगे बढ़ गया। पति को देखकर चंपक का चेहरा चंपक फूल ही की तरह खिल उठा। पति की बांह के सहारे पत्नी पालकी से बाहर आई, तब तक चुन्नो बीबी स्वयं भी दरवाजे पर पहुंच चुकी थी। बंसीधर को देखकर हल्का घूघट गिराया और हंसकर कहा : "आप खूब आये। आपको खबर मिल गयी थी ?"

"जी हा, आपका हुक्म पाते ही तिल्लोकी बाबू ने अपना घुड़सवार दौड़ा दिया था।"

"तुझे आउन मे कोई तकलीफ तो नाही भई चमेलो ?"

"तकलीफ क्यो होती ? खासी तरावट मे चली आयी, और हचकोले भी नही लगे। (पति से) सुनते हो, आप ये मेरा बटुआ लीजिए और ···"

"इसकी जरूरत नही, मैं देकर आता हूं, तुम भीतर जाओ। चुन्नो बहन तिल्लोकी बाबू आ गये क्या ?"

चमेलो के कंधे पर हाथ रखे हुए चुन्नो बोली : "अभी हमारी तरफ तो आये नही, कोठी मे देख लीजिए।"

तिल्लोकी और तनकुन की दोस्ती की तरह ही चुन्नो और चमेलो का नाता भी बहुत गाढ़ा हो गया था। आज सबेरे उठते ही चुन्नो ने अपनी मां से कहा : "चमेलो की ससुराल में तो सास-जिठानी मे महनामथ मचा हुआ हैगा, उस बिचारी की जचगी कौन देखेगा ? मुसद्दी चाचा वाली चाची तो कह आयी कि हम ईसाई के बंगले मे तो तुमरी सौरी खातिर नही आवैंगी, कोई दूसरा घर किराये पे लै लेव। अब ई सब पंचायत कौन करे, अब आज मै उसे ले आती हूं अम्मा।"

"और जो मुसद्दीमल ने बुरा माना, कहा-सुनी भयी तो कौन भोगेगा ?"

चुन्नो तमक कर बोली : "मैं ई सब नही सोचूगी। मर्दन मे भी बड़ी दोस्ती है और हमरे मन में भी चमेलो के लिए बहुतै भाव है। मैं तो उसे लेने जाती हूं।"

मन्नो कुछ न बोली, चुन्नो ने नौकर बुलाकर पालकी का प्रबंध करवाया और आप बग्घी जुतवाकर नजर बाग चल दी। जब चंपक ने पति को सूचित किये बिना न जाने का हठ ठाना तो चुन्नो ने अपनी महरी को बग्घी पर सौत के घर दौड़ा दिया, जिससे कि उनके पति चमेलो के पति को शिवरतन सिंह के यहां तुरंत यह सूचना पहुंचवा सकें। पति चोपड़ा साहब अपनी पत्नी के इस व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुए थे। वैसे भी जब से उनकी पत्नी श्रीमती टण्डन के संपर्क में आकर बहुत-कुछ बदली है तब से वे उसके प्रति अनुराग रखने लगे हैं। भुल्ली लाला की परचेबाजी में श्रीमती चंपकलता के साथ श्रीमती चुन्नो बीबी और श्रीमती मन्नो बीबी भी शामिल हुई तब से अनुराग कुछ अधिक ही बढ गया है। चोपड़ा साहब अकसर पत्नी और बच्चो के साथ भी रह जाया करते हैं। चोपड़ा साहब कोठी में ही बैठे कागजात देख रहे थे। जब उन्होने फर्नीचर बनवाने का धंधा शुरू किया तब सबसे पहले अपनी ससुराली कोठी की गद्दीवाली बैठक हटायी और अपने वास्ते मेज, कुर्सियों वाला दफ्तर

बनाया। चोपड़ा साहब हिसाब-किताब में बड़े तेज हैं। अपनी ससुराल की दौलत भी बढ़ाते और साथ ही मे अपनी रखैल प्रिया की भी। बंसी को देखा तो तपाक से उठकर हाथ मिलाया और मुस्कुराकर बोले : "लगता है, तुम्हें मेरा मैसेज सही टाइम से मिल गया है?"

"हां, और मैं गोल दरवाजे से चंपक के साथ ही यहां आया हूं। तुम अभी घर मे नही गये यार। चुन्नो जी शिकायत कर रही थी।"

"अरे यार, रसल साहब के एक जरूरी लेटर का मुझे जवाब देना था इसलिए सीधे कोठी मे ही चला आया। कहो, तुम्हारे मझौन जाने का क्या प्रोग्राम बना?"

"कल सुबह कुंअर साहब के साथ जाऊंगा। वहां के बाम्हन जमीदार के साथ भी एक ट्रेजेडी हो गयी है यार। उनके इकलौते साहबजादे नवाबी और नवाबजादी पाने के फेर मे मुसलमान हो गये हैं। उनके घर में इससे बड़ा तहलका मचा हुआ है।"

"अमा यह बातें तो अब आये दिन का तमाशा हो गयी हैं। मेरी मंगी ने मुझे क्रिश्चियन बन जाने के लिए क्या कम ललचाया था। मगर मैंने कहा नथिंग डूइंग। आई वोन्ट चेंज माई रेलिजन। परमात्मा एक है मगर उसके पास पहुंचने के रास्ते अलग-अलग हैं और मैं जिस रास्ते पर चलता आया हूं, वही अब मेरी आदत में शामिल हो गया है, मेरा संस्कार बन गया है।"

"ठीक कहा, एक बार मुझे भी नैन्सी ने ईसाई बनने का लालच दिया था मगर मैंने इन्कार कर दिया। ये किसी किस्म की लालच में पड़कर अपना धरम-करम छोड़ना मुझे खुद अपने आप को ही धोखा देना लगता है।"

दोनों मित्र कुछ समय के पक्ष और कुछ विपक्ष मे अपने विचार प्रकट करते रहे, तभी भीतर से मन्नो बीबी का बुलावा आया और वे अन्दर चले गये।

दूसरे दिन सुबह ठीक तीन बजे जाग उठे। पत्नी-विहीन घर कितना सूना लगता है। बचपन में अपने पड़ोसी पंडित लोकनाथ जी से विश्वामित्र का कहा हुआ एक वाक्य सुना था—"जायेऽस्तम्"—जाया ही घर है। पहले घर मे रहता था, घर मा और भावजो का था, उसका होकर भी उसका न था। फिर शिवरतन के पिता के यहां रहा, तब भी घर अपना-पराया ही रहा। फिर रुक्को पुरतानी के यहां किराये पर रहा, कलकत्ते मे कुछ दिन रहा, बसी को घर उस समय भी घर नही लगा था। लेकिन चमेलो के आने के बाद घर उसके लिए स्वर्ग हो गया था और वह स्वर्ग का मालिक बन गया था। चार दिन के बाद इस घर मे कुआं-कंआ की एक चुन्नी-मुन्नी आवाज नयी रौनक ले आयेगी। चमेलो उस रौनक को लाने के लिए ही इस घर में फिलहाल सन्नाटा करके गई है। किराये की गाड़ी समय से ही आ गई थी। उधर ठकुराइन भाभी की कृपा से कुंवर शिवरतन भी तैयार हो चुके थे। उन्होंने दो घोड़े भी कसवा रखे थे। स्वल्पाहार के रूप में ठकुराइन ने मखाने, चिरौंजी और बदाम पड़ा गाढ़ा पंचामृत बनवाया था। उसे पीकर दोनों चल दिये। गाव उजड़े नजर आ रहे थे। जब बंसीधर ने इस पर टिप्पणी की तो कुंअर जी कहने लगे : "हजारन बरस क्यार हमार ट्रेडिशनै बदल दिहिस है यू अंग्रेज गवर्नमेंट। हिन्दू राज होय, मुगल पठान होय, कौनो सार राजा शहशाह होय पर धरती क्यार राजा किसानै रहा। उसकी जमीन पर कभी किसी सरकार ने दावा नही किया। जमीदार आमिल कानूनगो वगैरह आये जरूर रहै बाकी काश्तकार क्यार जमीन काश्तकारै की रही। अब तो सब कुछ ससुर गौरमिन्टी हुई गवा है। गांवन की पंचायतें तोड़ दिहिन, लगान जौन मुकर्रर किहिन तौन हुइगा। काश्त ससुरी कम होय या जादा, लगान वहै पड़ी, मुकर्ररशुदा। ऐस लूट तो मुगलई जमाने तलकु महिया नाही भई रही हो। का कहा जाय? गांवें के कुलीन, शरीफ घरन के लड़कन का हाल तौ

बहुतै बुरा है। कोई सार मुसलमान हुई रहा है, कोई किरिस्तान। अब हिन्दू धरम न बची तनकुन।"

"सचाई हमेशा जीतती है भैया। घटाटोप बादलो के झुड भी बहुत देर सूरज को रोशन होने से रोक नही सकते।"

रसूलपुर ग्रण्ट गांव शिवरतन सिंह के पिता ठाकुर रामजियावन सिंह को गदर मे अंग्रेज कलक्टर की पत्नी और उनके दो बच्चो की जीवन रक्षा करने के हेतु उपहार स्वरूप 'ग्रान्ट' मे मिला था इसलिए गांव के नाम के साथ-साथ 'ग्रेंट' अथवा 'गिरण्ट' शब्द भी जुड गया। जिस दिन 'ग्रांट' का कागज आया उसी दिन ठाकुर साहब अचानक ही बैठे-बैठे सुरपुर सिधार गये। इसी कारण से शिवरतन और उनके परिवार वालो ने मनहूस मानकर सदा उसकी उपेक्षा की। आज भी उसकी सरहद मे गुजर कर मझौना जा रहे थे कि एक पन्द्रह सोलह बरस का नवयुवक दौड़ा हुआ आया। "सर, सर, सरकार, हजूर रक्क्षा कीजिए। हमारा खेत लूटे लिए ले रहे है अन्नदाता।" उसके पीछे पीछे चार पांच आदमी और भी दौडते आ रहे थे। बसीधर उसे पहचान गये, वह उन्ही के स्कूल का छात्र था। उसकी आखो मे आंसू और चेहरे पर बदहवासी छायी हुई थी। वह पास आया।

"अरे, श्याम किशोर, तुम यहा कैसे ?"

"हियर माई-हियर इज माई होम, सर। दे आर लूटिंग अवर खेत, सर।"

पीछे आते हुए दो लोगो ने अपने जमीदार को पहचान लिया, उछाह से हाथ उठाकर जय जयकार करते हुए बोले : "जै होय जै होय अन्नदाता। आपके गांवे मा संकर भगवान परघट भये हैं उयि ख्यात मा सैंकड़न मनई जुटि आवा है सरकार।"

श्याम किशोर विकल स्वर मे कहने लगा "माई फादर, मदर एण्ड आल वेन्ट इन ए ब्याह, आई मीन।"

"हिन्दी मे कहो।" हेडमास्टर साहब का आदेश हुआ।

तब पता लगा कि जिस खेत मे बीचो बीच शकर भगवान प्रकट हुए है वह गाव के बड़े शिवाले के पुजारी और श्याम किशोर के पिता के पुरखो का था। बंटवारे मे श्याम किशोर के पिता के हिस्से में आया। दरअसल पुजारी जी उस समय उस खेत को अपने लिए चाहते थे किन्तु पंचायत के फैसले के कारण उस खेत को अपने लिए. वह उन्हें न मिलकर श्याम किशोर के पिता को मिला। तभी, बरसों से दोनों भाइयों और उनकी पत्नियो मे कलह काण्ड चल रहा है। सारा गाव श्याम किशोर के पिता के पक्ष मे था, इसलिए अब तक कुछ न हो सका। जब श्याम किशोर के पिता गाव के नये जमीदार कुंअर शिवरतन सिंह की सिफारिश से श्याम किशोर को अंग्रेजी पढाने लगे तब से आपसी कलह ने कुछ और जोर पकड़ा। रसूलपुर ग्रंट ग्राम की ब्राह्मण बिरादरी मे फिर श्याम किशोर और उसके पिता को लेकर हाय हत्या शुरू होने लगी—"ब्राह्मण होके आज म्लेच्छों की भाषा पढ़ेगा, कल ईसाई मते की बातें चलाकर हम सब का धर्म भ्रष्ट करेगा। इनको बिरादरी से बाहर निकाल देओ।" गांव के एक सम्पन्न ठाकुर चूंकि अपने लड़के को अंग्रेजी पढाने के लिए मन ही मन सोच ही रहे थे, इसलिए उन्होंने यह सोचकर कि जो गर्मागर्मी आज ब्राह्मणो मे हो रही है वह कल से हमारी बिरादरी में भी आरम्भ होगी, इस बात का तीव्र विरोध किया। नए जमीदार चूंकि ठाकुर ही थे और उन्ही की सिफारिश से तीव्र बुद्धिशाली श्याम किशोर को चूंकि अंग्रेजी पढने भेजा गया था, इसलिए वह विरोध भी निकम्मी आग की तरह बुझ गया। श्याम किशोर के पिता-माता और पूरा परिवार इन दिनो चूंकि श्याम के मामा की पुत्री के विवाह मे गया हुआ है, इसलिए पुजारी के बेटे मुल्लर ने एक नया शिगूफा छोड़ा। एक दिन सवेरे उठकर तांबे का पानी भरा कलसा बीच खेत मे 'ओम नमस्सिवाय'

'नमस्सिवाय' करता हुआ डाल आया। कहा कि रात मे शिवजी ने स्वप्न दिया है, कहा है कि हम यहा प्यासे पड़े हैं हमें पानी पिलाओ।

वह तीन दिन से शकर जी का पानी पिला रहा है और आज सवेरे भूमि फोड़कर शंकर जी अकस्मात प्रकट होने लगे है अभी जल ही का कुछ अंश धरनी मे ही दबा हुआ है। इस बीच में सैकड़ो लोग लोटा-लोटा भर जल शंकर जी को चढ़ाने के लिए भक्ति बावरे हो उठे हैं। ममेरी वहन के विवाह में सम्मिलित होकर श्याम अचानक आज सवेरे अपने गाव लौट आया तो यह तमाशा देखा। उसके माता-पिता अभी दो दिन बाद आयेंगे। उसके पिता खेत को जोतकर गये थे। पानी ने वह रेखायें मिटा दी हैं और बोये हुए बीजो को भी बहा दिया गया है। श्याम बहुत चीखा चिल्लाया, पर जिस भूमि पर साक्षात शंकर भगवान ने महसा प्रकट होने का चमत्कार दिखलाया है, वह भूमि अब श्याम के पिता की नही हो सकती। गांव में एक साधु बाबा भी रहते थे, बोले: "जमीन अब तुमरे बाप की नाही, साक्षात शंकर भगवान की है। यहा अब शकर जी की मठिया बनिहै।"

भक्ति मद से मदमत्त जनता ने भी साधु बाबा का साथ दिया, कहा कि थोड़ा बहुत मुआवजा सब गांव वाले चन्दा करके दे देगें। भूमि अब शंकर जी को ही मिलेगी।

"देअर इज सम बदमासी, सर, माई फादर वेरी पुअर पीपुल, सर। सेव अवर लैण्ड, सर। गाड सेव द किंग, सर।"

चूकि स्कूल मे मास्टर हेडमास्टर सभी अंग्रेजी बोलने पर ही जोर देते हैं इसलिए श्याम किशोर भावावेश में अग्रेजी बोलता चला जा रहा है और रोता जा रहा है। जमीदार कुंअर शिवरतन सिंह थोड़ी देर तक अपने घोड़े पर बैठे-बैठे सोचते रहे, फिर गांव के मुखिया पडित देवतादीन से कहा कि फावडे लेकर दो मजदूर फौरन बुलवाये जायं।

मजदूर आए, शकर जी के आस-पास की जमीन खोदने का हुक्म दिया गया। मुल्लर, उसके पुजारी पिता तथा कई गाव वालो ने आपत्ति की, किन्तु जमीदार की घुड़की के आगे किसी का बस न चला। भूमि फूलने और शकर जी के धरती फोड़कर प्रकट होने का रहस्य यह था कि खेत मे गड्ढा खोदकर भीगे हुए चने भर दिए गए थे और उन पर शंकर जी को प्रतिष्ठित कर दिया गया था। एक तो पहले ही से भीगे, ऊपर से तीन दिनों तक बराबर पानी पड़ा सो चने फूल आए और शंकर जी प्रकट हो गए। सारे गाव वाले यह दृश्य देखकर सन्न रह गए। शिवरतन रौब से बोले: "मुखिया जी, आप तो शायद नहाए-धोए पूजा पाठ करके खड़े हुए हैं।"

मुखिया पंडित देवतादीन ने हाथ जोडकर गिड़गिड़ाते हुए कहा: "हा सरकार, हम तो अपने नेम करम से ब्रह्म मुहूर्त मे--"

"आप इस मूर्ती को उठाइए और अपने कब्जे मे कीजिए।"

फिर अपनी जान पहचान के कई ब्राह्मण और ठाकुर चेहरों की ओर नजर और उंगली उठाते हुए बोले: "आप सब लोग गवाही के लिए तैयार रहें। मैं इस नीच पुजारी और उसके बेटे पर आज ही मुकदमा चलवाऊंगा।"

सारा गाव सुनकर सनाका खा गया।

"हेडमास्टर साहब, आप भी गवाह है। ऐसे बेईमान लोग भला ब्राह्मण कहलाने जोग हो सकते हैं। अग्रेज सवार आयेंगे, बूट पहने इनके घर में घुसेंगे, ठोकरें लगायेंगे और पकड कर जेल ले जायेंगे। लाज नही आती, मैं इनको जरूर सजा दूगा। मुखिया जी, यह लड़का आपके जिम्मे है, अगर इसको या इसके घर को कोई भी नुकसान पहुचा तो मैं सब लोगों को जिम्मेदार ठहराऊगा, ये याद रखें।"

बंसीधर से अवधी मे बातें करने वाले कुंअर शिवरतन सिंह ने अपनी ग्रामीण प्रजा

से निरन्तर खड़ी बोली मे ही वार्तालाप किया। उनके लिए लोटे मे शर्बत घोलकर लाया गया, वह भी न पिया और दोनों घोडे मझौना की ओर चल दिए। पावघड़ी मे वहां के जमींदार पडित जगदम्बा सहाय दुबे की हवेली पर पहुंच गए।

कुअर शिवरतन सिंह बड़े जमीदारो मे थे। यों जगदम्बा दुबे भी कम सम्पन्न न थे पर कुअर साहब से हैसियत में दबते हुए ही थे। नाम सुनते ही दीवान जी दौड़-दौड़े आए और हाथ जोड़कर दोनो को भीतर ले गए। नौकरों ने घोडे सभाले। भीतर शिलाबचिया लिए खड़े नौकर मेहमानो के मुंह धुलवा रहे थे। नौकर उनके जूते उतारकर पैरो को गीले अंगोछे से पोंछ रहे थे। कुअर साहब ने दीवान जी से पूछा : "बड़े महराज कहा हैं ?"

उदास चेहरे से दीवान जी बोले : "का अरज करी सरकार, आज बारा रोज हुई गए ऊपर अपने चौबारे मां पड़े रहत हैं, न कोऊ से बोलत हैं न चालत हैं। न खाते है न पियत हैं। बहू जी जब बहुत दबाव डारत हैं कि आप न खैहो हम आपके पोता पोतिन का खाय का न दयाब न आपै खाब। तब दुई गस्सा मुहे मा डारि लेत है। टप-टप रोवत जात है···" कहते-कहते अधेड़ दीवान जी का गला भी भर आया। उगलियो से आखे पोछते हुए बोले : "रसूल अहमदवा सार आपन घरु बसाय लिहिस, हमार उजडिगा।"

लोटे मे केवड़े की बालो से सुवासित कुए का जल और एक तश्तरी मे दस-बारह ओले और चांदी के गिलास आ गए। ओले घोलकर नौकर ने शर्बत बनाया और मेहमानो को अर्पित किया। कुअर साहब समवेदना के भाव प्रकट करते हुए प्यास की मजबूरी मे शर्बत के घूट भरने लगे, कहा : "हम तो बडे महराज के दर्शन करे खातिर आए रहे। अब जो हुईगा सो हुईगा, अब अपने पोतन का सम्भारें। तिरबेनी बबुआ के तो अपना स्वारथ देखि कै राजा हुइगे, अपने बाल-बच्चन क्यार मुंह न देखिन कि बाबा के बाद फकीर हुई जइहैं बेचारे। और बहू जी पर जौन विपदा पड़ी है वहिका कैसे बखानो।"

कुअर साहब ने बातचीत मे बतलाया कि पिछले महीने मे उनकी बड़े महराज से बातें हुई थीं। उस समय तिरबेनी बबुआ भी वहां मौजूद थे। बड़े महराज ने और बबुआ साहब ने भी यह आश्वासन दिया था कि वह कम मे कम ब्राह्मण-ठाकुरो के तीन-चार लडके अंग्रेजी पढने के लिए देंगे। इसीलिए वे आज स्कूल के हेडमास्टर साहब को लेकर यहा आये थे।

सुनकर दीवान जी बोले : "अब सरकार हमका बहुत मुश्किल नजर आवत है, ई गावे महियां मिया भाइयन क्यार विरोध तो सुरुअै हुई गवा, बाकी पादरियो सार का कोऊ गांवै मां नाही घुसे देत है।"

दरवाजे के पीछे से एक नारी स्वर सुनायी दिया : "देवानजी, कुंअर साहब ते अरज करौ कि आपन भतीजा का अंग्रेजी पढाय लिखाय के ऐस बड़ा हाकिम बनावैं कि दुस्मन की राजा पदवियौ रांड फीकी पड जाय। और कमच्छा महाराज का बुलाय लेओं, उई गावँ मा जायके पूछ-ताछ करि आवैं कि को-को पढ़ी।"

कुअर शिवरतन तो हवेली मे ही रुक गए किन्तु हेडमास्टर बसीधर ने स्वय जाकर गाव के लोगो की मनस्थिति देखने का निश्चय किया। स्थिति सचमुच बहुत खराब थी। काश्तकार अब जमीन का मालिक नही, केवल एक दयनीय किरायेदार मात्र रह गया था। सरकार ने एक बार खेत की नाप-जोख और उसमे उगनेवाली फसल का औसत अनुमान लगाकर वार्षिक लगान निश्चित कर दिया था। धरती को सुफला बनाने के हेतु सरकार कोई उपाय नही करती थी। उपज कम होने पर भी समान निश्चित रेट के अनुसार ही देना पड़ता है। कितने ही अकुलीन और कुछ कुलीन किसान भी भूमिहीन बन चुके थे।

ऐसे कुलीन वंश तो अपने पैतृक गांवों से बाहर किसी अन्य नगर या कस्बे में जाकर मजदूरी करने लगते, और अकुलीन गरीब जमींदार तथा अपेक्षाकृत सम्पन्न कुलीनों की मुफ्त बेगार ढोते थे। नये राज में महाजन की स्थिति पहले से बहुत बढ़ गयी थी। कई महाजन तो विलासी राजे, नवाबों और रईसों की अपने यहां रेहन रखी हुई जायदाद के मालिक अब नये जमींदार बन गए थे। उन्हें महाजनी हथकंडे तो आते ही थे, अब सामन्ती भी साधने लगे। धरती का बेटा मानसिक तनावों से टूटने लगा। औसत व्यक्ति की दैनिक आमदनी लगभग तीन साढ़े तीन पैसे मात्र ही रह गयी। 'बरसो राम हरै धनिया, खाय किसान भरे बनियां।' कहावत चिल्ला-चिल्ला कर भी मरता किसान ही था और बनिया दिन पर दिन मोटा होता चला जाता था। कई ब्राह्मणों और ठाकुरों के बेटे इस लालच से अंग्रेजी पढ़ना चाहते थे कि पढ़-लिख कर वे सरकारी नौकरियां पा जायगे। मासिक वेतन की बंधी आमदनी हो जाने पर उनकी दशा सुधर जायगी। ठाकुर जन्डैल सिंह के बेटे तहसीलदार सिंह ने न तो कोई काम-काज किया कि आमदनी बढ़े और न सम्पन्न व्यक्तियों की खुशामद दरबारदारी ही की। अपने दो-चार चेलों को लेकर अखाड़े में डंड पेलते, जिस-तस की गाय भैंस या बकरी को पकड़ कर दुह लेते और अपना काम चलाते। आमों के बगीचे तो मानों उसके बाप ही के थे। आम के मौसम मे आए दिन पेड़ो के रखवालों से लुका-छिपी का खेल चलता, अकड़ के कहते थे: "हमका का, चार महीना आम खाब, चार महीना वहि की गुठलिन का पिसाय पिसाय के सागु रोटी खाब। और जब वहौ न बची तो महीना-महीना भर जायके आपन एक-एक ससुराले मा रहब। यही बदे तो चारि-चारि ठकुरानिन ते बेहाव किया है हम।"

आखो मे सुरमा और कानों के ऊपर चूने की गोली चिपकाये, एक अंगोछा पहने, एक कधे पर डाले, हाथ मे लट्ठ लिए चार-छह आवारा चेलों के साथ मूंछों पे ताव देकर घूमता है। आजकल जब से तिरबेनी बबुआ नवाबजादा बशीरअहमद खान बन गये हैं, तब से वह रमज्ञागुरु के चेले बनकर कट्टर मुस्लिम विरोधी हो गए हैं। हेडमास्टर साहब को स्कूल में भर्ती करने के लिए लड़कों की तलाश में आए देखकर वे तहसीलदार सिंह रमज्ञा (राम आज्ञा) तिरबेदी के पास पहुंचे। कहा: "गुरुजी, पड़ोस के जमींदार कुंअर शिवरतन सिंह के साथ सहर ते याक हेडमास्टर आवा है।"

रामाज्ञा त्रिवेदी, जो गदर मे अपने पिता और चाचा के शहीद हो जाने तथा गांव, जायदाद अंग्रेजो द्वारा छीन लिए जाने के कारण निर्धन अवश्य हो गए थे, किन्तु अपना ब्रह्मतेज नही खोया था, गरज कर बोले: "जाओ, गांवे मां ढोल बजाय के खुले आम यू कहि आवौ कि जो सार बाम्हन, ठाकुर, कायथ, बनिया अपने बेटुअन का अंग्रेजी पढाई, वहि का घरू हम फूकि दयाब।"

हेडमास्टर बंसीधर जब गांव वालो का मन टटोलते घूम रहे थे, तभी तहसीलदार सिंह का एक चेला गले में ढोल डालकर यह घोषणा करता हुआ गली-गली मे घूम रहा था। आगे-आगे वह और उसके पीछे-पीछे पाच-छह लठैत आवारे चल रहे थे। उस समय बंसीधर ठाकुर कुदऊसिंह के द्वारे पर अपना दरबार लगाए बैठा था: "देखिए, सरकार इसीलिए स्कूल खुलवा रही है कि हमारे हिन्दुस्तानी बच्चे पढ-लिख कर तरक्की कर लें और साथ पादरियों के बहकावे में आकर अपना धरम करम भी न छोड़ें। देखिए, मैं खुद कलकत्ते जाकर पढ आया और अपने धरम करम का पाबन्द हूं। मैं एक फेरी वाले गरीब बजाज का बेटा था और अब एक स्कूल का हेडमास्टर बनकर इज्जतदार लोगों में अपनी जगह बनाए बैठा हूं। आपके बच्चे पढ-लिख लेंगे तो वे पचास साठ रुपए माहवार से डेढ दो सौ रुपए माहवार तक कमाने लगेंगे। जब आपका पैसा बढ़ेगा तो धर्म कर्म भी अच्छा

होगा। पुराने राज में सरस्वती देवी और लक्ष्मी देवी साथ नहीं रहती थी। अब पढ़िए और धन भी कमाइए। घोड़े-गाड़ियों पर सैर करिए, पक्के मकानों में रहिए। अंग्रेजी पढ़िएगा और बोलिएगा तो बड़े से बड़ा अंग्रेज हाकिम भी आप से हाथ मिलाकर बराबरी से बात करेगा।"

"बात तो आप की सोलो आना ठीक है, बाकी ई देखो तहसीलदरवा सार कैस धमकी दै गवा है हम सब पंचन का।"

"इसकी फिक्र आप लोग मत कीजिए, मैं शहर से कल ही दो पुलिसमैन भिजवा दूंगा। वह इन सबको ठीक कर देंगे।"

ठाकुर कुदरू सिंह के चेहरे पर तमक आ गई। चूना-तमाखू मलते-मलते हाथ सहसा रुक गए, वो बोले "दयाखो साहेब, आपन भलाई के बदे हम कौनों की बुराई नही चाहती हयि। हमार लड़कवा चाहे न पढ़ें, खेती पातियै करें, बाकी हम पानी मां रहिके मगर-मच्छन तें बैर न करब।"

सुनकर कुदरू सिंह का चौदह पन्द्रह बरस का लड़का बब्बू सिंह खड़ा हो गया, कहा : "हुजूर हम पढ़ेंगे चाहे बप्पा कुच्छौ कहे।"

सुनकर बाप-बेटे में वाक् युद्ध छिड गया। बब्बू सिंह के साथ-साथ रमेसुर पाण्डे का बेटा जगदीश बोला : "हमहू चलब, ई गावें के बड़े बुजरुग चाहे जौन कहैं, हम आपन स्वारथ बिचारब।"

सुनकर रमेसुर पाण्डे गरमाए, "उल्लू चमार पट्ठा सार यू नाही समझत है कि रमझा भैया जो तोहरे घरे के दरवज्जा पर असन-पाटी लै के पड़ि रहे और आपन प्रान त्याग दिहिन तौ पाछै हम पंचन का का होई। बरहम हत्या लागी कि नाही? पुरिखा नरक मा जैहैं और आगे चमार बंस बिगड़ जाई। कौनो तोहरे यहां न तो बिटिया दैवे न लैबे। तब फिर संसारु कैसे चलोहो।"

हेडमास्टर बंसीधर खाट से उठ खड़े हुए। बड़े शान्त किन्तु दृढ़ स्वर मे बोले : "आपकी जमींदारनी साहेब ने चलते हुए मुझसे कहा था कि वे भी अपने लड़के को हमारे स्कूल में भर्ती कराएंगी। वे चाहती हैं कि उनका बेटा अंग्रेजी पढ़-लिख कर डिप्टी कलेक्टर या पुलिस कप्तान बने और अपने राजा बन जाने वाले, धरम बदलने वाले पिता को नीचा दिखलावे। मैं अभी जाकर उनसे फिर बात करता हूं। अगर वो सचमुच राजी हो गयी तो गाव मे किसी भी अंग्रेजी पढ़ने वाले को डर न रहेगा।"

कुदरू सिंह की ठकुरैती भड़क उठी। वह भी खड़े होकर बोले : "हमहू खुले आम कहिति है कि बब्बू जौ मलेच्छ की भाषा पढिहै तो हम अपने घरे मे बहिका न घुसै दुआब।"

"ठीक कह्यो ठाकुर। चाहे कौनों राज-पाट आवै, हम अपन धरम मरजाद न छाड़ब।"

हेडमास्टर बंसीधर तो भुस में आग लगाके चले आए मगर गांव वालों के कलेजे सुलगते ही रहे। अंग्रेजी की पढाई ने नई और पुरानी पीढ़ियों में प्रबल संघर्ष छेड़ दिया था। फिर भी नए सत्र के लिए कुछ नए विद्यार्थी पाने में बंसीधर सफल हो ही गया। तिरबेनी बबुआ की हिन्दू पत्नी अपने ब्रह्म बल पर अड़ गई थी। रामाज्ञा ने अनशन-पाटी लेकर जमींदार की ड्योढी पर पड़ने की धमकी दी तो उन्होंने अपने ससुर के सामने कुंअर शिवरतन सिंह से दरवाजे की आड लेकर कहा : "जब से गदर मा रमझा की जायदाद कुर्क हुई है, तब से बप्पा ने उसे अपनी ही जमीन पर झोपड़ी बनाकर रहने दिया है। और आज हमारे उपकारो का बदला वह इस तरह देगा, मैं यह हरगिज नही सहूंगी। कुंअर साहेब,

आप दया करके शहर से सरकारी सिपाही भिजवाइए। हमारी तरफ से यह रपट लिखवाइए, कि यह दुष्ट हमारा घर और खेत जलाने की धमकी देता है, इसे पकड़ कर ले जाय।"

ससुर जगदम्बा सहाय बहू की बातें सुनकर चुपचाप बैठे रहे। लौटते समय उन्होंने कुंअर साहब से कहा : "कुंअर साहब, गदर में अंग्रेजों की जीत से भले ही हमारे मुल्कमें तरह-तरह के नुकसान हुए हों, मगर यह जरूर हुआ है कि बरसों से थमी हुई बंधी नदी की धार ने अब अपने बांध तोड़ दिए हैं। हमारा हिन्दोस्तान अब एक नए मोड़ पर आ पहुंचा है।"

गांव की सरहद के बाहर कुंदऊ सिंह और रमेसुर पाण्डे के लड़के खड़े थे। पास आकर उन्होंने हेडमास्टर से कहा : "सरकार हमारी अर्दास सुन लें, हमको अंग्रेजी पढ़ने की बहुत-बहुत इच्छा है।"

कुंअर शिवरतन ने दोनो को घूर के देखा, "कुछ और पढ़े हो कि खाली अंग्रेजियँ–"

"नहीं हुजूर, हम मध्यमा तक संस्कृत सीखा है, औरि उर्दू नागरी सब बांच लेते हैं। हम इन्हो का गिनती, पहाड़ा, ड्योंचा, सवैया, अढ़ैया सब याद है, आप हमार परीक्षा ले सकते हैं।"

बंसीधर बोला : "मगर अंग्रेजी पढोगे तो तुम्हारे मा-बाप तुम्हें घर से निकाल देंगे।"

जगदीश बोला : "महापुरुष, हम तो ये निश्चय करके आये हैं कि सहर में चाहे ठेला ढोएंगे या और कोई मजदूरी कर लेंगे, लेकिन अंग्रेजी शिक्षा अवश्य प्राप्त करेंगे।"

"शहर की जिन्दगी बहुत आसान नहीं है, दिन भर पढोगे या ठेला चलाओगे।"

सुनकर दोनों नवयुवकों के चेहरे उभर गए, आपस में एक-दूसरे से नजरें मिलायीं, फिर बब्बू सिंह अपना सिर झटकार कर कहने लगा : "कुछ न कुछ उपाय तो जरूर होई का चही हजुर। किसी लकड़ी वाले की टाल पर ही हमें लगा दीजिएगा। सबेरे-संझा उसकी लकड़ी चीरेंगे, और दिन मे आपके स्कूल में पढ़ेंगे।"

"तुम ठाकुर के बेटे हो, और ये ब्राह्मण के बेटे हैं, मजदूरी कैसे करोगे तुम लोग? मरजाद नहीं घट जाएगी तुम लोगों की?"

जगदीश तुरन्त बोला : "आगे बढ़ने के लिए एक टांग पीछे भी जाती है महापुरुष। अंग्रेजी पढ के हमारी मर्यादा जैसी बढ़ेगी उसके लिए इस समय उसका घटना कम से कम मुझे तो बुरा नहीं लगेगा। हम नयी सिच्छा अवश्य पाना चाहते हैं, और उसके हेतु हम कोई भी ऐसा काम कर सकते हैं जिसमे हमारा धर्म, ईमान नष्ट न होता हो। परिसम करने में कोई लज्जा नहीं।"

जगदीश की बात का समर्थन बब्बू सिंह ने भी किया।

सुनकर कुंअर शिवरतन के चेहरे पर मुस्कुराहट खिल उठी बोले : "ठीक है, तुम दोनों आओ। नगरिया मे किसी से भी ठाकुर साहब की हवेली पूछ लेना।"

घोड़े शहर की ओर दौड़ चले। कुंअर साहब ने कहा : "आज दिन भर कैरेक्टर और मारेल की गिरावट देखकर हमारा जी ऐसा घिना गया था तनकुन कि कुछ पूछो मत, लेकिन दीज ब्वाएज, हैव प्लीज्ड मी। हम इनका खर्चा उठाउब।"

बंसीधर बोला : "इनकी फीस के लिए मैं समझता हूं कि ब्राह्मण का खर्च चोपड़ा साहब की सास पर और ठाकुर का खर्च उनकी माशूका मँगी से मैं वसूल कर लूंगा, लेकिन भैया मुझे कुछ और भी जरूरी काम करने हैं। ऐसे पढने वालों के लिए एक फण्ड इकट्ठा किया जाना बहुत जरूरी है। और मैं समझता हूं कि इनके लिए शहर मे एक बोर्डिंग हाउस

भी बनवाया जाना चाहिए।"

शिवरतन हंसकर बोले : "अरे, अब तो तुम अपने जोश मा शेखचिल्ली जैस बात करै लगे। यू नो इट फुल्ली वेल, कि अंग्रेज सरकार इण्डियन्स का वत्ते 'एजूकेटेड' बनावा चाहत है जित्ते गवर्नमेन्ट डिपार्टमेन्टन मा खपि जाय।"

"मैं इस बात को खूब जानता हूं भैया, लेकिन तुम यह क्यों नही देखते कि अब सरकारी महकमे और बढ़ेंगे। इतने बड़े मुल्क पर हुकूमत करने वाले भी महज मुट्ठी भर अंग्रेजों से कुछ ज्यादह होंगे। मैं पढ़ने वालों की तादाद बढ़ाऊंगा, अगले पांच बसों में तुम देखना भैया कि अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों की जरूरत काफी बढ जाएगी।"

कुंअर साहब के घर पहुंचते-पहुंचते तक शाम धुंधली हो चली थी। शिवरतन ने कहा : "अब रात मे कहा जाओगे तनकुन, यही रुक जाओ न। आओ, आज तुमका 'क्लैरेट' पिलाई। कल्है जैक्सन एण्ड जैक्सन के यहां ते मंगावा है।"

"नही भैया, तुम्हारी क्लैरेट से मेरी बीबी का नशा मेरे लिए ज्यादह तेज है और फिर अब तो वह दिन आ लगे हैं कि किसी वक्त भी मुझे वह पिता बनाने वाली है।"

"तो तुम घोड़े पर ही चले जाओ। मैं ऐसा करता हूं कि मंकूसिंह को तुम्हारे साथ किए देता हूं, वह गोल दरवाजे से घोड़ा लेकर लौट आएगा।"

मन्नो बीबी के घर पहुंचकर तनकुन ने चुन्नो से सुना कि चमेलो को प्रसव पीडाएं होने लगी हैं, दाई आ चुकी है और सबसे अधिक सुखदाई सन्तोष भरी सूचना यह मिली कि बौआ अपनी बहू के पास मौजूद हैं। मां की ममता से तनकुन का हृदय द्रवित हुआ। चुन्नो से पूछा : "बहुआ को कैसे खबर लगी ?"

"भाभी ने सोचा कि पास का मामला है, एक बार कहला तो देना ही चाहिए। आगे जैसे उन लोगो की मर्जी हो। पर आपकी बौआजी तुरंतै महरी के साथै हियां आय गयी।"

रात के ठीक बारह बजे बंसीधर टण्डन और चंपकलता एक पुत्र के पिता-माता बने। वह रात बंसी के जीवन की सुनहरी और स्मरणीय रात बन गयी। पहली बार पिता होने का अनुभव व्यक्ति के मन में जो गौरव-बोध और गरिमा जगा देता है, वह अनुभूति तनकुन को एक नयी ऊंचाई पर उठा ले गई। मेरा बेटा इंगलैण्ड जायेगा, उसे आई० सी० एस० पास कराऊंगा। उसे इन तमाम हिन्दुस्तानी गदगियो से दूर रखूंगा, मैं उसे बहुत अच्छी तालीम दिलवाऊंगा।—लेकिन फिलहाल उसके जन्म का भी कोई शानदार जलसा करना चाहिए। अंग्रेज और शहर के तमाम बड़े-बड़े लोग उस जश्न में बुलाए जाए। उससे बिरादरी मे भी शान बढ़ेगी। लोग देखेंगे कि मैं केवल चौक मे ही नही बल्कि पूरे शहर में एक इम्पोर्टेन्ट आदमी हो गया हूं। बंसी अपने मन में अनुमान लगाने लगा कि लगभग ढाई तीन हजार रुपए खर्च हो जाएंगे। अंग्रेजों को कुछ अपने 'इंडियन कल्चर' की बानगी देने की इच्छा भी जागी। सोचा, बिन्दादीन का नाच दिखलाया जाय। कालका, बिन्दा दो भाई शहर में नामी नौजवान हैं। नवाब वाजिदअली शाह के कथक उस्ताद महाराज ठाकुर प्रसाद के बेटे हैं। एक नृत्य में नायाब, दूसरा तबले में। हकीम सोमनाथ के यहा उनका बहुत आना-जाना है, उनसे जोर डलवाऊंगा तो आ जाएंगे। किसी अच्छी गाने वाली को भी बुलाना होगा। मैं लखनऊ का होकर भी उस दुनिया से नावाकिफ ही रहा जिससे लखनऊ शहर नेक नाम भी हुआ और बदनाम भी। सोचते-सोचते रात बीत गई।

छठी की महफिल छोटी होने पर भी शानदार थी। तमाम शहर के हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, अंग्रेज सभी रंग के आदमी थे। बिरादरी के भी कुछ गिने-चुने लोग आए थे। मांसाहारी और शाकाहारी दोनों ही प्रकार के सुस्वादु व्यंजन बने थे। दोनों के खाने-पीने

के खेमे भी बिल्कुल अलग-अलग थे। मुश्तरी का गाना और बिन्दादीन का नाच भी हुआ। शहर के सम्मिलित गण्य मान्यों ने जलसे की प्रशंसा की। कलक्टर साहब की मेम ने चलते वक्त मिस्टर बंसीधर की पीठ थपथपाई, जिससे उसकी बड़ी वाहवाही हुई। मुसद्दीमल बीमार थे, न आ सके। भाई सब आए थे लेकिन लौटकर बडके भैया ने घर और गली में यह शंख फूंका---कि "आज तनकुन ने हम सबका धरम ले लिया। रसोइया भले अलग-अलग हो, मगर चलते वक्त जो खुद उन्होंने अपनी आंखों से देखा उससे उनकी आत्मा त्राहि-त्राहि कर रही है। मुसलमान बावर्ची तसले मे कुछ लिए हुए हिन्दू भट्ठी-खाने से बाहर निकल रहा था। बतलाओ, धर्म भ्रष्ट हुआ कि नही? बड़े-बडे ब्राहमन, खत्री, बनियों का धरम लै लिया, मैं तो कल पाधा जी से पूछ कर जो प्रायश्चित बनेगा, करूंगा।"

गली-गली मे तहलका मचाने के लिए यह एक नया शिगूफा छिड़ गया। भुल्ली लाला ने कहा: "पर्चा छपवाओ, मैं खर्चा दूगा, बुलाओ पंचायत को, सब बिरादरी वालो को बुलवाओ। अब मैं इस साले मुसद्दीमल के खानदान की जड़ खोद डालूगा।"

बंसीधर के कानों मे जब यह सफेद झूठ पहुंचा तो वह स्तब्ध हो गया। इस बेसिर पैर की बात को उड़ाया उसके खास, सगे, बड़े भाइयों ने। एक अकेला गुमानी, तीसरा बड़ा भाई ही चिल्ला-चिल्लाकर यह कह रहा था, भैया झूठे हैं। हम गंगाजली उठाय के कह सकते हैं कि बडके-छुटके दोनों भैया साले झूठे हैं, नम्बरी झूठे हैं। घर मे तनकुन को हिस्सा न मिले इसके लिए ये बिरादरी का हौवा खड़ा किया है।

सुनकर बंसी सोचने लगा, बचपन मे पड़ोसी पंडित लोकनाथ बाजपेयी से सुना था कि चरित्र ही निर्धन का धन होता है। अंग्रेजी की कहावत है---"अगर धन गया तो कुछ नही गया, अगर सम्मान गया तो कुछ गया, और अगर चरित्र गया तो सब कुछ गया समझो।" लगता है कि हमारे देश का चरित्र बिल्कुल चौपट हो गया है, आम जिन्दगी बिल्कुल बेउसूल हो गई है। यह क्यों कर ठीक होगी? क्या हमारी हजारों बरस की तहजीब और सरस्वती अब खाक में मिल जाएगी? दीन और धर्म सब अन्धे हो चुके हैं, वह इस वक्त देश को ताकत नही दे सकते।

17

इतवार का दिन, कार्तिक की कुनकुनाहट भरी सुबह, मिस्टर बंसीधर टण्डन बी० ए०, सुबह की सैर करके अपने नये बंगले मे लौटकर आये हैं। नजरबाग और हुसैनगंज के बीच मे महाजन के कर्ज और जमीदार के लगान का मारा एक विपन्न ठाकुर अपने वंश के ठाकुर जी के लिए देवार्पित आठ बीघे का खेत बेच रहा था। उसे खरीदा तो था चोपड़ा-प्रेयसी मैंगी ने किंतु बंसीधर के हाथों लागत मात्र में बेच दिया था। बंसी बाबू ने पांच हजार की लागत से वही पर एक शानदार बंगला बनवा लिया है, अभी छह दिन पहले

नवरात्रि की द्वितीया के दिन उन्होने गृह-प्रवेश की रस्म की थी। शानदार दावत की थी। फाटक के सामने पहुंचकर बंगले को रीझभरी, गर्वभरी दृष्टि से देखा। विलायती नक्शे का मकान बनवा कर भी उन्होंने फूस की छतें नही छवायी, वल्कि हिन्दुस्तानी ढंग से पुख्ता छतें बनवाई थी। सामने का हिस्सा बढ़िया विलायती खपरैलों का था। फाटक खोला, बरामदे में बैठे हुए ब्लैकी और रूबी भौंके किंतु मालिक को देखकर दुमें भी हिलाने लगे। कलकत्त से लाए हुए कुत्ते एन्जिल को मरे हुए तो अब लगभग दस वर्ष हो चुके। यह ब्लैकी रूबी तो अभी कुछ ही महीने पहले चीफ कमिश्नर के प्राइवेट सेक्रेटरी वर्कट साहब की मेम ने दिये थे। अभी आठ-नौ महीने के हैं, बरामदे में घुसकर बंसी बाबू थोडी देर उनके जोश को अपना प्यार देकर दुलराते रहे। बुद्धू कमरे का दरवाजा खोलकर एक हाथ में ताम-चीनी का तसला, दूसरे में तावे का चमचमाता हुआ गडुआ और कंधे पर अगोछा डाले हुए आया। बेंत का बना एक मूढ़ा उठाकर बरामदे के किनारे रखा। कुत्तों से खेलकर साहब वहा आके बैठ गये। छडी दीवार से टिकाई और सिर का साफा उतारा। बुद्धू ने तसला और गड़वा फर्श पर रखकर उन्हें कोट उतारने में सहायता दी, फिर दोनो को सहेजकर बरामदे की आरामकुर्सी के पास संगमरमर की मेज पर रख आया। साहब के जूते-मोजे उतारे, फिर तलवो की हल्की-हल्की मालिश करके तामचीनी के तसलों मे एक-एक पैर रखकर उन्हें मीज-मीज कर धोया। साहब ने फिर अपनी अंजुली मे पानी भर कर अपने मुख पर छीटे डाले, कुछ-कुछ खिचडी हो चली मूंछो पर गीला हाथ फेरा, दो-एक कुल्ले-खखार भी किए और फिर ताजे हो कर अंगोछे से अपना मुह पोछने लगे। बुद्धू ने फिर उन के पैर पोंछे और कमरे से स्लीपर लाकर पैरों के आगे रख दी। पहन कर साहब उठे और अपनी आरामकुर्सी पर जाकर लेट गए। "हमारा पायजामा और गाउन दे जाओ अन्दर से।"

"लाया हजूर।"

सोने की चेन वाली घड़ी कोट की जेब से निकाल कर बुद्धू ने मेज पर रखी और कोट, साफा, छडी, जूते लेकर भीतर चला गया।

बाबू बंसीधर अब मिडिल स्कूल के हेडमास्टर नही हैं, वल्कि असिस्टेंट डायरेक्टर आफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन्स हो गए हैं। उनका वेतन भी अब दो सौ रुपया मासिक हो गया है। शहर में छोटे-बड़े स्कूल भी अब तीस के लगभग हो गए हैं, जिन मे चर्च मिशन, अमेरिकन मिशन, गिरीश चन्द्र स्कूल आदि कई प्रमुख विद्यालय भी हैं। इन स्कूलों के हेड-मास्टर उनके यहां सलाम बजाने के लिए अक्सर आया करते हैं। साहब का गाउन, पैंजामा आ गया, जिसे एक खम्भे की आड़ मे जाकर उन्होंने बदला। फिर पतलून कमीज उठाते हुए बुद्धू से पूछा : "छोटे सरकार नाश्ता वगैरह कर चुके?"

"नही हजूर, कसरत कर चुके हैं और नहाने की तैयारी में बैठे कुछ पढ रहे हैं।"

बाबू बंसीधर की मूछें मुस्कुराहट से कुछ फैलो, कहा : "नहाने की तैयारी के लिए क्या कुछ पढ़ना पडता है बुद्धू ?"

लगभग बराबर की उम्र का पुराना स्वामिभक्त सेवक भी हंसा, कहा : "कसरत के बाद सहता रहे हैं हजूर, बाकी आप तो जनतं हौ कि किताब पढ़े बिना उनसे एकु पल भी नाही रहा जात है।"

"बहू जी पूजा कर चुकी?"

"नाही साहेब, पंडित जी पाठ सुनाय रहे हैं। बिटिया उनके पास हैं। दूध लै आई सरकार?"

"ले आओ। और अन्दर से कल का 'पायनियर' उठा लाओ।" स्वतः धीरे-धीरे

बड़बड़ाते हुए—'आज इतवार है, डाक भी देर से आयेगी।'

एकांत हुआ तो फिर अपने घर में बैठने का सुख उन्हें नशे-सा चढ़ने लगा। इन पिछले 38 वर्षों में उनका जीवन कहां से कहां आ गया है। बेटे देशदीपक के जन्म के उपलक्ष्य में आज से लगभग चौदह-पन्द्रह वर्ष पहले पैतृक घर में उनका हिस्सा हथियाने के लिए उनके दो बड़े भाइयों ने ऐसा घृणित प्रड्यन्त्र रचा था कि उससे तंग आकर बंसीधर अपने मरणासन्न पिता को कानूनी तौर पर यह लिख कर दे आये थे कि वह घर में अपने हिस्से का भाग स्वेच्छा से छोड़ रहे हैं, उन्हें पैतृक सम्पत्ति लेने में तनिक भी रुचि नहीं है। फिर पिता की वसीयत भी उन्होंने अंग्रेज वकील से बनवायी और अपना भाग गुमानी भैये के हिस्से में लिखवा दिया। घर में इस तरफ से दीवार खिंचाने का प्रबंध किया कि बड़के छुटके के वास्ते घर के मूल द्वार से आने-जाने की राह ही बंद हो गयी। पिता की वसीयत में यह लिखा था कि लड़के पिछवाड़े की दीवार में अपने वास्ते आने-जाने का दरवाजा बनवा सकते हैं। बड़के-छुटके तथा उनकी स्त्रियों ने मृत्यु शैया पर पड़े मुसद्दीमल के पास आकर बड़ा-बड़ा कलह कांड मचाया। लेकिन दूसरे ही दिन थाने का सिपाही आकर दोनों भाइयों को धमका गया। वे डरके चुप तो हो गये लेकिन महीनों यह ढोल गली-बिरादरी में पीटते ही रहे कि 'तनकुन ने खानदान की इज्जत ले ली, पुर्खों के दरवज्जे पर थाने का सिपाही आया।'

तनकुन तमाम उदात्त विचारों को पोषित करने के बावजूद दुश्मन की तरह लड़ना भी जानता था। उसने गुमानी भैये को विपिन खन्ना के पास कलकत्ते भेज कर उसकी मिल की एजेंसी भी यहां खुलवा दी। गुमानी की हैसियत दिनो-दिन बढ़ने लगी। गनेसो-महेसो दोनों भाई भी इसी साल ही कलकत्ते की हाईस्कूल परीक्षा यहां के कैनिंग कालेज से देंगे। उनका बेटा 'खोखा' (देशदीपक) भी अब पंद्रहवें साल में चल रहा है। अमीनाबाद के नवाबी महल में कैनिंग कालेज का हाईस्कूल विभाग चलता है। देशदीपक इस समय नवें दर्जे में पढ़ता है और अब तक बराबर उत्तम श्रेणी में ही पास होता आया है। बंसीधर अपनी बेटी प्रभावती को भी अंग्रेजी और संस्कृत, नागरी घर ही में अध्यापक रख कर पढ़ा रहे हैं। क्रिश्चियन गर्ल्स स्कूल की एक अंग्रेज अध्यापिका उसे पढ़ाने आती है। उनके पुराने स्कूल के पंडित प्रभुदयाल शास्त्री उसे संस्कृत और नागरी पढ़ाते हैं। बाबू बंसीधर आज शहर के चढ़ते हुए लोगों में गिने जाते हैं। उन्होंने प्राइवेट तरीके से ही कलकत्ते से एफ० ए० और बी० ए० भी पास कर लिया। वे अपने बंगले के बरामदे में आरामकुर्सी पर अपनी उन्नतियों के संतोष मद में छके बैठे थे। नौकर चांदी की तश्तरी में दूध भरा चांदी का गिलास रख कर आया, उसकी बगल में 'पायनियर' अखबार भी दबा था। साहब दूध पीने लगे, नौकर झट से भीतर गया, गड़ुवा, अंगौछा और तसला फिर ले आया। साहब ने दूध पीकर अभी गिलास रखा ही था की ब्लैकी, रूबी भौंके, साहब का ध्यान उधर गया। पंडित प्रभुदयाल शास्त्री चांदी की मूंठ का सोंटा लिए सफेद पगड़ी और चिकन के अंगरखे, दुपट्टे में भव्य लग रहे थे। उनके गेहुए, कुछ-कुछ चिंतन-लीन प्रसन्न वदन की आभा, उनकी आंखों पर चढ़ा सुनहरा चश्मा और लगभग सफेद हो चली मूंछें उनके व्यक्तित्व की गरिमा बढ़ाती थी। उन्हें देखते ही साहब ने झटपट कुल्ला किया और कहा : "आइये-आइये, पंडित जी महराज।"

शास्त्री जी मूछों में मुस्कुराते हुए धीरे-धीरे चल कर पास आये, रूबी, ब्लैकी दुम हिलाकर रोज के परिचित को देखने लगे। बंसीधर ने हाथ जोड़े, "आओ महराज, आज सबेरे ही सबेरे कैसे दया कर दी इस नाचीज पर?"

"अरे बाबू साहब, क्या आपको पता ही नहीं, आज आप शायद हुसैनगंज की तरफ

से घूमते हुए नहीं लौटे थे।"

दूसरा नौकर पंचम हुक्का भर कर ले आया था और साहब को आरामकुर्सी से सटाकर, सटक की निगाली साहब के हाथ मे दे दी। बंसीधर बोले: "आया तो महराज उसी तरफ से था, मगर मैंने कोई खास बात नही देखी।"

"वाह-वाह-वाह।" कुर्सी पर बैठकर सोटा दीवार के सहारे टिकाया, और पगड़ी उतार कर उसे मेज पर रख कर, सिर पर हाथ फेरते बोले: "सरदार विक्रम सिंह की कोठी पर आपने स्वामी दयानन्द की पाखंड खंडिनी पताका नही देखी।"

"अच्छा, क्या स्वामी दयानन्द जी यहा आये हैं?"

'हां-हां-भाई, कल रात मे पधारे। आज सध्या के समय उनका व्याख्यान होगा। मैंने घूमने के समय जाते हुए ही यह सूचना पा ली थी। फिर लौटते समय सोचा कि बात का पता लगा लूं, तो बाबू साहब को सूचित करके फिर घर जाऊगा। यह तो आज का बड़ा महत्त्वपूर्ण समाचार है। आप समझें कि—"

"सचमुच महत्वपूर्ण है, शास्त्रीजी। इन स्वामीजी की खबरें तो कभी-कभी 'पायनियर' तक मे आती हैं। बड़े तेजस्वी विचारों के लगते हैं।"

"आपको याद होगा बाबू साहेब, पिछले रविवार से एक रविवार पूर्व मैंने 'यग थिंकर्स' में स्वामी दयानन्द का नाम लिया था। मुझे उनकी सब बातें तो नहीं अच्छी लगतीं, पर —"

"पर-पर कुछ नही महराज, वह संन्यासी बहुत सच्ची बात कहता है। दयानन्द के पास 'लाजिक' है। वह सेंट-परसेंट यह सही कहते हैं कि यह हिन्दू नाम तो हम लोगो पर विदेशियो ने लादा है, हम तो दर असल आर्य हैं। उस आर्यपन को हम लोग भुला बैठे हैं। तभी तो हमारी यह दुर्दशा हो गई है।"

"अब देखिए, आज प्रभु ने मौका दिया है तो उनके यहा पधारने का लाभ भी उठाया ही जायगा। उनसे विचार विनिमय अवश्य होना चाहिए।"

"हा-हां, जरूर होना चाहिए। मगर मेरे खयाल मे आपने अभी कुछ नाश्ता वगैरह नही किया है। अरे बुद्ध! पंचम!"

बुद्धू दौड़ा हुआ आया।

"अरे शास्त्रीजी को कुल्ला-उल्ला कराओ भाई, इनके लिए हलवा लाओ, दूध लाओ।"

बुद्धू ने खीसें निकालकर हाथ मलते हुए कहा: "वहै लावत रहै हजूर, तब तक आप आवाज दिहो तो चले आए।"

शास्त्रीजी बोले: "दयानन्द पुराणों को गप्प मानते हैं, मूर्तियों को पूजने योग्य नही मानते। कहते हैं, ये सब कोरी गप्पें हैं गप्पें। कमाने वाले ठगो की चालबाजिया है।"

हुक्के का कश खीच कर विचारपूर्ण मुद्रा में बंसीधर बोले: "एक तरह से तो उनकी यह बात मुझे सौ फीसदी सही लगती है शास्त्रीजी। अगर इन मूर्तियों मे ईश्वर होता, तो क्या मुसलमान लोग उन्हे तोड़ सकते थे। हजारों लाखो की तादाद मे मूर्तियां तोड़ी गयो। हमारी पूजा और भक्ति के आधार भगवान की मूर्तियों को मसजिदों की आने-जाने की राहं पर चुनवाया गया ताकि नमाजियों के जूते उन पर पड़ते रहे। अरे आपके बिश्नू भगवान की मूर्ती तोड़कर सिकंदर लोदी ने उसके पाव, आध सेर व सवा सेर के टुकड़े करवा कर कसाइयो को दिए थे, कि इन्ही से तौल-तौल कर गऊ का मास बेचो। दयानन्द ठीक कहते हैं, ये मूर्तियां भी कमाने वाले ठगों के मुनाफे का ही एक जरिया है, और कुछ नही।"

शास्त्रीजी हंस कर बोले : "आप तो लगता है कि बिना मिले ही दयानन्दी विचारों के हो गये हैं।"

"नहीं शास्त्रीजी, मैं तो शुरू से ही कुछ इसी किस्म के विचारों का हूं। एक तो फारसी की पढ़ाई, सूफी शायरों के कलामों का असर, फिर कलकत्ते में राजा राममोहन राय के ब्राह्म समाज से मैं बहुत ही मुतअस्सिर हुआ था। मैं ये सब मूर्तियां-वूर्तियां दिल से नहीं मानता। फिर भी मानना तो पड़ता ही है। मेरी धरमपतनी भी बहुत सी बातों में जरूर खुल गई है। मगर मूर्ती पूजा वह भी मानती है। आजकल नौरात के बरत भी कर रही है, घट भी स्थापित किया है।"

पंडितजी के लिए दूध हलवा आ गया। हलवा साहब के लिए भी आया था, पर साहब ने उसे नहीं लिया। वह प्रातःकाल एक गिलास दूध के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं लेते थे। पंडितजी के कलेवा करने के बीच में भी टण्डन साहब कहते ही रहे : "हमारे हिंदोस्तान को होश में लाने के लिए जिस लखलखे की सख्त जरूरत थी, वही इन राममोहनराय और दयानन्द जैसे लोगों के रूप में आया है, शास्त्रीजी। दयानन्द साक्षात् दैवी शक्ती के ही अवतार है। एक बार मैंने 'पायनियर' में पढा था कि एक विलायत का पादरी दयानन्द का नाम सुनके उनसे मिलना चाहता था। वह कलक्टर को साथ लेकर सर्दी की रात में सात-साढे सात बजे के लगभग स्वामीजी के आश्रम मे गया। अब आप समझिए *कि पूस-माघ के दिन थे और उन लोगों ने देखा कि नंगे बदन, कोपीन लगाये स्वामी* वेद पाठ कर रहा है। कलक्टर स्वामी जी से पहले भी मिल चुके थे। उन्होंने पादरी का परिचय दिया। बहुत गौर से स्वामी जी को देख कर पादरी ने अंग्रेजी मे कलक्टर से कुछ कहा। स्वामी जी मुस्कुराए, बोले, 'मैं अंग्रेजी भाषा नही जानता लेकिन यह समझ गया हू कि आपने कहा होगा कि मोटा-ताजा संन्यासी चेलों से खूब तर माल खाता होगा, तभी यों नंगे बदन सर्दी मे बैठा है।' स्वामीजी से यह सुन कर कलक्टर हंसे और बोले कि हां, इन्होने यही पूछा था। उस पर स्वामीजी बोले कि दो समय की रोटी-दाल ही मेरे लिए आनन्द और पुष्टिदायक होती है, कभी-कभी कोई माई का लाल दूध पिला जाता है तो पी लेता हूं। यह सुन कर पादरी ने कलक्टर के माध्यम से फिर शंका की। कहा कि तब आप किसी जड़ी-बूटी की गर्मी मे इस तरह से बैठे होगे। इस पर स्वामी दयानन्द हंस कर बोले कि आप तो कलक्टर हैं, सिविल सर्जन से मेरे खून की जांच करवा ले। फिर स्वामीजी ने कहा कि यह तो अभ्यास की बात है। आप पूरा बदन ढंके बैठे हैं मगर आप का मुह खुला है। लेकिन क्यों आपके मुह को वही सर्दी नही लगती जो आपके बदन को लगती है?"

"वाह क्या बात कही है। यह ब्रह्मचर्य की शक्ति है।" शास्त्रीजी बोले।

"एक बार महराज, मैंने कही और भी पढ़ा था कि किसी शहर के कुछ चुने हुए पहलवान इनकी ताकत आजमाने के लिए गंगा किनारे भेजे गए। स्वामीजी नहाके अपना कोपीन वगैरह धोके, हाथ में लिए हुए लौट रहे थे। एक पहलवान ने कहा : 'स्वामी पंजा लड़ाओगे?' स्वामी मुस्कुरा कर बोले कि तुम में से जो कोई मेरी कोपीन से पानी निकाल कर दिखला देगा उससे पंजा लड़ाऊगा। उन चारों-पाचों पहलवानों ने उसे दबाया, उनके हाथ पसीज गये पर पानी न टपका। स्वामीजी बोले, 'अब देखो मैं निकालता हूं।' यह कह-कर उन्होने अपनी कोपीन को हथेली पर रख कर इस तरह से दबाया कि दस-पांच बूंदें बालू पर टपक ही पड़ी। मैं सच कहता हू शास्त्रीजी, दयानन्द शक्ति के औतार हैं। वो हम लोगों की शक्ति जगाने आए हैं।"

शाम को सरदार विक्रम सिंह की कोठी के बाहर घास के लान मे शामियाना लगा हुआ था। शहर के बड़े-बड़े लोग और पण्डित मौलवी बुलाए गए थे। कुर्सियो पर सबको

बैठाया गया। चूड़ीदार और पतली मोहरियों के पाजामे, चपकन, चोगे, पगड़ी पहने, घड़ी की सुनहरी चेन झलकाते बड़े-बड़े रईसों की सवारियां आयी थी। चिकें डालकर स्त्रियों के बैठने का प्रबन्ध भी किया गया था। स्वामी जी ने आसन पर बैठकर अपना प्रवचन आरम्भ किया : "अवैदिक काल के विद्वानों ने बिना परीक्षा के ही यह सब अटकल पच्चू गलत सलत पुराणो मे भर दी हैं। पतजलि ऋषि का योगशास्त्र तो गायब हो गया और भांति-भांति के जोगीडो की दुकाने खुल गयी। वेद, उपनिषद, पातंजलि योगदर्शन और सांख्य आदि सब तत्व विषयक उत्तम ग्रन्थ ठुकरा दिए, तथा इनके नाम ले लेकर हमारी आर्य संतानों को एक ऐसे भ्रम जाल मे डाल दिया है कि हमारा चरित्र ही गिरता चला गया।"

स्वामी दयानन्द के ओजस्वी भाषण ने सभा मे सम्मोहिनी सी डाल दी, फिर एका-एक दबे गुबार भड़कने और फूटने लगे। एक पादरी ने खड़े हो कर रौब से कहा : "आपने अभी-अभी हमारे ईसाई धर्म के संबध मे भी कुछ कहा था। मैंने पहले भी यह सुन रखा है कि आप हमारे धर्म की आलोचना बहुत करते है। जरा सम्हल कर बोला करिये, नही तो कभी आप पर आफत आ सकती है।"

ठण्डे स्वर में स्वामी बोले : "पादरी महाशय, मैं जो कुछ कहता हू वह आपके ग्रंथो का पाठ मात्र ही होता है। अपनी ओर से कुछ नही कहता। यदि यह खण्डन करना है तो ऐसा खण्डन तो आप भी करते हैं।" फिर गभीर होकर कहा : "सत्य के लिए विपत्ति में पड़ना, कारावास जाना या फांसी चढ़ना लज्जा का नही वरन गौरव का विषय है।"

सुनकर बाबू बंसीधर के तन मन मे एक फुरफुरी सी दौड़ गई।

नगर में दयानन्द क्या आ गये हैं मानो एक प्रचण्ड तूफान आया है। वह मदिरों और मूर्तियों के विरोधी है, पुराणों को गप्पो भरे खोखले पोथे बतलाते हैं। वह हिंदुओं के देवी-देवता की निन्दा तो करते ही हैं, साथ मे मुसलमानो और ईसाइयो के धर्म-ढकोसलों की बुराइयां करने से भी नही चूकते। सभी उनसे खार खाए बैठे हैं पर किसी का बस नही चलता है। विरोधियो ने ईसाई-पादरियों और अंग्रेज सरकार के खुफ़िया नौकरों ने, इस नास्तिक स्वामी को जान से मरवा डालने के लिए बड़ी-बड़ी कोशिशें की पर नाकामयाब रहे। अपने को रुस्तम और भीम कह कर शेखियां बघारने वाले गुण्डे भी स्वामी की एक हुंकार सुनते ही दुम दबाकर भाग खड़े होते है। गोमती के घाटो पर, छोटे-बड़े मदिरों और ठाकुर द्वारो मे, गलियों के चबूतरों पर, तमोलियों और भंगेड़ियो की सजी-बजी दूकानो पर, हाट में, बाट मे सब जगह दयानन्द ही दयानन्द छाए हुए हैं। जबानों पर गालियों के सदावर्त खुल रहे हैं। दयानन्द क्या आया है, काली आंधी आई है!

मगर दयानन्द के समर्थकों की सख्या भी दिनोदिन तेजी से बढ़ रही है। बाबू बंसीधर, बाबू त्रिलोकीनाथ चोपड़ा, पंडित प्रभुदयाल शास्त्री, सरदार भूपिंदर सिंह अहलूवालिया, और भी कई पढ़े-लिखे शरीफजादे, रईसजादे स्वामीजी के भक्त हो गए हैं। वे उनके तेज और अगाध ज्ञान की प्रशंसा करते नही अघाते। दयानन्द न जाने कितने गूगे मनों की आवाज बन गए हैं। वे सदियो से सोती हुई आर्य जाति को अपनी उपदेश प्रभातियो से जगा रहे हैं। पिछले चौदह-पन्द्रह वर्षों मे अंग्रेजी शिक्षा और विलायती विचार बढ़े है। लोग अपनी सब पुरानी बातों को रद्दी और दकियानूस समझते हैं। उन्हें अपने धर्म, मेले-तमाशे, तिथि-त्योहार, पुरखों का श्राद्ध आदि, अ-आ-इ-ई से लगा कर क्ष-त्र-ज्ञ तक, हर वस्तु से नफरत है। इन्हे दयानन्दो-राम मोहनरायों मे भी कोई दिलचस्पी नही रही, परन्तु इन नवशिक्षितों में एक ऐसा वर्ग भी है जिसका मानस भारतीय है। वह राजभक्त अंग्रेज भक्त होते हुए भी भारत भक्त है। उनका स्वाभिमान चेतना की हर सतह

पर कमोबेश प्रकाशित था। संस्कृत पढ़े हुए, कुछ उर्दू-फारसी पढ़े हुए पुरानी परम्पराओं के कई जवान विचारक भी बहुत दूर तक दयानन्द के विचारो के समर्थक थे। दयानंद काई और बदबू भरे बंधे पानी के ताल में एक प्रबल शिलाखण्ड के समान धमाके के साथ आ गिरे थे, काईयो के पर्त-दर-पर्त फट गये, ताल के तल तक हिलोरें उठने लगी। समय की चाल ही कुछ ऐसे ढब से चली कि लोगों के मनों मे प्रश्न ही प्रश्न जाग उठे थे। गदर के बाद के मुर्दा वातावरण मे दयानन्द ने विचारों ने कौआरोर मचा दिया था बम्बई के कर्सनदास मूलजी नामक एक गुजराती पत्र 'सत्यप्रकाश' के सम्पादक ने वल्लभ सम्प्रदाय के गुसाइयो की विलासवादी धार्मिक रूढ़ियों पर कठोर प्रहार किया। गद्दीधर गुसाईं लोग खुद कृष्ण बनकर शिष्यों को ब्याही हुर नयी बहू के साथ पहली रात मनाने का अधिकार रखते थे। गोसाइयों ने कर्सनदास के खिलाफ मुकदमा चलाया, और उसमे उन्ही लोगो की फज़ीहत हुई। दयानन्द ने हमारे समाज को ढोंगियों के धर्म से बचाने के लिए बहुत बड़ा आन्दोलन छेड़ रखा है। बहस मुबाहसे, वेद, कुरान, बाइबिल, हदीस, मनुस्मृति आदि का इतना हल्ला मचा कि अंग्रेज सरकार द्वारा पिछले कुछ बरसो मे लगाए गए हाउस टैक्स, इनकम टैक्स आदि टैक्सो की भरमार और आर्थिक त्राहि-त्राहि की कराहटें नक्कारखाने मे तूती की आवाज भर होकर रह गईं।

एक दिन जब बाबू बंसीधर टंडन और शास्त्री के धार्मिक चिंतन भरे सामाजिक सुधारवादी विवाद की कढ़ी में फदाफद उबाल आ रहे थे तब बाबू त्रिलोकीनाथ चोपड़ा ने यह कह कर बाबू बंसीधर को चौका दिया। उनके एक मुखी चिंतन को धक्का लगा, गभीर हो गए, फिर कहा : "तिल्लोकी बाबू, गदर और उसके बाद की गुलामी ने अगर अपने उन शिकजों मे हमें भी न कसा होता तो आज हम अपने समाज मे जागरिती लाने के लिए सुधारो की बात भी न सोचते। सदियों की भटकी कौम का मनोबल दुरुस्त हो, पहले शक्ती आए तो हम गुलामी से मोर्चा ले लेंगे।"

कुरसी पर पालथी मार कर बैठे पंडित प्रभदयाल शास्त्री अपनी मुस्कुराहट को आड़ देने के लिए अपनी मूंछें संवारते हुए बोले : "बाबू साहब आपने स्वामीजी के अनेक विचारों को समर्थन दिया है। परन्तु उनके सस्कृत प्रेम के बारे मे आपके क्या विचार हैं?"

"शास्त्रीजी, आप तो जानते ही हैं कि मुझे संस्कृत जबान न जानने का कितना अफसोस है। काश कि स्वामी हिंदी मे ही—"

"परन्तु आपने देखा है, बातें करते समय वे अब हिंदी भाषा का प्रयोग करने लगे हैं।"

"जी हां।"

"मेरे विचार से अब आपको भी अपनी भाषा मे देवभाषा के शब्दो का प्रयोग ही अधिक करना चाहिए। आप यदि पुरानी बस्तियों और गावो मे लोगो की समझ के पास पहुंचना चाहेंगे तो आपको उसी भाषा, उन्ही शब्दों का प्रयोग करना होगा जो वे ठेठ मुसलमानी काल मे भी अपने पंडितो से हमारे देश के स्त्री-पुरुष सुनते-सुनवाते चले आ रहे हैं।"

"आपकी बात मुझे जच गई शास्त्रीजी। जतन करूंगा कि अपनी जबान को समय के अनुसार ढालूं। वैसे आपकी जानकारी के लिए बतला दूं कि मैं बनारस वाले बाबू हरिश्चन्द्र की 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' उस वक्त से मंगाता हूं जब वह 'हरिश्चन्द्र मेगजीन' कहलाती थी। मेरी शरीके-मेरा मतलब है, धर्मपत्नी उनकी 'बालाबोधिनी' मंगाती हैं। अब तो प्रभा भी उसे पढती है।"

"बनारस के बाबू साहेब थोड़े-बहुत नई चाल के तो अवश्य हैं पर उन्होंने भी स्वामी-

जी का विरोध किया था। आखिर बल्लभ मत के वैष्णव जो ठहरे।"

। नई चाल के पढ़े लिखे की बातों का धरम निभाकर बाबू बंसीधर जब घर चले तो उनके मन में गहरी उथल-पुथल हो रही थी। सुधार और चरित्र निर्माण के काम केवल सोचने भर ही से पूरे नहीं होंगे। उन्हें अमल में भी लाना होगा। पिन्काट के जरिए उसके जीजा से विपिन को मिलवा देने मात्र का प्रतिफल उन्हें पिछले अठारह वर्षों से अब तक पांच सौ रुपए मासिक की दर से मिल रहा है। उनकी कोठी, उनकी फ़िटन, उनके कमरों का शानदार फर्नीचर सब कुछ उसी मुफ्त के धन का वैभव है। कभी-कभी अंग्रेज हाकिमों को पार्टियां देना, क्रिसमस की डालिया भेजना, हिंदुस्तानी हाकिमों को खुश रखना, यह सब तरक्की की तरकीबें और पत्नी के आभूषण आदि इसी धन की आय से होते हैं। एक बार बंसी ने विपिन को लिखा भी था कि अब यह फोकट की राशि बन्द कर दो पर विपिन ने लिखा जिस दिन यह बंद कर दूगा उस दिन मेरा भाग्य भी बंद हो जाएगा। लाखों में खेल रहा है इस समय। उसी के कारण गुमानी भैए का धंधा भी बढ़ा है। किंतु बाबू बंसीधर की नई विचारधारा कहती है कि कर्म की कमाई खाओ। मूर्ति पूजा का दिमागी तौर पर विरोध तो कर सकता है किंतु चंद्रिका जी के दर्शन करने के लिए अपना जाने का नियम कैसे तोड़े। अब तो चम्पक भी साथ जाने लगी है। कल तो हमारे साथ दोनों बच्चे भी जाएंगे। जब से सरकारी नौकरी में डिप्टी इंस्पेक्टर हो गए हैं, तब से भत्ते की आमदनी बढ़ गई है और घर मे घी, सब्जी, अनाजों की रिश्वतें खूब आती हैं। बाबू साहब का ईमान उन्हें रिश्वत नहीं, परंपरागत भेंट उपहार मानता है। क्या यह सही है?"'अब कुछ ही महीनों में नार्थ वेस्ट प्रोविंस और अवध कमिश्नरी का शिक्षा विभाग एक हो जाएगा। डिप्टी इंस्पेक्टर के पद पर बाबू साहब की नियुक्ति पक्की हो जाएगी। तब लगभग तीन हजार स्कूल उनकी मातहती में चलेंगे। तब उनकी भेंट-पूजा और भी बढ़ जाएगी। क्या वह उसे अस्वीकार करेंगे?

बाबू बंसीधर बी० ए०, पंडित प्रभुदयाल शास्त्री के एक मीठे नश्तर से इतने प्रश्नान्दोलित हुए कि उन्हें अपने बंगले तक पहुंचते-पहुंचते स्वयम् अपने ऊपर कुछ-कुछ ग्लानि होने लगी। फेरी वाले बजाज स्वर्गीय मुसद्दीमल का बेटा तनकुन, जो अब बाबू बंसीधर टंडन, आलिम-फाजिल, बी० ए०, डिप्टी इंस्पेक्टर्स आफ स्कूल्स बन गया है, तो क्या उसने केवल अपनी योग्यता के बल पर ही यह रुतबा हासिल किया है। चंद्रिका देवी के दर्शनार्थ जाते हुए पार्किन्सन से उसकी अचानक भेंट हुई। उसकी बदौलत नैन्सी माल्कम से मिला। तरक्की करने की तमन्ना में उसने जो चाहा बंसी ने वही किया। स्वार्थ के लिए देश की अमूल्य निधि, संस्कृत की पुस्तकें विदेशियों के हाथों बेची। गदर के बाद कुछ अंग्रेज हाकिम भारतीयों के प्रति बड़ी अपमानजनक बातें करते हैं। बी० ए० बन जाने वाला बंसीधर तनकुन उन्हें भी यस सर-यस सर कह कर सुनता है। गोरे हाकिमों की नजरों में बराबर चढ़ते रहने के लिए वह कितनी तरकीबें और खुशामदें किया करता है। अपने चरित्र की इन कमजोरियों को नजर अन्दाज करके बाबू साहब देश और समाज के पतन पर 'बड़ी ईमानदारी' मे घड़ियाली आंसू भी बहाते हैं। लोगों की चरित्रहीनता पर सभा समाजों में आए दिन दुःख प्रकट किया करते हैं। पहले ब्रह्मसमाज आदि और अब दयानन्द की निर्भीकता की आड़ लेकर अपनी कमजोरियों को छिपाते हैं। '''योर कॉन्शेंस इज डर्टी। बंसी, यू आर डिसआनेस्ट। यू हैव टू करेक्ट योर ओन सेल्फ फ़र्स्ट।" अपने मुर्दारसी और अफसरी लहजे में अपने आप को अंग्रेजी में डांट कर बाबू साहब ने अपने बंगले मे पहुंचने तक पहली बात यही निश्चित की, कि अब वह मूर्ति पूजा कतई छोड़ देंगे'''हालांकि उनकी इतनी तरक्की जो हुई है वह भगवती चंद्रिका देवी की कृपा का ही

फल है। चंपक ने उन्हो की मनौती मानी थी।

विचार फिर ठप पड़ गया। नौकरी की राजसी पोशाक उतारी, धोती पहनी, हाथ-पैर, मुंह धोया, दो बार बड़ी जोर से खखार कर कुल्ला किया, फिर चंदन की नक्काशीदार खड़ाऊं पहन खट-खट करते हुए जनानखाने मे प्रवेश किया, पूछा : "खोखा बाबू कहां हैं ?"

"ऊपर अपने कमरे में पढ़ रहा है।"

प्रभावती उनकी बाह से झूलकर बोली—"पापा, आज आपको आने में देर क्यों हो गई ?"

"आज बिट्टी, दो बजे हम लोगो ने स्वामी दयानन्द जी महराज से अप्वाइंटमेट लिया था, तो पहले हम लोग वहा गए, फिर वहा से लौट कर तुम्हारे तिल्लोकी चाचा के हजरतगंज वाले फर्नीचर हाउस में बैठकर बातें करने लगे। उमी मे थोड़ी देर हो गई।"

"वहां आपको यह क्यो नही याद आया पापा, कि घर में बिट्टी आपको याद कर रही होगी ?"

सुनकर बाबू साहब हस पड़े।

प्रभावती कहने लगी : "अब तो आप महीने में पन्द्रह-बीस दिन दौरे पर ही बाहर घूमा करते हैं। जब यहा रहते हैं, तब भी हमारा टाइम दूसरो को ज्यादा दे देते हैं आप। यह क्या उचित बात है।"

"अरे बाप रे ! चपक बड़ा गोराशाही सवाल पूछ लिया तुम्हारी बेटी ने। बताओ मैं क्या जवाब दू ?" बाबू साहब मुस्कुराते हुए अपनी लाडली बेटी की पीठ पर प्यार से हाथ फेरने लगे।

चंपक शाम के ब्यालू के वास्ते बैठी साग बना रही थी : "जब तुम ही रात दिन अधिकार की बात करते रहोगे तो तुम्हारे बच्चे क्या तुम्हे छोड़ देंगे ? अच्छा, एक बात तुम्हे यह भी बतला दू कि आज मैंने अर्दली मुख्तियार सिंह को बुलवाकर कल के लिए चादकोजी मे तुम्हारी तम्बू, छोलदारिया लगाने को कह दिया है। इस बार बच्चे भी हमारे साथ चल रहे हैं न।"

बाबू बसीधर सुनकर स्तब्ध रह गए, पूछा : "बच्चे वहा जाकर क्या करेंगे ?"

चंपकलता कड़क कर बोली : "खोखा बिल्कुल नास्तिक हो गया है, मैं यह नहीं सहूगी। मुझे स्वामीजी की हर बात बहुत पसन्द है, मगर मैं उनके देवी-देवताओं के विरोध करने के बहोत खिलाफ हूं।"

बाबू साहब के भीतर का ईमान फिर हिला। वह कलकत्ते के ब्रह्म विचारो और संगत मे मूर्ति पूजा के कुछ-कुछ विरोधी भी हो चुके थे। उन्होने कलकत्ते मे नवाबगंज की चमेली को चपकलता बनाने मे आशातीत सफलता पाई पर उसके देव-देवी दर्शन की निष्ठा को न दबा पाए। उल्टे चपकलता के आग्रह से ही उन्हें उसके साथ कालीघाट भी जाना पडता था। यहां आकर अपने पहले पुत्र के जन्म के बाद ही से पति के अमावस्या चंद्रिका दर्शन मे वह भी नियमित रूप से सम्मिलित हो गई। चन्द्रिका देवी के दर्शन करना बाबू साहब की एक बहुत बड़ी 'श्रद्धामूलक' कमजोरी है। सभा-मंचों मे मूर्ति पूजा विरोधी और अमावस के दिन चन्द्रिका दर्शन का आग्रह। अब तक बड़े भोले ढंग से दोनो बातें निभती चली आ रही थी, पर ऐसा अब लगता है कि उसे अपने निश्चय के ऊंट को किसी एक करवट से बैठाना ही पडेगा। बाबू साहब ने एक बार अपना गला हल्के से खखारा और फिर साहस करके पत्नी से बोले : "तुम अपने मन का अकीदा यानी कि विश्वास अपने

बच्चों पर क्यों लादना चाहती हो ? उनको खुद ही सोचने और अपना रास्ता तय करने का हौसला क्यों नही देती ?"

"इसलिए कि वो अभी इस योग्य नही हैं।" फिर एकाएक बांग्ला भाषा में बोल पड़ी : "आमो नास्तिकता शहन करिते पारबो ना। आमी बोले दिचि।"

बेटे-बेटी बांग्ला भाषा नही समझते। उनके सामने पति-पत्नी को जब कोई निजी बात कहनी होती है तो बांग्ला भाषा ही बोलते हैं।

पत्नी की बातें सुनकर बाबू साहब के चोर मन को ईमानदारी के अक्षयपट की छांह मिल गई। चन्द्रिका देवी की भक्ति से ही उनका भाग्य खुला है, उनके प्रति अश्रद्धा रखने से कही भाग्य-तिजोरी बन्द न हो जाए। यह भय उनके बुद्धि और तर्क के पुख्ता ज्ञान महल मे भी चूहे की तरह अपना बिल बना चुका है। वह चूहा किसी शानदार तर्क का मुखौटा लगाकर सबके सामने अब शेर बन सकेगा। वह कह सकेगा कि भाई, मैं और सब तरह से बाहर से दयानन्द जी का समर्थन करता रहूंगा, पर जहां तक देवी भक्ति का सवाल है, वहा वे अपनी मौलिक आस्था से ही परिचालित होगे, क्योंकि उनकी वामांगिनी भी इसी मत की हैं। 'वामा' सहधर्मिणी होती है, मैं उसका त्याग नही कर सकता। बाबू साहब के इस तर्क को एक और प्रबल तर्क की सहायता भी उनकी तुरत बुद्धि ने दी। कलकत्ते के अंग्रेजी साप्ताहिक 'हिन्दू पैट्रियट' मे उन्होने रामकृष्ण परमहस नामक एक उदीयमान चमत्कारी संन्यासी के संबध मे पढा था, जो दक्षिणेश्वर मे साक्षात मा की मूर्ति से बातें करते है। आजकल बगाल के बड़े-बड़े विद्वानो और मनीषियो मे उनकी बेहद चर्चा हो रही है। ब्रह्म मत के विद्वान महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर तक उनसे मिलने की इच्छा रखते है। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर उनके भक्त है, और स्वयं बाबू साहब भी कलकत्ते से विदा होने के पहले चंपक के साथ उनके दर्शन कर आए थे। पन्द्रह-सोलह वर्ष पहले उनका यशोदय हो रहा था, और अब उनका कीर्ति सूर्य लगभग मध्याह्न काल मे है। विचार आते ही तनिक तगड़े मन से बोले : "तुम्हे याद है चपक, हम लोग दक्षिणेश्वर के मन्दिर मे एक रामकृष्ण बाबा से मिलने गए थे, जवान-जवान पुजारी बाबा याद है न ?"

"मुझे खूब याद है, वे तो मां के बावले बेटे थे। मा ही मां कहते रहते थे।"

तखत से उठते हुए बंसीधर बोले : "अरे, वह तो इस समय कलकत्ते में बुत परस्ती के आफताब हो गए हैं। तमाम खिलकत उनके दर्शन के लिए जाती है।" तखत से उठे, खड़ाऊं पैरो मे डालीं, बोले : "अरे कोई है, मेरा गाउन तो ले आओ।"

दूसरे दिन दोपहर के भोजन के समय खोखा ने कहा : "मां, मैं आप लोगो के साथ नही जाऊंगा।"

चंपकलता तेज पड़ी, "फिर वही राग।"

"हां मां, मैं बार-बार कहूंगा कि मैं नही जाऊंगा, नही जाऊगा। मेरा मूर्ति पूजा में कोई विश्वास नही है।"

इससे पहले कि चपकलता कुछ कहे, बंसी बाबू बोल उठे : "ठीक है, मूर्ति पूजा मे तुम्हारा विश्वास नही है यह हमने सुन लिया। मगर तुम हमारे साथ सैर के लिए तो चल ही सकते हो।"

खोखा उर्फ देशदीपक शान्तिपूर्वक बोला : "पापा, आप लोग बुरा न मानिएगा, मैं इधर जब-जब हिस्ट्री बुक्स मे यह पढ़ता हू कि मोहम्मद गजनवी या सिकन्दर लोदी ने मथुरा के मन्दिर तोड़े, बाबर और औरंगजेब ने अयोध्या और काशी को नष्ट किया तो मुझे गुस्सा आने के बजाय खुशी होती है। इन पत्थर की मूर्तियो को पूज-पूज कर ही हमारी अकल पर भी पत्थर पड़ गए हैं।"

पति के पास पंखा लेकर बैठी चंपक के चेहरे पर तमक आई, परन्तु पति ने धीरे से उनकी जाघ दबा कर उन्हें कुछ कहने से रोक दिया। फिर बेटे से बोले : "अच्छा खोखा, तुम ईश्वर पर विश्वास करते हो या नही ?"

पन्द्रह वर्ष का विचारक युवक कुछ गम्भीर हुआ, फिर मुस्कराया, कहा : "आपने मेरे मन की बात पूछ ली पापा।"

तभी महाराज पिता-पुत्र की चौकियो पर थालियां रख गए। बाबू साहब ने खाने की ओर हाथ बढ़ाया किन्तु खोखा अभी अपनी बात पूरी कर रहा था, बोला : "मैं चाहता तो हू कि ईश्वर पर मेरा विश्वास बना रहे, मगर लगता है कि मेरा यह विश्वास बहुत दिन टिक नही पाएगा। ईश्वर और आत्मा अब साइंस की कसौटी पर···"

"अच्छा-अच्छा खा लो, इस पर फिर बातें करेंगे।"

चन्द्रिका जी के दर्शनार्थ केवल मां, पापा और प्रभा ही गए। खोखा न गया। बाबू साहब को भी बुरा लगा किन्तु चपक के मन मे एक प्रकार से आस्था का भूडोल ही व्याप उठा। खोखा के जनम के बाद जब से चपक भी जाने लगी है, बाबू बंसीधर ने हैदरीखां के बेटे से हर माह चौदस के दिन बग्घी का करार कर रखा है। बूढ़े हैदरीखां तनकुन भैया के लिए जैसे ललकौनी तैयार रखते थे वैसे ही वह दो बजे बहूजी साहबा और तनकुन बाबू के बगले पर बग्घी भिजवा देते हैं। शहर में कुछ खास बड़ी सवारियो के वास्ते 'रिजवर्ड' बग्घियों मे से एक खास मखमली गद्दियोदार। मां, पापा और बेटी सवार हुए। दरवाजे बन्द किये। खिडकिया खोल दी, हवा आती रही। पापा और बिट्टो एक तरफ बैठे, मां दूसरी तरफ।

[illegible]

और इन्होने भी आज मेरा, मा का हठ तोड दिया। खोखा की बात पर बोले तक नही। मैं मां की भक्ति नही छोड सकती। यह जानते हैं। घर के वातावरण के कारण वह जन्मजात देवी भक्त है। श्रद्धा देवी रुपिणी होती है। मूरत कैसी ही हो, उससे संबंधित दंत कथाएं भले ही अलग-अलग हों, मगर 'देवी' नाम से उपजी मन की श्रद्धा एक सी उमडती है। वह मूर्तियो मे समाकर भी समा नही पाती। मूर्तियां, तिथि, त्योहार उस मन की श्रद्धा को चेताने के लिए बहाना भर हैं। बकुल फूल (सुचरिता सान्याल) ने कभी उससे यह कहा था "ब्रह्म त आछे, किन्तु मां ओ आच्छेन। माएर बिना ब्रह्म ब्रह्म होइते पारते ना।"[1] उस दिन चंपक की अपनी आस्था को जो परम सुख और सन्तोष हुआ था वह बखान से बाहर है। पति की देवी भक्ति से वह अब तक प्रभावित थी, किंतु खोखा के यह कहने पर कि "मैं मूर्ति पूजा पर विश्वास नहीं करता, बचपन मे आप लोग जो कह देते थे उसे मान लेता था। तब मजबूर था किंतु अब मैं अपने संबंध मे खुद सोच समझ सकता हूं।" सुनकर पति चुप रहे थे। इससे पत्नी के सुहाग भरे मान को बडी ठेस पहुंची थी। देवी के बाद चपक बसीधर के भरोसे ही अपने विश्वास को सदा अंगद का पांव मानती रही है। वह विश्वास आज डगमगा गया। क्या यह भी मेरे लड़के को नास्तिक बना देंगे ? मेरे घर में क्या अब मेरी इच्छा न चलेगी ? तब मैं जिऊगी भी नही। यह और तुम अगर मेरा साथ छोड दोगी जगदम्बा, तो फिर मैं जी न सकूगी। चंपकलता के मन ने अपने पति

1. ब्रह्म है, परतु मां भी हैं। मा के बिना ब्रह्म ब्रह्म नही होता।

के पास आने के बाद से ऐसी पराजय का अनुभव नहीं किया था। चंपक ऊपर से भरसक पत्थर बनी रही, परन्तु उस पत्थर के नीचे अश्रुझील की हिलोरें उठ रही थी।

बख्शी जी के ताल पर गाड़ी रुकी। यहां घोड़ों के लिए घास वगैरह खरीदी जाती है, जानवरों को चरही में पानी पिलाया जाता है। यहां मक्का हलवाई की दूकान पर कलाकन्द और मन्डे बहुत ही अच्छे बनते हैं। बसो बाबू एक बार अपनी पत्नी की ओर देखकर बेटी को साथ ले गाड़ी से उतर गए। हलवाई के यहा जाकर दोनों मिठाइयां तुलवाकर दोने में धागे से बंधवाईं। बिट्टो को दो टुकड़े दूकान पर ही बिठलाकर खिलाए और दोनों को लेकर लौट आए। और लौटते समय बिट्टो को बख्शी टिपड़ चन्द (त्रिपुर चन्द्र) द्वारा बनवाया गया भव्य तालाब दिखलाते और बख्शी त्रिपुर चन्द्र के टिपड़ चन्द बन जाने के ऊपर हसते-हसते, बाप-बेटी बग्घी पर लौट आए। पाच मिनट बाद ही गाड़ी फिर दौड़ चली। बीच का जंगल अब बहुत कम रह गया है। चन्द्रिकोजी की सवारी के शेर और जड़ियों वाले बिना दुम के शेरों की किवदंतिया देखते ही देखते अब खत्म हो चली हैं। अजोर की तरफ जाने वाली सड़क चूंकि अच्छी न थी, इसलिए हचकोले बहुत लगते थे। श्रीमती सौभाग्यवती चपकलता जी ने अपने बैठने का ढग बदल लिया था। इस बदलने के दौर में ही एक बार पति की आंखों से आखें मिली। चपक की नजरें झट से कतरा कर खिड़की के बाहर गांव का दृश्य देखने लगी। जब गाड़ी मन्दिर के पास पहुची तो मुख्त्यार सिंह अर्दली और दुर्गा पण्डा ने उनका स्वागत किया। पडाजी ने हाथ जोड़कर बहूजी से कहा : "हमसे कौन खता भई हजूर जो हमरे घर···"

घर से यहां तक की यात्रा में पहली बार चंपकलता बोली, उनकी आवाज पहले तो बनावटी तौर पर सधी रही, फिर धीरे-धीरे उसने अपना कुदरती सधाव भी पाया। कहने लगी : "ऐसा हुआ पंडा जी, कि मैं अपने बड़े बेटे को भी लाना चाहती थी, वह इधर कई वर्षों से नहीं आया था। उसी के लिए ये सब इन्तजाम करवाया, अब नहीं आया तो नहीं आया खैर। लेकिन पण्डा जी एक काम आप कर लीजियेगा। यहा हवन होगा। और यहा ब्राह्मण लोग कित्ते हैं?"

"अरे पडा-पुजारी हम लोग मिल के, बाल बच्चे सब, तीस-चालीस मनई हुइहैं।"

"ठीक है, मैं यह चाहती हूं कि कल यहां के सब लोग देवी जी के दालान मे ही प्रसाद पावैं। आज रात के हवन में हलवे का भोग लगाइएगा। कल ब्राह्मणों के भोजन के समय खीर बनवाइए।"

दुर्गा पण्डा गद्गद् भाव से हाथ जोड़ कर बोले : "अरे मालकिन साहब, वाह-वाह धन्य हो, धन्य हो।" कहते हुए गद्गदावस्था मे होंठ मे दबी चूने तम्बाकू की लार मुह से टपक पड़ी। बिट्टो खिलखिलाकर हंस पड़ी। बाबू साहब कुछ न बोले, अपने डेरे मे चले गए। मुख्तियार सिंह पहले ही से मोजूद था, पंचम और महरी की लड़की इनके साथ आई थी, इसलिए सेवा टहल में कोई कसर न थी। बाबू साहब शाम की दैनिक क्रियाओं से निश्चिन्त हुए और अपने डेरे से बाहर आकर दरी की सफरी आरामकुर्सी पर आराम करने लगे। कनातों से घिरे सफरी गुसलखाने में स्नान करके बहूजी भी तैयार हुईं। महरी की बेटी कट्टो ने उनकी सिंगार पेटी को भी वहीं लाके रख दिया था। चोटी सवार कर और कपाल पर फिर से टीका लगाकर बहूजी गुसलखाने से निकली तो साहब सामने आराम-कुर्सी पर बैठे थे। एक बार ठिठकी, फिर उधर ही चल पड़ी। आरामकुर्सी के पीछे आकर खड़ी हुई, चौंककर बाबू साहब ने गर्दन घुमाई और मुस्कुरा पड़े। लेकिन चंपक के चेहरे पर सहजता न लौटी, कहा : "तुम्हारे नाश्ते के लिए क्या मगवा दू?"

"जो तुम्हारे जी में आए।"

"मैं तो आधी रात के दर्शन के बाद खाऊंगी।"

पत्नी का यह निश्चय सुनकर पति देव एकाएक झटका खा गए, फिर कहा: "हमारी तहजीब में पतिव्रत तो बखाना ही गया है, मगर एक पत्नीव्रत भी होता है। अगर तुमने ऐसा व्रत लिया है तो वह लामुहाला मेरा व्रत भी हो गया।"

"मैं अपना मत किसी पर लादना नहीं चाहती।"

"लेकिन तुम्हारा पति 'किसी या कोई' नहीं है। वह वही चाहता है जो तुम चाहती हो। बैठ जाओ चमेलो, किसी को आवाज दो, भीतर से कुर्सी निकाल लाएगा।···ठहरो मैं खुद ही लाए देता हूं।"

चमेलो उर्फ चपकलता कुछ कह भी न सकी कि बाबू साहब डेरे के भीतर से एक दरी और सफरी कुर्सी उठा लाए। यह देखकर पत्नी के चेहरे पर पति के प्रति स्निग्धता की आभा फिर से लौटने लगी। कुर्सी पर बैठते हुए बंसीधर बोले: "मैं जानता हूं, तुम आज मुझसे क्यों नाराज हो गई हो। मैंने खोखा को कुछ न कहा इसीलिए ना?"

चंपक कुछ न बोली, गंभीर बनी बैठी रही। बंसी बाबू ने फिर कहा: "मैंने उसका रुख देखकर कुछ न कहा। जानती हो क्यों? मैं भी इसी चरित्र के बल पर तुम्हारी सहेली [illegible] था। आत्मा की वह साफ [illegible] चलता, तब तक हमें उसके [illegible] पत्नी के चेहरे के उतार-चढ़ावों पर अपनी अ-टक दृष्टि साधे रहे। फिर कुर्सी पर बैठे-बैठे ही थोड़ा आगे खिसक आए और मिठास से बोले: "लेकिन मेरी तुम्हारी बात न्यारी है। तुम मेरे ऊपर अपना वैसा ही हक रखती हो, जैसा मैं तुम्हारे ऊपर समझता हूं। और तुम अपने दिल-दर-दिल के अन्दर यह जानती भी हो कि औसत बीवियों की तरह तुम महज मेरी धर्मपत्नी ही नहीं बल्कि उससे ज्यादह वह हो जो मजनू के लिए लैला, फरहाद के लिए शीरी, नल के लिए दमयन्ती थी।"

पत्नी के चेहरे पर आस्था की तरावट फिर से लौट आई। लेकिन मान बना रहा, जैसे और खुशामद चाहती हो। बाबू बंसीधर बी० ए० 'तू दाता हौं भिखारी' वाली मुद्रा धारण किए अपनी चमेलो को प्रसन्न करने के हेतु श्रद्धा रुपिणी जलेबी सी जबान को शृंगार की चासनी में डुबो कर बोले: "तुम मेरी तक़दीर हो, मेरा ईमान हो, मेरी जान हो। क्या-क्या कहूं···"

सौभाग्यवती चपक का मान भर गया, मुस्कुरा के बोली, "जाओ भी, बातें खूब बना लेते हो। मैं सोचती हूं, हवन वगैरह होने में तो अभी देर है—कितने बजे हैं?"

"घड़ी तो कोट में है, लेकिन फिर भी मेरा ख्याल है अब छह तो बज ही रहे होंगे।"

"वही तो कह रही हूं, ब्यालू तो अब आधी रात के बाद होगी।"

"बिट्टो को जल्दी खिला देना, भई।"

"सो तो करूंगी ही, मैं समझती हूं तुम भी कुछ पानी पिलाव जरूर कर लो।"

"कर लूंगा, लेकिन एक शर्त पर।"

कुर्सी से खड़ी होती हुई श्रीमती चंपकलता बोली: "तुम जो बख्शी जी के ताल से दोना लाए थे।"

"ताल से नहीं हलवाई की दूकान से लाया था जनाब। आज संडे के दिन नायाब मन्डे खाइए। और कलाकन्द तो यहां की ऐसी है कि तुम्हारे कृष्ण भगवान इसका भोग

लगा लेते, तो फिर कभी माखन-मिश्री को पूछते ही नहीं।"

"कट्टो।"

"जी माता जी।"

"बिट्टो तैयार हो गई हो तो नाश्ता लगा दे, हम लोग आ रहे हैं।" कहकर पति की कुर्सी की ओर कदम बढ़ाया। बाबू साहब उठकर खड़े हो गए।

चंपक बोली : "इस बखत खोखा भी आ जाता तो।"

"अब देखो, तुम फिर मूरखताई का मेघ मल्हार अलापने लगी। बेवकूफ कहीं की। जमाने के साथ इतना आगे बढ़कर भी तुम पीछे मुड़ना चाहती हो। देखो— (कहते हुए पत्नी से बिल्कुल सटकर) मैं तुम्हारे मन के मरम को खूब समझ गया हूं। तुम मुझ पर भरोसा रखो, मैं तुम्हारी और अपने बेटे दोनों की आत्माओं की रक्षा करूंगा।" दूसरे तम्बू की ओर चलते हुए बंसीधर ने कहा : "तुमको इस बात पर गुस्सा है कि खोखा नास्तिक है मगर मैं समझता हूं कि तुम यहां गलती पर हो। हर विचारवान इन्सान की जिन्दगी में एक वक्त ऐसा भी आता है जबकि उसे शक होता है कि ईश्वर नाम की कोई शय है भी या नहीं। मैं भी इस दौर से गुजरा हूं।"

"नहीं। मैं तुमसे अधिक जानती हूं। उस पर ईसाइयों का मुलम्मा चढ़ रहा है आजकल।"

"देखो चमेली, तुम मुझे नाहक गुस्सा दिला रही हो। मोह में मूरख न बनो, जिद मत करो। अच्छा, मैं तुम्हें कल घर चलके किसी बहाने से तुम्हारे बेटे के सही विचार तुम्हें सुनवा दूंगा।" संकरी डाइनिंग टेबिल की लकड़ी की कुर्सियों पर तीनों बैठ गए। पति पत्नी ने केवल खोए की मिठाई और फल ही खाए। बेटी ने फल-मिठाई के साथ चन्द्रिको जी के नन्दू हलवाई के सुहाल और समोसे भी खाए। फिर पति-पत्नी दोनों ही अर्द्धरात्रि के भोग में अर्पित किए जाने वाले सवा मन हलवे के निर्माण-कार्य को देखने के लिए चले।

अंग्रेज साहब-मेम को तो साथ-साथ आते-जाते देखने का अभ्यास अब शहरों और उनके आस-पास के गांव कस्बे वालों को हो गया है, किंतु एक देशी दम्पति का इस प्रकार घूमना इस देश के लिए अनोखी बात है। पुरुष के साथ बिना चादर, घूंघट या बुर्के के घूमने का रिवाज केवल वेश्याओं में ही है किन्तु यह दर्शनीय जोड़ा निपट अपढ़ लोगों के मनों में भी अनोखेपन के साथ श्रद्धा का भाव ही जगाता था। नन्दू हलवाई के शब्दों में "लागति हैई कि बिलाइत के साहेब-मेम जानौं चादकन मैया के दर्शन करैं खातिर हिन्दू बनि के आय हैं।"

सब प्रबन्ध नन्दू हलवाई ने बहू जी को बतलाया : "कल के बरहम भोज के वास्ते हम हियनै के चार बम्हनन से बात कर लिया है। दुई महराज हलवाई हमारे हियां मेले के दिनन मां आवते हैं। हियैं नगिचहैं रहते हैं हजूर सरकार। अरे पैसा की जगह एक दमड़ी और ऊपर ते लागी, मुलु चारिउ अलंग आप की जै-जैकार हुई जाई।"

उस दिन रात में स्त्रियों का जागरण और कीर्तन भी हुआ। श्रीमती चंपकलता पूरी रात जागी। सवेरे ठीक समय पर नहा-धोकर पंचम को आज्ञा दी कि साहब को तैयार होने को कहे।

"साहेब तो हजूर अब तलक नहाय-धोए चुके हुइहैं।"

"अच्छा, तो क्या वे भी नहीं सोये ?"

"अब हम का जानी सरकार, हम जब मुगर्वा बांग दिहिस तब उनके पांव दबावैं गये तो मुख्तियरवा बोला, जाओ पंचम, लोटा कलसा लेय के पहुंचौ साहब जहजूरे गये हैं। हम

गुमलखाना मा पानी भरै जाइत हैं। हम साहब के हाथ धुलाए के इधर आए, उधर उई हमार्वे खातिर कन्नात महियां चले गये।"

बंसीधर सच्चे हृदय से अपनी पत्नी के अनुरक्त हैं। जीवन का पहला परकीया प्रसग हो जाने के कारण बंसीधर के मन मे एक ऐसी ग्लानि समाई कि वह मानों अब तक प्रतिक्षण उस पाप के प्रायश्चित स्वरूप अपनी पत्नी के प्रति विनत हैं। नवाबगज की चमेली ने अपने मशहूर फारसीदा, अंग्रेजीदां पति को हर प्रकार से प्रसन्न करके स्वयं अपने को उनकी रुचि के अनुसार ढाल लेने मे ही अपने समस्त जीवन की सार्थकता समझी थी, इसलिए दोनों मे गहरा आपसी समझौता भी था। पति-पत्नी दोनों गोरे तो थे ही, नाक-नक्श भी अच्छा पाया था। चमेली, तनकुन की सुन्दरता पर रीझी थी तो तनकुन चमेली की मन-मोहक छवि पर।

कलकत्ते के एक सदगृहस्थ, सदाचारी परिवार की संगत मे पति-पत्नी दोनों ही मे आत्म संयम और चरित्र निर्माण की प्रवृत्ति भी जाग उठी। वह प्रवृत्ति अब और भी सधे नियमो से परिचालित है। आपस के इस नाते ने दोनों को एक ऐसी अंतरंगता प्रदान की है जो बिना कहे ही एक दूसरे के जी की बातें बहुधा जान लेती है।

दूसरे दिन ब्रह्म भोज सम्पन्न हुआ। एक मटके भर खीर का प्रसाद अपने खोखा के लिए लेकर चंपकलता जब घर चली तो असुख में भी सुख मान रही थी। कल की पुत्र द्रोह की अतरज्वाला मे तप कर उनके धार्मिक जोश ने लगभग सवा दो सौ रुपए अब नक स्वाहा कर डाले थे। चंपक के मन मे सुहाग के मान के साथ-साथ 'घरैतिन' का यह हिसाबी-किताबी जी भी कुटक रहा था। परंतु लता को वृक्ष का आधार था। वृक्ष अपनी लता के इस विश्वासालिंगन से पूर्ण संतुष्ट होकर बिट्टो से तरह-तरह की रोचक बातें कर रहा है। पति जब इस तरह अपने मे एक हो तो पत्नी को फिर और क्या चाहिए!

18

कलकत्ते की ब्राह्म और पढ़े-लिखे अंग्रेजो की संगति में तनकुन अपने पिता स्वर्गीय मुसद्दीमल से कही अधिक अच्छा पिता साबित हुआ। खोखा उर्फ देशदीपक अपने पिता का लाडला बेटा है। खोखा की पढाई के लिये वह विशेष सतर्क थे। क्रिश्चियन गर्ल्स स्कूल की एक अग्रेज अध्यापिका के यहां वह प्रतिदिन तीन बजे पढ़ने के लिए जाता था, फिर वहीं खेलता। इस काम के लिए बाबू साहब दो सौ रुपया महीना फीस देते थे जो समय को देखते हुए बहुत थी। अंग्रेज बच्चों के समाज मे ही उसकी ज्ञानचेतना विकसित हुई। घर में पिता भी खोखा से अग्रेजी में ही बातें करते थे। देशदीपक अपनी मा, छोटी बहन, माने जानेवाले कुछ लोगों से या फिर नौकरो से ही हिन्दी में बातें करता था। मां चंपकलता को अपने बेटे को इतना अधिक अंग्रेज मिजाज बना देना अच्छा नही लगता था। किन्तु पति कहते, "तुम समझती नही, इस तेजी से बदलते हुए जमाने में वे लोग ही आगे बढ सकेंगे जो दिमाग से अंग्रेज और

दिल से हिन्दुस्तानी होंगे। मैंने उसका नाम देशदीपक रखा है। मैं उसे बनारस वाले बाबू हरिश्चन्द्र की हिन्दी मैगजीनें भी पढ़वाता हू। इसलिए चिन्ता न करो प्रिये, हमारे बेटे के दिल और दिमाग दोनों की सेहत अच्छी बन रही है। उसके हिस्ट्री के टीचर बाबू प्राणनाथ घोष भी उसके देश प्रेम की बडी तारीफ करते हैं।"

लेकिन इधर पिछले चार-पांच महीनो से देशदीपक बेहद उचाट-उचाट-सा हो रहा है। वह इस समय बेहद खिन्न, चिन्तित और उखडा-उखडा-सा हो गया है। बाबू प्राणनाथ बड़े उत्तेजक भाव से इतिहास पढाते हैं और अपने जोश मे कभी-कभी अंग्रेजो के खिलाफ बडी कड़वी बातें भी कह जाया करते हैं। देशदीपक उनकी बातो से स्फूर्ति तो बहुत प्राप्त करता है, किन्तु उस स्फूर्ति को क्रिया देने लायक उसके पास कोई भी साधन नही। वह चिडचिडा कर सोचता है कि उसने ऐसे समय मे और ऐसे निकृष्ट देश मे जन्म क्यो पाया जहां मनुष्य कुछ कर ही नही सकता। कुछ दिनो पहले जब स्वामी दयानन्द लखनऊ आये थे, तब टण्डन परिवार, चोपडा परिवार और यहां तक कि देशदीपक के पुराने घरेलू संस्कृत शिक्षक पंडित प्रभुदयाल शास्त्री तक ने खोखा से स्वामीजो की सभा मे चलने का आग्रह किया, पर उसने घिनाई हुई मुख मुद्रा प्रदर्शित करते हुए कहा : "मुझे साधु-संन्यासियो से सख्त नफरत है। हमारे देश को तबाह करने में उनका सबसे बड़ा हाथ रहा है। मैं इनसे नफरत करता हूं।"

उसे समझाया गया कि स्वामीजी ऐसे नही है। उनके विचारो को सुनने के लिए बड़े-बड़े अंग्रेज विद्वान और सैयद अहमदखा जैसे मुसलमान विद्वान लोग आते हैं और उनका बडा ही आदर करते हैं। किन्तु तब भी देशदीपक न माना। मा ने ताना कसा : "ये तो अंग्रेजो के पादरियो को मानेगा।"

"मैं उनसे भी नफरत करता हूं मां, मैं तुम्हारे ईश्वर से भी नफरत करता हू। ईश्वर है तो अंग्रेजों का, हम हिन्दुस्तानियों का नही। दिनों दिन दुख, अकाल, महंगाई, बढती हुई गरीबी—यह भला ईश्वर के काम हैं?"

इसी पर तो बात बढ़ी थी। मां ने हठ ठाना था कि इस बार बच्चे भी चादकोजी जायेंगे। मगर खोखा न गया। कल घरवालों के जाने के बाद वह अकेले घर मे बेहद उखड़ा-उखड़ा रहा। रसोइया रामलोटन महराज और अधेड़ बुद्धू छोटे सरकार की हांजी-हांजी मे लगे रहे। बडी मुश्किल से खाना खिलाया, दूध पिलाया, सुलाया। आज सवेरे भी उठने, नहाने और नाश्ता करने में छोटे सरकार खोखा बाबू ने बहुत परेशान किया, मगर नाश्ते के बाद जब से एक पोथी लेकर बांचने बैठे हैं तब से मगन हैं। कमरे के दरवाजे के बाहर पंखा खीचने वाला लडका बैठा है। बुद्धू भी अपने छोटे सरकार का कोई नया हुकम सुनने की प्रतीक्षा मे पंखा खीचने वाले लडके के पास ही बैठा हुआ कभी उससे रसभरी छेड़खानियां करता और कभी ऊंघ जाता है। एकाएक कमरे के अन्दर खोखा बाबू जोर-जोर से अंग्रेजी में बोलने लगे। बुद्धू चौंककर कमर में झाकने आया।

खोखा बाबू आज सवेरे मे ही प्रोफेसर मैक्समूलर लिखित पुस्तक—"इण्डिया : ह्वाट इट कैन टीच अस" पढ़ रहे थे। आई० सी० एस० पास होने वाले अंग्रेजो को दिए गए दीक्षात भाषणो का यह छोटा सा सग्रह था। पढते-पढते ही इतने उत्साह मे आ गये कि जोर-जोर से पढने लगे -"यह जानने के लिए कि प्रकृति ने किस देश पर अपना सारा वैभव और शक्ति-सुन्दरता खुले हाथों निछावर कर दी है, मेरी दृष्टि चारों ओर घूमकर केवल भारत पर ही जायेगी। अगर मुझसे पूछा जाय कि इस अंतरिक्ष के नीचे ऐसी कौन सी जगह है, जहां इन्सान के मन और बुद्धि ने ईश्वर के दिए हुए अनन्यतम सद्भावों को पूरी तरह से विकसित करके जीवन की अतल गहराइयो मे उतरकर कठिन से कठिन

समस्याओं पर विचार किया है तो मैं कहूंगा कि वह स्थान भारत है। अगर मैं अपने से पूछू कि हम योरोपवासी जो अब तक ग्रीक, रोमन या यहूदी विचारों में पलते रहे हैं, किस देश के साहित्य से प्रेरणा ले सकते है तो मेरी उंगली फिर भारत की ओर ही उठेगी।"

भारत के प्रति जर्मन विद्वान की यह सत्यनिष्ठा देखकर देशदीपक का मन एक जगह यदि भरकर भारी हो उठा तो दूसरी जगह रीता होकर हलका भी हो गया। उसे लगा कि जिस शंका ने उसे महीनों से उलझा रखा है उसका समाधान उसे लगभग मिल गया है। जब पश्चिम का एक विद्वान इतनी ईमानदारी से भारतीय वांग्मय में अपनी जीवन मुक्ति देखता है तब उसे अपने देश से इतना निराश नही होना चाहिए। प्राणनाथ 'सर' तो बहुत भावुक हैं। उनके अनुसार भारत इस समय ऐसे रसातल में गिर गया है कि जहा उसकी सभी विद्यायें और कलाएं उसके हाथ से जा चुकी हैं। वह उन्हें कभी पा भी नही सकेगा। प्राणनाथ 'सर' की दी हुई निराशा को उन्ही की प्रेरणा से खरीदी इस पुस्तक के सहारे देशदीपक ने मिटाया। उसे लगा कि उसकी भटक जाने वाली आस्था फिर मिलती दिखायी दे रही है।

शाम को जब हैदरीखां के अस्तबल की बग्घी ने 'चंपक मेन्शन' में प्रवेश किया तो खोखा अपनी डायरी के पन्ने पर पन्ने भरता हुआ वैचारिक बाढ़ मे सानन्द बह रहा था। मा ने प्रसन्नवदन खोखा को देखा तो खिल उठी। मां और पापा को पास आते देखकर खोखा मेज से उठ खडा हुआ और हाथ जोड़े। भारतीय प्रथा के अनुसार बड़ों के पैर छूने की 'बेहूदा आदत' वह बरसों पहले ही छोड चुका है। मां ने पूछा : "खाना ठीक तरह से खा लिया था, खोखा?"

"हा मा, सब कुछ अच्छी तरह से कर लिया था। कल आप लोगों के साथ न जाने की वजह से मैं थोडा दुखी जरूर हुआ लेकिन शर्म बिल्कुल नही आयी थी।" फिर प्रभा की बाहें पकडकर बोला : "कहो चांदकोजी ने तुम्हें क्या दिया? घूंसे कि थप्पड़?"

प्रभा चट से हाथ बढा के बोली . "वह तो आपके लिए भेजे हैं। मैं तो मजे से दोनो दिन खीर पूरी और मोहनभोग की दावतें उडा कर आ रही हूं।"

यद्यपि पति ने चपक को सचेत किया था कि बेटे से उसके धार्मिक विचारों को लेकर न उलझे, फिर भी मां से न रहा गया। बेटे से कहा, "तूने यह क्यों कहा कि तुझे दुःख हुआ मगर शरम नही आयी?"

खोखा एक बार चौंककर मां की ओर देखने लगा, फिर मुस्कुरा कर बोला : "दुख इसलिए हुआ कि मेरे इन्कार करने से तुम दुखी हुई और शर्म इसलिए नही आयी कि मैं तुम्हारी बनायी हुई उस देवी को साक्षात् तुममे ही देखता हूं।"

बात शायद कुछ और भी आगे बढती, मगर तभी कट्टो ने बाहर से दौडते हुए आकर खबर दी कि तिल्लोकी बाबू की मेम आयी हैं।

चंपकलता उनका स्वागत करने के लिए तेजी से आगे बढ गयी। मैगी बाहर वाले कमरे मे ही बाबू साहब से बातें कर रही थी। चंपक को देखकर उठी : "हैलो चंपक, हाउ आर यू?"

"यू केम सो लेट इवनिंग। ह्वाई सो इम्पोर्टेण्ट कमिंग?"

"हा, चंपक, तुमसे मुझे बहुत जरूरी बात करनी है और अगर बंसी बाबू भी हमारे साथ रहेंगे तो ज्यादा अच्छा होगा।"

"देन कम मैगी, वी सिट इन भीतरवाला रूम। आइए चलें।"

पहले खातिरें हुई, प्रसाद की खीर मिली, शर्बत पेश हुआ, चांदकोजी के दर्शन की

बात से भक्ति का विषय भी हल्का सा छिड़ा, फिर मैंगी अपनी बात पर आयी, "देखो चंपक, मैंने डेविड को इंग्लैण्ड भेजने के लिए सारे इन्तजाम कर लिये हैं। मैं चाहती हूँ कि इसको वहीं आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी मे पढाऊँ। मगर त्रिलोकी कहते हैं कि उनका सोमू भी साथ जायेगा। इसके लिए उन्हें अपनी चुन्नो और खासतौर से अपनी बूढी सास को मनाना बहुत जरूरी है।"

"आई टाक विद चुन्नो, मैंगी। मैंने उसको समझाया कि सोमू विलायत पढके आयेगा तो बड़ा अफसर हो जायगा। चुन्नो तो किसी हद तक मान भी गयी है मगर हर मदर यू नो वेरी ओल्ड हिन्दू लेडी, वेरी मच एफरेड आफ धरम गोइग। फिर वो इस बात से भी भय-भीत है कि सोमू भी अगर विलायत से मेम ब्याह लाया तो क्या होगा।"

"आई नो, आई नो। देखो चंपक, बूढ़ी मां की यह जिद दो लडकों की जिन्दगी खराब कर रही है और, बंसी बाबू, मैं यह बिल्कुल तय कर चुकी हूँ कि मैं अपने बेटे को इंग्लैण्ड में ही पढ़ाऊँगी। चाहे इसकी वजह से मेरा त्रिलोकी से अलगाव ही क्यों न हो जाय।"

बाबू बंसीधर चुप रहे। वह जानते हैं कि मैंगी और उसके बच्चो से प्यार होते हुए भी वह अब अपनी ब्याहता पत्नी और उसके बच्चों को भी बेहद चाहने लगे हैं। चंपक के प्रभाववश चुन्नो अब बहुत हद तक अपने पति की इच्छानुसार ही आचरण करने लगी है। त्रिलोकी बाबू अब यह समझने लगे हैं कि मैंगी के बच्चो के बावजूद उनका वंश अपनी ब्याहता पत्नी के बेटों से ही चलेगा, इसलिए डेविड के साथ ही वह सोमू को भी उच्च शिक्षा के लिए भेजना चाहते हैं। चमेलो (चंपक) के समझाने से चुन्नो इसके लिए सहमत भी हो गई है पर मन्नो बीबी राजी नही होतीं। मैंगी को बहुत चाहते हुए भी त्रिलोकी अपनी सास और पत्नी को नाराज नही कर सकते। यह सच है कि मैंगी के प्रेम-वश होकर त्रिलोकी बाबू ने पहले अपनी सास के धन से ही उसे फर्नीचर उद्योग की स्वामिनी बनाया था परन्तु उसके साथ ही यह भी सच है कि उन्होने अपनी सास की अमानत में ख़यानत नही की थी। मैंगी और उसके बच्चों के लिए चुन्नो बीबी की मा का जो पैसा उन्होंने निकाला था वह अब मैंगी के फर्नीचर उद्योग को स्वतन्त्र बनाकर सास के खजाने मे लौटा भी दिया है। मन्नो बीबी और मैंगी दोनों ही यह नही कह सकती कि त्रिलोकी बाबू ने उन्हें धोखा दिया या ठगा है, परन्तु त्रिलोकीनाथ स्वयं अपने को भी नही ठग सकते हैं। चुन्नो को चाहते हुए भी उन्हें मैंगी से प्यार है। कानूनन पत्नी न होते हुए भी मैंगी अब मिसेज चोपड़ा ही कहलाती हैं। मैंगी के कारण ही वह अंग्रेज समाज मे अपना प्रभाव जमा सका है। चोपडा के बच्चों की मां होकर इतने दिन एक दूसरे की चाहत मे बिता लेने के कारण मैंगी अब उससे अलग भी नही होना चाहती। पर चुन्नो के बेटे के फेर में वह अपने बेटे का भविष्य भी खराब नही करेगी। न चाहते हुए भी यदि अलग होना ही पड़ा तो यह उसके वास्ते भी अपना मन तैयार कर चुकी है।

मैंगी के द्वारा अलगाव की बात कहे जाने पर कुछ देर के लिए कमरे मे सन्नाटा छा गया। अन्त में बंसी बाबू बोले : "देखो मैंगी, तुम्हें त्रिलोकी का दृष्टिकोण भी समझना ही होगा। उसके मनोभाव दो जगहों पर बंटे हुए हैं। जहां तक तुम्हारे या चुन्नो बीबी के सम्बन्धो की बात है, उसके विषय मे तो मैं कुछ नही कह सकता, मगर जहा तक एक बाप की हैसियत का सम्बन्ध है, मैं खूब जानता हूँ कि त्रिलोकी के मन मे तुम्हारे या अपनी चुन्नो के बेटो के लिए कोई फर्क नही है। मैं जानता हूं, शायद तुम भी इस बात को अपने दिल के भीतर महसूस करती हो कि तुम और तिलोकी एक दूसरे को बहुत चाहते हो।"

"हा, हा, मगर तुम इस बात को क्यों नही समझते, बंसी बाबू, कि मेरी स्थिति

कोरी प्रेमिका सी है और चुन्नो पत्नी है ? लेकिन मैं मां भी हूँ। चंपक, तुम ज्यादह समझ सकती हो क्योंकि तुम भी एक बड़े बेटे की मां हो।"

सुनकर चंपक निमिष भर के लिए झटका खा गयी। फिर तनक कर बोली : "मां जरूर हूँ पर बेटे के हित में भी इनसे अलगाव की बात मैं सोच भी नहीं सकती।"

नारी मनों का द्वन्द्व उभरने से पहले ही बंसी बाबू हड़बड़ा कर बोल उठे : "देखो मैगी, बात अभी अलगाव तक पहुँची ही नहीं है, तुम बेकार ही में भड़क उठी हो। और—और सुनो, इतने बरसों के संग साथ में मैं यह बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम्हें तिल्लोकी से कित्ता प्यार है !"

सुनकर मैगी की आखें छलछला उठीं। बंसी बाबू ने उन आंसू भरी आखों को देखा, नजरें झुकायी, कुछ सोचा और फिर चपक से कहा : "देखो चंपक, मैं सोमू की बहू का गौना लाने की बात पर तो तिल्लोकी को मना लूंगा। तुम चुन्नो बीबी और चाची को इस बात के लिए राजी कर लो कि गौना लाने के बाद वह सोमू को विलायत भेज देंगी। चाहें तो अपनी बहू को भी भेज दें, उनके लिए कौन बड़ी बात है।"

चंपक चुप रही। बंसी मैगी से कहता रहा : "मुझे दुख है, मैगी, कि तुम इतनी सी बात पर इतनी ज्यादह तीखी हो गयी कि—"

"बंसी बाबू, डियर फ्रेण्ड, मुझे समझने की कोशिश करो। मैं तिल्लोकी के साथ अब इतने वर्षों रह चुकी हूँ कि उनके बगैर अपने आपको अब अकेला सोचने में भी दहशत मालूम होती है। मैं उनके बच्चों की मां हूँ, और बेहद तकलीफ के साथ ही मैं इस निश्चय पर पहुँची हूँ कि अगर वे राजी नहीं होंगे तो बच्चों को लेकर मैं भी इग्लैण्ड चली जाऊंगी, फिर हिन्दोस्तान में नहीं रहूँगी और न इंग्लैण्ड जाकर उनके बच्चों को दूसरा बाप दूंगी। मैं तुम हिन्दुओं की सोहबत में रहकर इतनी हिन्दू अब अवश्य हो गयी हूँ; भले ही मेरे भूतकाल की जिन्दगी कैसी भी रही हो।"

चलते समय मैगी अकेले में चपक से लिपटकर रोने लगी, कहा : "चुन्नो से कहो, मेरी जिन्दगी तबाह होने से बचाये। मैं त्रिलोकी को सचमुच प्यार करती हूँ, चंपक, और अगर तुम बुरा न मानो तो मैं यहां तक कहूँगी कि जीजस की कसम, मैं त्रिलोकी को उतना ही प्यार करती हूँ जितना तुम बंसी बाबू को करती हो। चुन्नो से कहो, मैंने इतने बरसों में उसकी जिन्दगी तबाह नहीं की, वह भी मेरी न करे।"

मैगी के जाने के बाद पति-पत्नी में बातें होने लगी। बसी बाबू ने कहा : "तुममें और मैगी में एक बुनियादी फर्क है चमेलो, अपने बच्चों को बेहद प्यार करके भी तुम मेरे लिए उन्हें छोड़ सकती हो। मैगी अपने धन और बच्चों के लिए बेहद प्यार करके भी तिल्लोकी को छोड़ सकती है।"

चपक बोली : "जो भी हो, मगर मैगी बुरे पेशे की होकर भी मुझे अच्छी लगती है। मिजाज से यह घरेलू औरत ही है, बाजारू नहीं। तिल्लोकी बाबू को एक जगह अपनी ब्याहता के बेटे से ज्यादह पक्षपात है। अगर डेविड चला जायगा और सोमू नहीं जायगा तो वह बुरा मानेंगे। तिल्लोकी बाबू चुन्नो से बिगाड़ नहीं करना चाहते। बुढ़ापे में काम आएगा तो अपनी ब्याहता का बेटा ही।"

"नहीं चमेलो, यहां मैं तुमसे अलग राय रखता हूं। मेरे उस्ताद मुंशी हिम्मत बहादुर के बड़े भाई मुंशी शिवबहादुर की एक मुसलमान रखैल थी। बीवी से तीन बेटे, रखैल से एक। बीवी के तीनों बेटे मां-बाप से अलग हो गए लेकिन रखैल के बेटे ने, जब तक शिवबहादुर रहे, उनकी सेवा की और बाद में उनकी ब्याहता बीवी की भी ऐसी खिदमत की कि मैं तुमसे क्या तारीफ करूं ! यह मेरी आंखों देखी बात है। बहरहाल, तुम

चुन्नो बीबी और मन्नो चाची को पटाओ और मैं भी तिल्लोकी बाबू को गौने के लिए राजी कर लूंगा। मंगी को मैं भी पसन्द करता हूं, मगर माफ करना, मैं तुम्हारा और उसका मुकाबला करना पसन्द नही करता। अरे, मंगी तो दूर, अपनी चमेलो से चुन्नो बीबी का मुकाबला करना भी मुझे पसन्द नही आएगा।"

पति के इस पक्षपात पर पत्नी ने ऐसी रीझी हुई दृष्टि से उन्हे देखा कि बंसी बाबू भी नौजवानी के नशे मे आ गए। चंपक के दोनों कंधो पर अपने हाथ रखकर, प्यार से उसे देखते हुए बोले : "क्या बतलाऊं, अपने खोखा को भी मैं आई० सी० एस० की ट्रेनिंग दिलाना चाहता हूं, पर मेरे पास इत्ता पैसा नही है।"

"तुम कहो तो हम चुन्नो की कोठी में अपने जेवर गिरवी रखके -"

"नो-नो-नो। दोस्ती के रिश्ते मे कर्ज का खाता खोलना गुनाह है। तुम्हारी तरह मैंने भी कई बार सोचा कि विपिन से रुपया उधार ले लू, पर मेरी आत्मा ने गवाही न दी। उसके यहां से इतने बरसों से पाच सौ रुपया माहवार आ रहा है, यही क्या उसकी कम शराफत है।" फिर एक निसास ढालकर, बाह हटाते हुए बोला "यही आकर यह महसूस होने लगता है कि तकदीर भी एक शय होती है। लाख तदबीरे करो पर तकदीर के बिना कुछ हासिल नही होता।"

तकदीर चुन्नो के लड़के के मामले मे अचानक और बड़े विचित्र ढग से खुली। आगरे में रहने वाली मन्नो बीबी की सगी छोटी बहन का पोता ब्रिजनन्दन मेहरा अपने शहर के एक अंग्रेज व्यापारी की बेटी से विवाह करके अब उसी परिवार के साथ रहता है। हाल ही में अपनी पत्नी के साथ विलायत गया था। वह किसी काम से लखनऊ आया। ब्रिजनन्दन बचपन मे अपनी दादी और बुआ से मिला था। गदर के बाद लगभग तीन महीनों तक अपनी दादी के साथ वह मन्नो बीबी के घर मे रह भी चुका था। लखनऊ आने पर स्वाभाविक रूप से वह अपनी मन्नो दादी से मिलने की कामना रखता था, उसने पत्र लिखकर भेजा कि आपके घर मेरे आने से बिरादरी मे कोई गडबडी तो नही मचेगी। पत्र चोपड़ा साहब ने पढा, मन्नो बीबी बोली : "अरे, हमरी रम्मो का पोता हैगा, जब्र इत्ता-सा रहा तो हमरे पास दुई-तीन महीना रह भी गया है। अब विलैती मेम से विहाओ कर लिया हैगा तो क्या हम उसके लिए दूसरे हुई जाएंगे।"

उधर बंसी बाबू भी चोपड़ा साहब से सोमू के विलायत जाने के सबध में काफी कह-सुन चुके थे। चुन्नो और चमेलो मे भी बातें हुई थी। चुन्नो ने भी पति से कहा : "अरे बिरादरी से डरैगे तो हमरा काम कहा तलक चलैगा। बिरजू की हमे खूब याद है, हमसे पांच-छह बरस छोटा हैगा। आप उसे खुद जायके अपने साथ लैयो। अरे जब बड़े भैये को विलायत भेजना ही है, तो वहा के कुछ हाल वो जानै-समझै।"

एक दिन ब्रिजनन्दन आए, मन्नो दादी से मिल गए, चुन्नो बुआ से मिल गए, फूफा से भी बडा हेत बढ़ा। भुल्ली लाला को जब इसकी खबर लगी तो उन्हे रोग शैया पर भी जोश आ गया, उठ बैठे, कहा : "रजोले को बुलाओ, अब तो इस हरामजादी को जात बाहर निकाल कर ही मरूंगा, उससे पहले नही।"

बिरादरी की पचायत हुई, और भुल्ली लाला तथा उनके बेटे के जोर-दबाव से मन्नो बीबी, चुन्नो बीबी का घर बिरादरी से छेक दिया गया। "मैं आज बैरिस्टर जॉनसन से मिल आया हू। उन्होने कहा है कि"—कुछ रुक कर बंसी बाबू बोले : "कुइन विक्टोरिया के 'प्रोक्लेमेशन' की बिना पर मुकदमा ठोक दो।"

तिल्लोकी बाबू ने यही किया। सेशन्स जज के यहां मन्नो बीबी मुकदमा हार गईं। पंचायत जीत गई। भुल्लो लाला और उनके बेटे तथा बिरादरी के कुछ अन्य कुछ पुराने

वंशों के प्रतिष्ठित लोग, जो बाबू त्रिलोकी नाथ चोपड़ा और बाबू बंसीधर टंडन की बढ़ोत्तरी से डाह रखते थे, उनके यहां तो सेशन्स जज के फैसले का दिन दीवाली के दिन की तरह मनाया गया। गली-गली चर्चा फैल गई, रजोले गुरु जिस-तिस जिजमान के यहां, गलियों में जहां-तहां लोगों के सामने गरज-गरज कर हाथ उठा-उठा कर कहते : "देख लिया ना इस घोर कलजुग मे भी कैसा दूध का दूध और पानी का पानी जैसा न्याव हुआ है। मल्का टूरिया की सरकार भी धर्म की शक्ती के आगे घुटने टेक कर झुक गयी, महाराज। ये हमारे पवित्र सनातन धर्म के गली-महल्लो मे, गो-ब्राह्मण प्रतिपालक धर्म धुरीण लोगों के बिरादरी में अधर्म फैलाएगे ससरे, नास्तिक कहीं के।"

पान की पीक के मुकदमे मे और अपने बुढ़ौती मे ब्याह रचाने की इच्छा से मात खा जाने वाले लाला भुल्ली मल तो इतने खुश हुए कि तुरंत सारी बिरादरी को भोज दे डाला। केवल मन्नो बीबी का घर छेंका गया और बाबू बंसीधर टंडन के परिवार को भी नहीं बुलाया गया। गुमानी और गनसी महेसो जान बूझकर भोज में नही गए। तनकुन के दोनो बड़े भाई परिवार सहित बुलाए गए थे और यह लोग गए भी। औरतों में चख चख पड़ी।

"हाय रानी, अब क्या हो गया, औ मन्नो बीबी जब मरिहैं तो कौन बिरादरी वाला उनकी मिट्टी में जैहैं ?"

"अरे हमें तो दुसरी फिकिर पड़ी है बुआ जी, हमरी तो सगी छोटी बहिन चुन्नो के बेटे को ब्याही हैगी। उनके हियां से अबही तलक गौने की खातिर नही-नही होत रही और अब तिल्लोकी बाबू ने हमरे बाबू से कहलाया हैगा कि जल्दी मे गौने की तैयारी करो। हमरे अम्मा-बाबू छोटी मुनिया को ससुराल में भेजें तो आफत, न भेजें तो आफत। अब भला बताओ क्या होएगा।"

"हा रानी, ई तो घर-घर मे धरम सकट फैला हैगा। बाकी चुन्नो का लडका तो हमने सुना हैगा कि कोई बहुत बडा इन्तिहान पास किहिस हैगा। और चुन्नो की सौत मेम का लडका तो हम सुना पढन खातिर बिलैत जाय रहा हैगा। हमैं तो ये सुना हैगा बुआ कि चुन्नो का लडका भी कही बिलैत पढै न भेजा जाय। गौना करवाय के फिर हमरी छोटी मुनिया और चुन्नो का लड़का दूनौ बिलैत भेजे गए तो हमरे मैके का क्या हाल होयगा बुआ।"

उधर वंसी बाबू भुल्ली लाला के द्वारा दिए गए बिरादरी के भोज के संबंध में चिन्तित थे और रूढ़िवादियों को अपना थूक चटाने की योजना बना रहे थे। वह त्रिलोकी बाबू को लेकर इलाहाबाद गए, वकीलों से सलाह की और सेशन्स जज के फैसले के विरुद्ध हाई कोर्ट में अपील दायर करवा दी। लौटकर आए तो यह जाना कि पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध कमिश्नरी के शिक्षा विभागों के द्वारा आयोजित एक वाद-विवाद प्रतियोगिता मे देशदीपक ने सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। इलाहाबाद के 'पायनियर' अखबार ने देशदीपक की फोटो भी छापी थी। बंसीधर को अच्छा बहाना मिल गया। अपनी कलकत्ते वाली योजना उन्होने यहा फिर से दोहराई। बिरादरी के कुछ प्रगतिशील और अंग्रेजी पढ़ने वाले युवको को टटोला। 'दि खत्री यंग मेन्स ऐसोसिएशन' बनी। उसकी तरफ से देशदीपक का अभिनन्दन आयोजित किया गया। कलक्टर उसके सभापति बनेंगे पुलिस कप्तान, सेशन्स जज, अवध की दो तीन रियासतों के राजा, सेठ-साहूकारान, हाकिम हुक्काम वगैरह बुलाए जाने की योजना बनाई और उस पर युद्धस्तरीय चिन्ता के साथ कार्य संलग्न हो गए। अभिनंदन समारोह की सफलता चारो ओर चर्चा का विषय बन गई।

बिरादरी के कुछ युवको और कुछ बड़े लोगों के भी इस भोज मे सम्मिलित होने के कारण पंचायत में फिर खलबली मची कि वे घर जो बंसीधर के यहां भोज मे सम्मिलित हो गए हैं, बिरादरी में रहें या बाहर निकाले जाए।

रंग रोगन किए हुए पुराने ताम-झाम पर धोती, अगरखा ऊपर से जरीदार चोगा पहने, पतली बाढ़ की गुलाबी पगडी लगाए, एक गाल पान की गिलोरियों से फुलाए हुए, भुल्ली लाला आठ नौकरो के साथ बिरादरी के एक पच लाला छगामल की हवेली पर गए। छंगामल उमर में छोटे हैं। आदर-सत्कार के बाद छंगामल मानो उनके आने का आशय समझकर बोले : "बड़े भैये मैं तो खुद ही आपके पास आने वाला था। ये साले नए-नए कानून, इनकम टैक्स, हाउस टैक्स—"

"अरे भइये, ये अंग्रेज जो हैं न साले बनिये है—बनिये। वो सात समुन्दर पार अपनी सोने की लंका बनावेंगे कि हमारा दुख सुख बिचारेंगे। और ये हमारे उल्लू के पट्ठे हैं साले जो अंग्रेजी पढ़-पढ के इनकी हा हजूरी मे अपनी कौम, जाती और धरम की हानी कर रहे हैंगे।" मुह के पानों को गालो में फेरकर फिर कहा : "और तो और खुन्नु बाबू के दोनो लड़के क्या अपनी मर्जी से गए थे। बिना बाप की सलाह के वह ऐसी हिम्मत नही कर सकते, मैं जानता हूं।"

"नही बड़े भैये, बात दूसरी है। खुन्नू बाबू के दोनो लडके अब बाबू बंसीधर के असोशेशन के मिम्बर हैं, और उनकी जो शहर भर की कुमेटी है उसमें भी जाते हैंगे। खुन्नू बाबू खुद परेशान हैं, मैं जानता हू।"

भुल्ली लाला ठोढ़ी पर हाथ रखे हुए कुछ देर सोचते रहे, फिर बोले : "देखो भाई, हम या तो रिस्तेदारी और रसूक देखें, या फिर बिरादरी और धरम की रच्छा करें। मेरी राय में अब सरकार का फैसला तो हो ही चुका है, सरकार पचायत के फैसलो को मानेगी इसलिए तुम बेखौफ होकर इन सबको जात बाहर कर दो। ये फैसला किया जाएगा कि हमको खुन्नामल या किसी से भी कोई शिकायत नही, मगर जो उन मलेच्छो की पार्टी में गए उनको हम जात से बाहर जरूर निकालेंगे। और जो उनके साथ रहेगा वह भी निकाला जायगा।"

"मगर बड़े भैये, इनमे से कुछ लोग कहेंगे कि हम तो गए नही, और हमारे घर से अगर कोई गया तो उस पर हमारा क्या जोर है। एक के फेर में सारे घर को क्यो तबाह किया जाए।"

"छंगा, हम जानते हैं कि रिश्तेदारी के कारनें खुन्नामल के लड़कों के मामले की वजह से ही तुम अभी तलक चुप बैठे हो। अगर बडी हमदर्दी है तो खुन्नामल से कहो कि ऐसे लोगों मे पहल करें, अपने बेटो से परासचित करवावें और बिरादरी मे सामिल होंयें। एक आगे वढैगा तो दूसरो को भी बढ़ावा मिलैगा।"

लाला छंगामल गंभीरता पूर्वक बोले : "आप की बात तो ठीक है भैये, कि खुन्नू बाबू के दोनों लडके बंसीधर के रंग मे तो रंगे ही थे मगर अब उस करेले पर दयानन्द की नीम भी चढ गई है। खुन्नू बाबू बिचारे करें तो क्या करें। कुछ भी कहिए अब पैंतालीस बरस से ऊपर ही हैं। दोनों लड़को से लड लें तो बताइए भला उनका गुजारा कैसे होगा।"

"मेरे खयाल से पंचायत तो फौरन ही बुलालो, वरना तुम्हारी ही नाक कटेगी, छंगो। तुम्ही मन्नो बीबी को और मुसद्दी के बेटे को बिरादरी से बाहर निकालने की बखत गरम भए रहे। पहली नाक तो तुम्हारियै कटैगी। हमारा क्या, हम तो धरम पे जान देने को तुले ही है। हम तो लड़के पोतों के माया-मोह से भी बिल्कुल अलग हो चुके हैं। अब पचास बरस की उमिर आई, सोचा था, आखिरी बखत मे दान-पुन्न कर जायेंगे मगर

भगवान को उस धन से अगर धरम और बिरादरी की रच्छा करवानी है तो यही सही। मैं अकेले लड़ूंगा, अभी मेरे पास लाख दो लाख की अपनी निजी पुड़िया अंटी में दबी हैगी वो धरम और बिरादरी की इज्जत के लिए है। हम उस (गाली) मन्नो बीबी, उसके दमाद और मुसद्दीमल के तनकुन की नाकें जड़ से काटेंगे।" कहकर भुल्ली लाला दोनों हाथों को टेककर अपनी भारी देह सम्हालते हुए उठने लगे। छंगामल ने बांह का सहारा दिया और कहा : "नहीं बड़े भैये, आप अकेले ही क्यों लड़ेंगे, मैं पंचायत बुलवाता हूँ। मेरे ख्याल में इस बार प्रोहितजी के घर पर ही पंचायत बुलाई जाय। धरम शास्तरों का बल मिलता रहेगा तो पंचों का हौसला भी बना रहेगा।"

"तो मैं रजोले गुरु को तुम्हारे पास भेज दूं?"

"उन्हें परसों भेजिएगा। कल खुन्नू बाबू और अपनी साली को यहीं जीमने का न्यौता पठाता हूं, उनसे बातें करके फिर फैसला करूंगा।"

बड़े आंगन के दाहिनी ओर बनी एक तिदरी के भीतर कुछ ऊंचाई लिए एक और तिदरी बनी थी जिसकी छत नक्काशीदार पीतल से मढ़ी हुई थी। दो छोटे झाड़ लटक रहे थे, कलमी तस्वीरों की सजावट थी, छंगामल की गद्दी-कोठार सब इसी पर था। नीचे तिदरी में एक तरफ बड़े-छोटे मुनीम और दूसरी तरफ गुमाश्ते बैठते थे। आंगन के बाएं हाथ की तिदरी अनाज के बोरों से लदी हुई थी, और दरवाजे के ठीक सामने वाले दालान में गायें-भैंसें बंधी थीं। छंगामल सीढ़ियों और चबूतरों पर भुल्लीलाला को सहारा देकर बाहर ड्योढ़ी तक लाए। समय के चलने के मुताबिक रुककर मुसलमानी ढंग से सलाम किया। भुल्ली लाला का तामझामी जलूस फिर अपने घर की तरफ चल पड़ा।

भैरों वाली गली में कनछेदी दलाल मिले। दोनों हाथों से झुककर सलाम किया और कहा : "वाह-वाह, धन्न भाग मेरे। इधर से आवना सुफल हो गया। किधर सवारी गई रही आपकी?"

"छंगो के हियां काम था सो गए रहे।"

"मुकदमा तो खूब जीते आप। बिरादरी की नाक तो आपै ने रखी, ताऊ। धन्न हैं आप, वाह वाह। अरे हम तो आपके हियन खुदै आउन वाले रहे। एक जरूरी बात हैगी।"

भुल्ली लाला ने कुछ न कहा, अपनी अधिक सफेद हो चली मूंछों पर धीरे-धीरे ताव देते रहे। फिर पूछा : "कोई खास बात है?"

कनछेदी ने कहा : "बात आपके मतलब की है ताऊ, सुनियै तो खुश हुइ जइयै।"

"तो आओ, हमरे साथ ही चलो।"

अपने चौबारे में गए, नौकरों ने कपड़े उतारे, चिलमची लाकर कुल्ला कराया, हाथ मुंह धुलाए, भुल्ली लाला पलंग पर बैठे। सामने निवाड़ की मचिया पर कनछेदी बैठे। नौकर हुक्का लाने गया, लाला बोले : "अब बताओ, क्या काम है?"

कनछेदी मचिया को और पास खिसकाकर धीमे स्वर में कहने लगे : "छितिआपुर से हमरी सलहज की सगी मौसी अपनी क्वांरी बिटिया लैके हियन आई हैंगी, ब्याहन खातिर।"

भुल्ली लाला ने मूछों पर ताव दिया, उनकी पालथी बंधी थुलथुल काया जोश में कुछ खिसक आई, पूछा : "कित्ती बड़ी है?"

"उमर तो कुछ बड़ी है ताऊ, कोई पंद्रवां सोलवां साल चल रहा हुइयै। उसकी बाईं आंख में फुल्ली हैगी ताऊ, पर खूबसूरत ऐसी हैगी जैसे नवाब वाजिदअली के दरबार की मुरतरी रही। अरे ताऊ, आप से मन का पाप कहूं, कल नहाय के आई तो बालों की

लट से उसकी फुल्ली वाली आंख ढकी रही, देख के हमरे मन मां पाप जगन लगा ताऊ, ऐसी खबसूरत हैगी।"

भुल्ली लाला कुछ देर चुप बैठे रहे, नौकर हुक्का लाकर रख गया। उसी से कनछेदी के लिए पाव भर गरमागरम इमरतियां मंगवायी। जब नौकर चला गया तो कनछेदी से पूछा : "कौन खत्री है ?"

"खन्ने हैं।"

"हम कर लेंगे, कनछेदी। एक बार तुम हमें लड़की दिखाय देओ। और देखो जैसे तुम कहत होगे वैसेइ जुल्फों की एक लट आंख के सामने डलवाय देना, क्या समझे ? पसन्द आय गयी तो इन्ही दुई-चार दिनों मे लगन बिचरवाय के घर ले आऊंगा, क्या समझे ?"

"समझ तो सब गए ताऊ, बाकी आप भी ये समझ लीजिए कि हमरी सलहज की सगी मौसी के पास कुल-कन्या छोड़ कर और कुच्छो नही है। समझे आप ?"

"चिन्ता क्या है। ब्याह का खर्चा सब हम देंगे, बरात नही उठैगी, भीड़-भाड़ नही होयगी, खाली घरै घर के दुइ-चार जने चलेंगे।"

"फिर भी चार-पांच सौ तो लग जइयें तुमरे।"

"ठीक है—ठीक है, तो दिखाने कब ले चलोगे। हम उजागर में तो जाना नहीं चाहते, कनछेदी। दो घड़ी रात बीते, चुपचाप आओ, हम तुम्हारे साथ पैदल ही चलेंगे। कित्ती दूर है ?"

"बहुत दूर नही लाला, बड़ी कालीजी के आगे, नाले के पास।—कोई दूर नही है ताऊ।"

हल्की निःसांस ढील कर भुल्ली लाला बोले : "अरे जिसकी आखो मे कम रोशनी हो उसके लिए तो मुसीबत है भैये। फिर चलने की आदत नही।"

"तो छोड़िए लाला, घनशाम दलाल भी ब्याव करना चहत हैगे, उनसे—"

"नही-नही, मैं चलूंगा तुम्हारे साथ, मगर किसी और को नही लूगा साथ, क्या समझे। तुम्हें ही सम्हाल कर ले चलना होगा।"

"अरे ताऊ, आप कहियै तो हम आपको घुईयां पर लाद के लै चलियें।"

भुल्ली लाला गुस्सा गए, बोले : "अभी इतना बूढ़ा नही हुआ हूं मैं, क्या समझे।"

संयोग से उस दिन शुक्रवार था, मगर भुल्ली लाला ने अपने हरदेव नाऊ को बुलवाया। शाम के तीसरे पहर दाढ़ी बनवाई, बदन में गुलाब की मालिश करवायी, मूंछों और पट्टो पर खिजाब लगवाया, और कपड़े बदल कर बैठक में आए ही थे कि लडके भैयादास ने इनकी तरफ की कुन्डी खटखटाई और नौकर के द्वारा दरवाजा खोले जाने पर भीतर आकर कहा, "तिल्लोकी बाबू ने हियां के फैसले पर हाई कोरट मे अपील कर दी है, बाबू।"

सजे-बजे, गुड्डे से बने बैठे भुल्ली लाला की त्योरिया एकाएक चढ़ गयीं। अचम्भे से कहा : "ये कैसे हो सकत हैगा ? अंग्रेज के फैसले पर अपील साली क्या करेगी। आखिर वो भी अंग्रेज है, अंग्रेजों के बनाए कानून भला अंग्रेज नही जानेगा ? क्या बचपने की बात करते हो लल्लू ?"

"मैं ये सब नहीं जानता मगर ये जरूर जानता हूं कि जात बाहर करने का मामला फिर से खुल गया है और हाई कोरट में गया है।"

"ये हाई कोरट कहां है, इलाबाद में ? तो इलाबाद जाओ, वकील करो दोड़ो घूमो।"

"आपके कहने से यहां जिला जजी मे तो मैंने दौड़-धूप कर ली थी, पर इलाबाद

मुझसे भी न जाया जायगा।"

"तो फिर कौन जाएगा?" भुल्ली लाला कड़क कर बोले।

"अब ये आप जाने और आपका काम जाने। बाकी मैं अपनी तरफ से इलाहाबाद के मुकदमें में कोई दिलचस्पी नही लूंगा और न एक छदाम ही खर्चूंगा।"

भुल्ली लाला के हौसले भरे तालाब जैसे मन पर हाई कोरट की गहरी काई चढ गयी। लड़के ने कहा कि इस बार साथ नहीं दूंगा, इससे और भी झुंझलाहट हुई। अलग हो गया है तो क्या हुआ, पर यह तो बाप-बेटे का रिश्ता भी खतम कर दिया। कल को कहेगा कि जब जीते जी रिश्ता ही खतम कर दिया तो मरने पर तर्पण साला क्यो करू। हमारी आत्मा तो ससरी भूत बनी डोलती रहैगी, ये क्या नाम के पुत्तर हैंगे। अरे मैं नया पुत्तर पैदा करूगा। तुम साले न देओगे, पर वो तो देगा—हुक्का पीते इस पालथी से उस पालथी को बदलते, गद्दे पर बैठे लाला भुल्ली अपने मन ही मन में बहुत कुछ कहते बकते रहे। बीच-बीच मे बांए गाल पर बालो की लटें बिखेरे एक अरूप-रूप की रमणी उन्हें रिझा लेती थी। कनछेदिया साला अभी तक आया क्यो नही? क्या खानदान था मटरूमल का भी। सोने की कोठी कहलाती थी। मगर इन कनछेदिए और इसके बाप बुद्धलाल ने रन्डियो और लौंडों के पीछे लाख का घर खाक मे मिला दिया। खैर, अब मेरे ब्याव का जुगाड ये बैठा दे तो फिर उसकी भलाई की भी कुछ तरकीब करूगा।

उस दिन भुल्ली लाला ने अपने रोज के मुसाहब प्रकार के संगी-साथियो को भी घर मे आने से रुकवा दिया था। अपने खास नौकर भगेलू को यह हिदायत दे रखी थी कि सिवा कनछेदी के और कोई न आये। इसलिए अकेले में अपने मन के देगचे में खुशबूदार खयालो के पुलाव पकाते रहे। शाम का अंधेरा बड़ी मुश्किल से हुआ, रात भी देर से गहराई। सराफे की दुकानें बन्द करके अपने-अपने घरों को लौटने वाली टोलियों की आहटें भी क्रमशः बन्द हो गयीं पर—कनछेदवा साला अभी तक नही आया। साले के लिए पाव भर मलाई और खोए के लड्डू मगवा कर रखे हैं। मन के भीतर इतनी उतावली थी कि वह मानो अपने लिए वधू देखने ही नहीं जा रहे बल्कि लगे हाथो सुहागरात भी मनाने आ रहे हैं।

आखो से कम दिखाई देता है, फिर भी कई बार अपने सलूके की जेब से घड़ी निकाल कर समय देखा। रात के साढ़े नौ बजे लाला कनछेदी लाल पधारे और आते ही घुटने छूकर इस तरह गद्दे पर बैठ गए मानो लम्बे रेगिस्तान की यात्रा करके आ रहे हो।

कनछेदी को देखकर भुल्ली लाला के बदन में फुर्ती तो आ गई, मगर तने तेवरो से रौबीली आवाज मे पूछा: "इतनी देर क्यों लगा दी?"

"अरे ताऊ, बस अब आप से क्या बतलाएं कि इतनी देर में मेरे ऊपर कैसी-कैसी साढ़े सातियां गुजर गयी साली।"

"भगेलू।"

"आया सरकार।"

"हां तो फिर क्या भया?"

"अरे ताऊ, दुपहरिया में जब हम आप के हिया से गए तो हमने सब बात आपकी बहुरिया से बताई, तौ उन्होने बतलाया कि हियन तो सब मामला ही उलट गया है।"

हाथ धुलाने के लिए चिलमची, गडुआ और अंगोछा लेकर नौकर आया, कनछेदी लाल ने हाथ-मुह धोए, कुल्ला किया, फिर चौकी आयी, चौकी पर मलाई और खोए के लड्डू पेश हुए। कनछेदी ने कथा बतलाई कि दिन में नहाकर अपने बाल झाड़ती हुई लड़की छत पै खड़ी थी तो—अपनी छत से टिक्के पहलवान ने उसे देख लओ और आसिक हो

गओ। फिर बतलाया कि हमारे घर आके हमारी सलहज की मौसी से कहा कि हमसे ब्याह कर दो, हम निहाल कर देंगे। और अंग्रेजी अस्पताल मे ले जाके इसकी पत्थर की आख भी लगवा देंगे। और ब्याह के खर्च के अलावा अपनी सास को दस रुपया महीना गुजारे का देंगे।"

सुनकर भुल्ली लाला का रौबीला चेहरा मुर्दे सा सफेद पड गया। कनछेदी बोले : "हमाई सलहज की मौसी ने बस अकलमन्दी की कि कह दओ कि कनछेदी से सलाह करके जबाब देइयें। फिर वो मौसी हमसे बोली कि माना, सौत पे सौत बियाई जैयै पर टिक्के अभी तीस-बत्तीस बरस का जवान है, भुल्लो लाला तो बहुत बूढ़े है।"

भुल्ली लाला का चेहरा कसा, फिर उतरा। फिर कसा, फिर उतरा। कनछेदी कहते रहे "तब हमने कहो कि अरे जो साठा सो पाठा और अभी उनकी उमर तो पूरे पचास की भी नही भई। हमने कहो कि हमरे ताऊ ने एक बार एक पहलवान से बैठे ही बैठे पजा लड़ाओ तो साले की हड्डिया चिटकने लगी। हाथ जोड के कहो, सेठ जी माफ करो। हम समझे थे, खाली बादी के फूले हो। जब ये कही ताऊ तब वो काठ की उल्ली ससरी मानी। हमने कहो कि पत्थर की आख वो भी बनवाय सकत है, तुम्हारे गुजारे के लिए ये दस देगा के बारह देइयें फिर हमने कहो कि पन्द्रा तलक भी दिला देंगे।"

सुनकर लाला को जोश आ गया, बोले "खूब कहा ! अरे मैं रानी की तरह ही रखूगा।"

"हा-हा, क्यो नही, क्यो नही। वो कहावत है न कि बूढे की जोरु बच्चे नही, नखरे तो जन ही सकती है। और ऐसे अभी आप कोई बूढे भी नही, ताऊ।"

"अच्छा-अच्छा, जल्दी-जल्दी खाओ, हाथ धोवो और चलो।"

भगेलू आया। उससे कुर्ता मंगवाया, पहना। कुर्ता इत्रेगिल से महक रहा था। दोनों कानों मे भी उसी की फुरहरियां लगी हुई थी। भगेलू ने उन्हे पगडी लाकर दी, दुपट्टा दिया, छड़ी दी।

सकोरे की मलाई को उगलियों से सूत कर चाटते हुए कनछेदी बोला. "एक सौ एक रोक के रख लीजिएगा ताऊ। सौ-पचास ऊपर से और।"

नौकर के सामने बात न खुले इसलिए कनछेदी को डाट के कहा : "अच्छा-अच्छा, हमे मत सिखलाइए आप। अभी कल के लड़के हो।"

"हां, वैसे हम तो तम्हार लल्लू बाबू से भी दुई बरस छोटे हैगे।"

"अच्छा-अच्छा, जल्दी से हाथ-मुह धोओ, हमे देर होती है।"

"अरे चलत हैं—चलत है ताऊ, ऐसी उतावली भी क्या है।"

चलने लगे। कनछेदी ने ध्यान दिलाया : "ताऊ, चश्मा नही लगाया आपनें ?"

"चश्मे की जरूरत नही।"

"लगा लेते तो अच्छा। गलियो मे अंधेरा है, आपको उजाले में भी बिना चश्में के…"

"मुझे अंधेरे में खूब दिखलाई देता है। चलो-चलो।"

कनछेदी ने मुंह मोड़ कर अपनी हंसी छिपाई, फिर बोला : "आपने छड़ी भी नही ली, ताऊ।"

लाला झुझला गए, डांटा : "चुप रहो। दही मच्छी की बातें करो। चलो सिरी गन्नेस करो।"

ड्योढी से निकलते समय भगेलू बोला : "मैं आपके साथ मसाल लै के चलू सरकार ?"

कनछेदी झिड़ककर बोला : "तुम क्या करोगे ? लोगों को मालूम थोड़ी होना है कि इतना बड़ा आदमी गलियो में पैदल जा रहा है । सहारा देने के लिए मैं क्या कम हूँ ?"

"ठीक है भगेलू, तुम आज ड्योढ़ी पर चौकीदार के पास ही रहोगे, मैं आऊ तो एक आवाज में दरवाजा खोल देना ।"

बुढ़ापे की निशानियां छडी और चश्मे के बगैर चले । कनछेदी जान-बूझकर उनसे दो कदम पीछे रहा । रात का अंधेरा यमराज के भैंसे से भी दसगुना अधिक काला था, हाथ को हाथ पसारा न सूझता था ।

गलियो मे कही-कही कुत्ते भी भौंक उठते । उनसे बचने के फेर में एक पांव नाली में ही फिसल गया, किसी के चबूतरे से कधा टकराया । कनछेदी ने सभाला, बोले : "ठीक हूं । ठीक हू । छोड़ दो ।"

गलिया यो तो मानुस गधहीन थी । भूले-भटके कोई राही खखारते या "राम कहो ।" कहते हुए कतरा के निकल जाता । भुल्ला लाला चलते हुए हाफने लगे । पैदल चलने की आदत भी न थी, पूछा : "तुम तो कहते थे पास है ?"

"अरे, बस दस कदम पर ही है, ताऊ । आप तो हाफ गए ।"

"नही-नही, हाफा नही हू, ऐसे ही सांस ली ।" पर आगे अंधेरे में एक बैठी हुई गाय से टकराकर उस पर गिर पड़े । गाय हुकारी । कनछेदी ने लाला का हाथ पकडा और तेजी से गलियो की भूल भुलैया घुमाता ले चला ।

लाला की सास उखड़ने लगी । राम-राम करके पहुंचे । बैठक में कालीन, गाव-तकिया, एक चिराग । लाला को हाफते छोड़कर कनछेदी भीतर गया । पीछे-पीछे सजी बजी महरी गडुआ चिलमची लिए आई । लाला हाफते-हाफते थम गए। जवानो से तन कर बैठ गए। अपनी कनखियो से महरी ने घायल करना शुरू किया । पैर पकड़कर जूते उतारे । चुल्लू में पानी लेकर पैरों पर डाला और दोनो हाथों से तलवे मीजने लगी । जनाने हाथों की छुवन ने बड़ा काम किया । कनछेदी पखा झल रहे थे ।

महरी भीतर चली गयी । एक तश्तरी मे मिठाई और पानी लेकर आई, कहा : "मालकिन बिटिया को लेके आवत हैं । तब तक मू मीठा करें । एक हमारे हाथ से, सरकार ।"

बदन छू रहा है । मिठाई का टुकड़ा लिए हुए जनाना हाथ होठों तक आ गया है । लाला का बुढ़ापा जवान होने लगा ।

भुल्ली लाला दूसरे दिन सब्जीमण्डी के पास एक खाली घर में फर्श पर बेहोश पड़े पाए गए । उनकी सोने की जेब घड़ी, सोने की अगूठियां और लगभग दो सवा दो सौ रुपए भी गायब थे ।

कनछेदीलाल दो दिन पहले ही टिक्कूमल दलाल के हाथो अपना मकान बेचकर अपनी पत्नी को मशकगंज के खत्री टोले मे अधेली महीने के, भाड़े पर एक घर दिलवा, और चलते-चलते भुल्ली लाला के रंगीले बुढ़मस को ठगकर शहर छोडकर कही बाहर चले गये थे ।

मन्नो बीबी के द्वारा हाईकोर्ट मे अपील दायर की जाने की खबर के साथ तलाशे जोरू मे भुल्ली लाला के इस तरह नीम शहीद हो जाने की खबर ने जमाने भर में उन्हें हंसी का पात्र बना दिया ।

ठगे जाने की इस घटना से बुरी तरह चिढ़कर भुल्ली लाला ने यह प्रचार करवाया कि मन्नो बीबी के दामाद ने ही उन्हें बदनाम करने के लिए यह जालबट्टा फैलाया है । पुरोहित जी को बुलवाया, कहा "पडितो की तरफ से यह फैसला घोषित

कराओ कि बिरादरी के वह सब लोग जो बंसीधर की पार्टी मे गए थे, जात से निकाले जाने के योग्य हैं।"

इन्ही मानसिक तनाव के दिनो मे मुल्लू की महतारी एक दिन लाला के पास आयी। रिश्ता ऐसा कोई खास नहीं, पर दूर के सम्बन्ध से भुल्ली की साली लगती हैं। जीजाजी-जीजाजी करके घर में घुसी और देखते-देखते ही भुल्ली जीजा की सबसे अधिक सगी बन गयी। उनके खाने-पीने का प्रबन्ध सम्हाल लिया, धीरे-धीरे चौबीसों घन्टे वही रहने लगी। कहें कि घर में हमरा कामै क्या है, मुल्लू की जुरुआ अपना सब सम्हालत-सम्हूलत हैं, हमसे क्या। हियन जीजाजी की सेवा कर रहे हैं। मटका जिज्जी तो हमे बहुतै-बहुत मानत रही।

होते-होते स्वर्गीया मटका जीजी की स्थानापन्न मुल्लू की महतारी ने भुल्ली लाला को ऐसा पटाया कि हाईकोर्ट में मुकदमे की दौड-धूप और वकीलो मे सलाह मशविरे करने के लिए मूल नराएन कपूर ही सबसे अधिक उपयुक्त माने गये।

नगर में दयानन्द सरस्वती का प्रभाव धीरे-धीरे बहुत बढ गया था। खुन्नामल के बडे बेटे, सभी वर्णो के लोग, विशेष रूप से नवयुवक और युवा पीढ़ी के लोग बुलाए गए थे। मुख्य भाषण बाबू बंसीधर टंडन का था। सभा हवन और वेदपाठ से आरम्भ हुई। बडे गर्मा-गर्म भाषण हुए, बैकुण्ठनाथ कपूर ने जीवन मे पहली बार भाषण किया था पर वह इतना ओजस्वी और प्रभावशाली था कि चारों ओर वाह-वाह होने लगी। बैकुण्ठो ने कहा . "समुद्र पार करके विलायत जाने मे कोई हर्जा नही, राम जी ने भी समुद्र पार करके लंका पर चढाई की थी। कृष्णजी भी द्वारका में समुद्र के किनारे ही वास करते थे, बीच में म्लेच्छो के हमले के कारण समुद्र यात्रा बन्द हो गयी, मगर अब फिर शुरू हो गयी है। हम नए जमाने की पढ़ाई पढने लगे हैं। परम प्रतापी मल्का विक्टोरिया महरानी के राज में सूरज कभी नही डूबता है, उनके राज मे नौजवानो की उन्नति के लिए नए-नए रास्ते खुल रहे हैं। हम झूठ-मूठ की ढकोसलेबाजी में रहेंगे तो पिछड़ जायेंगे। हमारे पुण्य ऋषियों, महर्षियों का धर्म वह नही था जो ये हमारे आज के पंडित प्रोहित बतलाया करते हैं। हम इस सभा में इसलिए इकट्ठा हुए हैं कि देखें, कितने लोग टोकरी भर तेंतीस करोड़ परमात्माओं को छोड़कर एक परब्रह्म ओंकार स्वरूप को मानने की सच्चाई दिखाते हैं। हम नास्तिक नही हैं, हवन और वेदोच्चार करके परमप्रभु को प्रणाम करते हैं। बोलिए, हमारे कित्ते नौजवान भाई और दूसरे सज्जन हमारी हिन्दू धर्म रक्षिणी सभा के मेम्बर बनते हैं? हमने चंदा कुछ जादे नही रखा है, इकन्नी महीना चन्दा दें और रोज सबेरे हवन और वेदपाठ में शामिल हों। सच्चे धर्म को मानने की प्रतिज्ञा करें। जो भाई राजी हो वे खड़े होकर अपना नाम बतलावें।"

पहले कोई न खडा हुआ, फिर एक, दो—अब तीन, होते-होते आठ सदस्यो ने अपने नाम लिखाये जिनमें तीन ब्राह्मण, तीन खत्री और दो कायस्थ थे। धर्म रक्षिणी सभा में प्रतिदिन प्रात काल पाच बजे से सात बजे तक नियमित रूप मे हवन और वेदपाठ होने लगा। गलियों में धर्म को लेकर एक नयी चाल चली। इन दिनों की गर्मागर्मी ने केवल बाबू त्रिलोकी नाथ को ही नहीं, बल्कि उनकी सास श्रीमती मन्नो बीबी को भी बुरी तरह से भड़का दिया था। और उसी भड़क-भड़क में चंपकलता ने उन्हें गौने के बाद अपने दोहते को विलायत भेजने के लिए राजी कर लिया, कहा : "अब तो हम सब लोगों को बिरादरी से बाहर कर ही दिया है चाची, जब उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई! सोमू को बिलायत जरूर भेजें। विलायत पास होके बडा हाकिम बन के आएगा तो आपकी महिमा भी दस गुनी और बढ जायेगी। कलक्टर कमिश्नर तक हो सकता है। और कोई न कोई तो

बिरादरी में पहल करेगा ही। तुम्हारी बहन का लड़का तो विलायत ही नहीं गया, मेम से ब्याह भी कर लाया।"

चाची बोली : "ब्याह तो निगोड़े ने पहले ही कर लिया था, विलायत तो ससुर के खर्चे से गया। हां यह बात जरूर है, जब इन रांडो के पूतो ने हमे जात बाहर किया ही है तो हम बबुआ को बिलैत भेज के इनसे बदला काहे न लें। हमरे बबुआ बिलैत से कलेक्टर, कमिश्नर हो के आवेंगे, तब इन मरो की नाक चोटी कटाय के अपना कलेजा ठंड करूंगी।"

सोमनाथ चोपड़ा के विलायत गमन के अवसर पर हिंदू धर्मरक्षिणी सभा ने एक विराट् आयोजन किया। हवन हुआ, वेदपाठ हुआ, सोमनाथ के प्रति मंगल-कामनायें करते हुए संस्कृत, हिंदी और उर्दू मे कविताएं पढी गयी।

हाईकोर्ट की अपील मे मन्नो बीबी की जीत हुई और बिरादरी की पंचायत हार गयी। इस मुकदमे मे बिरादरी का चंदा तो बहुत कम आया था, अकेले भुल्ली लाला के ही पन्द्रह हजार रुपए स्वाहा हो गये। मुल्लू ने कहा : "असल मे यहां के अंग्रेजो पर बाबू बंसीधर और बाबू तिल्लोकी नाथ की मेम का बड़ा असर हैगा। आप को मालूम है, पियर्सन साहब जज को तिल्लोकी बाबू की मेम फलों और मेवों की टोकरी मे दस हजार के नोट छिपाये दै आयी रही। इलाहाबाद मे वकील-अकील सब लोग यही कहत रहे मौसा कि बिरादरी जो प्रीवी कौन्सिल में अपील करे तो जरूर जीतेगी। प्रीवी कौन्सिल की मोहर पर विलायत के बादशाह तक की मोहर भी नहीं लग सकती, मौसा।"

कुछ काम मुल्लू ने किया, कुछ मुल्लू की महतारी ने अकेले मे पटाया। भुल्ली लाला की बूढी कामनाएं प्रीवी कौसिल मे अपील दायर करने के लिए फिर से जवान हो उठी।

संयोग से उसी दिन शाम की गाड़ी से सोमनाथ विलायत के लिए विदा होने वाला था। बाबू बंसीधर ने विदाई के अवसर के लिए मिलिट्री बैंड अपने खर्च से बुक कराया था। मन्नो बीबी ने शहर के जितने पंडित थे उन सबको बुलाया। दिन-भर यज्ञ, पूजा-पाठ भोज होता रहा, ब्राह्मणो ने अच्छी दक्षिणा और सुस्वादु भोजन से संतुष्ट होकर खूब आशीर्वाद वर्षण किया। जो लोग मन्नो बीबी के साथ ही जात से निकाले गए थे, वे तथा उनके समस्त परिवारो को भी आमन्त्रित किया गया था। दिन भर रोशनचौकी बजती रही। मन्नो बीबी की हवेली पर दिनभर धूमधाम रही, मानो बिरादरी के चौधरियो को ठेंगा दिखा-दिखा कर चिढा रही हो। और तीसरे पहर तक तो नक्शा ही बदल गया। हाईकोर्ट से मन्नो बीबी मुकदमा जीत गयी थी, बिरादरी के बहुत से लोग जो पंचो के डर से अब तक नही आये थे, मुकदमे मे पंचायत की हार सुनकर आने लगे। शाम को सोमनाथ के घर से बिदा करने के अवसर पर एक खासी भीड़ जमा हो गयी थी। गलियों में शोर मचा हुआ था कि मन्नो बीबी का दोहता विलायत पढ़ने जा रहा है।

यह सब सुन-सुनकर भुल्ली लाला मन-ही-मन और भी तन गये। हाईकोर्ट मे हार की खबर सुनकर भुल्ली लाला के पुत्र लल्लू उर्फ मैयादास और उनकी पत्नी ससुर के 'घर' आए। पुत्र तो अलग की गयी दीवार के अंदर भी प्रवेश कर गये किंतु बहूजी दरवाजे पर ही खड़ी रहीं। लल्लू बाबू ने अपने पिता को और उनके साथ ही साथ लपेट मे मुल्लू की महतारी के वास्ते कटुवचन कहे। बहूजी भी आड में रहकर कहने लगीं : "पैसा लुटाय रहे हैं, बहाय रहे हैं। भले घर की रंडी पे ऐसे निछावर हुए हैं कि—"

लाला अपना कमरा बंद किये बैठे सुनते रहे, मुल्लू की महतारी के रोने-बिसरने आदि नखरे सम्हालते रहे किंतु बाहर उनकी आवाज न निकलने दी और न खुद ही

निकाली। दबे स्वर में मुल्लू की महतारी से बोले : "ये लल्लू और बहुरिया ने आज जैसा मेरी आत्मा को कष्ट पहुंचाया हैगा उससे तो मुझे नफरत हुई गई। तुम्हारे खिलाफ क्या-क्या जहर उगला हैगा इन लोगों ने। मेरे कलेजे में एक-एक बात बरछी सी लगी है। और अब तो मैंने ठान लिया है प्यारी, कि मैं ये प्रीवी कौसिल वाला मुकदमा जीत जाऊं तो अपनी हवेली का ये हिस्सा और अपने हिस्से की सारी जमा-जथा मुल्लू के नाम लिख जाऊंगा।"

बूढ़े आशिक माशूक एक दूसरे को तसल्लिया देने मे व्यस्त हो गये। उन्होंने बाहर की बातें सुनना ही छोड़ दिया।

19

बीतते पूस की रात। कड़ाकेदार सर्दी पड़ रही थी। ऊपर से बरसात ने और भी अधिक सितम ढा रखा था। बंसीबाबू ने अपने नये बगले 'चपक मैंशन' मे अग्रेजो के घरो की तरह ही कमरों को गर्म रखने के लिए चिमनीदार चूल्हे बनवा रखे थे। उन 'फायर प्लेसों' में लोहे की विलायती मिगड़िया भी लगवा रखी थी। बाबू साहब के सोने के कमरे के बगल में ही उनके दफ्तर का कमरा भी था और दोनों ही कमरे चारों तरफ से बंद और 'फायर प्लेस' की आग से गर्म थे। रेशमी फर्दं में लिपटी हुई चंपक की नीद आज उड़ी हुई थी, मन किसी हद तक खिन्न था और खिन्नता का कारण अर्थ की चिंता थी। खोखा इस साल यहां पास हो जायेगा। चंपक की इच्छा है कि, चुन्नी और मैंगी के बेटों की तरहही उसका बेटा भी विलायत मे ही ऊची डिगरियां पास करे, और आई० सी० एस० बनकर आये, पर रुपयों का प्रबंध नही हो पा रहा है। चंपक की राय यह थी कि इस समय विपिन भैया से दस हजार रुपया उधार ले लिया जाय, बाद मे कुछ पति के वेतन से और आगे फिर कुछ बेटे की कमाई से भी थोड़ा-थोड़ा करके, आठ-दस वर्षों में उधार पाट दिया जायेगा। परतु बाबू बंसीधर को इस प्रस्ताव पर आपत्ति थी। इतने वर्षों से विपिन उसे, बराबर पाच सौ रुपया महीना भेज रहा है, उसका यह एहसान ही बहुत अधिक है। अब और अधिक एहसान न लेगा। लेकिन अपने एकमात्र पुत्र को बिलायत की ऊची शिक्षा दिलाकर किसी ऊचे पद पर प्रतिष्ठित कराने की इच्छा उनके मन में भी बहुत तीव्र रूप से चल रही है। पति-पत्नी दोनों ही इन दिनो इस गुप्त चिन्ता में मन-ही-मन व्यस्त रहते हैं।

दफ्तर के कमरे में टंगी हुई विलायती घड़ी ने साढे नौ का घंटा बजाया। चंपक को अपने लिहाफ की गर्मी अब खलने लगी, बगल का पलग अभी तक खाली ही पड़ा था। न रहा गया, उठी, खूटी पर टंगी दुलाई उठा के ओढी और दफ्तर के कमरे मे चली गई। आठ बत्तियों वाले मोमबत्तीदान की रोशनी मे बाबू साहब मेज के पास बैठे हुए कोई पुस्तक पढ रहे थे। चंपक उनकी कुर्सी के पास गयी, कहा : "क्या पढ रहे होंगे?"

"कुछ नही, अक्ल को इल्म की मेवा टुंगा रहा हूं।"

"अब कल टुंगा लेना भाई, साढे नौ बज गये हैं। सबेरे चौक जाना है, कल बौआ का सराध है।"

"अरे हां, यह तो मैं भूल ही गया था। मगर एक बात है, मेरे जाने से साले बिरादरी वाले कुछ चिख-चिख करेंगे।"

"कोई चिख-चिख नही करेगा, घबराओ न, अरे हम लोग क्या कोई बिरादरी से बाहर हैंगे। आधी बिरादरी तो हमरे साथ है।"

"हमरे नही, हमारे बोला करो यार, अब तुम पढ़ी लिखी संतानों की मा हो।"

चंपक झेंप गयी, कहा : "अरे, जनम भर की आदत है, मुंह से निकल ही जाता है। चलो उठो भई, अब साढे नौ बज गया है।"

कुर्सी पर बैठे-बैठे ही बंसी बाबू ने एक अंगड़ाई ली और फूंक से रोशनी बुझा दी। सोने वाले कमरे की धुंधली रोशनी तब भी आ रही थी। बत्तियां गुल करके कुर्सी से उठते हुए बाबू साहब बोले : "तिल्लोकी को पढने का शौक तो है नही पर दिखावे के लिए लायब्रेरी ऐसी शानदार बनाई है कि रश्क होता है।" सोने के कमरे मे आकर बंसीबाबू ने 'फायर प्लेस' की अंगीठी मे लकडी का एक कुन्दा और डाला। चंपक बात का जवाब देने लगी, बोली : "अरे बडे लोगों का दिखावा हम भला कहां तक कर सकते हैं। चुन्नो के यहां तो भगवान की दया से पहले ही चार पीढ़ियों की जमा भरी हुई है, ऊपर से हमरे तिल्लोकी बाबू चारो तरफ से कमाय रहे हैंग। रखैल के लिये अलग कमाउत हैंगे, घरवाली के लिये अलग।"

लिहाफ को चारों तरफ से समेटते हुए बंसी बाबू ने कहा : "अरे, त्रिलोकी तो अपनी रखैल और घरवाली दोनों ही को खुश कर लेता है। और मैं अभागा अपनी इकलौती, अनमोल, घरवाली को —"

"हटो, ऐसी बात अब फिर कभी मुंह से न निकालना। देवी मैया ने तुम्हारी बदौलत मेरे भाग में भला क्या कुछ कम सुख दिया हैगा। अरे, वह लखपती हैं तो अपने घर में अच्छे रहें। मेरे पति भी विद्यापति हैं, किसी से कम नही हैंगे। सहर मे, हजूर दरबार मे, जैसा मेरे पति का नाम और आदर है, वैसा हमरी बिरादरी भरे में और किसी का नहीं है।"

पति की प्रशंसा में कही गयी बातों का स्वर जोश मे कुछ ऊंचा उठ गया था। बंसी बाबू को अपनी पत्नी की यह गर्वोक्तिया बहुत सुहायी। फिर भी मन मे एक संकोच था, जो भावुकतावश उनके मुख से फूट ही पड़ा, बोले : "देवी सरस्वती की महिमा को मैं तनिक भी कम नही मानता हूँ, फिर भी चमेलो, यह तो तुम भी मानोगी कि लक्ष्मी जी का प्रताप और चमत्कार कुछ और ही होता है। तिल्लोकी अपने दो-दो लडको को विलायत भेज सका, जबकि मैं अपने एक बेटे को भी अपनी मर्जी के मुताबिक नही पढ़ा पा रहा हूँ। ईश्वर जानता है चमेलो, मैं अपना वह दु.ख तुम तक जाहिर नहीं कर पाता। मेरा खोखा उन दोनों लड़को से कहीं ज्यादह तेज है।"

दो पलंगों के बीच में चुप्पी की दूरी और निकटता दोनों एक ही साथ अनुभव कर रहे थे। निकटता थी सहदु खानुभूति की और दूरी शाब्दिक उत्तर की थी। अंत मे बंसी ने ही बाहरी सन्नाटा भंग किया, बड़े दर्द भरे स्वर मे बोला : "हालांकि मैं अपने नजदीकी रिश्तेदारों और दोस्तों के एहसानात अब और नही लेना चाहता, फिर भी तुम्हारी कसम चमेलो, जी चाहता है कि अपने बेटे की तरक्की के लिए अगर विपिन से नही तो तिल्लोकी से ही कुछ उधार ले लूं। इंग्लैण्ड मे मेरे खर्च का बोझ कम हो जायगा, खाली ये जहाज मे आने-जाने का किराया ही—"

"इंग्लैंड में कैसे कम पड जायेगा ?"

"वहां विन्काट—अपना गोल्डी है। अंग्रेज होकर भी करोड़ों हिंदुस्तानियों से बेहतर दोस्त और इसान है। जोखा के लिए विलियम कोई ऐसा-वैसा काम भी तलाश कर सकता है, जिससे पढाई के साथ-साथ उसकी आमदनी भी होती रहे। तुम कहो तो मैं सात हजार रुपयों के लिए तिन्लोकी से बात चलाऊ।"

चंपक उर्फ नमेलो को यह प्रस्ताव अधिक पसन्द न आया, बोली : "हम उनसे काहे उधार लेने जांय। अरे, मेरे पास मैके का दिया हुआ गहना है, उसे बेच के अपने बेटे को पढ़ा सकती हूं।"

गहने बेचने का प्रस्ताव बाबू बसीधर के लिए रुचिकर न था। उस पर चपक की चोट पडी, बोली : "मेरा गहना तो तुम हो। तुमरे दिए, भगवान के दिए ये बच्चे मेरे हीरे मोती हैंगे।—"

"अच्छा-अच्छा, अब सो जाओ, कल और गहरा विचार करेंगे। पहले मैं तुम्हारे बेटे का मन तो टटोल लू। आजकल उसके मिजाज सातवें फलक की सैर कर रहे हैं। मैंने उसे अच्छा हिंदुस्तानी बनाने के लिए अंग्रेजो के कुछ सस्कार दिलवाये थे, और अब वह मुझे हिंदुस्तान की महानता पर लेक्चर देता है।"

चिरंजीव देशदीपक टडन इन दिनो सचमुच ही वडी अन्यमनस्कता भरे दिन गुजार रहा है। बचपन से उसका मन विचित्र तरीके म गति कर रहा था। ऐसा लगता है, मानो उसका एक पैर धरती पर और दूसरा शून्य अधर मे पडता है। धरती है अंग्रेजी साहित्य, विचार, आचार, और अधर मे है भारत की प्राचीन महिमा और अपनी संस्कृति का ऐश्वर्य बोध। देशदीपक भारतीय माता-पिता की सन्तान है, भारतीय है, परन्तु अपना भारत केवल दूर से देखे जाने वाले तमाशे की तरह ही उसके अनुभव मे आता है। भारत उसके लिए केवल किताबो में पढने वाली एक वस्तु मात्र ही बन सका है।

और दूसरी ओर इग्लैंड खास तौर मे तथा योरोप अमेरिका आदि, उसकी चेतना मे आम तौर मे मानवीय उन्नति के चरम केंद्र बनकर समाये हुए हैं। उसके मन में शुरू से ही यह विचार डाले गए हैं, कि तुम्हें अपनी और अपने देश की उन्नति के लिए अंग्रेजों का अनुसरण करना चाहिए। शिक्षा, कला, विज्ञान, साहित्य आदि सभी उन्नतिशील शक्तियों का केंद्र इंग्लैंड है। इंग्लैंड जाकर ही कोई भारतवासी अपने स्वरूप को सटीक समझ पा सकता है। बचपन से पिता, कभी-कभी मां और विशेष रूप से अपने अंग्रेज गुरुओ के परिवारो की संगत के कारण वह सोचता था कि इंग्लैड जाएगा पर पिछले कुछ महीनो मे वह यह अनुभव करने लगा है कि उसके माता-पिता इतने अमीर नही है। उसे विलायत भेजने के लिए उन्हें किसी से रुपया उधार लेना पड़ेगा, किंतु यह उसे पसंद नही। इसी कारण उसका मन दुचित्ता, कुछ-कुछ चिडचिडा भी हो गया है।

सुबह जब नाश्ते की मेज पर टडन परिवार बैठा तब वर्षा समाप्त हो चुकी थी, बादल धीरे-धीरे फट रहे थे। घडी के हिसाब मे ठीक सुबह आठ बजे टडन परिवार नाश्ते के लिए भोजन कक्ष मे एकत्र हो जाता था। बाबू साहब बहुत से अंग्रेजी कायदो के बेहद पाबद थे। खोखा ने देखा, आज मेज पर चीनी का एक प्लेट-प्याला तक नही है। कलई की हुई तश्तरियो मे देशदीपक और प्रभा के लिए नमक-अजवाइन पडी छोटी-छोटी खस्ता पूरिया, आम का कुचला और मुरब्बा रखा था और बीच मे मेवे की एक तश्तरी। पापा के सामने रखी हुई मेवे की तश्तरी चांदी की थी। बुद्धूराम दूध के तीन गिलास एक थाली मे रखकर लाया, चादी का गिलास घर के मालिक के सामने और मुरादाबादी कलई के खोखा और प्रभा के सामने रख दिए।

पापा का गिलास देखकर खोखा बोला : "आज आपने चॉकलेट नहीं लिया पापा ?"

"आज तुम्हारी दादी का सराध है न ?"

"तो चॉकलेट का सराध से क्या संबंध है। दे आर सिम्पली बीन्स, प्योर वेजिटेरियन।"

"हा, मगर वह विदेशी चीज है भई।"

"तो क्या हुआ ?"

"सराध का दिन हम हिंदुओ में बहुत पवित्र दिन माना जाता है।"

प्रभा बोली : "अच्छा-अच्छा, तभी आज यहा कोई विलायती चीजें नहीं रखी गयी। न प्लेटें—"

खोखा बोला : "अजब है आप लोगों की लाजिक, भला चीनी की प्लेटो मे क्या अपवित्रता आ गयी ?"

चंपक बोली : "वो कैसी भी हों, हैं तो मिट्टी की ही, और हमारे यहा मिट्टी के बरतन एक बार ही इस्तेमाल करके फेंक दिए जाते हैं।"

मेवा टूगता हुआ खोखा हंस पड़ा, बोला : "तो इन प्लेटों को क्यों रख लेती हो मां, तुम्हारा धरम नही बिगडता होगा।"

"जब तुम्हारे पापा को वही पसंद हैं, तो फिर मेरा धरम कैसे बिगड़ सकता है ? फिर इतनी कीमती-कीमती प्लेटें रोज तोडें तो खर्चा कहां से लायेंगे।"

प्रभा बोली : "मां, आज पापा को पूरियां क्यों नही दीं !"

"आज मेरी माता की बरसी है, समझती हो, जब तक उनके नाम के बाम्हन, बाम्हनिया नही खा जायेंगे, तब तक घर वाले भला कैसे खा लेंगे।"

"तब तो हम लोगों को भी नही खाना चाहिए था।"

"हां, पुराना कायदा तो यही था, मगर समय को देखते हुए कुछ-न-कुछ तब्दीलियां तो होती ही हैं। बच्चो और काम-काजी लोगों को खिला दिया जाता है, ताकि बाम्हन जीमने तक तुम लोग एकदम भूखे न रहो।"

"अच्छा-अच्छा, खाओ, जल्दी करो, आज हमें अपनी ससुराल जाना है।"

"ओह, मां की ससुराल भी है। मानो हमारा चौक वाला घर।"

प्रभा बोली : "अच्छा पापा, मान लीजिए कि हमे तब तक भूख लग ही आये, तो क्या हम ब्राह्म्णी और ब्राह्म्णो के आने से पहले फल खा सकते हैं ?"

चंपक झट से बोली : "बहस करने की बात नही, श्रद्धा की बात है। श्रद्धा हो तो बिल्कुल मत खाओ। साल भर मे एक बार पुरखो की आत्मायें अपने घर मे आती हैं, उनका पूरा सत्कार करना चाहिए। अगर एक दिन भूखे रह भी लिए तो क्या हो गया ?"

प्रभा सुनकर अपने भाई की तरफ देखने लगी, फिर कहा : "दादा-दादियां तो अपने बच्चो को बार-बार खिलाते हैं भाई साहब, है ना ? फिर हम लोग अपनी दादी के श्राद्ध के दिन कम क्यों खायें ?"

खोखा बोला : "अरे, खूब खाओ। खाना तो जीवन का लक्षण है, सिर्फ मुर्दा लोग ही नही खाते। हमारी दादी अब खाने नही आयेंगी, हां उनके नाम पर यह सराध के ढकोसले जरूर होंगे।"

चंपक तमक कर बोली : "ये ढकोसले नही, धर्म है। अपने पुरखों के लिए हमें आदर दिखलाना ही चाहिए। क्या तुम अपने मां-बाप को आदर नही दोगे ?"

खोखा ठंडे किंतु दृढ स्वर मे बोला : "मैं आप लोगों की खूब सेवा करूंगा, क्योंकि

मेरी समझ में यह धर्म है। लेकिन कुदरत के कानून से जिस दिन आप लोग नही रहेंगे, उस दिन फिर आप लोगों के नाम पर सराध करना मैं अधर्म समझता हू।"

मां के चेहरे पर क्रोध की तमक आयी, पिता पुत्र को चौंक कर देखने लगे। फिर तश्तरी से एक बादाम उठाते हुए उन्होने शात स्वर मे पूछा : "तुम धर्म से क्या मतलब समझते हो, खोखा ?"

"सबसे पहली बात तो यह है कि मैं मन्दिर, मस्जिद या गिरजाघर को धर्म नही समझता। यह सब चीजें धर्म के नाम पर कमाने वालो के ढकोसले हैं। इसी तरह मैं पंडितों, मौलवी-मुल्लो और पादरियो को नफरत की निगाह से देखता हूं।"

मां बोली : "तुम ब्रह्म को भी नही मानते ?"

"मैं माता-पिता को ब्रह्म मानता हू मा, लेकिन तुम्हारे देवी-देवतो की मूर्ति में मुझे ब्रह्म बिल्कुल नजर नही आता। जिस ब्रह्म से जातिया छोटी, बड़ी या मलेच्छ बना दी जाती हैं, उस ब्रह्म से मैं नफरत करता हूं।—ठहरो, ठहरो, मां, मुझे अपनी बात कह लेने दो। जो विचार या काम मुझे सच्चाई से जोड देता है और मेरे मन मे ऐसे खूबसूरत विचार लाता है जो मेरी रूह को, मेरी आत्मा को—मतलब यह है कि मेरी 'स्पिरिचुएलटी' को पवित्र बना देता है, वह शायद ब्रह्म हो सकता है।"

बाबू बंसीधर के चेहरे पर संतोष का भाव झलका, बोले : "स्वामी दयानन्द भी तुम्हारी ही तरह मूर्ति-पूजा के खिलाफ है। और मैं भी यह तस्लीम करता हूं कि किसी खास अंदरूनी वजह से या यह कह लो कि पुराने सस्कारो के कारण देवी-देवताओं की पूजा अर्चा में मेरा विश्वास जरूर है और मैं उसे छोड़ नही सकता। कलकत्ते का 'ब्राह्मो मूवमेन्ट' और अभी हाल में स्वामी दयानन्द के प्रवचन भी मूर्तियो से मेरा विश्वास नही हटा सके। मुसलमान भी अगर मूर्तियां नही तो कब्रें पूजते हैं, ईसाई तो खुले आम अपने गिरजाघरों में क्राइस्ट और मेरी की मूर्तिया रखते ही हैं, भले ही वे उनपर लोटा भर पानी न चढाते हों। मगर ये सब होते हुए भी मैं तुम्हारी राय से इत्तफाक रखता हूं, खोखा, कि धर्म या मजहब आजकल हमारी सोसायटी में निकम्मा हो गया है, इंसान को इसान से अलग कर रहा है। यह मेरे लिए तकलीफदेह है।"

चंपक इस बीच मे दो बार कमरे से बाहर गयी। बसी बाबू की बात सुनकर उन्हें बहुत अच्छा नही लगा था और अपनी ब्राह्म सहेलियों की सगत मे भी कभी-कभी वह ऐसी बातें सुनती थी, फिर भी कुछ-कुछ नाराजी भरे स्वर में ही बेटे से पूछा : "तो तुम चौक नही चलोगे ?"

खोखा मुस्कराकर बोला : "जरूर चलूंगा मां। मेरी दादी के नाम पर ब्राह्मण, ब्राह्मणिया इतना माल हड़प करेंगे, फिर हम अपना हक क्यो छोड़ें। इसके अलावा भी मुझे कभी-कभी चौक जाना अच्छा लगता है।"

प्रभा ने पूछा : "क्यों ? मुझे तो बहुत गंदा लगता है, छोटी-छोटी कीचड़ गोबर भरी गलियां, नालियों पर टट्टी करते हुए छोटे-छोटे बच्चे, बुरी-बुरी गालियां बकने वाले लोग। और घरों मे तो गंदगी ऐसी है कि मेरा तो वहा जी ही नही लगता।"

नाश्ते के बाद कुर्सी से उठते हुए खोखा बोला : "जो भी हो, मैक्समूलर का भारत अगर मुझे कही मिलेगा, तो उन गलियों और गांवों मे ही मिलेगा।"

चंपकलता अब भी जब कभी चौक मे आती है तो सैकडों नजरें उसकी ओर आप ही आप उठ जाया करती हैं। उच्च वर्ण की भारतीय महिलाओ में वह अब भी अकेली बेपर्दा स्त्री है। इसके अतिरिक्त वह सड़क पर सवारी से उतरकर गलियो मे कभी भले घरो की आम स्त्रियों के चलन के अनुसार डोली पर नही गयी। पीठ पीछे थोड़ी बहुत

कटूक्तियां करने के बाद भी लोग श्रीमती चंपकलता टण्डन के प्रति आदर भाव ही दिखलाते हैं।

प्रभा और चंपक तो भारतीय वेष-भूषा में थी, लेकिन देशदीपक अंग्रेज बना हुआ था। बड़के तायाजी का बेटा परतब्बे घर के मुख्य द्वार से निकलकर खुशी-खुशी कही जा रहा था। चाची और चचेरे भाई-बहन को देखकर उसके चेहरे की चमक चौबाला हो गई। झुक के चाची के पैर छुए और कहा : "वाह चाची, बड़े सुभ महूरत में तुम्हारे चरन कमल छूने का मौका मिला। पचास रुपये का मुनाफा लेने जा रहा हूं।"

"कहां मुनाफा हो रहा है, बेटा ?"

"ये सब आन के बताऊंगा, चाची। साहब बहादर, तू चल मेरे साथ, तुझे मजा दिखाऊंगा।" कहकर परतब्बे ने खोखा का हाथ पकड़कर खीचा।

"अरे कहा ले चलियेगा, बड़े भैये ?"

"अबे चल तो सही चोंधट। तूने उस दिन चौक को इंडिया कहा था, आज तुझे इंडिया मे असली इंडिया दिखाऊंगा, चल-चल।" कहकर उसका हाथ पकड़कर तेजी से घसीटता हुआ कटारी टोले की तरफ चल दिया। परतब्बे के मां-बाप अपने हेडमास्टर भाई और उसकी पत्नी से भले ही खार खाते हो, लेकिन परतब्बे अपने चाचा के परिवार से बहुत हेल-मेल रखता था। अक्सर उनके यहां आता-जाता भी रहता है। रस्ते मे खोखा बोला : "बड़े भैये, कहां से मुनाफा कमाने जा रहे हैं ?"

"प्योर इंडियन बिजनस किया है भाई डियर बिरादर, पनाले में पचास रुपये बहते हुए आये हैंगे, क्या समझे ?"

"पनाले मे रुपये बहते आये, ये क्या पहेली है बड़े भैये ?"

परतब्बे ने हंस कर बतलाया, कि कल रात जब घटायें घिरी, तो हम लल्लू मे शर्त बदने गये थे। मैंने कहा पनाले बहेंगे, उसने कहा नही बहेंगे, थोडी बूंदा-बांदी ही होगी। पनालों से पतली धार बहने की शर्त नही रहेगी। मैंने कहा कि मेरे गुरु का ज्ञान पतली धार बहाने को पनाला बहना नही बताता, जम के पानी बहेगा। इस पर लल्लू अकास के तरफ नजर उठाय के बोले कि अच्छा चलो, इत्ता मान लिया कि घडी दुई घड़ी की बरसात है। अबे, हमने कहा, उल्लू, तेरे गुरु ने तुझे कच्चा ज्ञान सिखलाया है। पानी दो पहर बरसेगा, मैं पचास रुपए की शर्त बदने आया हूं।—औ बरसा कि नही तुम्हे बताओ, अब साले से पचास रुपए वसूल करूंगा।"

छोटी कालीजी के आगे वाले मैदान में बडी चहल-पहल थी। तम्बू वाले के आदमी लम्बा-चौडा शामियाना लगा रहे थे। हुल्लड का वारापार नही था। कुछ मजदूरो का, कुछ तमाशबीन लड़कों का शोर, बांस बल्लियो की उठा-धराई की झटक-फटक, मचान की बनावट की ठोका-पीटी, कही खम्भे गाड़े जा रहे हैं, उन पर रंगीन पट्टियां लपेटी जा रही हैं। काम के बीच मे घुस आने वाले लडको और कुत्तो की मां बहनो के साथ शाब्दिक सम्बन्ध स्थापित करके उन्हे भगाया जा रहा है। वहां जितने भी काम हो रहे हैं, उनमे प्राकृतिक और अप्राकृतिक रति से सम्बन्धित शब्द सहज भाव से मुहावरों की तरह से बोले जा रहे हैं। खोखा ने अंग्रेज लड़को के मुख से भी भद्दी गालिया सुनी हैं। किन्तु इन हिन्दुस्तानी गालियो ने उसके मन मे एक अजीब सी सनसनाहट भर दी। मैदान मे गली के किनारे की तरफ सिरकी का मोढा डाले हुक्का गुड़गुड़ाते हुए चुन्नू पहलवान बैठे हुए बीच-बीच मे उन्हीं गालीयुक्त मुहावरों के साथ मजदूरों को आदेश भी दे रहे थे।

"जै राम जी की लाला।"

"जै राम जी की, अरे भई परतब्बे, आना जरूर। कम्पू से बुलाये हैंगे हमने, कलगी

वाले भी, तुर्रे वाले भी। लखनऊ से बनारसी गुरू और कम्पू से बादल मियां आय रहे हैंगे अपने-अपने अखाड़ों को लेके।"

"अरे वाह पहलवान, चौक में तो बस तुम्हारे ही दम का जहूरा है, बाकी सब घास कूड़ा है।"

रस्ते में परतब्बे ने बतलाया कि ये चुन्नू पहलवान लखपती आदमी हैं और इन्हें खयाल, लावनी के दंगल कराने का बड़ा शौक है। हर साल हजार-बारह सौ रुपये इसी शौक में उड़ाते हैं, कभी आगरे के, कभी कानपुर, कभी खुर्जा के नामी खयाल कहने वाले और गाने वाले दोनों ही तरह के उस्ताद बुलाते हैं, खूब खातिरें करतें हैं। लावनी खयालों के सम्बन्ध में बतलाते हुए परतब्बे बड़े जोश में आ गया, बोलाः "अरे इनके ऐसे जोरदार दंगल होते हैं, ऐसे-ऐसे फटके होते हैं कि मजा आ जाता है। ऐसी सायरी इंग्लिस क्या इंग्लिसों के बाप भी नही कर सकते हैं। आज शाम को, रुक जाना यही पे। साले अरबी में सुनायें, फारसी में सुनायें, संस्किर्त में सुनायें, अंग्रेजी मे भी सुनायें। नौ-नौ जबानो में खयाल लेते हैं, कौन साला अंग्रेज कर सकेगा।"

लल्लू के चबूतरे पर इस वक्त रौनक थी। एक काबली पठान बीच में बैठा था और ताव से कह रहा था: "खो, तुम हिन्दुस्तानी घास खाने वाला केया खाके हमसे शर्त बदेगा। हम ये छह अनार एक के ऊपर एक रखके एक मुक्के से तोड़ सकता है। तुम हिन्दुस्तानी नहीं तोड़ सकता, तुम घास खाता है।"

लल्लू के बाप बोले: "अच्छा तोड के दिखाओ।"

"तोड़ देगा, मगर इसका रूपी कौन देगा। पंज रूपी लेगा हम।"

लल्लू के पिता बोले: "देंगे, देंगे तोड के तो दिखाओ। नीचे तक के अनार खिलने चाहिए।"

इसी समय परतब्बे और देशदीपक पहुचे।

पठान ने उसी समय एक पर एक छह अनार रखकर एक ही मुक्के में छहों खिला दिये। फिर तपाक से बोला: "तुम घास खाने वाला काफिर लोग ऐसा कर सकता है? लाओ पंज रूपी लाओ लाला।"

देशदीपक जोश में आ गया। आगे बढ़ा, बोला: "छह के बजाय आठ अनार रखो।"

पठान ने उसकी तरफ देखा, मुस्कराया, "चेखुश, तुम अंग्रेज बच्चा है?"

"जी नही, हिन्दू बच्चा हूं। अनार रखिये, आठ रखियेगा।"

भीड़ के आस-पास के लोग चौंक कर कोट-पतलून धारी, गोरे तरुण को देखने लगे। खोखा ने एक ही मुक्के में आठों अनार खिला दिये। भीड में वाह-वाह मच गयी। पठान ने उठकर सलाम किया, और लल्लू के पिता से कहा: "लाला, अब हम इसका रूपी तुमसे नही लेगा। ये सब का सब अनार इस जवान का वास्ते हैं।"

देशदीपक ने और लल्लू के पिता ने भी उस पठान को रुपया देना चाहा, मगर उसने इन्कार किया। "खो, हम पठान बच्चा है, बात का सच्चा है। खुदा हाफिज!"

बात जरा सी थी, मगर हुल्लड़ सात महल्लों मे मच गया कि हेडमास्टर के बेटे ने काबुली पठान को मात दे दी। अंग्रेजी पोशाक वाला तरुण खत्रियो के ही महल्ले में नायक बन कर चमक उठा। बेटे की खूबियों के ही बहाने बाप का बड़प्पन भी बखाना गया। आश्चर्य तो यह था कि पर्दा न करने वाली निर्भीक चंपकलता के लिये भी आदर-सूचक शब्द कहने वाले कुछ लोग निकल ही आये। परतब्बे ने लल्लू से अपनी शर्त के पचास रुपये वसूल किये और बड़े गर्व के साथ अपने अंग्रेज से लगने वाले भाई के हाथ में

हाथ डाले घर लौटा। जीते हुए अनार सब बच्चों में बांटे गये।

भूल भुलैयों सी टेढ़ी मेढ़ी गलिया, जिनमें लट्टूदार पगड़ी, इमेठनदार पगड़ी, सादी पंडिताऊ पगड़ी, वाजिदअलीशाही चाल की दोपलिया, चौगोशिया, और गोटे की कामदार टोपियां, उल्टे सीधे लपेटे गये मुडासे, रुई के सलूके, लम्बे-लम्बे रुई के चोगे पाजामे, धोतिया, अंगोछे पहने, भरे पूस माह के जाड़े में भी खुली धूप का आनन्द लेते हुए नंग-घड़ंग, लंगोटेधारी, सभी तरह के लोग देख डाले। नजरबाग क्षेत्र सन्नाटे भरा है, वहां रईस लोगों या अंग्रेजी पोशाक में हिंदुस्तानी अफ़सर लोग तो नजर आ जाते हैं लेकिन इतनी विविधता उसे देखने को नहीं मिलती है। धोती-चादर या ओढ़नी, लहंगा पहने हुए स्त्रियां गली में ऐसे लहराते हुए चलती हैं कि जैसे पानी भरा चूता हुआ डोल दाए से वाए और बांए से दायें पानी की लकीरें बनाता चलता हो।

घर पहुंचे। बाबू बंसीधर उर्फ तनकुन आ चुके थे। आज माता का श्राद्ध था इसलिये सभी भाई और उनकी स्त्रियां और बच्चे घर के उसी भाग में उपस्थित थे जहां उनके माता-पिता रहा करते थे, और जो अब गुमानी के पास है। बाम्हनियां जीम रही थीं, औरतों का भम्भड़ तीसरी मंजिल में था। सब भाई बैठक में बैठे हुए थे। छुटके बोला: "तनकुन, तुमरी बजह से तो भुल्ली ताऊ का दिवाला ही निकल गया।"

"मैंने क्या किया छुटके भैये, मगर पहले ये बताइये कि मुल्लू विलायत से इनका कितना माल काट के लौटा है?"

गुमानी बोले: "अरे अभी कहां लौटा है, आवें वाला हैगा। लुटवाय दिया बुड्ढे को। वो साली मुल्लू की महतारी जो है न, वो अव्वल दर्जे की छिनट्टी है। और मुल्लू ही कौन साले अपने सगे बाप के बेटे हैंगे।"

बडके बोले: "कुछ भी कहो, पर भुल्ली लाला का बुढ़ापा बर्वाद हो गया। लड़के बहू तो उनमें ऐसे खार खाये बैठे हैं कि ये मरने पड़ेंगे तो वो लोग इन्हें तुलसी, गंगाजल की एक बूंद के लिए भी तरसाय देंगे। मुल्लू सरऊ लौटें विलायत से उनको मैं निकलवाऊंगा बिरादरी से। एक बिचारे शरीफ आदमी को लाख से खाक कर दिया इस माँ बेटे ने।"

बंसी बाबू मन ही मन सोचने लगे कि यही बड़े भाई कल उनके विरोध में भुल्ली को भड़का रहे थे। और आज जब वह विलासी बुड्ढा अ.नी बुढभसिया वासनाओं और दम्भ भरी मूर्खता के कारण कौड़ी-कौड़ी का मोहताज हो रहा है तब बड़के और छुटके भैये तथा उनके जैसे कितने ही झूठे शुभाकांक्षी उनका साथ छोड़कर अलग हो रहे हैं।

शाम के साढ़े चार-पांच बजे तक घर की औरतों का खाना-पीना निपटा। बंसी बाबू, चंपक और प्रभा तो नजरबाग लौट गये किन्तु खोखा को परतब्बे ने रोक लिया, चाचा से कहा: "आज लखनऊ और कम्पू के कलगी तुर्रे वालों के अखाड़े लड़ेंगे। चुन्नू पहलवान बड़ी जोर का दगल कराय रहे हैं। हम साहब बहादुर को आज अपना इण्डियन तमासा दिखावेंगे, इंग्लिस तो ये रोजै देखते हैं।"

"खयाल-लावनी? अरे भाई, उसके दगल देखे तो हमें भी कई बरस हो गये। (खोखा से) जब कई चंगें एक साथ बजती हैं तो हजारों की भीड़ में 'लिटरली पिन ड्राप साइलेंस,' हो जाती है, तो दोनों पार्टियां पोयट्री में लड़ाई करती हैं। खयालों से खयाल लड़ते हैं।"

"तनकुन चाचा, तब फिर आप भी आज यहीं रह जाइये। मजे से...."

"नहीं बेटे, सुबह जल्द दफ्तर जाना है। हां, खोखा रुकना चाहे तो रुक जाय। उनकी तो क्रिसमस की छुट्टियां भी आज से शुरू हो गई हैं।"

खोखा रुक गया।

मैदान में बड़ी भीड़ थी। डेढ़ दो हजार से कम आदमी वहा न था, और बराबर आते ही जा रहे थे। जगह-जगह चना जोर गरम वालो की बानिया हो रही थी, लौज, पिरावड़ी और भुने हुए मसालेदार चने बेचने वालो का हुजूम भी कम न था। 'जल-ठंडा जल पियौ' सर्दी का मौसम होने पर भी कुछ पानी-पांडे अपने डोल लिये बैठे गुहार मचा रहे थे। मचान के आगे कुछ ऊंचे और कुछ मंझोले काठ के पीतल मढे खम्भे लगाये गये थे, जिनके सिरों पर तांबे के बडे-बड़े कटोरे रखे थे। उनमे रेंड़ी का तेल भरकर बिनौले के वत्ते जलाये गये थे। हर दो खम्भों के बीच में एक आदमी दियो की रोशनी सम्हालते रहने के लिए तैनात था। परतब्बे और गुमानी का बेटा काशी खोखा को साथ लेकर आये थे। आगे बड़े लोगों के बैठने के लिए खास प्रबन्ध था। सूट-बूट धारी देगदीपक अपनी पोशाक की विशेषता के कारण सैकड़ो की भीड़ मे अलग ही लगता था। उसे कभी न देखने वाले भी अनुमान से पहचान गये कि तनकुन हेडमास्टर का बेटा है। उसकी अनार तोड़ने की तारीफ ने भी दिन भर मे उसकी और उसके अग्रेजी, फारसी के विद्वान पिता की कीर्ति में अब तक चार के तिगुने चांद जुड़ चुके थे। परतब्बे और काशी भी इस समय खोखा के कारण कुछ कम महत्त्वपूर्ण न थे। खास लोगो के बैठने की जगह मे उन्हे भी बिठलाया गया।

मंच पर दोनों तरफ हाथ में चगं लिए हुए कलगी और तुर्रे वाले खयालगो बैठे हुए थे। उनके पीछे ही बड़ी-बड़ी अगीठियो पर चग गर्माये जा रहे थे। चुन्नू पहलवान ने अपने साथी संगाती सम्भ्रान्तों से 'अग्या' लेकर दंगल शुरू कराया। चगें एक साथ बज उठी। खोखा को अपने पापा की बात याद आयी, चंग नाद ने जनरव को पूरी तरह से सोख लिया। तुर्रे वालों मे एक भगुआ लुंगी धारी, भरे जाड़े मे भी खुले बदन, सफेद, बुर्राक दाढ़ी वाले बुजुर्ग, रानी कटरे के बनारसी गुरु ने हनुमान जी की तरह वीरासन पर बैठकर चग बजायी और गणेश वन्दना आरम्भ की—

"लाडले गिरिजा के दीजे आज सकट टाल जी,
लाज रख लीजे गजानन आज शंकर लाल जी—"

फिर गुरु ने अपनी गर्वोक्ति ललकारी—

"दर्द हो दुश्मन के जब, दंगल में मेरा छंद हो,
दुम दबा भागे अदू मुंह बन्द हो, मुंह बंद हो।
दाद दिल की मिले हो बाहार मिसरा कन्द हो।"

इसके आगे 'दौड़' शुरू हुई······

दिया दर्शन आके ब्रजचन्द्र, दानपुन होने लगा दुचन्द,
द्रव्य को लुटा रहे हैं नन्द, देखि जिनका इकबाल बुलन्द···

'साखी', 'दौहे' 'रंगतें', 'जवाबी गाने', 'दो जबानी,' 'चार जबानी' 'खयाल', 'फटकेबाजी' आदि तरह-तरह की विधाओं में खयाल होने लगे। एक शायर, ने ललकार कर कहा: "साहेबान, अब चार जबानों की 'समक' सुनिए। इसमे फारसी, मरैठी, अंगरेजी और हिन्दी भाषा के शब्द इस्तेमाल किये गये हैं। सुनिए—

"माई डियर तोबिया शोक भंजन हुण सानूं, कुल अल हमें,
मोर जियरवा इकड़े झाला चपो बखद सारकी सनमा"

वाह-वाह की धूम मच गयी। दूसरे ने सात जबानों का खयाल सुनाया। फारसी, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू आदि भाषाओं में चार-चार पंक्तियां सुनाकर जार, ख्वार, प्यार आदि शब्द हिन्दी पंक्ति के साथ अन्त मे आ जाते थे। अंग्रेजी की पंक्तियां सुनाते हुए खयालगो महोदय ने विलायती सूट-बूट धारी देशदीपक की ओर देखकर कहा : "साहेबान, यह मेरी बड़ी खुशकिस्मती है कि जबाने इंग्लिशिया में खयाल पेश करते बखत हमारे बीच में हमारे शहर लखनऊ के रुकन याने मोती जैसे चमचमाते हुए आलिम जनाब हेडमास्टर साहब बंसीधर बाबू के साहबजादे तशरीफ रख रहे हैं। उनके लिए खासतौर से इंगरेजी जबान में अरज करता हूं, मुनिये--

"मिस्सी बाबा यू कम नियर,
आई कालिंग यू माई डियर।
इफ यू लौ मी, आई आलसो शैल,
लौ इज बैरी यूनीवर्सल,
नो इण्डियन नो इंग्लिश यार,
यू कम नियर हम कर लें प्यार।"

जनता भाषा समझी हो या न समझी हो, 'हेडमास्टर' के बेटे को सबने देखा हो या न देखा हो, मगर उसकी उपस्थिति की सूचना के साथ ये पंक्तियां वाह-वाह के शोर से हीरे जवाहरों की तरह मढ़ गयी। खयाल पर खयाल हो रहे थे। टेकों पर टेकें हो रही थीं, समां बंधा हुआ था। तुर्रे वाले अपनी और कलगी वाले अपनी-अपनी गर्वोक्तियों की घोषणा करके खयाल पढते थे तो समा बंध जाता था। कभी-कभी किसी भाषा के शब्द को लेकर आपस मे बहस भी छिड़ जाती, उसके लिए, दोनों पक्ष अपने-अपने पुराने बस्ते और लीथो में छपे हुए उर्दू लुगात और एक नागरी शब्दकोष लिए बैठे रहते थे। बड़ी चांव-चांव, झाव-झांव भी होती थी और कहकहों के फव्वारे भी छूटते थे। कानपुर के मशहूर खयालगो बादल मियां ने फटकेबाजी शुरू की और तुर्रे के उस्ताद बाबा बनारसी की ओर देख कर कहा :

"यह किधर से आयी घटा किधर से पानी,
दो जवाब इसका आप जो हो गुरु ज्ञानी।"

बूढ़े बाबा बनारसी ने इस सवाल का वह जवाब दिया कि महफिल ठहाकों से गूंज उठी, ऐसे कहकहे लगे कि पास पड़ोस के घरो मे सोते हुए छोटे बच्चे चौंक कर रोने लगे। बाबा बनारसी का जवाब था --

"पढ़-पढ के फाजिल हुए राह न जानी,
बादल की············बरसता पानी।"

खयालों की महफिल देर तक चलती रही, पर खोखा का जी अब उखड़ चुका था,

परतब्बे से बोला : "बड़े भैये, चलिए। अब नीद आ रही है।"

बाहर निकलते हुए काशी ने पूछा . "तुमको मजा नही आया खोखा भैये।"

"काशी, मजा तो आया मगर इसमे कुछ भौंडापन भी था। फिर भी ये जरूर कह सकता हूं कि बुद्धि और कल्पना की दौड़ के लिए यह मनोरंजन बहुत अच्छा है।"

"अरे अभी तुमने देखा ही क्या है। बच्चे हो, जब आखों से इण्डिया के भट्टा ऐसी खुल जायेंगी। अब तो कानपुर वाले नौटकियां भी यहां लाते है, ऐसा नगाडा बजता है दम-दमादम दम-दमादम—ऐसी आशिक माशूकी की शेर-शायरी होती है कि दिल साला बासो बल्लियों उछल पड़ता है।"

परतब्बे की बात पर काशी ने भी ठेका लगाया : "चौक, चौक ही है भैये। जिन्दगी के सारे मजे तो वही हैं। खोखा भैये ने कभी रण्डियों के मुजरे न देखे होंगे।"

"ये रण्डियां क्या होती हैं, काशी ?"

परतब्बे और काशी दोनों ही हस पडे। परतब्बे ने खोखा की पीठ पर हाथ थप-थपाते हुए कहा : "अभी नाबालिग हो, धीरे-धीरे समझ जाओगे।"

खोखा का मन इन बातो से क्रमश. पहेली भरा हो चला। उसे भारतीय जीवन देखना चाहिए, अच्छा भी बुरा भी, तभी वह मैक्समूलर के बखाने हुए भारत का सच्चा रहस्य पा सकेगा।

20

लुकई माली बगीचे की क्यारियों में लगी घास-फूस नोच रहा था, तभी फाटक खुला और खाकी वर्दी और नीले साफे में एक चपरासी ने आकर फाटक खटखटाया : "तार ले जाइये साहेब।"

"को आय हो ?"

चहारदीवारी के कोने की क्यारी में काम करते हुए लुकई ने फाटक की ओर बिना देखे ही आवाज फेंकी।

"तारवाला !"

"हम तो ससुर तार-ऊर मंगावा नाही रहे, यू कहां से आय गवा तारवाला।" बड़बड़ाते हुए खुरपी छोड़कर उठा, फाटक पर आया : "कहां से आये हो ? यहा कोई तार-ऊर नाही मंगवाइए।"

"ये बाबू बंसीधर टण्डन की कोठी है कि नही ?"

"उनकी नही तो का तुमरे बाप बनवाइन रहै ?"

"तमीज से बात कर बे, कलकत्ते से तार आया है। ये लो और इस पर दसखत करा लाओ।"

लुकई ने आश्चर्य से लिफाफा और कागज लिया, फिर लिफाफे को चारों कोनो

से दबाकर कहा : "ई मा तो कोनो तार-वार नाही है, तुम हमका असई का पलवा समुझाय रहे हो।"

"अमा दिहाती बुच्च हो सरऊ, ये तार की चिट्ठी है, जाओ जल्दी से साहब से अन्दर दसखत करा लाओ।"

लुकई ने एक बार फिर चौंक कर तार वाले को देखा, लिफाफा और कागज लिया और बड़बड़ाया : "का जमाना आय गवा है यू अंग्रेजी राज मां। तारौ ससुर चिट्ठी बन गयी।" लॉन और बरामदा पार करके 'डरैन रूम' (ड्राइंग रूम) में पहुंचा। बुद्धू कुर्सियां झाड़ रहा था। "अरे बुद्धू, यू तार की चिट्ठी आई है साहेब के नाम, अब साहब तो हैं नहीं दसखत को करी ?"

"छोटे सरकार ऊपर कमरा मां हैं, लाओ हम उन्हें दिखाय लाइत है।"

"उई ससुर ई कागज पर दसखतो मागिस है।"

"अरे लाओ हम सब करायें लाइत है। ईमा ससुर तार-ऊर तो बंधा नाहीं है, फिर तार की चिट्ठी कहा से भयी ?" कहते हुए बुद्धू अन्दर चला गया।

थोड़ी ही देर मे खोखा दौड़ता हुआ आया, और मां से लिपट गया: "मां-मां, मैं पास हो गया, अव्वल दर्जे मे! कलकत्ते से विपिन मामा का तार आया है।"

चंपक का चेहरा चमक उठा, बेटे को कलेजे से लगाकर उसका कपाल चूमा और कहा : "तुम्हारे पापा सुनेंगे तो बहुत खुश होंगे। अरे बुद्धू, तार वाले को ये इनाम दे देना। भैया अव्वल दर्जे मे पास हुए हैं।"

नहाने की कोठरी से बाहर निकलते हुए प्रभा बोली, "भाई सा'ब फर्स्ट डिवीजन मे फेल हुए होंगे, पास होने की खबर गलत है।"

"आ तो सही, तेरा गला दबा दूं। तू फर्स्ट डिवीजन में फेल बतलाती है।"

"मैं भाई सा'ब के फेल होने की खुशी में साड़ी जरूर लूंगी मां-- तुम्हारी जैसी मुर्शिदाबादी।"

"फेल-फेल करती है नालायक, और ऊपर से साड़ी भी मांगती है। ले साड़ी-ले साड़ी !" कहकर खोखा ने प्रभा की पीठ पर दो घूंसे लगा दिये। प्रभा आंय-आंय कर ही रही थी कि बंसी बाबू आ पहुंचे।

खोखा ने दौड़कर उनके पैर छुए। मां ने गर्व से आगे बढ़कर तार देते हुए कहा : "विपिन भैया का तार है। मेरा खोखा फर्स्ट आया है।"

तार पढ़कर बेटे को कलेजे से लगाते हुए बाबू साहब ने अपनी पत्नी से कहा : "खोखा क्या मेरा बेटा नहीं है ?"

"तुम तो फारसी में फर्स्ट भये थे, मेरा बेटा तो अंग्रेजी में भया है।"

"भया है नहीं, हुआ है कहो, सलीस जबान बोलो। अब तुम फर्स्ट क्लास लड़के की मा हो।"

"तो अभी तक क्या नहीं थी ? मेरा बेटा हर साल फर्स्ट आता है और अबकी तो मैं जाफत करूंगी जाफत।"

"ठहर जाओ, कल तक कलकत्ते के रिजल्ट वाले अखबार भी आ जायेंगे। तब आप ही शोर मच जायगा। अब तो इसे मैं पढ़ने के लिए इंग्लैण्ड भेजता हूं।"

"मैं इंग्लैण्ड नहीं जाऊंगा, पापा।"

"क्यों ? अरे, जब चुन्नो का लड़का गया है तो मेरा क्यों नहीं जायगा ?"

"नहीं, मां मैं जानता हूं कि इंग्लैण्ड की पढ़ाई का खर्च उठाने की सामर्थ्य हमारी नहीं है।"

बंसी बाबू हौसले मे बोले : "अरे, मैं कर्ज लूंगा और तुम्हे ऊंची से ऊंची तालीम दिलवाऊंगा। अभी तो मेरी नौकरी के पन्द्रह बरस हैं। कर्ज पट जायेगा।"

"मैं कर्ज से नही, अपने खर्च से कभी इग्लैण्ड जाऊंगा।"

मा का मुंह उतर गया था, बोली : "तो यहा तू क्या पढेगा?"

"मैंने सोच लिया है पापा, हिन्दुस्तान मे हिन्दुस्तानी डाक्टरो की बहुत सख्त जरूरत है। मैं एल० एम० सी० या एल० एम० एस० पढ़ूगा।"

"हिन्दुस्तान में अभी अंग्रेजी दवाओ का चलन नही चल पायेगा, बेटा। यहा धर्म का मामला बहुत टेढ़ा है। म्लेच्छ की दवायें खाकर··· ।"

"अरे पापा, माफ कीजियेगा, हमारी हिन्दुस्तानी जेनरेशन अब बहुत बदल रही है। नई पीढी मे अब बेहद फर्क आ गया है। बगाली परामानिक की प्रेक्टिस चल रही है कि नही? दो चार घरों मे अंग्रेज सिविल सर्जन भी आ चुका है।"

मा बोली : "मगर डाकटरी पढ़ने मे इत्ती इज्जत कहा है जित्ती आई० सी० एस० बनने में है?"

"अरे हा, तुम देखती चलो, अभी हिन्दुस्तान के नक्शे मे बहुत उलट फेर होगा। आगे का हिन्दू आज के हिन्दू जैसा दकियानूस नही रहेगा।"

मा पूजा घर में चली गयी, प्रभा बाल सवारने के लिए अपने कमरे मे गयी। पिता-पुत्र भीतर के आंगन के तखत पर ही बैठे रहे। बंसी बाबू ने कहा : "इच्छा तो मेरी यही थी कि तुम आई० सी० एस० बनो।"

"नही पापा। उधार लेकर नही पढ़ूगा, आगे अगर आपके आशीर्वाद से मेरी प्रेक्टिस चल गयी तो एक-आध डिग्री इंग्लैण्ड से भी ले आऊंगा।"

"ठीक है, तो मैं तुम्हारे विपिन मामा को लिखे देता हूं, तुम एल० एम० सी० मे भर्ती हो जाओ।"

"मैं कलकत्ते में नही पढूगा।"

"सोच लो, कलकत्ता भारत की राजधानी है। दूसरे, तुम्हारे विपिन मामा···।"

"उन्ही की वजह से तो मैं कलकत्ते नही जा रहा, पापा। उनका बहुत-सा एहसान हमारे ऊपर चढा हुआ है।"

सुनकर बाबू साहब कुछ झुंझला गए, बोले : "यह तो मैं अपने मिजाज से मजबूर हूं जो उनका एहसान मानता हू। मेरी ही वजह से वो आज करोड़पती बना है। अगर उसने या रामचन्दर चाचा ने अपने बिजनेस मे मेरा एक छोटा सा हिस्सा जोड़ दिया तो कौन सा बडा एहसान कर दिया। हां, यह जरूर कहूगा कि जब तुम्हारी मां ने मुझे उन से कर्जा लेने को कहा तो मैंने मना कर दिया था। तिल्लोकी बाबू से कर्ज लेने की सोच रहा था।"

"लेकिन मैं कर्ज लेकर नही पढूंगा पापा और मामा की वजह से ही मैं कलकत्ते में नही पढना चाहता। लाहौर जाऊंगा।"

"लाहौर? हां, है तो ठीक, मगर वहां चूंकि हमारी किसी से जान-पहचान नही है, इसलिए···।"

"यह सब अपने आप हो जाती है, पापा। लेकिन मैंने बहुत दिनों से मेडिकल प्रेक्टीशनर बनने का ही निश्चय कर रखा है। अगर अमीरों से पैसा सूता तो गरीबों की सेवा भी उससे कर सकूंगा।"

पिता पुत्र मे फिर कोई बात न हुई। दूसरे दिन कलकत्ते से अखबार आने पर साथ ही इलाहाबाद के 'पायनियर' अखबार मे भी अवध कमिश्नरी और पश्चिमोत्तर प्रदेश के

छात्रों का परीक्षाफल घोषित किया गया था। देशदीपक ने विज्ञान और अंग्रेजी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की थी और अपने क्षेत्र मे वह प्रथम श्रेणी मे पास होने वाला एक मात्र छात्र था। शहर मे धूम मच गयी। "तनकुन फारसी में आलिम फाजिल भए रहे, उनका बेटा अंग्रेजी में आलिम-फाजिल हो गया।" लोग बधाई देने के लिए आने लगे। खत्री यंग मैन एसोसिएशन ने देशदीपक के सम्मान में एक बहुत बड़ा जलसा किया। प्रेरणा चोपडा जी की थी, परन्तु खर्च उठाने का होसला दिखाया लाला खुन्नोमल ने। जलसे के बाद दावत और महफिल भी होगी, जिसमे खत्रियो के अतिरिक्त अन्य दूसरी बिरादरियो के गणमान्य लोग भी बुलाए जाएंगे।

सभा मे नयी चाल की प्रथा क अनुसार अंग्रेजी मे चोपड़ा जी ने 'एड्रेस' पढा और देशदीपक तथा उसके पिता बंसीधर की भी बडी प्रशंसा की। खुन्नामल की कोठी से लगे हुए मैदान में ही बहुत शानदार शामियाना, कनात लगाकर अंग्रेजी चलन के अनुसार कुर्सियां बिछाकर सभा की गयी थी। सभा के अन्त मे लाला खुन्नामल जी के वड़े लड़के ने सबसे हाथ जोड़कर महफिल मे चलने की अर्दास की। लाला की हवेली के विशाल आंगन को मुगल दरबार की तरह सजाया गया था। ऊपर सुन्दर चदोवा ताना गया था और झाड़-फानूस लटकाए गए थे। आंगन के बीचो-बीच मखमली मसनद, तकिया आदि सजाया गया था। आगे साज रखे थे, एक जोड़ गुलाबपाश, एक जोड़ फूल चंगेर, एक खासदान, एक इत्रदान, इलायची मसाले का एक चौघड़ा, पान की तश्तरी और डमरू की आकृति का एक बड़ा सा उगालदान भी रखा था। महफिल की सजावट मे बड़े-बड़े आईने जगह-जगह टांगे गए थे जिनसे महफिल बेहद शानदार लग रही थी। पंछियो के पिंजरे भी टांगे गए थे। रात के दो बजे के बाद एक ओर पछी चहकते तो दूसरी ओर बाई जी। समां बंध गया। महफिल और ज्योनार साथ ही साथ हुई। महफिल में पहले भांड़ों का तमाशा हुआ ताकि बच्चे वगैरह सो न जाएं। फिर कई तवायफों का नाच हुआ।

नृत्य के उपरान्त गायन आरम्भ हुआ। ठुमरी, गजल आदि के साथ बाई जी भाव भी बतला रही थी। भांड़ों और रंडियों की बड़ी नोंक-झोक चलो। भांड़ रंडियो को झेंपाते थे और रंडियां उन्हें करारा जवाब देने की ताक में रहती थी। नृत्य करते हुए एक वेश्या का रूमाल अचानक गिर गया। भांड़ ने शोर मचाया, "हुजूर, बाई जी के अंडा हुआ।" तवायफ ने चट से जवाब दिया, "ऐ हुजूर देखिए, अंडा पलकर बोलने लगा है।"

जब यह सब हो चुका, तब पक्के गानो की बारी आई। बनारस की तोकी बाई, लखनऊ की अच्छनबाई आदि प्रसिद्ध तवायफों के गानो की बारी आई। कानपुर की गायिकाएं भी थी। संगीत रसिकों के लिए महफिल मे सवेरे की भैरवी तक रस गंगा बहती रही। लाला खुन्नोमल ने बड़ी मौज के साथ अपने एक स्व० इलाहाबादी संबंधी मोनीशाह कपूर और उस समय की सरनाम गायिका 'रहिमन बाई' की एक बड़ी ही रोचक कथा सुनायी। मोनीशाह जी बड़े सौभाग्यशाली थे। धन, मान, प्रतिष्ठा और गुण इन चारों पदार्थों का विपुल वैभव उनके पास था। इसके अतिरिक्त, कहा जाता है कि उन्हें देवी की कृपा से गान विद्या स्वयं सिद्ध थी। वे अपने समय के गायनाचार्यों में माने जाते थे। रहिमनबाई उर्फ रहीमवाली भी गाने मे सरनाम थी। दोनों का मन एक दूसरे से मिल गया और फिर तो यह हालत हुई कि एक के बिना दूसरे को कल ही नही पड़ती थी। होते-होते दोनों एक प्रकार से पति-पत्नी की भांति ही रहने लगे। एक बार उन्होंने आपस मे यह तय किया कि दोनों में से जिसका अन्तकाल पहले आ जाए, तो दूसरा उसके सिरहाने बैठकर शोक और लोक-लाज सब छोड़कर संगीत-नाद सुनाए।

दोनों में यह बात हुए भी पचास बरस बीत गए। दोनों का भरपूर बुढ़ापा था कि

मोनीशाह मरने को पड़े। बहुत इलाज हुआ पर वैद्य हकीमों ने हार मान ली। शाहजी धरती पर उतार लिए गए। घर में कोहराम मच गया। रहिमन बाई उठी और तानपूरा लेकर परलोक की तैयारी में लगे अपने बेहोश प्रेमी के सिरहाने बैठ गई। लोगों से कहा कि शान्त रहें और फिर अलाप आरम्भ किया। ज्योंही स्वर पंचम पर पहुंचा कि बाबू साहब की उंगलियों में थिरकन होने लगी, ऐसा लगा मानो तानपूरा छेड़ रहे हों। रहिमन का स्वर ज्यों-ज्यों रसमग्न होता गया, त्यों-त्यों बाबूसाहब के मुखमंडल पर आनन्द की कान्ति बढ़ने लगी। उनमें फिर से प्राण लौट आए। अब चिकित्सकों ने संभाल लिया। इसके बाद बाबू साहब छह बरस और जिए। रहिमन के शास्त्रीय गायन एवं अलौकिक स्वर के सामने बड़े-बड़े कलावन्त नतमस्तक हो जाते थे।

देशदीपक को भारतीय वातावरण में रहने का अधिक अवसर कभी मिला ही न था। बचपन से पिता ने उसे अंग्रेज परिवारों में अधिक घुलाया मिलाया, घर में भी उससे अधिकतर अंग्रेजी में ही बातें कीं, घर में हिंदुत्व की छाप होते हुए भी वैसा हिंदूपन खोखा को कभी नजर न आया, जैसा कि वह कभी-कभी चौक आकर चुन्नो बीबी, अपने कुनबे के रिश्तेदारों और दूसरे घरों में पाता था। अपनी अंग्रेज शिक्षिकाओं के घरों में उनके बच्चों की संगति में अंग्रेजी तर्जों के गाने ही उसने अधिकतर गाए और सुने थे। उस दिन खयाल, लावनियों में उसे कुछ आनन्द तो अवश्य आया पर अधिक मानसिक सन्तोष प्राप्त नहीं हुआ था। किन्तु आज शास्त्रीय गायन में शास्त्रीयता की तनिक समझ न होते हुए भी उसे यह लगता था कि वह प्रायः गायिकाओं के स्वरों के द्वारा प्रेषित की गयी संवेदनाओं को अपने भीतर कहीं किसी न किसी रूप में अवश्य पहचानता है। उसके मन में विचार आया कि संगीत आत्मा की भाषा है।···ये आत्मा क्या है, कुछ समझ में न आया। आत्मा पवित्रता से जुड़ा हुआ कोई शब्द है जिसका इन्सानियत से अटूट नाता है, लेकिन इन चलते हुए हिंदू, मुस्लिम, ईसाई धर्मों आदि में कोई नाता नहीं है। हां, मां और पापा अपने कलकत्ते के ब्रह्मसमाजी ब्रह्म की बात करते हैं, उससे शायद मनुष्य की आत्मा का कोई गहरा संबंध जरूर है। परंतु पश्चिम का साइंटिफिक चिंतन तो यह कहता है कि मन आत्मा वगैरह की अलग कोई हस्ती नहीं, यह सब मस्तिष्क के गुण हैं। और यह शास्त्रीय संगीत, मोनीशाह कपूर और रहिमन बाई का किस्सा यह अवश्य बतलाता है कि उस आत्मा और उस परमात्मा या ब्रह्म या खुदा या गाड शब्द में कहीं एका भी है।

किसी ऊपरी व्यवस्थित तर्क के बिना भी देशदीपक के मन में अपना यह तर्क जम गया कि आत्मा और परमात्मा के बीच में जोड़नेवाली मनुष्यता नाम की जो वस्तु है उसके दर्शन वह अवश्य करेगा, और डाक्टर बनकर ही वह उसकी पहचान भी पा सकेगा।

महफिल के तीसरे ही दिन लाला छंगामल के ज्येष्ठ पुत्र गौरी बाबू एक बड़ी छितनिया में रामआसरे के मुरब्बे, शिवनरायन की मिठाइयां और आगरेवाले की दालमोठ, समोसे आदि लेकर अपनी पत्नी के साथ दो घोड़ोंवाली बग्घी में नजरबाग पहुंचे। उस समय बंसीधर कहीं गये हुए थे। गौरी बाबू अपनी लड़की का विवाह देशदीपक के साथ करना चाहते थे। लाला खुन्नोमल छंगामल के सगे छोटे भाई थे। निःसंतान होने से गौरी बाबू को अपना वारिस बनाया है। खुन्नोमलजी बिरादरी के एक बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। चंपक ने गौरी बाबू की लड़की को देखा भी था। गौरी बाबू की पत्नी उनके तथा चुन्नी बीबी के द्वारा आयोजित सुधार संगोष्ठियों में भी भाग ले चुकी थी और उन कुछ हिंदू परिवारों में थी जिन्होंने अपनी लड़कियों को भी विधिवत् पढ़ाना शुरू कर दिया था। चंपक अपनी ब्रह्मसमाजी किस्म की सुधारवादी निष्ठा में पगी होकर भी मन-ही-मन अब कहीं यह भी चाहने लगी थी कि उनके खोखा का ब्याह हो। गोरी, सुशील, चांद के टुकड़े-

सी बहुरिया घर में आये। दोनों की उपस्थिति के समय ही बंसीधर भी आ पहुंचे। प्रस्ताव फिर दोहराया गया।

बंसी बाबू को लाला खुन्नामल के खानदान से रिश्ता जोड़ने की बात पसन्द थी, लेकिन उन्होंने ही स्वयं कई बार अपने व्याख्यानों में और घर में होनेवाली वातों में भी प्रसंगवश यह कहा था कि लड़कों के विवाह की आयु अट्ठारह और लड़कियों के विवाह की उम्र सोलह वर्ष होनी चाहिए। उनके खोखा ने अभी पिछले ही वर्ष सत्रहवें में प्रवेश किया है। खोखा के हठी स्वभाव को भी वे पहचानते थे। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा : "मेरी राय में तुम ऊपर से खोखा को बुलवाकर इन दोनों के सामने बातचीत करा दो। जवान लड़का है, उसके अपने भी कुछ विचार, ख्यालात और कुछ उसूल बन चुके हैं। हम लोग कम से कम उसके ऊपर अपना फैसला एकाएक लादने के पक्ष में नहीं हैं।"

चंपक के मन में भी घर में बहू लाने की लालसा अब प्रबल हो चुकी थी। गौरी बाबू की लड़की को भी उन्होंने देखा था, बड़ी सुन्दर है। लेकिन इस समय उसे खोखा को बुलाकर उसकी राय जानने की बात बहुत अच्छी न लगी। सनातन काल से यही चला आ रहा है कि बेटे बेटी का विवाह उनके माता-पिता ही तय करें। पति की बात सुनकर वह कुर्सी से खड़ी तो हो गई पर साथ ही यह भी कहा : "उससे क्या पूछना, मुझे पसन्द है। (गौरी बाबू से) आप बेटी की जन्मपत्री भिजवा दीजिए। हम अपने शास्त्रीजी से पहले उसे मिलवा लें तब आगे की बात हो।"

बंसी बाबू पत्नी की यह बात सुनकर जरा गम्भीर हो गये। लेकिन इसी बीच में गौरी बाबू बोल उठे, "मैं आज ही भिजवाऊंगा। और वैसे भी, बहूजी साहिबा, आप तो जानती हैं, भगवान ने मुझे यही एक लड़की दी है। इसके ब्याह में जी खोलकर खर्च करूंगा। और मैं तो बहूजी, यहां तक राजी हूं कि अगर आप और बाबू साहब आज्ञा देंगे···"

"देखिए गौरी बाबू, मैं जमाने के साथ चलने में विश्वास रखता हूं। मेरी वाइफ को आपकी बेटी पसन्द है, इसकी मुझे बेहद खुशी है, लेकिन एक तो मेरे उसूल के हिसाब से विवाह के समय लड़के की उम्र अठारह और लड़की सोलह की होनी चाहिए। तमाम पढ़े-लिखों की सोसायटी में यही कानून चलता है। और मैं भी इसी उसूल को मानने वाला हूं।"

चंपक मन ही मन पति से चिढ़ गयी, तमक कर कहा : "आपके उसूल को कोई छुरा नहीं भोंक रहा है। अरे, अभी तो बात शुरू ही हुई है। जन्मपत्री जब मिलेगी तब रोक की रसम होगी और शादी होते-होते हमारा खोखा अठारह बरस का हो ही जायेगा।"

बंसी बाबू पत्नी के क्रोध को समझ तो गये किन्तु अपनी बात फिर दोहरायी, कहा "इस संबंध में कोई नुकताचीनी नहीं कर रहा हूं, चमेलो। और मेरी यह राय अब और भी ज्यादह पुख्ता हो गई है कि तुम खोखा को बुलाकर एक बार उसकी बात भी सुन लो। पढ़ा-लिखा लड़का है और जमाना भी अब नया आ गया है। गौरी बाबू की अगर एक ही एक लड़की है तो मेरा भी एक ही लड़का है। मैं उसकी मर्जी के खिलाफ काम नहीं करूंगा। उसको यहां बुलवाओ।"

पति का आदेशभरा वाक्य सुनकर श्रीमती चंपक झल्ला उठी और कमरे के दरवाजे पर आकर आवाज लगाई : "अरे बुद्ध।"

"जी हुजूर।"

"छोटे सरकार को ऊपर से बुला लाओ। कह दो, पापा बुला रहे हैं। जल्दी आयें।" फिर आकर अपनी जगह पर बैठ गई।

बंसी बाबू गौरी बाबू से पूछ रहे थे : "मुल्लू विलायत से लौटे कि नहीं। मुकदमा तो हार ही चुके, अब क्या वहा से एक मेम लेकर ही लौटेंगे।"

गौरी बाबू हंसे, कहा : "अरे बाबू साहब, वो लाए या न लाए पर उनकी महतारी तो यहां भुल्ली ताऊ की मेम बनी बैठी ही हैं।" दोनों पुरुष खुलकर हसे, चंपक और गौरी की पत्नी भी मुंह फेरकर मुस्कराईं। गौरी बाबू कहने लगे : "अब भुल्ली ताऊ के ऊपर भी साढ़े साती आ गई है समझिए। उनकी पतोहू खार खाए बैठी है। उसका खानदान फरक्काबाद का है। अब दो पीढ़ियों से मलिहाबाद में रहने लगे हैं, मगर 'खड़ा खेल फरक्काबादी' वाली कहावत उनके खानदान मे कोई नही भूला। जब से प्रीवी कौन्सल मे आप लोगों की जीत की खबर आयी है, तबसे ही वह दरवाजे के पीछे खड़ी होकर भुल्ली ताऊ और उनकी माशूका को ऐसी खरी-खरी सुनाती है कि ताऊ के पास जो लोग बैठे होते हैं उनके कानो के कीड़े भी झड़ जाते हैं।"

"कुछ भी कहिए गौरी बाबू, ये हमारे समाज मे जो रखैल औरतो और लड़कों को रखने का चलन चला है उसने इस देश को तबाह कर दिया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती महराज ने अपने लेक्चर मे एक बहुत ही सच्चा उसूल बतलाया था। पुरुष सन्तान के लिए स्त्री को अपना वीर्यदान करता है इसलिए कि जिस जीवन को उसने पाया है वह आगे बढ़ता रहे। कुदरत के कानून के खिलाफ जिन्दगी के कोहिनूर को बर्बाद करना पाप है।"

स्वामी दयानन्द का नाम सुनकर गौरी बाबू की त्योरियां कुछ-कुछ चढी ही थी कि देशदीपक ऊपर से आ गया। बात की करवट बदल गई। बंसी बाबू ने खोखा से कहा : "इनको जानते हो। बाबू गौरीशंकर मेहरोत्रा, हमारे खुन्नोमल साहब के भतीजे, हमारी बिरादरी के बहुत आला खानदान के रतन हैं। और इस वक्त खासतौर से तुमसे ही मिलने के वास्ते तशरीफ लाये हैं।"

"मुझसे ?"

"हा, यह तुमको अपना दामाद बनाना चाहते हैं।"

"लेकिन पापा आप मेरे विचार जानते हैं, जब तक मैं खुद कमाने के काबिल नहीं हो जाता तब तक···"

गौरी बाबू बीच ही मे बात काटकर बोल उठे : "आपका सोचना बहुत सही है, आपके विचारों ने मेरा मन और भी ज्यादा मोह लिया है। और मैं तो भैयाजी, अभी बाबू साहब से यह भी कह चुका हू कि अब तो बाबू साहब और तिल्लोकी प्रीवी कौन्सल से फैसला करा चुके हैं, मैं अपनी बेटी को भी आपके साथ ही विलायत भेजने को तैयार हूं।"

"आप बड़े हैं, पर माफ कीजिए, क्या आप विलायत की रिश्वत देकर मुझे ललचाना चाहते हैं ?"

देशदीपक की बात तोप के गोले की तरह गौरी बाबू के कानों के पर्दे हिला गई। बाबू बंसीधर को भी वह रिश्वत शब्द पसद नही आया। नाराज होकर बोले : "बड़ो से बेअदबी के साथ पेश आना तुमने किससे सीखा है खोखा ?"

"मैं बेअदबी नही कर रहा, पापा। खैर! अगर मुझसे कोई बेअदबी हुई हो तो माफी चाहता हू। अच्छा, इजाजत है। मुझे एक लेक्चर सुनने जाना है।" कहकर हाथ जोड़े और तेजी से चला गया।

खोखा के जाने के बाद तीनो के मध्य में दो-एक क्षण मौन के पहाड़ बनकर खड़े रहे। फिर गौरी बाबू ने ही नये सिरे से बात का छोर सम्हाला, बोले : "भैयाजी शायद नाराज हो गये।"

"नही, नाराज-वाराज कुछ नही हुआ, मेरा लड़का बहुत सुशील है भैयेजी, मगर आजकल जरा'''जाने क्या हो गया है उसे। (कुर्सी से उठकर पति से) "उसके लिए कपड़े निकाल आऊं जरा, सभा में जा रहा है न!" कहकर चंपक तेजी से भीतर चली गयी।

बंसी बाबू अपने मन में यह महसूस कर रहे थे कि किसी बाहरी व्यक्ति के द्वारा विलायत जाने की बात उठने से ही खोखा के स्वाभिमान को चोट लगी और वह चला गया। वह चोट बंसी बाबू के मन को भी लगी थी, इसलिए भीतर चली गई चंपक की बात का सूत्र उठाकर बोले : "लड़काई से जवानी में आते हुए लड़को के मन, अजीब-अजीब दिमागी झकोलों के बयाबान मे कुछ अर्से तक भटकते रहते हैं। मास्टर होने की वजह से मुझे इसका काफी तजुर्बा है।"

"जी हां, जी हां, आपसे बढकर इन बातों को कौन समझ सकता है। मैंने तो इसी-लिए कहा था कि उनके साथ अपनी बेटी को भी अगर विलायत भेज दूंगा तो वह भी कुछ सुधर जायेगी। अरे, अपने ही घर में देख लीजिए, हमारी बहन, आपकी वाइफ अगर आपके साथ कलकत्ते में न रह आई होती तो क्या इतनी तेजवती हो सकती थी? हमारे शहर की सातो जात की औरतों मे हमारी चमेली बहन कोहिनूर की तरह चमकती हैं। इसी तरह विलायत हो आने से हमारी गंगो भी बदल जाती।'''मुझे अपने बाप का हिस्सा भी मिलेगा और खुन्नो चाचा की अपनी बढाई हुई दौलत भी शंकरजी की किरपा का सहारा है। एक ही लड़की है मेरी। और भैयेजी, आप सच मानिएगा, लड़का यों तो आप लोगों का है पर इसने हमारा मन भी मोह रखा है। सोचा के बेटा बना लूं।"

"आपकी बात समझता हू गौरी बाबू। खोखा के पास होने पर मैंने भी इंग्लैण्ड जाने को कहा था। पर वह इग्लैण्ड न जाने पर अडा हुआ है। मैं और चंपक भी यह चाहते हैं कि वह आई० सी० एस० पास करके कोई बड़ा सरकारी ओहदेदार बने। मगर वह जाने को राजी हो जाय तो मैं उसकी होने वाली शरीके-जिन्दगी के वास्ते भी ईश्वर की मेहरबानी से खर्च करने की हैसियत रखता हूं।" जो हैसियत नही थी, उसको दोबाला करके दिखाने की अपनी इच्छा बंसी बाबू न रोक सके, थोड़ी अकड़ भरी जीट भी हाक गए।

शिष्टाचार और बात को आगे बढाने के लिए भी कुछ आशाजनक बातों के बाद गौरी बाबू सपत्नीक विदा लेकर चले गए।

ससम्मान परीक्षा पास करने के बाद खोखा का मन भीतर ही भीतर कुछ सनक गया था। दो साथ के जाने पहचाने प्राय: समवयस्क लड़के विदेश जाने का वह सौभाग्य सहज पा गए जिसके लिए खोखा के माता-पिता ने अपनी मोहमयी महत्वाकांक्षाओं के कारण धुर बचपन से ही उसके मन मे एक सपना जगा दिया था। अपनी घरेलू अंग्रेज शिक्षिका के घर के वातावरण से जुड़कर उसने विशेष रूप से इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी की बड़ी-बड़ी और तरह-तरह की तारीफें सुन रखी थी। उस लालसा की प्यास किन्तु अब वस्तुस्थिति को पहचानकर उस प्यास को हठपूर्वक नकारने से उसमे यह चिड़चिड़ापन आया था। हिंदू देवी-देवताओं के प्रति तो उसका विश्वास पहले ही समाप्त हो चुका था, किन्तु अब वह खुले आम ईश्वर को ही नकारने लगा था। ईश्वर कोई चीज नहीं, धर्म विशुद्ध अफीम का नशा है। थॉट, इमोशन, इंस्टिंक्ट, विल, इन सबकी कोई अलग सत्ता नहीं। सब कुछ दिमाग है। सब कुछ यही है। आगे कुछ नही। ब्रह्म भी नहीं।

पिछले दो दिनों से शहर भर में डुग्गी पिटवा कर यह घोषणा प्रसारित की जा रही है, "खलक सचीदानन्द परम परमेश्वर का। मुलक हिन्दोस्तान की महरानी मल्का

विक्टोरिया देवी का। सब धार्मिक हिंदू भाइयो को यह खबर दी जाती है कि सिरी हिंदू धरम परबोधनी सभा का एक विशाल जलसा बड़े शिवाले में रवीवार याने की इतवार के दिन साम को चार बजे होएगा जिसमे नास्तिक संन्यासी दयानन्द सरसती की किताब 'सतियारथ परकास' की धज्जियां उड़ेंगी और उस संन्यासी बने हुए किरिस्तानो के नौकर दयानन्द का भंडाफोड़ किया जाएगा। सब हिंदू भाइयो से पराथना है कि भारी तादाद में शरीक होके पवित्तर सनातन धरम की रकशा करें।"

नगर के कुछ नवयुवक इस सभा की घोषणा से बहुत उत्तेजित थे। धर्म के धूर्त सौदागर पवित्र ऋषि मुनियों की आर्य सन्तानो को फिर अपने जाल बट्टे मे फंसा रहे हैं। स्वामी दयानन्द रियल रेलिजन का प्रचार करके हम सबको नैतिक बल देकर ऊंचा उठा रहे हैं। हम इन दुष्टों की सभा न होने देंगे। देशदीपक ने कहा : "यह तरीका सही नहीं है। हम उनकी बातें सुनें और फिर खुद एक सभा बुलाकर 'सत्यार्थ प्रकाश' की अस्लियत को समझाएं तो मेरी राय में उसका अधिक असर होगा।"

किसी कश्मीरी धनाढ्य धार्मिक के द्वारा बनवाया गया विशाल शिवालय जिसमें शिवजी की इतनी बड़ी मूर्ति स्थापित है जितनी नगर भर के किसी और मंदिर में नहीं है। बीच मे एक मैदान, कोने मे कुआ जिसके किनारे कुछ भक्त लंगोटे या अंगोछे पहने आती-जाती भीड़ से बेखबर अपनी-अपनी सिलो पर भांग ठंडाई आदि घोटने में दत्तचित्त थे। और सामने की बडी बारहदरी मे दरियां बिछाकर सभा का आयोजन किया गया था। बारहदरी के एक सिरे पर चौकियां जोड़कर विशाल मंच बनाया गया था जिस पर चादनी बिछी थी, बीच मे गलीचा और तोशक भी लगाए गए थे। मच के चारो कोनो पर रुपहली गोटे की किनारी टंके पीले तिकोने झंडे भी फहराए गए थे। पग्गड़, पगडी, त्रिपुण्ड, वैष्णवी राम फटाका तिलक अथवा चंदन या कुंकुम की गोल बिन्दियो से सुशोभित, दुपट्टे, अंगरखे और चौडी पाड वाली धोतियो से सज्जित चार भव्य लगने वाले पंडित और दो संन्यासी विराजमान थे। भाषणों मे दयानन्द को हरफन मौला, ढोंगी और किरस्तानो का नौकर घोषित किया गया। किसी ने कहा कि यह दुष्ट अश्वमेध के साथ गोमेध और नरमेध यज्ञो की बात भी करता है। वेद के गूढ शब्दों के अर्थों का अनर्थ करता है। किसी ने कहा कि यह ब्रह्मचर्य की बात उठाकर उसके साथ ही साथ नियोग धर्म की चर्चा करके समाज को व्यभिचारी बना रहा है। दयानन्द भगवान राम, योगेश्वर श्री कृष्ण, देवाधिदेव महादेव और लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती आदि देवी-देवतो को झूठा बतलाता है, इनकी हसी उड़ाता है। हमारे परमपूज्य महर्षि वेदव्यास जी के द्वारा रचित अट्ठारह पुराणों को गप्पें बतलाता है ...आदि आदि बहुत सी बातें कही गई। सभा मे किसी-किसी वक्ता ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के किसी समुल्लास मे वर्णित वैदिक ऋचाओं की गलत व्याख्याओं का हवाला अवश्य दिया, लेकिन उस सभा मे दयानन्द को गालियां ही अधिक दी गयी।

देशदीपक और उनकी मित्र मंडली पीछे बैठी हुई थी। खिचडी गलमुच्छे वाले एक रौबीले तोंदियल पंडित महाशय दयानन्द की सभाओं मे पाखंड-खंडिनी पताका लगाए जाने की बात उठाकर जब उन्हें गालियां देने लगे तो एक नवयुवक ने पीछे से आवाज फेंकी, "बोलने वाला साला खुद पाखंडी है। परसों, अपनी गली की मेहतरानी से बुरे काम के लिए फुसलाकर सौदा कर रहा था। दुई गंडे ले लेव।"

यह दो गंडेवाली बात युवक ने जिस अभिनय के साथ कही, उससे क्रोध के बावजूद सभा में एक जोरदार ठहाका लग गया। फिर एकाएक "कौन है पापी। नास्तिक को मारो-मारो।" की आवाजें एक साथ उठी, और कुछ लोग उत्तेजित होकर लड़कों को मारने के लिए भी उठ खड़े हुए। इस हंगामे में देशदीपक साहसपूर्वक उठ खड़ा हुआ, और भीड़ के

शोर को दबाते हुए चीखकर बोला : "देखिए, सुनिए ! हम सब आपका सम्मान करते हैं। लेकिन अगर किसी ने भी हम लोगों पर एक हाथ भी उठाया तो याद रखिए, हम आप सब पर भी मुकदमा चलाकर उसी तरह जीतेंगे, जैसे अभी एक जाति निष्कासन के मुकदमे हमने प्रीवी कौंसिल से जीते है। आइए, हमें मारने आइए। हम पुलिस मे रिपोर्ट करके आपको कानून से दड भी दिलवाएगे।" कुछ लोग बीच में पड़े और सभा कटुता के साथ भग हुई।

छंगू उर्फ सुखदीन उर्फ श्यामनाथ शर्मा एक मिडिल स्कूल के चौथे दर्जे मे पढ़ता है, अंग्रेजी पतलून, लम्बा कोट और साफा पहनता है। चढ़ती हुई चांदनी रात में कही से लौट रहा था, देहधर्म के आग्रहवश अपने घर के पास ही खड़ा हो गया।

पिता पडित शिवदीन अपने घर के चबूतरे पर बैठे सुरती-चूना मलते हुए गौरी बाबू के छोटे मुनीम मुरलीधर सुकुल से बतिया रहे थे। आंखो की जोत कम होने के कारण यह तो न देख पाए कि कौन है, पर अनुमान से किसी को खडा होकर अपनी दीवाल पर धार छोड़ते अवश्य भाप लिया। तेज आवाज में बोले : "देखो-देखो, साले को, खड़ा हो के तुर्री मार रहा हैगा। कौन है बे ?"

सुकुल ने झांक के देखा, "मेरी जान में तो अपना छंगुवा ही हैगा। अरे अब दुई चार दर्जे ऐ बी सिड्डी पढ़ गया हैगा न, गोरन की तरह से काहे न मूते। सब धरम-करम भिरस्ट हुइ गवा है ककुवा। तुम क्या करोगे और हम क्या करेंगे। हे रामजी।"

छंगू का नाम सुनकर शिवदीन चुप ही गये। इकलौता लड़का है, कुछ कहो तो जबान लड़ाने लगता है। जब वह पतलून के बटन बंद करता हुआ अपने घर की तरफ आया और सुकुल से "नमस्ते, मुरली भैया" कहकर भीतर जाने लगा तो सुकुल बोले : "साहेब जरूर हुई गए हो छंगू, बाकी बामहन के पूत हैं। ऐसा भिरस्टाचार तुम्हें शोभा नही देता हैगा। खड़े होके गोरे ही मूतते हैं।"

शिवदीन इसी बीच में घर के भीतर की ओर मुंह करके गोहराए : "अरे लल्लो-पुत्तू, कोई है घर में ? एक लोटा पानी ले आओ, भैया पैर पे छीटें देंगे।"

छंगू उर्फ सुखदीन उर्फ श्यामनाथ शर्मा तमक कर बोला : "पानी पैरों पे डाल के क्या मैं अपने बूट खराब करूंगा ?"

पिता पण्डित शिवदीन भी कुछ उत्तेजित हो गए, बोले : "तुम अपना धरम बिगाड़ो, पर घर का धरम नही बिगडेगा।"

"धरम-धरम ! बड़ा अच्छा है न आपका धरम, इसीलिए आप ही के धरम के ब्राह्मण और संन्यासी दयानन्द आप लोगो के सिर पर जूते लगा रहे हैं।"

सुकुल बोला : "हैं-हैं—अपने पिता से ऐसे बात की जाती है भला। अरे, कुछ तो लिहाज रखो। तुमरे पिता हैं, मुना बड़े पंडित हैं।"

भीतर से पुत्तू पानी का लोटा लेकर आ गया। छगू ने झुंझलाहट के साथ अपने हाथों पर थोड़ा सा पानी डलवा लिया और भीतर जाने लगा, तभी एक मुट्ठी में चूना तम्बाकू दबाकर पंडित शिवदीन उठे और पुत्तू से लोटा लेकर छगू के पैरों पर उडेल दिया। ठेठ विलायती दूकान से साढ़े पांच रुपए में खरीदकर लाए गए बूटों का यह शुद्धिकरण छंगू उर्फ श्यामनाथ शर्मा को तपा गया, बोले : "अब ये धरम के तमासे जो तुम फिर करोगे, बप्पा, तो बतलाए देता हूं, तुम्हारा धरम छोड़कर क्रिश्चियन या मुसलमान हो जाऊंगा। नफरत करता हूं तुम्हारे हिंदू धरम से। उल्लू के पट्ठों का धरम है साला।" कहता हुआ

खट्-खट् भीतर चला गया।

पंडित शिवदीन और मुरलीधर सुकुल कुछ देर तो मौन रहे, फिर सुकुल बोले : "अब जाए भी देखो कक्कू, आजकल के लड़को की मतें ही बिगड़ गई हैं। ऊपर से इन दयानन्दियों ने तो और भी आनंद फैलाए रखा हैगा।"

शिवदीन बोले : "अब तो महल्ले के चार-छह लड़के अंग्रेजी पढ़न लगे हैंगे, मगर किसी के घर मे ऐसा कलयुग नही व्यापा। सबके घरो लड़के आवते हैं, बाहर के कपड़े बैठिका में टांगते हैं, अंगोछा पहनते हैं, फिर हाथ-पैर धोय के घर मा जावते हैंगे। अंग्रेजी पढो, हमाई तरफ से मनाई नही हैगी। बाकी छिमापत के लड़के को देखो, उदाहरण देता हूं तुम्हें। अस्कूल मे प्यास लगी तो मास्टर से छुट्टी ले के घर आया। छिमापत बोले जल्दी क्यो आ गया है? तो उसने कहा कि बप्पा, प्यास बडी जोर की लग आई इसलिए छुट्टी ले के आया हूं। पानी पी के चला जाऊंगा। छमापत आंखें निकाल के बोले कि ब्राम्हन का पूत भूख-प्यास के मारे किलास त्याग के आवे। मर नही जाओगे पानी के बिना। जाओ अस्कूल। और मुरली बेटा, तुमसे क्या कहें ऐसा लायक लड़का है उमापत कि बैठके मे आय के कपड़े उतारिस रहै और कपडे उतार कर कुठरिया मां रखे जावत रहा पर बाप की फटकार सुनिके कपड़े पहने और उल्टे पावो अस्कूल चला गया।" कहके मुट्ठी मे दबी तम्बाकू को एक बार फिर मीजा, फटका और सुकुल की ओर अपनी हथेली बढा दी।

सुकुल कहने लगे : "हां, हा ककुआ, कलजुग जरूर चारों चरन टेक दिहिस हैगा। बाकी धर्मातमा और अचार-विचार वाले लोगन के घरो में अभी घुस नही पाया हैगा।" कहकर पंडित शिवदीन की हथेली से तम्बाकू की चुटकी उठाई और निचले होठ के पीछे दबा ली।

पंडित शिवदीन बची हुई तम्बाकू को एक बार फिर हल्के से मीजते और फटकते हुए बोले : "धर्म भगवान को गाली देता है ससुरा। ये नही जानता कि हमारे पवित्र सनातन धर्म से बढ़कर और कोई भी धर्म सनातन नही हैगा।" कहकर सुरती मुंह मे डाली, एक आध बार उसे इस गाल से उस गाल तक फिराया और फिर उसे होठ के नीचे दबाते हुए, गली में पिच्च से थूक कर शिवदीन प्रवचन की मुद्रा मे कहने लगे : "हमारे ऋषियो-मुनियों ने सब नियम बनाय रखे हैं मुरली। जदी कोई खाली उन्हीं का पालन करे और कुछ भी न करे तो भी मोच्छ हुई जाए। मलमूत्र त्याग करै तलक के नियम बने हैं हमारे वहां। पहले ऐसी लकड़ी से भूमि साफ करे जो जज्ञ मे काम न आवती होय। फिर उस पर ऐसे पत्ते बिछावै जो पूजा-पत्री में काम न आवते हो, फिर उस पर बैठके मलमूत्र त्याग करे। समझे कि नही।"

"वाह कैसी सुघताई हैगी हमाए यहां।"

"अरे यही नही, यहां तक लिख दिया है कि दिन और संध्या के समै उत्तरमुखी हुइ के टट्टी पेशाब करै और रात मे दक्षिण मुख हुई के। जानते हो क्यो? कि सुर्ज देवता, चन्द्रमा देवता, इनके सामने असुद्ध काम न करे। ऐसा पवित्र धरम रहा हमारा। अब क्या कहें, दयानन्द नास्तिकताई की बातें बहुत करता हैगा, पर इत्ती बात उसके पीठ पीछे भी हम कहेंगे कि आचरन में परम सुद्ध है, तभी तो बडे-बडे कलट्टर, कप्तानो को मौलबी-मुल्लन सबोंको फटकार के रख देता है। ऐसी हिम्मत है किसी हिन्दू में?"

"हां, ये बात तो हम भी कहेंगे ककुआ, अब देखो न, कल मौनी अमावस के दिन सेठ हरचरन की जवान-जवान ब्याहता बिटिया अपनी चाची और महनारी संग गोमती नहान गई रही। तीनों नहाय के लौट रही हती, एक पठान ससुरा घोड़े पर जाय रह हता। लड़की अच्छी लगी तो उसे उठाय के लै भागा। सैकड़न हिंदू खड़े साले देखत रहे, कोई चूं

तक नाही किहिस पर दयानन्द स्वामी के ही एक चेले मुकंदी लाला हुवां बक्खान दै रहे थे, सो उसके पीछे दौड़े ।"

"फिर लड़की मिली ?"

"पता नही कक्कू, मुसलमान कौम जबरी होती हैगी । उसके हाथ से लूटा हुआ माल लौटाय लाना बड़ा कठिन काम हैगा।···मारे जैहें मुकुंदी लाल, और का होई। हे राम !"

21

कोतवाली में रात के ग्यारह बजे का गजर बजा। एकाएक पंडित शिवदीन के दरवाजे पर पांच-छै तरुणो का एक गोल पहुंचकर सहसा छंगू को आवाजें देने लगा। पहले पंडित शिवदीन बोले, फिर छंगू। अपने साथी झम्मनलाल की आवाज पहचान कर वह नीचे उतर आया, और इतने साथियो को देखकर बोला : "अरे—भई क्या बात है ?"

"जल्दी चलो-जल्दी चलो। महासैजी को चक्कू मारा गया है।" एक लड़के ने कहा।

"हैं ? क्या खतम···"

"नही, बच गए। पर हरचरन की लौंडिया निकाल लाए महासैजी।"

"वाह !" छंगू इतना ही कह पाया था कि झम्मनलाल बोल उठा : "जल्दी चलो महाशयजी के यहां।"

"चलता हूं—चलता हूं, जरा कपड़े पहन आऊं। पर ये बताओ कि क्या बहुत घायल हो गए हैं महाशयजी ?"

"नही, जादा तो नही, पर बाएं पुट्ठे पर रमपुरिया चक्कू का घाव जरा गहरा है, बहुत तेज बुखार मे हैं। लेकिन रात भर महाशयजी के यहां पहरा देना पड़ेगा। काबुली साले बहुत उबल रहे थे और सुना फिर उन पर हमला होगा। बल्लम कटारी जो कुछ होय घर में, साथ ले लेना, रात भर महाशयजी के यहां पहरा देना है।"

पंडित शिवदीन इस बीच मे कुप्पी लिए नीचे उतर आए थे। उनके कानों में बल्लम कटारी ले चलने की बात पड चुकी थी। पंडितजी दहलीज में ही थे कि छंगू फिर लौटकर भीतर जाने लगा। शिवदीन बोले : "बल्लम कटारी लै के कहां जैहो भाई आधी रात मां ? ई सब कौन हैं ?"

बेटे ने बाप को उत्तर देने की आवश्यकता न समझी और भीतर चला गया। शिवदीन महाराज उसका मुंह देखते ही रह गए, फिर कुप्पी लेकर बाहर आए और अकड़-भरी आवाज में पूछा : "कौन हो तुम लोग ?"

"अरे महासैजी को छुरा मारा गया है चाचा।"

"कौन महाशयजी ?"

"मुकुंदी लाल। चाचा ये समझो कि आज दिन भर हम लोग सारे शहर में चक्कर लगाते रहे हैं। फिर बल्लोचपुरे में जाकर पता लगाया, फिर महाशयजी के साथ हम लोग नजरबाग वाले हेडमास्टर साहब के यहां गए, उन्हें साथ लिया, कप्तान साहब के दफ्तर गए। पता चला दौरे पर गए हैं। घंटा भर बाद आएंगे। फिर वह आए, कहा कि संझा को पहर भर बाद आएंगे। फिर वह आए, फिर हेडमास्टर साहब ने उसे सब बताया'''।"

झम्मन ही सारी बात सुनाने का श्रेय न ले ले इस उतावली के साथ ऐंचू बोला : "कुछ भी कह लीजिए चाचा, पर ये अंग्रेज कौम होती बड़ी बहादुर है। कप्तान साहब खुद आठ-दस कानिस्टेबुल—घुड़सवार ले के उन लोगो के साथ चले और अचानक साले के घर में छापा मार दिया। कप्तान साहेब ने काबुली को तो पकड़ लिया पर वो कहे कि लड़की हमारे यहां नही है।"

"महाशयजी घरे मां घुस गए, कुठरिया मां बंद पड़ी रहै हरचरन क्यार बिटेवा। हाथ, पैर, मुंह सब बंधे रहैं। बहिका निकाला, पकड़ा गवा साला।"

"पर पीछे से किसी महल्ले वाले दूसरे काबली ने महाशयजी की पीठ में छुरा मारना चाहा, एक घुड़सवार ने देख लिया। बन्दूक के कुदे से साले के कंधे पर जोर से वार किया।"

"और वो हरचरन की लड़की ?"

झम्मन बोला : "हां, सुना कप्तान साहब ने हरचरन को बुलाया और वो आए भी रहे। पर वह रो के बोले कि धरम की बात है, जो घर ले जाऊंगा तो जात-बिरादरी बिगड़ पड़ेगी। हमारे काम की अब ये नही रही। बिलख-बिलख के रो पड़े। इस पर कप्तान साहेब बोले कि इसको पादरी के यहां पहुंचाए देओ, पर हेडमास्टर उसे अपने घर ले गए।"

रूई का कोट और साफा पहनकर हाथ में बल्लम लिए हुए छंगू उर्फ सुखदीन उर्फ श्यामनाथ शर्मा बाहर आ गया। उसे देखकर पंडितजी विकल स्वर में बोले : "अरे भैया, मुसलमानन में एका बहुत है, जो इकट्ठा होकर चढ़ जाएंगे तो तुम चार-छह क्या कर लोगे ?"

छंगू अपने पिता को डपटते हुए बोला : "अच्छा, जाओ दरवज्जे बंद करके बैठो, हम कोई दूर थोड़ी जा रहे हैं।"

झम्मन बोला : "अरे चाचा, हमने भी पच्चीस लड़के तैयार कर लिए हैं, रातभर पहरा देंगे।"

बाबू मुकुन्दीलाल की आयु अभी बहुत अधिक नही है, चौंतीस पैंतीस के हैं। जात के वैश्य, दर्जा पाच तक अंग्रेजी पढ़ चुके थे, अब कलक्टरी में बाबूगीरी करते है। पंद्रह-सोलह बरस पहले उनके एक पुत्र हुआ था, जो जनमते ही अपनी सांस तोड़ गया और साथ में अपनी मां को भी स्वर्ग ले गया। बाबू मुकन्दीलाल ने फिर विवाह न किया। घर में अकेले हैं, भाइयों से अलग। अखाड़े और हनुमानजी ही उनके इष्टदेव और प्राण हैं। टाट-पट्टी मे सिखों की गली मे गुरुद्वारे के पास ही उनका मकान है। युवको मे निरतर प्राण फकते रहे हैं। उन्होंने राजा बाजार, टाट-पट्टी और कुंदरी रकाबगंज तक में अपने प्रयत्न से कई अखाड़े खुलवा दिये हैं। जब से उन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती के भाषण सुने और उनकी हृष्ट-पुष्ट बलिष्ठ तेजस्वी काया के दर्शन किये, तब से वे उन्हें ही हनुमानजी का साक्षात अवतार मानने लगे हैं। मजे की बात यह भी है कि अपने इन नूतन साक्षात् हनुमान-स्वरूप प्रेरणादाता के उपदेशानुसार उन्हें और सब हिंदू देवी-देवतों से नफरत हो गई है मगर हनुमानजी उनके लिए प्रत्यक्ष होकर दयानन्द स्वरूप हो गये हैं। जाति के वैश्य

होते हुए भी वे कलक्टरी में बाबू होने के कारण बाबू जी ही कहलाते हैं। उनके विचारों और कर्मों से कुछ लोग उन्हें व्यंग्य में 'महाशय जी' कहने लगे। यह व्यंग्य उपाधि अब प्रशंसा में बदल गई है। अपने क्षेत्र के लड़कों में आदर के साथ इसी नाम से प्रसिद्ध हो गए हैं।

बाबू बंसीधर के पुराने मित्र पंडित प्रभुदयाल शास्त्री और महाशयजी की बड़ी मित्रता है। वे उनके घर मे प्रत्येक रविवार को प्रातः काल दयानन्दजी के द्वारा निर्दिष्ट विधि से हवन और वेदपाठ करते हैं। इन्ही दोनों की प्रेरणा से कुछ तरुण, जो संक्रांति के इस कठिन काल में जीवन मूल्यो का अवमूल्यन एवं बिखराव होने के कारण अपना धर्म छोड़कर मुसलमान या ईसाई होने लगे थे, महाशयजी और शास्त्रीजी के उपदेशों से बचा लिए गए।

उन्ही दिनों महाशयजी ने एक हिंदू लडकी को मुक्त करा लिया, इस कारण अनेक सनातन धर्मी हिंदू भी अपना वैर-भाव भूलकर उनके प्रशंसक बन गए थे, लेकिन सनातनियों का यह प्रशंसा भाव श्मशान के वैराग्य की तरह ही क्षणिक सिद्ध हुआ।

दो-तीन दिनो के बाद ही जब प्रभुदयाल शास्त्री और महाशय मुकुन्दीलाल तथा बाबू बंसीधर टंडन के नाम से यह पर्चा छपा कि लाला हरचरन की बेटी को शुद्ध करके किसी चरित्रवान हिंदू युवक के साथ उसका पुनर्विवाह किया जायगा तो सारे समाज मे तहलका मच गया। इस भयानक दुर्भाग्यचक्र में पड़ने के कुछ महीनों पहले ही उसका विवाह नगर के ही एक धनी कुल में हो चुका था। किंतु पठान के द्वारा हरण किये जाने की घटना के बाद लाला हरचरन की तरह ही उनके समधी ने भी उसे अपनाना स्वीकार न किया। कहा कि अब ये लडकी हमारे किस काम की रही, जब मुसलमान ने उसे छू लिया तो वह मुसलमान हो गई। किंतु महाशयजी अपनी बिरादरी की उस अभागिन लड़की को फिर से सौभाग्यवती बनाने का प्रण कर चुके थे। हरचरन की लड़की सुमत्ती अभी श्रीमती चंपकलता टंडन के पास ही रहती थी। किंतु मोहवश लाला हरचरन ने बाबू बंसीधर को कुछ आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव भी किया, किंतु वह बोले: "मुझे इसकी जरूरत नहीं। ईश्वर ने मुझे एक लड़का और एक लडकी दी थी और अब समझता हूं कि मेरी दो लड़कियां और एक लड़का है।"

इस घटना की स्मृति को शहर के लोग अभी पूरी तरह मे भुला भी न पाये थे कि चार महीने के बाद महाशय मुकुन्दीलाल एक दूसरे धार्मिक जोश के काम से फंस गये।

लाला गिल्लूमल पंसारी रकाबगंज के सबसे बड़े पंसारी और अत्तार हैं। इनका इकलौता लड़का भगौती परसाद है। संतान से निराश हो चुके माता-पिता के चढ़ते बुढ़ापे में पैदा होने के कारण भगौतिया दोनों की आखों का तारा है। उसके रंग-ढंग देखकर लोग बाग पीठ पीछे की बातों मे यह कहकर हंसा करते थे कि एक वाजिदअली शाह तो कैद होके कलकत्ते गए, और अब ये नए वाजिद अली शाह बन रहे हैं।

जवानी चढ़ते न चढते भगौती परसाद लखनऊ के उन पेशेवर मुसाहबों के चंगुल में फंस गया जिनकी मीठी बातो के शहद मे संखिया घुला होता है। शादी दो बार हुई, पर गौना होने से पहले ही दोनों प्रभु को प्यारी हो गईं। अब मुसाहबों के चलाए चक्कर में फंसकर नगीनाबाई की बेटी शमीम की नथ उतारने पर आमादा हो गए थे। शहर की गाने वालियों में नगीना अगर बहुत अच्छी नही तो बहुत बुरी भी नही मानी जाती है। किसी नवाब की नौकरी में रहकर पचास साठ हजार की माया बटोर ली थी। अब अपनी लड़की शमीम को धीरे-धीरे आगे ला रही है। नथ उतारने की रस्म के लिए भगौती को रिझाया गया। शमीम और भगौती की अकेले कमरे मे बैठ कर गुटरगूं करने के भी कई मौके दिए गए। "नथनिया ने हाय राम बड़ा दुख दीना" बड़ी अदा से गाकर उसने भगौती प्रसाद को

वह रस्म अदा करने के लिए बेकरार कर दिया। अम्मी जान, नगीनाबाई से दस हजार रुपए नकद और इतनी ही रकम के गहने, कपड़ो का करार हुआ। मगर बाप से इतने रुपए मांगने की हिम्मत नही थी। एक मुसाहब की सलाह से भगौती ने अपने कमरे में छत की एक धन्नी मे रस्सी बांधकर फांसी का फदा बनाया। फिर महरी की छोटी लड़की लौंगिया को बुलाकर उसके हाथ में चांदी की दुअन्नी का सिक्का रखा और उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा : "हम तो आज ई फांसी के फंदे मे लटक के मर जैहें, तुम अम्मा बप्पा से कुछ न कहियो भला। हम तो मर जैहें पर तुम मिठाई खैयो, जरूर खैयो।"

किंतु लौंगी ने नीचे आकर बड़ी मालकिन के आगे शंख फूंक दिया। भगौती तब तक अपनी छत की मुंडेर लाघकर पड़ोसी की छत पर जाके बैठ गए। अम्मा हड़बड़ाती सीढ़िया चढ़कर ऊपर भगौती के कमरे मे आई, फासी का फंदा देखा तो फुक्का फाड़ के रो उठी और दोनों हाथों से अपनी छाती कूटने लगी : "हाय मुनौवां हाय मुनौवां, तुम कहा गए हो भैया? बुढ़ापे मां ई कालिख काहे पोत रहे हो लाला।"

मां के रोने का शोर पास-पड़ोस के घरों में अधिक न पहुंचे इसलिए लाला भगौती परसाद जल्दी से अपनी छत पर आ गए और कमरे मे घुसने लगे। बेटे को कमरे मे आता देखा, मां ने झपट के उसे अपने कलेजे से लगा लिया : "तू काहे के लिए जान दे रहा है, तुझे काहे की कमी है? अरे मुनौवां, मोर बचुआ, तुम ई करौगे तो हम तुमसे पहले जान दे देंगे।" कहके मां फांसी के फंदे के आगे दौड़ी। भगौती भी मा की तरफ लपका और उनका हाथ पकड़कर अपने कमरे के दरवाजे की कुंडी चढ़ाकर अकेले मे उनसे लिपट कर रोने लगा : "अम्मा, मेरी इज्जत जाय रही है।"

आंसुओ और हिचकियो के बीच मे कही गई बेटे की बात से मां ने यह मर्म पकड़ा कि बेटा दो बरस पहले एक नवाब से जुए मे पंद्रह हजार रुपए हार गया था, अब वह ब्याज समेत पच्चीस हजार की रकम हो गई है। उसने अदालत मे दावा ठोकने की धमकी दी है इसीलिए बेचारा अपनी इज्जत बचाने के वास्ते जान दे रहा है। मां ने बेटे को इतनी राशि के अपने जेवर देने का आश्वासन दिया।

"बप्पा को पता न लगे अम्मा, नही तो बहुत गुस्साएंगे।"

अम्मा ने इसके लिए भी उसे आश्वासन दे दिया।

शमीम की रस्म अदायगी बड़ी धूमधाम से हुई। शहर की अच्छी-अच्छी गाने-वालियो और उनमे से कुछ खासुलखास के सरपरस्तो को भी दावत दी गई। रात भर इधर नाच गाना होता रहा, उधर शमीम के हुस्न की शराब में मखमूर होकर भगौती अपने और उसके आजन्म और अटूट प्रेम की किस्में खा-खाकर उसे चूमता रहा।

लेकिन यह तो सिर्फ पहली ही रात थी। इसकी मुहब्बत की कशिश के साथ फर-माइशें भी बढ़ने लगी। भगौती के अकसर दूकान व घर से गायब होने का कारण एक दिन लाला गिल्लूमल को भी मालूम हो गया। गिल्लूमल ने अपने लड़के को सख्ती के साथ अंकुश में लिया। सवेरे नियमपूर्वक उसे अपने साथ घर से ले जाते और शाम को अपने ही साथ उसे वापिस लाने लगे। भगौती के तीसरे ब्याह के लिए लड़की की तलाश शुरू हुई। लेकिन आजाद पंछी को पिंजरे में बंद होकर रहना भला कब पसंद आता! और ऐसी सोने की चिड़िया को अर्थ पिशाचो का गिरोह भी इतनी आसानी से छोड़ नही सकता था।

एक मुसाहब मुख्तार अहमद ने एक दिन दूकान के सामने खड़े होकर आंख के इशारे से भगौती को बुलाया। लघुशका निवारण के बहाने भगौती परसाद उठकर पीछे की गली में चला। मुख्तार अहमद उसके पीछे-पीछे था। दोनो में कुछ बातें हुई।

उसी रात से लाला भगौती परसाद को हाल आने लगे। एकाएक पलग पर बैठकर

झूमना और बकना शुरू कर दिया : "मैं एक-एक को जलाकर खाक कर दूंगा, तब ये काफिर बनिए का बच्चा, उल्लू का पट्ठा साला गिल्लूमल समझेगा कि मेरी हस्ती क्या है उसके सारे पुरखों को बहिस्त से निकाल कर दोजख मे डाल दूंगा। आला रुतबे वाला हू, आफत का परकाला हू।" कहकर भगौती एकाएक पलंग से कूदकर कमरे भर में नाचने लगा।

मां-बाप भागे-भागे ऊपर आये। बाप को देखकर भगौती ने और भी गालिया बकना शुरू कर दिया। कुछ पास-पड़ोस के लोग भी शोर सुनकर अपनी अपनी छतों से पूछ-ताछ करने लगे। 'क्या हुआ क्या बात है' का शोर मच गया। जो पड़ोसी अपनी-अपनी हदों की मुडेरें या दीवारें फाद कर आ सकते थे वे आ पहुंचे। भगौती परसाद और भी जोर-जोर से बकने लगे, "खाक कर दूंगा, एक-एक साले को धूल मे मिला दूंगा।"

उसकी बकवास मे आस-पास के घरों की कुछ पोलें भी खुलने लगी। उसके बाप की बेईमानियां भी खुलने लगी। तय हुआ कि या तो यह पागल हो गया है, नहीं तो इस पर छत्ते वाले सैयद बाबा का साया पड़ गया है। भगौती परसाद को एक अलग कोठरी मे जबर्दस्ती बन्द कर दिया गया। रात भर घर में हड़बोग मची रही, उधर गिल्लूमल रोयें और इधर उनकी वृद्धा पत्नी। समझाने वाले दोनो बुड्ढे बुढ़िया को समझाते रहे, इसी मे रात बीत गई।

सवेरे गिल्लूमल ने हकीम साहब को बुलवाया। महल्ले के पांच-छह जवानों ने जब भगौती को पकड़ कर उस पर काबू पाया तो हकीम साहब ने नब्ज टटोली। भगौती की रुहानी आय-बाय-सांय उसकी जबान से फुलझड़ी की तरह छूटती ही रही। हकीम ने कहा: "नब्ज तो ठीक चल रही है, शायद कोई रुहानी साया इस पर आ गया है, उसका इंतजाम करवाइए।"

ऐशबाग से शाह साहब बुलाए गए, उन्होने झाड़-फूंक की, कोई फायदा न हुआ। चलते वक्त शाहजी गिल्लूमल से बोले : "या तो यह ढोंग कर रहा है या फिर इस पर कोई ऐसी शय आई है जो मेरी ताकत से बाहर है।"

भगौती कोठरी में बंद, घर में चूल्हा तक नही जला। गिल्लूमल की ललाइन रोते-रोते निढाल हो गईं। पड़ोस की औरतें आवें, तसल्ली देवें या तो चली जायं और किस्से-खोदिनें घर ही मे पसरट्टा मार के बैठ जायं। कहे भूत\परेत चुड़ैलन की बात और है, सैयद बाबा इनसे अलग होत है। रद्धे की घरवाली पे सैयद बाबा आसिक हुई गए। सैयद बाबा तो कोठा बंद करवाय के उसे लिए पलका पर पड़े रहत हैं मजे से"पान लाओ, इतरदान लाओ, रबड़ी मलाई लाओ, हम खायें, हमारी प्यारी खायें..."

सैयद बाबाओं के किस्से चले तो एक में एक जुड़ने लगे गए। तभी दरवाजे की कुंडी खटखटाई, "लाला जी होत्, अजी लाला गिल्लूमल साहेब।"

गिल्लूमल अपने बैठके में उदास लेटे थे। सवेरे से हकीम साहब और ऐशबाग वाले शाहजी, कुछ सगे सबंधियों और गली महल्ले के शुभाकाक्षियों की भीड़ के घेराव मे फंसे-फंसे गिल्लूमल बुरी तरह से थक गए थे। अब तक अन्न का एक दाना भी मुंह में नही पड़ा था। दरवाजे पर पुकार पड़ी तो अनख कर उठे। दरवाजा खोल कर देखा, तो एक नंग धड़ंग, खिचड़ी दाढ़ी मूछो वाले शाहजी काली अल्फी पहने दो तीन लोगों के साथ खड़े थे। शाहजी गिल्लूमल को टकटकी लगाकर कुछ देर देखते रहे, फिर पूछा : "तेरा नूरे चश्म कहां है ?"

गिल्लूमल शंका और विश्वास के अधर मे लटके हुए उन्हें देख रहे थे। शाहजी ने फिर उन्हें कड़ी नजरो से देखते हुए डपटकर कहा: "चल, आगे बढ़।"

शाहजी के पीछे खड़े मुसाहबीन किनारे से होकर गिल्लूमल को तनिक ढकेलते हुए, बैठक के भीतर घुस गए। कुछ अपने मन की चिन्ता और घबराहट और कुछ शाहजी की डपट भरी आवाज के कारण गिल्लूमल अभी दबसट में पड़े थे कि भीतर घुस आने वाला एक मुसाहब जोर से बोल उठा : "बाअदब, खड़े हो जाइए। शाहजी तशरीफ ला रहे हैं।"

शाहजी साहब गिल्लूमल के कुछ कहने से पहले ही खुद-बखुद भीतर तशरीफ ले आए थे। शाहजी छाप मजमा जब आंगन में आ गया और दालान में बैठी हुई औरतों की भीड़ घबराकर हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी तो गिल्लूमल को ऊपर के जीने का रास्ता बतलाना ही पड़ा। कोठरी का दरवाजा खोला गया। भगौती परसाद दीवार से लगा हुआ सामने ही गुड़मुड़ी मारे सो रहा था। भगौती ने क्रोध में आकर अपने कैदखाने का एक पूरा हिस्सा 'देहधर्मशाला' बना दिया था, कोठरी में मल-मूत्र की दुर्गंध भरी हुई थी। शाहजी ने दरवाजे के बाहर ही से भगौती को देखा। गद्गद भाव से दोनों हाथ फैलाकर बोले : "यह नूर तो शाहे जिन्नात का ही हो सकता है। जागिए हुजूर, हम गरीबों पर अपनी नजरे इनायत कीजिए।"

भगौती ने भी जागकर मुसाहबों में अपने परम शुभचिंतकों को पहचाना। तब तक शाहजी साहब ने झुककर दोनों हाथों से भगौती को फर्शी सलाम किया, और कहा : "आदाब अर्ज करता हूँ हुजूर।"

रात भर का जगा, कुछ चिढ़ा हुआ, थका हुआ भगौती परसाद कुछ न बोला, वैसे ही बैठा रहा। शाहजी, गिल्लूमल और उनके पीछे आ जानेवाली बड़ी-बूढ़ियों की तरफ देखकर फिर डांटकर कहा : "नालायको, तुमने इस गंदी कोठरी में अपनी तकदीर को कैद कर रखा है। खुद अमीरुज्जिन्नात तशरीफ लाये और तुमने उनके साथ यह बदसलूकी की।" फिर अपने एक भगतनुमा आदमी से कहा : "जा बे, भीतर से हुजूर को बाइज्जत बाहर ले आ। इसके गुस्ल का इंतजाम होना चाहिए।" फिर गिल्लूमल से बोले : "फौरन बाजार से रुहे गुलाब मंगवाओ, रूह से इनकी मालिश होगी।"

तब भगौती परसाद के रूप में हुजूर अमीरुज्जिन्नात बाहर तशरीफ लाये। बाप को देखा, फिर कुछ गरजने-बमकने वाले ही थे कि शाहजी की आवाज सुनकर चुप हो गये। शाहजी कहने लगे : "तूने नालायकी तो बहुत की मगर हुजूर शाहे दोआलम हैं। मैंने सुना कि ऐशबाग वाले साईं ने इन पर शक किया था, तभी देखने चला आया। (हंसकर) अभी वह बच्चा है, पांचवें फलक तक ही पहुंच पाया है। मेरे हुजूर के नूर को भला क्योंकर देख सकता है बेचारा। (भगौती से) हुजूर, ये नोन मिर्च की पुड़िया बांधने वाला बक्काल माफ किया जाय।"

बड़े-बड़े नखरे हुए, शाहे जिन्नात की महफिल शाही ठाठ से सजी। तवायफों के मुजरे होने लगे—आज अमीरनबाई तो कल कोई बांदीबाई। आज इलायची जान तो कल लौंगी जान। बनारस से हुस्नाबाई बुलाई जायं, तो उन्हें भी बुलाया जायगा। शराब अंग्रेजी दूकान की हो, तो होगी। जब कई रोज कई रंडियों के नाच गाने हो चुके तो भगौती रूपी शाहे जिन्नात ने अपनी प्रियतमा शमीम को बुलवाया। यह दोनों भीतर, कमरे के दरवाजे बन्द, और शाहजी आंखें मूंदे, दरवाजे के बाहर तस्बीह के दाने फेर रहे हैं।

बेचारे गिल्लूमल की जनम भर की जोड़ी हुई माया फुर्र-फुर्र उड़ने लगी। इलाके भर में शोर कि गिल्लूमल के भगौती पर मामूली नहीं, खुद देव जिन्नातों के बादशाह की रूह आयी है, गिल्लूमल निहाल हो जायेंगे।

मगर गिल्लूमल अपनी बरबादी पर रो रहे थे। एक दिन महाशय मुकुन्दीलाल, गिल्लूमल से मिलने आये। शाहे जिन्नात के जासूसों को टोह लग गई। शमीम ने उसी दिन

कुंदनलाल सर्राफ के यहां से पचास हजार के जेवर मंगवाये थे। गिल्लूमल रोने लगे, कहा कि लड़के का यही हाल रहा तो गोमती में डूब मरूंगा।

महाशयजी ने सब बातें सुनी, और कहा: "शान्त रहो और इसका प्रबन्ध मुझ पर छोड़ो। तुम्हारी जो रकम बर्बाद हो चुकी सो हो चुकी, आगे नहीं होगी।"

महाशयजी सलाह-सूत लेने के लिए बाबू बंसीधर के यहां पहुंचे। वह चाहते थे कि बाबू साहब अपने प्रभाव से पुलिस की धमकी दिलवा दें, मगर बाबू साहब दौरे पर गए हुए थे। उन्हें बंगले पर खोखा बाबू ही मिले। प्रसंगवश उन्होंने खोखा को सारा काण्ड सुनाया। वह उत्तेजित हो उठा, उसने कहा: "मैं आपकी मदद करूंगा, अपने इलाके के दस-बीस ऐसे लड़के बटोर लीजिए जो अंग्रेज़ी स्कूलों में पढ़ते हों और इन सब अंधविश्वासों से नफरत करते हों। रौब दिखलाने के लिए मैं अपने एक अंग्रेज दोस्त को भी लाने की कोशिश करूंगा।" खोखा ने अपने गुरुभाई और सहपाठी जेम्स से कहा, एक मजेदार नाटक में पार्ट करोगे। फिर सब बात बतलाई तो जेम्स इस नाटक में पार्ट करने को खुशी-खुशी राजी हो गया। शाम को महाशयजी ने स्कूली लड़कों को बटोरना शुरू किया। पण्डित शिवदीन के पुत्र छंगू उर्फ सुखदीन उर्फ श्यामनाथ शर्मा भी इसी चक्र में बुलाये गए। जेम्स अपने घर में यह कहके आया था कि आज रात वह देशदीपक के घर में ही रहेगा। एक अंग्रेज जवान के साथ जब इलाके के थाने में पहुंचा तो थानेदार की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने यह भी न पूछा कि किस अंग्रेज अफसर का बेटा है। घबराहट में खुद दो सिपाहियों को साथ लेकर गिल्लूमल के घर की ओर चल पड़ा। दरवाजे खुलवाये गए। मुफ्त का माल चबाकर विलायती नशे में धुत्त उसके मुसाहब बैठके में पड़े थे। जोशीले लड़कों ने उन्हें पकड़कर बांधा और मारना पीटना शुरू कर दिया। तब तक देशदीपक जेम्स, थानेदार, गिल्लूमल के साथ अंदर जा पहुंचे। शाहजी सायबान में कुज्जी और चखौलियों के मजे ले रहे थे। थानेदार ने उन्हें देखा, कहा: "ये तो नब्बू है साला।" आगे बढ़के कमर पर एक लात जमाई। दरवाजा खुलवाया गया, जेम्स ने थानेदार से कहा: "अरेस्ट दिस घोस्ट किंग।"

शमीम और भगौती की नींद और नशा दोनों ही एकदम से उतर गये। भगौती कांपता हुआ उठ खड़ा हुआ। देशदीपक उसे देखते ही क्षण भर के लिए अपना विवेक खोकर अंग्रेजी गुस्से में आ गया। शाहे जिन्नात उर्फ भगौती परसाद के गालों पर देशदीपक ने तड़ातड़ दो करारे तमाचे रसीद किये और पूछा: "अपना नाम बता।"

"............"

"जल्दी बतलाओ साहब को।" थानेदार भी डपटे।

"भगौती परसाद।"

"आस्क हिम टंडन, व्हेयर इज दैट ब्लडी किंग। आई वाण्ट टू सी हिम।"

"हां, तुम्हारा वह शाहे जिन्नात कहां है भगौती परसाद?"

रोते हुए भगौती बोला: "मालूम नहीं हुजूर। ये—ये सब मुझे स्याले मुख्तयार अहमद ने सिखा-सिखा-सिखा कर (रोना शुरू किया)। नीचे बैठक में हैगा साला।"

"और यह औरत कौन है?"

"स—स – समीमबानो हैगी।"

देशदीपक ने धीरे से जेम्स से कहा: "इसके बाप को बुलवाकर पूछो कि सैयद का अभिनय करते हुए जो गहने आज इसके लिए मंगवाये थे उसमें से इस औरत के बदन पर कितने हैं वह सब उतरवा लो और इसे जाने दो।"

जेम्स की आज्ञा से शमीम के नये जेवर पहचाने गये, शमीम ने खुद ही उतार-

उतारकर रख दिये। उसी समय घर के बाहर कई कुप्पियों और दो एक मशालों की रोशनी में महाशय मुकुन्दी लाल एक चबूतरे पर खडे होकर भाषणनुमा अदाज मे जमा हो गई भीड़ से कह रहे थे "देख ली ना आपने इनकी धूर्तता। कैसा कपट जाल फैलाया था। हम पवित्र आर्य सन्तानों को कैसे-कैसे धोखे देकर यह दुष्ट लूटते हैं। झूठमूठ के सैयद और जिन्न परेतों का ढोंग रचाकर म्लेच्छ ठग परम पवित्र ऋषि मुनियों की सन्तानो का धरम बिगाडते हैं।..." महाशयजी के शब्दो से आर्य सन्तानो की बस्ती मे कपटी और धूर्त यवनो के प्रति क्रोध और उत्तेजना फैल रही थी।

ऊपर देशदीपक को अलग ले जाकर थानेदार समझा रहा था: "जेवर सब मिल ही गये हुजूर। नीचे उन बदमाशों को भी आपके लोगो ने खूब सजा दिलवा दी है। अब वे लोग इधर आने की हिम्मत नही करेंगे। सलाह कर ले, जो हुक्म हो वह किया जाय। मेरे खयाल मे इनकी रिपोर्ट न दर्ज करायी जाय। इन पर मुकदमा चला तो शहर के मुसलमान भडक सकते हैं।"

देशदीपक ने जेम्स से बातें की। दोनो ने यही उचित समझा कि तवायफ की लड़की को उसके घर भेज दिया जाय और तीनों जालसाजों को भी चेतावनी देकर छोड़ दिया जाए।

यही हुआ। चलते समय महाशयजी ने देशदीपक और उसके मित्र को बहुत-बहुत धन्यवाद दिये और कहा: "यू डिड गुड सर्विस आफ गाड, सर। गाड सेव यू सर। गाड सेव द क्वीन सर।"

देशदीपक को मैक्समूलर के भारत के विपरीत एक ऐसे भारत के दर्शन हुए जो घृणा के योग्य था। इतने ज्ञान-समृद्ध महान देश का ऐसा अध-पतन क्यो हो गया है! खोखा का भावुक नवयुवकोचित हृदय पीड़ा से भर उठा। घर आकर सोने से पहले जेम्स ने हँस कर कहा था: "तुम अपने देशवासियो को गधे से घोड़ा बनाने की नाकाम कोशिश कर रहे हो टंडन। तुम्हारा देश गधो का देश है।"

सुनकर खोखा को बुरा बहुत लगा मगर कुछ जवाब न सूझा। चुप रहा।

कुछ दिनो के अशुभ ग्रह आये थे। गिल्लूमल के लख्ते-जिगर भगौती परसाद फिर नियम से दूकान आने जाने लगे। उनके लिए बहुरिया की तलाश मे तेजी आयी। जाति के तेली वैश्य थे। शहर मे ही सआदतगंज मे एक जाति ही की लड़की घर मे ही अपने चाचा से फंस गयी थी। इसलिए लड़की के मां बाप भी गरजू थे और भगौती के मां बाप भी। ब्याह की तैयारियां होने लगी।

शमीमबानो का मजनू घर से भाग निकला। नगीनाबाई ने गिल्लूमल के यहां कहलाया कि उनके यहां से मेरी शमीम बहुत बेइज्जती से निकाली गयी थी मगर मैंने उनके लड़के को बाइज्जत पनाह दे रखी है। कल वह कलमा पढ़ने जा रहा है, परसो शमीम से उसका निकाह होगा।

गिल्लूमल घबडाये हुए फिर महाशयजी के यहां पहुंचे। महाशयजी ने कहा: "दस बीस पचास जितने हो सके हिन्दुओं की भीड़ लेकर तहसील की मस्जिद के पास पहुचो। मैं भी भीड़ लेके आता हू।"

अंग्रेजी स्कूलों में पढने वाले खत्री, ब्राह्मण, बनिये, कायस्थ सभी के लड़के बटोर कर महाशयजी ले आये। साहस करके मस्जिद मे धर्म परिवर्तन के लिए तैयार भगौती का हाथ पकड़कर मस्जिद के बाहर घसीट लाये और बोले: "ज्ञानी, ऋषियों की सन्तान होकर भ्रष्ट म्लेच्छों से मिल रहा है। चल मेरे साथ।" घसीटकर ले चले। कुछ तो गिल्लूमल की लायी हुई कायरों की भीड़ थी जो महाशयजी को मस्जिद मे घुसते देखकर भय

से खिसकने लगी थी और कुछ महाशयजी के साथ ओजस्वी युवक थे। भीड़ में घेरकर महाशयजी भगौती परसाद को ले आये और उसका हाथ पकड़े-पकड़े सीधे उसके घर की ओर चले। चारों ओर महाशय की जयजयकार गूंज उठी। मगर पंचों ने गिल्लूमल से कह दिया था कि अगर उसे घर ले जायेंगे तो बिरादरी से निकाले जायेंगे। महाशय जी, भगौती को अपने घर मे लाये। अपने घर में अपने समर्थक युवको की सुरक्षा मे छोड़कर कहा: "इसकी शुद्धि होगी। शास्त्रीजी और बाबू साहब को बुलाकर लाता हूं।"

दूसरे दिन भगौती परसाद शुद्ध हुआ, यद्यपि इसे कलमा पढ़ने का अवसर ही न मिला था। बिरादरी वाले इस पर भी उसे लेने को राजी न हुए, कहा: "मुसलमान के घर खा आया है। मसजिद में हो आया है। अब गऊ का मूत पी के भी शुद्ध नहीं हो सकता।"

बाबू साहब और शास्त्रीजी की राय हुई कि जो लड़की पठान के यहाँ से बचाई गई है उसका ब्याह भगौती परसाद से करा दिया जाय।

इस पर हंगामा मच गया। यह क्या किया, ऊंचे कुल की लड़की नीचे कुल में ब्याह दी। महाशय साला हमारा धर्म भ्रष्ट कर रहा है। इस साले को यहाँ से निकालो। महाशय का धोबी बंद, नाई बंद, कहार बंद, भंगी बंद। इन सबको धमकाया गया कि इनके यहाँ काम करोगे तो मुहल्ले की ही नहीं, पूरे क्षेत्र से अपनी रोजी रोटी खो दोगे।

लेकिन महाशयजी इन धमकियों से भला क्या डरते। भंगी बन्द किया तो नदी के किनारे जाने लगे। फिर नहा धो, कसरत आदि से छुट्टी पाकर दूध ले कर ही लौटते। खुद ही अपने वास्ते दो लिट्टी सेंक लेते। उनको झाड़ू लगाते देखकर उनका एक भक्त यह सेवा भी खुशी से करने लगा। दाढ़ी बाल बढ़ा रखे थे इसलिए नाई की आवश्यकता न थी, साबुन लाकर अपने कपड़े आप ही धो लेते थे। सबसे कहते, बिरादरी दयालु है, मुझे महल्ले बिरादरी वालों ने किफायतदारी सिखला दी।

गिल्लूमल अपने बेटे को नहीं छोड़ना चाहते थे। अपनी दूकान बेचकर बेटे बहू और अपनी बुढ़िया के साथ नागपुर जाकर जम गये। तकदीर ने फिर साथ दिया, बेटे और बहू से भी सुख पाया।

महाशय मुकुंदीलाल को देखकर देशदीपक को लगता था कि भारत देश अभी निर्बीज नहीं हुआ। मैक्समूलर का बखाना भारत शायद फिर से जन्म ले सकता है। हमारा भूतकाल गौरवशाली था तो वर्तमान भी क्यों न बने? उस दिन मैंने तो केवल बचाव के लिए अंग्रेजी स्कूलों मे पढ़ने वाली कुछ-कुछ विद्रोही पीढ़ी को संगठित करने की बात कही थी, महाशयजी ने उसे आनन-फानन कर दिखलाया। आज वह संगठन पहले से अधिक मजबूत हो चला है। महाशयजी कहते हैं कि उचित बात कहने और उसके लिए अज्ञानियों से लड़ाई के अवसर रोज आयेंगे लेकिन मौत केवल एक दिन आयेगी, फिर चिंता क्या है। क्यों न निर्भय होकर महर्षि दयानन्द का अनुकरण करें? आर्य संतानों को फिर से जगायें?

वह ऋषि दयानन्द सम्बन्धी जिनकी अपने माता-पिता और शास्त्रीजी से इतनी-इतनी प्रशंसा सुनकर भी देशदीपक आकृष्ट नहीं हुआ था, अचानक महाशयजी के सहारे वह उनके पास आ गया, हालांकि ईश्वर अभी उससे दूर था।

22

जेम्स का यह वाक्य, "हिन्दुस्तानी लोग गधे हैं। गधे घोड़े नही बन सकते।" खोखा के मन मे गहरी फांस की तरह चुभ गया था। उसने सोचा. मैंने इस काम के लिए जेम्स का सहयोग लेकर चतुराई से अधिक मूर्खता का ही परिचय दिया। अग्रेज जाति के किसी भी युवक के लिए ऐसे कामों में सहयोग देना एक अच्छा विनोद का काम हो सकता है, मगर चूंकि भारतीय उसकी जाति का नही इसलिए वह उसके सुधार मे कोई रुचि नही ले सकता। उसके लिए तो यह देश गधों का देश ही बना रहे तो अच्छा है। जेम्स सिर्फ मजाक उडा सकता है, उसे अफसर बनना है। उसे रौब और अकड का अभिनय करने की बात अच्छी लगी थी, इसलिए मेरे साथ जाने के लिए खुशी से राजी हो गया। वह अब आगे की पढ़ाई पूरी करने के लिए होम (इंग्लैंड) जा रहा है, वहा से हाकिमे आला बनकर फिर भारत आएगा।

अपने मित्र के प्रति यह मान और चिढ़ का भाव बढने-बढ़ते एकाएक मित्र से हटकर उसकी (शासक) जाति पर आ गया। यह ठीक है कि अंग्रेज जाति उद्यमी है, विज्ञान के क्षेत्र मे भी अधिक उन्नति कर ली है, पर है यह वस्तुत. ठगो की जाति। यह लोग चोर भी हैं और सीनाजोर भी। इनकी लूटखोरी की आदत ने अपने हित मे भारत का सारा आर्थिक ढांचा ही तोड़ मरोड़कर बदल डाला है। गदर के बाद करो की ऐसी भरमार हो गई है कि हम भारतवासी दिन प्रतिदिन तगहाल होते जाते हैं। इस तंगहाली के विचार के पीछे अपनी उस तगदस्ती का दर्द भी था जिसके कारण वह 'विदेश नही जा सका।'''

चौक मे चाह डहने पर घनी हिंदू बस्ती मे एक सुन्नी मुसलमान परिवार रहता है। उसकी अपनी मस्जिद भी थी। बड़ा ही शरीफ और मिलनसार परिवार। घर के पुरुषों से ही नही, पास पड़ोस के हिन्दू घरो की औरतो का बड़ा घुला-मिला, मिठबोला ब्योहार था। उस परिवार का एक युवक मुहम्मद यहिया खां देशदीपक के साथ ही पढ़ता था। उसका परिवार भी देशदीपक के माता पिता की तरह यहिया के विषय मे विलायत पास कराने की उत्कट कामना रखता है, परंतु अपनी आर्थिक सीमाओ से बंधा हुआ कुंठित है। वह कुण्ठा माता-पिता कभी-कभी अपने बेटो पर भी लादना चाहते हैं। यहिया और खोखा मे कही ऐसी ही दबी हुई, विद्रोही समानता भी है। दोनों नये विचारों के पोषक हैं, पंडित, मुल्ला और पादरी तीनों से बुग्ज़लिल्लाही महसूस करते हैं। उनका सोचने का ढंग कुछ और है।

असंतोष, ग्लानि और विचार-भरा दिन बिताने के बाद खोखा शाम को कही टहलने को जाने की सोच ही रहा था कि बुद्धू ने हाथ मे 'मुहम्मद यहया खां, चाह डहला, लखनऊ' का छपा हुआ 'विज़िटिंग कार्ड' लाकर दिया। खोखा कार्ड हाथ में लिए गाउन और कलकतिया स्लीपर पहने हुए गुसलखाने और पाखाने के बीच मे मेहतर के आने जाने के वास्ते बनी पिछवाड़े की सीढ़ियों से नीचे उतरा और बरामदे मे कुर्सी पर बैठे दुबले-पतले मंझोले कद के चश्माधारी तरुण को देखकर सीटी बजाई। यहिया ने सिर उठाकर देखा। दो कलियां मुस्कान का एक फूल बन गईं।

"तुम खूब आये दोस्त, मैं अभी-अभी यही सोच रहा था कि कहां और किसके साथ शाम बिताई जाय। आओ ऊपर चलें।"

मुहम्मद यहिया देशदीपक के कमरे मे आज पहली बार आया था। यों नीचे ड्राइंग-रूम या बरामदे में वह दो-तीन बार पहले भी आ चुका है। कमरा बड़ा और खिड़कीदार है, निवाड़ का पलंग, कुर्सी-मेज और एक छोटे कोच से भरा-भरा शानदार है। एक खूबसूरत दीवाल घड़ी टंगी है। शीशे जड़ी अलमारी में किताबें करीने से रखी हैं। पलग के पास और मेज पर कैंडिल स्टैंड। कमरे में घुसते ही मुहम्मद यहिया चारो ओर नजर घुमाते हुए दोनों हाथ फैलाकर नाटकीय ढंग से बोला : "वाह, लगता है, लंदन में रहने वाले किसी स्टूडेंट के कमरे मे आ गया हूँ। तू किस्मतवाला है यार, तेरे अब्बा मियां मेरे अब्बा मियां से ज्यादा कंसिडरेट हैं।"

"मेरे पापा तो यह मकान बनवाकर पैनीलैस हो गये हैं भाई। यह फर्नीचर तो मुझे डेविड चोपड़ा की मदर ने प्रेजेण्ट किया। यह बंगला जब बना, तो पापा ने फर्नीचर उन्हीं के यहां से खरीदा था। और सब चीजों के दाम लिए मगर मेरे कमरे की सजावट के नहीं लिए। बचपन से ही वह मुझे बहुत अफेक्शन देती हैं।"

"डेविड तो इंग्लैण्ड गया है ना ?"

"हां, वह और सोमू दोनो चोपड़े गये हैं।"

"तुम कब जा रहे हो ?"

"मेरे फादर-मदर किसी से कर्ज लेकर मुझे इंग्लैण्ड भेजें, यह मुझे पसन्द नहीं।"

"तुम्हारी उम्र-हजारी हो यार, मेरे साथ भी हूबहू यही प्राब्लम थी। मगर मैंने उसे हल कर लिया।"

"किस तरह ?"

"लाहौर मे मैडिकल कालेज खुल गया है।"

"हाँ-हाँ, उसे तो अब कई बरस हो चुके है। मैंने भी वही जाने का इरादा···"

"ठीक सोचा। अमां, इंग्लैण्ड रिटर्ण्ड मुहम्मद यहया खान, आई० सी० एस०, के बजाय लाहौर रिटर्ण्ड डा० मुहम्मद यहया खां, एल० एम० एस०, कहलाना क्या कम शानदार है ?"

"वाह मेरे मिट्टी के शेर ? तो तुमने अपने वालिद साहब को राजी कर लिया ?"

"मैंने कहा, सीधी सी बात है, एक तो खर्च कम, दूसरे शहर के मुसलमानों मे पहला एल० एम० एस० डाक्टर आएगा। बंगाली बाबू की धोती ढीली कर दूंगा। अब्बू मियां राजी हो गए। जानते हैं, बंगाली डॉक्टर के ढाई घड़ी से हुन बरस रहा है।"

देशदीपक बोला : "तुम कह चुके ?"

"हाँ।"

"अब मेरी बात सुनो।"

"सुनाओ।"

"तुम मेरी मां और पापा के सामने यही कह दो।"

"क्यो ?"

"वे मुझे लाहौर भेजने से हिचकते हैं। कहते हैं नया शहर है, वहा कोई जान-पहचान नहीं है। कहते हैं कलकत्ते चले जाओ, लेकिन मैं वहा जाना नहीं चाहता।"

"क्यो ?"

"इसलिए कि किसिम-किसिम की गार्जियनशिप मुझे रास नहीं आ सकती।"

"तो एफ० ए० ज्वाइन कर लो। तुम तो स्कालर-टाइप आदमी हो !"

"मैं चाहता हूँ कि जल्दी ही कमाने लायक आदमी बन जाऊं। तुमने जो मुस्लिम

मरीजों की भीड़ दिखलाई तो मुझे हिन्दू मरीज दिखलाई देने लगे।"

दोनों हंस पड़े। देशदीपक फिर एकाएक गम्भीर होकर बोला : "क्या करें यार, ये अंग्रेज कमबख्त हमें जीने नहीं दे रहा। हमारे यहां बनारस के बाबू हरिश्चन्द्र ने एक बड़ा चुभता हुआ मजेदार दोहा लिखा है।"

"क्या ?"

"अंग्रेजी राज सब साज सबै सुख भारी।
पै धन बिदेस चलि जात यहै अति ख्वारी।।"

"वाह, मखमल में जूता लपेट के मारना इसी को कहते है। बहुत पसंद आया। टैक्सों की भरमार है, इनकम टैक्स, आबकारी टैक्स, यह कमबख्त नमक जो हमारे यहां गर्मी में मकान के दरवाजे पर गाय-बैलों के चाटने के लिए रख दिया जाता है, कुछ न हो तो भी नमक के साथ गरीब-से-गरीब आदमी भी रोटी खा सकता है—मगर उस पर भी टैक्स। कोर्ट में लगाए जाने वाले स्टैम्पों की कीमत इतनी बढ़ी हुई है कि मुकदमे लड़नेवालों के दिवाले निकल जाएं।"

देशदीपक ने हंसकर कहा : "बनारस में, हाउस टैक्स लगाया तो लोग उबल-उबल पड़े। वहां के बम्हन पण्डितों ने अपनी पुरानी दकियानूस चाल अपनाई। कहा, राजा के घर धरना देंगे, अनसन पाटी लेकर के पड़ रहेंगे। उनके साथ लगभग तीन लाख आदमियों की भीड़ धरना देने के लिए जा पहुंची। कलक्टर को गोरी फौज बुलानी पड़ी थी जनाब।"

मोहम्मद यहिया का चेहरा गम्भीर हो गया। देशदीपक ने अपने बौद्धिक जोश में विषय को और आगे बढ़ाया, बोला : "मगर कमाल तो किया था बम्बई के एक सेठ गोबर्धन दास ने। असिस्टेंट इन्कम टैक्स कमिश्नर, मि० हन्टर को ऐसे कस-कस के लाजिक के हन्टर लगाये हैं कि पढ़ के जी खुश हो गया यार।"

यहिया बोला : "क्या कहा गोबर्धन ने ? और किस मौके पे कहा, जरा सिलसिलेवार बतलाओ।"

"बम्बई में लगाया इन्कम टैक्स। वहां कोई बबीन फोर्ट है। जब टैक्स लगा तो लगभग चार हजार लोग मामलतदार की कचहरी में जमा हो गए। सबने कहा कि साहब यह टैक्स लगाकर तो आप हमें गरीब बना रहे हैं। हन्टर साहब बोला, इतने बड़े मुल्क का इंतजाम करना है, खर्च तो बढ़ेगा ही और टैक्स भी लामुहाला बढ़ेंगे। इस पर एक गोबर्धनदास थे, वह बोले, साहब आपने अपने हर महकमे के खर्चे बेतहाशा बढ़ा रखे हैं, उन्हें कम कीजिए। एक-एक अंग्रेज अफसर की तनख्वाह इतनी होती है कि उतने धन से सारा महकमा चलाया जा सकता है। यह लूट कम कीजिए, हमको क्यों गरीब बनाते हैं ?"

"इस पर हन्टर क्या बोला ? बहुत तना होगा साला।"

"अरे लालभभूका हो गया होगा कमबख्त। बहुत तपकर बोला, खर्च कम करने के बारे में आपको कुछ कहने की जरूरत नहीं। सरकार खुद उन्हें कम करने के उपाय सोच रही है। उस पर गोबर्धनदास ने कहा, जी हां, अखबारों में हमें तसल्लियां तो खूब दी जाती हैं, मगर उसके साथ ही साथ नए-नए टैक्सों के बहाने से आपकी यह लूट भी दिन-ब-दिन बढ़ती जाती है।"

"वाह, मगर इसका नतीजा क्या निकला टण्डन ?"

"नतीजा यह निकला कि सेठ गोबर्धनदास को एक महीने की कैद और चार सौ रुपये का जुर्माना हुआ।"

"वाकई बुरी हालत है। चारों ओर भुखमरी कहत अकाल और मुसीबतों का एक

घेरा सा पड़ गया है। अब बंगाल ने बहुत एजिटेशन किया है तो नील की खेती वहां से हटकर हम लोगों की तरफ बढ़ रही है। मेरे अब्बा को बहुत कम्पेल किया गया नील की खेती के लिए मगर उन्होंने कहा, मैं अपनी रैयत पर यह दबाव कभी नहीं डालूंगा।"

"तब फिर? तुम्हारे फादर तो यह कहकर मुसीबत में पड़ गये होंगे?"

"नहीं, महाराजा जहांगीराबाद का दबाव पडा इसलिए किसी तरह यह मुसीबत टल गई, मगर अब यह जो भुखमरी बढ़ रही है उसका क्या किया जाय? उड़ीसा का क्या हाल हो रहा है? और वहां का कहत अब तो मद्रास तक किनारे-किनारे बढ़ता ही जा रहा है।"

"जी हां जनाब, और यह दुर्गत उस देश की हो रही है जिसके बारे में मैगास्थनीज लिख गया है कि इस देश में कभी अकाल नही पडता।"

थोड़ी देर तक दोनो के बीच मे खामोशी की दीवार खड़ी रही। देशदीपक बोला: "मैं देख आऊ नीचे, अगर पापा हो तो उनसे अपने लाहौर जाने की बात चल कर कहो। शायद तुम्हारे जाने की बात सुनकर वह मेरे वास्ते भी लाहौर को बिल्कुल अन्जाना शहर न समझें।"

देशदीपक तेजी से उठकर छत पर चला गया और आंगन की तरफ झुककर देखा। महरी की लड़की कट्टो आंगन पार करती नजर आई। खोखा बोला: "ए कट्टो गिलहरी, देख पापा हैं कमरे में।"

कट्टो गिलहरी ने तोला भर की जबान न हिलाकर मन भर का मूड़ हिलाया।

लखनऊ और कानपुर के बीच में अब रेल चलने लगी थी। इंडियन ब्रांच रेलवे ने लाइन बनाई मगर अब इस कंपनी का नाम ओ० आर० आर० यानी अवध रुहेलखंड रेलवे कंपनी हो गया है। दोनो किनारो को जोडने के लिए बीच में गंगा का पुल बनना शुरू हो गया है। एक दो साल मे जब पुल तैयार हो जाएगा तो कानपुर तक यात्री सीधे रेल से ही आ जा सकेंगे। देशदीपक टण्डन और मोहम्मद यहिया खां ने इसी ट्रेन से यात्रा की, नाव से गंगा पार करके कानपुर मे ईस्ट इंडियन रेलवे पर सवार हुए और चौथे दिन लाहौर पहुंच गये।

शहर की ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं, मन्दिरों के सुनहरे कलश और मस्जिदो के बड़े-बडे गुम्बद दूर से ही देखनेवालो का ध्यान अपनी ओर खींचने लगते हैं। भीड़ भरे बाजार और कोलाहल से भरी हुई मंडियां देखकर लगता है कि हम आदमियो और सवारियो के एक घनघोर जंगल मे आ गये है। मोहम्मद यहया की बीवी के खालाजाद भाई ने दोनो की बडी आव-भगत की। यहया से कहा: "तुम्हारे दोस्त के लिए मैंने अपने एक खत्री दोस्त के यहां ही खाने का इंतजाम करवाया है। मेरे ख्याल में वह अब आते ही होंगे। (देशदीपक से) बहुत उम्दा आदमी हैं पुरी साहब, खानदानी हकीम हैं और नये खयालात के यानी कि दयानन्दी आदमी हैं। और मैंने आप दोनो के एडमीशन के लिए भी प्रिंसिपल साहब से बात कर रखी है। आज शहर से आप लोग नये पुराने हो लीजिए। फिर छुट्टियो के दिनो मे मैं बुलाऊंगा आप लोगो को।"

हकीम रामलाल पुरी के पुत्र ब्रिजनाथ आ गये। ब्रिजनाथ आयु में इन लोगो से लगभग दो-चार बरस बड़ा होगा। पिता के साथ ही हिकमत के खानदानी धन्धे में लगा है। सफेद बुर्राक पायजामा, नए फैशन की कालरदार लम्बी कमीज, कानो मे छोटी-छोटी सोने

की जालियां और सफेद बुर्राक साफा बांधे कसरती बदन का, लम्बा चौड़ा ब्रिजनाथ देखने में आकर्षक और व्यवहार में बहुत मीठा था। उन्हें देखते ही यह्या के रिश्तेदार अबूबक्र मियां बोले - "अपने मेहमान को ले जा बर्खुर्दार, और देख, मुझे आज ही यह खुशखबरी मिल जानी चाहिए कि तूने टण्डन साहब के रहने के वास्ते माकूल इन्तजाम कर दिया है।"

"वो तो मैं कर भी चुका चचा, अपनी गली के नुक्कड़ पर ही लाला रामदित्ता मल की दूकान के ऊपर एक कमरा लगभग खाली ही पड़ा था, उसे एक रुपया महीने भाड़े पर ले लिया है। और जब तक इनके खाना पकाने वाले का इन्तजाम नहीं होता तब तक ये मेरे घर ही में खाया करेंगे।"

"तू एक काम मेरा भी कर जा सोणिए, मेरी नन्हो महरी की नब्ज देख जा। चार दिन से बुखार में पड़ी है, मैंने तो समझा था मौसमी सर्दी-जुकाम होगा, मगर उतरता ही नहीं है। जरा देख तो ले पुत्तर।"

महाशय रामलाल पुरी का परिवार बहुत ही सभ्य और सस्कारी था। नीचे बैठके में उनका दवाखाना मरीजों की अच्छी खासी भीड़ से भरा हुआ था। घर में महाशय और ब्रिजनाथ की पत्नियां तथा उनकी एक पुत्री और ब्रिजनाथ के दो छोटे-छोटे बच्चे थे।

देशदीपक के आने पर लड़की और बहू तो घर के काम-काज में लगी रहीं, परन्तु हकीमजी की पत्नी देशदीपक के पास आकर बैठ गई। देशदीपक ने उठकर पैर छुए। हकीम जी की पत्नी का चेहरा छोया की अपनी मा के चेहरे से इतना मिलता-जुलता लगा कि उसे अपने मन की चौंक को संहालने में संयम करना पड़ा। बातें होने लगीं, लखनऊ में कितनी बिरादरी हैं।"भला टण्डन हो, टण्डन तो अपने पंजाब के ही हैं।"

"जी हां, हमारे यहां भी यही माना जाता है। वैसे हमारा खानदान तो लखनऊ में लहरपुर से आया था। अकबर के दीवान राजा टोडरमल हमारे…"

"होंगे, होंगे, हम लोग तो पुरी हैं।"

"मैं तो यह सब जानता नहीं, माता जी। मैं तो यह जानता हूं कि आप हमारी खत्री बिरादरी की हैं। घर से इतनी दूर आकर भी अपनों से दूर नहीं हुआ, आपको देखकर सच मानिए, मुझे यही लगता है कि मैं अपनी मां को ही देख रहा हूं। बहुत मिलती है आप दोनों की शकल।"

हकीमजी की पत्नी ने यह सुनकर देशदीपक को और भी अधिक स्नेह-स्निग्ध दृष्टि से देखा। "मां तो हूं ही पुत्तर, अब इस घर को अपना ही घर समझना, अच्छा। किसी चीज-वस्त की फिकर कभी न करना। बिरजू ने तुम्हारे लिए बिलकुल पास ही कमरा लिया है।"

"जी हां, यहां आने से पहले मैं बिरजू भाई के साथ उस कमरे को देखकर ही आ रहा हूं। बड़ा हवादार चौबारा है।"

"ये जो अपना रामदित्ता है न, इसके दादा ने अपनी रंडी के लिए बनवाया था इसे। सब महल्ले बिरादरी वालों ने बहुत कहा सुना कि इसे यहां न रखो, पर रामदित्ता का जो दादा था न वो बड़ा जबरा था, किसी की एक न सुनी। नीचे इतर फुलेलों का कारखाना खोला, दुकान खोली। पीछे वो मर गई तो सब कहें कि चुड़ैल हो गई है। घर में कोई किराएदार तक न टिके। तब रामदित्ते के बाप ने हकीमजी से कह्या कि तायाजी भूत झाड़ने वाला बुलाओ। तो हकीमजी बोले, कि मैं भूत-ऊत नहीं मानता। उन्होंने ही अपने जान-पहचान के एक तेली को भीतर का पूरा घर पांच रुपये भाड़े पर दिलवा दिया। ऊपर का

चौबारा उसके किसी काम का नहीं, खाली पड़ा रहता है, वही हकीमजी ने तुम्हारे लिए ले लिया है।"

"अच्छा है मांजी, अगर वह चुड़ैल उस कमरे में होगी भी तो उसकी चुटिया काट कर अपनी जेब में रख लूंगा।"

इस पर हकीमजी की पत्नी ही नही, बिरजू की पत्नी और बच्चे भी हंस पड़े। फिर सभी भोजन के लिए उठे।

भोजन सीधा-सादा, पर उसके आगे-पीछे वैदिक मंत्रो का आडम्बर जाल लिपटा हुआ। हकीमजी, बिरजू और देशदीपक तीनो साथ ही भोजन के लिए बैठे। आरंभ प्रार्थना से हुआ—

"ओं सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्य्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै। ओं शांतिः, शांतिः, शांतिः।"

फिर थाली के चारो ओर पानी फिराकर अन्न के कई ग्रास ओं भूः, ओं भुवः, ओं स्वः कहकर रखे, आचमन लिया, आंख मूंदकर हाथ जोड़े फिर भोजन आरंभ किया। देशदीपक के लिए इस आडंबर जाल के कारण कुछ क्षण विकट मनोद्वंद्व के बीते। मंत्र तो खैर उसे याद नही थे फिर भी क्या वह थाली के चारों और पानी फेरने वगैरह का आडंबर करे। उसने अभी तक अपने घर में कभी यह सब तमाशे नही किये थे। मां और पापा तो थाली के आगे हाथ जोडकर खाना आरंभ कर देते थे। मगर देशदीपक के लिए वह भी कभी आवश्यक नही रहा। हां, कभी-कभी जब अपनी अंग्रेज शिक्षिका अथवा श्रीमती मैगी चोपड़ा के यहां भोजन करता तो सब बच्चों के साथ ही अंग्रेजी की प्रार्थना किया करता था। यहां भी वैसा ही नाटक करने में क्या हर्ज है? कुछ भी हो, अपने संस्कारो की नकल विलायती संस्कारों की नकल से अधिक मनो-स्वास्थ्य-दायिनी है। फिर जैसा देस वैसा भेस। आज पहला-पहला दिन है, यह सोच कर देशदीपक ने भी थाली के चारो ओर पानी फेर लिया, कुछ चावल भी छिटा दिए, पानी का आचमन लिया और आंखें मूद कर हाथ भी जोड़े। खाते समय कोई बोलता नही है, न खाने वाले, न परोसने वालियां। वस्तुएं सामने आती गयी, जिसकी जो और जितनी इच्छा हुई लिया न लिया।

भोजन समाप्ति के बाद फिर आचमन लेने की क्रिया हुई। हाथ जोड़े गए, ओम् उच्चारकर सब एक साथ उठे।

हकीम रामलाल पुरी देशदीपक टंडन को फिर अपनी बैठक उर्फ दवाखाने में ले गए। बहुत कुछ बतलाया। यहां आर्यसमाज स्थापित हो गया है, ऋषि दयानन्दजी महाराज यहां पधारे थे। बुलाया तो उन्हे ब्रह्मसमाजियों ने था, लेकिन यहां शरीफजादो पर उनका बहुत प्रभाव पडा। जगह-जगह आर्यसमाजों की स्थापनाएँ होने लगी। स्वामीजी ने बंबई में आर्यसमाज स्थापित करते समय कहा था कि आर्यसमाज ही हमारे संस्कारों को शुद्ध कर अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाता है। आर्यसमाज मूर्तिपूजा नही करता है। आर्यसमाज का सदस्य एक निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की उपासना करता है।

यह वाक्य हकीमजी ने आर्यसमाज की नियमावली से पढ़कर सुनाया। देशदीपक जितनी देर तक हकीमजी के पास बैठा रहा, उतनी देर तक उसे बराबर यही अनुभव होता रहा कि वह एक ऐसे पवित्र दीवाने बुजुर्ग के सामने बैठा है जिसकी बातें लम्बी और उबाऊ होने के बावजूद चुम्बक की तरह उसे कही खीच भी रही हैं। लखनऊ मे एक ऐसे ही दीवाने बुजुर्ग महाशयजी को वह देख ही चुका है। हकीमजी दूसरे दीवाने 'महाशय'

मिले। इन्सान को उन्नति के रास्ते पर चलाना और अपने कर्तव्यों के प्रति एकनिष्ठ बनाना ही मानो उनके जीवन का लक्ष्य था। उसे फिर यह विश्वास हुआ कि ऋषि दयानन्द जी की कृपा से मैक्समूलर की प्रशस्तियों से गौरव मंडित भारत एक बार फिर से जन्म ले रहा है।

हकीमजी स्वयं देशदीपक को उसके कमरे तक छोड़ने आए। तेली की दूकान के बगल में ही घर के भीतर जाने का मार्ग है। रामदित्ता जी के दादा के द्वारा अपनी प्रेयसी के लिए बनवाए हुए घर के बड़े आंगन में मटके और तिल-सरसों आदि के बोरे भरे हुए हैं। नीचे बैल, तेल, कोल्हू आदि का भीड़-भंभड़ भले हो पर ऊपर के चौबारे में जाकर मकानों, मीनारों, शिखरों और गुंबदों से चारों ओर घिरा हुआ लाहौर का विस्तृत आकाश और कमरे में फर-फर आती हुई ठंडी हवा ने देशदीपक को गहरी मानसिक शांति दी। यह लाहौर भी हमारे राजा रामचंद्र के पुत्र 'लव' द्वारा बसाया गया माना जाता है। देशदीपक सोचने लगा कि अयोध्या, लखनऊ और लाहौर के बीच की लंबी दूरियां एक ही राजवंश से जुड़ी हुई हैं। अयोध्या में राम, लखनऊ में लखन, लाहौर मे लव।···मगर ये सब तो पौराणिक नाम हैं, पता नही कितने सच्चे और कितने झूठे नाम होंगे ये सब। स्वामी दयानन्द तो पुराणों को सनातनियों की टके कमाऊ गप्पें मानते हैं। उनका मत है कि मूर्ति पूजा जैनों से आरंभ हुई। गौतम बुद्ध भी अपने को जिन कहते थे। पार्श्वनाथ, महावीर, ऋषभदेव, गौतम, कपिल आदि मूर्तियों के नाम रखकर उनके चेलों ने मंदिर बनवा दिए, फिर शंकराचार्य ने उन्हें पराजित करके महादेव आदि मूर्तियों के पूजन का चलन चलाया।

अकेलापन देशदीपक के लिए कभी नितांत अकेला भी नही होता है। पढने का शौक धुर बचपन से ऐसा लग गया है कि किताब या अखबार नजरों के सामने न भी हों, तब भी उनकी बातें तो आती ही रहती हैं। विचार जब एक दिशा पकड़ लेते हैं तो दौड़ते ही चले जाते हैं।···

सीढ़ियों पर मिली-जुली आवाजें आने लगी। हकीमजी यहिया के सालारजंग जनाब अबूबक्र और बीच-बीच में अपने साथी मोहम्मद यहिया के दो एक वाक्य भी सुनाई पड़ जाते हैं। देशदीपक लेटा था, आवाजों ने उसे फुर्ती से उठा दिया।

"हमाई नन्हों बतलाती थी कि इसमें चांदबाई की रूह अब भी घूमा करती है।"

"ये सब जाहिलों के चोंचले हैं, अब्बूमियां। हमारे वेदों मे रूह भटकती नही, बल्कि ईश्वर से जा मिलती है।"

"बहरहाल, आपने यह काम अच्छा किया हकीमजी कि हमारे लखनवी मेहमान को चंदाबाई के कोठे पर टिका दिया ह-ह-ह।"

देशदीपक कमरे के दरवाजे के बाहर आने वालो के स्वागत के लिए खड़ा हो गया। हकीमजी और अब्बूमियां के पीछे यहिया के दुबले-पतले चश्मे वाले चेहरे को देखकर खोखा के मन की कली-कली खिल गयी। यहिया के लिए खोखा के मन मे लखनऊ में कभी ऐसा स्नेह नही उमड़ा था।

"कहिए जनाब, चांद की माद में आपको चांदनी मिल रही है या अंधेरा?" यहिया ने खोखा से पूछा।

"अभी तो दोनों एक दूसरे को निगलते नजर आ रहे हैं, पता नही अंत में क्या बाकी बचेगा।"

इस पर एक जोरदार ठहाका लगा। अधेड़ उम्र के मस्तमौला से लगने वाले अब्बूमियां बोले: "टंडन साहब लाहौर मे आपका पहला दिन अब तक कैसा गुजर रहा है?"

खोखा बोला : "क्या अर्ज करूं मियां साहब, आप लोगों के संग-साथ ने मुझे करीब-करीब यह भुला ही दिया है कि कभी लखनऊ में भी रहता था।"

"अजी, अभी क्या भूले हैं, लाहौर तो आपको अभी अपने वो-वो रंग दिखलाएगा कि लखनऊ की याद ही भूल जाएंगे। सफर से थके तो नहीं हैं? चलिए, आपको लाहौर की कुछ सैर करा लाऊं।"

हकीमजी बोले : "ये अपना जो अबूबकर है न, इसके पैर में चक्कर बना हुआ है।"

"अमां तो क्या मेरे उस चक्कर का हाल भी लिखा है तुम्हारे वेदों में।"

मियां अबूबक्र की बात सुनकर सब लोग हंस पड़े। हकीमजी ने मुस्कुराकर कहा : "भैए, हमारे वेदो में तुम्हारे भी चक्कर छुड़ाने की बात लिखी है। हमारे ऋषि दयानन्दजी कहते हैं कि खाली हिंदू ही नही मुसलमान भी चक्करों में पड़े हैं, ईसाई भी···"

"अरे हा, हां, तुम्हारे दयानन्द ने तुम सब को घनचक्कर बना दिया है। टंडन साहब, चलो तुम्हें सैर करा लाएं। कल से तो आप लोग अपने कालेज की पढ़ाई में और खूबसूरत गोरी नर्सों से नजरें लड़ाने में मसरूफ हो जाएंगे।"

मैडिकल कालेज की इमारतें बड़ी और भव्य हैं। अहाते में प्रवेश करते ही लगता है कि हम मानो अपने ही अनुशासन में बंधकर कुछ नए से हो गए हैं। लम्बे-चौड़े पंजाबी जवान, उभरती डाढी-मूंछों वाले सिख, मुसलमान और हिंदू सब नपे तुले कदम रखकर चल रहे हैं। शोर अगर है तो केवल फुस्फुसाहटों का ही। हिंदू छात्रों के कानों में पड़ी सोने की बालियां कहीं नहीं दिखाई देती। चारों ओर अंग्रेजी सूट-बूटों का ही बोल-बाला है, मगर साफे अभी हर सिर पर नजर आ रहे हैं। लखनऊ के मोहम्मद यहिया खां और देश-दीपक टंडन नए वातावरण मे अपने आप को जल्द ही घुला-मिला लेते हैं।

देशदीपक शीघ्र ही अपने व्यवहार और काम की लगन के कारण अपने चिकित्सक अध्यापकों और कुछ छात्रों को जल्द ही प्रभावित कर ले गया। किंतु वकौल अब्बूमिया अस्पताल की गोरी और खूबसूरत अंग्रेज नर्सों से नजरें लड़ाने की फुर्सत दिन में काम की वजह से और शाम को हकीमजी के आर्यसमाजी प्रोग्रामों के कारण न मिल सकी। इतवारो और छुट्टियों के दिन अब्बूमियां की आवारागर्दी उन्हें अपनी गिरफ्त मे ले लिया करती थी। अब्बूमियां उम्र से तो चाचा जैसे जरूर लगते थे, मगर दिल रंगीन और जवान था। अब्बूमिया के वालिद रूदौली से लाहौर आ बसे थे। यहीं दर्जा चार-पांच तक पढ़े-लिखे, मैडिकल कालेज में क्लर्की की नौकरी मिली, और घर में एक खूबसूरत बीवी भी। अब्बूमियां उसे बेहद चाहते थे, मगर बदकिस्मती से उसे निमोनिया हुआ और वह अल्ला मिया को प्यारी हो गई। दो बरस की एक छोटी सी बच्ची छोड गई थी, उसे अबूबक्र साहब ने अपनी नानी के हवाले किया और छुटी छड़ाक जिंदगी बिताने लगे। दफ्तर के काम से फुर्सत पाते तो लाहौर की सड़कें नापना शुरू कर देते। किसी दूकान से कुछ खा लिया, कहीं लस्सी पी, यारो में हंसी ठहाके लगाए, हीरामंडी के किसी कोठे पर गाना सुनने चले गए और लौटे तो रशीद हलवाई से बालाई के दो चप्पन खरीदे, एक अपने वास्ते, दूसरा नन्ही की खातिर। अब तक की जिंदगी यों ही गुजरती आयी है। अब्बूमियां के साथ ही देशदीपक ने लाहौर को घूम-घूमकर पहचाना।

रौशनाई दरवाजा, काश्मीरी दरवाजा, मस्ती, खिजरी, यक्की, शाह आलमी, लाहौरी वगैरह नामोंवाले लाहौर के तेरह दरवाजे, लुहारी मंडी, सूतरमंडी, डिब्बी बाजार, पीरमहल, हीरामंडी, चूना मंडी, बच्छोवाली, चहारदीवारी के अंदर जितने बाजार और मंडियां थी, सब घुमा दिए। चहारदीवारी के बाहर बसे हुए लाहौर की पुरानी अनारकली,

नई अनारकली, ग्वालमंडी वगैरह भी धीरे-धीरे एक-एक करके दिखला दी। बादशाही मस्जिद, जहांगीर का मकबरा, किला, महाराजा रणजीत सिंह की समाधि, बुढ्ढू कुम्हार का आवां, छज्जू भगत का चौबारा, सुनहरी मस्जिद आदि जितनी भी शानदार इमारतें थी सब दिखलाईं। अंग्रेजी हुकूमत में जो नए गिरजाघर, कालेज, स्कूल, लाईब्रेरी, कोर्ट-कचहरी आदि की इमारतें बनी हैं, वह भी दिखलाईं।

एक दिन लाहौर का म्यूजियम भी देखने गए। पुरानी मूर्तियों के बारे में देशदीपक ने अब तक पढा सुना तो बहुत था, पर उन्हें देखने का अवसर उसे पहले कभी नही मिला था। सुना है, खेतो में काम करने वाले किसानो को जब धरती से पुरानी मूर्तियां या उनके खंड मिल जाते हैं तो वे उन्हें अपने गांव के किसी पेड़ तले चबूतरा बनाकर सजा देते हैं। इस तरह रक्षा तो अपने ढंग से वे कर लेते हैं, लेकिन अजायबघर बनाकर उन्हें हर तरह से सुरक्षित रखने का यह चलन अंग्रेजों ने ही चलाया।···पढी-लिखी बातें फिर से मन मे कुनमुना उठी। अठारहवी शताब्दी का जज विलियम जोन्स पहला व्यक्ति था जिसने पुराने यूनानी यात्रा ग्रंथो में वर्णित 'पाटलीबोथ्रा' के 'सैन्ड्रोकटस' को पाटलिपुत्र का चद्रगुप्त सिद्ध कर दिखलाया। उसने इतिहास के प्रति हमारी अंधी हो चुकी आखो को फिर से प्रकाश दिया। विलियम जोन्स ने 'एशियाटिक सोसायटी' स्थापित की, बाद में प्रिंसेप ने 'खरोष्ठी' और 'ब्राह्मी' जैसी पुरानी लिपियों की कुंजियां खोज निकाली, और शिलालेखो को पढ़कर बीते कल के इतिहास को फिर से पुनर्जीवित कर दिया। और इस प्रकार संग्रहालय मे पुरानी चीजों को सुरक्षित करने के जतन किए। अंग्रेजों ने हम पर अत्याचार तो बहुत किए हैं और कर रहे हैं, पर हमारे प्रति उन्होने कुछ उपकार भी किए हैं।

इन तमाम सैर-सपाटों, दवाओं और सर्जरी के आपरेशनो की दुनिया में घूमकर भी देशदीपक के मन को सबसे अधिक बांधने वाला था हकीमजी का मिशन-दीवाना व्यक्तित्व। वह चुम्बक की तरह उसे अपनी ओर बार-बार खींच लेता था और उसी व्यक्तित्व के सहारे वह आर्यसमाज के आकर्षण में भी क्रमशः खिचता चला गया।

उन दिनों स्वामी दयानन्द सरस्वती पंजाब के विभिन्न नगरो में घूम-घूमकर बड़ी तेज वैचारिक आंधियां और तूफान ला रहे थे। उनसे शास्त्रार्थ करके कोई भी पौराणिक जीत नही पाता था। वे चार मुंह वाले ब्रह्मा, आठ हाथोवाली देवी, और दस मुख वाले रावण की ऐसी खिल्लियां उड़ाते थे कि सनातनियों के चेहरे नपुंसक क्रोधवश लाल हो जाते थे। तर्कों के बाद उनके पास स्वामीजी पर फेंकने के लिए केवल गालियो के गोले ही बचते थे। अमृतसर, गुरुदासपुर, लुधियाना, जालंधर, मुल्तान, रावलपिंडी—स्वामीजी जगह-जगह घूमते-फिरते हैं, उनके भाषणों से सनातनी हिंदू तो नाराज होते ही हैं, ईसाई और मुसलमान भी उनसे तप-तप जाते हैं। पंजाब में गोसाईं बहुत फैल रहे थे। दयानन्द कहते थे कि खाली पचांग, शीघ्रबोध, मुहूर्तचंद्रिका, भागवत और तुलसीकृत रामायण पढ़ लेने से कोई पंडित नही हो जाता। ऐसे लोग अपने स्वार्थवश मरे हुए पितरो का श्राद्ध कराते हैं। गोकुल के गोसाईं आदि कैसी धूर्तता से लोगों का धन हरण करके धनाढ्य बन गए हैं। बहुत से चेले-चेलियां फंसा ली हैं। गोसाईं लोग 'तन-मन-धन गोसाईंजी को अर्पण' कराते हैं। ऐसा लगता है, मानो साक्षात् श्री कृष्ण के अवतार वे ही हो। भक्ति के आडंबर के नाम पर व्यभिचार फैलाने वालो से आर्यों को बचना चाहिए। झूठ और ढोंग का पोषण करने वाली अंध-भक्ति और पूजा से बचना चाहिए। स्वामीजी के इन वचनो से पजाब के नगर-नगर के पौराणिक जगत मे भयंकर भूडोल आ रहे हैं। कोई धनाढ्य कहता है : "अरे, इस संन्यासी को मार क्यों नही डाला जाता है?"

परंतु जैसे-जैसे उस सच्चे धार्मिक संन्यासी को मारने या उखाड़ने के प्रयत्न किए

जाते हैं, वैसे-वैसे ही उसका प्रभाव जन-मन पर गहराता चला जाता है। पंजाब में वैदिक मंत्रों और हवनों की बाढ़ सी आ गयी। स्वामीजी कहते हैं कि लोगों में अपनी प्राचीन शिक्षा पद्धति के लिए भाव जगाओ अन्यथा हमारी आर्य संस्कृति लुप्त हो जाएगी।

लाहौर मे शिक्षा पद्धति को लेकर आर्यसमाजियो के दो दल बंट रहे हैं। महात्मा मुंशीराम चाहते हैं कि गुरुकुल जैसे शिक्षा संस्थान खोले जायं और लाला लाजपतराय तथा महात्मा हंसराज आदि इस पक्ष के हैं कि वैदिक संस्कारों के साथ ही साथ अंग्रेजी ज्ञान-विज्ञान को भी पढ़ाया जाय। इसके बिना भारत की सुगति नही हो सकती। देश-दीपक अपनी डाक्टरी पढ़ाई के साथ-साथ इन बौद्धिक बहस मुबाहसों में सक्रिय भाग लेता है। आजकल वह तेजी से इस मानस मन्थन में पड़ा है कि भारत की शिक्षा पद्धति नई हो या पुरानी। लालाजी ठीक कहते हैं, अगर हमने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति बिल्कुल ही छोड़ दी तो हम पिछड़ जायेंगे। हमें दुनिया के साथ-साथ रहना चाहिए और उसके साथ ही साथ हमें अपने आध्यात्मिक वैभव को भी सहेजकर रखने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए। मुंशीराम जी पुराने ऋषियों जैसे गुरुकुल की कल्पना करते हैं। उनके खुलने से हजारों बरस पहले का एक सुहावना दृश्य भले ही हमारी आंखों के सामने फिर से प्रकट हो जाय पर वह समय के साथ हमे आगे बढ़ाने में सफल नही होगा।

एक दिन प्रसंगवश खोखा ने सुना कि पंजाब में स्त्रियां निर्वस्त्र होकर स्नान करती हैं, इसलिए आर्यसमाज को इस सामाजिक कुरीति के विरुद्ध जोरदार अभियान चलाना चाहिए। आर्यसमाज को कृष्ण का नाम ले-ले कर इन गोसाइयों की ढोंग भरी पोपलीला का भी नीर-क्षीर विवेक से खंडन करना चाहिए। स्त्री जाति में स्वाभिमान जगाना बहुत ही आवश्यक है। देशदीपक कभी-कभी बड़े अभिमान के साथ समाज की बैठकों में अपने माता-पिता का दृष्टान्त दिया करता था। पिता ने माँ को संस्कृत भी पढाई, तथा अंग्रेजी और बांग्ला भाषाएं भी पढ़ने के लिए प्रेरित किया और नए विचारों से उनका संबंध कराया। हमारे नगर मे वे पहली महिला हैं जिन्होने कलकत्ते की ब्रह्म महिलाओं के अनुकरण में पर्दे की प्रथा को तिलाजलि दी तो सदा के लिए उससे मुक्त हो गईं। स्त्रियो को भी समान रूप से हवन इत्यादि कार्यो में सम्मिलित किया जाना चाहिए। हमारे आर्यसमाजों को भी इस दिशा में तेजी से बढ़ना चाहिए, स्वयं स्वामीजी भी इसी मत का पोषण करते हैं।

अपनी पढाई के तीसरे वर्ष में आते-आते तक देशदीपक लाहौर के आर्य विचारकों और कार्य-कर्ताओ में यथेष्ट प्रतिष्ठा पा चुका था। इन्ही हकीमजी की पुत्री कौशल्या के गौने की बात पर हकीमजी और उनके समधी का कुछ शास्त्रार्थ भी चल रहा था। हकीम रामलाल जी पुरी सोलह वर्ष की आयु हो जाने से पहले अपनी बेटी का द्विरागमन करने के पक्ष मे नही थे। किन्तु उनके धनी-मानी समधी साहब अपने लड़के को चरित्रहीनता के मुसाहिबी चंगुल से मुक्त कराने के हेतु भी अत्यधिक लालायित हो रहे थे। कौशल्या का पति रघुनंदन मेधावी था। उसने अंग्रेजी भी पढ़ी थी, कुछ संस्कृत का भी अभ्यास किया था। अपनी शौकीन मिजाजी में गाने का शौक तो उसे गान विद्या तक ले गया, पर गाने-वालियों के वैशिक जाल में फंसकर उसकी सारी विद्या, बुद्धि उसके मानो अंतरिक्ष मे त्रिशंकुवत् अधर मे लटक गई थी।

नगर की एक प्रसिद्ध गायिका से प्रेम पाने के लिए दो रईस युवको में होड़ पड़ गई थी। एक बड़े धनाढ्य युवक लाला खुशीराम इस कार्य के लिए बड़ा रुपया बहा रहे थे।

किंतु जीत रघुनदन लाल की हुई। पुतली बाई को अपनी गान विद्या, सुदरता और कायासुख से जीतने के बाद रघुनदन ने किसी के आगे यह कह दिया : 'हुस्न और

हुनर पर ईश्वर ने मुझे ही हक दे रखा है। उस तम्बाकू के पिद्दे खुशीराम से जाकर यह कह दो कि दौलत वह सब कुछ नहीं खरीद सकती जो सीरत से सहज ही में पाया जा सकता है।'

यह बात खुशीराम तक पहुंच गयी। उसके इत्तेपित्ते जल उठे। एक प्रसिद्ध गायिका को सूरत और सीरत से ही नही बल्कि दौलत से भी रिझाने के लिए रघुनंदन ने एक जंगल के ठेके की सारी आमदनी पिता की जानकारी के बिना ही खर्च कर डाली थी। जब पिता को यह पता चला तो वह हकीमजी से गौने के लिए बड़ा आग्रह करने लगे। हकीमजी की पुत्री कौशल्या की सुंदरता लाहौर की बिरादरी मे बहुत बखानी जाती थी। रघुनंदन के पिता सोचते थे कि ऐसी सुंदरी बहू के घर में आ जाने से रघुनंदन का मन बदल जायगा, और उधर खुशीराम के मुसाहिब उसे इस भड़ी पर चढ़ा रहे थे कि किसी तरह रघुनंदन की सुंदरी पत्नी को उड़ाकर फलानी नायिका के हाथों सौंप दिया जाय। फिर उसकी नथ उतराई का सौभाग्य आपको मिलेगा, तब साले की नाक कटेगी।

औरतों को उड़ाने वाले एक गिरोह से बात तय हुई, वह गिरोह कौशल्या को उड़ाने की युक्ति में लगा। एक दिन कौशल्या अपने घर से निकलकर पास की गली मे एक सहेली के घर जा रही थी, तभी उस पर अचानक काला कम्बल डाल दिया गया। लोगों के देखते-देखते ही कौशल्या उड़ा दी गयी। 'पकड़ो-पकड़ो' का शोर बढ़ा तो कृष्ण गली में खड़े कुछ युवक कम्बल का गट्ठर लेकर भागते हुए गुंडो के पीछे-पीछे दौड़े। भीड़ अब बचाने वालों के पीछे-पीछे लग गई थी और बढ़ती जा रही थी। गुंडों ने अपने चारों ओर भीड़ का बढ़ता घेराव देखा तो एक गिरजाघर के फाटक पर लड़की को गिरा कर अपना कम्बल लेकर भाग गए। जब तक भीड़ वहां पहुंची, तब तक गिरजाघर का पादरी कौशल्या को अपनी सुरक्षा में ले चुका था।

यों कौशल्या सकुशल अपने घर लौट आई, पर कुशलता मानो उसके भाग्य मे लिखी ही न थी। कौशल्या यदि किसी और की लड़की होती तो शायद उसका यो धोखे से पकड़ा जाना अपराध न माना जाता, किंतु आर्यसमाजी हकीम रामलाल पुरी से खार खाया हुआ कुछ ब्राह्मणों और कुछ बिरादरी वालों का दल जुट कर रघुनंदन के पिता के पास गया और कहा : "लाला जी, यह लड़की अब आप के घर के जोग नही रही, मुसलमानो और ईसाइयों के स्पर्श से भ्रष्ट हो चुकी है। अब यदि इसे आप घर में लाएंगे तो आपको भी बिरादरी से बाहर निकलना होगा।"

रघुनंदन के पिता लाला तीरथरामजी बिरादरी और पुरोहित पाधों के विरोध से डर गए। हकीमजी के घर कहला दिया कि हमने जो बहू का गौना कराने का प्रस्ताव भेजा था वह वापस लेते हैं। धर्म भ्रष्ट हो जाने के कारण हम उसे अपने घर में अब नहीं लाएंगे।

हकीमजी ने कहा : "दानो में से केवल एक कन्या दान को हम आर्य महत्व देते हैं। दिया हुआ दान हम अपने घर में नही रखेंगे। आपकी वह निष्पाप है, उसका अपराध केवल इतना ही है कि उसे धोखे मे उड़ाने का प्रयत्न हुआ था किंतु वह सफल न हो सका। आपकी बहू का कौमार्य अक्षत है, और वह शुद्ध आचरणो वाली है।"

नाऊन के साथ कौशल्या को लाला तीरथरामजी की हवेली पर भेजा गया। रक्षक के रूप मे हकीमजी का बेटा बिरजू और देशदीपक भी साथ गए थे।

लाला तीरथराम ने कौशल्या बहू के आने की बात सुनकर अपनी ड्योढ़ी बंद करवा दी। बड़े घर, बड़े आदमियो की बातें-बिजली की तरह आस-पास के चार मुहल्ले-टोलों में पहुंचने लगी। उधर बिरजू लाला तीरथ की बंद हवेली के चबूतरे पर उनकी बहू,

अपनी बहन को छोड़कर यह कह कर चला आया कि हमने आपकी वस्तु आपके घर पहुंचा दी अब हमारा काम खतम हो गया।

देशदीपक बिरजू के साथ कुछ दूर तक तो गया, फिर एकाएक उसे रोक कर बोला : "तुम अपनी बहन को धोखा दे रहे हो बिरजू भैये। हवेली के द्वार बंद हैं, भीड़ के लोग आते-जाते हैं। मैं कौशल्या को दूसरी बार असुरक्षित छोड़ने के पक्ष में नहीं हूं।"

बिरजू बोला : "तुम्हारी बात से सहमत हूं, पर मैं क्या करूं। पिताजी ने कहा है कुशलो को वहां छोड़कर चले आना। ले जाऊंगा तो वे बिगड़ेंगे।"

"तुम नहीं ले जाओगे तो मैं उसे अपनी जिम्मेदारी पर घर ले जाऊंगा। एक आर्य कन्या ऐसे असुरक्षित नहीं छोड़ी जा सकती।"

कौशल्या फिर घर लौटा कर ले आई गई। हकीम रामलाल पुरी के घर का सारा वातावरण ही इस घटना के बाद बदल चुका था। कौशल्या ने अन्न-जल त्याग दिया था, वह कहती थी कि अब मर जाने के सिवा दुनिया मे मेरी और कोई गति नहीं, एक संस्कार युक्त, शांतिप्रिय परिवार की यह विषम पीड़ा चंदा चुहैल के चौबारे में पड़े हुए देशदीपक को बड़ी बुरी तरह से तड़पा रही थी। क्या से क्या हो गया। कैसा है यह दुर्बुद्ध हिन्दू समाज जो इस निर्दोष कन्या पर इस प्रकार से अत्याचार कर रहा है।

अब तक तो पुराने ढर्रे वाले हिन्दुओं से आर्यसमाजी हकीमजी का शाब्दिक विरोध मात्र ही था, पर अब तो एक धर्म-भ्रष्ट-कन्या के पिता होने तथा उसे शरण देने के कारण वे धर्म और समाज के अपराधी भी हो गए थे। उनके घर का यह दुखद प्रसंग धीरे-धीरे उसके मन को जकड़ता ही चला जा रहा था। हकीमजी की पत्नी, जिन्हें खोखा भी सबके समान बेबेजी कहने लगा था तथा जो हूबहू उसकी मा की प्रतिमूर्ति सी थी, उसका दुख भरा फीका चेहरा देख-देख कर देशदीपक का कलेजा सा फटता था। पता नहीं, कौशल्या का क्या हाल होगा। उस दिन से वह घर में आने-जाने वालों को भी कहीं दिखलाई न पड़ी। कुशलो को अन्न-जल त्याग किए हुए एक सप्ताह बीत चला। पानी तो उसे मना समझा कर थोड़ा बहुत पिलाया भी जा सका, पर अन्न का एक दाना भी वह न ले सकी।

देशदीपक हकीमजी के पास गया, बोला : "ताया जी, एक प्रार्थना आपसे कर रहा हूं, और इसे आपको स्वीकार भी करना होगा।"

गहरी उदासी मे डूबी हुई हकीमजी की आंखें खोखा के चेहरे पर जा टिकीं। खोखा बोला : "कुशलो सौ फीसदी निष्पाप है ! अगर उसके पहले पति ने उसको स्वीकार न किया तो क्या उसका पुनर्विवाह नहीं हो सकता ? आर्यसमाज मे ऐसे उन्नत विचारों के लोग भी अब तो मौजूद हैं।"

हकीमजी की आंखो मे एक चमक आई, फिर बुझ गयी, बोले : "अरे पुत्तर, कहने और करने वालों में बड़ा फरक होता है। यहां के आर्यसमाजियों में भी तो अब आपसी चक्कर चल पड़े हैं। घास पार्टी, मास पार्टी, कालिज पार्टी, गुरुकुल पार्टी···इस समय कोई किसी की नहीं सुन रहा। किसके आगे खुशामद करूं और नाक रगड़ूं ?"

"ताया जी, आपको किसी के आगे नाक रगड़ने की आवश्यकता नहीं। अगर आप लोग आज्ञा देंगे तो मैं कौशल्या से विवाह करूंगा।"

हकीमजी पहले तो फटी-फटी आंखों से उसको देखते रहे, फिर आंखो से प्रेम की गंगा-जमुना बह चली। *अभी देशदीपक टंडन को एल० एम० एस० की डिग्री पास करने* में पांच महीने बाकी थे।

23

बीस बरस पहले अपनी खिड़की के नीचे की गली मे आने-जाने वाले गरीब-गुरबों पर पान की पीक थूक कर अपना मनोरंजन करने वाले घमंड और धन शक्ति पर जाति की ओर से प्रिवी कौंसिल तक मुकदमा लड़ने वाले लाला भुल्लीमल की आर्थिक दशा इस समय बहुत पतली चल रही थी। उनकी उमर भी अब सत्तर के लपेटे में थी। उनके एकमात्र पुत्र लालू उर्फ मैयादास और उनकी पत्नी ने उनकी और उनकी चहेती साली मुल्लू की महतारी की बदतमीजियों से तग आकर हवेली के उस भाग से भी निकाल दिया जिधर वह रहते थे। मन्नो बीबी से विलायत तक मुकदमा लड़ कर वह अब खुक्ख हो गए थे।

मुल्लू की महतारी भी अब अपने लडको के घर मे घुस तक नही पाती। अपने पुरखेलाई रामनरायण के हाते में एक कोठरी मे रहते हैं। साथ रहने वाले आठ किराए-दारों से भाड़े की अठन्नी वसूल करने में भुल्ली की चहेती बुढ़िया को रोज गाली-गलौज करनी पड़ती है। शक्ति से हीन लाला अपनी प्रिया के आतंक से दुःखी और दबे पड़े रहते हैं। खुर्र-खुर्र खांसते हैं। मुल्लू की महतारी जब कोठरी मे घुसती है तो लाला के प्राण सूली पर चढ़ जाते हैं।

लेकिन आज तीसरे पहर वह हंसती हुई आई। उनकी खटिया पर बैठकर उनकी जांघ पर हल्की सी थपकी देकर कहा : "कुछ सुना ?"

"क्या ?"

"अरे मुसद्दीमल का पोता लाहौर मे एक रंडी से ब्याह कर लिहिस हैगा।"

लाला भुल्ली जोश में आकर उठ बैठे, पूछा : "रंडी से ब्याह ?"

"हां। ऊ रंडी के बापे अपनी बिरादरी के हैं। उन्होंने अपनी रंडी बिटिया इसे ब्याह दी नए मते से। बिरादरी ने दूनों का हुक्का पानी बंद कर दिया है।"

लाला भुल्ली के कलेजे में कफ खुड़-खुड़ा रहा था, फिर भी अपनी खांसी को दबाए हुए वे गंभीर मुद्रा में बैठे रहे।

"इन्हें हियन की बिरादरी से नही निकलवाओगे ?"

"हूं।"

"इसकी मैया ने तुमरे ब्याव में झांजी मारी हती। ई के बाप ने मन्नो बीबी के दमाद से मिल के तुमरे दुई-दुई मुकदमे हराए। अब भी का चुप्पे बैठे रहियो ?"

लाला भुल्ली सास ढील कर बड़े उदास स्वर मे बोले : "अरे भाई, उनके पास अंग्रेज का बल है।"

"अरे जब लाहौर की बिरादरी से अंग्रेज सरकार न बोली, तो हियन वालों का क्या बिगाड़ लेगी ?"

लाला भुल्ली की जवानी भड़भड़ा कर जाग उठी। लोगों से चर्चा करने निकले। एक जमाना था जब लाला अपने ताम-झाम पर निकलते थे तो गलियो में हटो-बचो होने लगती थी, सलामें झुकने लगती थी। लेकिन अब बढ़ी हुई दाढ़ी, फटे जूतो और घिसे हुए, अधमैले से कपड़े पहने गलियों से गुजरते चले गए, पर किसी ने उन पर नजर तक न डाली। एक आध जगह 'जै राम जी की' हुई मगर वह भी अधिक नहीं। हाथ में पुराने बखत का चांदी की नक्काशीदार मूठ वाला सोटा अवश्य था। उसी के बल पर अपनी बिसात

जर्जर रुग्ण काया को रेंग-रेंग कर आगे बढ़ाए चले जा रहे थे। पुरोहितजी, पाधाजी, फलानेजी, ढिमाकेजी आदि सबसे मिल आए, कहा : "बिरादरी अगर अब भी चुप रह गई तो सदा के लिए नाक कट गई समझो।"

लाहौर से हकीम रामलाल पुरी की दुर्भाग्यग्रस्त, सुन्दर, गुणवती कन्या को अपनी सौभाग्यवती बना कर लखनऊ आने से पहले ही उनका प्रबल विरोध होने लगा था। लाहौर से खोखा की दो चिट्ठियाँ पाकर बाबू बंसीधर और श्रीमती चंपक लता के चेहरे पीले पड़ गए। बाबू त्रिलोकीनाथ चोपड़ा और मन्नो बीबी को भी इस घटना से बड़ी चिन्ता हो रही थी। खोखा ने अपने विवाह के सम्बन्ध मे सब बातें विस्तार से लिख दी थी। लड़की निष्पाप है, पर लाहौर की बिरादरी ने जब उसे और खोखा को निकाला है तो यहां वाले भी हमसे पुराने बदले लिए बगैर न रहेंगे। मुल्ली लाला गली-गली मे जहर का छिड़काव करते हुए डोल रहे हैं। कुछ न कुछ तमाशा तो होगा ही, उससे क्यों कर निपटा जाएगा?

श्रीमती चंपकलता बोली : "मेरे खोखा ने जो कुछ किया है, उससे मुझे कोई शिकायत नही है। उसने एक भले परिवार और एक अच्छी लड़की की इज्जत बचाई है। लेकिन मुझे सबसे बड़ी चिन्ता यह है कि अब मेरी प्रभा का क्या होगा?"

"तुम्हारी यह चिन्ता मेरी चिंता भी है। क्या हम बिरादरी को फोड़ नहीं सकते?"

तिल्लोकी बाबू बोले : "जो खबरें मुझे अब तक मिली हैं, उनसे तो यही लगता है कि इस बार तूफान जोर का उठेगा और हम इस बार मुकदमा चला कर जीत भले जाए, मगर बिरादरी से न जीत पाएंगे। दिस टाइम दे आर आल एडेमेंट टू टीच अस ए लेसन।"

"तब यही हो सकता है कि हम खोखा और उसकी बहू को किसी अलग घर में रखें।"

बंसीधर की बात सुनकर तिल्लोकी बाबू बोले : "हां, यह हो सकता है कि—"

"यह कैसे होगा भैये जी। मां ने मुझे एक ही एक बेटा दिया है, उसे भी अब ढलती हुई उमर में अलग कर दूं।"

चंपक को बात को आगे बढ़ने से रोक कर बंसीधर ने कुछ झिड़की भरे स्वर में कहा : "नही करोगी तो प्रभा को कैसे ब्याहोगी?"

चंपक चुप, त्रिलोकी बाबू भी कुछ न कह सके, फिर बोले : "टंडन, इसके बाद तो खुद मुझे भी अपने घर में खतरा नजर आता है। सोमू जब लौटेगा तब—।"

नजर बचाए कहीं दूर देखते हुए बंसीधर गंभीर स्वर में कहने लगे : "मुझे लगता है कि इन सुधारवादी लोगों से खाली खत्री ही नही, हर बिरादरी का पुरानापन और उसका दकियानूस ढांचा इस समय चिढ़ा हुआ है और वह बदला जरूर लेगा। और अंग्रेज सरकार के कानून चाहे जितने ताकतवर क्यों न हो, लेकिन अंग्रेज हुक्काम इस बार इन लोगों के खिलाफ कोई सख्त कदम नही उठाएंगे। अंग्रेज जानता है कि उसके बढ़ाए टैक्सो की भरमार से हिन्दोस्तानी मन ही मन मे भड़क रहा है। उस भड़क को निकालने के लिए ही लार्ड डफरिन ने मिस्टर ह्यूम को यह इशारा दिया है कि तुम हिंदुस्तानी इंटेलिजेंसिया के गुस्से को चूल्हे की लकड़ियों की तरह एक जगह बांध कर भड़कने का मौका दो।"

बाबू बंसीधर की यह बात सुनकर बाबू त्रिलोकीनाथ कुछ चौंक से गये, बोले : "क्या ह्यूम का वह आर्टिकल लार्ड डफरिन के कहने से लिखा गया था?"

"भाई, अभी मैं कुछ कह नहीं सकता, लेकिन मेरा अन्दाज यही है कि हमारी सरकार चाहती है कि हमारे पढ़े-लिखे लोग कही बैठ कर गर्मा-गर्म बहसें करें और 'रेजोल्यूशन' पास किया करें। इससे दोनो ही फायदे होंगे, हमारी भड़ास निकल जाया

करेगी और अंग्रेज को सरकारी मशीनरी मे कुछ सुधार करने के सुझाव भी मिलते रहा करेंगे।"

"खैर, इन बातों को छोड़ो अब, लेकिन जो समस्या अपने सामने है, उसे कैसे हल करें।"

श्रीमती चंपक जो गंभीर भाव से बैठी बातें सुन रही थी, एकाएक बोल उठी : "हल वही है जो तुमने सोचा है। खोखा के लिए अलग मकान ले दो।"

बंसीधर गंभीर भाव से सोचते हुए बोले : "अरे भाई, घर अलग ले लोगी यह ठीक है, मगर उसकी जीविका के लिए भी कुछ न कुछ सोचना ही होगा।"

"उसकी फिक्र न करो बंसीधर, बलरामपुर अस्पताल ट्रस्ट के दो-एक मेंबरो से मेरी जान-पहचान है। मैंगी ने अस्पताल के लिए भी काफी फर्नीचर सप्लाई किया है, और फिर खोखा हमारा शान से पास होकर आ रहा है, सर्जरी में ऊंचे नंबर पाए है। उसे काम तो शर्तिया मिल जायेगा।"

कुछ पलों के मौन में तीनों के मन अपने भीतर-ही-भीतर बहुत कुछ बोल गये। बाबू बंसीधर और चंपकलता के चेहरों की रौनक जल्दी-जल्दी, आते-जाते भावों की छायाओं से झंप गई थी। पिछले चार-पांच महीनों से जब से हकीम रामलाल पुरी का पत्र आया, तबसे पति-पत्नी दोनों ही अपने भीतर ही भीतर बहुत घुल रहे थे। बेटे का विवाह जहां खुशियों की हिलोरो सा आना चाहिए था, वहा तोप की सी गरज और धमाके के साथ आया। लड़की बिरादरी की है, पर इस अद्भुत घटना-चक्र से जुड़कर उसके माथे पर एक ऐसा कलंक लगा हुआ है जिसे पति-पत्नी दोनों ही आजन्म न भुला पाएंगे। यों पति-पत्नी दोनो ही इस बात से संतुष्ट भी थे कि उनके बेटे ने हकीमजी की एक बार विवाहिता परंतु मिथ्या लांछन वश छोड़ी गई लड़की से विवाह करके बड़े ही आत्मिक साहस का परिचय दिया है। बंसीधर और चंपक यदि केवल लड़के के माता-पिता ही होते तो इस बात पर सहज ही खुशी मनाते--यदि वह बेटे के माता-पिता हैं, तो एक कुंआरी कन्या के भी हैं। बेटी के हितों की रक्षा के लिए उन्हें अपने पुत्र एवं पुत्र-वधू को अलग रखना ही होगा। मन के मोह-द्वन्द्व की चक्की मे पिस कर चंपक का कलेजा आंसुओं की झड़ी बनकर बह निकला। बंसीधर तुरत उन्हें सम्हालने के लिए आगे बढ़े। त्रिलोकीनाथ चोपड़ा भी सांत्वना देने के लिए कहने लगे : "अरे-अरे, चमेली बहन, तुम अपना जी ऐसे काहे गिरा रही हो भाई। अरे, हमरे खोखा ने कोई खराब काम किया हैगा? अपनी जाती की ही एक बिचारी लड़की की जिन्दगी बचाई है। उसको तो मैं लखनऊ मे आने पर ऐसा ग्रैंड वेलकम दूंगा, कि बिरादरी के लोग देखते ही रह जाएंगे।"

"अगर तुमने उन दोनो को ऐसा वेलकम दिया तो मैं चंपक, और प्रभा को लेकर कहा रहूंगा?"

"तुम बिल्कुल बेफिकर रहो टंडन, हम लोग कही इस पिक्चर मे आवेंगे ही नही। ऐशबाग स्टेशन पर ही खोखा को वेलकम ऐड्रेस दिया जायेगा, और वही से उनको, उनके बंगले मे ले जाया जाएगा।"

"मगर हम लोगों मे से किसी को स्टेशन पर न देखकर खोखा के मन में सही-गलत सवाल भी उठ सकते हैं।"

"उसके लिए मैंगी को भेज दूंगा।"

कानपुर से लखनऊ आने वाली आखिरी गाड़ी शाम को छह बजे ऐशबाग स्टेशन पहुंचती थी। देशदीपक दंपति उसी से आ रहे थे। महाशय मुकुंदीलाल सवा पांच बजे लगभग चालीस सुधारवादी युवकों को लेकर ऐशबाग स्टेशन पर पहुंच गए। पीली मिट्टी

से पुता, गोल मेहराबों वाला छोटा सा स्टेशन, इस भीड़ की रौनक से भर उठा। पंडित प्रभुदयाल शास्त्री भी वहा पहुचने के लिए बड़े आग्रहशील थे किन्तु त्रिलोकी बाबू ने बहुत समझाकर उन्हे यह कह कर रोक लिया कि आप बंसी बाबू के मित्र हैं, आपके रहने से बिरादरी मे कुछ शक-शुबहे भी हो सकते है। त्रिलोकी बाबू ने अच्छी दक्षिणा देकर पांच अन्य ब्राह्मणो को स्वस्ति वाचन के लिए स्टेशन पर लाकर खड़ा कर दिया। माशूकअली की रोशन चौकी भी महाशय मुकुंदीलाल की भीड़ के साथ ही स्टेशन पहुंच गई थी। गाड़ी आने के पांच मिनट पहले ही फूलो के दो बड़े-बड़े गुलदस्ते लेकर श्रीमती मैंगी चोपड़ा भी पहुच गई।

ट्रेन ठीक समय से आई, रोशन चौकी बहुत सुरीली बजी। स्वस्ति वाचन बड़े जोर-शोर से हुआ, मैंगी आंटी ने खोखा और उसकी पत्नी को अपनी बांहो मे भर लिया। फिर कौशल्या को देखकर बोली : "अरे तुम तो लाहौर से चांद उड़ा लाए हो खोखा, कैसी प्यारी है मेरी बहू।" फिर धीमे स्वर मे खोखा से बोली : "तुम लोगों के लिए एक अलग काटेज का प्रबन्ध कर लिया गया है। और अपने मम्मी-पापा की अनुपस्थिति से शकित मत होना। यह सब कुछ पूर्व नियोजित प्रोग्राम के अनुसार ही हो रहा है। अच्छा, अब मैं जाती हूं, किसी को शक का मौका नही देना चाहती। महाशयजी तुम्हे तुम्हारी लालबाग वाली काटेज तक पहुचा देंगे।" कौशल्या के कधे को हाथ से थपथपाकर, खोखा को प्यार से देखते हुए मैंगी चोपड़ा चली गई।

महाशय मुकंदीलाल जी ने वहीं सबके सामने युवक-रत्न डॉ० देशदीपक टंडन के स्वागत में एक शानदार भाषण दिया, और बतलाया : "देशदीपक के ससुर लाहौर के एक प्रसिद्ध आर्यवीर है। उनको नीचा दिखाने के लिए समाज मे बहुत बड़ा षड्यंत्र रचा था, जिसे ईश्वर ने हमारे डॉ० देशदीपक को सद्‌बुद्धि देकर असफल बना दिया। इस साहसी युवक की जितनी भी प्रशसा की जाए वह कम होगी।"

एक भीड़ तो महाशयजी अपनी ही लेकर गए थे, दूसरी भीड़ स्टेशन और उसके आस-पास से आकर जुड़ गई थी। बाहर एक बंद गाड़ी फूलो से सजी हुई खड़ी थी, अन्य गाड़ियां और इक्के-तांगे भी पहले ही से खड़े थे। आगे-आगे रोशन चौकी वाली गाड़ी, उसके पीछे सजी हुई गाड़ी में वर-वधू और फिर साथ आई हुई लड़कों की भीड़ 'आर्य धर्म की जय,' 'स्वामी दयानन्द की जय,' 'आर्यवीर डा० देशदीपक टंडन की जय' के नारे लगाते हुए लालबाग की ओर चल पड़ी। डा० देशदीपक शहर मे अपनी वापसी पर इस अप्रत्याशित हार्दिक स्वागत से एक ओर जहां प्रसन्न थे, वहीं अपने माता-पिता और बहन को न देखकर कुंठित भी। मैंगी आंटी स्टेशन पर कुछ सकेत अवश्य दे गई थीं पर वह संतोष उसके मन को भरकर भी न भर सका था।

विलायती खपरेलो वाली एक पुरानी सी बंगलिया के फाटक पर महरी की चिर-परिचित लड़की कट्टो, जो अब बड़ी हो गई थी, तांबे की चमचमाती हुई कलसिया मे पानी लिए खड़ी थी। बरामदे में बूढ़ा बुद्धू नौकर भी हाथ जोड़े खडा था। महाशयजी बंगलिया के फाटक से ही अपनी भीड़ को लेकर चले गए। कट्टो अड़ गई : "हम नेग लिए बिना छोटी बहू का अन्दर न जाय देब।"

देशदीपक ने मुस्कुरा कर चादी के पाच रुपए कलसे मे डाल दिए। भीतर गया, बरामदा पार करके बैठक मे दाखिल हुआ। बुद्धू ने कमरे के दरवाजे पर खड़े होकर कहा : "पहले भीतर जाओ खोखा बाबू, (धीरे से) सब लोग भीतरे हैं।"

सुनकर खोखा की आखो मे चमक भर उठी। मा, पापा दोनो ही सामने कुर्सियों पर बैठे थे। चंपक तेजी से उठी और अपनी बहू का घूघट हटा कर देखा। बहू बहुत सुंदर

थी, मां की आंखों में पानी भर आया। बहू को छाती से कस कर चिपटा लिया और आंखों से प्यार के आसू बह चले। सास के आलिंगन से छूट कर बहू ने ससुर और सास के पैर छुए। सास ने निछावर करके एक गिन्नी कट्टो को दी। बाबू बंसीधर ने भी एक गिन्नी से निछावर की और बुद्धू को देने के लिए हाथ बढ़ाया। बुद्धू ने सलाम करके वह रकम तो ले ली, पर झगड़े की मुद्रा में बोला : "हम इत्ते मां खुस न होबै बाबू, कंठा लेब, और पांचों पोसाख लेब।"

थोड़ी देर बातें करने में और सास-बहू के नए-पुराने होने में बीती, बाप ने बेटे से सब बातें सविस्तार जानी, फिर बोले : "वेल डन माई लैड, कल त्रिलोकी बाबू तुम्हें हास्पिटल के सुप्रिटेंडेंट डा० मैकेंजी साहब से मिला देंगे, और वहीं तुम्हें अपना अप्वाइंटमेंट लेटर भी मिल जाएगा। और तुम्हारे साथ वो मुसलिम ब्याय जो गया था, कहां है?"

"उसे एक टेम्परेरी अप्वाइंटमेंट मिला है पापा, अमृतसर में। शायद छह महीनों के बाद यहां आएगा।"

बाबू बंसीधर और श्रीमती चंपकलता टंडन बड़े सतर्क होकर छिप कर आए थे, बंगलिया से अंधेरा हो जाने के बाद ही चुपचाप निकले और किराए की गाड़ी भी आगे जाकर ली। लेकिन बिरादरी के लोगों ने वहां भी टोह लेने के लिए अपने जासूस लगा रखे थे। खबर फैलते देर ही न लगी कि बंसीधर और चंपकलता ढोंग कर रहे हैं। इन्होंने अपने बेटे और बहू को दिखाने के लिए ही अलग किया है। बाबू त्रिलोकीनाथ चोपड़ा इस बात को जोरदार शब्दों से कटवाते तो रहे मगर, मर्ज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की।

नगर में नन्न करते हुए भी अब अंग्रेजी दवाओं का चलन चल ही पड़ा था। विशेष रूप से आपरेशन के योग्य रोगों के इलाज के लिए अब जर्राही से अधिक डाक्टरी कायदे की चीर-फाड़ को ही उपयुक्त समझा जा रहा था। निमोनिया और क्षय रोगों के लिए भी अंग्रेजी दवा अब अधिक कारगर मानी जाने लगी थी। फिर भी अंग्रेजी दवाओं की शहर में इनी-गिनी दो दुकानें थीं जिनके आगे तांबे के चमचमाते हुए कलसे एक हाथ-ठेले पर रखे जाते थे। दुकान के नौकर बीच-बीच में एक भरा कलसा उठाकर भीतर ले जाते और खाली लाकर ठेले पर रख देते। दुकान के बाहर उर्दू और नागरी में लिखे हुए साइन बोर्ड टंगे थे : "हमारे यहां सब दवाएं बड़ी शुद्धता से गोमती नदी के शुद्ध जल से बनती हैं। दारू या चर्बी का इस्तेमाल किसी दवा में नहीं होता।"

डा० टंडन ने यों अन्य रोगों के लिए भी, पर विशेष करके सर्जन के रूप में धीरे-धीरे शहर में चमक पानी शुरू कर दी थी। अस्पताल में मरीजों को मुफ्त में ही देखते थे, लेकिन बाहर मरीजों को देखने के लिए उनकी फीस चार रुपए थी, जो समय को देखते हुए ज्यादा थी। डा० साहब के घर श्रीमती कौशल्या टंडन विधिपूर्वक वैदिक मंत्र बोलते हुए हवन करती थीं। उनके घर में आर्यसमाजी प्रभाव के युवकों की बैठक जमने लगी थी।

मुल्ली लाला और उनके साथी डा० देशदीपक की बढ़ती हुई ख्याति से बड़े ही दुखी थे लेकिन उनका वश नहीं चलता था। एड़ी-चोटी का जोर लगाकर उन्होंने डा० टंडन और उनके पिता के छिपे हुए घनिष्ठ संबंधों की आड़ लेकर श्रीमती चंपकलता टंडन और बंसीधर को भी बिरादरी से बाहर निकाल दिया।

अपने निकाले जाने की सूचना पाकर चंपक को गहरा धक्का लगा। गुम्मानी भैये घर आए और बंसीधर से कहा : "तनकुन, हम पिरभा को अपने घर ले जाते हैं। बिरादरी के झंझट से कम से कम हमारी बिटिया बची रहेगी।"

प्रभा ने यह सुना और तुरंत अपने पापा के कमरे में आ गई। उसने सतेज स्वर में कहा : "तायाजी, मेरे पापा, भाई, मां और भाभी जिस जाति से बाहर कर दिए गए हैं, उसमें मैं भी नही रहूगी, हरगिज नही रहूंगी।"

गुमानी उसके तेज और तेहे को क्षण भर निहारते ही रह गए, फिर कहा : "बिटिया हमरे समाज में मरदन की बात तो न्यारी है। पर बिटियन का गुजारा नाही होत हैगा।"

"मेरा हो जाएगा तायाजी, अब तो लड़कियों के भी स्कूल खुल गए हैं। मैं पढाऊगी।"

गुमानी तप गए, कुछ गरमा कर बोले : "अच्छा-अच्छा, जादा चबड़-चबड़ न करो, जाओ भीतर जाओ। बैठो चुपचाप, पढो लिखो। ई तुम्हरे सोचने का काम नही है।"

प्रभा कुछ न बोली। मा भीतर के कमरे से निकल कर बैठक की तरफ जा रहीं थी। प्रभा ने उन्हें देखकर कहा : "मा अगर मेरे साथ जबर्दस्ती की गई तो याद रखना, मैं जान दे दूगी, यह घर छोडकर नही जाऊंगी।" कहते-कहते उसकी आंखें छलछला आई। मा देखती ही रह गई और वह भीतर अपने कमरे में घुस गई। फिर पटापट द्वार बंद कर लिए।

चपक चौंकी, दौड़कर उसके कमरे की ओर गयी और किवाड़ थपथपा कर कहा : "प्रभा, प्रभा, दरवाजा खोलो, तुम्हें मेरी कसम है, खोलो नहीं तो हम पापा को बुलाते हैं।"

थोड़ी देर भीतर-बाहर मौन रहा, चंपक ने फिर किवाड़ थपथपाए, प्रभा ने खोल दिए और लोटकर फिर अपनी खाट पर मुंह औंधा करके लेट गई। चंपक कमरे के भीतर आई, उसकी खाट पर चुपचाप बैठकर उसका सिर सहलाने लगी। प्रभा की हिचकियां बढ़ गईं, चंपक प्यार भरी झिड़की देकर बोली : "इसमें रोने की क्या बात है पगली? अगर नही जाना चाहती है तो न सही। जेठजी विचारे तो तुम्हारे भले के लिए ही कह रहे हैंगे''' (प्यार से समझाते हुए) देख प्रभा, स्त्री का जीवन आग की लपटों से घिरे हुए घर के समान होता है। तेरी भाभी ने ही भला कौन-सा पाप किया था जो उसको यह सजा मिली। तेरा भाई वहां न होता और इत्ती बड़ी हिम्मत का काम न करता तो आज न जाने उसकी कौन दशा दुर्दशा होती। अरे, हमें तो उल्ली-मुल्ली जैसे जलकुकड़ों ने बदला लेने के लिए निकलवाया हेगा। हम निपट भी लेंगे। पर ब्याह बिना तुम्हारा गुजारा नहीं हो सकता है बिटिया, जरा बात को ठंडे में समझो।"

प्रभा एकाएक उठकर बैठ गई, और जुनून भरे स्वर मे कहने लगी : "मैं कह चुकी हूं मा कि मैं विवाह नही करूंगी, नही करूंगी। पढ-लिखकर अपनी स्वतंत्र जिंदगी बनाऊंगी। तुम्हारी इसी बिरादरी के डर से मैं अभी तक भैया और भाभी से नही मिल सकी। अब मैं आप लोगों की एक न सुनूंगी, नही सुनूंगी।" आंसू भरी आंखों से क्षण भर मां को देखती रही और फिर मा की छाती में सिर गड़ाकर फफक-फफक कर रो पड़ी। बेटी को कलेजे से चिपटाए चंपकलता की आंखो से भी गंगा-जमुना की धारा बह चली।

कुछ क्षण यों ही बीते, फिर चंपक ने उसका सिर अपनी छाती से उठाते हुए उसकी आंखो मे आंखें डालकर देखा और कहा : "जैसी मा की मर्जी। बिटिया तू चिंता मत कर। मैं जा के तेरे पापा और ताया जी से कहे देती हूं।"

प्रभा का हठ जान कर बसीधर एक बार तो गहरा गोता मार गए, फिर सिर को झटका देकर कहा : "ठीक है। लड़की तुम्हारी क्वारी नहीं रहेगी। अब बिरादरी मे भी विलायत पास लड़के आएंगे ही। समय बदल रहा है, शादी हो जाएगी।"

गुमानी कुछ बुरा मान कर चले गये। चंपक ने बंसीधर से कहा : "जब इतना सब तय कर चुके हो तो मैं अपने बेटे बहू को ही अलग क्यों रखूं। उनको भी यही बुला लेती हूं। अब मैं किसी की परवाह नही करूंगी। चांदको मैया की जैसी इच्छा होगी, वैसे ही हम लोग रह लेंगे।"

बाबू बंसीधर चुपचाप सुनते रहे, कुछ न कहा। मनहूस सन्नाटा दो दिलों के दर्द को अपने बोझ से दबा कर कमरे मे क्रूर गुंडे की तरह पसरा ही रहा। दीवार घड़ी ने घंटे बजाने शुरू किए, एक-दो-तीन-चार ''नौ। घड़ी की आवाज ने एकाएक बंसीधर को मानो सोते से जगा दिया। कुर्सी से उठ खड़े हुए, कहा : "जाओ, महराजिन से खाना लगवाओ। हमारे दफ्तर जाने का समय आ रहा है।"

पति की बात अनसुनी करके चंपक बोली : "ठीक है, मैं प्रभा को गाड़ी में बहू को यही लिवा लाने के लिए भेज दूगी। दफ्तर पहुंचकर गाड़ी भेज देना।"

पति-पत्नी के बीच फिर चुप्पी, फिर निःसास ढीलकर बंसीधर बोले : "अच्छा, तो मैं दफ्तर जाकर सवार के हाथ खोखा को चिट्ठी भी भेज दूगा कि अस्पताल से लौटकर सीधा घर मे ही आए। मैं भी आधे दिन की छुट्टी लेकर आ जाऊंगा। खाना बेटे के साथ ही खाऊंगा।"

इस निश्चय के एक चुल्लू जल से पति-पत्नी ने अपने लपटो भरे मनो की आग मानो बुझा दी। बंसीधर गंभीर भाव से सिर झुकाए हुए दफ्तर गए और चपक रसोईघर में जाकर महराजिन से बोली : "महराजिन, खोखा बाबू और बहूरानी आज यही खाने आयेंगे। अभी दो घंटे की देर है, बहुत अच्छा खाना बनाकर खिलाओ उन दोनो को। और देखो, बहूरानी आएगी तो उससे सगुन का हलवा बनवाऊंगी। उसके लिए एक अंगीठी खाली रखना, समझी।'''या फिर लोहे वाला चूल्हा निकाल के रख लो।"

सुनकर महराजिन का चेहरा खिल उठा, कुछ कहने ही वाली थी कि तब तक चपक प्रभा के कमरे में घुस गई। वह उदास, गाल पर हाथ टेके, छत की कड़ियो से टकटकी लगाए बैठी थी। चंपक बोली : "बिट्टो, कपड़े बदल ले। मैंने गाड़ी मंगवाई है, जाकर अपनी भाभी को ले आ। पंचम तेरे साथ जाएगा, वह घर जानता है। और उसका बक्सा-बक्सा जो सामान लाहौर से आया हो, वो सब उठवा लाना। अब मैं उन दोनों को अलग नही रखूंगी।"

एक ही सांस की लम्बी दौड़ में चंपक ने मानो अपने पूर्व निश्चय की ढैया एक बार फिर छू ली।

सुनकर प्रभा की आंखें चमक उठी, बदन में फुर्ती आ गई, जल्दी से उठकर मां से चिपक गई, बोली : "ओ मां, मेरी मां!"

चमेलो उर्फ श्रीमती चंपकलता को जुनूनी जोश चढा था। कहकर चटपट ऊपर चली गई। खोखा बाबू का कमरा उनकी इतने बरसो की अनुपस्थिति मे एक दिन भी झाडे-पोछे बगैर नही रखा गया था। चंपकलता अपने सामने रोज उसे साफ करवाती, फिर धूप-लोबान से सुगंधित करके कमरे को बंद कर देती। गुसलखाना देखा, पानी नही था। छत के छज्जे पर आई और नीचे झांककर कहा : "अरे महराजिन।"

"हां, बहूजी।"

"अरे जरा एक बाल्टी पानी ऊपर लाकर रख दो।"

विलायती काठ की बाल्टियों की नकल में पीतल और जस्ते की नई-नई बाल्टियां कुछ घरों के चलन मे आ गई थी। महराजिन ने दो डोल पानी खीचकर पीतल की बाल्टी मे डाला और धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ने लगी। चढ़ते हुए आप ही आप कहने लगी : "खुले-

श्रीमती चंपकलता आज बेहद खुश थी, कौशल्या से बोली : "बहूरानी, दरवाजे पर ही खड़ी रहना, मैंने आरते का थाल पहले से ही सजा के रखा है, ले आऊं।" आरती उतारी, कट्टो को बहू की निछावर करके नेग दिया। प्रभा से कहा : "तेरा नेग पक्का है, जो मांगेगी, दूंगी।"

"सच्ची। मांगूं?"

"मांग, दूंगी।"

"मैं भी भैया की तरह डाक्टरी पढ़ूंगी।"

चंपक क्षण भर ठिठकी, फिर मुस्कुरा कर कहा : "बचन दिया, तुझे भी डाक्टर बनाऊंगी।"

चंपकलता ने पूरा घर अपनी बहू को घुमा-घुमा कर दिखलाया। ऊपर उसके कमरे मे ले गई, कमरा खोला। धूप गंध से महकता हुआ, कमरा खोलकर भीतर ले गई, कहा : "अब तक ये खोखा का था, अब तेरा हो गया।"

पहली बार कौशल्या ने सास की आंखों में आखें डालकर देखा और खुलकर बोली : "मांजी, आप तो मेरी बेबे की जुड़वां बहन जैसी लगती हैं।"

"सच ?"

"पूछ लीजिएगा। लाहौर में पहले दिन मेरी बेबे को देखकर भी यही कहा था।"

"किसने, खोखा ने?"

कौशल्या चुप, नजरें झुका ली। चंपक बोली : "तो यहा भी तू यही समझ ले कि तुझे सास नही मां ही मिली है।" आंखें छलछला उठी, फिर एकाएक तेवर चढ़े और उत्तेजित स्वर में कहने लगी : "सत्यानाश जाय मरों का। मेरी खुशी मे जहर घोलने आए ये निगोडे बिरादरी के पंच। अरे मेरी माता मैया इन सबसे खूब अच्छी तरह समझूंगी। अब की अमावस को तुझे भी चांदको देवी ले चलूंगी, बड़ी जागरत देवी हैं।"

नीचे से महराजिन की आवाज आई : "अब हमार रानी बहू का लैंके नीचे आओ, मालकिन। पहिले कढ़ैया चढ़वाओ।"

चंपक ने पति को रुक्का लिखकर भेज दिया : 'बहू के हाथ का मोहनभोग पाने के लिए अच्छी-सी कोई अंगूठी या अच्छी-सी चीज जरूर ले आइएगा।' चिट्ठी देकर गाडी लौटा दी।

श्रीमती चंपकलता आज जितनी ही प्रसन्न थी, उतनी ही यह अपने शत्रुओ के प्रति उत्तेजित और कटु भी थी। महराजिन हलुआ बनाने के लिए फिर बहूरानी को बुलाने के वास्ते आई, चंपक बोली : "अभी नही, बाप-बेटे को आ जाने दो। हलुआ बनते कितनी देर लगेगी। गरम-गरम परोसा जाएगा तो ठीक रहेगा।"

बाबू बंसीधर के घर में आज का दिन दीवाली से भी ज्यादह खुशियो की जगमगाहट से भरा था। चपक जोश मे घर की एक-एक चीज अपनी बहू को दिखला रही थी। ब्लैकी-रूबी से भेंट करवाई, लान में लगे तीन तरह के गुलाब दिखलाए। इधर-उधर टहलाते हुए फिर प्रभा के कमरे में बैठकर चंपक बोली : "ये समझते है कि उनके निकाल बाहर करने से हमारे घर की खुशी कम हो जाएगी। अरे, उन्ही के घर मुर्दनी पडेगी, मेरे घर में तो दीवाली आई है, दीवाली। मेरा बेटा डाक्टर है, मेरी बेटी भी डाक्टर बनेगी। मेरी बहू ऐसी सुंदर है कि हमरा हियन की बिरादरी भरे में ढूंढे न मिलेगी। मेरे क्या कमी है। मेरे बच्चों का क्या बिगाड़ेंगे ये जलनेवाले! मैं तो समझती थी, हमारे लखनऊ की बिरादरी वाले ही ऐसे हैं, मगर सब जगह ऐसे ही होते हैं। असली ऊंच-नीच ऐसे ही लोगो मे पहचाना

जाता है। न्याय को छोड़कर अन्याय की बातें करते हैं मोये।"

कोसा-काटी वाला मां का यह तेहा प्रभा भी आज पहली बार ही देख रही थी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि मां के स्वभाव में एकाएक अप्रत्याशित परिवर्तन क्यों हो रहा है। नई आई हुई भाभी पास बैठी है, पूछते नहीं बनता, फिर भी पूछ बैठी : "मां, आज तुम्हें यह क्या हो गया है ? कोसा-काटी तो कभी नहीं करती थी।"

सुनकर चपक चौंकी, फिर संयत स्वर में कहा : "इन्होंने मेरे मन की खुशी में आग लगाई है। बहुत चाहते हुए भी···। खैर, वो अपनी करनी आप भोगेंगे।"

दिन के डेढ़-दो बजे तक 'चंपक मेंशन' गुलजार हो चुका था। बाबू बंसीधर टंडन आधे दिन की छुट्टी लेकर, और डा० देशदीपक टंडन अपनी ड्यूटी समाप्त करके घर आ गए थे। कौशल्या बहू ने शकुन का मोहनभोग बना लिया था। चंपकलता ने बहू को अपना दस तोले सोने का भारी 'चंदन हार' निकालकर पहना दिया। बाबू साहब हजरतगंज के एक पारसी की दूकान से विलायत की बनी तीन हीरों की जड़ाऊ अंगूठी लाए थे। कौशल्या अपने नए घर में आकर बेहद खुश थी। पति से उसका परिचय तो पुराना और घनिष्ठ हो ही चुका था, किन्तु आज अपने सास-ससुर में उसे अपने माता-पिता ही मिले। दोनों ने बहू से पर्दा नहीं करवाया। बाबू बंसीधर बोले : "वाह, जिसकी सास ने पर्दे का रिवाज उठा दिया, वह बहू भला अपने ससुर के आगे घूंघट काढ़ेगी ? छिः छिः।"

नजरबाग के इस वधू प्रवेश की खबर बिरादरी के महल्ले टोले, गली दर गलियों में हवा की तरह फैल गई···

"कित्तो की बुआ, सुना ? हेडमास्टर की पंजेबन बहुरिया···"

"अरे तो ऐबन काहे कहती है बिचारी को। सुना है पढ़ी लिखी है, चांद का टुकड़ा है।"

"चांद होय चाहे सूरज का टुकड़ा होय, अरे जो एक भतार के रहत भए दूसर भतार करै उसमें ऐबन की क्या कोई कमी रहेगी।"

"हमने तो ये सुना है कि किसी ने गली में ही गुंडों से उड़वा दिया रहा, मगर आरसमाजी लोग बचा लाए।"

"अरे गुंडे देह में हाथ लगाय दिहिन। बेधरम भई कि नहीं ? उसके सासरे वाले बिरादरी वाले फिर भला कैसे ले लेते ? फिर रांड ने हेडमास्टर के डाकटर बेटे को फंसाय लिया। ऐबन तो भई ही।"

"हम काहे किसी की सच्ची झूठी में पड़ें। बाकी तनकुन हेडमास्टर को मामूली आदमी न समझना, ये भुल्ली लाला को बिलाइत तलक लाखन रुपों का जोर और अपनी बुद्धी लगाय के खाक में मिलवाय दिहिन।"

तीसरे ही दिन महाशय मुकुन्दी लाल के 'कमांडरचीफ' पुन्नू भगत गली-गली में कनस्टर पीट कर यह ऐलान कर आए कि मछली वाली बारहदरी के आगे पुराने बजार के मैदान में आर्यवीर डा० देशदीपक टंडन का सम्मान किया जाएगा, जिन्होंने एक हिंदू सती कन्या का दुष्टों के हाथों से उद्धार किया। भुल्ली लाला, प्रोहितजी, छंगामल आदि प्रमुख विरोधियों के घरों के सामने देर तक कनस्टर बजाकर यह भी घोषित किया कि विरोधियों के झूठे ढोल की पोल खोली जाएगी।

गली गली में तहलका मच गया। प्रोहितजी, लाला छंगामल, बुग्गामल बजाज आदि बहुत ही उत्तेजित हुए। पाधाजी प्रोहितजी के यहां गए। दोनों मिलकर छंगामल के यहां गए। छंगामल अपने चबूतरे पर बैठे दातून करने के बाद खखार खखार कर कुल्ला कर रहे थे। नौकर कलसे लुटिया के जल से कुल्ले करा रहा था। दस घरों में उनकी खखार

की आवाज जा रही थी। खाली कुल्ला करने में लाला छंगामल को दस डोल पानी लगता है। नीम की आधी तोड़ी हुई दतून से जीभी करके ऐ-ऐ-ऐ करके आठ-दस लोटे पानी चुल्लू से मुंह में ले जाते हैं और पट से थूक देते हैं, फिर उंगली या अंगूठा मुंह मे डालकर ओ-ओ करते और गड़गड़ाकर निकाल देते हैं। इस तरह दस-बीस लोटे पानी तो कुल्ले के नाम पर उनके मुंह में भर जाता ही है। फिर उंगलियां गले में गहरे डालकर खखार होती है। यह खखार लंबी चलती है। खखारते समय एक नौकर उनकी छाती पर हाथ फेरता रहता है ताकि कफ ढीला होय और लाला छंगामल उसे निकाल फेंकें। कफ निकालते हैं, हांफते जाते हैं, आखों से पानी बहता है।'''उस दिन भी जब पाधा-प्रोहित जी पहुंचे तो उनका यही सब क्रम चल रहा था। लाला आखो और मुह पर ठडे पानी के छींटे डाल रहे थे। लाल डोरे पड़ी आंखों से देखकर हांफते हुए कहा : "पांय लागी गुरू जी, पांय लागी।"

"आशीर्वाद लालाजी, आशीर्वाद लालाजी। क्या स्नान करने जाय रहे हैं?"

"अब ठेर के करेंगे, आप लोग सबेरे-सबेरे आए हैं तो जरूर कोई बड़ा काम होगा।"

फिर बोले, "अबे टिपंसे, अंगौछा दे जल्दी से चोट्टी के। हाथ-पैर पोछ जल्दी से।"

एक नौकर अंगोछे से हाथ पैर पोछने लगा। टिपंसे नौकर ने दूसरी कस कर निचुड़ी हुई गीली अंगोछिया झटकार कर लाला के हाथो मे दी और वे उससे अपना मुंह और आंखें पोंछने लगे। पूरे पौन घटे में दतून-कुल्ले से छुट्टी पाकर लाला चौकी से उठने लगे। दो नौकरों ने उनके भारी शरीर को सहारा देकर खड़ा किया। खड़ाऊ पहनने लगे, एक खड़ाऊं उनके पहनने की हड़बड़ी में उलट गयी। उसके लिए नौकर को मां की गाली दे डाली। नौकर ने झट से खड़ाऊं सीधी ही नही की, बल्कि उनके अंगूठे-उगली में फंसा भी दी। इसके बाद वह उनकी छडी उठाने के लिए लपका, लेकिन इसी बीच में देरी का दोष देकर लाला ने 'ला बे जल्दी' कहने के साथ ही साथ एक बार फिर उसकी मां से अपना मौखिक सबध स्थापित किया। नौकर चुप। लाला छंगामल जी के श्रीमुख से अपनी मां बहनो का यह मौखिक सम्मान करवाने में ही उनके नौकरों की आमदनी होती है। जो जितनी गालियां खाता है वह उतनी ही ठगी कर लेता है।

आधी गंजी खोपडी पर सफेद बुर्राक पट्टेदार बालों वाले, गेहुएं रग के, रौबीले, गलमुच्छेदार, मंझोले कद के तोंदियल लाला, गले मे छह लड़ी सोने की जजीर और जनेऊ पहने खट्-खट् करते हुए आंगन पार कर अपनी गद्दी की तरफ वाले दालान में आए, चबूतरी चढे, फिर ऊपर के दालान मे आए, फिर वही बैठ गए। पाधाजी और पुरोहित-जी दोनो उनकी गद्दी के किनारे जाकर बैठ गए थे। उन्हे वहां बैठते देखकर वे एक-दूसरे को देखने लगे मानो आपस में कह रहे हो कि लाला आज नक्शे दिखाने की अदा मे हैं। हमें उठाकर अपने पास बुलाना चाहते हैं। अपनी पालथी बदलते हुए पुरोहितजी ने लाला छंगामल की ओर मुंह करके कहा : "भई लाला अब यही आय जाव, हमें उठना न पड़े। तुमसे साल भर बड़े हैं।"

"अरे आय रहा हूं महराजा, आय रहा हूं। सबेरे ससुर खांसी खखार की वजह से ऐसी हंफनी चलती है कि—अबे टिपंसे, इधर आ साले।"

नौकरों के प्रति यह गालियों का सम्मान लाला के मुख से दिन भर होता रहता था। टिपंसा आया। "उठने में सहारा दे साले।"

पाधा-पुरोहित जी से अपना जो नखरा न सधवा सके, उसे अपने बडे मुंह लगे टिपंसे नौकर सुकरु से पूरा करवा लिया। टिपंसा लाला को सहारा देकर दालान के ऊपर वाले दालान की दो सीढ़ियां चढाकर ले गया। खड़ाऊं उतारी, छड़ी रखी, फिर रेंग-रेंग कर

गद्दी की तरफ चले। पाधाजी उनके सम्मान में उठ खड़े हुए, पर प्रोहितजी घमंड की मूर्ति बने बैठे ही रहे। लाला ने कहा : "आज सबेरे-सबेरे आप लोगन के चरनन की धूल कैसे पड़ रही है भई?"

पाधाजी बोले : "अरे वह ससरा बनिया बाबू है न महाशय मुकुंदी लाल?"

"होयगा साला, हमसे क्या मतलब। क्या किया उसने?"

"परसों मछली वाली बारहदरी के सामने, जहां पहले बजार रहा और अब खंडहर साफ करके जहां बड़ा भारी मैदान बना दिया हैगा···"

"हां-हां, वहां सभा करेगा साला।"

पाधाजी खीसें निपोर कर बोले : "हे-हे-हें-हें आप तो सर्वग्य हैंगे लाला जी। सब कुछ जानते हैंगे।"

"इसमें जानना क्या। सबेरे से साला ढाई घड़ी की भद्रा बना मेरे दरवज्जे पर कनश्टर पीट गया है वह पुन्नुआ, गंजेड़ी साला उसकी···खैर होयगा जी। बोलो गुरु, क्या खातिर करूं आप लोगो की? सबेरे का वखत हैगा, थोड़ा मोहन भोग तो जरूर चलेगा। क्यों गुरु जी, आप तो बहुतै चुप बैठे हैं, महराजा।" लाला छंगामल ने मौन गंभीर पुरोहित जी से कहा।

वह वैसे ही गंभीर भाव से बोले : "मंगवा लीजिए। साथ में एक कटोरा दूध भी। जरा सुगंधी-उगंधी डलवाय के मंगवाइएगा।"

"अभी लीजिए महराजा।" टिपंखा मुकरू ऊपर के दालान मे ही कोने मे छड़ी, खड़ाऊं लिए हुए बैठा अपनी पौने दो आंखों का नूर चमकाता पास आया।

"जी सरकार।"

"ब्राह्मण देवताओं के लिए दूध लाओ। मलाई उलाई, इलायची विलायची, इतर-वितर के साथ ला जल्दी से।" कहकर तकिए कलाम-सा मां का मौखिक सम्मान भी किया।

प्रोहितजी की त्योरियां चढ़ गयी, बोले : "लालाजी, बुरा न मानिएगा, मेरे जलपान के पूर्व अब कोई अपशब्द मू से न निकालिएगा।"

लाला प्रोहित जी के तेवर देखकर बोले : "अरे वो तो—खैर। बतलाइए, कैसे पधारना हुआ, आप लोगों का? हमारी जान में तो अगर वे लोग तनकुन के लड़के का सनोमान करते हैं तो करने दो। जब तक पंचों के ऊपर आप ब्राह्मण देवताओं का आसिर्वाद हैगा, तब तक कोई हमारा क्या बिगाड़ेगा।"

पाधाजी सिर हिलाकर बोले : "वो तो सब ठीक है लाला। बाकी यहा कोरे आसिर्बाद से काम नही चलेगा। अभी थोड़ी देर पहले हमसे प्रोहित जी ने अपने घर में बिल्कुल ठीक कहा कि रजोले, ये लोग दयानन्दिये हैं। ससुरे हमारे ही वेद शास्त्रों से हमारे ही मुह पे जूते मे मारते हैंगे साले।"

लाला छंगामल ने गंभीर भाव से सिर हिलाया। प्रोहितजी बोले : "कम-से-कम तीन-चार बिद्वान तो मौका पड़ने पर भिड़ाय देने के लिए हमारे साथ रहने ही चाहिए। वहां खाली दयानन्दिए ही थोड़े नही होंगे। ये जो सब अंग्रेजी स्कूलों मे पढ़-पढ के हमारे ही लड़के बदजबान भए हैंगे, ये क्या कुछ कम हैंगे?"

"अजी, हम कहते हैं कि किरिस्टान से भी बुरे, मुसलमान से भी बुरे। ऊ तो सब अपना कैदा असूल मान के शास्त्रार्थ करते हैंगे, इन लौंडो ससुरों का तो कोई असूलै नाही है। बस आई योप डाम्फूल ललकार-ललकार के ससरे हमारे सद्‌विचारो का कबाडा ही बनाए देत हैंगे। बताइए, भला कलयुग फैलेगा कि नही?"

"वह तो फैलेगा ही। सबसे बडी बात यह है कि हमारे समाज की व्यवस्था ही समाप्त हो जाएगी। धर्म की धुरी पर ही समाज रूपी चक्र चलता है, हमें यह कदापि नही भूलना चाहिए।"

तीनों के सामने तीन चौकिया आ गयी। गरी, बदाम, चिरौंजी, इलायची पड़ी गरम-गरम घी से तर मोहन भोग की तश्तरियां सामने आ गयी। चिकनाई देखते ही ब्राह्मणों के ध्यान से सब कुछ फिसल गया।

दूध-मोहन भोग आदि से तृप्त होकर तीनों ने हाथ-मुंह धोए-पोंछे, चौकियां हटी, डकारो के साथ 'हरी ऊँ' का उच्चारण हुआ। फिर बहुत देर से लाला के कलेजे मे कँद टिपखे की मा का मौखिक सम्मान मुक्त हुआ। गाली देकर पान लाने की आज्ञा दी और बोले : "भई देखो रजोले गुरु, एक बात हम साफ बताए देते हैं कि हम भुल्लीमल नहीं, हमारा नाम छंगामल हैगा। जो काम करेंगे वह चार बिरादरी वालों की राय से करेंगे। अगर शास्त्रार्थ ही कराना है तो वह इस सनोमान को सभा के बाद ही होना चाहिए। इसमे कोई टटम्बा होय, फिर बाद में मुकद्दमें बाजी होय, तो हम नही करेंगे बाबा।"

प्रोहित जी त्योरिया चढ़ाकर मुह मे पान का गुल्ला जमाए हुए बोले : "इसमें मुकद्दमेंबाजी की क्या बात है?"

लाला छंगामल भी पालथी उचकाकर जोश में आ गए, बोले : "बात कैसे नही? मान लो, वो केवल ऐंक पोइंट उठाय के मुकद्दमा चलाय दें कि एक निराधार सरीफ लड़की के साथ हमने अपने बेटे का ब्याव किया, उसका विरोध क्यों किया जाता है। जब मल्का बिक्टोरिया ने ये ऐलान कर दिया कि सब अपने-अपने मत को मानें कोई किसी को दखल न दे तो हम किसी के सनोमान में दखल कैसे दे सकते हैं? इस सारी कानूनबाजी में फंस के हमारा यानी पंचायत का प्रभाव बढ़ेगा कि घटेगा? और देखो प्रोहित जी, हम पंचायत में जो फैसला कर चुके हैं सो कर चुके, उसे कानून के जोर से नही, एकता के जोर से निभाएंगे। मुसद्दीमल का बेटा, साला अब बिरादरी में दाखिल नही किया जाएगा।"

"और अब चार-छह महीनों में मन्नोबीबी का दोहता विलायत पास करके आने वाला है, उसका क्या करोगे?"

"करेंगे क्या, उसे भी बिरादरी में नही रखेंगे। और मन्नोबीबी अगर उन्हें अपने घर में रखेंगी तो उन्हें भी निकाल देंगे। फिर देखेंगे कि गौरमिंट हमारा क्या बिगाड़ लेती है। बिरादरी की पचायत है महराजा, और अब तो अंग्रेजो राज हुए 25-30 बरस गुजर चुके हैंगें। डालियों और सलामों की बदौलत हम सेठ साहूकारो का रसूक भी अंग्रेजों से अब पहले से जादा हो गया है।"

अपने द्वारा किये गये निश्चय को प्रतिफलित होते न देखकर ब्राह्मण द्वय खिन्न मन से चले गए। घोषित दिन और समय पर आर्यवीर डा० देशदीपक टण्डन का सम्मान हुआ। सभा में सार्वजनिक रूप से हवन का आयोजन हुआ। इस बार नगर के वेदपाठी पंडित आर्यसमाजियों का साथ नही दे रहे थे इसलिए महाशय मुकुन्दीमल के नवाबगज के पास कुर्सी ग्राम से वेदपाठियों का दल बुलवाया था। खूब शानदार ढंग से हवन हुआ, प्रसाद बंटा। बाबू बंसीधर ने एक पुस्तिका छपाकर सभा मे बंटवाई जिसमें सारा हाल लिखकर यह पूछा गया कि अधर्म किसने किया, पाप किसने किया? सच्चा हिन्दू कौन है? झूठे घमण्ड और खोखली शान में एक आर्य सती का जीवन नष्ट करने वाले मूर्ख क्या हिन्दू धर्म के रक्षक हैं, इससे अपनी या किसी भी जाति बिरादरी की मान-मर्यादा बढती है या घटती है? क्या यही हमारा सच्चा आर्य या हिन्दू धर्म है?

इस सम्मान सभा ने आर्यवीर डाक्टर टण्डन के प्रति लोगों के मनो में सचमुच

सम्मान बढ़ा दिया। उस सम्मान की उत्तरोत्तर वृद्धि में उनका पेशा भी सहायक सिद्ध हुआ। रघुनाथदास मेहरे की पत्नी की पीठ में उल्टा फोड़ा निकल आया था, किसी जर्राह के चाकू ने अपने अनाड़ी हाथ से उसे और अधिक विषम बना दिया था। रघुनाथदास की पत्नी निश्चय ही मर जाती अगर डा० टण्डन फिर से उसका आपरेशन करके उसे स्वस्थ न कर देते। इसके साथ-ही-साथ और भी बड़ी बात यह हुई कि डा० टण्डन ने अपने खत्री भाई से एक पैसा भी फीस न लिया और दस बार बुलाए-बे-बुलाए देखने के लिए आये।

अस्पताल में कम्पाउण्डरों की जरूरत थी, वहां भी तीसरी चौथी पढ़े दो खत्री लड़के लगवा दिए। मन्नो बीबी की पुरतानी मोहिले जी की बौटी को बचा लिया, खाली अपनी खत्री बिरादरी ही नहीं बल्कि चौक, चौपटियों रानीकटरे तक के ब्राह्मणों, अग्रवालों कायस्थों, जौहरियों आदि के समाजों में भी डा० देशदीपक उत्तरोत्तर प्रसिद्धि पाते चले। अमीरों से फीस लेते और गरीबों का मुफ्त इलाज करते थे। उनका बड़ा सम्मान फैल रहा था। नगर में एक आर्यसमाज की स्थापना भी हो चुकी थी।

डा० टण्डन का घर स्वर्ग-सा गुलजार था। बाबू बंसीधर अब उच्च अधिकारी हो चुके थे, और कौशल्या की कोख में टण्डन वंश का भावी कुलदीपक आ चुका था। चंपकलता सब तरह से संतुष्ट थीं, उन्हें कष्ट केवल इतना ही था कि कौशल्या देवी-देवतो मे आस्था नही रखती है। वह कहती है : "मां, मैं तुम्हारी पूजा करती हूं यह तुम जानती भी हो। मुझे तुम्हारे भीतर ही वह मां दिखलाई पड़ती है जिसे तुम मां कहती हो। किसी मूर्ति में उस मां को देखने का संस्कार ही मुझमें नही पड़ा, मैं क्या करूं?"

प्रभा इस वर्ष एस० एल० सी० अर्थात् मैट्रिकुलेशन की परीक्षा देने वाली है। त्रिलोकीनाथ चोपड़ा का पुत्र सोमनाथ अगले पन्द्रह दिनों बाद बैरिस्टर बनकर विलायत से लौटकर आने वाला है। उसके स्वागत के लिए बड़ी-बड़ी तैयारियां हो रही हैं। बाबू बंसीधर ने एक दिन अपनी पत्नी से कहा : "देखो जी, अब तो, 'ढाई घर,' 'चार घर,' 'बारह या बावन घर' देखने का हमारा कोई सवाल ही न रहा। लड़का कुलीन हो, अपनी बिरादरी का हो, यही काफी है।"

"ठीक है, मुझे तुम्हारी बात से कोई आपत्ति नही। सोमू के आने पर यह लोग तो बिरादरी से निकाले ही जायेंगे। सोमू का छोटा भाई श्यामनाथ हमारी प्रभा के लिए कुछ बुरा नही है। तुम चाहो तो बात छेड़ सकते हो।"

लेकिन बात छेड़ने की नौबत ही न आयी। अगली अमावस को बंसीधर और चमेलो चांदकोजी गए थे। रात मे पण्डाजी के घर प्यास लगने पर चंपक घड़े से पानी निकालने के लिए उठी। अंधेरे में घड़े में लुटिया डुबोने का खटका होते ही एक जोरदार हिस्स की आवाज के साथ चंपक की बांह में कील से दांत चुभे…"हाय राम, साप!"

छोटा सा गाव। तनकुन बाबू वहां के पुराने परिचित, आसपास की भीड़ पण्डाजी के घर उमड़ आई, पडोस के गांव से झाडने वाला भी बुलाया गया, पर कुछ न हो सका। सौ० चंपकलताजी बेहोश हुईं सो फिर आखें न खुल सकी।

दूसरे दिन पापा घर में मां की लाश के साथ आए। इस अचानक घटना से सभी के कलेजे सनाका खाकर मानो बेहोश हो गए थे।

बिरादरी में खबर पहुंच चुकी थी, पंचों की जोरदार दौड़-धूप शुरू हुई…मुर्दनी मे कोई आदमी न जाय, जो जायगा वह भी बिरादरी से जात-बाहर किया जायगा।

खबर मन्नो बीबी के यहां भी पहुंची। चुन्नो बीबी को गहरा धक्का लगा, अपनी बूढ़ी भाभो से कहने गयीं। मन्नो बीबी गम्भीर हो गईं बोली : "समझ लेओ, अबकी बिरादरी का जोर बहुत है। कल को जो हम मरे तो हमें उठावने कौन आएगा?"

बाबू बंसीधर के घर बिरादरी का एक भी व्यक्ति नहीं था, उनके सगे भाई तक नहीं। फिर भी अनेक जातियों के जान-पहचानी दुःख कराने पहुंचे थे। महाशय मुकुन्दीलाल की आर्य स्वयंसेवक सेना ने बड़ा सहयोग किया। पुत्र के हाथों दाह पाकर पोते का मुख देखने की कामना करते हुए श्रीमती चंपकलता अखण्ड सौभाग्यशाली होकर अग्निरथ पर अपनी 'मां' के चरणों में पहुंच गईं।

घर में चारों ओर मनहूसियत छाई हुई थी, प्रभा सर्वाधिक बेहाल थी। डाक्टर टण्डन और कौशल्या ने उसे खूब सान्त्वना दी···"पर पापा को कौन समझाए, जब से मां यों अचानक गईं हैं, पापा किसी से बोलते तक नहीं, गुमसुम बैठे रहते हैं।" 'चौथे' की रस्म जैसे-तैसे पूरी हुई।

कलकत्ते से विपिन खन्ना अपनी पत्नी के साथ आये। चार दिन साथ रहे। श्रीमती खन्ना प्रभा को अपने साथ ले जाने का आग्रह करने लगी। विपिन मामा ने प्रभा की डॉक्टरी पढ़ने की इच्छा पर कहा कि अभी लड़कियों के लिए डाक्टरी पढ़ाई शुरू नहीं हुई, पर तुम कलकत्ते चलो, और कुछ पढ़ोगी तो पढ़ाऊंगा। वहां तुम्हारी मामी का मन भी लगेगा।

तय हुआ कि प्रभा शीघ्र ही वहां भेज दी जाएगी, किंतु अभी उसका जाना उचित नहीं। दो जीव की बहू को इस गहरे आघात के बाद छोड़कर जाना उचित नहीं है।

खन्ना दंपति वापस गए। उसी रात मे अपना सूतक मुंडित सिर खोले हुए खोखा पापा के कमरे में पहुंचा। बाबू बंसीधर ने उसे देखा, और इससे पहले कि खोखा कुछ कहे, बाबू बंसीधर बोल उठे: "खोखा, मैं बम्बई जाने का विचार कर रहा हूं। 'सर ह्यूम' ने आल इंडिया कांग्रेस बनाने का रेजोलूशन रखा है। तुमने सर ह्यूम का वह आर्टिकल पढ़ा था। ओफ्फो, उन्होने क्या करारा जूता मारा है हम हिन्दुस्तानियो के मुंह पर, कि अगर पचास पढ़े-लिखे लोग भी इकट्ठे हो जाएं और भारत की उन्नति पर एक साथ विचार करें तो यहां का नक्शा पलट सकता है। मैं जा रहा हूं, अपने लखनऊ के खत्रीरत्न बाबू गंगाप्रसाद वर्मा भी डेलीगेट बनकर बम्बई जा रहे हैं। मैं उनके साथ ही चला जाऊंगा। यहां अब मेरा जी भी नहीं लगता, बेटा।"

बहुत कुछ कहकर न कहने वाली बात मन ही मे छिपाए रखने की इच्छा के बावजूद बाबू बंसीधर के मुख से निकल ही गई। पिता और पुत्र दोनों ही की आंखें टपाटप आंसू टपकाने लगीं।

24

मिस्टर त्रिलोकीनाथ चोपड़ा अपने पुत्र का स्वागत करने तथा मुंशी गंगाप्रसाद और बाबू बंसीधर बम्बई में कांग्रेस के पहले अधिवेशन में भाग लेने एक साथ जा रहे थे। यात्रा के लिए अभी दो दिन और बाकी थे।

एक दिन डाक्टर साहब अपने बंगले के फाटक के दोनों तरफ लोहे के बने लैम्पदान लगवा रहे थे। उनके घर में तो तभी से यह नई रोशनी आ गई जबकि तीसरी बर्मा की लड़ाई खत्म हुई और बर्मा शेल कम्पनी ने भारत में तेल की भरमार कर दी थी। डाक्टर साहब अपने फाटक पर खड़े-खड़े मजदूरों का काम देख रहे थे, तभी एक साधारण पुरुष उनके पास आया और हाथ जोड़कर बोला: "हुजूर आपै तनकुन बाबू के बेटवा हैं, सरकार?"

"हां-हां, क्या बात है?"

"आपै डागडर बाबू हैंगे सरकार?"

"हां-हां भई, क्या बात है?"

"साहेब भुल्ली लाला आपका बुलाइन हैं।"

"कौन भुल्ली लाला?"

बरामदे में अपनी छोटी आरामकुर्सी पर लेटे हुए बाबू बंसीधर कोई पुस्तक पढ़ रहे थे। भुल्ली लाला का नाम कान में पड़ा तो पूछा: "कौन है खोखा?"

"ही सेज सम भुल्ली लाला हैज काल्ड मी। आई डोन्ट नो हिम।"

"उस आदमी को यहां भेज दो।"

डा० टण्डन ने आये हुए आदमी को अपने पिता के पास जाने को कहा। बाबू साहब ने उससे पूछा: "कौन हो भाई, कहां से आये हो?"

"हुजूर, हम राम नराएन के हाता में रहित हैं। तौन हुंअन अब पुराने मालिक जौन हैं भुल्ली लाला —उन्हो हुवै रहत हैं।"

"हां-हां—मैं जानता हूं। क्या हुआ उन्हें?"

"अरे सरकार, उनकी पीठ मा पुट्ठे पर यत्ती बड़ी सूजन आ गयी है हजूर, और पड़े-पड़े कराहा करत हैं। उनका कौनों देखै वाला नही है। आज हमते कहिन सुकरु, तुम तनकुन हेडमास्टर के डाकडर बाबू बेटवा का बुलाए लाओ।"

बाबू साहब आरामकुर्सी पर उठकर सीधे बैठ गए। उनका चेहरा गम्भीर हो गया पूछा: "उनके लडके लाला मैयादास तो शायद मर गए?"

"हां साहेब, उनका तो आठ-नौ महीना हुई गए। अब बड़ी मालकिन हैं तौन उनका गरियावत हैं। उनके नाती पोता अब कौनों उनके पास नाही आवत हैं हजूर।"

"और वो बुढ़िया जो उनके साथ रहती थी?"

"उई मुल्लू बाबू की महतारी, वहौ सरकार मरि गयी।"

"अरे, कब?"

"उनका सरकार चार-पांच महीना हुइ गए हुइहैं। जब मरी हती तब बहुत दुखियात रहैं भुल्ली लाला, रोवत रहैं। आजौ बहुतु रोयें। हमते कहिन जाओ बुलाय लाओ।"

"खोखा," पिता ने आवाज दी।

खोखा डाक्टर उनके पास आ गये। पिता ने कहा: "देखो, आज पचास काम छोड़ के तुम भुल्ली लाला को जरूर देख आना।"

"ये वही हैं न पापा —"

"हां वही हैं। लेकिन जरूरत के वक्त—"

"मैं समझता हूं पापा, बेटा आपका ही हूं। अभी चला जाऊं?"

"गज और ग्राह की लड़ाई में गज की पुकार सुनते ही भगवान दौड़े चले गए थे, इसीलिए उनकी बड़ाई है। जाओ, लैम्प पोस्ट मैं लगवा दूंगा।"

अपनी आयु के 73वें वर्ष मे पोतड़ों के रईस भुल्ली लाला भिखारियों से भी बदतर स्थिति में पड़े हुए थे। जब तक उनके पुत्र लाला मैयादास जीवित थे, तब तक तो किसी हद तक उन्हें आर्थिक सहायता मिल भी जाया करती थी किन्तु उनकी विधवा पुत्र-वधू और दोनों पोते उनके प्रति तनिक भी लगाव नही रखते थे। मुल्लू की महतारी के मरने के बाद भुल्ली लाला को कोई एक घूट पानी पिलाने का भी रवादार न था। इधर जबसे रोगवश उनका उठना-बैठना भी मुश्किल हो गया था, तबसे शरीर के धर्म विवशतावश खटिया पर ही सम्पन्न हो जाते थे। कोठरी बदबू से भभक रही थी, लाला भुल्ली उस कोठरी से निकाले गए। गन्दे वस्त्र उतरवाकर तथा अपने पैसे से नई धोती मंगवा के पहनाई। फिर किराए की बग्घी में उन्हें आराम से लिटाकर अस्पताल भिजवा दिया और खुद अपनी टमटम हांकते हुए साथ चले।

कारबकल फोड़े का आपरेशन बहुत सफल रहा। बूढ़े शरीर का कम-से-कम खून बहाकर डाक्टर देशदीपक ने अपने वंश के शत्रु का फोड़ा चीर दिया। भुल्ली लाला के लिए पथ्य इत्यादि सब डा० देशदीपक टण्डन के घर से ही आता था। बाबू बंसीधर भी हर दूसरे-तीसरे रोज उन्हें अस्पताल में देखने के लिए आते थे।

इस खबर ने बिरादरी भर मे डा० टण्डन और उनके पिता की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। दो-चार लोगों ने बात भी उठाई कि अब तो बिरादरी से टण्डन परिवार को निकालनेवाले ही उनके घर का भोजन खा रहे है फिर उन लोगो को बिरादरी मे क्यों न मिला लिया जाए। मगर लाला छंगामल, लाला खुशीराम बजाज और प्रोहित जी इसके विरुद्ध थे। प्रोहित जी बोले : "अभी परसों तिरलोकी नाथ बबई गए हैं, उनका लड़का बिलैत से आय रहा है। फिर उसको भी बिरादरी में मिलाना पड़ेगा। इन बिलैती सुधार के प्रभाव के आगे जो हम झुकते ही रहे तो फिर हमारा सनातन धर्म कैसे बचेगा?"

सातवें दिन आपरेशन के बाद स्वस्थ होकर भुल्ली लाला को अस्पताल से छुट्टी दी जाने वाली थी। डा० टण्डन अपने पिता के पास आये, बोले : "मैंने जब बुजुर्गवार से कहा कि आज आपकी छुट्टी हो जाएगी तो वे रोने लगे। बोले, अब मैं कहा जाऊंगा मेरा तो कोई भी नही है।"

बाबू साहब बोले : "ठीक ही कहते हैं बेचारे।"

खोखा बोला : "अगर आप उचित समझें तो कुछ दिनों के वास्ते उन्हें यही ले आऊं।"

बाबू बंसीधर कुछ देर सोचते रहे, फिर कहा : "घर लाना तो शायद मुनासिब नही। मगर इस समाज-वैतरनी मे गाय की पूछ से आए हुए भुल्लीमल को छोड़ना भी नही चाहता।"

"मैं आपका मतलब नही समझा, पापाजी।"

"मतलब साफ है। जब तक मैं इस बात का इंतजाम न कर लूं कि तुम्हारे दान की शोहरत बिरादरी मे फैल जाय, तब तक इन्हें अपने कब्जे मे रखना चाहता हूं। यह काम गुमानी भैए और गनेसो, महेसो नही कर सकते हैं। मेरे और तिल्लोकी बाबू के बम्बई से आ जाने के बाद ही इस पर विचार किया जा सकेगा।"

"तो फिलहाल उन्हें कहां रखूं?"

बंसीधर कुछ देर सोचते रहे, फिर मुस्कुराए, बोले : "तुम्हारी जान-पहचान मे कोई बुढ़िया क्रिश्चियन नर्स है?"

"तलाश करूंगा पापाजी, मुझे इस सबंध मे अधिक जानकारी नही है।"

"ठीक है, अगर कोई क्रिश्चियन और खास तौर से अधगोरी कौम की बुढ़िया मिल

जाय तो उसे करीब-करीब एक महीने तक इन्हें अपने यहां रखने को राजी कर लो। सौ-दो-सौ जो भी खर्च लगेगा, मैं पे कर दूंगा।"

"लेकिन इससे फायदा क्या होगा, पापाजी?"

"बहुत फायदा है, बिरादरी मे खबर उड़ेगी कि हमारे खर्च मे एक अंग्रेज या हिंदुस्तानी क्रिश्चियन नर्स की निगरानी मे लाला पल रहे हैं। उसके बाद तिल्लोकी आ जाएंगे तो आगे का उपाय सोच लूगा।"

खोखा डाक्टर अपने पिता के मन को ठीक तरह समझ न पाया, फिर भी उन्हीं की आज्ञा के अनुसार अपने अस्पताल की एक अधगोरी नर्स की परिचित एक वृद्धा के घर में लाला भुल्ली को भेज दिया गया। उन्हें यह आश्वासन दे दिया गया कि उनके लिए दोनो समय का खाना डाक्टर साहब के यहां से कटोरदान मे आ जाया करेगा और नर्स की देखभाल से वह जल्द चगे भी हो जाएंगे।

बम्बई जाने से पहले गुमानी भैए की मार्फत तनकुन बाबू ने चौक भर में यह खबर फैला दी कि लाला भुल्ली देशदीपक के खर्च से एक ऐंग्लो-इंडियन नर्स के यहां रह रहे हैं। और उनकी दवा-दारू तथा नर्स की फीस आदि के ऊपर डाक्टर साहब सौ रुपया महीना खर्च कर रहे हैं।

यह खबर भुल्ली लाला की विधवा और प्रौढ़ा पुत्र बधू के लिए अपमानजनक थी क्योंकि तनकुन और खोखा के उपकारों के साथ-साथ घर-घर में उन लोगों की निंदा भी फैल रही थी। बिरादरी बालो को, खासकर पुरोहितजी को भी बड़ी चिन्ता थी। लाला खुशीराम बजाज को बुलवाकर उन्होंने कहा: "भई, यह मामला तो हम लोगों के विरुद्ध पड़ता जाय रहा हैगा, खुशीराम। अबही जब तिल्लोकी अपने बिलैत पास लड़के को लेकर यहां आवैगे, और हम उन्हें बिरादरी से निकालैंगे तो कहा जायगा कि पुराने पंच जब किरंटी मेम के यहा रह रहे हैंगे, उनके हियन सब खात-पियत हैंगे, सो पहले उन्हें और उनके घर वालों को निकालें तब उनका लड़का निकाला जायगा।"

खुशीराम बोले: "पर इसमे हम लोग क्या कर सकते हैं, पुरोहितजी? अरे, अगर इज्जत जाएगी तो उनकी पतोहू की जाएगी, पोतों की जाएगी, हमसे क्या मतलब हैगा!"

बात काटते हुए पुरोहितजी बोले: "नाक तो हमारी ही कटेगी। जाती की धर्म रच्छा के खातिर ही लाला भुल्लीमल ने लाखो रुपए खर्च करके ठेठ बिलैत तक में मुकदमा लड़ा और अब आड़े समय मे कोई उस धर्म रच्छक की तरफ आंखी उठाय के भी नहीं देखता हैगा। बिचारे मेम नरस के हियन पड़े हैंगे।"

"आपकी बात ठीक है, मैं मैयादास की घरवाली को जाय के सब ऊंच-नीच समझाता हूं कि उन्हें लायके फिर से अपने घर मे रखें।"

लाला खुशीराम एक दिन सबेरे-सबेरे ही भुल्ली लाला की हवेली पर गये। पीछे-पीछे नौकर उनका हुक्का साथ लिए चल रहा था। मैयादास और खुशीराम लगभग समान आयु के थे, और दोनो मे कभी हल्का-सा याराना भी रहा था। इसलिए मैयादास के बड़े बेटे कुन्जू ने आकर उनके पैर छुए, गद्दी पर बैठाया और कहा: "आज सबेरे-सबेरे कैसे तकलीफ की चाचा? मुझे ही बुलवा लिया होता।"

"नही बेटे, काम तुमसे नही, तुम्हारी मां से है, उनको बुलाय के पीछे बैठाय लो।"

कुन्जू भीतर गया, फिर थोड़ी देर बाद बाहर आकर कहा: "भाबो आपको भीतर बुलाय रही हैं, चाचा।" फिर अपने नौकर को आवाज देकर कहा: "चाचा के लिए चिलम

. की तम्बाकू बदल के भीतर लाओ।"

खुशीराम भीतर के कमरे में जा बैठे। दरवाजे के पीछे कुन्जू की मा बैठी थी। दूध का कटोरा आया, पान आए, देखकर खुशीराम बोले : "नही बेटे दूध-ऊध नही, हम कलेऊ करके घर से चले हैं, पान जरूर खाऊंगा। मां तुम्हारी आ गयी, बेटे?"

"जी हां, आपके पीछे कोठरी में बैठी है।"

खुशीराम ने पान खाये, और फिर कुर्सी का रुख कोठरी के दरवाजे की ओर करके बोले : "बात ऐसी है, बहूजी साहब कि आपके ससुरजी को तनकुन बाबू ने उनकी मुसीबत के दिनो मे भुना लिया है, और आप और हम सब लोगो की इज्जत घाटे मे आय रही हैगी।"

पीछे से आवाज आयी : "आपकी बात मैं समझी नही।"

"सीधी सी बात है बहूजी, मुल्ली ताऊ के उल्टा फोड़ा भया, तनकुन के बेटे ने चीरा लगा के उसको ठीक-ठाक किया। खैर, यहा तक भी गनीमत है, पर अब देखिए, तनकुन बाबू ने क्या चाल चली है कि उन्हे ससरी मेम के घर मे ठहराय दिया हे। अब ताऊ बेचारे 72-73 बरस के बीमार कमजोर आदमी ठैरे, सहारा तो चाहिए ही। ससरी किरटानी के हाथ से उनको खाना खिलाया जात हैगा, पानी पिलाया जात हैगा, और ऊपर से आपकी बदनामी कि पोतों और पतोहू के होते ताऊ के खाने खिलाने का खर्चा वो कर रहे हैं। मतलब ये बदनामी दोनो की, आपकी भी और हमारी पचायत की भी। कल को कहेगे कि बिलायती मेम के हाथ का खाना खाया, पानी पिया, अब कहां रहा इनका धरम?"

लाला खुशीराम का हुक्का तब तक नई चिलम से सजकर उनके सामने आ गया था। कमरे के बाहर-भीतर दोनो ओर कुछ सन्नाटे के क्षण बीते, फिर जैसे ही लाला का हुक्का गुड़गुड़ाया, वैसे ही पीछे से मैया की धरवाली की आवाज आई : "हम क्या करें भैंए जी? बाबू का मिजाज बहुत खराब हैगा। हम भला उन्हे घर से बाहर करते पर ऊ तो मुल्लू की महतारी के कहने में आयके हवेली के बाहर का हिस्सा बेचन लगे। क्या करें, हटाना पड़ा।"

"अरे, पर अब तो वो राड़ मर-खप गई। बुड्ढे को लायके घर की किसी कोठरी मे पटक दीजिए, आपकी इज्जत भी बचे और हम लोगो की भी।"

एक क्षण फिर सन्नाटे का ही बीता, फिर बहू का संयत स्वर सुनाई दिया : "देखिए भैंएजी, बुरा न मानिएगा, बिरादरी की बात अलग है, बाकी तनकुन का बेटा डाक्टर हैगा। हम लोगन ने उन्हें बिरादरी से भले निकाल दिया होय पर सबकी हारी-बीमारी में वही काम आउत हैगा। और खत्री भाइयन मे कौनों से धेला नही लिहिस है अब तलक। ये ठीक है कि हम बिरादरी के हुक्म को मानेंगे, उनसे सम्बन्ध नही रखेंगे, बाकी उनसे झगड़ा मोल लेनेवाला हम कौनो काम नही करेंगे। ये हम आपसे हाथ जोड़ के कहे देते हैं।"

लाला चुप, लाला का हुक्का गुड़, गुड़, गुड। फिर हुक्के की नली एक ओर सरका कर लाला बोले : "बात तो आपकी ठीक है, अब दुइयै-चार रोज में चोपडाजी का लड़का सोमनाथ भी बिलैत से आने वाला है। सब कहते है कि उन्हे भी बिरादरी से बाहर निकाल दो। ये हमारी समझ में भी नही आता है, बहूजी अब आप समझिए बिलैत से बालिस्टर हुइके आवैगा। बिलाइत का सारा कानून इनके घर में जीतने के खातिर महजूद रहैगे। पचायत भला जीत सकेगी। मगर प्रोहितजी को क्या कहें, बरमतेज से तप रहे हैंगे। दुई-चार बिरादरी वाले भी अपने पुराने घमंड में फूले भये हैंगे, समझ में नही आता क्या करें।"

कमरे मे फिर कुछ देर के लिए चुप्पी छा गई। किवाड़ के पीछे से बहूजी बोली :

"मैं ऐसा करती हूं भैएजी, कि आज चुन्नो बीबीजी से मिलने जाऊंगी। मन्नो बुआ की तबियत खराब है, देख भी आऊंगी। और जो उनकी सलाह हुई तो बाबू को यहां लै आऊंगी तनकुन की वौटी से चुन्नो बीबी का बहुतै-बहुत दुभाका रहा। डाक्टर की बौटी, सुना है, अबही तलक उन्हे सास जैसा मान देत हैगी।"

हुक्के की गुड़गुड़ाहट ने पहले सहमति दी, फिर लालाजी बोले : "ठीक है, पहले चोपड़ेजी की घरवाली से मिल आइए। वहरहाल, इस समय भुल्लो ताऊ को घर लाने मे ही अपनी इज्जत है। लाख बिरादरी के हो पर बाहरवाले उनके खाने-पीने पर पैसा खर्च क्यों करें ? ई अच्छा नही लगत हेगा। हम ठीक कहत है कि नाही ?"

"ठीक है, आपका हुकुम माना जायगा। हम आज ही चुन्नो बीबी से बात करन जाएंगे। पर एक बात आपसे भी कहे देते हैं, प्रोहितजी को सम्हाले रहें। चुन्नो बीबीजी के लड़के को निकालने-उकूलने की बात अबही ठंडी रखें।"

कुन्जू भी बोल पड़ा : "भाबो ठीक कह रही है, चाचा। अब ये निकालने-उकूलने के चक्कर में ही बाबा ने घर का इतना 'लास' करवाया। शुरू में हमरे बाबू ने भी इटरेस्ट लिया पर बाद मे हमारी भाबो (दरवाजे के पीछे बैठी मा की ओर हाथ बढाकर) के जोर से ही बाबू चुप होके बैठे रहे, नही तो आज जाने और कित्ता फिनासियल लास हम लोगन का होय गया होता। और एक बात और समझ लीजिए चाचा, अब अपनी बिरादरी मे बहुत से लड़के पढ़-लिख गये है, सबको ही नौकरी चाहिए। सभी का काम सरकार-दरबार से रोज पड़त हैगा। आप समझें न ?"

"समझ रहे हैं, सब समझ रहे हैं भाई। अब हम क्या करैं कुन्जू, वो प्रोहितजी साले तो हम लोगन का माल खाय-खाय के धरम की तोप के गोले हुई गए हैं, अब धरम भगवान के आगे हम लोग क्या बोलें। बाकी तुम लोग भी अगर मिलके अपना तड़ कायम कर लेवो तो कुछ बात बनै। हम छंगे ताऊ की बात तो नही कह सकते, बाकी पंचो मे लल्लो बाबू और गौरी बाबू दोनों को हम सम्हाल लेंगे।"

दोपहर में स्व० लाला मैयादास की पत्नी डोली पर बैठकर मन्नो बीबी के घर गईं। उन्हें देखकर चुन्नो बोली : "अरे आओ-आओ, आज कहां रस्ता भूल पड़ीं ?"

"कई दिन से सोचत रहे, हमने कहा आज बुआजी का देखि आवैं। अब कैसी तबियत हैगी बुआ की ?"

"क्या कहें ? हमरे सोमू में उनके परान अटके हैंगे। बाकी बैदजी तो कह गये कि अब इनका कागज पूरा हुई गया है। हमरा जी घबराउत हैगा कि ई लड़के का लैके घर आय जांय तभी जौन होना होय सो होय।"

"बोलत-चालत तो हैंगी ?"

"हां, बोल-ऊल तो सब हैगा, बस रात दिन सोमू-सोमू हमरा सोमू कब अहै, यही कहती रहत हैंगी।"

"हां, बहना, अब बुढ़ापे का शरीर है, क्या कहा जाय। उधर हमरे ससुर पड़े हैंगे तनकुन के हियन।"

चुन्नो बीबी कुछ तमककर बोली : "नाही, उन्होंने उन्हें अपने हियन नहीं रखा। बिलैती नरस की निगरानी में रहत हैंगे।"

"अरे, यही तो और भी खराबी की बात है, बीबीजी। हमरे बाबू का जैसा सुभाउ है तुम तो जानती ही हो। औरत देख के उनका होस ठिकाने थोडी रहत है। ऊके भुलावे में आके कही किरिस्तान-इरिस्तान हुई गए तो हमरी औरौ नाक कटेगी।"

चुन्नो बीबी हंसीं, बोलो : "अरे, तो क्या हरजा है। तुम्हें बिलैती सास मिल

जैये।···बाकी ऐसी फिकर न करो। तुमरे ससुर तो ऊ नरस को अम्मा-अम्मा पुकारत हैंगे, तुमरी तो ददिया सास हुई गई।"

"अरे बीबीजी, हंसी न करो।"

"हंसी नाही, हम तुमसे सच्ची कह रहे हैंगे। खोखा की बहुरिया अबहीं परसों हमरे हियन भाभो को देखन आयी रही। वही बताय रही थी कि बुढ़िया को अम्मा-अम्मा कहत हैं।"

मैयादास की पत्नी कुछ न बोली। चुन्नो बीबी ने फिर कहा: "हमरी कुसलो बहू कहत रही कि खोखा उन्हें देखने गए तो भुल्ली ताऊ बोले कि बेटा ई हमरे पुरबले जनम की मां हैंगी। अब हम इन्ही के पास रहेंगे। तुम हमरे पुरखन का हाता बिकवाय के पैसा इन्हें के नाम जमा कर दो। अब हम इन्हें के घर रहेंगे।"

भुल्ली लाला की पुत्र वधू कुछ न बोली, चुप रही। थोड़ी देर बाद उठकर चली भी आई। घर आकर अपने बेटों से सारी दास्तान बतलाई, और कहा: "तुमरे बाबा जी ये आठ-दस हजार का हाता बिकवाय के पैसा ऊ बिलैती बुढ़िया के नाम कर दिहिन तो नुस्कान किसका होयगा? हम तो पहले ही कहत रहे। तब तुमरे बाबू उन्हे घर से हटाय के हाते में जब भेजन लगे तबही हम कह दिया रहा कि ई हाता बेच के बुढ़िया को रकम दे देंगे। सो उनकी ऊ छिनट्टो को न मिला पर ये रांड लै जायगी, जरूर लै जायगी।"

"भाबो फिकर न करो, बाबा अब किसी को दान नही दे सकते। हा, ये जरूर है कि टण्डन डाक्टर ने उन्हें बदमासी करके बिलैती मेम के हिया रखवाय दिया है। हम लोग अगर जादा कुछ खीच-तान करेंगे तो मामला बहुत गडबड़ाय सकत हैगा। ऊ लोग कहैंगे कि हमने सारी बिरादरी की नाक काट ली।"

मैयादास की पत्नी गंभीर भाव से बैठी सोचती रही, फिर एक निःस्वास ढोलकर बोली: "कुछ-न-कुछ तो जरूर करना पड़िहै बेटा। घर का पुरखा चाहे कैसा होय, पर दुस्मन के कब्जे मे आय गया है नाक तो हम सबन की कटियै। तुम प्रोहितजी से जायके कुछ सलाह-सूत करो।"

"प्रोहितजी—प्रोहितजी साले कुछ न करिहैं, भाबो। अब हम क्या कहें बाबा को कि जिन्हें बिरादरी मे निकलवाया, हजारों रुपया फूंक के नाक से नाक लड़ाई, उनही के लड़के के पास अपनी बिमारी का सन्देसा भेजा। अरे, हमें कहलाया होता तो हम क्या उनकी खातिर कुछ न करते? एक-से-एक ससरे उस्ताद जर्राह हमरे सहर में हैंगे। बाकी क्या कहें, हमरी लोगों की नाकैं तो काट ली खुद हमरे बाबा ने। अब जो होवे सो भुगतो भाई।"

मैयादास की पत्नी को अपने बेटे से बातें करके भी सन्तोष न मिला; चुप हो गईं। रात मे पड़े-पड़े तय किया कि सबेरे किसी-न-किसी उपाय से तनकुन बाबू के घर जायेंगे। मगर लड़को से यह बात नही कही।

सबेरे नौकर से मर्दाने में कहलाया कि बड़ी बहूजी के लिए गाड़ी जुतवा दें, वो गोमती नहा के अलीगंज महाबीरन के दरसन करने जायेंगी। इस बहाने से वे नजरबाग पहुंचीं।

सवेरे का समय, डाक्टर साहब को अस्पताल पहुंचा कर टमटम घर लौट आयी थी और तनकुन बाबू पतलून, शेरवानी और फैल्ट टोपी पहनकर, चांदी के मूठ की छड़ी हाथ मे लिए अपनी कोठी के फाटक से निकल ही रहे थे कि मैयादास की विधवा पत्नी घूंघट काढ़े अपनी गाडी से उतरी। बाबू बंसीधर ने उन्हे अपने सुनहरे फ्रेम के चश्मे से एक नजर उठाकर देखा। वे पहचान न पाए। बहू जी और उनके पीछे-पीछे एक दासी फत्तो

का झावा लेकर बहू जी के पीछे-पीछे फाटक के अन्दर घुस गई।

पत्नी के देहान्त के बाद बाबू साहब ने अपनी दाढ़ी बढ़ा ली थी। गाड़ी के पास खड़े होकर उन्होंने अपने साईस से धीरे से कहा : "चौधरी, जरा आगे बढ़ के साईस से पूछो, ये सवारी किसके यहां से आई है ?"

पता लगा कि भुल्ली लाला की पुत्र वधू है। सुनकर अपनी दाढ़ी-मूंछों में वे मुस्कुराए। फिर बरामदे में चढ़ती हुई भुल्ली लाला की पतोहू की ओर उंगली उठकर लान में खड़े माली से कहा : "इनको रानी बहू के पास पहुंचा दो। और सुनो।" माली के पास आने पर उन्होंने उसके कान में कहा, "रानी बहू को अलग से बुलाकर कह देना कि ये जो आयी हैं, इनकी किसी बात का पक्का जवाब न दें। शाम को घर आकर सुनूंगा। और देखो, आज दफ्तर से आने मे मुझे जरा देर होगी, कह देना कि गार्डेन पार्टी के बाद ही आ सकूंगा। आज मेरा दफ्तर का आखिरी दिन है !"

सौ० कौशल्या टंडन आंगन मे बैठी क्रोशिए से मेज ढांकने से लिए रूमाल बुन रही थी और महराजिन से कह रही थी कि "चटनी तुम्ही बना लेना महराजिन, कट्टो आज नही आएगी।"

रसोईघर के अंदर से महराजिन बोली : "ई निगोड़ी कहारी की लौंडिया अब बहुत मस्ताय गई है, रानी बहू।"

"अरे नही भाई, आज उसको देखने आने वाले हैं शादी के लिए···आइए-आइए।" कहते हुए कौशल्या उठ खड़ी हुई और न पहचानते हुए भी उसने हाथ जोड़े और दालान के पास ही बने अपनी स्वर्गीया सास के कमरे में उन्हे ले गई। कमरे में स्वर्गीया श्रीमती चंपकलता टंडन का एक बड़ा फोटोग्राफ सुनहरे फ्रेम मे मढ़ा हुआ टंगा था। कमरे मे तखत पर बैठाते हुए कौशल्या बोली : "आप कहा से आई हैं, माताजी ?"

चद्दर उतारकर तखत पर रखते हुए मैयादास की पत्नी बोली : "अब तुम्हें क्या बतावें बहू, चमेलो बहन तो चली गई, ऊ हमे जानत रही। पिरभा भी हमें अपने बचपन में देखिस है···"

"प्रभा बीबी तो चार दिन हुए कलकत्ता चली गई हैं।"

"हां, चुन्नो बीबी से मालुम हुआ रहा, पिरभौ डाकटरी पढ़न गई है। ई तो बहुत बड़ी बात है। हमरी बिरादरी मे कोई ऐसी नामी औरत तो बनेगी। ऊर्क मैया बिचारे ने डाकटर बन के हमरे ससुर की जान बचाई हैगी। उनका जित्ता उपकार मानें उत्ता कम है।"

कौशल्या की आंखों मे चेतना की चमक आई। झट से उठकर उनके पैर छुए, और कहा : "मैं अब पहचान गई आपको। भुल्ली बाबा को देखने के लिए ये रोज जाते हैं। अब उनकी तबियत बिल्कुल ठीक है, आप चिंता न करें।"

"चिंता तो नहीं हैगी बेटी, हम तो कहेंगे कि हमरे डाकटर बेटे और तनकुन बाबू जैसे लोग ढूंढ़े लाखन-करोड़न मे नाही मिलिहैं। हमरे ससुर जिन्होने तुम लोगन के साथ इत्ती इत्ती जास्ती करी, उनही के आड़े बखत आप लोग काम आए। इत्ता खर्चा उठाय रहे हैं आप लोग। हमरा तो सिर धरती में गडा जात हैगा बीटी।"

"ये बातें आप न करें। यह तो इन लोगो का फरज था कि दुःख-दरद में अपने एक जात भाई की सेवा करें और फिर वो तो बड़े-बूढ़े हैं, चाची जी।"

मैयादास की पत्नी ने एक लंबी सांस ली और फिर कहा : "तुम लोगन का बड़प्पन हैगा बेटी, बाकी हम तुमसे यही कहने आए हैं कि डाकटर साहब से कह के तुम हमरे ससुर को घर चलने खातिर राजी कर लेओ। घर वालन के होते तुम लोग खर्चा करो, ई

हमरे लड़कन का अच्छा नाही लगत हैगा।"

कौशल्या गंभीर हो गई, बोली : "ऐसा है, चाची जी, कि आज तो हमारे पापा जी दफ्तर से ही दो बजे सीधे बंबई के लिए चले जाएंगे। और उधर भी अस्पताल से उन्हें किसी मीटिंग में जाना है सो आज दुपहर को रोटी खाने भी आना नही होगा···"

मुल्ली लाला की पुत्र वधू बोली : "ठीक हैगा बीटी, तुम रात मे पूछ लेना, मैं कल इसी बखत फिर आऊंगी।"

कहकर वह उठने लगी। कौशल्या ने हाथ जोडकर कहा : "आपको इत्ती दूर आने में तकलीफ तो होगी पर क्या कहूं मजबूरी है। अब तो जब पापाजी बबई से आ जाएंगे तभी उनसे पूछ कर कुछ तय होगा।"

मैया-पत्नी का चेहरा उतर गया। वह आठ दिन बाद आने को कह कर चली गई।

30 दिसंबर की शाम को लगभग पांच बजे डा॰ देशदीपक घर आ गए। अब डाक्टर साहब ने भी अपने लिए एक टमटम ले ली है। बैठक में आए, पंचम ने फुर्ती से जूते खोले, मोजे उतारे और उनकी स्लीपर लाकर रख दी। कौशल्या तब तक स्वय ही पाजामा और ऊनी कुर्ता, वास्कट लेकर आ गई। कपडे वदलकर डाक्टर साहब चैन से कुर्सी पर बैठ गए, फिर एक बार कमरे में चारों तरफ नजर घुमाकर उदास स्वर में कहा : "मां चली गई और इस वक्त पापा बम्बई मे हैं और प्रभा कलकत्ते मे। कितना सूना लगता है ये घर!"

"पापा तीस तारीख को आने के लिए कह गए थे, लेकिन आज तो आए नही। मेरे ख्याल मे कल सवेरे अवश्य आ जाएंगे। कल उनकी सर्विस का आखिरी दिन है भई। कल दफ्तर में उनकी पार्टी होगी, ऐड्रेस-वेड्रेस भी दिया जाएगा, सर्विस के पच्चीस बरस शान से पूरे किए हैं उन्होने, कोई मजाक थोड़ी है!"

"तिलोकी चाचा भी तो उनके साथ गए हैं।"

"अरे पापा कांग्रेस में गए हैं और चाचा जहाज पर अपने बेटे को रिसीव करेंगे। पापा मुझसे कह गए थे कि कांग्रेस का सेशन समाप्त होते ही आ जाऊंगा और रिटायरमेंट के अंतिम दिन आफिस अवश्य अटैंड करूंगा। चाचा शायद सोमू को लेकर यहा तीन या चार जनवरी को आएंगे।"

इतने में ही नौकर तार लेकर आ गया। फारम पर पावती के दस्तखत करके लिफाफा खोला, फिर कहा : "पापा का तार आया है कानपुर से, कल सवेरे आ रहे हैं। कानपुर में किसी काम से आज रुक गए।"

कौशल्या सुनकर भीतर जाने लगी।

खोखा बोला : "अरे ठहरो-ठहरो, कहां चली?"

"आपके लिए···"

"मेरे लिए कुछ नही। जानती हो, कलेक्टर के यहां गया था। अंग्रेज आदमी ठीक चार बजे टी टाईम पर हम लोगो को अपने डाइनिंग हाल मे ले गया। आज मैं भी चाय पीकर आ रहा हूं।"

कौशल्या आंखें नचाकर बोली : "चाय भी कोई पीने की चीज है। एक बार पिताजी लाहौर में एक अंग्रेज जज की मेम का इलाज कर रहे थे। एक दिन साहब ने अपने पंडित अर्दली के घर से पीतल का गिलास मंगवाकर उन्हें जबरदस्ती चाय पिलवा दी। कहा, हकीमजी देखिए तो, पीते ही कैसी फुर्ती और ताकत आती है! मगर उनकी तो नकसीर फूट गई गर्मी के मारे। ठहरिए, मैं दूध तो जरूर पिलाऊंगी।"

"अमां इधर आओ जी, दूध अब मेरे बेटे को पिलाना, अब दिन ही कितने हैं।"

कौशल्या झेंप गई, लौटकर कुर्सी पर बैठते हुए कहा : "आपके मुल्लीमल के लड़के की घरवाली आई थी।"

"क्यों?"

"कहती थी डाक्टर साहब से कह दो अपने ससुर को घर ले जाना चाहती हूं।"

"घर ले जाकर क्या करेंगी? घर से तो उन्होंने और उनके लेट हस्बैंड ने पहले ही निकाल बाहर कर दिया था।"

कौशल्या को हल्की सी हंसी आई, बोली : "यही बात मैं भी उस समय सोचने लगी, जब उन्होंने घर ले जाने की बात कही थी। मैं तो समझती हूं कि ये बिरादरी के डर से ही कुछ सोच के आई होगी।"

"तुमने ठीक सोचा। अब चुन्नो चाची के यहां सोमू विलायत से आने वाला है सो बिरादरी में हड़बोंग मचेगा ही। लेकिन इन लोगों बेचारों की बदनसीबी यह रही कि उस बुड्ढे को अपने दुःख में उन्हीं लोगों का ख्याल आया जिनसे उसने दुश्मनी मोल ली थी!"

"तो इसमें आप लोगों ने बुरा क्या किया? मैंने तो उनसे कह दिया कि उनका खर्चा हमें भारी नहीं पड़ता। आगे मैंने उनसे कहा कि पापाजी जब बम्बई से लौट आएंगे तभी तय होगा।"

"सोचना ही पड़ेगा कुशलो। इन्होंने हमारे पापाजी और मां को कुछ कम नहीं सताया है।"

कौशल्या सिर झुकाए बैठी थी, बोली : "खाली मांजी और पापाजी ही नहीं हम और आप भी···"

"हां री, अंधविश्वासों और पाखंडियों से लड़ना ही सत्यवादियों का सच्चा पुरुषार्थ होता है। खास तौर से मैं तो अब कोई शिकायत कर ही नहीं सकता। दूसरे, मेरे पेशे ने मुझे खत्री जाति से आगे बढ़ कर मनुष्य जाति का सदस्य बना दिया है। मुझे अब कोई शिकायत नहीं अपनी बिरादरी से।"

"क्यों?"

"अरे उनका पाप और पाखंड ही मुझे फल गया। पूछो कैसे? (कौशल्या की ओर हाथ बढ़ाकर) ऐसा अनमोल कोहिनूर जो किसी और के हाथों में जा पड़ा था, ईश्वर ने मुझे दिला दिया।"

कौशल्या की नयन पुतलियों में नेह का सागर उमड़ पड़ा। बोली : "मेरी वजह से कितनी तकलीफें आपको और सब घरवालों को भोगनी पड़ीं!"

"ओह, उनका जिकिर क्यों करती हो, रानी? यह तमाम तकलीफें अब इस समय हमारे ऊपर आशीर्वाद के फूल बनकर बरस रही हैं। बस एक तकलीफ यही है कि मां कोई सुख देखने के लिए नहीं रही।" कहते हुए खोखा और सुनती हुई कौशल्या दोनों की आंखों में एक साथ आंसू उमड़ पड़े। खोखा बोला : "तुम्हारे मां होने के दिन आ रहे हैं और मेरी अपनी मां की याद तेजी से बढ़ती जा रही है।"

"कितनी खुश थीं। सुनते ही मुझे छाती से चिपटा लिया था। ऐसी अभागी रही मैं···"

"भूलो कौशल्या, मनुष्य के जनम लेने और उसके मरने की इच्छा खुद उसके हाथ में प्रभु ने नहीं रखी है। मां के न रहने से पापाजी को कितना धक्का लगा है! इधर प्रभा भी कलकत्ते चली गयी और अब दो दिनों बाद पापा रिटायर्ड होकर बैठ जाएंगे तो कैसे कटेगा उनका सूनापन?"

आंखें पोंछते हुए कौशल्या संयत हो गई, बोली : "उनका पढने का शौक समय बिताने में मदद देगा। और अब तो वह 'ऐडवोकेट' मे लिखने भी लगे हैं।"

"हां, ठीक कहती हो तुम। मुंशी गंगाप्रसाद जी के साथ अब उनका वक्त ज्यादा बीतता है। मुशी जी भी अपनी खत्री बिरादरी मे एक ही रतन है। कम से कम हमारे लखनऊ में उनके मुकाबले का कोई हिन्दू लीडर भी नही है।"

बातें करते समय कट गया। सर्दी का अंधेरा अधिक गहराने लगा। बुद्धू कमरे में टंगा अर्गन लैम्प तेल भरने और चिमनी साफ करने के लिए ले गया था, दो बत्तियों वाली रोशनी जला कर ले आया। कौशल्या उठी।

"कहां जा रही हो ?"

"मांजी के ठाकुर-घर में दिया जला आऊं।"

"कौशल्या, एक बात बतलाओ। तुम्हारे मन मे तो इन मूर्तियो वाले भगवानो के लिए कोई विश्वास है नही, फिर यह ढोंग क्यों करती हो ?"

"ढोंग नही, श्रद्धा देती हूं। और वह श्रद्धा माजी और पापाजी के लिए है। जब से मां मरी हैं, पापाजी जिनको कभी पूजा करते नही देखा था, वे भी दुर्गा की मूरत पूजने लगे। एक दिन मैंने पूछा तो कहने लगे, कि मेरे लिए ये दुर्गा जी से जादा तेरी मा की मां हैं। इन्हें पूजकर तेरी मां को ही पूजता हूं। इसीलिए मैं भी शाम को दिया जला कर पहले मांजी का ध्यान करती हूं, फिर ईश्वर का।"

25

सवेरे ऐशबाग स्टेशन पर गाडी ठीक समय से आ गई। बाबू बंसीधर गए तो थे मुशी गगाप्रसाद और मिस्टर त्रिलोकीनाथ के साथ, पर लौटे अकेले। ट्रेन से उतरते ही जब पुत्र ने उन्हे एक गोटे का हार पहना कर और फूलों का गुलदस्ता हाथ मे देकर पैर छुए तो बाबू साहब का मुख कमल सा खिल उठा। दोनो हाथ बढ़ाकर पुत्र को कलेजे मे चिपका लिया और बोले : "भई मेरा सफर बहुत इंस्पायरिंग रहा, बेटे। इट वाज के ग्रेट मोमेंट।"

घर आए। चारो ओर उत्साह छा गया। रूबी और ब्लैकी भी बड़े मालिक को देखकर अपनी जजीरो मे बंधे-बंधे ही उचकने और भौंकने लगे। थोडी ही देर मे महाशय जी और शास्त्रीजी भी लपकते आ पहुचे। बाबू साहब ने बम्बई की पहली कांग्रेस का हाल सविस्तार सुनाना शुरू किया। मेहमानों के सत्कार का प्रबंध करने के लिए कौशल्या भीतर चली गई।

बम्बई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज मे इंडियन नेशनल कांग्रेस का पहला अधिवेशन हुआ। कालेज के छात्रावासों मे प्रतिनिधियों के ठहरने का प्रबंध था। पहले अधिवेशन मे ह्यू म साहब तो थे ही, कलकत्ते के व्योमेशचन्द्र बनर्जी और नरेन्द्रनाथ सेन,

पूना से वामनदास, सदाशिव आपटे और गोपाल गणेश आगरकर, लखनऊ से गंगाप्रसाद वर्मा और महाजन सभा के अध्यक्ष पी० रँगैया नायुडू, मद्रास से एस० सुब्रहमण्यम ऐय्यर और पी० आनन्द चार्लू, जी० सुब्रहमण्यम ऐयर, एम० वीर राघवाचार्य और अनन्तपुर से पी० केशव पिल्ले आदि सज्जन प्रतिनिधियों के रूप मे आये थे। मद्रास के दीवान बहादुर आर० रघुनाथ राव, डिप्टी कलेक्टर, प्रोफेसर रामकृष्ण राव भंडारकर, माननीय महादेव गोविन्द रानडे, आगरे के लेखक और विद्वान लाला बैजनाथ और अध्यापक सुंदररमण जैसे लोग बिना प्रतिनिधि बने ही उपस्थित थे। 'मराठा', 'ज्ञान प्रकाश', 'केसरी', 'नव-विभाकर' 'इंडियन मिरर,' 'ट्रिब्यून', 'इंडियन यूनियन स्पेक्टेटर', 'इदु प्रकाश', 'हिन्दू' जैसे प्रतिष्ठित पत्रों के संपादक भी मच पर उपस्थित थे। सैय्यद अहमद खा की सलाह से किसी मुसलमान ने इसमे भाग नही लिया।

पंडाल मे दर्शकों की भीड़ अधिक न थी, लगभग दो, ढाई सौ लोग दिखलाई पड़ रहे थे। दर्शकों से लेकर मंच तक सुनहरी झब्बेदार मराठी पगड़ियो की छटा दिखलाई दे रही थी। दक्षिण भारतीय शिक्षित वर्ग भी था, उनके वैष्णवी तिलक या कपाल पर भस्म लगी, सादी या जरी पाड़ की पगड़ियों के साथ कोट, नेकटाई और पतलून से लेकर कोट, नेकटाई और लगी पहने अंग्रेजी पढ़े-लिखे दक्षिणवालो का व्यक्तित्व अलग ही बोलता था। बहुत सी गुजराती दर्शकों की पगडियो के बीच मे साफा बांधे हुए बाबू बंसीधर टंडन अपनी इकाई को भी राष्ट्रीय इकाई में शामिल करते हुए बड़े प्रसन्न थे। कितनों से परिचय हुआ। बंसीधर टंडन को लगा कि वह अपने देश से मिल रहे हैं। 28 दिसम्बर, 1885 का दिन। दोपहर 12 बजे राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन आरंभ हुआ। ह्यूम साहब ने अध्यक्ष पद के लिए कलकत्ते के व्योमेशचन्द्र बनर्जी महाशय का नाम प्रस्तावित किया और मानवीय ऐयर और माननीय तैलंग ने उनके नाम का समर्थन किया।

बाबू बंसीधर जैसे सद्य: पत्नी-वियोगी दु:खी व्यक्ति भी उस समय अपना व्यक्तिगत दुख, शोक, परिवार, आदि क्षण-भर के लिए भूल चुके थे। उस समय देश का दुख ही उनका दुख था और सारा देश ही उनका परिवार। बम्बई से लौटकर बाबू बंसीधर बड़े भाव से अपने बेटे और मित्रो के सामने सारा वृतान्त सुना रहे थे। कहने लगे : "मिस्टर ह्यूम जब कांग्रेस के उद्देश्य बता रहे थे, तब मेरा मन इस तरह के जजबात से भर गया कि मुझे लगा, कांग्रेस के वे तमाम 'एम्स एंड आब्जेक्टस' हरेक हिन्दुस्तानी के लिए जैसे प्रतिज्ञा करने काबिल जजबात और ख्यालात हैं। देश के लिए काम करने वाले जितने लोग या आर्गनाइजेशंस हैं, वे सब मेरे निजी परिवार के ही अंग हैं। वंशों, धर्मों या प्रांतीयता जैसा कोई तंग दायरा हमे नही बांधता है। अमीरी, गरीबी या जात-बिरादरियों के अलगाव और उनके ऊंचे-नीचेपन जैसी कोई भी चीज हमारे सामने नही थी। सच मानिए मित्रो, थोड़ी देर के लिए मैंने यह महसूस किया कि उस हाल में एक दर्शक की हैसियत से कुर्सी पर मैं सिर्फ बंसीधर टंडन नही, बल्कि मेरे रूप में पूरा हिन्दुस्तान बैठा हुआ है। उस वक्त मैं मैं नही बल्कि पूरा हिन्दुस्तान था।"

छोखा बोला : "यह छोटी बात नही है पापाजी, बहुत बड़ी बात है। लाहौर मे एक बार महात्मा मुंशीराम जी के श्रीमुख से भी मैंने ऐसी ही बात सुनी थी। उन्होंने कहा, आर्य वीरो, यह महसूस करो कि तुम इस पवित्र आर्य भूमि की मिट्टी के एक जर्रे हो और वह जर्रा कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, खैबर दर्रे से लेकर बंगाल और आसाम तक, बम्बई से कलकत्ते तक, हर जगह की मिट्टी में एक सा घुला मिला हुआ है।"

"महात्मा मंशीराम तो अपने खत्री भाई ही हैं?"

"जी हां, पापा। जालंधर के हैं।"

कलई की किश्ती में फलों की तश्तरियां रखकर कमरे में प्रवेश करते ही पति की बात में बात जोड़ते हुए कौशल्या बोली : "इस समय पापाजी, हमारे पंजाब के खत्रियों में महात्मा मुंशीरामजी और महात्मा हंसराज जी और बनियों में लाला लाजपतराय जी बड़ी तेजी से समाज को जगा रहे हैं।"

बाबू बंसीधर बोले : "अच्छा है, अगर भारतवर्ष की सब जातियों के पढ़े-लिखे लोग मिलकर अपने समाजों को जगाएंगे तो पूरा भारत जाग उठेगा।"

घड़ी देखी, मतब में मरीजों को देखने के लिए जाने का समय हो चुका था। कुर्सी से उठते हुए डा० देवदीपक टंडन ने कहा : "हां, भारत एक आर्य जाति बनकर जागे, अलग-अलग जातियां बनकर नहीं, तभी हमारे इस देश का उद्धार होगा। तभी हम फिर से 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' का नारा उठा सकेंगे।"

उसी समय बुद्धू आया, बाबू साहब से कहा : "हजूर, कौनो सेया बाबू क्यार कंपुनी ते आवा है, कहत है बम्बा ठोकब।"

"सेयां बाबू ?" बाबू बंसीधर ने चौंक कर पूछा।

खोखा बोला : "हां, हां, सान्याल बाबू का आदमी होगा, मैंने बुलवाया था। ट्यूबवेल लगवा रहा हूं, पापा। एक लगवाऊं कि दो ?"

"अब भाई, ये सब कौशल्या जाने। तुम्हारी मां के जाने के बाद यह तमाम फिक्रें मैं अपने मन से दूर हटा चुका हूं।"

घर के भीतर जाती हुई कौशल्या से बुद्धू ने कहा : "हजूर पानी क्यार बम्बा ठोका जाई। न सगाओ बहू रानी।"

डा० देवदीपक ने सान्याल कंपनी के आदमी से मिलने के लिए बाहर जाते हुए कहा : "इन नलों में भी क्या गोरों का नहाया हुआ पानी आएगा बुद्धू ?"

"नाहीं छोटे सरकार, हम सुना कि यू बदन क्यार पानी खींचै वाली कल महिया कैनो मलिच्छनाई मिलाय के हमार धरम बिगड़िहैं।"

विदा लेने के लिए खड़े हो चुके महाशयजी, शास्त्रीजी आदि सभी उपस्थित मंडली खिलखिलाकर हंस पड़ी। कौशल्या बोली : "बुद्धू काका, हमारे पंजाब में काका, किसको कहते हैं, जानते हो ?"

"अब हम क्या जानी, रानीबहू। पढ़े-लिखे ध्वारो हैं।"

कमरे से बाहर जाते हुए बुद्धू के कंधे को खोखा ने हाथ से थपथपा कर कहा : "काका बच्चे को कहते हैं बुद्धू, इनके मैके वाले।"

बुद्धू, बुद्धू सा मुंह फुलाकर बड़बड़ाते हुए दरवाजे से बाहर चला गया। सहसा बाबू साहब ने पूछा : "तो वह नल कब लगने वाले हैं ?"

खोखा बाहर जाते-जाते रुक गए। पतलून की जेब में हाथ डालकर बोले : "अभी उसमें दिक्कतें हैं, पापा। एक हजार दो सौ दो फिट की ड्रिलिंग करने के बाद भी वे सिर्फ इतना ही पानी पा सके हैं कि शहर के कुछ हिस्से में ही उसकी सप्लाई की जा सकती है। अलावा इसके मैंने यह भी कहा कि पानी को पीने लायक बनाने के लिए उसकी सफाई एक सेंट्रल जगह पर होनी चाहिए। मैंने तो कहा कि जिस तरह स्टीम इंजन की मदद से आप कुएं से पानी खींचकर निकालना चाहते हैं उससे कुएं के बजाए गोमती से पानी खींचने का उपाय किया जा सके तो शायद ज्यादह अच्छा होगा।"

"हां, यह खयाल बेहतर है। पानी की कमी इस शहर में सचमुच काबिले-गौर है। तुम्हारे इस सुझाव का क्या असर पड़ा ?"

"अभी तो कुछ नहीं कहा जा सकता, पापा, लेकिन मिस्टर मॅक्डॉनल्ड ने मेरे इस

सुझाव को बहुत पसन्द किया है। बल्कि उन्होंने मुझसे यह सुझाव भी मांगा है कि पानी को फिल्टर करने के लिए टैंक कहां बने। खैर, कौशल्या मैं पीछे लान मे ट्यूबवेल लगवा लूं। सिंचाई के अलावा गायो, घोड़ों की चरही भी भर जाया करेगी।" कौशल्या ने सहमति मे सिर हिला दिया।

बाबू साहब को भी आज आखिरी दिन दफ्तर जाना था, इसलिए वे भी कपड़े पहनने लगे। जब तैयार हो गये तो बहू को आवाज दी: "रानी बहू, मैं दफ्तर जा रहा हूं बेटी, शाम को देर से आऊंगा।"

कौशल्या हाथ पोछती हुई बाहर आई, कहा: "अच्छा पापाजी। हां, एक बात आपसे कह दूं, वह भुल्लीमल जी के लडके की पत्नी आई थी। उस समय आप बम्बई मे थे।"

"हां याद आया, एक बार मेरे जाने से पहले भी आई थी। क्या कह रही थी?"

कौशल्या बोली: "वो कह रही थीं कि इस बार अपने ससुर को घर में ले जाकर रखेंगी।"

"कही रखो, भाड में जाओ, हमारे साथ बिरादरी ने किया क्या है! दर्द के सिवा हमें और मिला ही क्या है!—"

"मैं समझती हूं पापाजी कि अब वे अच्छे हो गए हैं, हमने अपना फर्ज अदा कर दिया, अब उन्हें जाने दिया जाए।"

बाबू साहब चेहरे पर उपेक्षा के भाव लाते हुए बोले: "ठीक है। ऐज यू लाइक। तुम्हारी मां की डेथ पर बिरादरी वालों ने मेरे साथ जैसा ब्योहार किया, मेरी निर्दोष बहू पर जो जुल्म हुआ, उसकी वजह से मुझे अब बिरादरी मे कोई दिलचस्पी नही रही। प्रभा कलकत्ते गई, उसके हाथ पीले करने का पुन्न लाभ न कर सकूंगा। कैसे कटेगी उसकी जिंदगी? —आखिरी दिन जब मैं और तुम्हारी मां चांदकों जी जा रहे थे, तब यही बातें हम लोगों में हो रही थी। कहती थी तुम्हारी मां, मैंने उसको डाक्टरी पढ़ाने का वचन तो दे दिया है और अपना वचन पूरा भी करूंगी, मगर औरत की जात. यह पहाड़ जैसी जिंदगी कैसे कटेगी?"

क्षणिक मौन को भग करती हुई कौशल्या बोली: "मुझे अपनी ननद की आत्म-शक्ति पर पूरा भरोसा है, पापा। फिर एक बात जो मेरे मन में इन दिनो बराबर उठ रही है, वह ये है कि अगर हमें एक छोटी बिरादरी ने छोड़ा है तो हम अब एक बड़ी बिरादरी में शामिल हो गए हैं। इंग्लैंड-रिटर्न्ड लडके तो अब इतने बढ़ रहे हैं कि कोई बिरादरी रोक नही सकेगी। हम किसी भी अच्छी जाति से निकाले हुए लड़के से प्रभा बहन की शादी करेंगे। अब हमें रोक कौन सकता है?"

"हां, हां, ये भी ठीक है। आखिर वक्त के साथ हमारी खत्री बिरादरी भी बढ़ेगी तो जरूर ही। सभी बिरादरियां बढेंगी। विपिन ने मुझे अपने पिछले खत मे लिखा था कि प्रभा के लिए वह अपनी जाति में ही कोई माकूल रिश्ता ढूंढ़ देंगे।"

"विपिन मामा भी तो बिरादरी से निकाले हुए हैं?" कौशल्या ने पूछा।

"हां, लेकिन पैसे वाले हैं इसलिए बहुत से लोग उनसे लुक-छिप के रिश्ता रखते भी हैं। अपने यहा ही देख लो न, जो भल्ली लाला कल हमारे दुश्मन बने थे उन्हें ही अपनी मुसीबत के वक्त तुम्हारा पती ही याद आया खैर। नेकी कर कुएं मे डाल। हमने अपना धरम निभा दिया, अब लेट् हिम गो टू हैल। तो अब चलता हूं, शाम को आने में शायद देर हो।"

रिटायरमेन्ट के अंतिम दिन यह भुल्लीमल प्रसंग छिड़ जाने से बाबू बंसीधर का मन एकाएक बहुत खिन्न हो गया था। अपनी चमेलो को यों अचानक खो कर बंसीधर पिछले कुछ महीनों से इतने खिन्नमना रहने लगे थे कि एक दिन कार्यालय में अपनी किसी मामूली सी असावधानी के कारण उन्हें इतना अधिक पश्चात्ताप हुआ कि तुरंत अपने शिक्षा निदेशक महोदय के पास जाकर यह निवेदन किया कि सर, अब मेरा मस्तिष्क असावधान होने लगा है, मुझे अवकाश लेने की अनुमति दी जाए।

अंग्रेज शिक्षा निदेशक ने बहुत समझाया, तो आंखों मे आसू भरकर बोले : "सर, मुझे अब पल-पल केवल अपनी स्वर्गीया पत्नी की सूरत ही मन और विचारों में समाई हुई दिखलाई देती है। गो रिटायरमेन्ट का बुढापा पाने में मुझे अभी पाच बरस बाकी हैं मगर मुझे ऐसा लगता है कि जिम्मेदारी के कामों के लिए अब मैं बूढ़ा हो चुका हूं। आज एक मामूली सी चूक हुई है, कल बड़ी भी हो सकती है, इसलिए पेंशन ले लेना ही मेरे हक में बेहतर है।"

साहब ने बाबू बंसीधर की काफी प्रशंसा करते हुए उनकी मानसिक मजबूरी को सहानुभूति पूर्वक समझकर अवकाश के लिए उनके आवेदन पत्र पर अपनी सस्तुति दे दी। इन्हीं दिनों मुंशी गंगाप्रसाद वर्मा ने उनके पत्नी वियोगी मन को देश प्रेम की ओर मोड़ा और 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' के अधिवेशन मे चलने के लिए प्रेरित भी किया। वहां जाकर उन्हें प्रेरणा भी मिली, किन्तु भुल्लीमल प्रसंग से दिल का कच्चा घाव फिर से खुलकर रिसने लगा।

दूसरे दिन सुबह नौ-दस बजे के लगभग मैयादास की विधवा पत्नी फिर आई। डाक्टर टंडन उस समय तक अस्पताल जा चुके थे, लेकिन बाबू बंसीधर अपनी कोठी के धूप भरे लान में बैठे हुए रिटायरमेन्ट का पहला दिन सेंक रहे थे। मैयादास की घरवाली से थोड़ी देर बातें करने के बाद कौशल्या उनके पास आई और कहा कि आई हुई महिला उनसे कुछ बात करना चाहती है।

रूई का पाजामा और रूई का ही चेस्टरनुमा कोट तथा ऊनी मोजे और कंटोप पहने बाबू बंसीधर उठकर अपने बैठक खाने में आए। मैयादास की पत्नी दरवाजे की आड़ में खड़ी हुई थी, बोली : "हम आप लोगन का उपकार कभी भूल नही सकत हैंगे, भाईजी।"

कमरे में कुर्सी पर बैठे हुए बाबू साहब ने उत्तर दिया : "इसमें उपकार की कोई बात नही है। मेरे लड़के ने वही किया जो उसे ऐसे मौके पर करना चाहिए। और मेरी बहू ने भी बराबर इस बात का खयाल रखा कि खाने-पीने का सामान ब्राह्मण के हाथों ही अस्पताल मे और अब उस नर्स, जहां आजकल वह रहे हैं, के यहा लालाजी को भेजा जाए। उनके धर्म पर किरिस्तानी धब्बा बिरादरी वाले न लगा सकें, इस बात पूरा खयाल रखा।" मैयाआली चुप रही। बाबू साहब ने फिर पूछा : "सो आप उन्हें फिर उसी हाते में ले जाकर रखेंगी।"

"नही भाई जी, लड़के बहुएं कहती हैं कि बाबा को घर में ही लाके रखो। और उनका मिजाज जैसा है—आप तो जानते ही हैं, क्या कहैं। हमरे लड़कन के बाप उन्हें बार-बार मना करत रहै, पर नही माने। हजारन रुपया आप लोगन से मुकदमें बाजी में फूंक दिया। और बाकी जो है सो आप जानते ही हैं भाई जी। हमने तो आपको इस खातिर बुलाया रहा कि आपके चरनो में मत्था टेक के जो कुछ भी हुआ, उसके लिए माफी माग लें।"

सुनकर बाबू बंसीधर द्रवित हुए, बोले : "बहन साहिबा, आप मुझे शर्मिंदा न करें।

मुकदमे बाजी मैंने भी आपके ससुर से की थी क्योंकि वे बिरादरी के चौधरी थे। सिद्धान्त की बात पर होने वाली लड़ाइयों में निजी दुख सुख का ख्याल नहीं किया जाता है, वह तो हम अपने कर्मों की बदौलत ईश्वर की इच्छा से भोगते हैं। खैर। यह बतलाइए कि तिल्लोकी बाबू का लड़का आ रहा है तो उन्हें भी क्या हमारी तरह ही बिरादरी से निकाला जाएगा ?"

दरवाजे के पीछे थोड़ी देर तक चुप्पी रही, फिर आवाज आई, "हां, कुछ लोग तो अबही से बहुत खिलाफ हैंगे पर हम लोग तो तय कर चुके हैं, आप के साथ में हैं। आपका बड़का भतीजा कुंजू हमसे बोला कि भाभो, अब तो रोजै नए-नए लड़के बिलैत में अयँ जयँ हम कहां तलक सबन को बिरादरी से बाहर करेंगे। देखिए, क्या होत है भाई जी। अब तो हमरे भी घर का तमासा शुरू हो गया है न। प्रोहितजी चारों तरफ यही बात कहत-फिरत हैंगे कि आप लोगों ने मेरे ससुर जी को मेम के यहां रखवाय के बिरादरी से बदला लिया है। मगर वह दबैंगे नहीं, जो कुंजू, रज्जू अपने बाबा को घर में लाएंगे तो उन्हें भी बिरादरी से निकाल देंगे।"

"तब आप भुल्ली लाला को अपने यहां क्यों ले जाना चाहती हैं ? उन्हें उसी तरह अपने पुश्तैनी हाते मे रखिए, जैसे पहले रहते थे।"

दरवाजे के पीछे फिर मौन का एक दीर्घ क्षण आया। फिर हल्के से गला खखार कर भैयादास की विधवा बोली: "हाते में तो इसलिए हटाए दिया रहा कि उस वक्त अपनी दूर के रिश्ते की साली के फंदे मे रहे, और हवेली के जिस हिस्से में रहत रहे, उमे बेचन [illegible]र उकसाए जात रहे। अब वो बुढ़िया तो रही नहीं, इसी खातिर घर में रखेंगे कि अन्तकाल है। एक बार मुसीबत में आपके हियन आय गए तो कोई बात नहीं। लाख नुकस निकालें तो भी आप लोग अपने हैं, अपनी बिरादरी के हैं। अब डाक्टर साहब ने उइ किरिस्टानी के यहा रखवाय दिया है। और भाई जी, मुंह के कहते धारम आउत हैगी कि हमरे ससुर जी —अब क्या कहें आपसे —कोई फंसाए-फुसूए के उनसे खर्चे का मुकदमा करवाए दे नो हमरे लडकन के ऊपर आफत पड़ जाएगी।"

बैठक मे कुर्सी पर बैठे हुए बाबू बंसीधर अपनी अंगूठी में जड़े हुए पुखराज को अंगूठे से धीरे-धीरे घिसते रहे, चुप रहे। दरवाजे की आड़ से फिर आवाज आने लगी: "इसी खातिर हम उन्हें घर ले जाय रहे हैं। प्रोहितजी हमें बिरादरी से निकालना चाहें तो निकाल दें। हमरे कुंजू, रज्जू का तो कोई नुकसान नहीं होय पाएगा।"

"आपकी बात मैं खूब समझ रहा हूं, बहन साहबा। मा के दिल को पहचानता हूं और उसकी इज्जत भी करता हूं। लेकिन अफसोस, आप लोगों ने मेरी पत्नी के जजबात की कदर न की। उसकी निश्पाप बहू और बेटे को भी निकाल दिया और बेटी का मुस्तिक-बिल भी अंधेरे में ढकेल दिया।···खैर, जो कुछ होता है, वह तो ईश्वर की मर्जी से होता है, मैं आपको उस नर्स के नाम एक खत लिख के देता हूं, अपने ससुर को ले जाइए। मेरे बहू बेटे ने बिरादरी के एक बुजुर्ग की मुसीबत के वक्त जो उनका फर्ज था वो निभा दिया, आगे उन पर हमारा कोई जोर थोड़ी है। रानी बहू, मेरे दफ्तर से मेरा कलमदान और कागज उठा लाओ।"

"ऊ मेम को सौ-दुई सौ जो आपका हुकुम होय वो दे दूं, भाई जी।"

"खोखा ने शायद अस्सी रुपया महीना भुल्ली लाला की देख-भाल के लिए उससे तय किया था। और फल खाना दूध वगैरह तो यहीं घर से जाता था। मेरे ख्याल से आपको कुछ देने लेने की जरूरत तो नहीं फिर भी आप चाहें तो एक गरीब औरत की मदद कर सकती हैं, मुझे कोई एतराज न होगा।"

कौशल्या लिखने का कागज और कलमदान ले आयी। कलमदान रखने के लिए एक स्टूल भी भीतर से उठा लायी। बाबू साहब ने बुढ़िया नर्स के नाम पत्र लिखा। कौशल्या ने ब्लाटिंग पेपर से गीली स्याही सोखते हुए पत्र मोड़कर कुन्जू-रज्जू की माता को दिया, और पैड तथा कलमदान उठाकर दफ्तर के कमरे में रखने चली गई।

मैयादास की पत्नी दरवाजे की आड़ में रखी गई कुर्सी से उठकर बोली : 'भाईजी, हम आपका ऐसान किस मू से बखानें। आपके बेटे और बहू ने जैसी लायकी दिखाई हैगी, वैसी आजकल के जमाने में देखन में नहीं आउत हैगी। हमरे ससुरजी की बेकूफी से और उनके घमंड के कारण आप लोगन को बहुत सहना पड़ा।"

बैठक में कुर्सी से उठते हुए बाबू साहब बोले : "यह तमाम बातें अब भूल जाइए, बहन साहिबा। मैंने तो जब से मेरी घरवाली का स्वर्गवास हुआ, तब से अपना सब कुछ ईश्वर और चांदकों मैया के चरणो मे सौंप दिया है। कल बाइज्जत नौकरी के बीस साल भी पूरे हुए। अब जीवन में मुझे किसी से गिला या शिकायत नही रही।"

"एक बात और कहनी थी, भाई जी। रज्जू हमरे याने आपका छोटा भतीजा अबकी साल इन्ट्रेस पास कर लेवेगा। कुन्जू हमरे कहत हैगे कि भाभो, रज्जू को भी बिलायत भेजेंगे, आपकी क्या राय हैगी ?"

"बेटे को एक दिन मेरे पास भेज दीजिए, उससे बातचीत कर लू तो अपनी माकूल राय आप लोगों को दूंगा।"

मैयापत्नी सौभाग्यवती कौशल्या टंडन से विदा लेने लगी तो कौशल्या ने कहा : "वाह, अभी कैसे जाने दूंगी, इतने दूर से आई है। जानती हूं कि अन्न की कोई चीज तो आप खा नही सकती हमारे यहा की, मगर फल तो खाएगी।"

मैयापत्नी क्षण भर कौशल्या का चेहरा देखती रही, फिर एकाएक उनकी आंखें छलछला उठी। आगे बढ़कर उसके कंधे पर एक हाथ रखा और बोली : "अब तो हम अपने आप तुमरी 'बिरादरी' से बाहर वालन की' बिरादरी मे मिलने आय रहे हैंगे, बहूरानी। बाकी तुम्हें देखके हमरा जिउ जुड़ाय गया। (सहसा कौशल्या को छाती से चिपटा कर) तुमरा सुहाग हरा भरा रहे, दूधो नहाव, पूतो फलो मेरी बिटिया। तुमरा और खोखा डाकटर का ऐसान तो हम मरते-मरतान नाही भूलेंगे।"

बाबू बसीधर पहले ही बाहर चले गए थे। लाला मैयादास की घरवाली भी जलपान करके जाने लगी। कौशल्या बरामदे तक उन्हें छोड़ने के लिए आई। रस्म के तौर पर बड़ी बूढ़ियो से 'पैरी पैना' करने के लिए वह जरा सा झुकी किंतु मैयादास की पत्नी ने उसके दोनो कंधे पकड़ कर रोक लिया : "ठंडी सीरी, बूढ़ सुहागन, दूधो नहाव पूतो फलो, सातो सुख भोगो राम जी करै।" फिर धीरे से कहा : "अब तो लगत है कि दिन बहुत नगिचाय आय हैंगे। आठवां पूरा हुई गया क्या ?"

शर्मा कर कौशल्या बोली : "कल से नवां शुरू हुआ है।"

"तो तुमरी देखभाल करने वाला कौन हैगा हियन। चुन्नो बीबी जी तो अपनी महतारी की बिमारी में फंसी हैंगी और ऊपर से लड़का आवै वाला हैगा। तुम कहो तो हम आय जाएं, बहू ?"

"नही जी, लाहौर से मेरी माताजी और पिताजी आ रहे हैं।"

खंदारी बजार से हजरत गंज की ओर जाने वाली सड़क पर बाए हाथ एक छोटी सी पुरानी बगलिया थी। लान में कभी फुलवारी और घास ज़रूर रही होगी मगर अब सब कुछ उजाड़ है। आधी बंगलिया मे बलरामपुर अस्पताल की वह नर्स रहती है, जिसने दूसरे आधे हिस्से मे रहने वाली बुढ़िया ऐंग्लो इंडियन को भुल्लीलाला की देख-भाल का भार

सौंपा था। गंजी चाद जैसे सफाचट लान में काठ की कुर्सी पर बैठे हुए भुल्लीमल धूप सेंक रहे थे और बुढ़िया मेम उनके पास ही कुर्सी पर बैठे हुए ऊनी गुलूबंद बिन रही थी। दरवाजे पर बग्घी रुकी तो बुढ़िया अपने काठ के टूटे फाटक की ओर देखने लगी। कोचवान भीतर आया, सामने बैठे पुराने मालिक को झुककर सलाम किया और मेम के हाथ मे बाबू साहब की चिट्ठी दे दी। बुढ़िया चिट्ठी लिए अपना चश्मा लेने के वास्ते कमरे की तरफ चली। भुल्ली बाबू चूंकि अपने घर के नए कोचवान को पहचानते नही थे, इसलिए उसकी तरफ ध्यान भी नही दिया।

चिट्ठी पढकर चश्मा पहने, और अपने कधे का शाल सम्हालते हुए बुढ़िया कमरे से बाहर आई। एक बार कोचवान की तरफ देखा, फिर भुल्लीलाला के पास आकर उनके कान मे मुह लाकर जोर से कहा - "तुम्हारा लरका का बीबी आया हाय।"

भुल्लीलाला ने राख ढकी चिनगारी जैसा अपना फीका-सतेज मुंह उठाकर बुढ़िया को देखा और कहा : "मेरा अब कोई बेटा वेटा नही है। अब तो मैं खुद तुम्हारा बेटा हूं।"

बुढ़िया बूढे की पीठ पर हाथ थपथपाकर बोली : "अच्चा हाय, अच्चा हाय, मगर वो आया हाय तो उससे तुम्हें जरूर मिलना मांगटा।" बुढ़िया ने फिर बूढे के कान मे भोंपू बजाया।

"नई, मैं अब किसी से नही मिलूगा। इसी ने मुझे घर से जबरदस्ती निकालकर हाते मे पटका था, अब क्या मुह लेकर बात करने आई है मुझसे? जाओ, तुम्हीं बात कर लो।"

बुढ़िया डुग-डुग करती फाटक की तरफ गयी। भुल्लो की पुत्र वधू दरवाजा खोल-कर बग्घी से नीचे उतर आई, और बुढ़िया के हाथ जोड़े। बुढ़िया बोली : "वो नई आना मांगटा, बोलटा जाओ।"

"देखिए मेमसाहब, हमारी बात सुन लें। हमको यह अच्छा नही लगता है कि घरवालो के रहते कोई बाहर वाला हमारे ससुर की देखभाल के लिए रुपया पैसा खर्च करे। मैं उन्हें घर ले जाने के लिए आई हू।"

बुढ़िया फिर भुल्लीलाला की तरफ आने के लिए मुडी। यह देखकर भुल्लीलाला वही से बैठे-बैठे गरजे : "मैं नही जाऊंगा, कह दो, मैं नही जाऊंगा। मेरी जायदाद हड़पने के लिए इस बदजात औरत ने मेरे लड़के को भड़का कर मेरे खिलाफ किया, मुझे घर से निकलवाया, शादी नही करने दी, मोहब्बत नही करने दी, और अब ये बदजात मुझे मेरी मां से दूर करने आई है। मैं हरगिज-हरगिज नही जाऊंगा।"

बुढ़िया धीरे-धीरे उनके पास आती ही रही। बात पूरी होने पर कान में मुंह लगाकर कहा : "मगर तुम्हारा खर्चा कौन उठाएगा!"

लाला भुल्लीमल के चेहरे पर तमतमाता तेज फीका पड़ गया। सिर झुकाकर बैठे रहे। फिर बुढ़िया का हाथ पकड़कर उसकी ओर देखते रहे। आखें भर आई। कांपती आवाज में कहा : "मां-मां, तुम मेरी पिछले जनम की मां हो और इस जन्म में भी तुम्ही मां बनकर मुझे इतना प्यार देने के लिए आई हो। तुम मुझे क्रिश्चन बनवाकर पादरी से मेरा खर्चा ले लिया करो, पर अब अन्तकाल मे तुम्हे छोड़कर और कही नही जाऊंगा। मैं क्रिश्चन बन जाऊंगा पर कही नही जाऊंगा। इसी जमीन पर अपने प्रान तजूंगा।"

झाड़ी की आड़ मे खड़ी उनकी पुत्रवधू यह सुन रही थी। बुढ़िया मेम फिर डुग-डुगाती हुई उसके पास आई। मैयादास की पत्नी ने कहा : "मेमसाहब, ये नही जाना चाहते तो यही रहें, खर्चे के लिए ये दो सौ रुपए मैं आपको दिए जाती हू। आप डाक्टर साहब से अब कुछ न मांगिएगा। इनके खाने खर्चे का रुपया हर महीने मैं आपके पास भेज

दिया करूंगी। इनको क्रिरिस्टान बनाकर पादरी से इनका खर्चा न लीजिए, यही अर्दास है।"

मैंयादास की पत्नी ने घर आकर अपने बड़े बेटे कुन्जू से सब बात बतलायी। कुन्जू बोला : "हमरी सिकायत तो यही है भाभो, कि तुम हमरे बताए बगैर वहां काहे गई।"

"अरे बेटा, प्रोहितजी हमे बार-बार कहलावें कि बाबू को घर ले आओ, नही तो तिल्लोकी के लड़के के विलैत से आने के बाद तनकुन बाबू तुमरे ससुर को लेकर कोई नयी फांस न फांस दें।"

"देखो भाभो, अबकी बार इन नये जमाने वालों से हम झगडा नही करेंगे। हमरा रज्जू भी तैयार हो रहा है।"

"अरे ई तो हम तनकुन बाबू से आयँ कहि आये, मैंया। हमने कह दिया कि हमरे लड़के आपै के साथ है।"

"ये तुमने अच्छा किया भाभो, आज हम खुद भी उनके बगले पर जाय रहे है।"

"क्यों ?"

"अरे, परसों तिल्लोकी बाबू अपने लड़के को लेकर बम्बई से आवैंगे सो स्टेशन पर उसका सुआगत-सतकार होयगा। फिर तिल्लोकी बाबू अपने मुनीम से कह गये रहे कि रात मे महफिल का इंतजाम होय, बिरादरी गैर बिरादरी की जाफत ज्योनार का इतजाम होय।"

"पर बिरादरी वाले अय्यं ? प्रोहितजी तो जोर-जोर से उनके खिलाफ ढोल बजाय रहे हैंगे।"

कुन्जू उठते हुए बोला : "अब ई सब चिन्ता छोडौ भाभो, क्या होयगा, क्या नही होयगा ये तो परसों सबके सामने आय जैये। तुम अब चुप्पे बैंठो।"

"चुप्पे तो बैठेंगे मैया, पर प्रोहितजी के यहां से जो कोई तुमरे बाबा के बारे में पूछन आयगा तो क्या जवाब देंगे ?"

कुन्जू बोला : "अरे गोल-मोल जवाब दे देना। कह देना बाबा अस्पताल अपने को दिखाउन खातिर गये रहैं सो मिले नही।"

पहली 'जनवरी सन् 1886 का दिन। नौ बजे की डाक से इलाहाबाद का 'पायनियर' अखबार आया। अंग्रेजी पढे लिखो की दुनिया में चमक आ गयी, बाबू बसीधर टण्डन को रायसाहब का खिताब मिला था। देखते ही देखते शहर के पढे लिखों के हुजूम नये रायसाहब को बधाई देने आने लगे। चौक की बिरादरी भरी गलियो मे यह शोर मच गया कि 'तनकुन हेड मास्टर' रायसाहब हो गये। रायसाहब के बंगले मे दिन भर बधाई देने वालों की भीड़ भरी रही। कलकत्ते से विपिन खन्ना और प्रभा के तार भी आये। बड़ी खुशी का दिन था लेकिन तनकुन-तिल्लोकी विरोधी लोगों के घडे में बूढे छगामल और प्रोहितजी आदि सबकी मूछें झुक गयी। तनकुन बाबू की रायसाहबी उनके विपक्ष वालों की बहुत करारी हार थी।

4 जनवरी 1886 को दिन ढले 4 बजे ऐशबाग स्टेशन पर रेलगाडी रुकी। मुनीम जी ने अंग्रेजी बैण्ड बाजे का प्रबन्ध कर रखा था। गाडी के रुकते ही उसका पी-पी-भों-भौ शुरू हो गया। बाबू त्रिलोकीनाथ चोपडा विलायत से बैरिस्टर बनकर आये हुए अपने पुत्र के साथ रेल कम्पार्टमेन्ट से उतरे। श्रीमती मैंगी चोपड़ा ने सौत के बेटे के गले में गोटे का हार डालकर उसे छाती से चिपका लिया, और दोनों गाल चूमे। मैंगी का बेटा डेविड गया तो सोमू के साथ ही था लेकिन उसके लौटने मे अभी चार-पांच महीने की देर है।

डेविड आई० सी०एस० परीक्षा के वास्ते चुन लिया गया, किन्तु सोमनाथ बैरिस्टर बनकर लौट आया है। स्टेशन पर बाबू बंसीधर, डा० देशदीपक, महाशयजी की आर्यसमाजी सेना तथा बिरादरी के आठ दस लोग भी सोमनाथ को लेने के लिये आये थे। भव्य स्वागत हुआ। बाबू बंसीधर त्रिलोकीनाथ से बोले : "तिल्लोकी, इस भीड़ को अपने घर जाने के लिये कह दो। सोमू बेटे को लेकर एक बार पहले कमिश्नर साहब को सलाम कराने के लिये ले जाऊंगा। मैंने उनसे अपाइन्टमेन्ट कर रखा है।"

"ठीक है, और मैं समझता हूं कि सिविल रिसेप्शन के लिए कमिश्नर साहब को ही—"

"ग्रेट मेन थिंक एलाइक। यही मैंने भी सोच रखा है। मेरे ख्याल से उसके लिये उनसे सात जनवरी की तारीख तय कर ली जाय।"

"अब यह बातें सब तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूं। तो मैं इन लोगों को लेकर घर चलूं। मेरे ख्याल मे तुम घन्टे डेढ घन्टे मे तो पहुच ही जाओगे ?"

"हां, और क्या।"

"बस ठीक है, तुम सोमू को लेकर घर ही आना। खोखा बेटे, तुम मेरे साथ चलोगे, या पापा और सोमू के साथ ही जाओगे !"

"मैं महाशयजी के साथ जा रहा हूं, चाचा। इनकी टोली को लेकर समय से स्वागत सभा मे पहुंच जाऊंगा।"

'तख़त' के पास जैन धरमशाला की गली से बल्लियां गाड़-गाड़ कर मन्नो बीबी के घर तक आठ फाटक बनाये गये थे। बल्लियो में कीलें गाड़कर मिट्टी के तेल के छोटे-छोटे चिमनियोंदार लैम्प टांगे गये थे और ऊपर भी लैम्पों से ही अंग्रेजी के अक्षर बनाकर लिखा गया था, "वेलकम मिस्टर सोमनाथ चोपड़ा, बार-एट-ला !"

कमिश्नर साहब के यहा से लौटकर बाबू साहब जब सोमू को लेकर गाड़ी से उतरे तो महाशयजी के दस बारह स्वयं सेवक "ॐ" शब्द लिखे हुए पीले झण्डे लेकर खड़े थे। जैसे ही वह दोनो गाड़ी से उतरे, वैसे ही आर्य स्वयंसेवकों ने एक स्वर में गाना शुरू किया :

"राकेश है जिसका नभ में उदित,
जो सूर्य सा जगमग तारा है।
स्वागत है उस सोमनाथ का,
जो भारत आर्य दुलारा है।"

बर्मा से लड़ाई जीतने के बाद अंग्रेजों ने भारत में मिट्टी के तेल की गंगा बहा दी थी। नया-नया चलन था इसलिये 'लम्पो' के फाटकों की बड़ी धूम मची। मन्नो बीबी की ड्योढ़ी पर लगभग पचास आदमी खड़े थे। रोशन चौकी बज रही थी, स्वागत में हवाई बन्दूकें भी दागी गयी। बिरादरी के लगभग आठ-दस लोग तो स्टेशन ही गये थे लेकिन यहां सात आठ सम्भ्रान्त खत्री सज्जन और भी उपस्थित थे। मुल्ली लाला के दोनो पोते कुन्जू और रज्जू भी मौजूद थे। सभा मे खूब कवितायें पढी गयी, महाशयजी ने सोमू के स्वागत मे बड़ा जोशीला भाषण दिया और आर्यो के वैदिक धर्म की महत्ता बतलाते हुए उन्होंने पुरोहितजी तथा पुराने मत वालो को ललकार-ललकार कर कुछ तीखी बातें भी अपने भाषण में कही।

यह सब कुछ हुआ, किन्तु इसके बाद जब त्रिकी बाबू हाथ जोड़-जोड़कर लोगों से अपने घर मे जूठन गिराने की प्रार्थना करने लगे तो आये हुए बिरादरी और गैर बिरादरी

के लोगों में से लगभग आधे लोग बहाना बनाकर गायब हो गये। तिल्लोकी बाबू का मन बुझ गया। आश्चर्य की बात थी कि लाला मुल्लीमल के पोते कुन्जू और रज्जू, जो डॉक्टर साहब, रायसाहब और तिल्लोकी बाबू के पक्ष में रहने का वचन स्वेच्छा से दे चुके थे, वे भी न दिखलायी दिये। परोसी गयी आधी से कुछ अधिक पत्तलें बेकार पड़ी रहीं। यह देखकर घरवालों के चेहरे फीके पड़ गये थे।

रायसाहब बाबू बंसीधर ने अपने मित्र के कन्धे पर हाथ रखा और कहा : "फिक्र मत करो, तिल्लोकी। आज के नुकसान को नुकसान न मानना, मैं सोमू के 'ऑनर' में होने वाली पब्लिक मीटिंग में अपने मुअज्जिज मेहरबान प्रोहितजी की नाक अगर न काट सका तो उनकी नाक की फुनगी पर काले सूरज-सा चमकता हुआ मस्सा फुनगी समेत जरूर साफ कर दूंगा।"

परोसी गयी पत्तलें गरीबों को बांट दी गयीं। इस घटना से श्रीमती चुन्नो बीबी बेहद घबरा गयी थीं। उनकी माता श्रीमती मन्नो बीबी उस समय मरणासन्न पड़ी हुई थीं। डॉक्टर टण्डन, बगाली डाक्टर परमानिक बाबू, अंग्रेज सिविल सर्जन, राजवैद्य पण्डित उमापति आदि सभी चिकित्सक यह कह चुके थे कि उनके लिए अब "औषधिम् जाह्नवीतोयं वैद्योनारायणोहरि :" ही है। अपने दोहते के विलायत से लौटने और उसका मुख देखने की लालसा में ही इनके प्राण अटके थे, यह बात सच सिद्ध हुई, नानी ने सोमू को देखा और उनका मुख कमल-सा खिल उठा, हांफ-हांफकर धीरे-धीरे बोली : "चुन्नो, कल हमरे घर मे ढोलक बजिहै। जात परजात में बुलौआ भिजवाय देओ।"

चुन्नो बीबी अपनी मरणोन्मुखी मां के सम्मुख यह सत्य उद्घाटित न कर पायी कि आज उनके पति ने बेटे के स्वागत में जो ज्योनार रखी थी, वह असफल रही।

पत्नी से मरणासन्न सास की यह इच्छा सुनकर त्रिलोकी बाबू चिन्तित हुए, कहा : "लेकिन कैसे होंयगे ये गीत ?"

चुन्नो बोली "जान पड़त है कि हमरी भाबो को बिरादरी वालन के बिरोध अन्जाद हैगा। तबही हमसे कहिन कि खैयें नाही पर बतासे तो लैं जैयें हमरे हियन से।'

एक ठण्डी सांस छोड़कर त्रिलोकी बाबू बोले . "शायद यह भी मुमकिन न हो। इस वक्त तो एक अजीब रंग दिखलायी देता है। चूंकि यह विलायत आने जाने का मामला अब सिर्फ हमारी बिरादरी तक ही नहीं रहा, बल्कि और जात-बिरादरियों में भी धरम जाने का डर फैल गया है, इसलिए मामला कुछ बहुत बुरी तरह से उलझा हुआ ही नजर आता है।"

"पर कल जो ढोलक न बजिहै तो भाबो के परान ऐसेई निकल जैहै।" कहते हुए चुन्नो बीबी रो पड़ीं, फिर कलपते स्वर में कहा : "सत्यानास जाय उन निगोडन का जो हमरी खुशी के मौके पे भाजी मारत हैंगे। हाय हमरी भाबो जो रोय के मरी तो हमरे जनम को दाग लगा जंय्यें।"

पत्नी की पीठ पर प्रेम से हाथ थपथपाते हुए त्रिलोकी बाबू बोले : "घबराओ मत, अभी इतनी फिकिर मत करो। तनकुन हमैं बिस्वास दिला गए हैं कि कोई न कोई इन्तजाम जरूर करेंगे। अब यह गीतों वाली बात तुमने अभी कही है, सो न होयगा तो हम सवेरे चले जाएंगे उनके यहां। तुम दस बजे से पहले नाउन को गीतों का न्योता देने के लिए कहीं न भेजना। मेरे नजरबाग से लौटने पर ही यह सब काम होगा समझीं ?" फिर चुटकी से पत्नी की ठोढ़ी पकड़कर प्यार से बोले : "अरे तुम काहे घबरावत हैंगी मेरी रानी, एक लड़का तुमरा बारिस्टर होके आया है, दूसरे को इंजीनियर बनाऊंगा। तुम किसी बात से घबराना मत।"

दूसरे दिन रायसाहब और त्रिलोकी बाबू दोनों मिलकर लाला मुल्लीमल की हवेली पर रज्जू बाबू और उनकी मां से मिलने गए।

अंग्रेजी सूट-बूट, और नयी चाल की गोल फेल्ट टोपी पहने, छड़ी हिलाते हुए जब दोनों मित्र मुल्लीलाला के घर जाने के लिए गलियों से गुजर रहे थे तो आते-जाते लोगों ने उन्हें झुक-झुककर सलामें कीं। रास्ते में लट्टू नचाते छोटी-सी गली को घेरे हुए लड़कों को कोई-न-कोई जबर्दस्ती खींच-खोंचकर हटा देता था ताकि यह बड़े आदमी आसानी से निकल जायें—"हटवे, लौंडे, तेरी-- दिखता नहीं साले, कौन आ रहा है।"

साहजी की हवेली के चबूतरे पर बिहारी मक्खनवाला किसी गाहक से कह रहा था, रात में तीन बजे से उठके दूध मथता हूं, लाला। मेरे झाग ऐसे गाढ़े होते हैं कि मक्खन पे रुपया रख लो, तब भी न दबै।—सलाम सरकार, आज हजूर लोगों की सवारी इधर कैसे निकल पड़ी? मक्खन खिलाने कब आऊं हजूर को? अब तो सरकार छोटे भैया बालिस्टर होके आए गए हैं। उन्हें बिलाइत में आपके गुलाम की यह नियामत तो कभी नसीबै नहीं भयी होगी, अण्डा बकरा भले खाय आए होंय। बोलिए, कब आऊं?"

त्रिलोकी बाबू चलते हुए बोले: "कल-वल किसी वक्त आ जाना।" फिर तनकुन बाबू से कहा: "इस वक्त बिहारी के मुकाबले में हमारे चौके में कोई दूसरा 'निमिष' बनाने वाला नहीं है।"

गलियों की चहल-पहल से गुजर कर जब दोनों मित्र रज्जूबाबू के यहां पहुंचे तो वह एकाएक अचकचा उठे। औपचारिक खातिरदारियों और मीठी बातों के बाद रायसाहब ने रज्जू से कहा: "रज्जू बाबू, अपनी महतारी से कह देना कि मुल्ली लाला क्रिश्चियन बनके तुम्हारी जायदाद का आधा हिस्सा मांगने वाले हैं। आज सबेरे ही मुझे बुलाके उन्होंने यह कहा कि अब तो तिल्लोकी का लड़का भी बैरिस्टर बनकर आ गया है, इसलिए उसे भी बिरादरी से निकाला ही जाएगा। उससे भी मुकद्दमा चलवा दो।"

रज्जू सुनकर सतर्क हुए, क्षण भर के मौन के बाद बोले: "बाबा क्या खाय के मुकद्दमा लड़ेंगे हमसे? और फिर यह तो हमारी पुरखे लाई जैदाद हैगी।"

बात काटकर रायसाहब बोले: "भाई, तुम गलत सोच रहे हो। जब तक मुल्लीमल जिन्दा हैं, तब तक गद्दी के असली मालिक वही हैं, तुम लोग नहीं। अभी देखो, बनारस में एक ऐसा ही केस हो चुका है। एक बड़े अगरवाले शाहजी अपनी आशना के फेर में मुसलमान हो गए। उन्होंने आधी जायदाद अपनी हिन्दू बीवी और बच्चों से कानूनन छीन ली। कानून के हाथ बहुत बड़े हैं भैया। और इस बार मुल्लीमल खाली हाथ भी नहीं हैं। मैथाडिस्ट चर्च वाले कह रहे हैं कि आप मुकद्दमा लड़िए, पैसे हम लगायेंगे। सोच लो बेटे, चर्च का मामला, अंग्रेजी हुकूमत, मुकद्दमा तो हारोगे ही, और अगर मुल्लीमल ईसाई बनकर लड़े तो सोचो, बिरादरी में तुम लोगों की क्या इज्जत रह जाएगी? घर-घर शहर-शहर तुम लोगों की हंसी उड़ायी जाएगी, बेटे। मैं इसीलिए मिस्टर चोपड़ा को लेकर आया हूं। आप लोग भले ही हमें बिरादरी से निकाल दें मगर हमें तो उसका खयाल रखना ही पड़ेगा, भाई।"

रज्जूबाबू रायसाहब बाबू बंसीधर की कूटनीतिक चाल में फंस गए। अपनी मां से आकर यह सब बातें कहीं। वह बोली: "जो बाबा मुकद्दमा चलैहैं तो तुम दोनों भाइयन के पास बचिहै क्या जइयें। ढाई-तीन लाख तो वो ले जायेंगे, फिर तुम दोनों भाइयन की हैसियत क्या रहैगी, बताओ भला? चलो, हमैं लै चलो उनके पास और ड्योढ़ी बन्द करवाय देओ, सुना। जब लग हम लोगन की ई सब बातें होंए तब लग कौनो बाहर वाला भीतर न आय पाय।"

स्वर्गीय मैयादास की विधवा बैठक के पीछे वाले कमरे में आड़ लेकर बैठ गयी। कहने लगी : "हमं तो भाई जी, अपने दूनों लड़कन के साथ आप लोगन के चरनों मे पड़े हैंगे। आप लोग चाहैं हमें मारें कि तारें।"

त्रिलोकी बाबू बोले : "इसमें हमारे मारने तारने का कोई सवाल नही है भाभी। सबेरे जब तनकुन बाबू ने मुझे बुलाकर यह सब किस्सा समझाया तो मैंने कहा कि मै इस बारे में तब तक कोई कदम नही उठाऊंगा जब तक आप लोगों से बातें न कर लू। अब यह बात आप लोगों के सोचने की है कि आप लोग हमारे साथ रहेंगे या छगामल और प्रोहित के साथ।"

रज्जू फौरन ही त्रिलोकी से बोले : "देखिए फूफाजी, हम लोगो को भी नए जमाने की राह पर कुछ न कुछ तो जरूरै चलना होयगा। बात ये है, मैं कुन्जू को भी बिलायत भेजने की बात सोच रहा हूं।"

"तब तुम दोनों भाई कल खाने के वक्त हमारे यहा से काहे चले आए? मै तो तुमसे सच कहूंगा, कल से इतना नाराज हू कि आज मैंने तनकुन बाबू से कह दिया, अब किसी बिरादरी वाले की मदद हम लोग नही करेंगे। हमारा खोखा बेचारा तो बिरादरी मे कोई आधी रात को भी बीमार पड़ जाए, तो दौड़ा चला आता है। इसी तरह मेरा सोमू भी सबके काम आएगा। और यही नही, मेरी आशना का बेटा डेविड भी अब आई० सी० एस० बनकर आने वाला है। मैं प्रोहितजी और उनका साथ देने वाले लोगों को नाको चने चबवा दूगा यह समझ लेना, मैं किसी को बख्शूगा नही।"

"नदोई जी, हमरे लड़कन-बिटियन पर तो आप लोगन की दया बनी ही रहे, यही मेरी अर्दास है आप लोगन से। हम तो देखिए कि बाबू को लै के जब मेम नरम के घर का किस्सा चला तो पहले सीधे चुन्नो बीबी जी के पास गए रहे। फिर हम भाई साहब से भी कह गए रहे कि आप लोगन के हुकुम से बाहर नही हैंगे।"

"आपको भी हमारी मदद करनी होगी, बहन साहिबा। मैं बिरादरी के पढ़े-लिखे लोगों की पंचायत बुलाने जा रहा हूं, इसमे आप लोगो को भी मदद करनी होगी।"

रज्जू बोला : "हुकुम कीजिए, बाबू के न रहने के बाद से अब आप लोग ही हमरे बड़े बुजुर्ग हैंगे। और विस्वास मानिए फूफाजी, डाक्टर साहब के ऐसानो का बदला नही चुका सकते हम।"

त्रिलोकी बाबू ने छूटते ही कहा : "आप लोग जवान है, जरा दौड़िये धूपिये। जो घर अपना 'फ्यूचर' बिगाड़ने के लिए राजी न हों उन्हे खुलेआम हमारे साथ आना होगा।"

"मगर बाबू जो हमरे लड़कन पर मुकद्दमा चलाउन वाले हैंगे?"

"उनकी फिक्र मैं कर लूगा, बहन साहिबा। शहर की कोई देसी या विलायती नर्स आपके बेटे डॉक्टर साहब के खिलाफ जाने की हिम्मत नही कर सकती। मैं मुल्ली ताऊ को तरकीब से किसी दूसरी जगह रखवा दूगा, और उनकी किरिस्टानियत का भूत उतार दूंगा, आपको वचन देता हूं।"

"तब आप हमारे लड़कन को जौन हुकुम देवेंगे, सोई ये लोग करेंगे।"

रायसाहब ने कहा : "देखिये बहन साहिबा, नन्नो चाची की तबियत अगर चंद्रकों मैया की कृपा से ठीक रही तो इन तीन-चार दिनों मे ही किसी दिन सोमू के सम्मान मे लखनऊ की पब्लिक का एक जलसा करने वाला हूं। मुसी गंगाप्रसाद और उनके भाई ईश्वरीप्रसाद जी दोनों ही जलसे मे आयेंगे, बाबू कृष्णबलदेव आएगे। कलक्टर, कमिश्नर और बड़े-बड़े अंग्रेज लोग आयेंगे। सोमू को ऐड्रेस दिये जाने के बाद

फेंटदार धोतियां, सफेद-पीले साफे या रेशम से कढ़ी बेल-बूटेदार टोपियां पहने और घिसे-पिटे गुलूबन्दों से अपने कान ढांके गरीफ वर्ग के गरीब लोग, जलेबी, सुहाल के खोम्चे लिए डोलते हलवाई, नजर आने लगे हैं। कीचड़ भरी गलियों मे खरपोरियां लादे गदहों की कतारो की आवाजाही शुरू हो गई है। रायसाहब बाबू बंसीधर रिटायर्ड असिस्टेंट डायरेक्टर (एक्टिंग) के पुश्तैनी घर से मिला हुआ ही एक पुराना फैला हुआ टीला है। यह टीला सर्दी में धूप के शौकीनो की सैरगाह बन गया है। रायसाहब के पिता लाला मुसद्दीमल ने अपनी दीवार से सटाकर टीले पर एक चौड़ा सा तखत रखवा दिया था। विलायती सूत और कपड़ों के रोजगार मे नए नए रईस बने हुए रायसाहब के बड़े भाई महादेव प्रसाद उर्फ गुमानी भैये ने एक तखत वहीं पर और डलवा दिया है। सवेरे मुहल्ले के बड़े बूढ़ों की अनिमन्त्रित किन्तु नियमित सभा जुड़ती है, चार-छः हुक्के नज़र आते हैं, दो एक पान के विलहरे और तम्बाकू सुपारी के बटुवे तखतों पर दिखाई देते हैं। गुमानी भैये, कल्लू महाराज, जुगलू रस्तोगी, लल्लोमल खन्ना आदि महल्ले के पचास मे साठ के बीच की उम्रो वाले बड़े-बजुर्ग बैठे बतिया रहे थे कि टीले पर चढते हुए "कागावासी, सत्यानासी भोग विलासी" तीनों समय छानने वाले कुजू खलीफा सामने बैठे हुए इच्छित जनसमुदाय को देखकर मस्ती मे दोनों हाथ उठाकर नाचने की मुद्रा लेकर गा उठे : " अरे दुई-दुई ठो बलमा मोरे आंगना मे गिल्ली खेलें। आगना में गिल्ली खेलें।"

"अरे, ये छोटे से बलमा की जगह यह दुई-दुई बलमा कहां से ले आए खलीफा।" लल्लोमल ने हंसकर पूछा।

हुक्के की नली हाथ में लिए हुए गुमानी भैया मुस्कुराकर बोले : "अरे भई नारद जी हैं, कही की खबर लाए होंगे, दूर की कौडी।"

"अमां खलीफा, सुनाओ भई सुनाओ, क्या बात है ? खाली गाने आने से क्या मजा आएगा? चालीस-पैंतालीस बरस पहले अगर ऐसा गाना सुनाया होता तो हम तुम्हारा मूं चूमते।"

"अरे लल्लो भैये, मूं चूमो दयानन्दियों का। क्या आनन्द फैलाया है। दुई-दुई ठो बलमा मोरे आंगना मां गिल्ली खेंले।"

"अमां फिर गाने लगे, बात बताओ यार।"

कुजू खलीफा कुछ अकड कर तखत पर बैठते हुए बोले : "साही महलन में एक-एक खबर का असर्फी मोल रहा। गुमानी, गवाही देओ ना ?"

"दै दी, अब कीमत बोलो। दूध पियोगे या मलाई, मक्खन वाले को बुलवायें।"

'हे-हे-हे, गुमानी तुम सचमुच समझदार होगे। अब मक्खन हो तो साले बिहारी का। मगर जाने कहां डोल रहा होगा इत्ती बिरियां। कागावासी की तलब है डेढ पाव दूध की।"

रईसों के हुक्को का सामान लिए, धूप मे कुछ दूर बैठे, नौकरों की तरफ सिर घुमाकर गुमानी भैये ने अपने नौकर से कहा : "अबे खचेडू, दिद्धू के यहां से डेढ़ पाव दूध ले आ खलीफा के लिए।"

खचेड़ू दौड़ गया। लल्लोमल बोले : "हां, अब बताओ खलीफा, तुम्हारे गाने का भेद क्या है ?"

"अरे भैंए, कल स्याम को निवाजगंज में ये हमरे गुमानी के भतीजे डा० टण्डन ने और महासै जी ने और सब पढ़े-लिखे आई ओम डामफूलों ने मिल के एक कायथ की विधवा लड़की का ब्याह फिर से करवाय दिया।"

"ऐं !" कई तरफ से यह 'ऐंकार' गूंजा।

"अमां खुले आम कि दबे ढंके ?"

"खुले आम गाजे-बाजों के साथ।"

"मां बापों की जानकारी मे भया ?"

"और नही तो क्या चोरी छिपे ? परभूदयाल शास्तरी कौनो साले बाह्मन, पण्डित हैंगे, धरम विरोधी दयानन्दी हैंगे। उन्ने फतवा दिया कि जिस कन्या का अपने मरे पति से कभी रिश्ता न रहा होय, उसका ब्याह करने मे हर्जा नही है। बेटी वाला भी दयानन्दी, बेटे वाला भी दयानन्दी। दोनों ने मिलकर यह आनंद फैलाय दिया। अरे ऐसी भीड—कि ऊंचे-ऊंचे हिन्दू, सभी जात के, कायथ भी, कस्मीरी भी, बाह्मन भी। वो महासैंजा हैं न साला बनिया, ऐसा गजब का सगठन करता है ससरा कि सत्तर-अस्सी आदमी बरात मे ले गया और साथ में चंदे की थैली भी ले गया। उसी से हलवाई लगवाके सबके खाने का परबंध किया गया रहा। वो सासतरी साले ने वेद हवन करके हिन्दू धरम को…"(गाली)

खबर ने बैठे हुए सब लोगों को अन्तर पीड़ा भरे मौन का एक लम्बा क्षण दे दिया। हुक्का गुड़गुड़ा चुकने के बाद मौन तोड़ते हुए लल्लो ने कहा : "ये सारे बिख के बीज पूरे हिन्दू समाज में ये रायसाहब तनकुन और उनके घरवालों ने बोये हैंगे। कोई बुरा न मानना हम सच्ची कह रहे हैंगे।"

गुमानी का चेहरा कस गया। उस कसाव मे हुक्के की मुंह नाल उनके होठों से लगी और फिर हट गयी, बोले : "तनकुन या उसके बेटे ने कौन बुराई की लल्लो, ये बताओ पहले। अरे पढ़ा-लिखा आदमी हैगा जिसकी लियाकत की तारीफ सरकार दरबार मे हुई। अगर वह या उसका बेटा सच को सच कहता है तो तुम बुरा मानने वाले कौन हो !"

लल्लोमल भी तैश मे आ गये, बोले : "क्यों न बोलें, हमारे पवित्र सनातन धरम के रिसी मुनियो का जो पुन्न परताप रहा, जो उनके धरम की धुरी हैंगे, उनका अपमान करना क्या कोई अकिल की बात हैगी कल्लू महाराज, तुम बोलो ?"

कल्लू महाराज के बोलने से पहले ही गुमानी ठण्डे और सयत स्वर में कहने लगे : "देखो लल्लो, अपनी और अपनी सुसायटी की बुराइयों को समझना हर अकिलमन्द का काम होता है।"

गुमानी की बात अभी पूरी भी न हो पाई कि पास बैठे हुए कल्लू महाराज ने अपने बटुए से खैनी निकाल कर अपनी हथेली पर रखी और चुनौटी की डिबिया निकालते हुए तैश मे बोले : "धरम के विरुद्ध मुख से एक लफज भी निकालना पातक होता है गुमानी, फिर अकिल की बात कहा से भई ?"

कहकर चुनौटी खोलते हुए कल्लू महाराज ने चारो तरफ नजर घुमाकर इस विजय गर्व से देखा जैसे अकाट्य तर्क दे दिया हो। लेकिन लाला महादेवप्रसाद उर्फ गुमानी भी कुछ ऐसे कच्चे न थे। पढ़े-लिखे लड़के के बाप और तीन पढ़े-लिखो के चाचा और रायसाहब के बड़े भाई, फिर ऊपर से रईसो की बू, उनका गरब गुमान भी जग पड़ा। तेवर बदलकर सीधे बैठते हुए बोले : "आप सब साहबान को उस पुरानी खबर की याद दिलाता हू जिसमें बम्बई के एक गुजराती ब्राहमन ने इन बल्लभ पंथियो के गुसाइयों की बिभिचार लीला का सच्चा हाल अखबारों में छपाया था—"

मलाई पड़े गर्मा-गर्म दूध का कुल्हड हाथ मे आते ही कुंजू खलीफा की कागाबासी मे आनन्द की लहरें उठ आयी थी। कुल्हड़ वाला हाथ ऊंचा उठाकर नशे की

तरंग में बोले : "तन-मन-धन गुमाईंजी को अर्पण। सिरी किरिसन भगवान और गोपियों के अध्यात्मिक धरम को रण्डी राण्डों के भोग का धरम बना दिया इन मांके पिल्लो सालों ने इनकी···"

कुल्हड़ से मलाई का एक छोटा टुकड़ा कुतरकर मुह मे रखा और अमृतानन्द मे दूध का घूट लिया। नशे की धुन में अपने ही 'धरम' को काटकर कुंजू खलीफा गुमानी के धरम में शामिल हो गये। नशे की यह बहक सोच समझ से फेंके गये तर्क से भी अधिक अकाट्य सिद्ध हुई। केवल कल्लू महाराज ही हथेली पर खैंनी मलते हुए आखो मे दूर की कौड़ी लाये, बोले : "हां-हां, ये सब हम मानते है, हमारे लोगन की बुराइयो ने कही-कही हमारे पवित्र धरम पर धूल भी डाल रखी हैगी। मगर पहले साले कभी दयानन्दी पैदा नही भये। ये अंग्रेजी राज मे ही क्यों भये ? अरे, भलाई बुराई ससार मे सदा से होती आई है। इसीलिये हमारे रिसी मुनियो ने कथा भागवत सुनने का आदेश दिया है। रिसी मुनी कोई उल्लू के पट्ठे नही थे, जो ये दयानन्द ही अनोखे भए हैं। घर-घर का धरम भिरस्ट कर दिया है इन साले दयानन्दियो और अग्रेजी पढे-लिखे लडको ने। जान पड़त है कलजुग ने अपने चारों चरन टेक दिए हैं।···छन्तब्यो ओपराधा, सिउ-सिउ-सिउ भो मिरी महादेउ सम्भो।"

जुगलू रस्तोगी कट्टर कण्ठीधारी गोकुल द्वारिए थे। बिलहरे से पान निकालते हुए बोले : "देखिए, ये छापे की खबरें जो हैं न, ये मेरी जान में कभी सच्ची नही होती। ये अंग्रेजन की करमात है बाबू साहेब। साले अपना फंदा करत जात हैंगे। चांदी महंगी और सब चीजें महंगी, टिक्कस पर टिक्कस लग गए। हम लोग तो ससुर गरीबी से दबे जात हैंगे, उपे ई ससरे अग्रेजी अखबारन में झूठी मच्ची छाप के हम लोगन के मन को धरम करम के खिलाफ भरकावत हैंगे।"

कुंजू खलीफा के पेट में दूध की तरावट पहुंच चुकी थी। बस, थोड़ी मलाई और कुल्हड़ में घूट भर दूध बच गया था, सो अपने हाथ में कुल्हड़ हिलाते हुए खलीफा की भांग ने फिर पलटा खाया। तनिक कड़क भरी आवाज मे बोले· "नह, नह, सब खबरे झूठ नही होतीं। इखबार में मदरास की खबर छपी रही जिमे सुनकर हम खुद रायसाहिब तनकुन के घर गए और पूछा कि ये बताओ, तुम तो सरकारी आदमी हो, असलियत क्या है ? तनकुन बोले कि खबर सच्ची है।"

लल्लोमल ने पूछा, "अमा कौन सी खबर ?"

"अरे भइए, मदरास मे तो एक अंग्रेज जज्ज ने दयानन्दियों से भी अधिक आनंद फैलाय दिया हैगा।"

गुमानी चुप बैठे सुन रहे थे। खलीफा की बात का सूत्र उनकी समझ की पकडाई में आते ही उनकी जबान भी खुल गयी : "अच्छा-अच्छा, वो सालिगराम भगवान को जज ने कोरट में तलब किया था, वही बात न ?"

"हां, अब ठाकुरजी की मिल्कियत का मुकदमा है तो उनका नाम होगा ही होगा। और जज्ज साला कहता है कि ठाकुरजी को कोरट मे लाओ, वो इकबालिया बयान दें कि जैजाद मेरी है, वर्ना उनके नाम पर फर्जी मुकदमा किया हुआ मानूगा। अब पुजारियों मे पंचायत पड़ी कि एक दिन अब जिन ठाकुरजी की अदालत में सबको जाना हैगा, वहीं इस साले मलेच्छ के कोरट में आए, यह कैसे हो सकता है।"

खलीफा के इस तैश का सबने सिर हिलाकर समर्थन किया। गुमानी बोले : "हां, हमरे कासी भी बताय रहे थे कि कलकत्ते के कोई सुरेन्दरनाथ बानर्जी बाबू ने बगाली अखबार मे इस बात पर अंग्रेज जज की खूब-खूब खिचाई की, जिसके कारण उन्हे दो महीने

की सजा भी भोगनी पड़ी बिचारों को। मगर यह बानरजी बाबू हारा नहीं है, हनुमानजी की तरह पूछ फैलाय-फैलाय के कलकत्ते, इलाहाबाद और पटना लहौर, सब जगह की पब्लिक को लपेट लिया हैगा। बड़े हिम्मती निकले ये हमरे बानरजी बाबू। महा टूरिया का जमाना, अंग्रेजों का राज और वो भी ऐसा जिसमें कभी सूरज डूबता ही नहीं है साला। ऐसे राज और ऐसे महनसाह के खिलाफ कह गया। कमाल है! हमरे हियन के आरसमाजी दयानन्द के लोग भी उनके साथ हैं। कहते हैं, हम मूर्तियों के भले खिलाफ हों मगर अपने देस की मान पर कोई बट्टा नहीं आने देंगे। हमरे सोता ने महाशय जी के साथ मिलकर कई सभाएं की।"

प्रसंग समाप्ति पर फिर कुछ देर का मौन रहा। मुंजू खलीफा तब तक कुल्हड़ फेंकने के लिए जरा आगे बढ़ गए थे सो कुल्ला करके लौट आए और जुगनू लाला का पान का बिमहरा बेतकल्लुफी से हाथ में उठा लिया और बोले: "अच्छा, ये बताओ गुमानी, तनकुन जब से बिरादरी से अलग हो गए तब से तुम उनके यहां आवन जात होगे कि नहीं?"

गुमानी भैये का स्वर उत्तर देने से पहले कुछ ठिठक-सा गया, फिर हल्के से खखार कर बोले. "देखो खलीफा, यहां सब अपने लोग बैठे हैं, झूठ नहीं कहूंगा। हमारा तनकुन का रिश्ता एक थना दो डाल का हैगा। जात-बिरादरी में असूल और पंचायत का हुकुम अपनी जगह मानता हूं, लेकिन मा जाए सगे भाई को कैसे छोड़ दूं।"

सत्तो बोले: "हां, बस खान-पान, रीत ब्योहार में बिरादरी के हुकुम के पाबंद हैंगे, बाकी भाई भतीजे से मिलना जुलना कैसे छूट सकता हैगा! शंकरजी की किरपा से अपनी बिरादरी में रायसाहब बंसीधर जैसा रायसाहबी का मनोमान पाने वाला और कौन दूसरा भया है इस शहर में। और लड़का भी भगवान की दया से ऐसा लायक है कि बिरादरी का कोई पहुंच जाए तो बिना फीस लिए उसका इलाज करे।"

अपनी खैनी को एक गाल से दूसरे गाल में लाते हुए बल्लू महाराज ने एक बार जमीन पर पिच्च से थूका और बोले "अरे भाई, क्या प्रशंसा करें देसदीपक डाक्टर की। वह तो सचमुच देसदीपक है। आप बिरादरी की बात करते हैं, पर मैं तो उनकी बिरादरी का नहीं, उनके पाधा-पुरोहित कुल का भी नहीं, गौड़ ब्राह्मण हूं। मगर जब मेरी जांघ में फोड़ा निकला तो हम उसी के पास गए और कहा कि हम तुम्हारे खानदानी पड़ोसी हैं। बिचारे ने झट से चीरा लगाया और अस्पताल से दवाइयां दीं और अस्पताल में भर्ती होने को भी कहा कि रोज पट्टी बदलने में सुबीता रहेगा वर्ना आपको दौड़ना पड़ेगा। हमने कहा, भैया, दौड़ना कबूल है पर अस्पताल की चरपैया पर लेटकर अपना धरम देना कबूल नहीं है। बोला ठीक है, पांच रुपए दिए कहा, आप गरीब ब्राह्मण हैं, हमारे खानदानी पड़ोसी हैं दोनों का किराया ले जाइए।"

गुमानी के हुक्के की मुंह नाल निवास के तख्त पर रखे, हुक्का अपनी ओर सरकाते हुए खलीफा बोले, "वह भी और उसकी बहू भी। क्या ऊंचे पाये की हिम्मत पायी है इन दोनों ने—वाह-वाह-वाह! एक दिन यहीं बहू का प्रवचन सुना था। सुन के हमारी विजया सुर्जेनारायन भगवान के परकास जैसी चमक उठी भैये। क्या संसीरित बोलो है, कैसे-कैसे वेद के मंत्र बोले हैं कि बड़े-बड़े पण्डितों के कान काट लिए हैं उस हमारी खत्री की बेटी ने। और उसको कहते हैं कि धरम भिरस्ट है। जब मैके की बिरादरी ने ही उसे बाहर निकाल दिया तो यहां की बिरादरी भी उसे क्यों न निकाले? निकालो सालो तुम्हारा ही मुंह काला होयगा अंत में। दोनों की जोड़ी साच्छात लछमी नरायन की जोड़ी हैगी। इनकी निन्दा करने वाले सालों की···" मंगेड़ी लैदा का विस्फोट फूहड़ गाली में

हुआ, सुनकर सभी के मूंछों भरे चेहरो पर हंसी की छोटी या बड़ी लकीर खिच गयी। कल्लू महाराज बोले : "अमा खलीफा, तुम तो बिलकुल बेपेंदी के लोटे हो गए हो भांग पी-पी के। चित भी मेरी, पट भी मेरी, और अण्टा मेरे बाप का। धन्न हो, धन्न हो।"

सुनकर बैठे हुए लोग हस पड़े। किन्तु खलीफा की सिद्ध विजया इससे पराजित न हुई। ताव मे आँखें निकालकर और अपनी जाघ पर एक थपकी देकर बोले : "गुरुजी, हम धरम-करम सब मानते हैंगे मगर हमारे इष्टदेव भोले बाबा ने हमको जो लहर दे रखी है उसमें सदा न्याव की बात ही मेरे मुख से निकलती हैगी, क्या समझे ?"

टीले के नीचे सिर पर हरा-भरा झोआ लादे तरकारी वाले ने आवाज दी : "अलुआ लै लेव, मथुरा के पेड़े लै लेव।"

"अरे क्या भाव दिए भई, इधर तो आओ।"

तरकारी वाला और सिर पर दूसरा झोआ लादे उसका एक सहचर चढने लगे, चढ़ते हुए भी उसकी आवाज लग रही थी—"आलू, सेम, गोभी।" खलीफा ने तुक मे तुक मिलाया : "हम साहब तुम धोबी।"

इस ललकार से खलीफा की तरफ देखकर शरमाई-कतराई नजरो से तरकारी वाला ऊपर चढ़ा। तरकारी वाला और उसका सहचर आमने-सामने बिछे हुए दो तख्तों की खाली जमीन में आकर अपने झोए उतारने लगे। कुंजू खलीफा की नशे मे मस्त सुर्मीली आंखों ने एक बार सब्जी वाले उस जवान को और फिर चाहत भरी नजरों से उसके सहचर को देखकर कहा : "अबे कल तक तो तू ही पब्लिक के काम आता था, अब क्या अपने काम के लिए इस लौडे को रखा है ?"

झेंपती हुई आवाज मे वह काछी जवान बोला : "आप भी कैसी बातें करते हैं लाला ? ये देखिए, ताजा मटरिया आलू खास आपके लिए ही लाया हूं।" ये कहकर उसने गुमानी की तरफ देखा।

तखत मे उतरकर झोए की तरकारियां टटोलते हुए पूछा · "क्या भाव दिए आलू ?"

"ज्यादा नही बाबू, चार दमडी के सेर भर।"

"धत् तेरे की साले, अबे लूट मचा रखी है क्या। पैसे मे दो फूल साले। महल्ले मे घुसना बन्द करवा दूगा। साले तेरी तो···"

"हजूर, सब्जी मण्डी मे भाव पुछवा लें, जो मेरा पैसे में एक दमडी से जादा नफा होवे तो आप मुझे मा, बहन, औरत जिसकी चाहे गाली दे लीजिएगा। महंगाई इत्ती बढ़ गई है हजूर, हम क्या करें !"

तख्त पर बैठे हुए कुजू खलीफा बोले : "ठीक है गुमानी, लौडा झूठ नही बोलता है, ले लो।" महंगाई और जमाने को रोते हुए लल्लो और गुमानी ने तरकारियां खरीदीं। धेले का सौदा कल्लू महाराज ने भी लिया। कुंजू बोले : "सुन बे काछी के···पाव भर सेम, पाव भर आलू, धनिया, मिर्चा और दो चार गाजरें भी डाल देना साले, और उसका पैसा लल्लो बाबू से लेना बे। गुमानी हमको दूध पिला चुके हैं।" तखत से उठते हुए एक अंगडाई ली, फिर कहा : "हां जी, भोलेनाथ ने बिरादरी मे इन लोगों को रहीस काहे बनावा है। बम-बम भोले नाथ कि जिनके कौड़ी नही खजाने में, तीन लोक बस्ती में बसाए, आप बसे बीराने में।" कहकर चले और बडे प्यार से काछी के लड़के की घुटी चांद पर एक हल्की-सी चपत भी लगा दी।

खलीफा के जाने के बाद गुमानी बोले : "कुछ भी कहो, है साला फक्कड़।"

"अरे तीन पुस्तन से इनके हियां नसेबाज होत आय रहे हैं। बाबा रहें सो गन्जेड़ी,

भंगेड़ी और मदकची तीनों। साले ने महल्ले के जाने कितने लड़कों को बिगाड़ा। बापो साले के मदकची रहे मगर ई कहो कि दलाली मे अपनी और अपने घरवालों की गुजर-बसर कर लेत रहे। मगर ई खलीफा तो खलीफा ही है। कैसी बेसर्मी से कह गए कि पैसा लल्लो से ले लेना। और जो न दे और ये सब्जी वाला न घर जाय तो देखो इनकी भांग क्या-क्या खुड़पेंच निकालती हैगी।"

"अरे लाला, हम तो कहते हैं कि इसने भला भया जो अपना ब्याह न किया। कहिन कि भले बंस निर्वन्स हुई जाय मगर रोटी कमाउन खातिर कोई काम नही करेंगे। ये कसम खाई रही इसने अपने बाप के आगे। निभी जा रही है साले को, जैसे भी हो।"

गुमानी कहते हुए उठे : "खचेड़ू, सब तरकारी उठाय के घर ले जाओ और इसको तीन पैसे लाके दो।"

लल्लो बोले : "नहीं-नहीं मैंए, हमसे कह गया है खलीफा।"

लल्लोमल के कन्धे पर हाथ रखते हुए गुमानी ने कहा : "बेफजूल की तकल्लफी छोड़ो यार, हम तुम क्या पूरी बिरादरी ने पुर्बले जनम में इसका करजा खाया रहा सो पाटना ही पडेगा। अच्छा ··"

गुमानी मैंए जब घर पहुंचे तो उनके स्वर्गीय बड़े भाई छुटके मैंए की घरवाली जोर-जोर से रो-रोकर किसी को कोस रही थी "सत्यानास जाय निगोड़न का जो हमरे सुख में भांजी मारत हैंगे। राम करे उनके घर में भी ऐसेई बिपदा आवै।"

यद्यपि सब भाई अलग-ही-अलग रहते थे, पर घर एक था। स्वर्गीय छुटके मैंए की बौटी का क्रन्दन और कोसना सुनकर गुमानी को कोई आश्चर्य न हुआ क्योंकि कोसा-काटी करना, चीखना-चिल्लाना तो उनका नित्य का धर्म था। एक नौकर को नहाने के लिए पानी गरम करने का आदेश देकर दूसरे को चिलम तैयार करने को कहा। उनकी पत्नी झुंझला उठी, बोली, "अब हुक्का काहे प्यित होगे, अरे पानी क्या कोई बिलैत से गरम हुई के आने वाला हैगा जो ठण्डा न होय ?"

"अरे थोड़ा टाइम तो लगं जैहै रानी। तब तक एक चिलम···"

"भाड़ में गई तुमरी चिलम, और पानी तो गरमें में तैयार रखा हैगा। अभी नौकर आयेगा, कहियै कि पानी गरम हो गया हजूर तो आधी तम्बाकू बेकार छोड़ के जैहैं। जब तलक आधी तम्बाकू बेकार न जाय तब तलक रहीसी की बू कैसे निकलै तुम्हारी।"

गुमानी अपनी पत्नी से दबते हैं। मुस्कुरा के बोले : "अच्छा अब छिमा करो महारानी, नही पियेंगे। (धीरे से) ये भाभी काहे संख फूक रही हैं आज ?"

"अरे इनका तो रोजै का काम हैगा। हर्रो से उलझ रही हती, अब टेसुए टपकाय-टपकाय के कोस रही हैंगी।"

"तनी पता लगाए लेओ रानी। इनके घर मे खान-पियन को न हो···"

"न हुइयै, तो क्या तुमसे लै लैयें। अढ़ाई कोस लम्बी नाक हैगी तुमरी भौजाई की। हर्रो कुछ काम-धाम करै तो घर की रोटी चलै। पर ऊ तो आरसमाज का परचारक बना घूमत हैगा। कोई क्या करै। तुमरा खोका और तनकुन और उनके सब साथी-संगोयी रात-दिन 'वाह हर्रो, वाह हर्रो' करत हैंगे। उसका दिमाग खराब हुइ गया। न महतारी की सुनैं, न घर की दसा देखैं। बैठी कोस रही है तुमरे भाई भतीजो को। कान में ठेंठड़ खोंस के बैठ जाओ।"

नाक में बड़े हीरे की कील और कानों में झिलमिलाती हुई हीरे की तरकियां गुमानी की बौटी के सिर झटकने पर ऐसी चमक मारती थी कि गुमानी की थकी जवानी

में फिर-फिरकर जान पड़ जाती थी। तभी नौकर ने आकर बतलाया कि पानी नहाने की कुठरिया में तैयार रखा है।

गुमानी ने "अच्छा" कहकर नौकर को टाला और पत्नी के पास आकर कान में कहा : "हमरे ऊपर इत्ता गुस्साया न करो रानी। गुस्से में तुमरा हुसन हमरा पिंडा लूट-लूट लेता हैगा।"

सुहाग गुमान भरी गुमानी की पत्नी के होठों पर रस की रेखा खिंच गई। बनावटी गुस्से में पति को हाथ से ढकेल कर कहा . "अच्छा चलो, जाओ, नहाओ-धोओ, पूजा-पाठ करो। आज दुकान नहीं जाना है क्या ?"

"अरे दुकान तो तुमरा लड़का अब सम्हालता ही है। जांय चाहे न जांय, क्या बिगड़ता है ? आज चलो तुम्हें बुद्धेसुरन के दर्सन करा लायें। आज बुद्धवार है, सैर-की-सैर हुई जैहै और दर्सन के दर्सन।"

"हमें नहीं जाना बुद्धेसुरन-उद्धेसुरन। हमरे तो ठाकुर यही घर में हैं। जाओ भई नहाओ-धोओ तो हम रोटी से छुट्टी पावें।"

गुमानी नहाने के लिए चार कदम आगे जा चुके थे, फिर लौटे और पत्नी से कहा : "तुमरी खातिर तो हम नयी टमटम खरीदा, और तुम्ही नाही बैठी हो उसपे कभी।"

"वाह, बैठे तो हैं।"

"अरे वो तो जिस दिन आई रही, वही दिन चांदकों जी के दर्सन करै गए थे। अब लग और कहां गईं ? अब हमरे मन में बुद्धेसुरन चलने की बात आय गई है तो तुमका चलना पड़िहै। घण्टे-आध-घण्टे की झपकी लेवें। मंगलू से कहलाय दो, अभी गाड़ी न जोते। अभी दुकान नहीं जायेंगे।"

"न जइयो पर बुद्धेसुरन जाय के का हुइयै ? तुमने घूमन खातिर कहा, तो हमरे जिउ आउत है कि आज खोखा की बौटी को देखि आवें। अब ऊके पूरे दिन हैं। बस आज कल में कुछ होय वाला है।"

"तनकुन के हियां जाओगी ? अरे अभी तुम्हें कासी का बिहाव करना है रानी। अबही खाली बिटिया ही ब्याही है तुमने। काहे अपनी जनम पत्तरी बिगाडत होगी ?"

"न जायेंगे तो क्या अपने घर का रिश्ता-नाता बिगाड़ेंगे। अरे भतीजे की, अपने सगे भतीजे की बहू हैगी। हमरी देवरानियों न रही जो कोई देख-भाल करन वाला होता। अरे जायेंगे, हाल-चाल पूछेंगे, दुई घड़ी बैठेंगे, चले आवेंगे। की को पता लगियैं कि हम हुअन गए रहे ?"

एक ठण्डी सांस फिर ढील कर नहाने के लिए जाते हुए बोले : "ठीक है, तुमरी बात मान ली, दुई-ढाई बजे नजरबाग चलेंगे।"

"नजरबाग" शब्द इतने धीमे स्वर में कहा कि केवल होठों का हिलना ही शब्द का संकेत दे सका।

नहा धोके लौटे। ऊनी धुस्सा ओढ़कर ठाकुर घर की ओर बढ रहे थे कि छुटके भैए का बेटा हरनाथ ऊपर की सीढ़ियों से उतरता दिखलाई दिया। उसे देखकर गुमानी रुक गए, पुकारा—"हरों, हियन आओ।"

"क्या है, चाचा ?"

गुमानी ने धीमे स्वर में पूछा : "भाभी काहे दुखियात रही आज ?"

"अरे चाचा, ये तो उनका नित्त का नेम ही हैगा।"

"अरे बेटा, मां हैगी तुमरी। दोनों भाई तुमरे छोटे हैंगे।"

"पन्द्रह रुपए महीना मां को देता हूं। लेकिन एक मां मेरी और भी हैं चाचा, भारतमाता। उनकी सेवा करूं कि अपनी भाभो की रहोसी की शान देखूं?"

गुमानी भतीजे की बात सुनकर क्षण-भर चुप रहे, फिर बोले: "अरे, दसवां दरजा पास होगे, ई आरसमाज की नौकरी में तुम्हें मिलेगा क्या बेटा?"

"बहुत मिल रहा है चाचा। देश और धर्म की सेवा करने में जो संतोष है, वह साहब बहादर बनने मे नही है।"

एक ठण्डी सांस लेकर गुमानी बोले: "मर्जी तुम्हारी, समझ तुम्हारी, हम क्या करें। अरे अपने घर मे खोखा को देखो, पढ लिख आया, डाक्टरी भी पास कर आया, सैकडन रुपया भी पैदा करत है और देस धरम की सेवा भी। ससुर घर में गंगा बह रहीं हैगी। तुमरे तनकुन चाचा का तनिक-सा इसारा पाय के अंग्रेज सरकार तुम्हें आज नौकरी दै दे। अरे तुमरे चाचा रायसाहब है कि कोई मामूली बात है।"

हर्रो बोला: "इस बात को जादा न बढाओ चाचा, सबका अपना-अपना सोचने का तरीका होता है। हम किसी और ढग से इन सब बातों को सोचते हैं।"

गुमानी मुह लटकाए ठाकुर घर में चले गए। हरनाथ आर्य मुसाफिर है, इन्ट्रेंस पास करने के बाद वह आगरे चला गया। वहां स्वामी दयानन्द जी के पक्के चेले पण्डित भोजदत्त जी की पाठशाला मे भर्ती हुआ, मध्यमा तक संस्कृत पढ़ी, अरबी और कुरान का भी चम्च् मात्र अभ्यास किया। उस पाठशाला मे व्याख्यान देने की कला भी छात्रों को सिखलाई जाती थी। आर्यसमाज और वैदिक धर्म के विरुद्ध लिखे गए मुसलमान विद्वानों के उर्दू मे छपे हुए लेखों का अध्ययन भी कराया जाता था। ईसाई पादरियों के तर्क भी उनके सामने रखे जाते और कहा जाता कि इन तर्कों को काट के वैदिक धर्म की महानता बतलाओ। अध्ययन, वाद-विवाद और वक्तृत्व कला का प्रशिक्षण देकर आर्य प्रचारक बनाया जाता था। जब स्वामी दयानन्दजी को धोखे से शीशे का चूरा खिलाकर जोधपुर महाराज की प्यारी पतुरिया ने बदला लेने के लिए उनके प्राण ले लिए, तो देश भर में सनसनी फैल गयी थी। आर्य प्रचारक इस करारे घाव को खाकर सद्धर्म प्रचार के लिए और भी अधिक कटिबद्ध हो गए थे। उस समय जिन युवकों ने पण्डित भोजदत्तजी के आगे आजन्म आर्य प्रचारक बने रहने की प्रतिज्ञा की थी, उनमें हर्रो भी एक था। लखनऊ मे आर्यसमाज स्थापित हो चुका था और अब तो महाशयजी, शास्त्रीजी और रायसाहब बंसीधर, डा० देशदीपक आदि नगर के पढ़े-लिखे सम्पन्न लोगों के प्रयत्नों से शहर के कई क्षेत्रों मे आर्यसमाज की शाखायें स्थापित हो चुकी थी। हरनाथ आर्य मुसाफिर को महाशयजी ने बीस रुपए महीने पर प्रचारक की नौकरी दे रखी थी जिसमें से पन्द्रह रुपए महीने वह नियमित रूप से अपनी मां को लाकर दे देता था।

हर्रो का विवाह हो चुका था किन्तु जिन दिनों वह आगरे में पढ रहा था, उन्हीं दिनों मे उसकी बाला पत्नी का देहान्त हो गया था। बाद में विवाह के लिए कितने रिश्ते आए, छुटके की बौटी ने अपने बेटे की न जाने कितनी बार खुशामद की पर वह टस से मस न हुआ। कहने लगा: "जगन्नियन्ता प्रभु की इच्छा से ही मेरा यह जबरदस्ती डाला गया बन्धन भी कट गया। अब तुम भिरजू की बहुरिया लाना चाची, हमारे विवाह की बात भूल जाओ।"

रसोई जीमकर अपने कमरे में चारपाई पर रेशमी लिहाफ ओढ़कर लेटे हुए गुमानी भैए हुक्का गुडगुड़ाते हुए निद्रा देवी का आवाह्न कर रहे थे कि हर्रो फिर बाहर से लौटकर आया और सीधे अपने चाचा के कमरे में ही घुसा, कहा: "आपने सुना चाचा?"

"क्या भई?"

"अपनी शकुन्तला के जेठ ने कानपुर में एक मेम से विवाह कर लिया है।"

"अच्छा, कब ?"

"यही कोई चार-पांच दिन पहले किया है। जो गोरी नर्स उनके दवाखाने मे नौकरी करती थी, उसी पर मोह गए।"

"राम-राम, यह तो बड़ा बुरा किया खन्ना जी ने, कैसी अच्छी डाक्टरी चल रही थी उनकी और कितना नाम किया ! पर वह क्या सूझी खन्ना जी को ?"

"खाली विवाह ही नही किया चाचा, उन्होने अपने लिए जो माल रोड पर कोठी बनवायी है उसमें उसे लाकर रखने की जिद करने लगे।"

"फिर ?"

"फिर क्या, उनके मां-बाप, घर वालों, सबने आपत्ति उठाई तो बोले, यह कोठी मैंने अपनी कमाई से बनवायी है। मेरी यह दूसरी पत्नी भी यही रहेगी। आप लोगों को अगर मेरे साथ रहना हो तो उसे भी रखना होगा, नही तो आप लोग मेरी कोठी छोडकर कही और अपना इंतजाम कर लीजिए।"

"हे राम, हरे-हरे," कहकर हर्रो के गुमानी चाचा चारपाई पर बैठ गए, फिर जोर से आवाज दी : "अरे कहां हो भाई, यहां आओ, जरा सुनो तो सही, तुमरे दमाद के भाई ने क्या किया ?"

गुमानी की, गुमान भरी हीरो जड़ी पत्नी आयी और पति के पास ही खटिया पर बैठ गयी। सारी बात सुनी, फिर पूछा : "तो घरवाले कहां रह रहे है ?"

"सब वही हैं।"

"अरे, शकुन्तला का दुलहा अभी खाली वकालत ही पास किहिस है। पण्डित पिरथीनाथ ने कानपुर के दूसरे कश्मीरी वकील पण्डित मोतीलाल नेहरू की असिस्टेन्टी में उसे लगवाय दिया है। अभी ट्रेनिंग में है, कमाई शुरू की नही और शकुन्तला के ससुर ने जैसी गरीबी के दिन बिताये है सो तो आप जानते ही है।"

गुमानी-बौटी हाथ बढ़ाकर बोली : "अरे जानत क्या है, हमने तो आपै बिसम्भर खन्ना की डाक्टरी देख के ही अपनी सकुन्तला उनके भाई को ब्याही। तो सब लोग अलग रहत हैं कि···।"

"कोई अलग नही रहेगा चाची, अलग रहेंगे तो जायेंगे कहां। उनका पुश्तैनी मकान तो खण्डर पड़ा है। बिरादरी ने सबको जात बाहर कर दिया है।"

'हैं ?"

"और अब खन्ना जी अपनी मेम को लेकर विलायत जाने वाले हैं। उन्होंने कह दिया है कि अब अगर कोई बिरादरी वाला उनको दिखाने आयगा तो उसे जहर दे देंगे। ये हाल है।"

पति पत्नी दोनों ही चुप। सन्नाटा देर तक रहा, मन बदलने के लिए गुमानी ने हुक्के को मुंह से लगाया तो जली हुई तम्बाकू से उनका मुंह कडवा गया, हुक्का हटा दिया। हर्रो भी यह शंख फूंक कर चला गया। बड़ी देर तक दोनों चुप रहे, फिर पति ने पत्नी से पूछा : "अब क्या होगा ?"

"हम क्या करें, जो लिलार मे बदा हुईयै, सोई हुइयै। अब हम क्या बतावें··· अगले महीने हमरे मुनुआ का ब्याव हुइयै तो सकुन्तला कैसे अइहैं।"

बड़ी देर तक चुप रहने के बाद गुमानी यह कहते हुए उठे : "हुइहै वही जो राम रचि राखा···चलो, तनकुन के हियां चलके सलाहसूत करें। तुम बहुरिया को देख लेना··· क्या कहें ससुर जिस पंचायत की वजा से हम तनकुन की बौटी की मुर्दनी में नहीं गए, सगे

भाई से खान-पीन का रिश्ता तोड़ा, वही समिस्या अब हमरे घर में भी घुस आयी। अब गंगानरायन से भी बात करनी पड़ेगी। दमाद बरात मे साथ जाए तो बुरा, न जाए तो बुरा।"

पत्नी बोली : "यही तो ! कासी हमरे सकुन्तला को ऐसा चाहत हैंगे, अपने जीजो से उन्हें इत्ता प्यार हैगा कि पिछली बार जब आए रहे तो साले जीजा दोनों एकै थाली मां बैठ के खांय। बड़ा गजब हुइ गया।"

"खैर, अब तुम जाओ, चौका-पानी उठाय चुकी कि नहीं ?"

"हां, सब निपट चुका।"

"कासी का डिब्बा दुकान भेज दिया ?"

"तुम जैसेई जीम के उठे वैसेई हमने महराज के हाथ डिब्बा भेज दिया। जब से तुम उसे दुकान ले जाने लगे तब से बिचारा खाउत-पियत क्या है, पूरी तरकारी। सबेरे कलेऊ मे हलुवा बनाय दिया रहा सो हलुवा खाय के और दूध पीके चला गया।"

"अच्छा, तो जाओ, मगलू आए तो हमें जगा देना और खचेड़ू से कहो कि एक चिलम और भर के दे जाय।"

पत्नी हुक्के से चिलम ले गयी और गुमानी फिर टांग पसार कर रजाई मे लेट गए। हुक्के की हुडक सहसा तेज हो गयी थी, लेकिन गुमानी भी समझते थे कि चिलम तैयार होकर आने मे देर लगेगी सो हुक्के की तरफ से करवट बदलकर लेट गए। खचेड़ू जब हुक्के पर चिलम रखने आया तो देखा कि सरकार अब 'गुड़गुड़' करने की मौज मे नहीं रहे 'खर्र-खों' कर रहे हैं।

ढाई बजे पत्नी ने पति को झिंझोड कर जगा दिया। दोनों तैयार होकर घर से चले। टमटम के पीछे खड़े होने के लिए सरकार के पान तम्बाकू का डिब्बा झोले मे रख-कर खचेड़ू ने अपने कंधे पर टांग लिया। 'तखत' के पास सड़क पर गाड़ी मिली, चढ़ ही रहे थे कि आवाज आयी : "महादेव बाबू, महादेव बाबू।"

गुमानी ने घूमकर देखा। महाशय मुकुन्दीलाल जी की आर्य सेना के कमाण्डर इन चीफ, अधेड़ उम्र के पण्डित रघुबर परसाद उनकी तरफ आ रहे थे।

"पालागी गुरुजी, कैसे मिजाज हैं ?"

"सब वेद भगवान की दया है ! महर्षी जी का आशीर्वाद है !"

"इस बखत कैसे पुकारा ?"

"अरे भई, हम लोग 'सर्वधर्म महाभोज' का आयोजन कर रहे हैं।"

सुनकर गुमानी के मन में धक्का लगा। पूछा : "सब धर्मों का मतलब सातों जात एक पंगत मे बैठ के खायेंगी ?"

"बिलकुल, बल्कि हमारा प्रयत्न तो यह चल रहा है कि अछूत और मुसलमान भाई भी उस पंगत में बैठाए जाएं।"

सुनकर गुमानी का कलेजा हिल उठा, बोले : "यह होयगा कैसे महराज ? हजारों-लाखों बरस का नेम-धरम छूटेगा कैसे महराज ?"

"सब छूटेगा। हमारे परम पूज्य महर्षी जी का आदेश है कि जात-पात मिटाओ। सो अब हम मिटा के ही रहेंगे। आपके भाई रायसाहब ने इक्यावन दिए हैं। आपसे एक सौ एक लेंगे।"

"अरे गुरुजी, हमपे इत्ती जादती क्यों कर रहे हैं आप लोग ?"

पण्डित रघुबर परसाद की गिराऊ छज्जे जैसी बड़ी-बड़ी मूछें मुस्कुराहट से फैल गयी, कहा : "देखिए, हमे सब मालूम हैगा। गंगानरायन की कन्या से आपके पुत्र का

विवाह भी अगले महीने होने वाला है। उस खुशी में आपसे एक सौ एक लेंगे। गंगा बाबू ने हमें इक्यावन दिए हैं। हां, यह अवश्य कहा है कि गुरु, चन्दे के रजिस्टर में हमारा नाम न चढ़ाइएगा। अभी लडके बिब्बियों का ब्याह करना है। आप कहेंगे तो हम आपका नाम भी दर्ज नही करेंगे, वाकी एक सौ एक लेंगे।"

टमटम पर बैठते गुमानी मैये बोले : "कल दिन मे दुकान पर आइएगा। आज हम तनकुन से भी सलाह कर लें और कल दुकान पर कासी भी होंगे उनकी राजी होगी तो..."

"राजी-आजी नही महादेव बाबू, मैं आपकी दुकान के आगे अनसन पाटी लैके पड़ जाऊंगा।"

गुमानी ने कुछ उत्तर न दिया, टमटम चल पड़ी। शाह मीना की दरगाह के पास लखनागढ़ी टीले पर आर्य मुसाफिर हरनाथ टण्डन खड़े हुए भाषण दे रहे थे : "मैं आप लोगों को यह स्पष्ट शब्दों मे बतला देना चाहता हूं कि हमारा परम पवित्र वेदसम्मत आर्य धर्म ही दुनिया का एक मात्र सच्चा धर्म है। मेरे प्यारे भाइयो, आप अब यह भी समझ लीजिए कि गुरुओं की आज्ञा से मैं हरनाथ आर्य मुसाफिर यह घोषणा करता हूं कि जैसे अंग्रेजों की विज्ञान अर्थात् साइंस विद्या सारे संसार-भर में अब माने जानी लगी है वैसे ही हमारा आर्यधर्म भी माना जाएगा। आर्यधर्म हिन्दू धर्म से बिल्कुल अलग है, उतना ही जितने इस्लाम या ईसाई धर्म अलग है।"

टमटम आगे बढ़ी, शाह मीना की दरगाह के सामने गुमानी ने गाड़ी की गद्दी से तनिक उठकर दोनों हाथों से सलाम किया। पत्नी ने भी उस तरफ हाथ जोड़े, फिर पति से कहा : "हमरा हर्रो एक दिन जरूर मार खाए के घर आएगा, तुम्हें बताए देत हैं।"

(नि:सांस ढील कर) "अब तुमसे क्या कहैं, हमरा भेजा उस बखत से काम नही कर रहा हैगा जब से हर्रो सकुन्तला के जेठ का किस्सा बताय गए।"

"सचमुच हमें भी बड़ी फिकर पड़ गई है। हमरा एकै एक लडका और एकै एक बिटिया। ऐसी खुसी के बखत हम क्या करेंगे, हमरी तो कुछ समझै मा नाही आउत हैगा। कैसा जमाना बदला है निगोड़ा ! राम-राम !"

"अरे जमाना बड़ी तेजी से बदल रहा है, रानी। ये आर्या मते वाले, लगता है कि हमरे सनातन धरम की जड़ ही उखाड़ फेंकेंगे। अगले महीने आर्या समाजी सब धर्मों के लोगन को एक पंगत मे बिठाए के खिलाएं-पियावेंगे...जो न हुई जाय सो थोडा है।"

थुल-थुल बदन वाली गुमानी बौटी की आंखें फट गयीं : "आएं ! सच्ची कह रहे हो ?"

"और नही तो क्या झूठ कह रहा हूं ? और ये सब भी हमरे कासी के ब्याह के चार-छ. दिन पहले होने वाला है। पण्डित रघबर परसाद हमसे एक सौ एक माग रहे थे। कह रहे थे, तुमरे तनकुन और खोखा ने इक्यावन-इक्यावन दिए हैं।"

"तुम न देना। एक तो पहले ही ऐसी आफत आ पड़ी है, दूसरे ऐसे निखिद्ध काम मे चन्दा देओगे तो हमरे सुभ काम मे बिघन पड़ेगा। चिताए देते हैं तुम्हें।"

"हम क्या समझते नही हैं, मगर ये भी तो सोचो कि आर्या मते वालो का जोर कैसा बढ़ रहा है। देख नही रही हो, तनकुन और तिल्लोकी ने मिलकर आधी बिरादरी तोड़ ली।"

सुनकर गुमानी बौटी का कलेजा धड़-धड करने लगा। दोनो हाथ छाती पर रख-कर कुछ-कुछ स्वगत रीति से कहने लगी : "हे राम जी, हे महावीर स्वामी, हमरी खुसी पर आई भयी इस बिघन-बाधा को दूर करो, मैं तुम्हें सवा पांच रुपया का परसाद

चढ़ाऊंगी। हे साह मीना बाबा, जो सब राजी सुखी निपट जैहे तो हम तुमरी दरगाह पर रेसमी चद्दर और सिन्निया चढ़ायेंगे। ईसुरनाथ, भोलेनाथ, का होए वाला है?"

मौन के कुछ क्षण बीत जाने पर गुमानी बोले : "सुनो रानी, इस दम सकुन्तला के कारण हमारा मोहरा अर्दब में फंसा भया हैगा। हमारी राय में तनकुन और खोखा को इस बखत साथे रखना चाहिए। हमरे तनकुन का दिमाग बड़ा फितरती हैगा। देखो न, कैसी चाल चलके ई तिल्लोकी चौपड़ा ने मौके पर आधी बिरादरी तोड़ ली, अपना तड़ अलग बना लिया।"

बौटी सोचकर बोली : "ठीक कहत हो, बहुरिया की जचकी खातिर हम वहीं रुक जायेंगे। इस बखत का अपनाव हमारे आगे के लिए काम आएगा।"

पति-पत्नी चिन्ता सागर में डूब गए थे और टमटम नजरबाग की ओर दौड़ी जा रही थी।

अपनी कोठी चपक मैंशन के हरे-भरे फूलोंदार लान में रायसाहब बाबू बंसीधर, पंडित प्रभुदयाल शास्त्री, महाशय मुकुन्दी लाल और लाहौर से आए हुए कौशल्या के पिता हकीम रामलाल पुरी बैठे हुए अगले महीने आयोजित होने वाले सर्वधर्म समारोह से सम्बन्धित बातें कर रहे थे। गुमानी भैए और उनकी पत्नी के फाटक में प्रवेश करते ही रायसाहब कुर्सी से उठे, दोनों के पैर छूए। भाई से कहा : "आप यहीं बैठिए, मैं भाभी को भीतर पहुंचाकर आता हूं।" फिर भीतर जाते हुए हकीमजी से कहा : "हकीमजी, ये आपके बड़े समधी हैं, मेरे बड़े भाई।"

अपनी कुर्सी से संसभ्रम हाथ जोड़ते हुए, उठकर गोरे चिट्टे, लम्बे-चौड़े, हकीम जी अपनी मोतियों-सी सफेद बत्तीसी खिलाकर बोले : "आं हो, आइए जी, पधारिए जी। बड़ा आनन्द हुआ जो आपके दर्शन पाए। बाजिये बाजिये जी समधी जी।"

रायसाहब की कुर्सी पर बैठते समय गुमानी का ध्यान पास ही रखे हुक्के की तरफ गया। दिन में चिलम भरने का आदेश देकर सो गए थे, तब से पिया नहीं था। धर्म और तलब में मनोद्वन्द्व छिड़ गया। भीतर स्वर्गीया श्रीमती चंपकलता के कमरे में कौशल्या और उसकी माता बैठी हुई थीं। रायसाहब और उनके साथ आयी हुई एक भद्र महिला को देखकर बेबेजी तो तुरन्त उठ पड़ीं, परन्तु कौशल्या को अब उठने-बैठने में भी गर्भ भार की कसमसाहट होने लगी थी। वह सरक कर तखत के किनारे आकर खड़ी होने वाली ही थी कि बेबेजी को देखकर गुमानी-बौटी ने दोनों हाथ अपने कलेजे पर रख लिए और चकित होकर उनका मुख देखने लगीं। रायसाहब मुस्कुराकर बोले : "ये आपकी समधिन हैं, भाभी।"

"हाय, हम कहैं कि हमरी देवरानी कहां से आय गयी? अरे हूबहू मिलत हैं आप दोनों की सकलें।"

'पैरी-पैने' के हेतु कौशल्या बहू अपनी सास के घुटनों तक ही झुक पायी।

"ठण्डी सीरी, बूढ़-सुहागन, दूधन नहाओ, पूतन फलौ। आज हम तुम्हें देखकर बहुतै खुस भए हैं, खोखा की बौटी, और अपनी समधिन जी को देख-देख के हमें अपनी देवरानी जी की ऐसी याद आए रही है कि क्या कहें।" कहते-कहते गुमानी बौटी का गला भर्रा गया, सिर की चद्दर उतारने से पहले उन्होंने उसके कोने से अपनी आंखें पोंछीं।

"आपके दर्शन करके बड़ा आनन्द पाया समधिन जी, मैं तो समझती थी कि जात-बिरादरी के कारण मुझे आप लोगों के दर्शन नहीं मिल सकेंगे।"

रायसाहब एक नजर अपनी पत्नी के टंगे हुए फोटो चित्र पर और दूसरी अपनी

समधिन पर डालकर यह कहते हुए चल पड़े : "मेरे बड़े भाई साहब भी आए है। बाहर बैठे हैं।"

"हम लोग तो यही सोचकर आए कि जात बिरादरी के जो झगड़े-टन्टे होय सो होयं। बाकी ऐसे समो में हम अपनी बहुरिया के काम न आयं तो फिर कब आयंगे। हाय मैं बलैया लू तनकुन लाला, ऐसी सूरज-चन्दा जैसी बहू तो कौनो घरे मे नाही है। भगवान ईसुरनाथ करें, हमरे खोखा के साथ लम्बी उमिर पावैं। बहुतै बहुत खुस भए तनकुन लाला।"

लाहौर से समधी-समधिन के आने के कारण रायसाहब को सन्तोष हुआ था। चुन्नो बीबी ने कहलवाया था कि वह जचगी के लिए आ जायेंगी। इससे भी उन्हें काफी सन्तोष मिला था। लेकिन आज अपनी सगी भाभी को घर मे आया देखकर उन्हे लगा कि अब सब कुशल होगी। नजरबाग की ईसाइन दाई नन्हो भी सुबह आकर देख गयी थी। उसके अनुसार घर का नया सदस्य आज रात से कल दिन मे किसी भी समय आ सकता है। यह जानकर उनकी मानसिक सनसनाहट बहुत बढ गयी थी। चमेलो होती तो उन्हें चिन्ता न होती। चिन्ता तो खैर अब भी नही है; अपनी बेटी को सम्हालने के लिए स्वयं उसकी मां ही लाहौर से आ गयी है। और मा भी कैसी कि हू-ब-हू चमेलो, मानो स्वर्ग से उतर कर अपने पोते को देखने के लिए साक्षात् धरती पर आ गयी हो। परसो शाम जब से बेबेजी आयी है, रायसाहब घर मे कम-से-कम आते है। बेबे को देखते ही अपनी चमेलो की याद में उनका दिल भर-भर उठता है। मन को बदलने के लिए जबर्दस्ती अपने मन को विनोदी तरग में लाते हुए रायसाहब बोले : "तो सेठानी साहिबा, अब मैं चलू, बाहर लोग बैठे हुए हैं। अब अपनी समधिन साहिबा और रानी बहू की देखभाल करने के लिए तुम आ ही गयी हो, मेरा यहां क्या काम ?"

"हां, जाओ, बाकी पहले ई बताय जाओ कि तुमने हमे सिठानी काहे कहा ?"

बेबेजी की तरफ देखकर रायसाहब ने कहा : "अरे, जब हमारे गुमानी मैंए सेठ महादेव परसाद टण्डन हो गए तब इनको सिठानी क्यो न कहे ? आप ही बताइए, मैं अब धेला भी दयाल नही हूं। समधिन साहिबा। खर्चा यही करेंगी। आपके सामने कह जाता हूं।"

तखत पर बैठी हुई गोरी-चिट्टी मोटी काया थुलथुलायी। नाक-कान और इस समय गले मे पड़े हेम हीरक हार के नग भी खिड़की से तखत पर पडती हुई धूप की पट्टी में झिलमिला उठे। गुमानी-बौटी दोनों हाथ बढ़ा-बढ़ाकर बोली· "हा-हा हमी करेंगे खर्चा।" फिर समधिन की तरफ देखकर कहा : "ई हमरे देवर रायसाहब भले ही हुइ गए हैं, बाकी इनकी हैसियतै का है जो ये हमरी रानी बहू पर खर्चा करें।"

"खोखा को भी फीस देनी पड़ेगी, वही डाक्टर होगा तुम्हारी बहू का।"

"अरे गिन्नियन में देंगे, रुपियन मे नहीं। और एक टका बखसीस का तुम्हैं भी मिलैगा। जाओ यहां से।"

आंगन में आकर पंचम को लान में एक कुर्सी रखने का आदेश देते हुए रायसाहब बाहर चले गए। उन्होने चौक भरी प्रसन्नता से देखा कि गुमानी मैंए उनका हुक्का पी रहे हैं। और सब लोग तो सर्वधर्म महाभोज की बातें कर रहे थे केवल मैंए का हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। महाशयजी शायद हकीमजी से अपनी किसी बात का समर्थन पाकर बड़े उत्साह से उठकर अपनी कुर्सी हकीमजी की कुर्सी के और पास लाकर बैठते हुए जोशीली आवाज में कह रहे थे : "वाह, वाह, हकीमजी, ईश्वर करे आपकी उमर हजारी हो।"

"यही तो मैं भी रोज कहता हूं कि हमको अब इन ढोंगियो के धर्म का इस पवित्र

आर्यभूमि से समूल नाश कर देना है। मैं कहता हूं कि हमारे म्लेच्छ यवन विजेताओं ने इन धर्म ढोंगियों की मूर्तियां तोड़ डाली, मन्दिर तोड़ डाले तो कोई बुरा नहीं किया। बाकी उस समय जो हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को इस कारण से चोट लगी, उसका हमें दुख है। हमारे नवशिक्षित युवकों को अब इन पोंगापन्थियों का डट के विरोध करना चाहिए। ये हमको जात बाहर करते हैं, तो हम इनकी जात को ही अपनी आर्य बिरादरी से बाहर करते हैं। यह सर्वधर्म महाभोज करवाने का हमारा उद्देश्य ही यही है।"

कुर्सी आ गयी थी। रायसाहब महाशयजी और शास्त्रीजी के बीच में उसे खिसकाते हुए बोले : "इस संबंध में मेरी और शास्त्रीजी की यह राय है हकीमजी, कि इस महाभोज में कुछ ऐसे प्रतिष्ठित मुसलमान और ईसाई भी सम्मिलित किए जायं जिनके पुरखों ने केवल दो-तीन पीढ़ियों पहले ही अपना धर्म त्याग किया हो, परन्तु हमारे मित्र महाशय मुकुन्दीलाल जी इस बात का विरोध करते हैं।"

"विरोध की बात तो मेरी समझ में नहीं आती है जी···"

हकीमजी की बात पूरी होने से पहले ही महाशयजी बोल पड़े : "देखिए हकीम जी, पहले मेरा पक्ष भी सुन लीजिए, फिर न्याय करिए। हमारे भारतवर्ष में हिन्दू धर्मी और आर्य धर्मी सब एक में मिले हुए हैं, मोतियों की तरह सात-सात चलनियों में छानकर हमें उसमें से अपने सच्चे आर्य वीरों को छांट निकालना है। इसलिए मैं उन लोगों को अभी नहीं छूना चाहता···।"

शास्त्रीजी की बड़ी-बड़ी खिचड़ी मूछें हिलीं। वे बोले : "यहां मेरा और रायसाहब का कथन यह है कि ऐसे लोगों की उपस्थिति से नवयुवकों में हमारी बात का प्रभाव अच्छा पड़ेगा और हम शुद्धि प्रसंग को इस समय तनिक भी न लाते हुए उनके दृष्टान्त देकर अपने युवकों से यह कह सकेंगे कि देखिए, इस हजार आठ-नौ सौ वर्ष की गुलामी में हमारे पोंगापन्थी भ्रष्ट धर्माचार्यों की अलगाव नीति के कारण ऐसे-ऐसे लोग अपना धर्म छोड़कर दूसरे धर्मों में चले गए जिनके वंशरत्न आज हमारे बीच में बैठे हैं। कल हमारे भ्रष्ट मत धर्माचार्यों की नीति के कारण हमारे और भी परिवार हमसे दूर जा सकते हैं। इसलिए जाति-पांत तोड़ो, राष्ट्र को एक करो।"

"मैं आपकी बातों का सौ फी सदी अनुमोदन करता हूं जी, शास्त्रीजी महाराज। और मेरे ख्याल में माननीय महाशयजी इस बात पर फिर से विचार करेंगे, मगर आप लोग इस भोज में कितने लोगों को शामल कर सकेंगे, पहले ये तो बतलाइए जी। और आखिरी बात मुझे यह कहनी है कि हम जादे-से-जादे जितनी शक्ती दिखला सकेंगे उतना ही अधिक हमारे भोज का प्रभाव पड़ेगा। छोटी-मोटी भीड़ हो तो भोज को न करना ही अच्छा है।"

रायसाहब बोले : 'आपने हम सबके जी की बात कही है हकीमजी, और हम पहले ही से इस कोशिश में हैं कि कम-से-कम ढाई-तीन सौ युवक और समझदार बड़े-बूढ़े भी सब जातियों के कम-से-कम जरूर ही इस भोज में इकट्ठे हो जायं। यों कोशिश, इन्तजाम और उसके लिए पैसे का प्रबन्ध तो हम पांच सौ लोगों के भोज के लिए करेंगे।"

हकीमजी कुर्सी पर बैठे-बैठे ही अपना पैंतरा बदलकर पास बैठे हुए महाशयजी की तरफ देखकर बोले : 'महाशयजी, मेरी एक अर्दास है जी।"

"अरे बाबा, अर्दास क्या आदेश कीजिए हकीमजी महाराज, आप तो हमारे मान्य मेहमान हैं।"

हकीमजी बोले : 'मेरी ये अर्दास है जी कि अभी हमारे यहां मेरा आशै है कि हमारे रायसाहब के यहां, एक बड़ी खुशी का मौका आ रहा है, मेरी पुत्तरी राजी खुशी

सन्तानवती हो गयी, पुत्तर या पुत्तरी कुछ भी जो जो इसकी मुझे चिन्ता फिक्र नही है जी, मगर उस खुशी मे मैं पांच सौ एक रुपया अर्पण करूगा।"

हकीमजी की बात सुनकर महाशयजी और शास्त्रीजी ने नई सभ्यता के अनुसार जोर-जोर से तालियां बजायी। रायसाहब कुछ कहना चाहते थे, लेकिन उनसे पहले ही गुमानी बोल पड़े: "मेरे घर पोता आया तो मै एक हजार एक आपको दूगा।"

रायसाहब चौक कर अपने बड़े भाई की ओर देखने लगे। इसी बीच मे हकीमजी ने हंस कर कहा: "समधी साहब, पोते-पोती की शरत मैंने नही रखी। ईश्वर की कृपा जो हो सो ही अच्छा। परन्तु आप तो शरत लगाते है जी।"

गुमानी भैए फिर उबल पड़े, बोले: "शर्त की बात नहीं समधी साहब, ये तो अपने-अपने दिल की बात है। मगर चलिए, आपकी बात सिर आखो पर रखता हू, अगर पोता आया तो दो हजार एक और पोती आयी तो एक हजार एक। पोती भी मेरे लिए प्यारी होगी मगर पोता तो पोता ही होता है, यह आप भी जानते है समधी साहब। तनकुन, नौकर को बुलाय के चिलम बदलवाओ।"

यहां बाहर बड़े भाई और भीतर अपनी भाभी के सकोच के बजाय बढ़ाव के व्यवहार को देखकर रायसाहब बाबू बंसीधर कुछ चकित तो अवश्य थे लेकिन चौक से अधिक प्रसन्नता थी। पत्नी की मृत्यु के बाद उतना शोकहीन स्वच्छ आनन्द उन्हें नही प्राप्त हुआ था। दूसरे दिन सौ० कौशल्या पुत्रवती हुई। सौरी घर मे चुन्नो बीबी और गुमानी बौटी दोनों ही थी। खबर सुनकर प्रसूति गृह के बाहर फूल का छोटा थाल और करछुल लेकर कट्टो जोर-जोर मे थाली बजाने लगी।

उस समय डा० देशदीपक टण्डन प्रसव के पहले नन्हो दाई को आवश्यक निर्देश देकर अस्पताल जा चुके थे। बैठक घर मे टगी घड़ी और हकीमजी तथा रायसाहब की जेबी घड़ियां थाली की आवाज से तुरत मिलायी गयी, ठीक नौ बजे थे। हकीमजी और रायसाहब दोनों भावमग्न होकर एक दूसरे से लिपट गए। "मुबारक हो जी राय-साहब!"

"मुबारक आपको भी! आपकी बेटी ऐसी सुलक्षणा और लक्ष्मीस्वरूपा आयी कि हमारे घरको यह खुशी का मौका दिया।" कहते-कहते आंखें छलछला आयी। इस अनमोल खुशी की घड़ी में मुझे अपनी धरमपत्नी की बहुत याद आ रही है।" दोनों आखों से गगा-जमुना की धार बह चली। हकीमजी ने दोनो हाथो से पकड़ कर उन्हे कुर्सी पर बैठा दिया।

"होनी को कौन टाल सका है जी, रायसाहब जी। धीरज रखिए, आप तो विदवान पुर्श है जी।"

रायसाहब ने चटपट अपनी आंखें पोंछ डाली। उठकर अपने दफ्तर चले गए। दराज से नोटों की गड्डी निकालकर उसे हाथ मे लेकर बैठक में बाहर आए, तभी भीतर से कट्टो आकर बोली: "चौक वाली मां जी कहित है कि उनके घरे···"

"अरे हां-हा, तू जाके पंचम को पकड़ ला, उससे मैं तीनों जगह कहलवा दूगा।"

दफ्तर का एक चपरासी उनके बंगले के 'आउट हाउसेज' मे ही रहता था। पंचम से उस चपरासी को बुलवाया, उससे कहा: "दफ्तर घण्टे भर बाद जाना, मैं तुम्हारे साहब को चिट्ठी लिख दूगा। पहले अस्पताल जाओ, ये पर्ची डाक्टर साहब को दो। फिर चौक जाओ, एक पर्ची तिल्लोकी बाबू के यहां और एक बडे भाईसाहब को मेरे पुराने घर में जाके दे दो।"

"आपके कौन ते भाई का देई हजूर?"

"कहना गुमानी बाबू। देखो ये तीन पर्चियां, दो अंग्रेजी में और एक नागरी में हैं। सो अंग्रेजी वाली एक डाक्टर साहब के यहां और एक चोपड़ा साहब के यहां और ये नागरी वाली हमारे भाईसाहब के यहां देना। समझ गए?"

"हां हजूर, बड़ी खुशी का मौका आवा है सरकार। हमार बहू जी होती तो हमका बखसीस मिलत।"

"बख्शिश तुझे अब भी मिलेगी, ले।" कहकर पांच रुपए का नोट उसकी तरफ बढ़ा दिया।

महंगू चपरासी ने नोट लेकर दोनों हाथों से सलाम किया, फिर कहा: "याक लोढ तो सरकार खुशखबरी सुनावैं खातिर आवैं-जावैं का भवा। और हजूर, हमका बक्सीसौ मिलै का चही। भगवान आपका परिवार बाढ़ै, खूब चैन होय।"

पांच का दूसरा नोट उसकी ओर फिर बढ़ाते हुए उन्होंने मुस्कुराकर कहा: "तू चपरासी भले ही बन गया पर है तो नाऊ का बेटा, छत्तीसा। ले भाई, इस खुशी के मौके पे तेरा मांगने का हक है। ले, यह ले।"

दो नोटों की फुर्ती पाकर चपरासी की सरकारी हकारे की घोड़ी बिजली बन गयी। जचगी में लगी बड़ी बूढ़िया अब नहा रही थी। सबसे पहले गुमानी बौटी ही नहा धोकर बाहर आयी। उनके कपड़े आदि आवश्यक सामान गुमानी मैंए ने रात में ही भिजवा दिए थे। गुमानी-बौटी थप-थप चाल से बैठके में आयी। हकीमजी और रायसाहब उनके सम्मान में उठ खड़े हुए। "मुबारक हो जी समधण जी!"

"आपको भी मुबारक होय! इस मौके पर तो समधियाने की मिठाई खैहै हम। वेटे के ब्याह पर भी नहीं खायी है सो ब्याज समेत खाऊंगी।"

"ज़रूर खाइयेगा जी, आपका तो अधिकार है जी। ये बड़ी खुशी का मौका भगवान ने दिया है। मैं तो सच मानिए आपके कुल दीपक आपके और अपने बेटे को बहोत-बहोत अशीर्वाद दे रहा हूं। मेरी निर्दोष बेटी का उद्धार करके मुझे खुशी बख्शी और ये दिन दिखाया। सच कहता हूं जी, हमारे देशदीपक जैसा रतन आदमी संसार में ढूंढ़े से भी कम मिलता है।"

"अरे, हमरी बख्शिश तो लाओ भाभी, बातों से बहला रही हैं, झूठी कहीं की।"

गुमानी बौटी भी ताव में अपनी नाक की हीरे की कील घुमाती हुई बोली: "बकसीस मिलती है काम करै वाले को। झूठी काहे बनाउत हौ समधी साहेब के आगे। पहले काम करौ, फिर बकसीस मांगौ।"

"तुम खाली झूठी ही नहीं भाभी, चकमेबाज भी हो। काम तो बताया नहीं और रौब गांठने लगी। देख लिया न पुरी साहब, आपने मेरी भाभी का हाल?"

"काम ये हैगा कि नौकरन से कहो कि हियन के सब भिखारियों को हमरे दरवज्जे पे लायें। आज खिचड़ी रिजगारी लुटाऊंगी। तुमरे भैया भाय जायं।"

दो घण्टे के भीतर ही गुमानी मैंए और गनेसो, महेसो की बहुएं आ गयीं। घर में चहल-पहल मचने लगी। रायसाहब और तिल्लोकी बाबू के धड़े में शामिल हो जाने वाले बहुत से लोग दिन-भर आते रहे, गुमानी-बौटी ने इकट्ठा किए गए फकीरों को खिचड़ी रेजगारी लुटायी। किसी को चवन्नी, किसी को इकन्नी, किसी को दुअन्नी, जो जिसके भाग में था, मिला। घण्टे-आधे-घण्टे तक रायसाहब के घर के बाहर कौआरोर मचता रहा।

महंगू हरकारे से खुशखबरी पाकर रायसाहब के पुराने दफ्तर से कई बाबू-चपरासी और छोटे-मोटे अफसर भी बधाई देने के लिए आए। दिन-भर लड्डू और पान इलायची

के दौर चलते रहे। चौक में घर-घर हुल्लड मच गया कि रायसाहब तनकुन के घर पोता आया है। रात के आठ बजे तक बधाई देने वालो का तांता बंधा रहा। डाक्टर साहब अपनी ड्यूटी पूरी कर रोज की तरह दोपहर बाद ही लौटे। वे खुश थे पर बड़ों की खुशहाली की इस भीड़ में न बैठ, ऊपर अपने कमरे में जाकर लेट गए।

27

आर्यसमाज द्वारा प्रस्तावित सर्वधर्म महाभोज के संबध में हाट-बाट-घाट, गली-गली में हफ्तो पहले से भावनाओं का अनवरत भूकम्प मच गया। गोमती के जनाने घाट पर औरतो में चर्चा छिड़ी थी। मटका बुआ धुली धोती पहनकर गीली धोने-पछारने जा रही थी कि इस प्रसंग मे छेड़ी गयी रामा घटवालिन की बात का उत्तर देते हुए बोली : "अरे का कहत हौ रामा बहिनी। सुना मंगी-चमार दाल-भात परोसिहैं, और बाम्हन खत्री खैहैं। हम तो रानी अब हियन न रहैबै। कासीजी चली जाब।"

"अरे तौ कासीजी में तुम्हें का मिलिहै, बुआ। आरिया मते वाले तो हुअन भी पहुच गए हैं। अब कासी जाओ चाहे रमेसुरन, आरिया मते वालन से छुटकारा नही हैगा।"

"सबै बिरादरी बिगड रही हैं। अब घर-घर में तो अग्रेजी पढाई जात है। ओलम टी-टी, ओप-गोट मानी डामपूल।" रज्जो ने अग्रेजों की तरह अकड कर ऐसी शान से कहा कि औरतें हस पडी।

"अब मटका बुआ, तुम भी ओलम टी-टी पढि लेओ, माहेबन की तरह ई लठिया नाही, कोट-पाटलूम, पहिन के और छड़ी लै के गोमती नहान आवा करौ।"

रामा घटवाली हंस कर बोली : "सुनयौ मटका, बोलौ कोट-पाटलूम पहनियौ ?"

घटवालिन की सन्दूकडी से सीपी निकाल कर सन्दूकडी आगे रखी। गोपीचन्दन की बट्टी और हुरसा उठाकर पानी का छीटा डालकर घिमते हुए सात महल्लों की सुहागन, विधवा हीरो आंखें मटकाकर धीरे से बोली : "इनके बुढऊ यार तो इनका गोदी मां बिठाय के अफीम की पियाली पियावत हैगे। ही ही ही:।"

रामा बुरा मान गयी, बोली : "सूप बोलै तो बोलै, चलनी का बोलै जेहिमा बहत्तर छेद ?"

सुनकर हीरो की आवाज आवेश वश ऊंची उठी, गर्व से कहा : "अरे हमरा अब कौनो छिपाव-दबाव किसी निगोडे से नाही रहा। पेट तो भरबै करेंगे। कौन दहिजार का कुनबेवाला, हमसे पूछत हैगा कि हीरो, तुम जी रही हो कि मर रही होगी। हम जो कुछ करत हैंगे, खुले आम करत हैंगे। उन औरतन की तरह नाही हैं कि चूड़ी पहिनै के बहाने मनिहार का बुलाय के दरवज्जा बन्द कर लिहिन। फिर,उठ के राम-राम, सिव-सिव करन लगी।"

मटका महराजिन की भौजाई के चोर मन की डाढ़ी में तिनका चिपक गया।

उधर प्रोहितजी ब्राह्मणों की एक सभा बुलाने की योजना में दीवाने जोश के साथ दत्तचित्त होकर दौड़-धूप कर रहे थे। नगर के प्राय: सभी ब्राह्मण और सवर्ण जातियों के प्रतिष्ठित लोग इस बात के प्रयत्न में थे कि 'सर्वधर्म भोज' सफल न होने पाए। प्रोहित रामसुन्दर झिगरन सिद्धांत चूडामणि, पण्डित उमापति बाजपेयी के यहां जाकर बोले: "पण्डितजी, वो दयानन्द साला आंग्लशूद्र हता। गेरुआ चोला पहन के अपनी बिलती वकालती बुद्धि से उसने हमारे पवित्र वेदों के अर्थन का अनर्थ कर डाला।"

माथे पर भस्म और उस पर गोल कुंकुम बिंदी लगाये, तेजस्वी उमापति जी बोले "क्या करोगे रामसुन्दर इस महाधर्म नाश के लिए अंग्रेजी पढ़ाई को दोष दोगे कि अकेले दयानन्द को ?"

"दोनों एक-दूसरे के पूरक हैंगे, पण्डितजी। अंग्रेजी विद्या जदी माता है तो आर्य समाजियों का सत्यार्थ प्रकाश पिता हैगा। इसी से ये सारा भ्रष्टाचार उत्पन्न भया हैगा।"

"सभी जातियों में खलबली मचने लगी है रामसुन्दर। आजकल देखो, कश्मीरियन में क्या हल्ला मच रहा हैगा। विशुननरायन दर बिलायत क्या गए हैं कि वहां भी दो घड़े बन गए। उनके धर्मनिष्ठ समाज ने नागरी में कल यह पर्चा छपाया 'धरम-सभा अखबार'—ये देखो।"

तखत पर ही दीवान से सटा पड़ा हुआ 'धर्मसभा अखबार' उठाकर पण्डितजी ने सामने रखा। देखकर प्रोहितजी बोले: "कश्मीरी ब्राह्मण तो सब उर्दू-फारसी पढ़न वाले होत हैगे, ई नागरी में कैसे छपा ?"

"नागरी अक्षर हिन्दुओं के प्राचीन अक्षर हैं। पर इससे यह मत समझना कि केवल धार्मिक लोग ही नागरी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। बल्कि दयानन्दी विचारों के सभी जातियों और वर्णों के अंग्रेजी पढ़े-लिखे आंग्लशूद्रादि अब हमारे हियां उर्दू-फारसी का प्रयोग छोड़कर नागरी भाषा और लिपि का प्रयोग कर रहे हैं। हमारे यहां खत्री जाति के एक बाबू रामलाल बर्म्मन आए हैंगे बम्बई से। वहां भी एक नागरी अखबार के सम्पादक हैं और यहां से भी निकाल रहे हैं 'दिनकर प्रकाश'।"

"वह तो खैर खत्री हैं सो निकालबे करेंगे। पर सुना है कि पढ़े-लिखे कायथ भाइयों ने भी अब एक 'कायस्थ समाचार पत्र' निकालने की योजना बनायी है। शीघ्र ही तुम लोगों के सामने आ जाएगा। इन छापों और समाचार पत्रों का यह प्रभाव पड़ेगा कि देखते रह जाओगे।"

एक गहरी सांस लेकर प्रोहितजी बोले: "क्या बतावें ऐसी कुटिल नीति चली है कि हमारे धार्मिक अस्त्र-शस्त्र धारण करके ये लोग हमारे ऊपर ही प्रहार कर रहे हैं। परन्तु मेरा कथन यह है पण्डितजी की जदी हमारे हिन्दू समाज में यह नरक बैतरणी ही बहने लगेगी तो हम सब ब्राह्मण वर्ण के सात्विक, तपस्वी पुर्श कहां रहेंगे ?"

पण्डित उमापति जी तनिक आवाज दबाकर बोले: "देखो भाई, मेरा दुर्भाग्य यह है कि मैंने स्वयं अपनी इच्छा से ही अपने पुत्रों को आंग्ल विद्या पढ़ने के लिए प्रेरित किया। मैंने समझा कि इससे इनकी आर्थिक उन्नति होगी क्योंकि समय अब आंग्ल भाषा का ही आ गया है। जब तक पढ़ते रहे तब तक तो अंकुश में रहे पर मुझे क्या मालूम था कि इस विद्या को पढ़ के मेरे घर में इतनी शीघ्रता और तीव्र गति से नये विचारों का प्रवेश हो जाएगा। अब मैं अपने ही घर में अकेला हूं रामसुन्दर। क्या करूं सोच रहा हूं कि शीघ्र ही क्षेत्र संन्यास लेकर शिवपुरी में गोमती तट पर जगन्नाथजी के मन्दिर में ही बैठ जाऊंगा और यह संसार छोड़ दूंगा।"

अपनी चारों उंगलियों मे पड़ी अंगूठियों के नगो पर दूसरे हाथ की उंगलियां फेरते हुए, विचारपूर्ण मुद्रा में प्रोहितजी ने कहा : "इससे तो आपका व्यक्तिगत धर्म अवश्य बदल जाएगा प्रन्तु समाज का धर्म कैसे बचेगा ? मैं तो आपसे ये निवेदन करने आया था कि इस 'सर्वधर्म-महाभोज' के विरुद्ध धार्मिक प्रमाण देकर आप एक पर्चा हमें लिख देवें। हम खत्रियो, बनियों, कश्मीरियो और कायथो सबके सम्पन्न और प्रतिष्ठित गणमान पुरुषों की एक कुमेटी बनाय के फिर चंदा लै के हजारों की सख्या मे सहर मे वो पर्चा वंटवाय देंगे। उसे पढके ममाज के कुछ ज्ञान चक्षू तो खुलेंगे महाराज—कि झूठ कहता हूं।"

"पर्चा हम नही लिखेंगे। अपने घर के वातावरण को अधिक कटु नही बनाएगे।"

सुनकर प्रोहितजी आंखें तरेर कर बोले : "तो इसके मायने ये भए कि आप परिवार की रच्छा के लिए धर्म की रच्छा ......"

"यह बात नही राममुन्दर, बात यह है कि मेरे प्रमाणों को काटने के लिए हमारा छोटा पुत्र और जामाता का तथाकथित सत्यावेश उभर पड़ेगा। घर मे ही पर्चेबाजी आरम्भ हो जाएगी। मैं यह स्थिति पसंद नही करूंगा। हा, तुम्हें वेदोक्त प्रमाण लिखकर दे सकता हूं, तुम अपनी तरफ से उसे पर्चे मे देकर यह भी लिख सकते हो कि यह वेदवचन और धर्म प्रमाण तुमने मुझसे ही प्राप्त किए है।"

"उस पर भी तो आपके घर वाले बिगड मकते हैं।"

"वह अलग बात होगी, रामसुन्दर। मैं कह सकता हूं कि सत् प्रमाण पूछने वाले को बतलाना मेरा धर्म है। यह सिद्धांत की बात है, किसी के विरोध मे नही कही गई है।"

रामसुन्दर बोले : "लाइए वही दे दीजिए।"

"अभी तो नही, रोटी खाय के, झपकी लै के फिर दोपहर बाद पोथियां देखेंगे, तब लिख देंगे। बाकी अब तुम इत्ती दूर से आए हो तो तुम्हें एक सत परामर्श भी दे दू।"

कुछ-कुछ निराश हो चुके प्रोहितजी के स्वर मे आशा का दीप कुछ टिमटिमाया बोले : "क्या परामर्श है आपका ?"

"शठे शाठ्य समाचरेत्। भोजस्थल पर केवल हिन्दू ही नही, मुसलमान गुण्डे भी खड़े करवाय के मारपीट करवाय देओ। हमने सुना है कि जो पुरुष भोज मे सम्मिलित किए जाएंगे, उनकी घरवालियों के लिए भी एक अलग भोज उसी दिन उसी स्थान पर और उसी समय किया जावैगा। खाली पर्दे प्रथा की रक्षा के लिए स्त्री पुरुषो के बीच मे एक कनात खडी करी जावैगी।"

प्रोहितजी हल्की-सी हसी हंस कर अपने रूईदार अंगरखे की जेब से पान का मखमली बिलहरा और बटुवा निकालते हुए बोले : "इसका भी प्रिबन्ध हमने कर रखा है। प्रन्तू इस्तिरी भोज की खबर आपने खूब सुनायी। उनके निमित्त मुसलमान गुण्डो का सुझाव भी हमें पसंद आया। चलिए आपका इत्तै सहियोग बहुत काफी है। लीजिए, ताम्बूल आरोगिए, महराज।"

"नही भइया, इसका हमे रोग नही, अपनी खैनी मे ही मस्त हैं।"

प्रोहितजी ने पर्चा छपाया। कुछ खत्री बनियों की राजी से गुण्डो की व्यवस्था भी की गयी। इसकी सूचना डॉ० देशदीपक को भी मिल गयी। महाशयजी आदि से विचार विमर्श हुआ। डॉ० टण्डन बोले : "इस समय तेलियो और धोबियो मे अच्छे-अच्छे पहलवान हैं और दोनों ही जातियों के चौधरी मुझे बहुत मानते है।"

महाशयजी बोले : "मैं खटिकों पर अच्छा प्रभाव रखता हूँ। यह सब होगे

और फिर हमारे युवा आर्य वीरों की हाकी स्टिकें भी होंगी, देख लेंगे दुष्टों को।"

डॉ० देशदीपक विचार करके बोले . "नीति यह कहती है कि विपक्षी को थोडा भ्रम मे भी डालना चाहिए, महाशयजी। आप सुनारों की बगीची में भोज दे रहे हैं। उसके पिछवाड़े मैदान है। अपने स्वयंसेवक उसके आगे वाले फाटक और उसके दोनों तरफ की गलियो में तैनात कीजिए। इससे विपक्षी को यह भ्रम होगा कि सारा मोर्चा मुख्य द्वार के सामने ही बांधा गया है, और आपके द्वारा आमन्त्रित गृहस्थ पिछवाड़े के दरवज्जे से बगीची मे प्रवेश कर जाएगे।"

महाशयजी बोले : "युक्ति अच्छी है पर भोज में जाने वालों की खबर विपक्षियो से देर तक नही छुपायी जा सकेगी, डॉक्टर साहब।"

"अरे, तब तक तो हम अपना मोर्चा जीत लेंगे, महाशयजी। अभी कल परसों ही तिल्लोकी चाचा और पापा आपस मे बातें कर रहे थे कि पुलिस सुप्रिन्टेन्डेन्ट ग्रीव्स-साहब से भी उन्होंने बात कर ली है। बडा पढा-लिखा और समझदार अंग्रेज है। उसने तिल्लोकी चाचा से कहा कि शहर के आठ-दस सम्मानित लोगों के दस्तखत कराकर आवेदन पत्र भेज दो कि हमारे अच्छे सामाजिक कार्य में विघ्न डालने के लिए पुरातन पंथियो के द्वारा झगडा कराए जाने का अंदेशा है। मैं घुड़सवारों की एक टुकड़ी भेज दूंगा।"

गलियों और कूचों में हाय-हाय और स्त्री-पुरुषों में बहस-मुबाहसे चलते-चलते माघ पूर्णिमा का वह दिन आ पहुंचा जिस दिन आर्य-समाजियों ने 'सर्वधर्म भोज' का आयोजन किया था। नगर के हिन्दू समाज के कौरव-पाण्डव, पक्षो के गुण्डा दल अपने-अपने मोर्चे बांधे खडे थे कि 'खबड-खबड' घुड़सवारों की टुकडी प्रवेश करती हुई दिखलाई दी। प्रोहितजी तथा पुरातन पथियों के गुण्डों में खलबली मच गयी। थोड़ी देर मे इलाके के दारोगा और चार-पांच सिपाही भीड मे से गुजर कर आगे बढ़ते हुए बोले: "दो मिनट के भीतर-भीतर ये मजमा गायब हो जाना चाहिए। क्या समझे पीर अली।"

शहर के बाकों का एक प्रमुख सरदार गोरा चिट्ठा तगड़ा खूबसूरत आंखों वाला पीर अली बोला : "दीनों-धरम एक होते हैं, दारोगाजी, और शरीफ की जबान भी एक होती है। चाहे कोई भी चला जाए, मगर मैं और मेरे साथी अपने मजहबी हिन्दू भाइयों को छोडकर हर्गिज नही जाएगे।"

अपना तमंचा ऊपर उठाकर दारोगा जी बोले : "एक मिनट मे यहां से रफा-दफा हो जाओ पीर अली, वर्ना तुम्हारे फरिश्ते भी ·"

पीर अली का देसी तमचे वाला हाथ उठा ही था कि-दारोगाजी की गोली दग पडी। सीधे उसके तमचे पर ही जा लगी। तमंचा नीचे जा गिरा और पुलिस कानिस्टेब्लो ने पीर अली को धर दबोचा। पीर अली के साथी तैश मे आगे बढे ही थे कि घुडसवारों की बन्दूकें भीड़ की ओर तन गयी। नायक ने आसमान मे एक हवाई फायर भी किया। और बगीची के भीतर से वैदिक मन्त्रों का सामूहिक गुंजार होने लगा : "ओम सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु।" आरम्भ मे केवल सौ-डेढ सौ नये विचारों से सहमत पुरुष ही थे, स्त्रिया बिलकुल नहीं आयी थी। किन्तु पुलिस की रक्षा का प्रबन्ध सुनकर शौर्य और कायरता की सीमा रेखा पर विचरने वाले लगभग सौ लोगो की भीड और आ गयी। स्त्रियां केवल चार ही आयी थीं, वह भी दलित वर्गों की। रायसाहब, बाबू वंशीधर टण्डन अपने मित्र और अपने साथ ही साथ 'खान साहब' का खिताब पाने वाले रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर अहमदअली खां और पादरी रेवरन्ड फादर, जान क्रिस्टोफर साहब को भी भोज मे ले आए थे।

भोज बहुत शानदार हुआ, पुरातन पंथी बहुत ही दुःखित हुए। खिझलाए हुए प्रोहितजी और लाला छंगामल में बातें होने लगीं। लाला बोले : "साले अंग्रेज की सह पाय-पाय के हमरी सुपड़िया पर जूते पर जूते मारे जाते हैं और हम कुछ भी नही कर सकते।"

"आप क्या करेंगे लालाजी, आरसमाजी रात-दिन चिल्लाय रहे हैं कि ये *आरसमाजियों का देश है, हिन्दुओं का नहीं। मुसलमान तो पहले ही से कह रहे हैं कि* हिन्दू काफिर हैं, इन्हें मिटाओ। और अब यह हमारे ही घर में जो सैकड़ों विभीशन पैदा हो गए हैं और अस्कूलों, कालेजों की मेहरबानी से इन लोगों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जावैगी। क्या करोगे आप ? कौन रोक सकता है नए जमाने को ?"

"हम रोकेंगे नए जमाने को। देखो ई रानी कटरे वाले पुलहरु कस्मीरी पण्डित को कैसा धरम को जोस चढ़ा हैगा, कि कहते हैंगे कि बिरादरी भर के घरों में साले पढ़े-लिखे बिसुन सभाइयों का जोर हुई गवा हैगा। विशुन नारायन दर के घर बिलैत से लौटने पर अगर इन्होंने उसे मिलाया तो हम पूरी बिरादरी को ही बिरादरी से निकाल देवेंगे। ऐसा बरमतेज आप भी दिखाओ तो जानैं।"

प्रोहितजी के अन्तर का ब्रह्मतेज ज्वार की तरह उमड़ कर चेहरे पर आया परन्तु शीघ्र ही भाटे की तरह उतर भी गया। इस ज्वार भाटे रूपी तेज को संयमित बनाए रखने की इच्छा से प्रोहितजी कुछ कठोर होकर बोले : "कस्मीरियों की नीती मेरी समझ में नही आयी। बिरादरी को कोई भला बिरादरी से कैसे निकाल सकता हैगा ? बाकी आप खातिर जमा रखें, मैं रायसाहब तनकुन और मिशटर तिरलोकी नाथ की नाकै जड़ों से काट के दिखाऊंगा।"

छंगामल की आंखें चमकीं, बोले : "कैसे ?"

"कानपुर की बिरादरी ने गुमानी टण्डन के समधी और पूरे घर को बिरादरी से निकाल दिया है और गुमानी के हयां बेटे का ब्याह होने वाला है। हम भी देखेंगे इनके घर तमाशा। बहन वर का आरता करै कैसे आएगी।"

"अरे गुरु जी, हुआं तो हम भी दिखाय सकत हैंगे, तुमसे अच्छा तमासा।"

"क्या सोचा आपने।"

लाला छंगामल अपने सफेद पट्टों पर हाथ फेरते हुए, मंद-मद मुस्कुराते हुए बोले : "देख लेना।"

मोटा वदन, श्यामल वर्ण, भरे-भरे गालों पर बड़े-बड़े खिचडी गलमुच्छों और कपाल पर केसरिया त्रिपुण्ड तथा गुलाबी पगड़ी धारण किए रूई की रेशमी बगल-बन्दी पर जरी किनार का दुशाला ओढ़े सारस्वत कुलभूषण पुरोहित रामसुन्दर जी झिंगरन गलियों मे बड़े गम्भीर भाव से विचरते चले जा रहे थे कि शेरों वाली काली जी के चबूतरे पर दस-बीस गरीब लोगों की भीड़ में बैठा हरनाथ टण्डन आर्य भजन गा रहा था—"वेदो का डंका आलम में बजवाया ऋषी दयानन्द ने। तुम आर्य पुत्र हो आर्य बनो, सिखलाया ऋषी दयानन्द ने।"

कानो में यह भजन पडते ही प्रोहितजी का ब्रह्मतेज उनकी आंखों में उबल पड़ा। विशेष रूप से हरों को देखकर उनका खून खौल उठा। भीड़ में बैठे लोग भी उनके बिल्कुल अपरिचित नही थे। प्रोहितजी के अभिमान को करारी ठेस लगी। उनके जंगल मे दूसरा शेर गरज रहा है, इसे भला वे कैसे सहन कर सकते थे ? मंदिर के चबूतरे पर अपना चांदी की मूठवाला सोंटा ठोक कर गर्जे : "यह हमारी देवी जी के पवित्र अस्थान पर क्या भिरिस्टाचार फैलाय रखा हैगा ? हटाइए यहां से ये अपना तामझाम, भागिए।"

पुरोहितजी की डपट भरी वाणी भीड़ में कुछ हाला-डोला-सा अवश्य लाई किन्तु तभी आर्य मुसाफिर हरनाथ टण्डन ने दोनों हाथ बढ़ाकर उन्हें बैठे रहने का संकेत देते हुए कहा : "हे ऋषी मुनियों की सन्तानों, आप लोगों को अच्छी तरह से मालूम है कि यह देवी की मठिया मैकू हलवाई के पुरखों ने बनवायी थी, किसी प्रोहित-पाधा के पुरखों ने नहीं बनवाई थी। यह हमारा स्थान है, और हम यहां बैठे हैं। कोई पाप-कर्म तो नही कर रहे हैं। आप लोग शान्ती से बैठिए और सुनिए—वेदों का डंका···।"

दुबारा गायन आरम्भ करने से प्रोहितजी चिढ़ गए, बोले : "तू समझता है कि तेरा चाचा रायसाहब और तेरा चचेरा भाई डाकटर हुई गया है, इससे तेरा कोई कुछ नही बिगाड़ सकेगा। अरे छोकरे, ठहर जा, धर्म की शक्ति राजा की शक्ति से भी बड़ी होती है, समझ लेना।"

सुनकर हर्रो हंसा और बोला : "इत्ती देर में आपने सत्य बात कही है प्रोहितजी महराज, असली शक्तो धर्म के ही पास है और धर्म वही है जो वेद भगवान ने हमे बतलाया है। ये आपके चण्डी-मुण्डी, अंकर-शंकर सब धूर्तों की कमाई के ढकोसले हैं।"

"अरे नीच, तूने मुझे धूर्त कहा, ब्राह्मण को······"

"भाइयो, अब आप सब सुन रहे थे, मैंने प्रोहितजी महराज की शान के खिलाफ एक शब्द भी मुह से नही कहा।"

प्रोहितजी ने अपना सोटा जोर से ठकठका कर कहा : "तुमने कहा और अवश्श कहा।"

"सुन लिया भाइयो, ये हमारे परमपूज्य प्रोहितजी अपने झूठ को सच साबित कर दिखलाना चाहते हैं। इसी झूठ को बार-बार रटने से हमारे वेदों के देश में ससरे भूत-प्रेत सच हो गए, चण्डी-मुण्डी सच हो गयी······।"

सिर पर सूती कढ़ाई के काम की गोल टोपी पहने, पुरानी मिर्जई और घिसी हुई ऊनी लोई ओढ़कर पीतवर्णी कुंजू खलीफा उधर से निकले। प्रोहितजी को देखा, लहक कर बोले : "ओवखो, गुरुजी महराज हैगे। पाय लागी गुरु। हिंया कैसे ठाड़े भए हैं महराज ?" फिर अपनी नशे से चुंधियाई नजरें उठा कर हर्रो टण्डन और उसकी भीड़ को देखा। तो समझ मे आया, सिर हिला कर कहा : "अच्छा, तो ये बात है, तुम्ही ने हमारे हनुमान जी की पूंछ में आरसमाज का पलीता लपेटा हैगा।"

खलीफा के मुख से प्रोहितजी के लिए हनुमान जी सुनकर हर्रो और बैठी भीड़ हंस पड़ी। प्रोहितजी क्रोध मे आंखें लाल-लाल करके तेजी से अपना चांदी मढ़ा सोटा हिलाते हुए चल पड़े। कुंजू खलीफा उनके पीछे पीछे दौड़े, बोले : "अरे गुरुजी, नराज हुई गए का ? अरे ठहरिए तो।" तेजी से चलकर कुंजू खलीफा ने प्रोहितजी का साथ पकड़ लिया और बोले : "गुरु जी, आपको नराज नहीं करना चाहता था, असल मे तरावट के पाए बिना ये हमारी कागाबासी साली उलट गयी और कहना कुछ और चाहता था, कह कुछ और गया। असल में गुमानी टण्डन के हियन जाय रहा था। रास्ते में आप मिल गए। हर्रो ने आपसे कुछ उल्टा-सीधा साइत कह दिया तभी आप करोध में आय गये ना ?"

प्रोहितजी पहले तो चुप रहे, फिर बोले : "प्रचण्ड कलिकाल आय गया है ससरा। नही तो सनातन काल में कोई किसी वर्ण, किसी जाति का पुर्श होय हमारे महान ब्राह्मण ऋषी मुनियों को गली सड़कों में आते-जाते हुए देखकर चट से भूमिष्ट होय के प्रणाम करता था। और कहां यह पापाचार फैल रहा हैगा—शिव-शिव !"

"ये सब दयानन्दियों का ही अनन्द फैल रहा हैगा महराज। ये हर्री ससरा तो अपनी बिरादरी का कलंक है। पक्का आरसमाजी हुई गया है ससरा। हमारे देवी देवतन का गलियावता है गुरुजी!"

"अरे इनके घर पाप ही पाप प्रकट भया हैगा। तनकुन अंग्रेजी पढ़ के रायसाहब भले हुई गए हैं पर देखो, कैसा पाप का फल दिया है भगवान ने कि लड़का डाक्दरी पढ़ने गया तो रण्डी ब्याह लाया।"

"नहीं गुरु जी, बिरादरी की लडकी है।"

"उससे क्या होता है खलीफा। अरे जब एक बार रण्डी हो गयी तो रण्डियै रही, उससे बिरादरी से क्या सम्बन्ध?"

"ये भी नही भया गुरुजी, असल मे उसका बाप दयानन्दी है तो सब लोगो ने झूठ-मूठ उसे बदनाम करना चाहा। बड़ा नामी हकीम है लहौर का।"

चलते-चलते प्रोहितजी ने गरज के कहा: "गुण्डे उसे लै भागे रहे कि नही कि ये भी झूठ है?"

कुंजू खलीफा की कागाबासी भी तैश में आ गयी। इतनी ही जोर से हाथ और सिर झटक कर कहा: "सच है, बिल्कुल सच है। पर आप इस सच्चाई को भी नही भूलिए कि गुण्डे उसे लै जा नही सके। और हमको ये भी अब मालूम है कि बिरादरी के ही एक बदचलन रईस ने उसे उड़वाकर लड़की के बाप की नाक काट लेनी चाही थी।"

खलीफा की कागाबासी जब प्रोहितजी के ब्रह्मतेज से बराबरी से लड़ी तो प्रोहितजी के कदम फिर आगे बढ़ चले। कुंजू खलीफा तब भी उनके साथ चल रहे थे। नये सिरे से कहने लगे: "खैर ये तो बात की बात है महाराजा, हम कोई आर्या मत्ते के तो हैं नहीं। भोले बाबा के भगत आपके जिजमान और चरन सेवक।"

पुरोहितजी भी नर्म पड़े, बोले: "वे हमरे मुसद्दीमल के घर में पाप की अम्बरबेल चढ़ गई है खलीफा। बिरादरी का पुन्न-परताप नाश कर डाला हैगा मुसद्दीमल के लड़के पोतो ने। और ये ससरा मन्नो बीबी का दमाद, उसी ने मेम को पहले अपने घर मे ही लाय के रखा रहा न, तुम्हें याद है कि नही?"

"सब याद हैगा गुरु। इनकी ड्योढी के आगे घूरे में दस-दस बीस-बीस मुर्गी के अण्डन के छिलके दिखाई देते रहे। *बाकी एक बात है गुरु, मिमिया उनके पिछवाड़े से ही* आवती-जावती रही। कबही हमरे हियन की गली की तरफ से नही आई गई।"

"अरे आवै चाहे ना आवै, सब ससरा भर्मष्ट कर दिया, बचा क्या? होटल-वोटल, रण्डी मुण्डी, शराब कबाब। शिव-शिव!"

"प्रोहितजी का घर पास आ गया। उनके घर के आगे बुलख्खी हलवाई की दूकान थी। कढ़ाई मे औटता हुआ दूध और थाल में सजे हुए पेडे देखकर खलीफा दूकान की ओर लपके। बोले: "लाओ जी एक अस्सेरा देओ जल्दी से, पाव भर पेडे देओ।"

बुलख्खी दूसरे गाहकों से लेन-देन में उलझ रहा था, खलीफा की तरफ ध्यान न दिया। खलीफा की कागाबासी क्रोध से भडक उठी: "साले, समझता क्या है? (बहन की गाली) अभी आरसमाजी लौंडों को बुलवाय के तेरी दुकान के ये सब थाल-थालियां नाली मे फिकवा दूंगा साले, (मां की गाली) तू अपने को समझता क्या है? मैं यह भी जानता हू कि तू हलवाई भी नही। काकोरी का मुराव शहर मे आयके हलवाई बन गया है साला। खत्री-बाम्हनों के महल्ले में दुकान लगाएगा और हमारी ही बेइज्जती करेगा।" (फिर भद्दी गाली।)

प्रोहितजी अन्दर जा चुके थे। अपनी छोटी-सी बिसातखाने की दूकान पर बैठे बिरादरी के ही एक सज्जन ने बुलस्खी से कहा : "अरे यार, खलीफा को नाराज न करो सबेरे-सबेरे, जो कहते हैं दे दो।"

"अरे कहां तलक इन्हें देवें, लाला ? ये पहले ही कई बार उधार खाय पी गए हैं। बीस आने पैसे चढ़े गए हैं।"

खलीफा ने सुनते ही क्रोध में आकर बुलस्खी की दुकान के आगे लगे हुए कटहरे पर जोर से पैर पटका। घुन लगी लकड़ी बीच से टूट गयी। रूई का कन्टोप और मोटी फतुही पहने बुलस्खी तैश में आ गया। पास ही भट्टी पर चढ़े खौलते हुए दूध के कढ़ाव में छड़ लगी लुटिया बोरकर खलीफा की तरफ गरम दूध फेंका। खलीफा मौक़े पर लपक कर हट गए वर्ना जल जाते। वो गली में पड़ी लखौरी उठाकर उसकी तरफ गालियां देते हुए उसे मारने के लिए लपके ही थे कि पीछे से एक गली चलते ने उनका हाथ पकड़ लिया। प्रोहितजी, जो घर के भीतर चले गए थे, हल्ला-गुल्ला सुनकर बाहर आ गए। बिसाती लाला भी गली मे उतर कर समझावन-बुझावन करने लगे। प्रोहितजी की आज्ञा मे बुलस्खी को दूध-पेड़े खलीफा को देने पड़े, जिसे बिसाती की दूकान पर बैठ कर खाते-पीते हुए कुजू खलीफा ने एक-एक घूट और एक-एक कौर पर बुलस्खी ही नही, वल्कि उसकी सात पीढियों को गालियां सुनायी। ब्राह्मण आदि उच्च कुल के लोगों को यह शिकायत थी कि समाज में निम्न लोगों के द्वारा उनकी अब वह प्रतिष्ठा नही होती जो पहले होती थी।

संयोग से उसी समय रायसाहब बाबू वंसीधर के धूप भरे लान में शास्त्रीजी, महाशयजी और हकीम रामलाल पुरी के साथ चर्चा चल रही थी। रायसाहब शास्त्रीजी से कह रहे थे कि · "देखिए शास्त्रीजी, आपके इस तर्क जाल में फंसने से पहले मैं अंग्रेजो का मन भी टटोलूगा। खुद आपको भी याद होगा. आज से बीस बरस पहले हम लोग अंग्रेज की सूरत देखते ही थर-थर कांप उठते थे। अब भी कांपते हैं। यह लोग हमे गालियां दें, ठोकरें लगाएं, बुरी से बुरी बात कहें लेकिन हममें से किसी हिन्दुस्तानी की मजाल नही थी कि उनकी तरफ नजर उठा कर देख भी सकें। और आज वही हम हिन्दुस्तानी अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाते हैं। अखबारों में खुलेआम ब्रिटिश एडमिनिस्ट्रेशन के खिलाफ सख्त से सख्त बातें लिखते हैं। इससे हमारे अंग्रेज हुक्कामों का एक बहुत बडा तबका अब हमसे नाराज है।"

हकीम रामलालजी अभी लाहौर नही गए थे, वहीं बैठे थे, कहने लगे : "असल में रायसाहब जी, यह लोग तो हमें पढाना ही नही चाहते थे पर मकाले ने कहा कि इन्हें ऐसा हिन्दोस्तानी बना दो जो रंग में काला ही रहे पर दिल-दिमाग से अंग्रेज हो जाए। शास्त्रीजी, होता है वही जो मंजूरे खुदा होता है।"

"आपने ठीक कहा हकीमजी, पर ईश्वर को यह मंजूर नही था। उन्होंने ऋषी दयानन्द महराज को हमारे बीच मे भेज दिया।"

"हां। यही बात मैं भी कहने वाला था महाशयजी। ऋषि की कृपा से ही हमारा यह आर्य अभिमान जागा है।"

"लेकिन दयानन्द तो कभी शासन में नही उलझे ?"

"भले ही न उलझे हों मगर उन्होंने हमें सत्य कहने के लिए आत्मबल अवश्य दिया।"

"राजा राममोहन राय ने भी, केशव बाबू ने भी कुछ ऐसा ही काम किया था। और अब देखिए, इन सनातन धर्मियों में रामकृष्ण परमहंस के चेले कैसी धूम मचा रहे हैं। परमहंस जी से तो मैं जब कलकत्ते में रहता था, तब एक बार मिला भी था। वह उनका शुरू का जमाना था। चंपक मेरे साथ गयी थी। वे सनातनी, मूर्ति के पुजारी थे मगर केशव बाबू और महर्षि देवेन्द्र नाथ टैगोर जैसे महान ब्रह्मसमाजी भी उनकी इज्जत करते थे, उनके पास जाते थे। और अब तो वह साक्षात अवतार की तरह पुजते हैं।"

महाशयजी बोले: "परमहंस जी के सम्बन्ध में तो भाई मैं कुछ जोर देके नहीं कह सकता, वह मेरे लिए बिल्कुल पहेली जैसे व्यक्ति हैं।"

"आपने बिल्कुल मेरे मन की बात कह दी जी, महाशय जी। मैंने तो परमहंस जी को कभी देखा नहीं, पर वह शख्स मूर्ती से मां-मा कह के बातें करता है, हिन्दू, मुसलमान, क्रिस्टान ढंगों से ध्यान योग करता है। कुछ समझ में नहीं आता है जी।"

"समझ में भले न आयें पर वह प्रत्यक्ष है और ढोंगी भी नहीं हैं। तमाम पढ़ी-लिखी सोसायटी वाले अब उनका दम भरने लगे है।"

"अच्छा ही है जी, परमू ऐसे ही किरपाल रहें। हमारा महान आर्य धरम इस समय ऐसा हो गया है कि जैसे कीचड़ से निकाला गया आदमी लगता हो।"

महाशयजी, हकीमजी की इस बात से प्रसन्न होकर कुर्सी से उछल पड़े, बोले: "वाह, वाह, वाह कैसी सटीक उपमा दी है आपने? इसी बात पर मुझे याद आया कि अपने बचपन मे मुझे कसरत-कुश्ती का बड़ा शौक था और अखाड़े के पास ही एक हनुमान जी की मठिया थी। मैं बड़ी भक्ती से उनकी पूजा करता था। एक बार दिवाली के अवसर पर हम कुछ पट्ठों ने उस मठिया की पुताई की और मैं हनुमान जी पर चोला चढ़ाने लगा। वो हनुमान जी क्या थे रायसाहब, बस यों समझ लीजिए कि दीवाल का वह हिस्सा सिन्दूरी था और उसमें कहीं-कहीं कुछ उभार भी नजर आता था। मूर्ती-उर्ती कुछ नहीं थी वहां पर। खैर साहब, हमारी तो भक्ती थी उस समय। कटोरा लेकर चोला चढ़ाने लगे। और लड़कई उमर का जोश कुछ ऐसा था कि हमें लगे कि हम हनुमान जी की मालिश कर रहे हैं, सो घिस्से जरा जोर के भी लग जाते थे। एक जगह हमारे हाथ का दबाव ऐसा पड़ा हकीमजी, कि मूर्ती की बांह के पास का कुछ हिस्सा चिटक गया। हमने डर के मारे उसे छिपाने के लिए सिन्दूर का हल्का लेप चढ़ाना चाहा तो वह टुकड़ा खट्ट से जमीन पर गिर पड़ा। अब हम बड़े घबराए कि हमसे भगवान की मूर्ती टूट गई, बड़ा पाप हुआ। मगर एक हमारा साथी था टिल्लू, उसने कहा, यार, यह पत्थर नहीं इसमे तो चूना और मसाला भी नजर आता है। उसने खुदी हुई जगह पर जरा एक दूसरा हाथ लगाया तो दूसरा पपड़ा टूट पड़ा। अरे हमने सोचा, यह सब बरसहा बरस में चढ़ाए गए चोलों की पर्तें हैं। बस धुन में आई तो पपड़ियां और दर पपड़ियां उतारते चले गए हम और टिल्लू। सात कनस्तर मलबा निकला लेकिन उसके पीछे ऐसी सुन्दर और साबित मूर्ती कि मैं आप से क्या तारीफ करू रायसाहब। उसका ध्यान करके मैं आज भी सोचता हूं कि हमारे ऋषी-मुनियों के पवित्र आर्य धर्म पर ऐसे ही अन्ध धार्मिकता के चोलों का मनों मलबा चढ़ गया है।"

रायसाहब बोले: "वह हनुमान जी की मूर्ती अब भी है?"

"जी हां रायसाहब, चाहेंगे तो आपको किसी दिन दिखला भी दूगा।"

शास्त्री जी की झौआ मूछें दोनों तरफ फैली, बोले: "आपने लड़कपन में हिन्दू धरम की मूर्ती का तो उद्धार कर दिया, अब वेद भगवान की धर्ममूर्ति का उद्धार भी कीजिए।"

"देखिए, सात-पांच की लाकड़ी एक जने का बोझ। हमारे ऋषी जी ने तो कृष्ण की तरह गिरि गोवर्धन उठा लिया, अब हम आप लोगों की लकड़ियों का सहारा भी तो बढ़े—"

"बढ़ तो रहा है शास्त्रीजी, इन पिछले दस-पन्द्रह बरसों में जगह-जगह आर्य-समाजों की स्थापना हुई है। पोगापंथी लोग समाज की उन्नति देखकर बौखला ही नहीं गए बल्कि अब तो पगला भी गए हैं। मगर मैं समझता हूं कि हमारी नयी शिक्षा को सही दिशा देने के लिए यह आर्य, ब्राह्मो और प्रार्थना सभाओं के मूवमेंट बड़ा क्रांतिकारी काम कर रहे हैं। देखिए आपके इस सर्वधर्म महाभोज के ऐलान से शहर में कैसा हड़कम्प मच गया है। हर बिरादरी वाले उस भोज मे शामिल होने वालों को अपनी-अपनी बिरादरी से निकालने के लिए एक जुट हो रहे है।"

"मगर हो नही पायेंगे रायसाहब। दिक्कत ये है कि हर बिरादरी अपने भीतर नये और पुराने समाजों मे बंट चुकी है। यह रूढ़िपंथी लोग, जैसा कि रायसाहब ने कहा, अब क्रोध मे पागल हो गए है। और पागल व्यक्ति किसी काम के लायक नही रहता, यह आप जानते है।"

"अब देखिये, हमारे यहां भी एक नया तमाशा फिर छिड़ रहा है।"

"क्या हुआ रायसाहब?" शास्त्रीजी ने पूछा।

"अरे क्या बतायें शास्त्रीजी महराज, मेरे भतीजे काशी की शादी है और घर की सबसे बड़ी-बूढ़ी यानी हमारी सबसे बड़ी भाभी गुमानी भैए के घर में आज से अनसन पाटी ले के पड़ी है। कहती है कि जब तक उन्हें यह भरोसा नही मिलेगा कि इस घर मे जात बाहर निकाला हुआ आदमी नही आएगा तब तक मैं अन्नजल ग्रहण न करूगी।"

"आपसे किसने कहा?"

"अरे, अभी आप लोगो के आने से करीब एक घण्टा भर पहले ही मेरा भतीजा हर्रो आया था, वह बतला रहा था कि बुढ़िया दहलीज में चटाई डाल के लेटी है। बोलिए क्या करें? मैंने कह दिया उन्हे लेटी रहने दो, अपना काम करते जाओ। जब भूख-प्यास से बिलबिला उठेंगी तो आप ही अपनी जिद छोड़ देंगी।"

मगर ऐसा न हुआ, गुमानी के घर उनकी पत्नी का कलेजा धड़-धड़ करने लगा। आज से ही तो ब्याह के शुभ कार्य आरम्भ हो रहे हैं। भट्ठी पूजा होगी, सात सुहागनें हाथ लगायेंगी, गीत होंगे—मगर ये सब होगा कैसे? घर की बूढ़ी घर की दहलीज में अनसन-पाटी लिए पड़ी है, बाहर वाले तमाशा देख रहे हैं, दबीखुली खिल्लियां भी उड़ रही हैं। शकुन का दिन और यह मनहूसियत। गुमानी बोटी दुःख के मारे बुक्का फाड़ कर रो पड़ी, और अपनी जिठानी को छाती पर दोनों हाथ पीट-पीट कर कोसना शुरू कर दिया। गुमानी घबराए, पत्नी को घसीट कर अलग कोठरी में ले गए, और दरवाजे बन्द करके दबे स्वर में समझाने लगे: "ई तुम क्या कर रही होगी? देखो, हमे पूरा-पूरा भरोसा है कि भाभी भड़काय गयी हैं। ई छगऊ साले की भांजी हैं न, औ वो बुड्ढा साला हम लोगन से जलता हैगा। अब मुल्ली ताऊ का जोश तो ठण्डा हो गया, पर ये काइयां सम्हल-सम्हल के पीछे से घात कर रहा है।"

"तुम कुछ भी करो, हमरा एकै लड़का हैगा, और ई रण्डो चलित्तर दिखाय रही हैं, अरे बंस नास होय इसका, हमसे सदा से जलती है।"

"देखो, तुम बिल्कुल चुप्पै बैठो, मैं तनकुन के यहां जाता हूं, वही कुछ उपाय कर सकता है। बाकी एक काम और भी तुम्हें बताय दें, खोखा की बहू अभी आय नहीं

सकती, अभी उसका सवा महीने का नहान नहीं पड़ा। शकुन्तला हमरी आपै बड़ी समझदार है,. लिखित है कि भट्टी पुजैया और हाथ लगने का कारज हुई जाय तभी लखनऊ आऊंगी और तनकुन चाचा के यहां ठहरूंगी।"

गुमानी बौटी की थुल-थुल काया ने पति को कस कर चिपटा लिया, और आंखों में आंसू भर कर बोली : "तुम तनकुन के हियन जल्दी जाओ। उनसे कहना कि अगर तुम्हारी एक भौजाई विघन डाल के बिना खाए-पिए मरेगी तो दूसरी भाभी भी बिना खाए-पिए अपनी जान देने को तैयार बैठी है। हाय हमरी एकी-एक बिटिया, एकै-एक बैटा। औ ई रण्डो हमरी सगी जिठानी, हमरी खुसियन पे चौका लगाए खातिर आयी हैगी। अरे इसको भवानी खायें, मरे रांड़। रोयें-रोयें मे कीडे पड़ें। इसका सतियानाश होय मरी का।"

गुमानी ने दबे स्वर में डांटा : "क्या पागलपन कर रही हो चुप रहो। मू से न सिरी निकालो न किसुन, क्या समझी ? मैं तनकुन के घर जायके सब सल्लाह्-सूत करता हूं, तुम बस इत्ता काम करो कि हरों की महतारी को दौड़ाय के इनके तड़ वाली सात सुहागनें बुलवा लो। हलवाई अभी आते ही होंगे, तुम काम शुरू करो। हम आगे का रस्ता सोच के आते हैं।"

दिन मे गुमानी नजरबाग पहुंचे। खोखा उसी समय अस्पताल से आए थे। बाप और बेटा खाने की मेज पर बैठ चुके थे, थालियां रखी जा चुकी थी। महराजिन परोसने का सामान लेकर आ रही थी। गुमानी को देखते ही तनकुन बोले : "अरे आओ मैंए, आओ। अभी थोड़ी देर पहले ही हम दोनों तुम्हारे यहा की ही बातें कर रहे थे। अच्छा, पहले ये बताओ मैंए कि रोटी-ओटी जीम के आए हो या अभी नही ?"

गुमानी की आंखें छल-छल भर आयी, भर्राए गले से बोले : "घर मे तुमरी एक भाभी तो अनसन पाटी लिए पड़ी ही हैं, दूसरी भी कह रही है कि हम अन्न-जल नही लेंगे। (गुमानी गम्भीर हो गए) घर में रोवा-राहट मच रही है, कहां की रोटी कहां का चूल्हा। मैं तो तुमसे मिलने आया हूं और लौट के जाऊंगा तो घर नही जाऊंगा। गोमती मे ही डूब के मर जाऊंगा।" कहकर गुमानी मैंए फूट-फूट कर रो पड़े। तनकुन और खोखा दोनों ही विचलित हो गए, भाई ने भाई को चिपका लिया और प्यार से झिड़क कर कहा : "ये क्या मैंए। बड़े बुजुर्ग होके बचपना करने लगे। अरे, कही रोने कलपने से या गोमती में डूबने से ऐसी समस्याएं हल होती हैं। इसे ब्रिटिश डिप्लोमेसी से हल किया जाएगा।"

"लेकिन इस बार प्राब्लम पेचीदा है, पापा। इन दुष्टों ने बडी ताई जी को पटा के मामला बहुत पेचीदा बना दिया है।"

गुमानी खोखा के कन्धे पर हाथ रखकर बोले : "वही तो—यही तो, बेटा हमरी समझ मे नहीं आता हैगा कि मामला कैसे सुलझेगा। उधर हमरी बड़ी भाभी, इधर तुमरी छोटी ताई और फिर सबके ऊपर कासी। किस-किस की समझें ? क्या समझावें ? क्या करें ? हमरी तो समझ ··"

रायसाहब बोले : "बैठो-बैठो, हम तुम्हें समझा देंगे। खोखा अपने ताया जी के लिए थाली परोसवाओ।"

गुमानी अनखनाये, नहीं-नहीं करने लगे। पर रायसाहब जबरदस्ती उन्हे एक कुर्सी पर बैठा कर उनके पास बैठ गए और बोले . "देखो मैंए, जब मुसीबत पडती है तो चतुराई से काम लिया जाता है। यह हम लोगों के पुरखे ही हमे सिखा गए है।"

गुमानी चौंक कर भाई का मुख देखने लगे। रायसाहब ने उनसे कहा : "देखिए

मैये, आपको इतिहास की बात सुनाता हूं। जब महापद्मनंद ने अत्याचार किए तो हमारे सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, अग्निवंशी पुरखों ने चतुराई से अपने मूलवंश छिपा लिए। सूर्यवंशी, मेहरे मिहरे, मेहरोत्रा बन गए, चन्द्रवंशी कपूर और अग्निवंशी अपने को खन्ने, टण्डन कहने लगे।"

खोखा उत्साहित होकर बोला : "हां पापा, लाहौर में रहते हुए मैंने भी 'मिहिर प्रकाश' में पढ़ा था, एक दोहा अब भी याद है।"

"सुनाओ-सुनाओ, क्या दोहा है ?"

"उसमें लिखा है—
मूल लुकावो नाम नूं, पता न पावे कोए,
धरम बीज दे कारण सिर ते लवो संजोए।"

"*शाबास, बेटे, यही मकसद है मेरा। हमें जो करना है वही करेंगे। मगर किस तरीके से करेंगे यह, 'पता न पावे कोय'।* मैए, तुम जाते ही काशी और हर्रो को मेरे पास भेज दो। मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि उन्हें आधे घण्टे में ही अपनी बात समझा के लौटा दूंगा। बाकी काम मेरा, खोखा और तिरलोकी का है। हम निपट लेंगे।"

थालियां परोसी जाने लगी थी। गुमानी फिर संकुचित हुए, बोले : "तुमरी भाभी भूखी बैठी है, भैया।"

"अरे तुम खाओ मैए। घर जा के भाभी को हमरी तरफ से समझा देना। बैठो-बैठो। खुशी का दिन है, इस मनहूसियत से काम नहीं चलेगा। बैठो।"

गुमानी बोले : "हमरा पोता कैसा है ? बहुरिया ठीक-ठाक है न ?"

"तुमने अपने पोते को अभी हमें दिखलाया ही कहां है ? भाभी हुकुम लगा गयी थी कि सवा महीने के नहान के बाद बाहर निकालना।"

"अरे, वह तो घर से बाहर निकलने की बात होती है यार। भाभी तुमरी बौड़म हैंगी।"

"अब कल नहान पड़ेगा, मैंने आज ही उसे ले के चन्द्रिकों जी जाने का सब इंतजाम कर लिया है।"

"तो फिर तुम कल तो चांदकों जी जाओगे और हमरा काम ?"

"उसकी चिन्ता क्यों करते हो, मैए। हमने कह दिया, चुप हो जाओ, कोई प्राब्लम नहीं है। तुम हर्रो, काशी को भेज देना और एक काम ये भी करो कि तिल्लोकी के यहां कह देना कि वह और चुन्नो बहन आज शाम को हमारे साथ ब्यालू करेंगे।"

जाने से पहले रायसाहब ने अपने बड़े भाई से कहा : "जाते ही तुम यह भी एनाउन्स कर दो, बड़ी भाभी से कह दो कि न तनकुन आयेंगे, न खोखा, न उसकी बहू और न शकुन्तला। उनको खाना-आना खिलाओ।"

"मगर शकुन्तला' '"

"अरे यार बड़े मैए, तुम तो साठ के होने से पहले ही सठियाने लगे। मैंने तुमसे जो कहा है सो करो और शान से बैठो। काशी आज से तुम्हारे लिए कोई प्राब्लम नहीं बनेगा। और शकुन्तला यह अच्छा कर रही है कि मेरे यहां आ रही है। कल सबेरे वह कानपुर से आ ही जाएगी, उसे भी चांदकों जी साथ ले जायेंगे।"

शाम को चुन्नो बीबी और तिल्लोकी चोपड़ा आए, उससे पहले काशी और हर्रो भी आकर तनकुन चाचा से अपना-अपना पार्ट समझ गए थे। सब इंतजाम हो गया, रात में चलते समय रायसाहब ने चुन्नो से कहा : "चुन्नो, तुम रुक जाओ, *बहन। बौटी के साथ* भी तो कोई घर की औरत होनी चाहिए। कल सबेरे हमारी शकुन्तला भी आ जाएगी।"

चुन्नो बीबी रुक गयीं। बिरादरी में खबर उड गयी कि गुमानी लाला छंगामल और प्रोहितजी के साथ हैं। बरात मे वही जायेंगे जो इन लोगों के 'तड़' मे है। काशी ने घर जाते ही अनसन पाटी पर पड़ी अपनी ताई के चरण छुए और कहा : "तैया, मैं तुमरी अग्या से बाहर नही हूं। उठो, खाना खा लेओ। नही तो तुम दहलीज में पड़ी हो मैं टीले पर जाके अनसनपाटी ले के बैठ जाऊंगा।"

ताई चौंक गयी, पूछा : "सच्ची कहत होगे ?"

"अरे तो क्या तुमसे झूठ बोलेंगे ? खाना खाओ पहले और अबही तो ब्याह के छह दिन बाकी हैं। हम तुम्हें धोखा दें तो तुम फिर खाना-पीना छोड देना।"

ताई मान गयी, उनका भोजन सम्पन्न हुआ। पहले दिन का काम भी शुरू हो गया। ताई का नाम लेकर ही पास पडोस की कुछ औरतें बुला ली गयी। ढोलक बजी, गीत हुए, घर की रंगत फिर से लौटी। अपनी इस विजय को देखकर प्रोहितजी और छंगामल का पक्ष बहुत ही सन्तुष्ट था। बिरादरी भर मे हवा फैली कि गुमानी ने तनकुन का साथ छोड़ दिया है।

ब्याह के एक दिन पहले तनी कढ़ाई हुई, पाधाजी ने आके तनी बाधी, हवन होम हुआ, तनी के नीचे कढ़ाई चढ़ी, उसपे पकौड़िया छांटी गयी। घर मे ब्याह की चहल-पहल मचने लगी। यह सब देखकर गुमानी बौटी सन्तुष्ट तो थी, पर भीतर-ही-भीतर सहमी हुई भी थी, कि कही कुछ उत्पात न हो जाय।

बरात शहर ही में जा रही थी। गुमानी मैए के समधी लाला गंगानारायन सआदत गंज के धनाढ्य व्यापारी थे। जनवासे का प्रबन्ध किया गया था। हर्रो और उसके दोनों छोटे चाचा गनेसो और महेसो ने बरात में चलने के लिए अपने गरीब रिश्ते-दारो को पहले घेरा। फिर कुछ बड़े बुजुर्ग भी साथ लिए। वह लोग और उनका सामान पहले ही रवाना कर दिया गया। फिर घर से ब्याहने वाले लड़के की निकासी हुई। बड़ी भाभी की बडी पुत्रवधू ने दूल्हा बनने वाले देवर की आंखों में काजल डाला। लड-झगड़कर अपना नेग लिया। घोड़ी बन्ने शुरू हुए। लड़का घोड़ी पर बैठा ही था कि अकस्मात टीले की तरफ से शकुन्तला दौड़ी हुई आयी और घोड़ी की लगाम पकड ली। देखने वाले देखते ही रह गए। विरोधियों में खलबली मची, किन्तु गुमानी, उनकी पत्नी और खोखा की आंखें आनन्द से छलछला उठी। शकुन्तला ने अपना नेग लिया और फिर लौट गयी। लोगों ने देखा कि तिरलोकी बाबू के चार लठ्ठ बन्द नौकर शकुन्तला के साथ आए थे।

बरात तो सआदत गंज चली गयी। रात को लड़के वालों के यहा औरतें 'पड़वा' करती हैं, सो उसकी पंचायत पड़ी, लेकिन रायसाहब ने ऐसी सटीक योजना गढ़ी थी कि कोई काम रुक न पाया। त्रिलोकी चोपड़ा ने मुल्ली लाला के पोते रज्जू बाबू को इस बात के लिए पहले ही पटा लिया था कि 'पडवा' की रात इनके पक्ष की 'तड़' वाली औरतें गुमानी के घर जायेंगी। जिन गरीब रिश्तेदारों को बरात मे सादर सविनय ढकेला जा चुका था, उनके यहां यह कहलाया गया कि जो औरतें 'पड़वा' मे जायगी उन्हें सवेरे चलती बिरियां चुप्पे-चाप दुइ-दुइ रुपए भो दिए जायेंगे। इस प्रकार दोनों घडो की औरतों की अप्रत्याशित भीड़ होने की बात सुनकर लाला छगामल के मन की चिलम हुक्के की चिलम से पहले ही ठण्डी हो गयी। बेबस होकर इधर-से-उधर करवटें बदलने लगे। उनके बड़े पुत्र गौरो बाबू पुराने विचारो के होते हुए भी अब न अपने पक्ष में बोलते हैं न नयों के पक्ष मे। उनके दो लडके अंग्रेजी पढ़-लिखकर सरकारी नौकरियों में लगे हैं। बड़े का बेटा अपनी बहू को पढ़ाने के लिए घर में एक काली मेम को हफ्ते मे दो बार बुलाता है, बहू उससे अंग्रेजी पढ़ती है। अब छोटी बहू ने भी पढ़ना शुरू किया है। घर मे म्लेच्छ औरत

का आना अच्छा न लगते हुए भी स्वीकार करना पड़ता है। गौरो की पत्नी भी अपने बेटों की राजी मे ही राजी रहती हैं। छंगामल के छोटे पुत्र राजा और उनकी बहू घर में अपना हिस्सा अलग करके रहते हैं और पति-पत्नी नित्य आर्यसमाजी पद्धति का हवन करके बूढ़े की नाक मे आए दिन बत्ती सुलगाते रहते है।

सब तरह से सुखी और सम्पन्न रहने वाले छंगामल के मन में यह बहुत ही बड़ा दुख है पर क्या करे। लेटे-लेटे ठण्डी सांस लेके हुक्के में मुंह लगाया, पर वह तो पहले ही बुझ चुका था। खीझकर इन्हें अपने पवित्र हिन्दू धर्म के पतन का ध्यान आया। उन्हें ऐसा लगा कि उनके कलेजे मे नोकदार सूजे से चुभो-चुभो कर पीड़ा दे रहा है। धर्म जा रहा है, घर वाले ही घर के बड़ों-बूढ़ो की बात नही सुनते तो बाहर कौन सुनेगा? "हे प्रभु नाथ, तुम्हारा धरम रसातल मे जा रहा है। ये क्या हो रहा है भगवान!"

भीतर की करुणा ने बाहर की कड़क दी, जोर से आवाज देकर कहा: "भगेलुए, चिलम बदल जा साले (मां की गाली)"

उधर जनवासे मे जब बराती पहुंचे तो देखा क्या कि रायसाहब बाबू बसीधर, डा० देशदीपक, बाबू त्रिलोकीनाथ चोपड़ा, लाला राजबिहारी, लाला कुंजबिहारी ही नही, महीनों से चौक की गलियो में किसी को न दिखलाई पड़ने वाला लाला मुल्लीमल भी वहां मौजूद थे। प्रोहितजी यह देखकर ताव खा गए। प्रोहितजी ने पाधाजी से कहा: "ये तो ससरो ने अग्रेजी चाल की मात दे दी, हमको धोखा दिया है साली ने। हम तो यहां नही रुकेंगे भाई।"

पाधाजी तेज स्वर मे बोले: "तो सबके सामने साफ-साफ क्यों नही कह देते, कोई चोरी है? सुनिए साहबान, हम और प्रोहितजी तो यहां अब ठहरेंगे नही। हमें अपने धर्म की रच्छा करनी है। आपमे से जो-जो लोग ठहरना चाहें सो ठहरें और हमारे साथ जो चलना चाहें वो चलें।"

सयोग से लाला गंगानारायन उस समय जनवासे मे ही थे, दोनो ब्राह्मणों के आगे हाथ जोड़कर खड़े हो गए, बोले: "महराज अपना ब्रह्मतेज शान्त रखें। हमने कोई पाप नही किया है। सब बिरादरी वाले ही हैं। और अब जबकि सब लोग हिन्दू धरम की एकता का नारा लगा रहे हैं तो हम अपने खत्री भाइयो को क्यो छोड़ देंगे?"

"ठीक है आप धर्म छोड़ दीजिए और हमे अपने घर छुड़वा दीजिए। हमें अपना धर्म नही छोड़ना है।"

"जैसी महराज की इच्छा। बहरहाल मेरे प्रोहित और पाधा दोनों मौजूद हैं सब काम धरमपूर्वक ही होगा, आप निश्चिन्त रहें।"

प्रोहितजी की लाल आंखें देखकर दो-एक बडे बूढ़े उनके साथ लौट चलने को राजी हो गए, बाकी कोई न गया। यह हवा फैलाई जा चुकी थी कि 'जंड' में पांच-पांच बर्तन मिलेंगे। फिर आती लक्ष्मी को छोड़कर भला कौन जाता!

उसी समय लड़की वालों के घर से 'अलूफा' आया। अलूफा भारी था। थाल के थाल गहने, साड़ियों, मिठाइयों और फलों से भरे पड़े थे। लड़की वालों के रिश्तेदारों ने अपने यहां लड़की को दान दहेज मे जो राशि दी थी, वह भी रखी थी। सुहाग पिटारा ले जाने का समय आया, तब फिर कही पडोस के घर मे छिपायी हुई शकुन्तला सामने आ गयी और वही अपनी होने वाली भाभी को पहनाने के लिए भी गयी। लाला गंगानारायन पर तिल्लोकी बाबू का जोर था इसलिए सब बातें पहले ही तय हो गयी थी, विवाह के बाकी सब कर्म राजी-खुशी सम्पन्न हुए।

28

काले पाख फागुन की चौदस का दिन। गोमती नदी के कुरिया घाट पर सवेरे चार बजे से ही नहाने वालों की चहल-पहल होने लगती है। तारों की छैया में डुबकी लगाने का नियम इक्का-दुक्का बुढ़िया और दस-पांच बूढ़े या अधेड़ उम्रों के लोग और कुछ साधु बैरागी तो नित्य साधते हैं किन्तु आज शिवभक्तों और बूढ़ी भक्तिनों की भीड़ नित्य की अपेक्षा कुछ अधिक है। संपन्न बनिए, खत्री, सारस्वत घरों की औरतें अपने-अपने लठैतों का सम्मिलित दल बना कर डोलियों में टोलियां बना कर आती हैं। शिवरात्रि के दिन तारों की छैयां में गंगा गोमती नहाने से मोक्ष मिलता है इसलिए दो दिनों के तप से जन्म-जन्मान्तर की सिद्धि पाने के इच्छुक भक्त-भक्तिनें आज के दिन इसी समय आती हैं। सूरज उगे तक नहाने आने वालियों के नौकर जब पानी में कनातें ले-लेकर खड़े हो जाते है और तब वह नहाती हैं। पैसा खर्च करके पर्दे का प्रबन्ध न कर पाने के कारण खुले आम ही नदी में घुटनों पानी बैठकर लुटियों पर लुटिया अपने कंधों पर उड़ेलती हुई "गंगा बड़ी गुदावरी कि तीरथ बड़े परयाग और सबसे बड़ी अजुध्याजी कि मल-मल करें नहान" कर लेती हैं।

कातिक वाले पिछले नहान पर्व के दिन गोमती में एक बड़ी दुर्घटना हो गयी थी। कनातों को घेरकर कमर तक पानी में खड़े हुए एक सेठानी का नौकर पानी में ही घसीट लिया गया और कनात गिरा कर सोने, जवाहरात से लदी अधेड़ सेठानी नहाते-नहाते ही नदी में खींच ली गयी थी। उस प्रौढ़ा की लाश दूसरे दिन बहुत आगे जाकर ही एक तट के आगे क्षत-विक्षत पड़ी पायी गयी। नहानों पर गहनों और औरतों की लूट के लिए ऐसे तमाशे अक्सर हो जाते थे, इसलिए इस बार महाशयजी का आर्यसमाजी युवा दल पहले ही से सतर्क था। डा० देशदीपक ने भी आज अस्पताल से छुट्टी ले रखी थी और वे स्वयं ही स्वयंसेवक दल का नेतृत्व कर रहे थे। एक प्राथमिक चिकित्सा कैंप भी खोल रखा था।

"जनता की यह सतर्कता गुंडों का दुसाहस भी बढ़ा सकती है, महाशय जी।"

संगठन कुशल और अनुभवी महाशयजी ने इस बार चंदा करके नदी तट पर लंबी-लंबी कनातें लगवाई थी—मर्दाने घाट की तरफ और घुटनों भर पानी में भी। एक-एक अधेली और सेर-सेर भर दूध देकर उन्होंने पचास कुशल पैराक और मुस्टंड पहलवान स्वयंसेवक भी इकट्ठे कर लिए थे। पानी के पहरेदार केवल लंगोट पहने खड़े थे, बाकी मर्दाने की तरफ वाली कनात के आगे खाकी हाफ पैन्ट और कमीज पहने, पीले साफे बांधे स्कूलों में पढ़ने वाले नवयुवक स्वयसेवकों ने पंक्तिबद्ध खड़े होकर एक मानवी दीवार बना रखी थी। नगर में पहली बार लोगों को ऐसी भव्य स्वयंसेवकी छटा देखने को मिली थी। शिवरात्रि के दिन महर्षि दयानन्द को यह बोध हुआ कि मूर्ति ईश्वर नहीं बेजान पत्थर है। तब ईश्वर कहां है? इसी जिज्ञासा ने उन्हें सत्यान्वेषी बनाया था। इसीलिए शिवरात्रि को वह 'महर्षि दिवस' के रूप में मनाने और वैदिक आर्य धर्म का प्रचार करने के लिए महाशय जी ने एक सुचिंतित योजना बनायी। पानी के पहरेदारों को पुलिस जैसी सीटियां भी दी गयी थी कि आशंका होते ही बजा दें। देशदीपक ने दो बार सीटियों का अभ्यास भी करा दिया। इस बार महाशयजी और उनके स्वयंसेवक लखनऊ में अपनी आर्य पताका को

शेषनाग के फनों पर ही गाड़ कर ऊंचे आकाश में फहराने के लिए कटिबद्ध थे। महाशय जी का विचारचक्र अपनी तेजी में आप ही सनसना रहा था कि एकाएक डा० देशदीपक की बात से ऐसे चौंके जैसे कोई दुर्घटना की खबर सुन ली हो। चौंककर खोखा बाबू से पूछा : "क्या हुआ?"

"अभी हुआ तो कुछ भी नही, मगर हो सकता है।"

"कैसे?"

"यह जो बिना कनातवाली जनानी भीड़ है।…"

बात पूरी होने से पहले ही महाशयजी सिर झटक कर बोले : "भई, उधर हम कुछ भी नही कर सकते। हमारे पास काम करने वाली औरतें ही नही हैं और वहां गरीब-गुरबो की भीड़, हाथ-हाथ भर की लड़ने वाली जबानें, उनसे कौन बहस करे?"

"इसके मतलब अमीर औरतें ही आर्य ललनाएं हैं, गरीब नही?"

"नही-नही, तुम समझते क्यों नही खोखा बाबू, वहां हम कुछ नही कर सकते।"

"हमे करना ही होगा महाशयजी। हमारी सतर्कता का तकाजा है कि यह पूरी और मुकम्मिल होनी चाहिए।"

पैराकों की टोली मे किसी हद तक कुशल दो गोताखोर भी थे। वे उस क्षेत्र की रखवाली के लिए राधाकिशन घाट से लेकर लछमन टीले के किनारे तक की रखवाली करने के लिए तैनात किए गए थे।

यह सब प्रबन्ध हुआ, किन्तु दुर्घटना वहा हुई जहा सतर्क होने की आवश्यकता न तो महाशयजी के ध्यान मे आई थी और न डा० देशदीपक के। मर्दानी भीड़ में नहाता हुआ एक अधेड़ वय का मनुष्य अपनी बाहों से पेट-पीठ, सिर आदि मलता हुआ 'ओम नमस्सुवाए, ओम नमस्सुवाए' जप रहा था कि अकस्मात् 'बचाओ' चिल्लाया और उसका पानी के ऊपर दिखलाई देता धड़ भी एकाएक पानी मे खो गया। मर्दाने घाट पर शोर मच गया, कई पैराक और गोताखोर छपाछप पानी में कूद पड़े। स्वयंसेवकों की सीटियां गूज उठी, चारों ओर भगदड़ और शोर-शराबा मचने लगा। यह संयोग ही था कि बूढ़े को पानी के भीतर घसीटने वाला व्यक्ति उसे नदी के बहाव के विरुद्ध ऊपर घसीट रहा था। एक स्वयसेवक, गोताखोर ने 'कोठी कला' के खण्डहरों की ओर बूढ़े को लेकर बढ़ते हुए दुष्ट की टांग पकड़ ली। वह छटपटाया, अपने आपको छुड़ाने का प्रयत्न भी किया, लेकिन पानी के भीतर उसका वश न चला। नदी के तल पर बहती हुई रक्त की हल्की-हल्की छाया भी ऊपर आ चुकी थी। दुष्ट वृद्ध को छोड़कर अपने आपको बचाने के लिए प्रयत्नशील हुआ, परन्तु तब तक कई पैराक आ चुके थे। दुष्ट के शिकंजे से छूटा हुआ बुड्ढा भी बाहर निकाला गया और वह स्वय भी गिरफ्त मे आ गया। बुड्ढे के कूल्हे में चाकू का घाव लगा था और वह बेहोश था, लेकिन अपनी बांहें पकड़ने वाले एक पैराक व्यक्ति की कलाई में गुंडे की छुरी ने अवश्य हल्का घाव किया था। दुष्ट अपराधी और दोनों ही घायल व्यक्ति किनारे पर ले आए गए। बूढ़े के कूल्हे पर लगा घाव अधिक गहरा था, परन्तु प्राथमिक चिकित्सा हुई। डा० देशदीपक ने बड़ी तत्परता दिखलाई। कलाई के घाव वाला घायल पैराक अधिक घायल नही हुआ था, किन्तु उस वृद्ध को प्राथमिक चिकित्सा के बाद तुरंत पालकी पर लिटाकर बलरामपुर अस्पताल भेज दिया गया। बूढ़े को घसीटने वाला दुष्ट व्यक्ति और कोई नही स्वयं उसका पड़ोसी और सजातीय युवक ही था। बूढ़े की एकमात्र पुत्री का पति रोजगार की खोज मे बम्बई गया था और एक मिल में नौकर भी हो गया। इस पडोसी सजातीय खट्टर पहलवान से उस प्रणयातुरा युवती का अवैध सम्बन्ध स्थापित हो गया था। पिता ने कई बार पुत्री को डांटा-डपटा था

और खट्टर के अपने घर आने पर भी कड़ी निगाह रखी थी। प्रेमी-प्रेमिका ने अपने मधुर मिलन की इस कड़वी बाधा को शिवरात्रि के दिन ही दूर करने की योजना बनायी और उसमें वे अपने दुर्भाग्यवश यों फंस गए। जिस राधे की कलाई को खट्टर के छुरे ने घायल किया था उसके भाई परागी ने क्रोध में आकर खट्टर की उस कलाई को ही तोड़ डाला। मामला पुलिस में गया। बूढ़ा धीरे-धीरे ठीक तो हो गया किन्तु पहले से भी अधिक अशक्त हो गया था।

आर्यवीरों और डाक्टर टण्डन की शहर भर में धूम मच गयी। उस वृद्ध मरीज को स्वस्थ करके डोली पर घर लाने के बहाने डा० देशदीपक टण्डन को नगर के ऐसे भाग में जाने का अवसर मिला, जो उन्होंने कभी देखा ही नहीं था। बस्ती उन दरिद्रनारायणों की थी, जिनकी अर्धांगिनियां लक्ष्मी नहीं होतीं। कुछ देहाती सड़कों पर खोंचा लगाके बैठते हैं, कुछ कंदला तार-कशी आदि की मजूरी करते हैं या इसी तरह के छोटे-छोटे कामों से अपने घरों में दो वक्त या एक वक्त का चूल्हा जलाने के लिए अपनी जीविका का प्रबन्ध कर लेते हैं। बस्ती भर में छोटे-मोटे घर। एक पुरानी नवाबी छतविहीन बारहदरी के कुछ हिस्से में मिट्टी की दीवार बनाकर एक परिवार रहता था। एक वृद्ध माता-पिता (जो माता-पिता होने के कारण अपेक्षाकृत वृद्ध तो थे लेकिन उनकी प्रजनन ऊर्जा अभी समाप्त नहीं हुई थी) उनके तीन बेटे जो विवाहित हो चुके थे वे भी अपनी बाला नव-युवती पत्नियों के साथ उसी कोठरी मे रहते थे। शेष पांच बच्चे भी, जिनमें से अभी एक कनिया में खेलने लायक ही था, उसी कोठरी में रहते थे। जिस वृद्ध के घर यह दुर्घटना हुई थी उसके घर का दरवाजा दो-तीन साल पहले होली में फूक दिया गया था, अब द्वार-विहीन ही था। आड़ के लिए केवल टाट का एक पर्दा पड़ा था। एक मुंशी जी किसी लीथो प्रेस के कातिब थे और भरे जाड़े में भी मलमल के दो अंगरखे पहनकर ही अपने दिन बिताते थे। महल्ले में पता लगा कि खट्टर ने उनकी दो कुंआरी लड़कियों की जिन्दगी खराब कर दी है। *खट्टर अपनी गुण्डई के बल पर उस बस्ती का नानाशाह बन बैठा था।* बेकार लडकों की टोली उसके इशारे पर नाचती थी।

डा० देशदीपक ने वृद्ध की उस लडकी को भी देखा जिसके कारण यह घटना हुई थी। लल्ली नाक-नक्शे की बुरी न थी। खोखा उसे देखकर सोचने लगा कि इस बेचारी का क्या दोष, इसका पति दो-तीन वर्षों से घर नही आया। उसने तो शायद बम्बई में अपनी काम पिपासा बुझाने के लिए वहां कोई स्थायी या अस्थायी प्रबन्ध भी कर लिया हो और इधर जिस महल्ले में खट्टर जैसे दुश्चरित्र युवक रहते हों, जहां के वातावरण में स्त्री-पुरुषों के अवैध नातों की कमी न हो और जहां अधभूखे संत्रस्त लोग अपने भीतर की अनबूझी पीड़ावश दूसरों को सदा पीडा पहुंचाने की ताक मे ही लगे रहते हों, वहां इस युवती को ही अकेले दोषी क्यों कर माना जा सकता है।

खोखा बहुत भारी मन लेकर अपने घर लौटा। चिराग जल चुके थे। रायसाहब अपने दीवानखाने में आरामकुर्सी पर लेटे हुए कोने में गोल टेबिल पर रखे लैम्प की रोशनी में कोई पुस्तक पढ़ रहे थे।

बेटे को देखा, पूछा : "आज तुम्हें आने में देर हुई खोखा ? कोई मीटिंग-वीटिंग थी ?"

"नही पापाजी, जिस बुड्ढे को शिवरात्रि के दिन पानी मे छुरा लगा था न, वह आज हास्पिटल से डिसचार्ज कर दिया गया। मैंने सोचा कि खुद ही उसे पहुचा आऊं, इसलिए उधर चला गया था। मैंने आज अपने शहर का नरक देखा है, पापा।···ओह, मेरी आंखों के सामने से किलबिलाते हुए उन इन्साननुमा कीड़ों की तस्वीरें अभी भी

ओझल नहीं हो पा रही हैं।"

"हां, सन साठ-इकसठ के जमाने में जब अपने स्कूल में विद्यार्थी जुटाने के लिए मुझे आसपास के गांवो में जाने के मौके मिले थे तो मैंने भी ऐसे कई दर्दनाक और शर्मनाक नजारे देखे थे। लेकिन समझ मे नही आता कि इस गरीबी और जहालत को कैसे मिटाया जा सकता है?"

"आपने सन साठ-इकसठ में विद्यार्थियों को जुटाने की कोशिश की थी, लेकिन आज सन छियासी मे इतने मिडिल पास विद्यार्थी हो चुके हैं कि इण्ट्रेंस और एफ० ए०, बी० ए० करने वालों के आगे उनकी कदर घटती चली जा रही है।"

एकाएक रायसाहब हंस पड़े, खोखा अपने पिता के मुख की ओर देखने लगा। रायसाहब कहने लगे : "अभी लास्ट इयर जब हम लोग काशी की शादी में सआदतगंज गए थे न, तभी औरतों के गीतों में मैंने एक लाइन सुनी थी जो तुम्हारी बात पर अचानक याद आ गयी—'सैंयां हमारे मिडिल पास अंग्रेजी बिगुल बजाते हैं।"

"अभी पन्द्रह बरस पहले तक मिडिल पास लड़कों की बड़ी धूम थी। हः; हः! क्या जमाना आ गया! कितनी तेजी से बदल रहा है हमारा समाज!"

"हां, जितनी तेजी से अंग्रेजी एजूकेशन फैल रही है, हमारी सोसायटी में परिवर्तन आ रहे हैं, उतनी ही तेजी से बेरोजगारी और महंगाई की बाढ़ भी आ रही है पापाजी। हमारे समाज मे अगर संस्कारों और शिक्षा में सुधार न किए गए तो ये बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी हमें खतम ही कर डालेगी।"

पिता-पुत्र दोनो ही मौन रहे, फिर कुर्सी का टेका छोड़ कर सीधे बैठते हुए सिर झटककर खोखा ने कहा : "हमें इन गरीब बस्तियों में काम करने की कोई स्कीम अवश्य बनानी चाहिए। पेट बहुत से पापों का मूल होता है पापा। वी मस्ट डू समथिंग टू सेटिसफाई द हंगरी गिगुल। और इसके अलावा हमे उन्हें शिक्षित भी करना है। आप अगर आज्ञा दें तो मैं कौशल्या से वहां लड़कियों का एक स्कूल खोलने के लिए कहूं।"

रायसाहब हड़बडा उठे, बोले : "नई-नई, अभी मेरा गुड्डू बहुत छोटा है। मां के बिना नहीं रह सकता।"

"लेकिन पापा···"

"तुम्हारी मां होती बेटे···"

"नहीं-नही पापाजी, आपने मुझे आगे बढने की इतनी शिक्षा दी है तो अब पीछे कदम हटाना मत सिखलाइए। आखिर किसी-न-किसी को तो आगे बढना होगा।"

पल भर चुप रहने के बाद एक गहरी सांस लेते हुए आरामकुर्सी पर बैठते हुए रायसाहब बोले : "मैं तुम्हारी बात को काट तो नहीं सकता, क्योंकि वह खुद मेरे ही जी की बात है। लेकिन खोखा, मैं समझता हूं कि इस 'इमोशन' के सोते को जब तक 'रीजन' की धारा से जोड़ा नही जायगा, तब तक हमारा यह 'इमोशनल' मकसद, जिसे तुम उद्देश्य कहते हो, कभी सही ढग से पूरा नहीं हो सकेगा।"

क्षण-भर सोचने के बाद देशदीपक बोला : "जहां तक मैं समझता हूं पापा, कि आप किसी 'वर्किंग आर्गनाइजेशन' के गठन की जरूरत समझते हैं।"

"हां।"

"मगर वह तो है पापा। हमारा यह आर्यसमाज इन्ही लाइन्स पर ही तो···"

"इसी तरह इण्डियन नेशनल कांग्रेस भी है। यह सच है कि वहां हिन्दुस्तान के काफी हिस्सों की सूरतें देखने और उनके मजाक व मिजाज से वाकिफ होने का मौका पाकर मुझे बेहद खुशी हुई थी, मगर एक सवाल यह भी उठता है कि क्या इण्डियन

नेशनल कांग्रेस में वाकई पूरी इण्डियन नेशन थी ? मुसलमान तो खुल्लमखुल्ला ही उससे अलग रहे। मगर क्या हमारी हिन्दू-नेशन भी उनके साथ थी ? हां, मुट्ठी-भर पढ़े-लिखे मेरे जैसे सुधारवादी लोग वहां जरूर इकट्ठा हो गए थे। और वह साल में एक बार बराबर मिलते रहेंगे, सालाना जलसे की कढ़ाई में अपने सुधारवादी विचारों की पकौड़िया तलते रहेंगे और रेजोल्यूशनों की रकाबी में ब्रिटिश गवर्नमेंट से गिड़गिडाकर कहते रहेंगे कि लीजिए हुजूर, नोश फरमाइए और बख्शिश में हमे कुछ कानूनी रियायतों की सहूलियतें दे दीजिए। इस तरह के हवाई खयालो से अब मैं ऊब भी चुका हू और थक भी चुका हूं।"

पिता की बातें सुनकर देशदीपक का कलेजा दर्द से उमड़-घुमड कर रह गया। पल भर यह निर्णय करने में लगा कि उत्तर दू या न दू, पर जी का उबाल रुक न पाया, बोल ही पड़ा, "कभी इसान की सभ्यता के पहले दौर में घुप्प अंधेरा भी रहा होगा पापा, उस अंधेरे से लड़ने के लिए दिया ईजाद हुआ, मशालें आयी, इसान ने और भी तरीकों से अपने आसपास रोशनी बढ़ाने की कोशिश की। अब ये आपकी नई किरोसिन की रोशनी कितनी तेज होती है। हमारी कोशिशें नही बढ़ेंगी तो रोशनी कैसे बढेगी पापा ? और इस रोशनी को अधिक से अधिक बढ़ाने के लिए हमें कुछ न कुछ त्याग भी करना ही पड़ेगा।"

"करो भाई, बढ़ते जमाने को रोकने का पाप मैं हर्गिज नही करूगा। अपने जमाने मे इन बुराइयों से मैं लड़ लिया। जीता भी, हारा भी। लडना मैं अब भी चाहता हू मगर फिर यह ख्याल आता है कि इस लडाई में कितना कुछ खोया है मैंने। तुम्हारी मा बेचारी कितनी तमन्नायें लेकर इस दुनिया से चली गयी। मुझे इस बात का मलाल आखिरी सांस तक रहेगा। बिरादरी से अलग हो गये, ईश्वर ने एक बेटा और एक बेटी दिया, समाज से लड़कर मैं न अपनी बेटी को मनचाहा सुख दे सका और न अपने बेटे और बहू को।"

"नो-नो, पापा आप ओवरइमोशनल हो रहे हैं। हम सब आपके आशीर्वाद से बहुत सुखी हैं। तमाम विरोध करके भी दकियानूस समाज हमारा क्या कर पाया ? कुछ भी नहीं। आपने और मां ने अगर जमाने को बदलने के लिए लडाई मोल ली तो उसका असर कुछ न कुछ तो हमारे समाज के ऊपर पडा ही है। आपके जमाने में नये पढे लिखे लडके ही कितने थे। और आज देखिये, इतने लडके पढ चुके हैं कि उनके लिए बेरोज-गारी की प्राब्लम आने लगी है। यह नया आलोक आप और मां जैसी आत्माओं के त्याग और कर्म से ही आ सका। अगर हिन्दुस्तान भर मे आप और मां जैसे सोचने वाले लोग न पैदा हो जाते तो क्या महर्षि दयानन्द, महात्मा मुंशीराम, हंसराज जैसे लोग अकेले समाज को आगे बढ़ा सकते थे ?"

आरामकुर्सी से उठते हुए खोखा की पीठ पर हाथ रखकर रायसाहब बोले : "अच्छा-अच्छा भाई, मेरी जान मत खाओ। चलो, खाना लगवाओ।"

दरवाजे के पीछे खडी कौशल्या यह सुनते ही आगे आयी। बोली : "थालियां लगी हैं पापाजी, आइये।"

आरामकुर्सी से उठते हुए खोखा की पीठ पर हाथ रखकर रायसाहब बोले : "मैं कुछ मना थोड़ी करता हूं बेटा। पर उम्र के बढने के साथ-साथ मेरा मोह और ममता भी बढ़ती जा रही है। अब कोई दुख देखना नही चाहता। तुम लोग खुश रहो, मेरी प्रभा को भी एक रास्ता मिल जाये······"

"सब अच्छा ही होगा पापाजी, आप बिल्कुल निश्चिन्त रहें। बट वी मस्ट गो एहेड विद अवर पायस मिशन।"

अपने बेटे की यह लगन पिता को मन ही मन जहां संतोष दे रही थी वहां रायसाहब एक प्रकार की थकन भरी झुंझलाहट भी महसूस कर रहे थे। भोजन करते समय भी वे प्रायः चुप ही रहे। बस एक बार पूछा : "गुड्डू सो रहा है न ?"

"जी हां।"

चि० गुड्डू उर्फ जयत की बात का ध्यान आते ही रायसाहब बंसीधर टण्डन फिर अपनी पत्नी की स्मृति में खो गये। खाने के बाद हुक्का गुड़गुड़ाते हुए जीवन के बीते हुए दृश्य भी धुओं के लच्छों से उनकी स्मृति-चक्षुओं के आगे से धुयें के बादलो से ही उड़ते रहे।

जीवन के पचास वर्ष बीत गये। यह इक्यावनवां चल रहा है। जिन्दगी कहां से कहा आ गयी है। जब होश सम्हाला तब अमजद अली शाह का जमाना था। वे थे तो *पक्के शिया, शराब तक मुह से नही लगाते थे, मगर औरतबाजी की खानदानी लत के* कारण वे चरित्रहीन थे। यह विलासिता उस समय महामारी की तरह शाहों से लेकर गदाइयो तक मे व्याप्त रही है। हाट-बाट-घाटों में, मकतबो-पाठशालाओ में, गली-महल्लों मे कामोजन युवती स्त्रियों और किशोर बालकों के पीछे यों मंडराया करते थे ज्यों कातिक में कुत्तेकुतियों को घेरते हैं। अपने समय के इस महारोग की छूत से बचने वाले लड़कों और स्त्रियों को लोहे के चने चबाने पड़ते थे। बड़े कठिन काल में बंसीधर ने अपने अन्तर्हृठ को इन अग्नियों से पावन बनाया था। वह अनुभव याद आने से कलेजा इस समय भी एकाएक थरथरा उठा। अमजद अली शाह ने किसी कुंजड़िन पर रीझ कर उसे मालामाल कर दिया था। बड़ा शोर मचा था उन दिनो। वाजिदअली शाह के परी खाने और विलासिता के बड़े-बड़े किस्से उन दिनों गलियों, टोलो के चबूतरों की चौपालों पर उड़ा करते थे। मुहर्रम के दिनों मे कर्बलाओं पर, होली के बाद आठों के मेले के दिनों में टिकैतराय के तालाब पर और माल के बाकी दिनों में इधर-उधर पीरों की मजारों पर अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के बहाने निकलकर महलों की कामपीड़िता बेगमे अपने पालकी कहारों की साठ-गांठ से अपने-अपने यारों के यहां ऐश मनाने जाया करती थीं। तवायफें नये गाहकों को फंसाने के लिए नजरें लड़ाने जाती थी। रईस औरतें, विधवाएं और विधुर अपने ही कुनबे रिश्तेदारियों में एक-दूसरे को फंसा लेते थे। चचा-भतीजी, जेठ-भयेहू, ससुर-बहू और न मिलने पर मुनीम, गुमाश्ते, कहार कहारिनों की यारी के किस्से हर दिन के आठ पहरो में मौखिक या सक्रिय रूप से चला करते थे।

पुराने पड़ोसी स्व० वाजपेयी जी ने बड़ी तेजी से रायसाहब के स्मृति-मन्दिर में प्रवेश किया। उनके द्वारा सुबह सुकण्ठ से गाये जाने वाले संस्कृत के श्लोकों ने बालक तनकुन की स्मृति को पहले आकर्षित किया था। सामने महाजनी पाठशाला के बच्चो के द्वारा जोर-जोर से सुनाये जाने वाले गिनती-पहाड़े लगभग तीन वर्ष की आयु में ही तनकुन को सुन-सुनकर याद हो गये थे। उनकी तीव्र स्मरण शक्ति और सहज उमंगती हुई प्रतिभा ने ही उन्हें विद्या के क्षेत्र में आगे बढ़ा दिया, वर्ना बजाज के वंश में पैदा होकर वह भला 'ओनामासीधम' को 'ॐ नमः सिद्धम्' बना सकता था। बाजपेयी जी ने बंसी के पिता को कितना समझाया था कि वह उसे गंगाधर की शास्त्रीय पाठशाला में या सारस्वत कुलभूषण पंडित देवीदत्त जी के चरणों में बिठलाकर संस्कृत पढ़ायें। मगर किस्मत मे लिखी थी फारसी और मुंशी हिम्मत बहादुर। मुंशीजी विधुर थे और उनका श्रृंगार रस निचले वर्ग की हिन्दू-मुसलमान प्रौढ़ा नायिकाओं को देखकर ही उमंगता था। मुंशी की एक कमजोरी यह भी थी कि जो शिष्य उनकी तात्कालिक प्रेमिका के चरण भी उनके साथ-साथ छूता था उससे वे बहुत प्रसन्न रहते थे। बंसीधर इस खुशामद कला में शुरू से ही

चतुर रहे। लेकिन एक बार अपने एक सहपाठी से वे मात भी खा गये थे। मौसमों की तरह बदलती रहनेवाली उस्तानियों में एक मुस्तकिल थी, इनकी। उस्ताद ने अपने रुपये-पैसों की तालाबंद संदूकची के सिवा पूरा घर उसे सौंप रखा था। किताबों की कोठरी और बक्सों की ताली-कुंजियां इसी उस्ताद-वल्लभा के पास रहा करती थी। इनकी उस्तानी के सफेद बालों के लिए कभी खिजाब, कभी चमेली के तेल की कुप्पी, कभी-कभी टिकली, बेंदी और मिस्सी वगैरह लाकर देते ही रहते थे जिसके कारण उस्ताद के कुतुब-खाने का लाभ जितना वह उठा लेते थे उतना और किसी शागिर्द को नहीं मिलता था। उनके एक सहपाठी जवाहरसिंह 'जौहर' बड़े बाप के बेटे थे। जवाहरसिंह बंसी के इस एकाधिकार को तोड़ना चाहते थे। उनके यहां से उस्ताद के लिए अक्सर कुछ न कुछ आता ही रहता था। उस्ताद और जौहर दोनों ही सक्सेना कायस्थ थे। शायद कुछ दूर की रिश्तेदारी भी थी। यह सब होने पर भी इनकी उस्तानी उन्हें कुतुबखाने में न घुसने देती थी। उस्ताद से शिकायत करते तो उनकी बात को भी टाल जाती थी। एक दिन शाम को किसी मौसमी उस्तानी के अभाव में उस्ताद इनको के साथ हीं महुवे का मजा ले रहे थे कि जौहर अपने पिता राय बख्तावरसिंह का कोई खास सदेशा लेकर पहुंचे। उस्ताद अपनी परमनिन्ट प्रेयसी के गले में एक बांह डाले दूसरे हाथ से उसे कुज्जी पिला रहे थे। जौहर ने अचानक यह शेर कहा :

"यह जवानी के मजे दिलबरे कमसिन में कहां,
गुंचा जब तक न हो गुल, न हो खुशबू पैदा।"

सुनकर उस्ताद झूम उठे। उस्तानी भी निहाल हुई। उस दिन से जवाहर कुतुब-खाने में प्रवेश पाने लगे, बंसी की राहें बंद हो गई। कलकत्ते से आने पर बंसी जवाहरसिंह से मिले थे। तब मलीहाबाद के तहसीलदार थे और शायरी में नाम हासिल किया था।

...नौ बरस की उमर में बारह-चौदह इक्कों में लदकर तनकुन की बरात नवाब-गंज गयी थी। शादी हुई, चमेलो का गोरा-गोरा छोटा-सा हाथ देखा था, बस, और कुछ नहीं। लेकिन यह अनुभूति कि उसकी पत्नी गोरी है, बंसी के जीवन के आगामी वर्षों में बड़ी प्रेरणादायक बनी रही......।

वह प्रेरणा भंग हुई। वह अंग्रेज कामपीड़िता युवती के नयनजाल में फंस गया......। अपने और स्वर्गीय चंपकलता के बीच में नैन्सी की याद मसालेदार करेले सी आयी, कड़वी किन्तु स्वादिष्ट। अक्सर उनके और चमेलो के निर्मल प्रेम में मैल-सी आ जाने वाली नैन्सी उनके मन को अपराध भावना से जकड़ देती थी। लेकिन आज उन्हें सहसा लगा कि उस बेचारी को दोष क्यों दिया जाए। अपने नवयुवा काल में बहुत बचते हुए भी रायसाहब नैन्सी के मोहिनी पाश में फंस गये थे, यह सच है, मगर उस बुराई में भी अपनी भलाई करने का उद्देश्य ही अधिक था। अंग्रेज समाज से उसकी जान-पहचान कराने में नैन्सी ने बहुत सहयोग दिया। आज बंसीधर रायसाहब हो चुके हैं, असिस्टेंट शिक्षा निदेशक के पद पर पहुंचकर स्वेच्छा से रिटायर हुए हैं। उनके इस यशोमय जीवन की सफलता में कहीं न कहीं नैन्सी का प्रभाव तो पड़ा ही है, अपनी पत्नी के प्रति पूर्ण प्रेम के बावजूद भी रायसाहब बंसीधर इस समय अपनी अल्पकालिक प्रिया की याद को पूरी तरह से नकार न सके। दो खूबसूरत गुदगुदे नजारों में दबकर याद, रिटायरमेन्ट के बाद के दिनों की झपकी बनकर समा गयी।

शाम की डाक में कलकत्ते से प्रभा का एक लम्बा खरीता आया था, जिसमें राय

साहब, खोखा और कौशल्या, तीनों ही के लिए पत्र रखे थे। कौशल्या और खोखा के पत्र भीतर भिजवाकर रायसाहब अपने लिए लिखा गया पत्र पढ़ने लगे। एक बार पढ़ा, चेहरा गम्भीर हुआ, फिर पढ़ा और उदास हो गये।

विपिन खन्ना इस समय करोड़पति हैं। वह बेहद दुखी व्यक्ति भी हैं। उनके तीन बेटे हुए परन्तु तीनों में से कोई भी अपने माता-पिता को सुख-संतोष न दे सका। बड़ी साध से बड़े बेटे नितीन्द्र को सात बरस की उमर में ही विलायत भेजा था। वहीं पढ़ा-लिखा और संयोग से लण्डन आयी हुई फ्रान्स की किसी प्रौढ़ा विधवा काउन्टेस के काम प्रलोभनों मे पड़कर सहसा उसकी पढ़ाई-लिखाई छूटी। फिर लण्डन से गायब भी हो गया। उसकी खोज के लिए विपिन बाबू स्वयं विलायत गये थे। बहुत टोह लगाने पर यह जानकारी मिली कि स्विटजरलैण्ड में है। वहां गये, नितीन्द्र मिला भी लेकिन अपमान भरे शब्दों के साथ पिता को अपने होटल के कमरे से बाहर निकल जाने को कहा। तब से नितीन्द्र से उनका कोई सम्बन्ध नही रहा था। दो वर्ष पहले यह सुना था कि विलासिनी काउन्टेस ने उसे अपने घर से निकाल दिया है और यह पता नहीं चलता कि वह अब कहां और किस स्थिति मे है।

विपिन के मझले बेटे सोमेन्द्र की पिता के व्यवसाय में कोई रुचि न थी। वह वकालत पास करके पटना चला गया। उसकी वकालत अब वहां अच्छी चल रही है, किन्तु वह भी एक धनी विधवा मुवक्किल का मुकदमा जीतकर अब उसी से विवाह करके मुसलमान हो गया है। वह इस समय पैसों से खेल रहा है और सब तरह से प्रतिष्ठित भी है, किन्तु पिता से उसका कोई सम्बन्ध नही रह गया है। सोमेन्द्र के समीउल्लाह खां बन जाने की खबर सुनकर ही विपिन की पत्नी बीमार पड़ीं और फिर महीनों तक राजरोग भोग कर परलोक सिधार गईं। उन दिनों प्रभा कलकत्ते पहुंच चुकी थी।

विपिन बाबू का तीसरा पुत्र खगेन्द्र यूनिवर्सिटी में पढ़ता है किंतु वह बेहद आत्मलीन रहने लगा है। दो बड़े भाइयों की चरित्रहीनता का आघात भी शायद उसे गहरा लगा है। मां की मृत्यु के बाद वह गुमसुम रहने लगा है। पिता को भय है कि कहीं आत्महत्या न करले अथवा संन्यासी न हो जाय।

तीन सन्तानें, लेकिन घर में सुख नही। विपिन के दो लड़के अविवाहित ही रहे और अब स्वर्गीय लाला रामचन्द्र खन्ना के पोते-पोतियां पटने में मुसलमान-वंशी होकर जी रहे हैं। प्रभा विपिन के सूने घर में चहल-पहल बनकर आयी थी। किन्तु इधर लगभग पन्द्रह वर्षों के बाद पेरिस के एक भिखारी-घर (बेगर्स होम) से नितीन्द्र का एक पत्र विपिन बाबू के नाम आया है, जिसमें यह सूचना दी गयी है कि रेल से गिर पड़ने के कारण उसकी दोनों टांगें कट गयी हैं। जीवन में बहुत कुछ देख लेने के बाद अब इस अन्तिम परिणाम तक पहुंचकर वह अपने पिता से क्षमा प्रार्थी हुआ है। नितीन्द्र ने यह भी प्रार्थना की है कि उसके पिता यदि 'बेगर्स होम' के प्रबन्धक को कुछ धनराशि भेजने की कृपा करें तो उसकी अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हो जायेगी। प्रभा ने पत्र मे लिखा था—"विपिन बाबू इन दिनों बहुत दुखी हैं और पापा, अगर कुछ दिनों के लिए आप कलकत्ते आकर मामा के साथ रह लेंगे तो शायद उन्हें बहुत मानसिक बल मिलेगा।"

पत्र ने रायसाहब के मन को झिंझोड़कर रख दिया। विपिन जैसा उपयोगी, उपकारी व्यक्ति भी कितना दुख पा रहा है, यह सोच कर रायसाहब का मन बहुत ही उदास हो गया। भीतर से गुड्डू को गोदी में लिए हुए कौशल्या आयी।

गुड्डू को देखते ही रायसाहब क्षण भर के लिए सब भूल गये। गुड्डू इस समय जाग रहा था। ससुर की गोदी में उसे देकर कौशल्या बोली: "बीबी जी ने कलकत्ते जाने

के लिए शायद आपको भी चिट्ठी में लिखा है।"

"हां।" कहकर रायसाहब गुड्डू के होठों पर प्यार से उंगली रखकर उसे हंसाने का प्रयत्न करने लगे।

"हो आइये, पापाजी।"

"राजा है, मुन्ना है, हां ऽऽ···!"

"तो आप जायेंगे, पापाजी?"

दादा के प्रयत्नों से गुड्डू इस समय संयोगवश मुस्कुरा उठा था। उस मुस्कुराहट मे दादा सब कुछ भूल गये थे। बहू के दूसरी बार पूछने पर बोले: "जाना तो चाहता हूं, मगर बेटी, यह मोह ममता अब मुझे कहीं जाने आने का हौंसला नही देती। ···घत् घत् घत्!" कहकर उन्होंने मुस्कुराते हुए गुड्डू को बांहों में उठा लिया। कौशल्या झुकी, बोली: "मुझे दीजिये, गद्दी बदल लाऊं।"

"ये यहीं रहेगा, तुम ले आओ।" रायसाहब ने अपनी ही गोदी मे लिटाकर पोते की गद्दी बदली, गीला पोतड़ा बदल कर खुद ही दूसरा बांधने लगे। यह बंधन रायसाहब के पोते को शायद नापसन्द आया इसलिए क्रोधवश 'कुआं-कुआं' आरम्भ कर दी। मां ने उसे गोद में लेकर हिलाया, वह चुप हो गया। रायसाहब कौशल्या की पूछी हुई बात का उत्तर देते हुए बोले: "अंगने से कहो, गाड़ी तैयार करे। कलकत्ते जाने का प्रोग्राम बनाने से पहले एक बार गुमानी भैंये को देख आऊं, चार रोज से बुखार में पड़े हैं।"

घण्टे-डेढ़ घण्टे के बाद रायसाहब अपने चौक के पुश्तैनी घर में बैठे थे। गुमानी भैंये का बुखार आज उतर गया था। खोखा अस्पताल से लौटते समय नित्य उनको आकर देख जाता है। गुमानी बौटी इन दिनों बड़ी मगन थी। काशी की ससुराल से बड़ा सामान आया था। देवर के नाश्ते के लिए महरी तखत पर चौकी रख गयी थी, गुमानी बौटी चांदी की तश्तरी में नाश्ता लेकर स्वयं आयी। उन्होंने अपने तनकुन लाला के लिए *शिवनारायण हलवाई के यहां से उनकी मनपसंद मलाई की पूरियां, शिकारी हलवाई के* यहां से कलाकंद और आगरेवाले की दालमोठ मंगवायी थी।

रायसाहब अपने भाई के पलंग के सिरहाने, कुर्सी पर बैठे हुए उनसे बातें कर रहे थे। अपनी गज-गामिनी भाभी को कमरे मे आया देखकर बोले: "अरे-अरे, क्या गजब कर रही हो, भाभी, इतनी नाजुक कलाई में इतना बोझ उठाके ले आयीं, बड़ी तकलीफ की तुमने।"

अपने गोटे-मोटे हाथ से चौकी पर तश्तरी रखकर भाभी बोली: "लेओ खाओ, बातें न बनाओ।"

"अब हमरी बहूरानी को कब बुलाओगी भाई? गौना कब आ रहा है कासी का?"

देवर तखत पर चौकी के सामने बैठे। गुमानी बौटी पंखिया लेकर तश्तरी पर आती मक्खियां उड़ाते हुए बोली: "परसों गौना लेन जाएंगे हमरे कासी।"

"तौ बाबू गगानरायन से कहलाय दो कि तुमरे लिए एक गंगा-जमुनी मचिया भेज दें। मचिया पर बैठी-बैठी हुकुम चलाना। अब तुम्हे काम धाम करने की जरूरत नही।"

गुमानी भैंये बोले: "तो अभी ये कौन बड़े काम करती हैं। इनका तो बस एक काम हैगा—बात-बात में हमरी खोपड़ी पर जूतियां मारना।"

पति की बात सुनकर गुमानी बौटी भड़क उठी। थोड़ी देर पति पत्नी का वाक् युद्ध होता रहा, फिर रायसाहब बोले: "अरे भई हो गया, हो गया, तुम्ही जीतीं। भैंये की

मजाल क्या है जो तुम्हारे आगे जीत सकें। अच्छा, पहले यह बताओ की गंगा बाबू—"

बात काटकर गुमानी मैंये बोले : "गंगा नरायन रुपए में सोलह आने हमरे साथ हैं। कल हमें देखन खातिर आए रहे। हमने पूछा तो बोले कि अब तो दिन पर दिन अंग्रेजी पढ़ाई बढ़ती जाए रही हैगी, रोजै कोई बिलायत जाएगा। हम कहां तलक सबको जात बाहर करते रहेंगे।"

"ठीक कहा, और फिर कोई एक बिरादरी में ही यह तमाशा थोड़े ही हो रहा है, सभी जातों में यह हलचल मची है। तुम एक काम करो मैंये।"

"क्या ?"

"बहू जब गौने से आए तो तुम एक दावत कर डालो।"

"उससे क्या होगा ?"

"उससे यह होगा कि हम बिरादरी को और पूरी दुनिया को यह दिखला सकेंगे कि हमारे साथ अब काफी लोग हैं। कल या परसों हमारे पास एक नवजवान कायस्थ साहब आए थे, यों अकसर आया करते हैं, फारसी के आलिम हैं, और उर्दू के शायर भी—मुंशी अवधबिहारी लाल 'समर'। यों उमर मे तो तुम्हारे खोखा के बराबर ही है, साल दो साल बड़ा या छोटा। मगर मैंये, बड़ा ही जोशीला जवान है। समर हमसे कहने लगे कि शहर की सब बिरादरियों के सुधारक मिलकर एक जलसा करें और यह ऐलान कर दें कि जो हमारे साथ नही रहेंगे उनके लड़कों की सरकारी नौकरियों के लिए सिफारिश हम नही करेंगे। न उनसे किसी किस्म का समझौता ही करेंगे।"

गुमानी बोले : "देखो तनकुन, चाहे हमारे खत्री भाई हों, चाहे, बनिए, बाम्हन, कोई भी हिन्दू भाई हो, हम आपस में लड़-झगड़ नही सकते। अरे भई, जब बिरादरी हैगी तो आपस में नाते रिश्तेदारियां भी जरूर होएंगी। चाहे पक्ष वाले होंय चाहे विपक्ष वाले।"

"वह सब ठीक है मैंये, लेकिन इन नालायकों को टक्कर तो देनी ही होगी। बढ़ते हुए जमाने को कौन रोकेगा ! तुम दावत दो। भाभी गीतों का बुलौआ फिरवाएं। हमारी शकुन्तला, कौशल्या, ये सब लोग उसमें खुले रूप से शामिल होंगी।"

"और छंगे चाचा फिर हमरी बड़ी भाभी को अनसन-पाटी पर बिठाय देंगे तो ?"

"क्या बात कहते हो भइए, छंगेमल अब बोलने की हिम्मत नही कर सकते। गौरो बाबू बाप के बिल्कुल खिलाफ है। नया जमाना देखकर ही तिल्लोकी चोपडा के लड़के से अपनी बिटिया ब्याह रहे हैं। पहले कभी ऐसा हो सकता था ? छगेमल मुंह में ताला लगाए बैठे हैं। अकेले प्रोहितजी कर क्या लेंगे हमारा ? जितने लोगों को इन दुष्टों ने बिरादरी से निकाला है इन सबको घेर-घेर कर लाओ।"

गुमानी मैंये पड़े-पड़े कुछ देर सोचते रहे, फिर बोले : "दूसरी बिरादरियों को भी जाफत में बुलावें ?"

"जरूर, इस बार दिखला ही दो कि शहर के समाज में हमारी ताकत क्या है। यह लोग कोरे गीदड़भपकी देने वाले लोग हैं, मैंये। पहले विलायत जाने का विरोध किया, फिर अंग्रेजी पढ़ाई का, दवाओं का, मिट्टी के तेल का, इनके धरम वालो ने तो आफत मचा दी। पर असर क्या हुआ, बताओ ? अंग्रेजी पढाई बढ़ गयी और बराबर बढ़ रही है। अंग्रेजी डाक्टर और दवाइयां भी अब तो चल पड़ी। ये मिट्टी का तेल पहले डर के मारे नीचे दहलीजो तक में ही रोशनी के लिए इस्तेमाल हुआ, पर अब सभी अच्छे-अच्छे घरों में लैम्प जल रहे हैं। नई रोशनी को कौन रोक सका है ? इन समर साहब को ही देख लो। नागरी में अखबार निकाल-निकाल के यह लडका अपने पुराने पथियों को

29

कलक्टर की मेम के पेट में ट्यूमर पड़ गया था। आज सवेरे नौ बजे उनका आपरेशन होना था। डॉ० देशदीपक टण्डन के आग्रह से ही जिले के राजा ने, जो अपनी मलिका का आपरेशन बंगले पर ही कराना चाहते थे, अपनी इच्छा में परिवर्तन लाकर उन्हें अस्पताल मे भर्ती कराया। बाहर बरामदे और उसके नीचे वाले हरे लान में कलक्टर साहब के स्टाफ के बड़े से लेकर छोटे कारकुनों, अर्दलियों और शहर के अनेक गण्यमान्य सेठ साहूकार, राय बहादुर, खान बहादुर, रायसाहब, खान साहबान की भीड़ खड़ी थी। पुलिस के दो कांस्टेबल थे, एक मेमसाहब के कमरे पर तैनात था, दूसरा आपरेशन रूम के दरवाजे पर। लान मे चाटुकार गण्यमान्यों के चेहरों पर गहरी चिन्ता के मुखौटे लगे थे। सिटी मजिस्ट्रेट अस्पताल के फाटक के सामने टहलते हुए अपने दो मातहतों से बातें कर रहे थे और डॉ० टण्डन की प्रतीक्षा भी। टहलते हुए उनका बांया हाथ बराबर पतलून की जेब में रहा और दाहिने से रुक-रुक कर वह अपनी वास्कट से जेब घड़ी निकाल कर समय देखते।

ठीक साढ़े आठ बजे डॉ० टण्डन की टमटम अस्पताल के फाटक में दाखिल हुई। सिटी मैजिस्ट्रेट का चेहरा सुबह की धूप सा खिल उठा। लान की प्रतिष्ठित भीड़ राय साहब बंसीधर टण्डन के भाग्य के प्रति ईर्ष्या करने लगी, जिनका बेटा जिले की रानी का चिकित्सक था। बहुतों की हाथ जोड़ और बत्तीसी खिलावन को एक साथ हाथ जोड़कर, मौन गम्भीरता से पहले आपरेशन रूम प्रबंध की देखभाल करने गए। फिर वहां से निकल-कर जब मेमसाहब के कमरे में जा रहे थे तब दूर से किसी के जोर से पुकारने की आवाज आई : "खोखा मैये।"

डॉ० टण्डन ने उधर ध्यान भी न दिया। मरीजा के कमरे में चले गए। कलक्टर से बातें की, मरीजा का हौसला बढ़ाया, नर्स से कहा कि ठीक आठ पैंतालिस पर मेमसाहब आपरेशन के कमरे में पहुच जाएं, फिर बाहर निकल कर जाने लगे। फिर दूर से जोर की आवाज आई : "खोखा मैये, ए मैये जी ऽऽ!"

ध्यान गया। हाथ दिखाकर ठहरने को कहा। आपरेशन रूम में जाने से पहले अपने एक चपरासी से आवाज देने वालों को तलाश करके उससे यह कहने के लिए भेजा कि दो घण्टे बाद आएं।

क्लोरोफार्म का प्रचलन नया ही नया चला था। डॉक्टर टण्डन ने बड़ी सतर्कता के साथ अपनी ही निगरानी में प्रयोग करवाया। आपरेशन में भी बड़ी कुशलता दिखलाई। ट्यूमर गर्भाशय के पास ही था। मेमसाहब की भावी मातृत्व शक्ति पर आंच न आने देते हुए रोग को बाहर निकाल फेंका, टांके लगाए, गाज भरी, पट्टी बांधी। उनके और उनके सहायक डॉक्टरों, नर्सों के चेहरों पर चमक आई, फिर हाथ वगैरह धोकर बगल की कोठरी में बैठे हुए कलक्टर से हाथ मिलाया, कहा : "बधाई सर, आपरेशन बहुत सफल रहा।"

अपने दुःख से कोमल हो रहे कलक्टर ने डाक्टर को सीने से लगाकर धन्यवाद दिया।

जब अपने कमरे मे आए तो छह पर्चियां मिली—दो गनेसो चाचा के लड़के शंकर

की, हरों मैए, परतब्बे मैए, गुमानी ताया जी की पर्चियां और एक परसादी लाल राम-नारायन फर्म के मुनीम पंडित कुंजबिहारी दुबे का लम्बा प्रार्थना पत्र—"मेरा छोटा लड़का कृपा नारायण दुबे छत से गिर पड़ा है। बहुत खून जा रहा है। तुम्हारा पुश्तैनी पड़ोसी हूं, बेटा। उसके प्रान बचाओ।" पर्चियों में घायल व्यक्ति का नाम किरपू दुबे, किरपू डेविड, के० एन० डेविड—तीन तरह से लिखा हुआ था। ताया जी ने लिखा था पड़ोस का मामला है, फौरन आओ।

खोखा इस समय थक कर चूर हो रहा था। वह घर जाकर आराम करना चाहता था। उसे फिर दो घण्टे के बाद मेमसाहब को देखने के लिए आना था।···सोचने लगा कौन है ये के० एन० डेविड, किरपा दुबे। क्या कोई पड़ोसी क्रिश्चियन हो गया है? लेकिन चचेरे भाइयों की तड़ातड़ पर्चियां, सबसे महत्वपूर्ण तायाजी का आदेश। लाख थका हो, पर टाल नहीं सकेगा, उसे जाना ही पड़ेगा····"रामपरख, मेरी गाड़ी तैयार करवाओ।"

चपरासी अदब से सिर झुकाकर आज्ञा पालन के लिए चिक उठाकर बाहर चला गया, और पौन घण्टे के बाद ही खोखा अपने दादे-पड़दादे के पुश्तैनी घर में था। गुमानी ताया जी ऊपर के कमरे में खटिया पर बैठे हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। डाक्टर भतीजे को देख कर उनकी आखों में चमक आ गयी। बोले: "आओ बेटे, तुम्हारा तो बड़ी देर से इंतजार हुई रहा है।"

"क्या कहूं ताया जी······"

"मैं सुन चुका हूं।"

ताई बोलीं: "इत्ती देर पड़ा रहा, अब न बचिहै बबुआ।"

"खाये बिना मैं भी न बचूंगा, ताई। जो कुछ हो दे दो। फिर देखने जाऊं।"

खाना खाते समय पुश्तैनी पड़ोसी कुंजू दुबे और उनके मालिक परसादी लाल रामनारायन के सबंध में कुछ जानकारी भी मिलती चली।

फर्म के मालिक लाला सतनारायन पुरबिए खत्री थे। परसादी लाल रामनरायन फर्म गल्ले की बड़ी अढतिया थी। पिछली तीन पीढ़ियों में लक्ष्मी उनके घर चार हाथ ही नहीं चार पैरों से भी आयी थी। गदर में वाजिदअली शाह की बहुत सी मुताही बेगमों और उनके बच्चों को लूट और कत्लेआम से बचाकर लाला परसादी लाल ने खुद ही उन्हें बड़ी हमदर्दी और मिठास देकर लूट लिया था। ऐश परस्त, खानदानी नवाबों की सोहबत के लिए सुन्दर स्त्रियां और शराब जुटाकर भी उनके यहां काफी दौलत आ गयी थी। एक तरफ नवाबों के लिए औरतें जुटाते थे और दूसरी तरफ उनकी पर्देदार, मदन बावली बेगमों के लिए यार भी।

यह सब होते हुए भी परसादी लाल, उनके बेटे रामनरायन, उनके बेटे मूलनारायन तक परिवार के लोग बड़े ही कट्टर धर्मनिष्ठ थे। खान-पान, छुआछूत, जात-बिरादरी, दीन धरम आदि के सभी नियम उनके यहां बड़ी कट्टरता से पालन होते आए थे। परसादी लाल रामनरायन फर्म के वर्तमान मालिक लाला सतनरायन भी अपने बाप-दादों की परम्परा के अनुसार ही धरम-करम के बड़े पाबन्द थे।

उनके बड़े मुनीम पण्डित कुन्ज बिहारी दुबे भी अपने मालिक के जैसे ही चतुर, धार्मिक व्यक्ति थे। तनकुन के पिता लाला मुसद्दीमल की हवेली के पिछवाड़े ही उनका पुश्तैनी घर था। कुंजू दुबे के दो बेटे थे, श्याम नरायन और किरपा नरायन। दुबे जी ने दोनों ही को अंग्रेजी पढाई। पर स्यामू अधिक तेज न निकला। चौथा पास कराके उसे उन्होंने इलाहाबाद बेंक में बाबू बेनी माधो खन्ना की सिफारिश से नौकरी दिलवा दी थी और वह पिछले चार-पांच वर्षों से इलाहाबाद में ही रहने लगा था। किरपा नरायन पढ़ने

में तेज निकले। भाषण आदि करने मे भी उसकी बड़ी गति थी। सन् 1882 में कैनिंग कालेज से कलकत्ते की एन्ट्रेन्स परीक्षा भी ससम्मान पास कर ली थी, लेकिन पिछले तीन वर्षों से अपने लिए अपनी मर्जी की नौकरी पाने में असफल रहकर वह अब तक बेकार ही था।

लाला सतनरायन ने पिछले साल सदर में विलायती शराब और जनरल मर्चेन्ट की एक बडी चलती हुई दूकान 'डेविड एण्ड डासन' खरीद ली थी। लाला सतनरायन का दूसरा बेटा बिरिज नरायन किरपा दुबे के साथ ही रायसाहब तनकुन के मिडिल स्कूल मे पढ़ा था, लेकिन परीक्षा में फेल हो जाने के कारण उसकी पढ़ाई सदा के लिए छूट गयी थी। सत्तो लाला ने सदरवाली दूकान बिरजू को ही सौंप रखी थी। किरपा नरायन वहां गया तो इस लालच मे था कि बिरजू किसी अंग्रेज मेजर, कर्नल से सिफारिश करके उसको कोई अच्छा काम दिला देगा, मगर बात कुछ और हो गयी। बिरजू ने उससे कहा कि जान-पहचान बढ़ाओ और हमारा काम भी बढ़ाओ। साहबों के आर्डर का सामान सप्लाई करने के लिए उनके यहा नौकर के साथ आया-जाया करो, गहकी बढ़ाओ, मुनाफे में फी रुपया तुम्हारी इकन्नी रहेगी। यह सोचकर कि खाली बैठे से बेगार भली, किरपा ने यह काम शुरू कर दिया। और इस काम को करते हुए ही बिना धरम बदले वह कब कृपा नरायन द्विवेदी से मि० के० डेविड हो गया, यह बतलाना कठिन है।

उन दिनो कई लोगो ने अपने नामों का अंग्रेजीकरण कर रखा था। टीकम सिंह, टी० स्विग हो गए, ज्वाला सहाय जोला शाय हो गए थे और राजकिशोर अपने नाम की अंग्रेजी वर्तनी को उलट कर जे० इरोकशा हो गए थे। 'डेविड एण्ड डासन' के प्रतिनिधि बनकर द्विवेदी को शायद डेविड बनना सुहाया। जहां कहीं मिलने-जुलने जाता वहां डेविड नाम के कारण डेविड डासन कम्पनी के मालिक का कोई रिश्तेदार ही समझा जाता था। वहीं मुफ्त की पीने का शौक भी उसे लगा। शौक यहां तक बढ़ा कि रात को घर लौटते समय गलियो में झुकते-लड़खडाते ही आ पाता था। धीरे-धीरे चार महल्लों में शराबी के तौर पर उसकी कुख्याति फैल गयी।

सत्तो लाला ने अपने बडे मुनीम से कहा : "चाचा, आप तो जानते ही हो कि धन की खातिर हमने ये सब दूसरो से कराया जरूर है, पर खुद कभी नही किया। मगर किरपा तो हमरे बिरजू को भी बिगाड डालेगा। इसे हम वहां से हटाय दें तो आप बुरा न मानिएगा।"

"नई नई बुरा क्या मानेंगे, सरकार, बाकी उसने तो हमारी नाक ही कटाय डाली।"

कृपा नरायन द्विवेदी उर्फ के० एन० डेविड बिरजू से अलग तो कर दिए गए, पर अलग हो न सके। इसका कारण था लाला रिखबदास जौहरी की आशना और वाजिद-अली शाही सैंकड़ों मुताही बेगमों में से एक चुलबुली बेगम उर्फ हस्सो की लडकी गेती-आरा। लडकी चूंकि लाला रिखबदास की थी, इसलिए प्रकट रूप से तो यह चाहते थे कि उसका कही निकाह हो जाए किन्तु मन ही मन यह कामना भी रखते थे कि अगर आर्य-समाजियो से उसकी शुद्धि करवा कर किसी हिन्दू से उसका ब्याह हो जाए तो और भी अच्छा होगा। बूढ़े आशिक माशूक में इसी बात को लेकर कुछ दिनो से कुछ खींच-तान चल रही थी। उन्ही दिनों चुलबुली बेगम की कोठी पर के० एन० डेविड का आना-जाना भी शुरू हुआ था। उसके सहारे घाघ रिखबदास अपनी अवैध पुत्री के लिए बिरजू को फंसाना चाहते थे। गेतीआरा भी लडकियों के अंग्रेजी स्कूल ला मार्टीनियर मे अंग्रेजी पढ़ने जाती थी। रिखबदास के पढ़ाए किरपा दुबे उर्फ के० एन० डेविड ने गेतीआरा और

बिरजू की मुलाकात इसी आती-जाती राह पर एक बार करा दी थी। बिरजू मर मिटे और इसी मर मिटने के दौर मे बिरजू अपनी पारिवारिक धरम नीति लांघकर खुद भी शराबी हो गए थे।

लाला सतनरायन और उनके मुनीम दुबे जी को तब तक इस सम्बन्ध में कोई जानकारी न थी। बिरजू का ब्याह हो चुका था, उसके तीन बच्चे भी थे। मगर गेतीआरा के इश्क में बिरजू ऐसे बेताब थे कि उनका जी न दीन मे लगता था न दुनिया में। सब काम-धाम छोड़कर अपनी सदर वाली दूकान के पिछवाड़े एक कमरे में पड़े ठण्डी सांसें लेते हुए छत की धन्नियां गिना करते थे। किरपू डेविड दोस्ताने की सहानुभूति में उन्हें शराब में अपना दु:ख डुबाने की नसीहत देते हुए खुद ही शराबी से प्रबल शराबी बन गए। न पीने वाले विरही दोस्त के सामने पीकर जोर-जोर से चिल्लाते थे : "ये साली इण्डियन सोसायटी। थर्ड क्लास। लवर माने लवर। बिलेवेड माने बिलेवेड। हू इज दिस साला हिन्दू एण्ड मुसलमान रेलिजन जो इन दोनो के बीच मे अड़ंगा डालता है? छोड़ो इन साले रेलिजनों को। तुम भी छोड़ो, हम भी छोड़ेंगे। क्रिश्चियन हो जाओ। तुम्हारी बिलेवेड तो साली हिन्दू मुस्लिम कम्बाइंड औलाद है।"

"देखो डेविड, तुम हमारी बिलेवड को साली न कहो, मेरा कलेजा फट जाएगा। लेकिन मैं तुम्हारी सलाह मान के उसके लिए क्रिश्चन बनने को तैयार हूं।"

······यहां से बातों की भनक सत्तो लाला के कानों मे भी पड़ने लगी और उनके मुनीम के भी।

गुमानी ने पृष्ठभूमि की कथा संक्षेप में समझा कर कहा : "ऐसा लगत है कि ये ससरा सराब के नसे मे चुलबुली के हियन गया होयगा। अब सच-झूठ तो राम जाने, मगर सुनने में तो यह आया है कि चुलबुली ने उसे छत की मुडेर से ढकेल के आगन मे गिरा दिया। हुंअन से रिखबदास उसे डोली मे हियन भिजवाइन। मत्थे पे चोट आयी है। एक हाथ की हड्डी भी शायद टूटी है। तीन-तीन इज्जतदार घरन की आबरू साली मिट्टी मे मिल रही है। अब तुम हाथ मूं धोय लो तो हम भी तुमरे साथ चलेंगे। अरे कुंजू हमरे साथ बचपन का खेला भया है। क्या कहें, ये आज का जमाना—फैसन में ये आज के लड़के साले सराबी होत चले जाय रहे हैंगे। ऐसा बुरा बखत तो कभी देखा नही रहा, बेटा।"

किरपू डेविड के सिर की चोट तो मामूली थी, किसी जर्राह ने कोई मलहम लगा के पट्टी बांध दी थी, मगर बांए हाथ की हड्डी दो जगह से टूट गयी थी और उसी ओर कूल्हे की हड्डी भी कुछ मरक गयी थी। डाक्टर के आने की बात सुनकर जर्राह ने यह काम छोड दिया था। किरपू जर्राह की दी गयी अफीम की गोली में अचेत पड़े बीच-बीच में पीड़ा से कराह उठते थे।

सब जांच कर डाक्टर टण्डन ने कहा : "आप लोग घबराइए नहीं, ठीक हो जायेंगे। लेकिन इन्हें फौरन हीं अस्पताल पहुंचाइए। वहीं हड्डियां जोड़कर प्लास्टर चढ़ाऊंगा। यहां ये सब काम हो नही सकता।"

उस दिन तीसरे पहर भी खोखा को बड़ी मेहनत करनी पड़ी। सहायक डाक्टर को उसके घर से बुलवाया, टूटी हड्डियां जोड़ी, पलस्तर चढाया। कलक्टर की मेमसाहब को भी जाकर देखा। शाम के पांच बजने तक खोखा इतना श्लथ हो गया था कि अपने रिटायरिंग रूम मे जाकर लेट गया। दांकर से कहा : "तुम्हारी भाभो बेचारी इन्तजार कर रही होंगी। मैंने चपरासी से मैसेज तो भिजवा दिया है, मगर तुम खुद भी उन्हें जाकर बतला दो कि कलक्टर साहब छह बजे आने वाले हैं। तब तक उनकी मेमसाहब को होश

-- भी आ जाएगा। उसके बाद ही आऊंगा।"

रायसाहब दो दिन पहले ही कलकत्ते गए थे। घर में गुड्डू और कौशल्या। कितना सन्नाटा।······मां की याद आ गयी, गुड्डू अब बाप को देखकर हाथ निकालने लगा है। उसका हसी भरा, गोल पोपला प्यारा मुखड़ा और मां की गोद से पिता की गोद मे आने के लिए उसकी छटपटाहट भरी छवि डाक्टर टण्डन के मन को लुभा-लुभाकर घर पहुंचने के लिए बेताब करने लगी।

नर्स आई, कहा : "मेमसाहब को होश आ गया है, दर्द बहुत है। आपको याद कर रही हैं।" डाक्टर टण्डन फुर्ती से उठकर मेमसाहब के कमरे मे गए। मेमसाहब की शिकायतें सुनी। तसल्लिया दी, कहा : "आपके पति अभी आते ही होंगे। उनकी खुशी के लिए थोड़ी देर आप ये तकलीफ सह लें। फिर मैं सोने की दवा दे दूंगा।"

बहलाने के लिए बातें करते रहे, तब तक कलक्टर आ गए। पत्नी को होश में देखकर उनके चेहरे पर चमक आ गयी। दो-चार बातें की, झुककर प्रिया के होंठ चूमे, फिर डाक्टर ने दवा देकर मेमसाहब को सुला दिया। कमरे से बाहर निकलते हुए कलक्टर ने डाक्टर के कधे पर हाथ रखकर कहा : "मुझे उम्मीद नही थी कि हिन्दुस्तान में भी आपके जैसे काबिल सर्जन हो गए हैं। थगर आप मुझे होसला न दिलाते, भरोसा न देते तो मैं शायद ''खैर, जाने दीजिए। आई एम वेरी-वेरी ग्रेटफुल टू यू, डाक्टर टण्डन।"

जिले के राजा से अपने लिए यह आभार सूचक शब्द सुनकर डाक्टर टण्डन की सारी थकन छू मन्तर हो गयी।

पन्द्रह रोज बाद कलक्टर की मेम स्वस्थ होकर पति के साथ अपने बंगले पर चली गयी। और डेढ़ महीनों में किरपू डेविड का पलस्तर भी कट गया। कलक्टर की मेम के सफल आपरेशन ने डाक्टर की ख्याति और फीस में चार-चांद चिपका दिये। बड़े घरों में उनकी फीस अब आठ से सोलह रुपये हो गयी। बहुत कुछ हुआ, साल-भर बीत गया, पर बिरजू की खोपड़ी से गेतीआरा का भूत न उतरा। किरपू डेविड ठीक तो हो गए, पर घर में चोरी करने की आदत पड़ गयी। बिलायती की जगह देसी ठर्रे से ही अपनी जनमपत्री बनाने लगे थे। इसी तरह एक साल बीत गया।

इतवार का दिन था। लगभग दोपहर ढलते-न-ढलते लाला सतनरायन फल मिठाइयां, बेटे के लिए चांदी का झुंझुना और डाक्टर साहब की पत्नी के लिए बनारसी साड़ी लेकर अपने बड़े मुनीम कुंजू दुबे के साथ नजरबाग पहुंचे। सत्तो लाला गोरे ठिगने और गोल-मटोल थे, चेहरा रोबीला था, मूंछों और सिर के बाल खिचड़ी हो गए थे, हाथों की उंगलियां अलग-अलग नगो की आब झलका रही थी। डाक्टर साहब बोले : "आपको इतना कष्ट करने की क्या जरूरत थी, यह तो मेरे घर का काम था। (कुंजू दुबे की ओर हाथ बढ़ाकर) यह तो हमारे ताया जी के साथ बचपन में खेले पढ़े थे। मैंने तो सिर्फ अपना कर्तव्य ही किया, कोई खास बात नही की।"

"अरे डाक्टर साहेब, आप जीते रहें। हमारी बिरादरी में आपके जैसा एक रतन तो भया। हमारी तो इसी बात से छाती फूलती हैगी।"

बीच में कुंज बिहारी दुबे भी बड़ी-बड़ी असीसों भरी हां में हां मिलाते रहे। कुछ रुककर सत्तो लाला बोले : "हम आपसे एक सलाह लेने आए हैं।"···फिर बतलाया कि लड़के बिर्जे नरायन को सदर से घर ले आए हैं। मगर उसका दिमाग अभी बौराया हुआ है। कल घर के कुंए में कूदने की कोशिश करने लगा तो भाग्य से एक नौकर ने उसे पकड़ लिया। सब कुछ होते हुए भी वह गेतीआरा से विवाह करने पर तुला हुआ है। रिखबदास भी अब उसे शह देने लगे हैं कि लड़की को शुद्ध करके बिरजू यदि उससे विवाह

कर लें तो उन्हें आपत्ति न होगी। उनकी और हसो (चुलबुली बेगम) की बेटी इस बात के लिए कुछ-कुछ तैयार भी हो गयी है। इसी शुद्धिकरण के मामले में सत्तो लाला आर्य वीर डाक्टर टण्डन की सलाह लेने के लिए आए हुए हैं।

"देखिए लालाजी, एक पत्नी के रहते हुए दूसरी पत्नी लाने के मैं खिलाफ हूं। ये गलत बात है। आप अभी तो अपने बेटे के मोह में यह सोच रहे हैं। मगर आपको आगे की बात सोचनी चाहिए कि दो पत्नियों के बच्चों से आपके परिवार में आगे चलकर कितनी जटिल समस्या पैदा हो जाएगी।"

"यह तो मैं भी अपने मन मे खूब समझता हूं, डाक्टर साहेब। मगर अब क्या करूं? कल रात बिरजू की महतारी और उसकी बहुरिया हमरे पास आयी। कहा कि भले दूसरा बिहाव करें मगर जी जान से सलामत तो रहे। मैं यह भी जानता हूंगा कि सुद्धी के बाद हमारे घर में भी बड़े-बड़े पंचायती विघन आवेंगे, मगर अब क्या करें। एक यह भी विचार आता है कि ये होली आय रही है, उसके बाद आठो का मेला होयगा। एगम-वेगम चाहे भले होय, पर उस लौंडिया की महतारी है तो रण्डी ही। मेले मे हर साल जाती है। वही इस ससरी लौंडिया को उठवाय के कही दूर बिकवाय दें।"

डाक्टर टण्डन सुनकर कांप गए, कुछ-कुछ क्रोध भी आया। ताव में कहा: "इतने बुजुर्ग होकर भी आप इस तरह की बातें करते हैं। मुझे बहुत दुख हुआ, लालाजी। मैं आपके इस काम में सहयोग न दूंगा, मुझे माफ कीजिए।"

कुंजू गिड़गिड़ा कर बोले: "अरे बेटे, आप समझे नही। हमरे लालाजी तो चिउंटी के उप्पर भी दया करत हैंगे, ई सब तो खिजलाहट मे कह रहे हैं। करिहैं नाहीं।"

सत्तो लाला भी सम्हल गए, फीकी हसी हंसकर बोले: "अरे डाक्टर साहेब, जब बुढ़ापे में ऐसी चिन्ताएं सतावती हैंगी तो मन ससुर चिड़चिड़ाय जात हैगा। असिल में हमने आपको तकलीफ एक खास वजह से दी। रिखबदास रहते तो आप के मोहल्ले में हैंगे, मतलब कि हमरे कुंजू मैया के घर के आगे, और हमे कुंजू मैया ने ही बताया कि रायसाहब बेगम और रिखबदास दोनों के ऊपर खासा असर रखत हैंगे।"

"लेकिन पापाजी तो लगभग साल भर से कलकत्ते में ही हैं।"

"हम जानते हैं, खूब जानते हैंगे। ये कुंजू मैया बतावत रहें।"

"तब फिर मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं?" कुछ रूखे स्वर में डाक्टर साहब ने कहा और चलती बात से अनमने होकर मेज पर रखे हुए कागज उलटने-पलटने लगे।

"रायसाहब तो नही हैं पर वो बुढ़ौनिया अभी है। आप रायसाहब का नाम भी लेंगे तो आपका उस पर जो असर पड़िहै सो किसी का न पड़िहै। उनसे कह के कौनो मुसलमान से झटपट बेगम की लौंडिया का निकाह पढ़वाय दें। पैसा हम देंगे। हमरा मतलब ई हैगा कि उसका निकाह-बिहाव हुई जाय तो फिर बिरजू भी पित्ते मार के बैठ जैहैं। हमरा संकट जैहै मैया।"

डाक्टर देशदीपक सोचने लगे। कुछ देर तक कुछ न बोले। बस मुलाकात को खत्म करने के लिए उठ खड़े हुए। आए हुए दोनों सज्जन बात का पुछल्ला चलते-चलते तक लम्बाते ही चले गए।

अरुचि के व्यक्तियों से मिलकर डाक्टर टण्डन का सिर भारी हो गया था। किसी हद तक उनका मन चिड़चिड़ा भी गया था। उठकर लोगों को बिदा करके सीधे भीतर ही चले गए। स्वर्गीय मां के कमरे में तखत पर बैठी कौशल्या कुछ सी रही थी और गुड्डू उसके पास ही बैठा हुआ खिलौनों से उठा पटक कर रहा था। इन दिनों उसकी लार

बहुत बहने लगी है। "ए गुड्डू बाबा, क्या हो रहा है भाई" कहते हुए खोखा अपनी पत्नी के आगे तख्त पर ही बैठ गया।

अपने खेल की तन्मयता से चौंक कर गुड्डू ने पिता को देखा और पोपला मुंह खोलकर ऐसी हंसी बिखेरी कि साथ-ही-साथ टप से लार भी टपक पड़ी। गुड्डू अपनी जगह से घुटनो चलकर अपने पिता की ओर लपका। बेटे को तुरन्त गोद में उठाकर लार पोंछी, प्यार से उसे दबाकर चूम लिया। थोड़ी देर पिता का मुख देखते हुए उनकी मूछें खींचने की कोशिश की, पिता ने उसका हाथ दो बार हटाया तो उस खेल से गोद में बैठे-बैठे फिर उसका ध्यान खिलौनों की ओर गया। खोखा ने खिलौने अपने पास खिसका लिए ताकि वह उनकी गोद मे बैठा रहे और खिलौने से भी खेलता रहे। खोखा कौशल्या से कहने लगा, "बाज आदमी से मिलके मन ऐसा कड़वा हो जाता है कि बस क्या कहूं।"

"क्या हुआ, कौन आया था ?"

"क्या बतलाऊं तुम्हें ! इस नवाबी शहर में इतनी अधिक गन्दगी बढ़ गयी है कि हर आदमी जादे-से-जादे केवल अपने भोगविलास की बातें ही सोचता रहता है।" प्रसंग आगे बढ़ा पूरा किस्सा सुनाया, फिर लाला सतनरायन की बात भी सुनाई और कहा : "उस दिन गुमानी तायाजी ने बतलाया कि इन लाला सतनरायन के यहां मेलो तमाशो से औरतें उड़वाकर बेचने का पुराना पेशा रहा है। आज वह दुष्ट अपनी बातो की बहक में मुझसे कह भी गया कि आठों के मेले मे गेतीआरा को उड़वा दूगा।"

सुनते ही कौशल्या की आंखें छलछला उठी, बोली : "ये न होने दीजिएगा। जैसे एक बार मेरी बचायी थी, वैसे ही इसकी भी इज्जत बचाइएगा। आपसे हाथ जोड़कर कहती हूं।" सिया जाता हुआ कपड़ा घुटनों से उठाकर तख्त पर रखा और सचमुच उसके आगे हाथ जोड दिए। भावावेश में कौशल्या का कंठ भी रुद्ध हो गया था। गुड्डू कोई नया खिलौना पकडने के लिए काफी हद तक झुक गया था। उसे सम्हालते हुए कौशल्या से कहा : "मैं तुम्हारी भावना को समझता हूं, डियर। स्त्री चाहे हिन्दू, मुसलमान, कोई भी हो पर स्त्री स्त्री है।" तुम्हें महर्षि जी की एक बात सुनाऊं। एक बार कही किसी धनी पुरुष का इकलौता बेटा शराब और रण्डियों के चक्कर में पड़ गया था। महर्षि ने उसको बुलाकर कहा कि तुम वेश्या से प्रेम वगैरह करते हो, वह तो ठीक है। लेकिन वेश्या से पैदा होने वाली तुम्हारी पुत्री भी वेश्या बनेगी। क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा? यही बात ये लाला रिखबदास और उनकी वेश्या की पुत्री की है। पिता चाहते हैं कि बेटी का विवाह शुद्धी-वुद्धी करवा के बिरज़ यानी किसी हिन्दू से करवाया जाय और मां मुसलमान नौशे की तलाश में है। बीच मे उस बेचारी निर्दोष कन्या की जान फंसी है। क्या कहा जाय ? ऊपर से यह नीच उसे उड़वाकर बेचने की बातें करता है। समझ मे नही आता है क्या करूं। पापाजी होते तो वह हैदरीखां की बुढ़िया से मिलकर रिखबदास की वेश्या यानी उस लड़की की मां को आगाह कर देते। मगर मैं तो उन्हें जानता तक नही।"

क्षण-भर का मौन पहाड़-सा लगा। फिर कौशल्या बोली : "आप एक काम कर सकते हैं। वह लालाजी इस मुसलमानी के पिता हैं, उनके यहां यह खबर करवा दीजिए कि ऐसी-ऐसी बात सुनी है। लड़की को सम्हाल कर घर ही मे रखें।"

"तुमने मेरे मन की बात कह दी, कुशलो यही करूंगा। पर आजकल तो चौक की गलियो में जाना ही मुश्किल है। होली का ऐसा हुड़दंग मचता है कि मैं तो हिम्मत भी नही कर सकता, बाबा।"

"सुनिए, रात में तो रंग चलता नहीं होगा, आप···"

"ठीक है। मगर आज तो कोचवान को मैंने छुट्टी दे रखी है, उसकी बिरादरी की

कोई पंचायत-वंचायत है। खैर, मैं किराए की गाड़ी मंगवाए लेता हूं, तुम भी मेरे साथ चलो, दो घड़ी जी बहल जायगा।"

"नहीं, लौटते हुए रात हो जावेगी। रात मे सन्नाटा बहुत हो जाता है और आप कीजिएगा, आपका शहर चोर उचक्कों का शहर है।"

"ठीक है, तब मैं भी नही जाऊंगा। सात दिनों मे तो एक दिन यह छुट्टी का मिलता है। तुम्हारा और गुड्डू का साथ छोड़ने को जी नहीं चाहता है।" कहकर खोखा ने गुड्डू को अपनी गोद में उठाकर उसका मुख अपनी ओर करके, हाथों मे उछालकर उसे हंसाना शुरू किया।

कौशल्या अपने हाथ में सिया जाने वाला कपड़ा उठाती हुई बोली: "तायाजी को चिट्ठी लिख के भेज दीजिए। उसके साथ उन लालाजी के नाम भी एक लिख दीजिए। आप ही की गली में तो रहते हैं।"

"गली में रहते हैं, यह तो ठीक है। मगर वहां उनका घर है, ऐशगाह नहीं। वह वहां न हों और मेरी चिट्ठी किसी के हाथ मे पड़ जाय, यह ठीक नहीं।"

"तो आप तायाजी को ही लिख दीजिए, वह मौका देखकर लालाजी से कह लेंगे। लेकिन अपना फरज आप आज का आज ही पूरा कर डालिए। यह पाप न होने पाए।" कहते हुए कौशल्या का कंठ फिर रुंध गया और आंखें फिर छलछला आयी।

"तुम बहुत ज्यादा भावुक हो, कुशलो, खैर। यह काम किए ही डालता हूं। गुड्डू को लो और कपड़ा-वपड़ा रखो, भाई। बाहर आओ, हम लोग बैठ के गप्पें लड़ायेंगे, जी बहलायेंगे।"

रंग खुलकर खेला जा रहा था, गलियों मे जगह-जगह लड़कों की शैतानियां, छेड़खानियां बढ़ रही थीं। सौदेवालों से होली के पैसे जबरदस्ती मांगे जा रहे थे। छज्जों से कांटे गिराकर पगडियां उछाली जा रही थी। जगह-जगह रात में होली की टोलियां बैठ कर ढोलक डफलियों के साथ मस्ती मे होलियां गाने लगी थी—'अवध मे होली खेलें रघुबीरा।' और इसके साथ-ही-साथ कहीं-कहीं बड़े ही अश्लील गीत और अ र र, स र र र कबीर भी गाए जाते थे। जगह-जगह चबूतरों पर या गोमती के घाटों पर भांग की सिलें जमी हुई थी। चार-चार, पांच-पांच घण्टों की जोरदार रगड़ाई से भांग ऐसी बारीक पिस जाती थी कि सुरमा भी उसके आगे दरदरा लगे। दारू ताड़ी के शौकीन होली के दिनों मे प्राय: मस्ती से अधिक बदमस्ती मे आने के लिए अधिक नशा कर लेते और लड़खड़ाते, डगमग डोलते, चलती महरियों, मालिनों, मेहतरानियों से छेड़खानियां करते-बहकते फिरते थे।

होली जलने के दो एक दिन पहले से ही लोग अपने-अपने घरों के दरवाजे हुड़दंगियों से बचाए रखने के लिए रात-रात भर चौकसी करने लगे। जरा चूके नहीं कि चौखट समेत दरवाजे खुदकर होली की आग में भसम हो जाते। घरों की दीवारें हरे लाल, गुलाबी, पीले, जंगाली आदि विविध रंगों से रंग गई थी। दीवारों पर कोयले से भोंडी तौर से खींचे गए अश्लील चित्र बेहद नजर आ रहे थे। यों तो इस मौसम मे हर साल चित्रकार लोग छोटे-छोटे कामोत्तेजक मिथुन चित्र बनाकर अपने अमीर ग्राहकों को बेचा करते थे जिन्हें वे रईस अपने-अपने स्त्री-पुरुष मित्रों को ऋतु की भेंट स्वरूप दिया करते थे। लेकिन इस साल जब्बार फोटोग्राफर ने बड़ी मेहनत और तरकीब से मशहूर तवायफों और रईसों के खींचे गए पुराने फोटोग्राफों से उनके सिर काट-काटकर बने हुए मिथुन चित्रों में इस तरह से जोड़े थे कि लगता था उन्होंने ही ऐसे गन्दे मिथुन चित्र खिंचवाए हैं। जब्बार की इस कारीगरी ने हिन्दू और मुसलमान दोनों हलकों में बड़ा रस बरसा दिया था और उसके

वे फोटोग्राफ अच्छी कीमतों में बिक रहे थे।

होली और दुलहंडी के दिन विशेष रूप से एक महल्ले वाले दूसरे महल्ले वालों पर रंगाक्रमण कर रहे थे। कोई भांग कोई ताड़ी-दारू पिए गधों पर सवार मुंहों पर रंग पोते और फटे-नुचे कपड़े पहने गालियां बकते हुए आगे चल रहे थे। पीछे जवान लोग हाथ ठेलों में बड़े-बड़े गंगाल और बाल्टों में रंग लिए चल रहे थे। जब दो महल्ले के मोर्चे जम जाते थे तो बड़े-बड़े पीतल के हजारा पिचकारों से दोनों तरफ के होली वीर जमकर रंग-युद्ध करते थे। शक्तिशाली दल कभी-कभी कमजोर दल के पिचकारे और हंडे वगैरह छीनकर उन्हें भगा देते। एक-आध बार तो यह भी हुआ कि जीतने वाले लड़के हारने वाले लड़कों की टोलियों के सुन्दर लड़कों को घसीट कर इधर-उधर ले जाते और उनके साथ मनमाने ब्योहार करते थे।

दुलहंडी के दिन सबेरे ही चौक वाले देवरों ने नजरबाग वाली भाभी के घर धावा बोला। आर्यसमाजी कौशल्या के लिए बहुत रुचिकर न होने पर भी काशी और गनेशो-महेसो के लड़के शंकर, श्यामू, रद्धू, भम्मन वगैरह ने भाभी के आंगन मे होली की इतनी धूम मचायी कि गुड्डू घबराकर रोने लगा। चौक में घर और नजरबाग की होलियों मे अन्तर केवल इतना ही रहा कि यहां अबीर-गुलाल ही उछाला गया, पानीदार रंग नही। शाम को पति-पत्नी बच्चे को लेकर चौक वाले घर पर भी गए। कोनेश्वर से लेकर गोल दरवाजे के चौराहे तक मेले की बहार थी। कहीं खिलौनों की दूकानें सजी थीं, कही हिण्डोले और चर्खियां लगी थीं। मौसम में पहली बार मलमली कुर्ते, धोतियों, टोपियों मलमली अंगरखे, पाजामे, दुपट्टे पहने लोग एक-दूसरे से गले मिल रहे थे। घरों में औरतों से औरतें मिलने आ रही हैं। खाने वाले और खालियों के मुंह जुठारे जा रहे हैं, मिठाइयों और पकवानों की बहार है। रंडियों से होली मिलने के लिए उनके आशिकों का हुजूम जा रहा था।

मेले के दूसरे ही दिन लाला रिखबदास जौहरी का नौकर गाड़ी लेकर डाक्टर टण्डन को बुलाने आया। लाला रिखबदास ने खातिरदारी करने के बाद खोखा से कहा : "साहेबजादे, आपके वालिद मेरे बहुत पुराने दोस्त हैं।"

"जी, मैं सुन चुका हूं।"

"वह गेतीआरा की वालिदा को भी जानते हैं।"

खोखा चुप रहा। रिखबदास कुछ रुककर फिर कहने लगे : "आपके वालिद जैसे शरीफ और नेक इंसान की दोस्ती पर मुझे फक्र है। आपका संदेसा गुमानी मैया से मुझे मिल गया था। मैं इस किस्से को खुलासा जानना चाहता हूं।"

खोखा मन ही में अटक गया, नाम लूं या न लूं। किरपू डेविड के पिता कुंजू इसी महल्ले के निवासी हैं। तनिक सी लापरवाही से अनेक भ्रान्तियां भी उत्पन्न हो सकती हैं। यह सब सोचकर खोखा बोला : "जी, नाम बतलाने से कोई फायदा नहीं और मुझे सीधे तौर पर मालूम भी नहीं हुआ। मगर यह जानता हू कि खबर सच है।"

"खैर, मैं उन बदमाशों की टोह तो ले ही लूंगा और उन्हें मुनासिब सजा दिए बगैर भी न छोड़ूंगा। मगर मैं दिल से आपका एहसानमन्द हूं, बेटे। आपने मुझपे बहुत एहसान किया। क्या कहूं, जो गलती जवानी में समझ में नहीं आयी थी, वह अब इस ढलती उम्र में मेरे लिए परेशानी का बायस बन गयी। चाहता था चूंकि लड़की मेरी है, उसकी शादी किसी हिन्दू से ही करवाऊं, भले ही वह सरावगी हो, वैष्णो हो, कोई भी हो।"

"उससे आपको कोई लाभ न होगा। शुद्धी के बाद फिर उसके लिए बिरादरी की प्राब्लम आएगी और आपकी चिन्ताएं बढ़ेंगी। मैं समझता हूं कि उस बहन के लिए कोई

मुसलमान पति ही अच्छा रहेगा। इसमें धर्म या मजहब को इतना न खींचिए। अपनी बच्ची का सुख देखिए।"

लाला रिखवदास गंभीर होकर सोचने लगे, फिर पालथी बदल कर बोले : "खैर, तनकुन बाबू कब तक आ रहे है ?"

"जी, मैंने उन्हें लिखा तो जरूर है। वह शायद कलकत्ते में मेरी बहन के विवाह के लिए भी कुछ बात चला रहे हैं। इसके अलावा और कुछ योग-ध्यान वगैरह का चक्कर भी उन्होंने चला रखा है। कलकत्ते में कोई रामकृष्ण परमहंस योगी सन्यासी थे। उन्ही के किसी चेले को उन्होंने अपना गुरु बना रखा है।" चलते-चलते खोखा ने फिर एक बार पूछा : "वैसे बड़ो से मुझे पूछना तो नही चाहिए, मगर आपने चूंकि कहा, इसलिए पूछना चाहता हूं आप मेले मे उन लोगों से बदला किस तरह से लेंगे ?"

"संस्कृत में एक कहावत है—'पठे पाठ्यम समाचरेत्'। मैं जानता हूं कि यह काम कौन करवाएगा। कुंजू के मालिको का यह बुर्दाफरोशी खानदानी पेशा है। मैं इस बार उन्हें दुनिया की निगाहों में उजागर करके ही रहूंगा, छोड़ूंगा नही।"

चलते समय पांच गिन्नियां खोखा के हाथ में रखी। खोखा सकुच गया, लालाजी स्नेहवश 'आप' से 'तुम' पर उतर आए। बोले : "देखते क्या हो, त्योहार के दिनो में आए हो। तुम्हारा लेने का हक है और मेरा देने का।"

"मगर ?"

"मगर-वगर कुछ नहीं, अपने दोस्त के इतने लायक बेटे को जो आशीर्वाद मुझे देना चाहिए, वही दे रहा हूं। खामोश होकर जेब में रख लीजिए और खूब तरक्की कीजिए। और जब तनकुन बाबू आयें तो उनसे कहिएगा कि मुझसे मिल लें।"

आठों का मेला। सआदतगंज में शीतला पूजकर बहुत से लोग मेंहदीगंज होते हुए इधर टिकैत राय के तालाब की तरफ आते हैं। मुसलमानों में भी इस मेले का बड़ा जोर रहता है। असफुद्दौला के दीवान राजा टिकैतराय का बनवाया हुआ बडा चौकोर तालाब जिसके एक ओर शिवाला बना है और दूसरी ओर मस्जिद। तालाब के चारों ओर सैकड़ों दूकानें लगी हैं। कही पटा-बनेठी, गदा, बिनवट आदि के दंगल हो रहे हैं। भीड़ लडने वालों को हौसला देने के लिए शोर मचा रही है। कही मुशायरों की वाह-वाह हो रही है। एक जगह कनात शामियाने लगाकर भाटों का मेला भी हो रहा है, ख़यालगोई के दंगल हो रहे हैं, लोक गीतो का रंग जमा हुआ है। इस साल मटियाबुर्ज मे नवाब वाजिदअली शाह का स्वर्गवास हुआ है, सो उस समय के गीत गाने वालों की बड़ी धूम है—

"श्रीपत महराज तुम विपत निवारों,
कब अइहैं हजरत देस हो,
पहिल मुकाम कान्हपुर कीनों,
दुसर बनारस जात हो,
तिसर मुकाम कलकत्तवा में कीनो,
बेगमें तो भागी पहार हो।…"

"जिस वक्त साहबना शहर लखनऊ लिया,
वाजिदअली, जो शाह था, कलकत्ता चल दिया।
शाहजादगान बेगम हमराह कर लिया है,
मलिका मुअज्जमा ने तनख्वाह कर दिया है।

अकबाल से फिरंगी मुल्क अवध ले लिया,
सब राजगान खौफ से इतायत कबूल किया।…"

जानेआलम पिया वाजिदअली शाह के बहाने लखनऊ का जनमानस एक दिवस के लिए फिर भाव प्लावित हो गया।

भाट-भाटिन का मेला एक ओर अलग कनात और शामियाना लगाकर आयोजित किया गया था। एक विशाल मच पर कार्चोबी की गद्दी मसनद लगाकर उस पर भाट राजा और रानी बैठे थे। राजा के सिर पर जरी का बड़ा शानदार साफा बंधा था। वह मखमल का सुनहले-रुपहले बेले-बूटों वाला चोंगा व गले में कण्ठा पहने बैठा था। उसके एक हाथ मे एक मोटा-सा लट्टू था, जिसके ऊपरी सिरे पर एक गुड्डा बंधा हुआ था। राजा की बांयी ओर भाट रानी के वेप में एक अन्य भाट अपनी मूंछों को साड़ी के पल्ले से ढाके हुए कीमती आभूषणों से सुसज्जित होकर बैठा था। सिंहासन के दोनों ओर मंच पर भाटो की टोलियां विराजमान थी। उस दिन काव्यपाठ अन्त्याक्षरी नियम के बजाय ऋतुओं पर कविता सुनाने के नियम से ही चल रहा था। जो भाट श्रेष्ठ कविता के जवाब मे टक्कर का छंद न सुना सके तब भाट रानी को सुनाना पड़ता था। भाट रानी के छंद का जवाब भी यदि मिल जाय तो फिर भाट राजा को सुनाना पडता था। दुर्दैववश यदि राजा भी हार जाय तो उसका राजदण्ड छीनकर उसी की रानी के गहने लूटने के लिए धमा-चौक मच जाती थी। जो साहूकार राजा और रानी को भूल्यवान वस्त्राभूषण पहनाते थे उनके लठैत राजा रानी की रक्षा के निमित्त बराबर सतर्क बने रहते थे। मच के नीचे धरती पर हजारों सुनने वाले बैठे बड़े जोश से इस काव्य प्रतियोगिता का आनन्द ले रहे थे। एक कवि ने कवित्त सुनाया—

"डोले हैं तमालपत्र पांवड़े अवाई सुन गावत हैं गुणी
जन इत उत छाह के।
फूलि उठे कुन्दए मलिंद बेगचाय उठे, कूकि उठी
कोकिला कलापी चित्त चाह के।
प्यारे आम बौरि उठे पक्षीगण दौरि उठे,
चादनी चंदोवा जवलागे नर नाह के।
गिलमैं गुलाबन की गद्दीचारुचम्पन कि
बाग बीच डेरे हैं बसन्त बादशाह के।"

दूसरे कवि ने जवाब में सुनाया—

"आयो है बसन्त बौरे बागन बसी है धूम
बेलिपंग पुंज अरु पीरो दरशान हैं।
गूंजि रहे भौरे ठौर-ठौर फूले फूलन मे,
फवत समीर में सुगन्ध सरसान है।
नन्दराम देखो तो पपीहरा पुकारत है,
पिउ-पिउ प्यारी के पियूष अधरान है।
कैसे लाल चलिबे की चरचा चलावत हो,
ऐसे समै ऐसे बैन बान के समान है॥

दोनों कवित्तों की श्रेष्ठता पर बहस छिड़ी, तो उसे शान्त करने के लिए भाटिन रानी सुनाने लगी। सुनाते-सुनाते जोश में उसकी मूंछों पर से पल्ला हट गया। सभा में आसमान फोड़ ठहाके गूंज उठे।

इसी प्रकार भीतर भाट-भाटिन का मेला हो रहा था, और बाहर लाला रिखबदास के गुरगे, सत्तोलाला के गुण्डों की टोह ले रहे थे। नयनीदार तवायफ नंदनियां अपने आशिकों की खोज में चौकन्नी होकर इधर-उधर आंखें नचा रही थी। शौकीन जवान और अधेड़ खुशबूदार तेलों से महमहाते, चुहचुहाते पट्टेदार बालों पर तरह-तरह की टोपियां, पगड़ियां लगाए सजे-बजे अपनी सुर्मगी आंखों से किसी-न-किसी के साथ नजारेबाजी में मशगूल थे।

सत्तोलाला के गुण्डों को न कहीं हस्सो बेगम ही दिखायी दी और न उसकी बेटी गेतीआरा। हां, महताब चन्द के गुरगों ने उनके दो गुण्डों को अलग-अलग बहका ले जाकर उनकी अच्छी खासी धुनाई कर दी।

गेतीआरा की सुरक्षा के समाचार पाकर डाक्टर टण्डन ने निश्चिन्तता की सांस ली, परन्तु वास्तविक निश्चिन्तता अभी दूर थी। इसी आठों के मेले में बिरजू और किरपू डेविड भी अलग-अलग गए हुए थे। आपस में भेंट हुई, बिरजू ने कहा : "यार मैं खुदकुशी कर लूंगा।"

किरपू हंसा, बोला : "उसके लिए तुम्हारे बाप तुम्हें मौका न देंगे। देखते नहीं हो, तुम्हारे बाप के आदमी तुम्हारे पास कैसे छिप-छिप निगरानी कर रहे हैं?"

बिरजू ने एक गहरी ठण्डी सांस ली, कहा : "आधी जान तो मेरी गेतीआरा की कटीली नजरों में समा चुकी है और आधी, जिसे बोतल की परी में डुबोकर तुम लोगों के साथ जी बहला लेता था, वह भी इस साले उल्लू के पट्ठे मेरे बाप ने कैद कर रखी है।"

"घबराओ मत यार, मैंने एक बहुत अच्छी ट्रिक सोच रखी है। बस जरा तुम्हें मेरी सलाह पर चलना होगा और यदि चलोगे बाबू तो फिर मजा भी काटोगे।"

"बोलो-बोलो, मुझे क्या करना है?"

"बस एक हफ्ता भर सुबह उठकर नहा धोके, ठाकुर जी के सामने आंखें मूंदकर घड़ी-आध घड़ी बैठे रहना है और कुछ नहीं करना है।"

"इससे क्या होगा?"

"इससे यह होगा कि मेरे और तुम्हारे बापों को, मेरे और तुम्हारे भक्ती भाव का विस्वास हो जायगा। आजकल मेरी कामनी से बहुत पट रही है। उस साली का घर ऐसी जगह है कि पिछवाड़े शरीफों की बस्ती लगती है। वहीं पास में एक मकान लै के 'द ईस्ट एण्ड वेस्ट रेलिजस सोसायटी' का नाम लिखाकर पट्टा लगवा दूंगा।"

"ये कीर्तन-वीर्तन मुझसे न होगा भैया। जिस भगवान साले ने मुझे गेतीआरा से न मिलने दिया उस भगवान से मैं नफरत करता हूं।"

"अबे गधे, वहां एक आरा नहीं, कई आरे इकट्ठा कर दूगा तेरा कलेजा काटने के लिए। देसी भी, बिलायती भी। तू समझता क्यों नहीं? ढोंग-धतूरे के लिए दो चार लेक्चर भी करवा दूंगा। एक दिन रायसाहब के लड़के से आरसमाजी लेक्चर भी करा दूंगा। टट्टी की आड़ में शिकार खेलूंगा, बेट्टा।"

"ठीक है, ठीक है, समझ गया। अरे किरपू तुम मेरे फ्रेण्ड ही नहीं, गाइड हो। और गाइड ही नहीं, गाडफादर भी हो।"

'द ईस्ट एण्ड वेस्ट रेलिजस सोसायटी' का प्रथम अधिवेशन बड़ी शान से हुआ। चिकों के पीछे महल्ले की दो-चार शरीफ औरतों के नाम पर कुछ तवायफों की लड़कियां

और उनकी नायिकायें बैठी हुई थीं। बाहर के कमरे में किरपू डेविड के बटोरे हुए कुछ ऐसे मिदिलची जवान बैठे थे जो अपने घरों और अपने हिन्दू समाज से असन्तुष्ट विलायती मौज मजे के भूखे थे। उन्हें सब समझा दिया गया था। पहला उपदेश एक गोसाइंजी से करवाया गया, लेकिन आरंभिक भाषण के० एन० डेविड ने अंग्रेजी में दिया। गोसाइंजी कृष्ण गोपी रास का भेद समझाते रहे और युवक मन ही मन हंसते हुए प्रवचन के पश्चात् विलायती बोतलों में भरा 'जमना जल' पीकर अपनी कामिनियों के साथ रास नचाने की कल्पना में मन ही मन आनन्दित हो रहे थे।

प्रवचन के बाद गोसाइंजी तो फल मिठाई का आहार और ग्यारह रुपये दक्षिणा के लेकर चले गये, पीछे कामिनी और कई कंचन कामिनियों के साथ नये पढ़े-लिखे बाबू साहब मेमों की तरह पीते पिलाते और ऐश मनाते रहे।

देखा-देखी शहर में ऐसी दो चार नकली धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थायें और भी खुल गईं। पढ़े-लिखे बाबुओं और उनकी बेपढ़ी लिखी गंवारु-फूहड़ पत्नियों के आचार-व्यवहार में धरती और आकाश का अन्तर पड़ गया था। दफ्तर जाते या वहां से लौटने पर घरों में घुसते ही यह कोट-पतलूनधारी जब अपनी पत्नियों को पैरों की अटेकन पर अपने छोटे लडके को मल-मूत्र कराते देखते, अपनी पत्नियों की फूहड़ कलह भरी बातों को सुनते तो उन्हें गहरी वितृष्णा होती थी। ऐसे युवकों के लिए तवायफों या ओछे स्वभाववाली, आर्थिक तंगियों से मजबूर ईसाई बालाओं के साथ 'रण्डी-बरण्डी' का सुख प्राप्त होता था। पढ़े-लिखे वर्ग में शराब और वेश्यावृत्ति का रोग इतना बढ़ गया कि घर-घर पर चिन्ताओं के पहाड़ टूट पड़े। इश्क और शराब के लिये बाबू को पैसा चाहिए। वह अपनी बीवी, मां या कमजोर होने पर अपने बाप को भी मार-पीट कर उनसे गहने रुपये घसीटता था। बेकारी भी अब धीरे-धीरे बढ चली थी। नये जीवन में कुछ पुराने पेशे भी खत्म हो चले थे। पैसों की चिन्ता में समाज में थोड़ी बहुत बौखलाहट ऐसे ही फैल रही थी जैसे गली महल्ले के लोगों की जबानों पर थोड़े बहुत अंग्रेजी शब्द।

आठों के मेले के बाद दूसरे दिन रविवार था। इस दिन डाक्टर साहब छुट्टी मनाते हैं, परन्तु सनीचर को आठों के कारण समाजी कार्यों में अपनी व्यस्तता के कारण चूंकि घर मे आने वाले रोगियों के लिए उन्होंने छुट्टी रखी थी, इसलिए इतवार को सबेरे उनका मतब खुला था। आज बड़ी भीड़ थी। पंचम बरामदे में बैठी भीड़ के शोर का नियंत्रण, विशेष रूप स्त्रियों के शोर का नियंत्रण नहीं कर पा रहा था और डाक्टर साहब के काम में बाधा पड़ती थी, इसलिए रामभरोसे कम्पाउण्डर स्वयं बाहर आया। लम्बा-चौड़ा हट्टा-कट्टा, दवाओं के कम्पाउण्डर से अधिक पहलवान लगने वाला रामभरोसे कमरे से ही नाक पर उंगली रखे हुए आया और झुककर फुसफुसाहट भरे स्वर में कहा: "सब जने यहां से उठो—बाहर चलो—चलो। शोर मचाया तो मैं फाटक से बाहर निकाल दूंगा। उठो-उठो।"

भीड़ बंगले के बाहर लान में आ गई। रामभरोसे बोला: "पंगत में बैठ जाओ।" रामभरोसे ने स्वयं ही कुछ अधिक रोग वालों और उनके साथ आने वाले-वालियों को छांट कर आप ही आगे बैठाया, फिर कहा: "पंचम, देखो कौनों पंगत न बिगाड़ पावै। चाक-चाक करके भेज्यो। और जो सार हल्ला करै, उइका कान पकड़ के फाटक के बाहर निकालि देओ।"

भीड़ का हो-हल्ला कुछ कम तो अवश्य हुआ, किन्तु इससे पंचम के कुछ अनधिकृत अधिकार भी बढ़ गये। एक बार रोगी की दशा का ध्यान रखते हुए 'कमपोटर साहब' कम बांध गये थे, अब चपरासी साहब बांधने लगे। उन्होंने कुछ बच्चों या स्वयं रोगिणी

स्त्रियों की शक्ल-सूरत चुनकर पिछले क्रम में कहीं-कहीं परिवर्तन लाना शुरू कर दिया। यह मतब वाली भीड़ अधिकांशतः गरीबों की भीड़ होती है। इस भीड़ से फीस भले न मिलती हो, मगर जो शोहरत डाक्टर टण्डन को मिली है वह हजारों रुपये खर्च करके अखबारी विज्ञापनों से शायद न मिल पाती। फीस दे सकने वाले रोगियों के लिए उन्होंने अपने लालबाग स्थित मतब वाले बंगले में आपरेशन आदि का एक कमरा अलग निश्चित कर रखा है।

उस दिन मौसम के बुखार के बच्चे-मरीज बहुत थे, चूंकि बंगाली बाबू डाक्टर बिना फीस लिए किसी को देखते न थे और समाज में हकीम, बैदों से अधिक डाक्टरों का दबदबा बढ़ गया था, इसलिए समाजसेवी, दयालु डाक्टर देशदीपक के यहां ऐसे मरीजों की भीड़ बहुत आती थी। साधारण रोगी यहां नुस्खा लिखाते और अस्पताल जाकर मुफ्त में दवा लेने के लिए फिर भीड़ लगाते। ऐसे रोगियों को नुस्खा देते और दो-चार सर्जरी के केस भी देखते-देखते दिन के साढ़े बारह बज गये। एक औरत और एक बूढ़ा आदमी डाक्टर टण्डन से मिले बगैर ही पंचम के द्वारा फाटक से बाहर निकाल दिये गये थे। घर जाने के लिए डाक्टर टण्डन की टमटम ज्यों ही फाटक से बाहर निकली, त्यों ही बुड्ढे बुढ़िया गुहारते हुए घोड़े के सामने ही आ गये, बोले : "दुहाई है सरकार, हमारी बिथा सुनी जाय अन्नदाता।"

टमटम के पीछे खड़ा हुआ पंचम त्योरियां चढ़ाकर उतरा ही था कि डाक्टर टण्डन ने लगाम खींचकर बुड्ढे-बुढ़िया को अपने पास बुलाया।

पता लगा कि मार्टिन पुरवा के कुछ आगे ही होली के दिनों में कुछ शराबी रईस गुण्डों ने उनकी लड़की और पतोहू को कुएं से पानी भरते समय घेर लिया। बूढ़े-बुढ़िया का बेटा जो कुएं से थोड़ी ही दूर पर सड़क किनारे बैठा जूते गांठ रहा था, गुहार सुनकर जब अपनी पत्नी और बहन को बचाने के लिए आया तो उसे इतनी जोर से ढकेल दिया कि उसका सर फूट गया है। दो दिन से कोई दवा दारू उस पर असर नहीं कर रही है और वह बेहोश पड़ा है। एक तो वह लाने योग्य भी नहीं और दूसरे उसे यहां तक लाने के साधन तक वे न जुटा सके। "हम बहुत बिपदा में पड़े हैं सरकार। यार्क-याकु लरिका है, का कही सरकार। आपै हमार धनन्तर हौ, चाहौ तो जियावौ चाहै तो मारि डालौ।"

बुड्ढे-बुढ़िया की आर्त दशा देखकर डाक्टर टण्डन ने पंचम से कहा : "दोनों को सम्हाल कर गाड़ी पर बैठा दो।" टमटम मार्टिन पुरवा की ओर दौड़ चली।

"मार्टिन पुरवा आ गया। अब ?"

"बस हियां ते थोरहै दूर है, माई···बाप।" गाड़ी जाने का रास्ता नहीं है। डाक्टर साहब ने बैग उठाया और पंचम से कहा : "तुम घोड़े के आगे थोड़ी घास डाल दो और यहीं मेरा थोड़ा इंतजार करो।"

डाक्टर साहब का बैग बुड्ढे ने अपने हाथ में ले लिया। चलते-चलते लगभग एक मील आगे बढ़ जाने पर डाक्टर साहब जब पूछें कि अब और कितनी दूर चलना है भाई, तभी बुड्ढा कहे कि बस नरम नरम पाव कोस, नगिचिहै है। दो तीन बार यह वाक्य सुनकर थकावट के बावजूद डाक्टर टण्डन को हंसी आ गयी, कहा : "तुम्हारा नरम-नरम पाव कोस आखिर कहां खत्म होगा भाई ?"

धूप में अब तेजी आ चली थी और भूख का समय भी हो गया था। चलते हुए खोखा अनख और अलसाहट तो अवश्य अनुभव करता रहा, मगर नरम-नरम पाव कोस यानी दो मील चला ही गया। आखिर मंजिल आ ही पहुंची। बीस बाइस चमार घरों की बस्ती, हर झोपड़ी खस्ता हालत में। मरीज अब भी बेहोश पड़ा था। जवान लड़कियों

को भगा ले जाने वाले रईस गुण्डे और कोई नहीं स्वयं जमींदार-नन्दन और उसका एक मित्र ही था। होली के दिनों में खास तौर से, और यों भी शराब में मखमूर मौज जब आ जाये, तभी इस बस्ती की किसी या कुछ औरतों को भगा ले जाना यहां के लिए आम बात थी। दो-चार घड़ी या दो चार दिन भी कभी-कभी ऐसी स्त्रियों के लौटकर घर आने में लग जाते थे, किन्तु बूढ़े मंगरु की बेटी और पतोहू अभी तक वापस नहीं लौटी थीं। डाक्टर मंगरू के बेटे को देख चुके थे और यह जान गये थे कि वह बच न पायेगा। उसके भेजे की एक नस फट गयी है जिसका इलाज नामुमकिन है। डाक्टर टण्डन ने मंगरू और उसकी बुढ़िया को थोड़ी बहुत दम-दिलासा तो दी मगर झोपड़ी से बाहर आकर एक दूसरे बुजुर्ग से कहा : "भाई, इसके शरीर का बहुत खून बह चुका है। यह ज्यादह से ज्यादह कुछ घण्टों का ही मेहमान है।"

मंगरू के घर आने वाले इस महादुख की बात सुनकर आसपास खड़े कई कलेजे के दुख-सहानुभूति में उमड़ पड़े। अछूतों की यह बस्ती ब्राह्मण ठाकुरों की बस्ती से बाहर रहती है। पृथ्वी पर जन्मते ही इस बस्ती के स्त्री-पुरुषों के दुःख आरम्भ हो जाते हैं। जमींदार की बेगार, सवर्ण सम्पन्न किसानों की बेगार। न करो तो गालियां और लात-जूते खाओ। इनके घरों की जवान लड़कियां और बहुएं तो मानों सम्पन्न सवर्णों की कुत्सित वासनाओं को उगलने के लिए जन्मजात पीकदान होती थीं। जमींदार हाथी खरीदे तो हथियावन का पैसा लाओ, रथ-घोड़े खरीदे तो उसके लिए कर वसूल किया जाय।

सुनते-सुनते देशदीपक की आंखों में आंसू छलछला आये। मंगरू और उसकी बुढ़िया को कुछ दिलासा देकर देशदीपक जब लौट रहा था तो गांव की सीमा पर मगरू की बेटी और पुत्रवधू थकी मांदी लड़खड़ाती हुई लौट रही थीं। उनके चेहरों पर थकन और भयातंक की स्पष्ट छाप थी।

घर लौटने पर नहाने-धोने, गुड्डू से हंस बोलकर मन बहलाने के बावजूद वह आंधियां न थमीं। इतवार के दिन एक बार आने वाली डाक में आज प्रभा और पापा की चिट्ठियां आयीं थीं। खोखा उन्हें पढ़ने में तल्लीन हो गया।

30

पत्नी की बीमारी के दिनों में प्रभा के कलकत्ते आ जाने के बाद से विपिनचन्द्र खन्ना की महल जैसी हवेली में फिर से नए प्राण आ गए थे, वरना बीस बाईस स्त्री-पुरुष, दास-दासियों के घेराव में भी वह अपनी रुग्णा पत्नी और छोटे बेटे के साथ भी निर्जन थे। जिंदा लाश की तरह जीवन गुजार रहे थे। श्रीमती चंपकलता टण्डन का 'दु:ख कराने' के लिए पति-पत्नी दोनों ही जब लखनऊ आए थे, उन दिनों भी अपने बड़े बेटे नितीन्द्र चन्द्र के योरप में कहीं लापता हो जाने के कारण खन्ना दम्पति चिन्तित और

उदास तो थे पर मंझले सोमेन्द्रचन्द्र खन्ना ने वकालत पास करके अच्छी चमक दिखलाई थी। बाद में वह पटने चला गया और तेजी से आगे बढ़ने लगा। सोमेन के पटना में बस जाने के बाद खन्ना दम्पति एक बार पटने गये थे। तभी उसके विवाह की बात भी चली थी। कन्या के पिता पटने के ही नए विचारों के एक संपन्न सजातीय थे। उन्होंने कलकत्ते की पंचायत द्वारा निष्कासित खन्ना दम्पति के धनी और प्रतिभाशाली पुत्र के माता-पिता होने के कारण मान दिया, उन्हें अपना समधी बनाना चाहा। कन्या बहुत सुन्दर और पढ़ाई-लिखाई भी गई थी। खन्ना दम्पति के जीवन में नए सिरे से रस की फुहारें महक भरी तरावट लाने लगी। लेकिन यह तरावट चार दिन की चांदनी ही रही। कलकत्ते आने के दस बारह दिनों के बाद उन्ही संभावित समधी महोदय के पत्र से ही यह सूचना मिली कि एक बहुत बड़े नवाब की युवा विधवा के प्रति आकृष्ट होकर सोमेन्द्रचन्द्र खन्ना अब मियां समीउल्लाह खान हो गए हैं। उनकी वकालत तो खैर दिनों दिन चमकेगी ही, मगर उनकी हैसियत इस समय बीस-पचीस लाख की हो गई है। आपके खानदान का नाम ऊंचा हुआ। बहुत बहुत बधाई!

यह बहुत-बहुत बधाई ही श्रीमती खन्ना को मार गई। उस दिन से जो खाट पर पड़ी तो आठ महीने के बाद उनकी काया ही उठी। उस समय तक प्रभा वहां पहुच चुकी थी। उसी ने मामा का घर सम्हाला। नवाब समीउल्लाह खा एडवोकेट ने धर्म परिवर्तन और विवाह के बाद पिता से कभी किसी प्रकार का सम्पर्क ही न रखा। खगेन तब तक एफ० ए० का विद्यार्थी था। चुप्पा तो शुरू से ही था, लेकिन पढने में बहुत तेज था। मां की मृत्यु, एक भाई के लापता और दूसरे के मुसलमान हो जाने से उसके मन की रेत में बहुत सारे प्रश्नो की कटीली नागफनियो का बियाबान जंगल तेजी से उगने लगा। गत वर्ष 16 अगस्त को जब भगवान रामकृष्ण परमहंस ब्रह्मलीन हुए तो सारा कलकत्ता ही भाव विह्वल होकर उमड़ पड़ा। 'रामकृष्ण भगवानेर श्री ठाकुरेर जय!' ठाकुर के साथ पढ़े-लिखे नरेन्द्रनाथ दत्त के जुड़ने से प्रभावित होकर कालेज, यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले युवक रामकृष्ण परमहंस के प्रति बहुत ही प्रभावित थे। श्री ठाकुर की महायात्रा के दिन नगर में उमडे भक्ति प्रवाह मे बी० ए० के छात्र खगेन्द्र के मन में यह स्पष्ट उजागर हो गया कि उसे भी नरेन्द्रनाथ के समान ही श्री रामकृष्ण ठाकुर की शरण में ही जाना है। रामकृष्ण तो अब नही थे किन्तु उन्ही के एक प्रमुख शिष्य रामकृष्णानन्द महाराज की कृपा प्राप्त करने में वह सफल हो गया। विपिन ने सुना, बेटा संन्यास लेकर योग साधना मे लीन होगा। सुन लिया पर बोले एक शब्द नही। प्रभा ने भाई को बहुत समझाया, खूब रोई, पर भाई तो ईश्वर को देखकर ही मानेगा। ईश्वर कोरा ज्ञान नही, कोरी भक्ति या कोरा प्रेम भी नही, वह कुछ और भी है जो सूक्ष्म है, गूढ़ है। खगेन उससे पहचान करेगा। 'बाबा यदि मेरा कल्याण चाहते हैं तो उन्हे आज्ञा देनी होगी।'

एक दिन वह पिता और फुफेरी बहन के पैर छूकर चला गया। विपिन खन्ना जीते जी मरे समान हो गए। इन्ही दिनो भावना के बहाव में जीजाजी को पत्र लिखकर उनसे कलकत्ते आने का आग्रह किया था। उनके रायसाहब के यहां आने के कुछ दिनों बाद ही पेरिस से नितीन्द्र का पत्र आया। विपिन बाबू के जीवन की बुझती मशाल में फिर से चमक आने लगी। पाच महीनो के बाद नित्तो घर ही आ गया। उन्ही दिनो बारानगर से खगेन्द्र की सेवा में नियुक्त पुराने नौकर केस्टो ने आकर कहा कि स्वामीजी महाराज ने खगेन्द्र को गंगासागर के तट पर रहने का आदेश दिया है। विपिन बाबू ने बंसीधर से कहा, "मैं एक बार नित्तो को नये सिरे से जमाऊंगा। आप खगेन्द्र को एक बार नई जगह

में व्यवस्थित रूप से जमा आएंगे तो मेरे मन का बोझ हट जाएगा।"

उन दिनो लखनऊ से खोखा का कुछ तीखा सा शिकायती पत्र आ चुका था कि भाग्य ने अगर गुड्डू को दादी का प्यार न दिया तो क्या उसके बाबा भी उसके प्रति दया न दिखलाएंगे। रायसाहब को यह बात सचमुच चुभी थी, उन्हें भी लगा कि यदि आज उनकी चमेली जीवित होती तो गुड्डू इतना अकेला न पड़ता। किन्तु विपिन का आग्रह उनके मन मे तत्काल विपिन के एहसानों का ध्यान दिलाकर पैनी छुरी की तरह चुभ गया। विपिन ने उसके ऊपर बहुत एहसान किए हैं, उसकी मोह रक्षा के लिए वह अपने मोह को दबा गए।

खगेन्द्र ने अलग एक भग्न घर की दो अपेक्षाकृत साबुत कोठरियो को गुरु की आज्ञा से अपनी साधना-स्थली के रूप में चुना था। बाबू बंसीधर ने उसका एक वर्ष का भाड़ा एक मुश्त ही चुका दिया और अपने लिए उन्हें एक अलग झोंपड़ी बनाने की व्यवस्था करनी पड़ी। खगेन्द्र सबेरे जब नहा-धोकर अपनी साधना में लीन होता तो उसकी कोठरी मे ताला बन्द करके रायसाहब कुटिया मे आकर उनके और अपने लिए दाल-भात तैयार करते। ठीक बारह बजे फिर खगेन्द्र की कोठरी जाकर खोलते, और धीरे-धीरे उसके सिर को सहलाना शुरु करके उसके ध्यान को भूलोक पर उतारते थे।

एक दिन खगेन्द्र का मन अपेक्षाकृत अधिक व्यवस्थित और आनन्दित देखकर रायसाहब ने पूछा, "तुम जब ध्यान करते हो, तो मन को कहां ले जाते हो ?"

"भीतर···।"

"भीतर क्या ? तुम निश्चित रूप से किसी कल्पना में ही अपनी भाव या विचार शक्तियों को समेटते होगे।"

खगेन्द्र ने कहा : "ध्यान कल्पना नही है, कल्पना से तो केवल काव्य ही रचा जा सकता है।"

"तुम भले ही मुझसे छोटे हो, पर अपनी जिज्ञासा के वश होकर मैं तुमसे पूछता हूं, तुम्हारी भीतर ले जाने की प्रक्रिया क्या है ?"

खगेन्द्र बोला : "अभी तो मैं स्वयं उस प्रक्रिया के पथ पर चल रहा हूं, लेकिन इतना कह सकता हूं कि मन और चेतना का प्रवाह बाहर की ओर ही दौड़ता है। उसे बाहर जाने मे रोककर भीतर प्रवेश कराने का प्रयत्न करता हूं—स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरो की सीमाओं से बाहर निकलकर 'गुरु प्रकाशरूपी' कुम्भक पथ पर आगे बढ़ता हूं।"

"यह कुम्भक माने शायद सांस को रोकना—"

"जी हां, किन्तु यह रोकने का काम मैं तो केवल यथासाध्य ही करता हूं, सच्चा सहारा गुरु देते हैं।"

खगेन्द्र अधिक बात तो करता नहीं, लेकिन कभी-कभी ऐसे ही उससे रायसाहब की कुछ बातें हो जाया करती थी और उन बातों ने रायसाहब का मन अपने मे फंसा लिया। क्या है यह जीवन, कहां से आता है, कहां जाता है ? इस तरह की बातें मन को बांधने लगी। गुरु नही मिले न सही, वह शिव को गुरु मानकर ध्यान करेंगे। श्री रामकृष्ण परमहंस दक्षिणेश्वर की काली जी का ध्यान करते थे, वह चन्द्रिकों जी का ध्यान करेंगे। परन्तु ध्यान न जमा, सांस को अधिक देर रोकते भी नही बनता था। यह प्रसंग उठने पर एक दिन खगेन्द्र ने कहा : "आप सांस रोकने की बहुत कोशिश न कीजिए, गुरु के बिना यह कार्य सम्भव नही होता।"

"कब मिलेंगे गुरु ? "

"समय आने पर गुरु स्वयं आ जाते हैं।"

रायसाहब का मन अपनी मनमानी ध्यानलीनता के भ्रम जाल से छिटका तो कही भी न लगा। वह एक ऐसे शून्य में विचर रहे थे जिसका कही ओर-छोर ही नही मिलता था। कब मिलेंगे गुरु, कैसे मिलेंगे ? गुरु भी सत्पात्र देखकर सौभाग्य से मिला करते हैं। बंसीधर ने ऐसा अब तक क्या किया है जिसके पुण्य प्रताप से उन्हें गुरु चरण-शरण प्राप्त हो ? अब तक वह अपनी महत्वाकांक्षाओं को केवल बाहर की दुनिया से ही जोडते और उसी में फैलाते भी रहे हैं। उन्होंने अंग्रेजी पढ़ी, विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी अपनी इच्छा शक्ति के बल पर बी० ए० पास किया, हेड-मास्टर बने, स्कूलों के डिप्टी इंस्पेक्टर बने, कार्यवाहक उप-शिक्षा निदेशक बने और रायसाहबी जैसा श्रेष्ठ मान-सम्मान भी सरकार से पाया। हा पाया अवश्य, लेकिन क्या इसे पाने के लिए मैंने अपना चरित्र बल नही खोया ? एक स्वेच्छाचारिणी, विलासी अंग्रेज स्त्री के प्रलोभन जाल में इस नीयत से जान-बूझकर फंसा था कि वह मेरे भाग्य की कुन्जी बन सकती है। उनकी यह इच्छा अवश्य पूरी हुई, नैन्सी की मार्फत ऊंचे वर्ग के अंग्रेजों से उनका सम्पर्क हुआ। भाग्य भी इच्छित ढंग से आगे बढ़ा, मगर बंसीधर को किसी हद तक आत्म-सम्मान भी गिराना पडा। गदर के दिनों मे केवल एक विलियम पिन्काट को छोड़कर हर अंग्रेज उनके सामने हिन्दुस्तानियों के प्रति घृणा के भाव ही देता था, और वह हर बार 'यस सर, यस सर' ही कहने को बाध्य होते थे। गदर के बाद सरकारी नौकरियों मे आगे बढ़ते हुए भी उन्होंने अंग्रेज अफसरों की चुभती हुई बातों का बुरा मन ही मन भले ही माना हो किन्तु उनका मुखर विद्रोह करने का साहस वह कभी नही कर सके। सामाजिक कारणों से भी उन्होने जो विद्रोह किए वह भी शायद अंग्रेजो के प्रति खून का घूंट पी जाने की प्रतिक्रियावश ही अपनी सामाजिक असत्यता से बदला लेने के लिए ही किए थे।

बंसीधर को इस समय अपने भीतर यह स्पष्ट रूप से दिखलायी दे रहा है कि जो सद्विद्रोह चमेलो से विवाह हो जाने पर भी पिता के धन-लोभवश उन्होंने दूसरा विवाह न करने के लिए किया था, उस विद्रोह की आग उनके भीतर फिर कभी वैसी सच्ची लौ न उठा सकी। उनकी बुद्धि सुविधानुकूल विद्रोह करने लगी। यह झूठ ही उनके लिए अब प्रगति के मार्ग में बाधक हो रहा है। दयानन्द का आर्यसमाज हो या राममोहन का ब्रह्म समाज, दोनों ही की सत्प्रेरणा उन्होने कभी पूरे दिल से ग्रहण नही की। केवल सुधारों के फैशनेबुल औचित्यों का ध्यान रखकर उन्होंने सब कुछ किया। उन्हें बाहरी दुनिया से सम्मान और प्रतिष्ठा मिली, नयी रोशनी की दुनिया ने भी उन्हे आदर-मान दिया। किन्तु क्या वे सचमुच उस आदर मान के योग्य हैं ? भीतर से वे कितने खोखले हो कि अपनी आगे बढ़ने की इच्छा को वे अब भली-भांति जगा भी नही पा रहे हैं।

की दुनिया मे ही लौटने के लिए आग्रहशील हो उठे। पोते की याद आने लगी, बेटे-बहू का ध्यान आने लगा। विपिन को चिट्ठी लिखी : "खगेन्द्र यहां खूब व्यवस्थित हो गया है, उसकी साधना बहुत अच्छे तरीके से चल रही है, सुना है उसके गुरुजी भी यहां शीघ्र आने वाले हैं। मैं अब एक बार लखनऊ जाने के लिए बहुत उत्सुक हूं, मुझे अब इसके लिए आज्ञा दो।"

विपिन खन्ना के रेतीले जीवन में नितीन्द्र को पाकर अब फिर से आशाओं के अंकुर फूटने लगे थे। पैर नहीं हैं न सही पर नितीन्द्र अब जीवन में नया उत्साह पाकर पिता के व्यापार कार्य में मन लगा रहा है। कोई एक कुशल बंगाली मिस्त्री उसके लिए लकड़ी के पैर भी बना रहा है, जिन्हें घुटनों से बांध कर छड़ी के सहारे चलने-फिरने लायक भी हो जाएगा। तब विपिन बाबू नितीन्द्र का विवाह भी कर देंगे। उनके घर में फिर से हंसी-खुशी के दिन आयेंगे।

बंसी बाबू गंगासागर से कलकत्ते आ गए थे, तभी लखनऊ से स्वर्गीय बड़के भैंए के लड़के परतब्बे का कोना फटा पोस्टकार्ड आया जिसके आरम्भ में यह वाक्य रेखांकित करके लिखा गया था कि चिट्ठी कपड़े उतारकर बांचिएगा।—"हमारी पुज्जनिया माता-जी का मंगलवार को सत्तमी तिथि के दिन रात के आठ बजे सुर्गबास हो गया सो जानिएगा। दसवां सुक्कर को होवेगा सो जानियेगा। चिरंजिउ खोखा की बहू ने हमसे कल ये भी कहा था कि आप पिरभा को जरूर-जरूर साथ लावें, लिखी परताब नरायन टण्डन।"

खोखा और हरों दोनों इसी मत के थे कि इस बार घर से दसवां, तेरही, सत्रही आदि की पुरानी रस्में मिटाकर चौथे के दिन शान्ति हवन कर लिया जाय, किन्तु गुमानी, उनकी पत्नी और हरनारायन की माता अर्थात् छुटके भैंए की विधवा पत्नी इस मत पर दृढ़ थी कि घर की सबसे बड़ी-बूढ़ी पुखिन की उत्तर क्रिया पुरानी रीति से ही होगी। बड़ी ताई का विमान बना, मर्चेट तक के रास्ते मे पैसे मखाने लुटाए गए। अपनी बड़ी भौजाई की अर्थी के साथ में गुमानी भैंए ने झंय्यम-झंय्यम बाजे बजवाए, शंख-घड़ियाल भी बजे। पोतो ने दादी के विमान पर मोर्छलें डुलाईं, सब काम पुरानी रीति से हुए। घर मे बड़ी तैया के हांसे-तमासे भी हुए। युवा पार्टी की एक न चली। यह सब कार्य कौशल्या, खोखा और हरों की इच्छा के विपरीत हो रहे थे। गनेसो की पत्नी भी अपनी जेठानियों के मत पर चलकर ही सब कामो में उत्साह ले रही थी, लेकिन महेसो की बौटी अपनी भतीज बहू के मत को ही अधिक मानने लगी थी। गुमानी-बौटी अपने पूरे पुराने जोश के साथ हांसे तमासे मे गाती थी—

"हाय-हाय री मेरी राम कचौड़ी
राम कचौड़ी तब बने जब बुढ़िया बुढ़वा मरे,
हाय, हाय री मेरी राम कचौड़ी।
राम कचौड़ी तब बने जब सारी बिरादरी खाय
हाय-हाय री मेरी राम कचौड़ी।…"

न मानने वाले लड़के पुराने रिवाजों का मजाक उड़ाते थे। कौशल्या रोज आती थी। स्यापे मे बैठती। घर के और कामकाजो में सहायता भी देती थी किन्तु बाकी धार्मिक

तमाशों मे उसने कोई भाग नही लिया। खोखा अस्पताल और मरीजों से छुट्टी पाकर एक बार शाम को चौक अवश्य आते और बाद मे अपनी पत्नी, बेटे, और नौकरानी को लेकर नजरबाग चले जाते। गुमानी तायाजी और ताई जी को हालाकि बहू का इस तरह जाना अच्छा नही लगता था किन्तु खोखा के दृढ़ मत के आगे वह कुछ बोल भी नही पाते थे। बड़ी ताई की मृत्यु के छठे दिन कलकत्ते से प्रभा और रायसाहब भी आ गए।

रायसाहब अपने बड़े भाई की आज्ञानुसार पैतृक घर मे ही रहे। दसवें के दिन उन्होने भी खोपड़ी और मूछें मुड़वायी। लेकिन खोखा, हर्रो और गनेसो, महेसो के सात मे से तीन लड़को ने खोपड़ी घुटाने मे साफ इंकार कर दिया। बिरादरी मे इस पर भी बहुत चख-चख मची, पर अधिक कुछ न हुआ। पंचो व ब्राह्मणो से इस बात पर समझौता हो गया कि नई रोशनी के लड़के दान ब्रह्म भोजादि के धार्मिक अवसरो पर उपस्थित न होगे। पुराने किस्से चलते रहे पर नया जमाना भी आगे बढता रहा। अब पुराने लोग पचीस तीस बरस पहले के जमाने की तरह तानाशाही फतवे जारी करने और लड मरने का होसला नही रखते थे। पुराने शेरों के दंत नख अवश्य झड गए थे परन्तु गुर्राहट अभी बरकरार थी। अच्छे सुधारक उन्हें हंसकर बर्दाश्त कर लेते थे।

प्रभा केवल पन्द्रह दिन ही रही। मामाजी के दो तार आए। स्वय उसे भी अब कलकत्ता अच्छा लगने लगा था। अपने एक वर्ष तीन महीने के कलकत्ता प्रवास के बाद लखनऊ लौटने पर रायसाहब बाबू बसीधर टण्डन ने पहला महत्वपूर्ण परिवर्तन तो यह अनुभव किया कि उनका 'खोखा' अब नगर की सर्वमान्य हस्तियों मे गिना जाता है। हर तरफ 'डा० टण्डन-डा० टण्डन' की जय-जयकार ही सुनाई पड़ती है, क्या अमीर क्या गरीब, सभी एक मुख से उसकी प्रशसा कर रहे हैं। रायसाहब ने धीरे-धीरे यह भी महसूस किया कि वह अपने रायसाहबी प्राप्त व्यक्तित्व की अपेक्षा डा० देशदीपक टण्डन के पिता के रूप मे अब अधिक गौरव पा रहे है। उन्हें अपनी हार पर अपनी ही जीत की अनोखी द्विविध अनुभूति हुई।

एक दिन अपने पुराने दफ्तर मे यह सूचना देने गए कि अब उनके पेंशन की राशि और कागज कलकत्ते के पते पर न भेजी जाय, वह यहा लौट आए है। इस बहाने अपने मातहत और आज के अफसरान से मिल लिए। डिप्टी डाइरेक्टर नैश साहब कोई जवान अंग्रेज आए थे। सुना, अच्छे और सुलझे मिजाज के हैं। मिलने के लिए पर्ची भेज दी। नाम के आगे रायसाहब और रिटायर्ड एक्टिंग असिस्टेंट डायरेक्टर लिखना न भूले। नैश साहब ने उन्हें तुरन्त बुलवाया और कुर्सी से उठकर उनसे हाथ मिलाया।

"इस आफिस में आने के बाद मैंने अक्सर आपके बारे में सुना था। खास तौर से अवध और नार्थ वेस्ट प्राविंस के एक सूबा बनाने की पृष्ठभूमि तैयार करते समय आपने बड़ी कुशलता के शिक्षा नीतियों को एक रूपता देने मे सरकार की सहायता की थी।"

"मैंने जो कुछ भी किया मि० नैश, वह हर लायल सर्वेंट को करना ही चाहिए। क्या बतलाऊं, मेरी पत्नी की अचानक मृत्यु हो जाने से मेरा जी दुनिया से उचाट हो गया, मैंने प्रीमैच्योर रिटायरमेंट ले लिया।"

"मुझे मालूम है, रायसाहब। जीवन मे आने वाले दुख को कोई मेट नहीं सकता। मगर आपको इस बात पर गर्व भी होगा कि आपका बेटा इतना कुशल सर्जन है।"

"ईश्वर की कृपा है। आप लोगो का अनुग्रह है।"

"सबसे बड़ी बात यह है कि डा० टण्डन मे चरित्रबल है। कलेक्टर मि० स्पाइक्स किसी हद तक यह भावुक हठ ठान बैठे थे कि आपरेशन उनके बगले पर ही हो लेकिन डा० टण्डन ने बेझिझक कहा कि मरीज पर डाक्टर की पूरी जिम्मेदारी होती है। आप-

एक मामूली-सी चीज भी बहुत महत्व रखती है। मरीज़ों को अस्पताल में
गा। मि० स्पाइक्स खुद ही बतलाते थे कि मेरे आदेश को ऐसे साहस से न
दुस्तानी के आगे फिर मेरी जबान न खुल सकी।"

हब को सुनकर आनन्द हुआ। उन्हें लगा कि भारत के शिक्षित वर्ग में दो
अचिंतनशील, अनैतिक और स्वाभिमान रहित कायर और दूसरा भारत
ग्रमी, साहसी और आत्मजयी नवनागरिक।

ऊ में भी अब दो तरह की आबादी साफ-साफ नजर आने लगी है। रायसाहब
दिन याद आया जब चपक को लेकर वह कलकत्ते से आए थे। उस समय
पहनने वाले हिंदुस्तानी शहर में इक्का-दुक्का ही नजर आते थे और अब
न, वास्कट, वास्कट की दायीं-बायीं जेबों से छाती पर चमकती हुई रुपहली
की चेन, हाथ में 'केन', सिर पर गोल फेल्ट टोपी, आंखों पर चश्मा लगाए
ाते जवान पुरानी आबादी की गलियों में भी कम नजर नहीं आते।
ाल रंग की झब्बेदार तुर्की टोपी के अलावा एक जैसे ही लगते थे। कोई-
बू अपने बुजुर्गों की पुरानी शान का ठेंगा दिखलाकर चुरुट पीते हुए भी
ी मैंए बतलाते थे कि शाम की सूनी गलियों में अब अनेक 'बाबू' किस्म के
नशे में धुत्त लड़खड़ाते गिरते-पड़ते अंग्रेजी में गालियां बकते हुए घर
दिखलाई पड़ने लगे हैं।

स्कृति ने सभा सोसायटियों का प्रचार और प्रसार बहुत बढ़ा दिया था।
म जमाने को आगे बढ़ाना शुरू किया था, वह अब उनके जोश को फलांग
बढ़ चुका है। यह सब होते हुए भी पुराने दिनों की विलासिता, काहिली,
ख़ान्दानियत की अकड़ अब भी इस शहर से कम नहीं हुई। हाथों में मेंहदी
सुरमा डाले, तेल से चुहचुहाते हुए पट्टेदार बालों को संवारे, पुराने किस्म
-शायरी और अपनी बेकार हो जाने वाली जवानी को बरकरार और
प्रकट डींगें हाकते हुए, दूसरों की सुन्दर स्त्रियों को उड़ाने या लड़कों अथवा
हबत में गन्दी आदतों के मैले, बदबूदार पानी में दिन-रात तैरने वाले
ब भी इस शहर के वातावरण को गन्दा कर रहे हैं। उनकी वह पुरानी
पतलून वाले, पढ़े-लिखे समुदाय को भी अपने ढंग से गन्दा कर रही है।
दीपक टण्डन शहर के इस वातावरण को अधिकाधिक स्वच्छ बनाने के
न से जूझ रहे हैं। कौशल्या ने पढ़ी-लिखी लड़कियों में जागृति लाने के
-गोष्ठियों का चलन भी तेजी से आगे बढ़ाया है। लड़की-लड़कों के विवाह
पर ही करने चाहिए। विवाह आदि उत्सवों में बहुत धन बेकार खर्च
की इस फिजूलखर्ची को रोकना चाहिए। औरतों को अपने घरों के नौकरों-
ता से नजर रखनी चाहिए ताकि वे चोरी, बेईमानी आदि न कर सकें।
ाय स्त्रियों को काम देने के लिए भी बहुत से आयोजन किए, औरतों को
कि वह मजबूरी में बुरे रास्तों पर न जायें। स्त्रियों में अच्छे-अच्छे भजन
र के नए-नए गीतों का प्रयोग भी होने लगा जिसमें पुराने ढोलक-मजीरों
नयम बजता है। डा० देशदीपक टण्डन भी समाज को उद्यमी बनाने के
कर रहे थे।

ी जी के पिछवाड़े रहने वाले एक सारस्वत ब्राह्मण पण्डित शिवनाथ
पि डा० टण्डन के आर्यसमाजी विचारों से सहमत न थे, फिर भी सुधारों
ी के पक्षपाती थे। एक दिन रविवार को बनारस में मुद्रित और लखनऊ

बड़ी काली जी स्ट्रीट से प्रकाशित अपना 'साहित्य-सागर' पत्र लेकर पण्डितजी रायसाहब बाबू बसीधर से मिलने आए। कहने लगे : "इसके ग्राहक बनिए और बनवाइए।"

खोखा ने पत्र उनके हाथ से लिया और उलट-पलट कर देखने लगा। फिर कहा : "आपने यह मधु-मक्खी पालन और शहद के व्यापार पर बहुत ही अच्छा लेख प्रकाशित किया है। मैं स्वयं भी इन्ही विचारों पर काम कर रहा हू।"

"इसीलिए तो आया हूं, डाक्टर साहब। नवाबी तो यहां से अवश्य चली गयी, मगर उनकी विलासिता के प्रेत और चुड़ैलें अब भी अपना ताण्डव कर रही है। ये ससरा भाटो का मेला, अफीमचियो का मेला वगैरह हमारे युवकों के सस्कार भ्रष्टाति-भ्रष्ट करते चले जा रहे है, हम उन्हें स्वस्थ मनोरजन भी नही दे सकते?"

रायसाहब बोले : "पण्डितजी, आपने बिल्कुल सही कहा, हमें मनोरंजन की निन्दा नही करनी चाहिए। यह इंसान के लिए जरूरी है। असल मे हम लोगो ने सभाओ और मीटिंगो का चलन तो अच्छा चलाया, और वह चलन अब काफी हद तक चल भी पडा है, अच्छा बुरा असर भी कर रहा है, मगर मनोरजन की तरफ हमने ध्यान ही नही दिया। इस मामले मे भी हमें कुछ करना चाहिए।"

शर्मा जी बोले : "रायसाहब, आप शायद बाबा हजारा बाग के स्वर्गीय महन्त गुरचरन दास जी के नाम से तो परिचित होगे।"

"अजी, परिचित ही नही बल्कि उनके अन्तकाल के दिनों मे मेरा उनका बहुत ज्यादह परिचय हो गया था।"

"तब तो आपको मालूम होगा कि महत गुरचरनदास जी ने खत्री कुल में ही जन्म पाया था।"

"खूब जानता हूं, वे लाहौर के थे और बचपन से ही साधु संगत मे पडकर उन्होंने उदासी पंथ मे दीक्षा ली थी। मगर खुद उन्हें किसी जात-पात से मतलब न था।"

"अरे, वह पूरे तपस्वी थे। तभी तो उनके तेज, प्रताप से बाबा हजारा की संगत इतनी बढी।"

"मैं जानता हूं, एक तरफ सिद्ध योगी और अखण्ड तपस्वी, दूसरी तरफ बहुत ही काबिल एडमिनिस्ट्रेटर भी। भीतर बाहर एक से, कमाल के आदमी थे।"

"आपको याद होगा, उन्होंने अपने यहां रामलीला चलवाई थी।"

"हां-हा।"

"यह रामलीला तो शायद महन्त हरचरन दास भी करवाते हैं।" खोखा ने 'साहित्यसागर' मेज पर रखते हुए कहा।

शर्मा जी बोले : "हां करवाते तो हैं, मगर अब कोई खास उत्साह नजर नही आता है। उनके मैनेजर चरनदास जी जबसे हटे और इंतजाम महाराजा बलरामपुर की देख-रेख में सुपुर्द हुआ, तब से सगत की हालत बेहद बिगड़ गयी है, रामलीला भी एक प्रकार से बन्द ही समझिए। लेकिन खुद महन्त हरचरनदास जी बहुत ही अच्छे आदमी हैं।"

"इसमे मेरी और आपकी दो राये नही हैं, डाक्टर साहब। महंत जी पर आपका कितना असर है मैं यह भी जानता हूं।"

डा० टण्डन शर्मा जी का मुख देखने लगे, बोले, "आप मेरी मार्फत महंत जी से क्या काम लेना चाहते हैं? आपकी यह मैगजीन तो वे मेरी सिफारिश के बगैर भी खरीद लेंगे।"

"मैं इसकी बात नही करने आया हूं, डाक्टर साहब, बल्कि अभी जो मनोरंजन की बात यहां पर चल रही थी उसी के उद्देश्य से बात चलाने आया हूं। आप महंत जी से

फिर रामलीला का मेला उसी जोर-शोर के साथ चालू करवा दीजिए, जैसा ब्रह्मलीन महंत गुरचरनदास जी के समय में होता था।"

डा० टण्डन गम्भीर होकर हल्के से खखारे, फिर कहा : "आप तो जानते ही हैं शर्मा जी, मैं झूठी पौराणिक कथाओं के प्रचार में—"

रायसाहब तैश भरे स्वर में बेटे की बात काटते हुए बोले : "यह कहे या न कहे मगर मैं आपके साथ चलकर नए महंत जी से यह बात जोरदार शब्दों में कहने के लिए तैयार हूं। भले ही मैं उनको न जानता हूं।"

"पापाजी, मुझे कहने में आपत्ति नही, मगर खुद महन्त जी को मेरी यह बात सुनकर आश्चर्य होगा।"

"कोई आश्चर्य नही होगा, आप समाज को स्वस्थ मनोरंजन देने के उद्देश्य से यदि इस बात को आगे बढ़ावें तो मेरी समझ मे वह मान लेंगे।"

"मगर यह राम और कृष्ण, शकर वगैरह-वगैरह क्या हमारी सामाजिक चेतना को गलतफहमियों से जड नही बना रहे?"

"जड़ता तब आती है, जब तर्क-तरु भाव-स्नेह से स्निग्ध नही होता। मन के भाव स्वस्थ रहे तो विचार भी वैसे ही आगे बढ़ते हैं, इसके साथ ही साथ भाव तत्व भी नये-नये रूपो मे अपना विकास पाता है।"

शर्मा जी की यह ओजपूर्ण बात सुनकर डा० टंडन विचार-मग्न हुए। शर्मा जी कहते रहे : "अजी महाशय, आपकी इन्दर सभा और गुल बकावली जैसे इश्किया-मुश्किया रंगों से क्या हमारे सीता राम की कहानी बदतर है जो उसका चलन न चलाया जाय?"

डा० टंडन कुछ न बोले, रायसाहब ने शर्मा जी की बात का समर्थन किया। शर्मा जी ने फिर कहा : "डाक्टर साहब, आप अगर आर्यसमाज के समर्थक हैं तो निष्ठापूर्वक रहें, मगर यह न भूलें कि समाज के अनेक स्तर हैं और नैतिक सुधारों के लिए हमें हर स्तर पर कार्य करना होगा। मैं भी, अब अपने प्रहसनों के अभिनय कराऊंगा। मनोरंजन के साथ उनसे भी हमें एक स्वस्थ दिशा मिलेगी।"

डा० टंडन ने उठकर शर्मा जी के पैर छू लिए, बोले : "ठीक है, मैं आपकी बात समझ गया। विश्वास रखें कि अपने सिद्धांतों का पालन करते हुए भी मैं आपके साथ हूं।"

पिता को अपने पुत्र की यह बात बहुत अच्छी लगी। पुत्र डाक्टर टंडन अब इतने अधिक व्यस्त रहने लगे हैं कि पिता-पुत्र में बातो का अवसर प्रायः बहुत कम आ पाता है। कौशल्या भी काफी व्यस्त रहती है। प्रायः दिन भर अपने स्त्री सुधार आंदोलन के कामो से बाहर ही बाहर घमा करती है। गुड्डू की देख-भाल के लिए एक सत्कुल की गरीब, विधवा, ब्राह्मणी को नौकर रख लिया है, वही देखभाल करती है। नजर रायसाहब भी बराबर ही रखते हैं।

प्रभा को कलकत्ता गए हुए अब बहुत दिन हो गए, वह पिता से कहकर गई थी कि, अब मुझे लखनऊ से कलकत्ता अधिक अच्छा लगता है। वहां मेरे जीवन का विकास अच्छा होगा। विपिन मामाजी को भी आपसे अधिक मेरी जरूरत है।" हां, सबकी अपनी-अपनी जरूरतें हैं, एक रायसाहब बाबू बंसीधर टंडन ही को अब किसी की जरूरत नही। सब अपनी अपनी दुनिया में मस्त हैं। उन्हे महसूस हुआ कि पत्नी ही मनुष्य की दुनिया होती है, वह नही रही तो अब उनकी दुनिया उनकी होकर भी अब उनकी नही रही। वह अकेले है, नितान्त अकेले।

किन्तु देशदीपक और कौशल्या अकेले नही थे। कौशल्या की अपनी नारी दुनिया के बहुत से काम थे। दो आर्य कन्या पाठशालाए चलती थी। एक पाठशाला मे वेद के मन्त्र,

हवन, गायत्री, संध्या, लिखना पढ़ना, हिसाब किताब रखना और आर्य भजन सिखलाए जाते थे, लड़कियों में वाद विवाद प्रतियोगिताएं कराके उन्हें बोलना सिखलाया जाता था। दूसरी पाठशाला में वैदिक मंत्रादि तो अनिवार्य थे ही, इनके अतिरिक्त सीना पिरोना, बेलबूटों की कढ़ाई, अच्छे गुड्डे गुड़िया बनाने की कला आदि काम सिखलाए जाते थे। शिक्षा मुफ्त मे दी जाती थी। दोनों पाठशालाओं की अध्यापिकाओ और एक-एक नौकरानी के वेतन, आवश्यक सामान आदि के खर्च के लिए कौशल्या टंडन और महाशयजी के प्रयत्नो से प्रतिमास नवासी रुपए बारह आने नौ पाई की राशि कुछ घरो से बंधे चन्दे के रूप मे आ जाती थी। प्रचार के लिए भाषण प्रवचन करने के लिए भी उसे अब अधिक बुलाया जाने लगा था। कौशल्या कथाओं और दृष्टांतों से हंसाती, मधुर कंठ से उपदेश गीत भजन गाकर मुग्ध करती, वेद की ऋचाओ के सस्वर पाठ से प्रभावित करती, नई चाल में ढल जाने वाली युवतियों और कुछ प्रौढ़ा महिलाओ मे भी वह अब बहुत लोकप्रिय हो चली थी।

डा० टंडन यद्यपि काफी सम्हल कर बोलते थे फिर भी सरकारी अफसर उनसे यदि अप्रसन्न नही तो प्रसन्न भी नही थे। यो शहर के अंग्रेज हल्को मे उनका आदर मान था। स्वास्थ्य विभाग मे उनके बहुत से सुझाव मान लिए जाते थे। इलबर्ट बिल के विरोध में जब अंग्रेज हाकिमो और अंग्रेजी अखबारों के स्वर भारतवासियों के प्रति विशेष कटु हो गए थे तो एक बार लेफ्टिनेंट गवर्नर के लखनऊ आने पर प्रसंगवश एक सरकारी अल्पाहार पार्टी में छोटे लाट साहेब ने तुनक कर बड़े लाट साहब के खिलाफ कहा : "रिपन भारतीय साम्राज्य रूपी जहाज का गलत कप्तान है। उसे वापस इंग्लैंड बुला लिया जाना चाहिए।"

डा० टंडन सिविल सर्जन के साथ उनके पास बैठे थे। लार्ड रिपन के प्रति उनके मन में आदर था, उनसे न रहा गया, बोल पड़े : "सच्चे न्यायप्रिय अंग्रेज होने के कारण लार्ड रिपन ने खुदगर्जी की दिशा मे साम्राज्य के जहाज को न चलाया, इंसाफ की दिशा पकड़ी। इसलिए गलत कैप्टन हुए।"

छोटे लाट ने अपनी तमतमाहट को पचाने की कोशिश मे रुख दूसरी ओर कर लिया। बाद में सिविल सर्जन ने बतलाया कि टंडन, तुमने उस दिन हिज एक्सेलेंसी को जवाब देकर अच्छा नहीं किया। इस साल रायसाहबी के लिए तुम्हारे नाम की जोरदार सिफारिश की गई थी।"

"सर, मैंने कोई गलत बात तो नहीं कही थी।"

"न-हीं, गलत तो खैर नहीं मगर शासक अंग्रेजो को रिपन की न्यायप्रियता सख्त नापसंद आई, न सिर्फ हिंदुस्तान मे बल्कि होम के लोगों को भी।"

"सर, आप बड़े ओहदे पर हैं, मैं एक मामूली सर्जन हूं। लेकिन हमारे पेशे की आत्मा भी वही है जो न्याय की है। मैं उससे अलग होकर कुछ भी नही रह जाऊंगा, केवल रायसाहब हो जाऊंगा।"

सिविल सर्जन खुलकर हंसे। डा० टंडन की पीठ पर हाथ थपथपाते हुए कहा : "तुम्हारे नैतिक साहस की प्रशंसा करता हूं, मित्र, लेकिन···खैर, जाने दो।"

सन् 1882 में इसी तरह कुछ अफसरों ने यह चाहा कि डा० टंडन म्यूनिसिपल चुनाव मे खड़े हों लेकिन डा० टंडन ने स्पष्ट कहा कि जब तक कलक्टर के अधिकारों का स्पष्टीकरण नही हो जाता तब तक मैं इसे लोकल सेल्फ गवर्नमेंट नही मानता।

कौशल्या के पास लाहौर से उसके पिता का पत्र आया। उसमें लिखा था कि तुम्हारे

ससुर जी ने मुझे पत्र लिखा है कि वह अपने पोते का मुंडन करना चाहते हैं। तिथि महीना सब पंडित से मुहूर्त सुझवाकर लिखेंगे। उस मौके पर आपका और समधिन साहबा का यहां पर होना बहुत जरूरी है।

पढ़कर कौशल्या को बड़ा अचरज हुआ। हमसे कोई बात तक नहीं की, सीधे पिताजी को चिट्ठी लिख दी। सोचा कि शायद 'उनसे' कहा हो। पर खोखा को भी कुछ नहीं मालूम था। रात को जब पिता पुत्र खाने बैठे तो कौशल्या ने विनोदी ढंग से कहा : "पापाजी, आप गुड्डू के मुंडन में क्या हम लोगों को नहीं बुलाइएगा?"

बहू के प्रश्न से रायसाहब एक बार चौंके, फिर हंस पड़े, कहा : "ओहो, मैं समझ गया। हकीमजी का लेटर मिला होगा तुम्हें।"

"यह मुझसे पूछने लगी कि क्या आपने मुझसे कुछ कहा था।"

"असल में मैं यह नहीं चाहता था कि तुम मुझसे इन रीत रिवाजों पर बहस करो। मुझे अपनी जिंदगी पर अब बहुत भरोसा नहीं रहा और मेरी यह इच्छा है कि अपने सामने अपने पोते का कोई शुभ कारज होते देख जाऊं। उसके जनेऊ या शादी तक जिंदा नहीं रहूंगा।"

"मुंडन कब करना चाहते हैं?"

"मैंने गुमानी भैये से कह रखा है कि छुट्टन पंडित से महूरत निकलवा लें।"

"पुरानी रस्म से करेंगे?"

"यह भाभी के ऊपर छोड़ दिया है।"

"मेरे मुंडन के समय तो आपने—"

"उस वक्त और ढंग से सोचता था। तुम्हें अंग्रेजी सभ्यता में ढालना चाहता था। तुम्हारी अंग्रेज उस्तानी और उनके बच्चों के मखौल उड़ाने के डर से मैंने ट्रेडिशनल ढंग से तुम्हारा मुंडन नहीं करवाया; नाई को बुलवा कर अंग्रेजी ढंग से बाल कटवा दिए थे। तुम्हारी मां नाराज हुई थी। उनकी इच्छा थी कि मुंडन चांदकों जी में कराया जाय। उसी का प्रायश्चित्त करना चाहता हूं।"

"मुंडन की रस्म चांदकों—"

"चौक के किसी मंदिर में होगी। पहली संतान के मुंडन पर देवकाज का महत्व है, उस दिन उसे पहली बार कुल देवी के दर्शन कराये जाते हैं। इस बार पूरी बिरादरी की दावत भी करूंगा। देखना चाहता हूं कि जिन लोगों ने कभी मुझे बिरादरी से बाहर निकाला था उनमें अब कितने मेरे पक्ष में आ गए हैं।"

खोखा कुछ न बोला। कौशल्या ने भी एक शब्द न कहा। खाना खाकर हाथ धोने के बाद खोखा ने कहा : "पापा जी, मैं सुधारों में विश्वास करता हूं।"

"ठीक है, रस्में होने के वक्त मत आना। तुम्हारे ससुराल वाले तो मौजूद ही होंगे, बहू होगी। तुम शाम को दावत के वक्त चले आना।" कहकर रायसाहब ने बुद्धू को हुक्का तैयार करके लाने का आदेश दिया और अपने कमरे में चले गए।

ससुर के भीतर जाने के बाद कौशल्या अपने लिए थाली परोसवाने लगी। खोखा वहीं कुर्सी खिसका कर बैठ गया, कहने लगा : "इस बार पापाजी जब से कलकत्ते से आए हैं पता नहीं उन्हें क्या हो गया है। सुबह शाम की पूजा पाठ, पुराने तौर तरीकों की हिमायत—"

"आपको मेरी कसम, बिल्कुल चुप रहिएगा।"

"लेकिन मैं—"

"मैं-मैं कुछ नहीं। क्यू-यू-आई-टी-ई, क्वायट! अंडरस्टैंड?"

पति के द्वारा अक्सर कही जाने वाली बात पत्नी ने शोखी से आंखें नचा कर कही। खोखा भी हंस पड़ा और चुटकी से कौशल्या का कान दबा कर कहा : "क्यू-यू-आई-टी-ई नहीं—आई-ई-टी। दस बार रटो।" दोनों हंस पड़े।

सोमवार के दिन शाम के समय श्रीमती कौशल्या और डा० देशदीपक टंडन दोनों ही अपने बेटे के चौल संस्कार के निमित्त लाहौर से आने वाले हकीम ब्रिजनाथ पुरी और उनकी पत्नी के स्वागतार्थ ऐशबाग स्टेशन गये थे। विवाह के पांच वर्षों के बाद कौशल्या अपने भाई और भावज को देख रही थी। ब्रिजनाथ के साथ ही एक उन्नीस बीस वर्ष का युवक भी उतरा था। सांवला बदन, चौड़ा कपाल, किश्तीदार काली टोपी, घनी काली मूछें और चमकदार आंखें, युवक ने शालीनतापूर्वक हाथ जोड़े।

"यह हमारे मित्तर हैं, भैय्येजी। बाबू बालमुकंद गुप्ता हमारे लाहौर से जो मशहूर पर्चा निकलता है न 'कोहनूर', उसके एडीटर—"

युवक बोला : "जी एडीटर तो मुंशी हरसुख राय भटनागर साहब हैं। मैं तो केवल उसके संपादकीय विभाग में काम करता था, अब तो वहां काम छोड़ चुका हूं और आपके नगर के निकट ही कालाकांकर राज से निकलने वाले 'हिंदोस्थान' समाचार पत्र में कार्य करने आया हूं।"

"तो आप यहां कहां ठहरेंगे?" गुप्त जी के उत्तर देने से पहले ही डाक्टर टंडन बोल उठे : "आप भी हमारे गरीब खाने को पवित्र कीजिए।"

कौशल्या भी तुरंत बोल उठी . "मायके से आया हुआ हर आदमी अपना भाई होता है भाई जी, और आप तो मेरे भैय्ये के मित्र भी हैं।"

गुप्त जी मुस्कुरा कर बोले : "आपके इन भाई साहब और आपके पिताजी दोनों का ही बहुत कृतज्ञ हूं। जितने दिन लाहौर में रहा उतने दिनों इन्हीं लोगों की कृपा से मुझे वह शहर पराया नहीं लगा था।"

'चंपक मेंशन', नजरबाग, में गुप्त जी की खूब खातिर हुई, रायसाहब से परिचय हुआ, उनका निजी पुस्तकालय देखा। हिंदी और उर्दू के कई पुराने अखबारों की जिल्दें देखकर गुप्त जी बहुत प्रसन्न हुए, कहा : "श्रीमान जी, आपने तो बहुत अच्छी सामग्री संग्रह कर रखी है।"

"हां, दरअसल मुझे नागरी से दिलचस्पी तब हुई जब मैं अंग्रेजी पढ़ने के लिए कलकत्ते गया था। वहां बंगालियों की सोहबत में जब बंगला भाषा सीखी तो नागरी हिंदी से भी मेरा कुदरती शौक हो गया। वर्ना मैं तो उर्दू, फारसी का आदमी हूं।"

"जी, शुरू में मैंने भी यही भाषाएं सीखी थीं और अभी तक मैं उर्दू अखबार 'नवीस' में ही जुड़ा हुआ था।"

"अब आप कालाकांकर के 'हिंदोस्थान' से कैसे जुड़ गए हैं?"

"वृन्दावन में भारत धर्म महासम्मेलन का अधिवेशन हुआ था, वहीं पं० मदनमोहन मालवीय से भेंट हुई। उन्होंने मुझे हिंदी पत्रकारिता से जुड़ने की सलाह दी और कालाकांकर आने को कहा।"

"पंडित मालवीय जी हमारे सूबे के रतन हैं। और ये कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह जी भी बड़े हिंदी प्रेमी आदमी हैं। उनके जैसा दरियादिल राजा ही हिंदी जैसी पिछड़ी जबान में ये डेली अखबार निकालने का हौंसला दिखला सकता था।"

"लेकिन राजा साहब तो सुना है पूरे अंग्रेज हो गए हैं? इंग्लैंड से एक मेम भी ले आए हैं? उनका कोचवान तक अंग्रेज है।"

रायसाहब हंसे, बोले : "जी हां, आपकी बात सच है। मगर वह मालवीय जी

का बड़ा आदर करते हैं। एक बार राजा साहब पीके नशे में बैठे थे, उन्होंने मालवीय जी को किसी काम से बुलवाया, वह पधारे, बातचीत हुई, परंतु जब उठ कर चलने लगे तो राजा साहब से कहा कि "आज के बाद फिर कभी मदपान करके मुझे मत बुलाइएगा।"

कुछ रुककर रायसाहब ने फिर कहना शुरू किया : "मेरे देखते ही देखते इन बीस-पचीस वर्षों में जमाना कितनी तेजी से बदला है। नए नए पढ़े लिखे लोगों की तादाद दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है, अखबार निकल रहे हैं, समाज सुधार होने लगे हैं। बड़ी तेजी से तबदीलियां आ रही हैं। मगर कुछ भी कहिए, अभी आपकी हिंदी जबान हिंदोस्तान की दूसरी जबानों से मुकाबला नहीं कर सकती है। अभी कुछ महीनों पहले ही मुझे इलाहाबाद जाने का मौका मिला था, वहां बाबू रामानंद चटर्जी साहब एक बड़े बंगाली आलिम हैं। वो बतलाते थे कि हिंदुस्तान में संस्कृत से निकली हुई जितनी भी देशी जबानों का लिटरेचर है यानी, गुजराती, बंगाली, मराठी वगैरह उन सब में हिन्दी ही बेहद कमजोर है। इसके मुकाबले में तो उर्दू बहुत जोरदार है।"

गुप्त जी बोले "गिलक्राइस्ट और उनके पिट्ठुओं ने उर्दू को बढ़ा दिया नहीं तो लल्लू जी लाल ने करीब-करीब उसी जमाने में हिंदी का गद्य भी रचा था।"

"खैर, मैं बजाते खुद तो उर्दू फारसी से ही जुड़ा रहा, मगर मुझे हिंदी मे बेहद दिलचस्पी है। मैं इसीलिए बनारस के बाबू हरिश्चन्द्र का बहुत कायल हूं। अगर राजा शिवप्रसाद जी 'सितारे हिंद' के 'बनारस अखबार' की हिंदी चली होती तो हमारी हिंदोस्तानी कल्चर ही मिट गयी होती। हमारा संस्कृत भाषा से जुड़ा रहना बहुत आवश्यक था। पूरी तौर से आर्यसमाजी न होते हुए भी मैं महर्षि दयानन्द की बहुत-सी बातों में विश्वास रखता हू और सच पूछिए तो हिंदी नागरी मे मेरी दिलचस्पी भी उनकी वजह से अधिक हुई।"

बातें आगे बढ़ते-बढ़ते सैयद अहमद खां और मुसलमानों के कांग्रेस में न शामिल होने के प्रसंग तक पहुंची। गुप्त जी बोले : "यही सैयद अहमद खां जब पंजाब में कालेज के चंदे के लिए गए थे तो अपने लेक्चर में कहा था कि क्या ही अच्छा होता जो मेरे एक ही आख होती, क्योंकि मैं हिंदू मुसलमानों को एक ही आख से देखता हूं। वही सैयद साहब फिर बदल गए और कहने लगे कि मुसलमान कौम की शिकस्ताहाली मुझे तकलीफ देती है और मैं यह महसूस करता हूं कि मुझे हिन्दू और मुसलमानों को दो आंखों से देखना चाहिए।"

रायसाहब जोश में बोले : "अजी साहब, 1884 में इन्ही सैयद अहमद खां साहब ने 'लाहौर इंडियन एसोसियेशन' मे दिए जाने वाले अपने ऐड्रेस के जवाब में कहा था कि 'नेशन' शब्द में हिंदू और मुसलमान दोनों जुड जाते हैं। कौमियत में मजहबियत का दख्ल नही होना चाहिए। हम सब इसी धरती पर पले हैं और बराबरी के साझेदार हैं। दरअस्ल हिंदू लफ्ज को हिंदू जाति के साथ नही जोड़ना चाहिए। हिंदुस्तान मे रहने वाले चाहे ईसाई हों या मुसलमान, सभी हिंदू हैं"'बल्कि मुझे याद है, उन्होंने बहुत जोर देकर यह भी कहा था, कि मुझे अफसोस है कि जहां आपने अपने लिए 'हिंदू' लफ्ज का इस्तेमाल किया वहां मुझे हिंदू न कहा।"

"हमारा देश तेजी से करवटें बदल रहा है, रायसाहब। लगता है, धर्म के नाम पर ही हमारा राष्ट्र बंट रहा है और आगे अधिक-से-अधिक बंटता चला जावेगा। जो मुसलमान अपने धर्म के प्रति कट्टर होते हुए भी कल 'हिंदू' कहलाना पसंद करते थे और अपनी भाषा को भी हिंदी ही कहते थे आज मुसलमान और उर्दू कहने मे ही गौरव बोध करते हैं। धर्मों ने हमारे बीच मे विरोधों की एक बहुत बड़ी खाई खोद दी है।"

रायसाहब बोले : "हिंदुस्तान के ज्यादातर मुसलमान, बल्कि कहिए कि 90 फीसदी मुसलमान अपने मूल रूप में तो हिंदू हैं ही। यह नफरत की आग दरअसल उन्हीं के कारण फैली है।"

"आपने ठीक कहा, रायसाहब, मैं आपको एक उदाहरण देता हूं। जिन दिनों में स्वामी दयानन्दजी के नाम की बड़ी धूमधाम मची थी, उन दिनों मुरादाबाद में एक खत्री मुसलमान हो गया था। उसने हिंदुओं के विरुद्ध उर्दू में एक पोथी लिखी। मुरादाबाद में ही एक मुंशी इन्द्रमणि नाम के सज्जन स्वामीजी के बड़े मित्र थे। उन्होंने खत्री महाशय को फारसी में 'तोहफतुल इस्लाम' पोथी लिखकर बहुत करारा जवाब दिया। आपने सच कहा, वह हिंदू जो मुसलमान हो जाते हैं अपने धर्म के सबसे कट्टर दुश्मन साबित होते हैं।"

एक ठंडी सांस लेकर रायसाहब बोले : "जाने क्या होने वाला है ? इस देश का सुधार होना तो अच्छी बात है मगर पुराने चाल चलन पर बिल्कुल ही पानी फिर जाए यह मुझे पसंद नहीं आता।"

गुड्डू का देवकाज-मुंडन सब चौक में हुआ। पुश्तैनी घर के पास वाले टीले पर ही शानदार मंडप सजाया गया, बड़ी भारी जेवनार हुई और रायसाहब को यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि जिन सजातीय परिवारों ने कभी उनका तीव्र विरोध किया था, उन्हीं के पढ़े-लिखे वंशज अपने पुरखों की वैमनस्य लीक मिटाकर दावत में शामिल हुए थे। एक नहीं आया तो उनका बेटा, चि० जयन्त टण्डन का पिता चि० देशदीपक टंडन उर्फ खोखा ही।

31

कुंअर शिवरतन सिंह के ब्याह के पचास बरस पूरे हो चुके थे। संपन्न और सुखी बेटों, बेटियों, बहुओं, दामादों और परमात्मा की दया से लगभग सोलह-सत्रह पोते पोतियों, और आठ-दस दोहते-दोहतियों वाली पचपन वर्षीया ठकुराइन साहिबा के मन में अपनी मुंह लगी परजा रामफली नाउन और बेलो महराजिन की प्रेरणा से यह हौसला जागा कि पचास बरस पूरे होने पर उनका और ठाकुर साहब का फिर से ब्याह रचाया जाय। कुंअर शिवरतन सिंह ने पहले तो पत्नी की बात को मजाक में टालना चाहा, किंतु बूढ़े सुहाग-गुमान भरे अटल हठ के आगे उनकी एक न चली। कुंअर साहब ने कहा कि, तुम ब्याह तो करोगी लेकिन उसके लिए मैं तुम्हारा मैका कहां से लाऊंगा ? तुम्हारे रिश्ते-कुनबे में तो आस-पास का अब कोई भी घर बचा ही नहीं है। किसके घर से तुम्हारा ब्याह होगा ?

अपने चौथे पुत्र के तीसरे बेटे को गोद में बिठाए हुए मचिया पर बैठी खिचड़ी

वालों वाली ठकुराइन बोली : "तनकुन लाला का बुलाव, उनके घरे ते हमार बिहाव हुइ जाई।"

"मलकिन, तुम अभी साठ की हुई नही पर सठिया जरूर गई हो। कहां ठाकुर गंज, कहां नज़रबाग – ससुर इत्ती दूर हम मौर सेहरा लगाए घोड़े पर चढ़े तुम्हें ब्याहन जाएंगे ! अच्छा स्वांग सिखाती हो।"

ठकुराइन पति से बिगड़ गईं, बोली : "हम तो नहीं पर अब तुम पूरे सठियाय गए हो। महराजिन वतावत रही कि चार जुग बीतै के बाद एक बार फिर मरद-औरत का बिहाव होय का चही। धरम कै बात है, सती लोक मां अस्थान मिली और मोच्छ मिलि जाई। हमार तुम्हार बिहाव जरूर हुइयै। तुम तनकुन लाला का बुलाय लेव, हम सब बात कर लेबै।"

रायसाहब ने आकर जब यह किस्सा सुना तो बड़ी जोर से खिलखिलाकर हस पड़े, बोले : "भौजी, इस मौके पर मैं तुम्हारा भैया बनने को जरूर राजी हो जाता मगर मेरे साथ तुम्हारा कन्यादान करने वाली नही है। खैर, यह भी कोई खास समस्या नही। यही सराय माली खा मे मैगी की कोठी पर तुम्हारा मैका बना दिया जाएगा।"

अब पंचायत पड़ी कि मैगी तो अंग्रेज है और वह भी रखैल, वह कन्यादान कैसे करेगी ?

"अरे कन्यादान कहां, अब तो बुढिया दान हुई है। अंग्रेज चीनी हब्शी कौनो तुमरी भौजी ससुरी हमका दान मां दै देहै, वहिमा का फरक पडत है।"

पति की बात सुनकर ठकुराइन के चेहरे पर एक बार फिर क्रोध की लपट लपकी। उसे भाप कर रायसाहब तुरंत बोल उठे : "अरे भौजी, तुम छोटे भैया की बातें सुनती ही क्यो हो। चुन्नो बीबी से कह दूगा, वह एक दिन पहले ही सौत के घर आ जाएंगी। सौतों में अब हेलमेल हो गया है। तुम्हारा तेल-वेल चढ़ जाएगा, फिर दूसरे दिन धूम-धाम से अपने इन्ही बूढे खूसट मियां के साथ घर लौट आना।"

मित्रो के लिए कुअर शिवरतन सिंह और उनकी पत्नी के पुर्नविवाह रचने का सवाद बडा ही रोचक रहा। कुछ आलोचना भी हुई कि पढ़े-लिखे लोगों को यह फिजूल-खर्ची न करनी चाहिए। शिवरतन सिंह के चारों बेटे इस समय ईश्वर की कृपा से अच्छा कमा रहे हैं। दो बेटे जमीदारी का काम सम्हालते हैं, उनमें एक ने दाल मिल खोल रखी है, दूसरे ने राइस मिल। दो बडे लडकों ने भी अपने-अपने कारबार जमा रखे हैं। सबसे बड़े बेटे की हैंडलूम फैक्ट्री है, जिसमें विलायती सूत से कपड़े बनाये जाते हैं। उससे छोटा वकालत करता है।

माता-पिता के पुर्नविवाह से पढ़े-लिखे बेटे तो चिढ़ रहे थे, किंतु बहुएं और पोते-पोतियां बहुत ही आनदित थे। शादी के दिन जामा-सेहरा पहनकर, पैर में महावर लगाकर कुअर शिवरतन सिंह हाथ मे तलवार ले, घोड़े पर सवार होकर अपनी 'एवजी' की ससुराल पहुंचे। रायसाहब, बाबू त्रिलोकीनाथ चोपड़ा, और भी नगर के बहुत से संभ्रांत मित्रगण उनके स्वागत के लिए खड़े थे। फोटोग्राफर का प्रबंध भी किया गया था, महाशय जी और शास्त्रीजी भी मौजूद थे। महाशयजी ने कहा, "कुंअर साहब, आर्यसमाज के पुरोहित को दक्षिणा दिए बिना आप बच नही पाइएगा, विवाह भले ही आप सनातनी पडितों से करवा रहे हों।"

कुवर साहब ने पूरी मौज और मस्ती से इस स्वांग का खूब आनंद लिया। आलोचको को उत्तर दिया कि कुछ काम दूसरों की खुशी के लिए किए जाते हैं। ज्योनार के मौके पर खोखा और कौशल्या भी अपने बेटे के साथ उपस्थित हुए थे। अपने हर पोते-

पोती वगैरह के लिए ठकुराइन ने मखमल के कोट, हाफपैंट, मोजे और जरीदार टोपियां बनवायी थी। जयंत टण्डन के लिए भी यही पोशाक बनी थी और वही पहन कर वह आया भी था। खूब नाच-गाने वगैरह हुए। चलते समय खोखा ने अपने कुअर काका से कहा : "आपने अगर इतना पैसा हमारे निर्धन सहायता कोष मे दे दिया होता तो कितना उपकार होता, काका साहब ?"

"अरे बरखुर्दार, हर बात में सोशल रिफार्म न छाटो, अब कुछ तो हम लोगो के फ्यूडल शौक रहेगे ही। बहरहाल तुम्हारे निर्धन सहायता कोष मे मैं पांच हजार रुपए जरूर दे दूंगा।"

डा० टण्डन इन दिनों बहुत तेजी से अपना सामाजिक कार्यक्रम बढ़ा रहे थे। उनके मन मे आठो पहर अपने देश और समाज की चिंता बनी रहती थी। उनकी प्रैक्टिस भी यद्यपि अब बहुत ही अच्छी चल रही थी फिर भी वह कभी-कभी 'ऐडवोकेट' अखबार मे लेख लिखने या इधर-उधर व्याख्यान देने बराबर जाया ही करते थे। बाबू गंगाप्रसाद वर्मा, बैरिस्टर ए० पी० सेन आदि वरिष्ठ नेता उन्हें शाबासी देते थे। सरकार की दमन नीति पर उनके विचार विनम्र किंतु दृढ शब्दो मे प्रकट हुआ करते थे। डाक्टर टण्डन के अपने राजनैतिक सामाजिक होश मे, खास कर लार्ड लिटन के जमाने से बराबर यही होता चला आया देखा था कि अंग्रेज सरकार पहले तो बुद्धिजीवियों के सुझावों को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया करती थी। अधिक शोर मचने पर फिर दमन किया जाता, और वह दमन तब तक बदस्तूर होता रहता जब तक सामाजिक आदोलन अपने अंतिम छोर पर पहुंच कर थक नहीं जाता। इसके बाद सरकार कुछ सुधार करती और यह दमन और सुधार का चक्र चलता ही रहता।

प्रबल आन्दोलन के बाद सन् 1817 के प्रेस एक्ट को जल्द ही वापस ले लिया गया किन्तु देश की युवा शक्ति का बढ़ता विद्रोह देखकर हथियारों के ऊपर कडी रोक लगा दी गयी। 1886 मे इनकम टैक्स ऐक्ट पर एक बार फिर से तीव्र स्वर मुखरित हुए। तीव्र विरोध हुआ। जिस कांग्रेस को ब्रिटिश कूटनीति ने ही स्थापित किया था, उसी काग्रेस से सरकार अब कुछ-कुछ चिढ़ने भी लगी थी। लेकिन अंग्रेजो के प्रति जनरोष दिनो दिन बढता ही जा रहा था। ऊपर से पिछले दो दशकों मे देश के किसी न किसी हिस्से मे अकाल भी पड़ते ही रहे। बंगाल मे युवा उत्तेजना काफी बढने लगी थी, उसी समय लखनऊ में गऊघाट पर पंपिंग स्टेशन बना और ऐशबाग मे वाटर वर्क्स बना। शहर के बडे लोगो के घरो में पानी के नल शुरू हो गये। कुछ पुराने रईसो ने शौक मे नल लगवा तो लिए पर उनसे पीने नहाने, यहां तक कि गौओं का सानी तक मे काम नही लिया जाता था। खाली छिड़काव कर लो, बगिया सीचो, फुहारे चलाओ, बस। सड़को पर भी जगह-जगह सरकार ने नल लगवा दिये। कुछ बरसो पहले कुओ से नगर मे पानी सप्लाई की योजना पर जब विचार शुरू हुआ था, तभी से शहर के आम लोगों के मनो मे यह अफवाह घर कर गयी थी कि अंग्रेज अपना कुल्ले किया, नहाया हुआ पानी भीतर नालो से जमीन को पिला रहे हैं, वही कुंओं के बहाने हमारे घरों मे भेजकर हमारा धर्म भ्रष्ट करेंगे।

इस विचार ने अविचारी भावोद्वेलित जनमत को एक प्रकार से जकड़-सा रखा था। सड़कों के नल से 'गरीब गंदार' लोग अपनी चरण धूल तो धो लेते थे पर पीते नही थे, अगर बहुत प्यास मे पिया भी तो चोरी से। सरकार ने इस अफवाह को दूर करने के लिए डाक्टर टण्डन की लोकप्रियता का सहयोग चाहा जिसे डाक्टर साहब ने सहर्ष प्रदान किया। नलो के ठेकेदार सान्याल साहब की सलाह से एक दिन गऊघाट पर नागरिकों की एक पार्टी का आयोजन कराया गया। उसमें सेठ-साहूकार आम्रे... दिलों

की बजारू मलिकाएं भी शरीक हुई। गोमती से पानी का खींचा जाना, और फिर ऐशबाग वाटर वर्क्स में उसे रोगाणुओं से मुक्त करके शहर में इधर-उधर भेजे जाने की सारी प्रक्रिया दिखलाई गई। दूसरे दिन से पर्दा-नशीन औरतों के मेले भी वहां जुड़े और डा० टण्डन ने लोगों को समझाया कि अंग्रेज सरकार एक ओर जहां बुरे काम कर रही है, वही कुछ अच्छे काम भी कर रही है, इसलिए उनकी बुराइयों से लड़ो लेकिन उनकी अच्छाइयों में योग भी दो। फिर भी परसों तक ठाकुर जी के भोग के पकवान और शुद्धतावादी लोग अपने घरों के शुद्ध कुएं का शुद्ध जल ही पीते रहे।

धीरे-धीरे शहर में पानी का अकाल तो दूर हुआ लेकिन बढ़ते हुए अन्न के अकाल में आम जनता रो-रो उठी। सन् निन्यान्वे, उर्फ संवत् छप्पन का अकाल ब्रिटिश भारत कहलाने वाले क्षेत्र में बहुत दूर-दूर तक पड़ा था। लगभग तीन करोड़ लोग उसकी चपेट में आए थे। मध्य भारत, बरार, बम्बई, अजमेर, मारवाड़ अकाल की कठिन चक्की में पिस रहे थे। बंगाल, पंजाब और मद्रास क्षेत्रों में भी अनाज की कठिनाई उत्पन्न हुई। अनुमान लगाया गया कि लगभग सत्तर करोड़ रुपये की फसल नष्ट हो गई थी। अकाल की कठिनाइयां दिनों दिन बढ़ रही थीं किंतु समाज के रिश्ते भी अपनी जगह कायम थे। ऐसे कठिन समय में किसी के घर दामाद आ जाय तो और भी मुसीबत।

"आयो री जमाईड़ो, धसक्यो जीव
कहां से लाऊं मैं शक्कर घीव,
छप्पनियां अकाल फेर मती आइजो म्हारी मारवाड़ में।"

फसल नहीं है, अनाज बेहद महंगा है, गांवों में लड़के-लड़कियां बेचे जा रहे हैं। पेट के खातिर गाय, ऊंट, बैल माटी के मोल बिक रहे हैं। फिर भी पापी पेट की आग नहीं बुझती है। भूखे गांव वालों के दल के दल गुहारते-पुकारते हुए आस पास के शहरों में निकल पड़े हैं। सुंदर, अक्षत-योनि कन्याएं दस-दस रुपये में, बाकी औरतें दो से लेकर सात रुपये के भाव में बुर्दाफरोशों के दलालों के द्वारा खरीदी जा रही हैं। हालत बहुत खराब थी।

अनेक नगरों से पहले आर्यसमाजी और फिर कुछ उत्साही सनातन धर्मियों के पढ़े लिखे युवक चंदा जमा करने लगे। कपड़े इकट्ठे किए। कुछ दल अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए जहां-वहां जा भी रहे थे।

और''''मरे को मारे शाह मदार!'

शाह मदार प्लेग की शक्ल में बम्बई में नमूदार हुए और आक्टोपस की तरह अपनी टांगें फैलाते हुए शहर-शहर, गांव-गांव मे फैल गए। गिल्टी निकली, तेज बुखार चढ़ा, लोग फिर लाश बन गये।

बम्बई से ही यह अफवाह भी फैली कि कुछ लोग विलायत से जहाजों में बोतलों में भर-भर कर कीड़े लाए हैं, उन्हें चूहों के बिलों में मोरियों मे डाल देते हैं, चूहे मरने लगते हैं और उनसे ही यह बीमारी फैलने लगती है। बम्बई में काम करने वाले पूरब के भैय्या लोग शहर छोड़कर अपने-अपने गांवों को भागे और गांवों मे यह महामारी विनाश की लहलहाती फसलों की तरह भर उठी। देखते-देखते ही घर के घर उजड़ गए, किसी घर में कोई अभागी बुढ़िया या बुड्ढा ही बच रहा और कहीं छह महीने का अकेला बालक। लाशें उठाने वालों के कन्धे सूज-सूज उठे थे। जब तक एक को पहुंचाकर गांव लौटते, तब तक दूसरी लाश तैयार मिलती थी।

डा० टण्डन अखबार पढ़ते और उनका कलेजा कांप उठता था। कभी-कभी ख्याल

आता कि यह बीमारी ईश्वर न करे इस शहर को भी अपनी लपेट में ले सकती है। इसके लिए अभी से ही नगर में सफाई और स्वास्थ्य की व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए। महाशय मुकुन्दीलाल अब रिटायर हो, एकाग्र चित्त होकर अपने 'जनरूपी-हनुमान रूपी-दयानन्द रूपी' इष्टदेव की सेवा मे लग गए थे। बोले : "डाक्टर साहब, ऐसे बात न बनेगी। पहले एक बार हम लोगो को शहर का मुआयना करना चाहिए। उसकी दशा को जब हम समझेंगे और सुधारने का प्रयत्न करेंगे तभी आपके सुधार सम्बन्धी विचार आगे बढ़ सकेंगे।"

देशदीपक मुस्कुराये, हाथ जोड़ कर बोले : "महाशयजी, मैं वाक्य बनाने के चक्कर मे वर्णमाला के पहले अक्षर 'अ' को ही भूल गया था, आपने मुझे सही कर दिया। तो चलिए, फिर आप ही ऐसा प्रोग्राम बनाइए जिससे कि नक्शेवार शहर की घनी बस्तियो को देखा समझा जा सके।"

अपनी इस नगर निरीक्षण यात्रा मे उन्होने प्रमुख आर्यसमाजियों का सहयोग लिया और उत्साही सनातन धर्मियो का भी। ज्ञानेश्वर जी के भाई पण्डित कालीशकर शर्मा बी० ए० तथा प० शिवनाथ शर्मा बी० ए० जैसे सुप्रतिष्ठित लोग भी साथ थे। नगर निरीक्षण के बाद पण्डित शिवनाथ जी उर्फ 'नाटे गुरु' ने ही उसकी रिपोर्ट लिखी और डा० टण्डन के द्वारा गठित नगर स्वास्थ्य सुधार समिति मे पढ़कर सुनाया :

"लखनऊ नगर की भूमि सम नही है। कही पर ऊंची और कही पर नीची है, पुरानी मोरियां मिट्टी से दब गई हैं। इसका फल यह हुआ कि जिन लोगो के घर नीची जमीन पर हैं वह बरसात में प्रलय का सामान देखते हैं। थोड़ी सी वर्षा होने पर ही ऊपर के भागों का पानी नीची जमीन पर जमा हो जाता है। यहा की बस्ती पुरानी है। जब यह पानी पुराने घरों में गली के रास्ते प्रवेश करता है तो गरीब मकान वालो की क्या दशा होती होगी यह समझ लेना कोई बड़ी बात नही है। हानि भी होती है और गरीबो के प्राणो पर भी बीतती है। इसके सिवाय यहा कूड़ा करकट भी फेकने का बिल्कुल ठीक प्रबन्ध नही है, लालटेनों की रोशनी भी इस प्रकार जलती है कि उसका होना न होना दोनो बराबर हैं। प्रसिद्ध मार्गों पर तो कुछ सफाई है भी, परन्तु गली-गली कूचे तो दुर्गन्धि का भण्डार ही हो रहे हैं। इन सबके ऊपर यह बात है कि शहर भर मे नालो के आस-पास इधर-उधर का कूड़ा करकट फेंका जाता है। यह नाले शहर भर मे फैले हैं इसलिए नगर भर को दुर्गन्धिमय कर देने के काम के कारखाने हो रहे हैं। इस ओर हमारे चुने और अनचुने सब मेम्बरो को ध्यान देना चाहिए।"

डा० देशदीपक टण्डन ने अपने प्रयत्न और प्रभाव से सरकारी हल्को मे भी इस बात को आगे बढाना आरम्भ कर दिया। डा० टण्डन की सामाजिक प्रतिष्ठा इतनी बढ़ गई थी कि युवक होते हुए भी मुन्शी गंगाप्रसाद वर्मा कभी किसी सामाजिक कार्यवश स्वयं ही उनकी कोठी पर आ जाते थे। मुन्शीजी भी आर्यसमाजी विचारो क पोषक थे।

उस दिन भी ऐसा ही हुआ। इतवार का दिन था, घर वालो ने सामूहिक रूप से यज्ञ-हवन आदि करके अभी ही नाश्ता करना आरम्भ किया था कि कोठी पर मुन्शीजी की सवारी आयी। खिचड़ी हो चली दाढ़ी, सुनहरे चश्मे, गोल टोपी, शेरवानी, पतलून और बूट पहने हुए मुन्शीजी की लम्बी, भव्य और तेजोमय काया ने 'चपक मेशन' के फाटक मे प्रवेश किया। खबर सुनते ही रायसाहब और डाक्टर टण्डन दोनो चटपट उठे और बरामदे में जाकर मुन्शीजी की अगवानी की। उन्हें ड्राइंग रूम मे बैठाया गया, कौशल्या ने आकर सम्मानित पुरुष के चरण छुए और स्वय ही उनके बूट खोलने लगी।

"अरे, यह क्या बहू ?"

"पापाजी वगैरे जलपान करने जा रहे थे। आपके जूठन गिरा लेने से हमारा घर पवित्र हो जायगा।"

मुन्शीजी मुस्कुराते हुए उठे, बोले : "आप लोगो के यहा देर से नाश्ता होता है ?"

"जी, आज हमारे यहां सवेरे हवन होता है न, इसीलिए रविवार को नाश्ते मे भी देर होती है और खाने मे भी।"

मुन्शीजी बोले : "मेरे पास दो पत्र आए हैं, एक तो पटियाला के लाला दयालीराम चोपडा का और दूसरा कलकत्ते से सारस्वत कुलभूषण पण्डित गोविन्द नारायण मिश्र का।"

रायसाहब बोले "बगाल मे सेंसस वालों ने खत्रियो को बनिया—"

"तुम्हारा अन्दाज ठीक है, बसीधर। यह तो बहुत अंधेर मच रहा है भाई, यानी कि हम खत्री लोग अब सेकेण्ड क्लास भी नहीं, थर्डक्लास हिन्दू हो गए। हद है। मिश्र जी ने बडा दु:ख भरा लेटर लिखा है।"

खोखा बोला : "यह अग्रेज अपनी अकड़ की लाठी से हम लोगों को ढोरों की तरह हाकते हैं। खत्रियो को बनिया बना दिया सेंसस रिपोर्ट मे।"

मुन्शीजी बोले "पण्डित गोविन्द नारायण जी के खत से मालूम पड़ा कि कलकत्ते का सारस्वत खत्री समाज इस मामले मे बहुत एक्टिव हो गया है। पंजाब के खत्री भी एजिटेटेड है। कलकत्ते वालों ने बर्दवान के राजा बनबिहारी कपूर को भी अपने साथ कर लिया है। जगह-जगह के पडितो से फतवे लिखवा रहे हैं कि खत्री सदा से क्षत्रिय वर्ण के ही माने गए है, वैश्य वर्ण के नही। यह बात और है कि समय को देखते हुए अनेक खत्री कुल अब व्यवसाय मे लग गए हैं, मगर इससे उनका सामाजिक दर्जा घटाया नहीं जा सकता।"

"बिल्कुल ठीक है। मैं जानता हूं कि पं० गोविन्द नारायण जी बहुत बड़े स्कालर है। कलकत्ते में मैं उनसे दो-एक बार मिल भी चुका हूं।"

"उन्होने लिखा है कि हमारे इधर लखनऊ, इलाहाबाद, बरेली वगैरह मे कहीं 'आल इडिया खत्री सभा' जो अभी कुछ महीनों पहले आनरेबुल बाबा खेम सिंह बेदी की चेयरमेनशिप मे लाहौर मे कायम हुई थी, उसका एक खास जलसा कही पर कर लिया जाय।"

"दिल्ली के रायबहादुर बैरिस्टर मदनगोपाल टंडन का नाम—"

"नाम ही नही, उन्हे भी खूब जानता हू। मेरे छोटे भाई ईश्वरी परशाद के बड़े दोस्तों मे है। तो किस सिलसिले मे उनका जिक्र तुमने किया, बंसीधर ?"

"वह इत्तफाक से परसो तक यही थे, हमारे मेहमान थे। उनसे भी यही बात हो रही थी कि खत्री जाति के स्वाभिमान की रक्षा के लिए हमे कुछ करना चाहिए। इसी सिलसिले मे वे कल सवेरे ही बरेली गए हैं।"

मुन्शीजी बोले : "इसके माने यह कि आप लोग भी यहां एक्टिव हैं। तो मैं मिश्रा जी को लिखे देता हूं कि वह या कलकत्ते का खत्री समाज और राजा बनबिहारी कपूर साहब जैसी आज्ञा करेंगे वैसा ही किया जाएगा। जहा कहेंगे वही खत्री सभा का स्पेशल सेशन करा दिया जायगा। आप उसके लिए राजा साहब को ही चेयरमैन बनने केलिए राजी करें।"

खोखा बोला : "हमारे यहा बाबू बंसीलाल सिंह ऐडवोकेट भी बहुत जोशीले हैं। आप लोग जहा भी इस स्पेशल सेशन को बुलाएगे वहां पैसे और इन्तजाम की कमी हम न होने देंगे, इसका आपको भरोसा दिलाते है।"

रायसाहब बंसीधर के निष्क्रिय जीवन में रस जागा। अपनी जाति के इतिहास को इधर-उधर से संकलित करने और पढ़ने लगे। परशुराम ने जब क्षत्रियों का संहार किया तो बहुत-सी बची हुई क्षत्रिय संतानें अपने मूल को छिपाकर जीवन यापन करने लगी। यह क्षत्रिय ही उच्चारण दोष के कारण खत्री कहलाने लगे। अलाउद्दीन खिलजी के समय तक लड़ना-भिड़ना ही इनका काम था। अलाउद्दीन खिलजी के साथ एक बार जब बहुत से खत्री युद्ध में शहीद हुए तो बादशाह ने कहा, कि अपनी-अपनी वंश बेलो को बढ़ाने के लिए तुम लोग विधवा विवाह करना आरम्भ कर दो। यही से ढाई घर, पाच घर, बारह घर, बावन घर, पछइए, पुरबिए आदि में खत्री बंटने लगे। वस्तुत: सब एक हैं। खत्री जाति एक है। यह जाति पेशे वाले 'कास्ट' शब्द से कहीं अधिक व्यापक है। जातियों के उत्थान और पतन होते हैं।

खोखा कहता है: "देश की सब जातियां मिलकर महाजाति बनती है जैसे नदियो से गंगा और गंगा से गंगासागर। हमारा देश अब सदियों बाद फिर से जाग रहा है। एक दिन सारी जातियां मिल कर भारतीय महाजाति बन जाएंगी। बीसवीं सदी नये भारत को जन्म देगी।"

बीसवी सदी आ गयी थी। रायसाहब बंसीधर टण्डन के जीवन मे एक नया जोश भी आ गया था। जिस बिरादरी की दकियानूसियत से वे जीवन भर लड़े थे, उसी स्वाभिमान की रक्षा के लिए उनका क्षात्र तेज भी नई पीढ़ी के साथ नई ताजगी लेकर उभरा था। जनम भर अंग्रेजों की हा में हा मिलाथी और आज उन्ही के विरुद्ध वे कुछ-कुछ आक्रोश भरी मन:स्थिति में भी आ चुके थे। लेख लिखे, पर्चेबाजी की, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली और लाहौर जहां-जहां उनकी बिरादरी के परिचित सुप्रतिष्ठित व्यक्ति रहते थे, वहां दस्तखत बटोरने के लिए उन्होंने खूब पत्र व्यवहार भी किया। कलकत्ते की खत्री सभा के कर्णधारो से भी क्षत्रियो के पुराने इतिहास के सम्बन्ध मे पत्र व्यवहार किया। लखनऊ के खत्री समाज में कई सभाएं की और इसी उत्साह मे 20 वी सदी के पहले वर्ष का सितम्बर मास आ पहुंचा। भारत के सेन्सस कमिश्नर श्रीमान् ए० एच० रिज़ले, सी० आई० ई०, महोदय का एक पत्र राजा साहब बर्दवान को मिला। उस पत्र के मिलते ही देश भर के प्रमुख नगरों में तार खटखटाये जाने लगे। शहर-शहर में खुशी की लहरें दौड़ गयी। भारत सरकार ने अपनी गलती स्वीकार करके उसके तत्काल सुधारने का आश्वासन भी दिया। कटारी टोले के शिवाले में खूब पूजा-पाठ हुआ, यज्ञ-हवन हुआ, कई सजातीय सम्पन्न व्यक्तियों ने धन-धान्य देकर पूरे खत्री सारस्वत समाज को भोज कराया। इस अवसर पर कुछ लोगों की इच्छा हुई कि नाच-गाने की महफिल भी करायी जाय।

परन्तु डा० देशदीपक टण्डन के विरोध से यह न हुआ। उन्होंने कहा: "हमारे देश में इतना जबर्दस्त अकाल पड़ रहा है, और ये प्लेग की महामारी तेजी से फैलती ही चली जा रही है। इस समय एक जाति की खुशी मे भारत की सभी जातियो का दुख भुलाया नही जा सकता। खत्री समाज अंग्रेज जाति के अन्याय के विरुद्ध लड़ा था। भारत की हर छोटी-बड़ी जाति पर अंग्रेज जाति ऐसे ही अनेक प्रकार के अन्याय करती आ रही है इसीलिए भारतीय जन की सहानुभूति हमारे साथ थी। आप भी एक भारतीय नागरिक होते हुए देश के कठिन अवसर पर क्या अपनी सहानुभूति उसे न देंगे? जो महफिलो में खर्च करेंगे वह धन मुझे दीजिए, ताकि मैं उसका सदुपयोग करके आपको दिखा सकूं।"

डाक्टर साहब जीत गए, बिरादरी के क्या छोटे और क्या बड़े सभी ने एक मुख होकर उनकी बड़ाई की। पुत्र की यह बड़ाई पिता को अच्छी तो लगती थी किन्तु उनका दिल भी सुनते-सुनते क्रमश: संकुचित होता चला जाता था। अपने पिछले साठ वर्षों के

जीवन में समय को आगे बढ़ाने में उन्होंने भी सक्रिय योगदान किया है।'''(अपना ही मन घुड़ककर बोला) खाक दिया, परिस्थितियों के थपेड़ों ने जिधर बढ़ाया उधर ही बढ़े, और केवल अपनी अहं तुष्टि के लिए, अपने व्यक्तित्व को विशिष्ट बनाने के उद्देश्य से ही हर काम किया। तनकुन, तुमने नयी सभ्यता की लहर में आकर अपनी मौलिक विचार शक्ति खोई और समय के फैशन में प्रचलित विचारों को ही प्रबुद्ध और निर्बुद्ध दोनों ही प्रकार से अपना कर उनका प्रयोग किया। ईमान से तुमने क्या किया है? बेटे का चरित्रबल बाप के चरित्र बल का बीज संस्कार नहीं वरन वह बल उसे अपनी मां से प्राप्त हुआ है। तुम्हारा क्या महत्व है? तुमने तो उसे भरसक अंग्रेज बनाने का प्रयत्न किया। तुम्हारा वश चलता तो तुम भी उसे हूबहू अपने जैसा जो हुजूर और दब्बू इंसान बना देते।'''हे प्रभु, मेरे मन को शांति दो। ज्ञान में, अज्ञान में, अपने गर्वगुमान में मैंने जो कुछ किया हो पर मैं तुम्हारी सत्ता के आगे सदा अदब से झुका रहा। मेरे भीतर का शीशा पक्का कलईदार है। सिर्फ उस पर बाहरी धूल के पर्त चढ़ गये हैं। हे प्रभु, हे सर्वेश्वर, दीनानाथ, अशरण शरण मुझे कोई ऐसा मार्गदर्शक दो जो मेरे मन दर्पण पर चढ़ी पर्तें उतारकर उसमें मुझे आत्मदर्शन करा दे।

रायसाहब बाबू बंसीधर खत्री स्वाभिमान की रक्षा के आन्दोलन की सोत्साह समाप्ति होने पर फिर से खाली हो गये और खाली होते ही मन की हीन भावनाओं और उच्चाकांक्षाओं के मकड़जाल मे फंसकर फिर खोने लगे। घर मे जी नहीं लगता, इसलिए चादको जो मे दो बीघे जमीन खरीदकर उस पर दो कमरों का एक कुटियानुमा मकान बनवाया, एक गाय रखी, थोड़ी फूल-फुलवारी लगायी, और गुरु की तलाश मे ऐसे ही बैठ गये जैसे किसी पर्व स्नान के दिन नदी के किनारे भिखारी बैठते हैं। जप करते हैं, तो थोड़ी देर बाद मन से भाव तो निकल जाता है। खाली तोता रटन्ती शब्द ही निकलते रहते हैं और यन्त्र की तरह माला के मनकों पर उनका अंगूठा और उंगली आगे बढ़ती रहती है।

एक बार अमावस के दिन एक बैरागी बाबा उधर आ गये। उन्होंने कहा: "भगवान कृष्ण एक मात्र पुरुष हैं सभी जीवात्मायें उनकी गोपियां हैं, उनके साथ रमण करो। जब काम वृत्ति अपना तामसिक रूप छोड़कर सतोगुणी बन जायगी तब तुम्हें गुरु भी मिल जायगा।"

लेकिन इस रमण नाटक का ध्यान भी उन्हें अपने मन के भीतर न ले जा सका बल्कि बाहर घूमते-घूमते ईश्वर के बजाय अपनी प्रिया रमणी स्वर्गीया चंपक और कभी-कभी (धोखे मे अचानक नैन्सी का रमण ध्यान भी) उभर आता था। गन्दी है यह क्रिया, यह साधना स्वामी हरिदास और वल्लभाचार्य जैसे अति शुद्ध हृदयवालों का ही काम है। इसकी नकल करते हुए गुसाइयों ने समाज मे कितना व्यभिचार फैलाया है? यह तरीका भी आम आदमी के लिए गलत है। तब क्या करूं, प्रभु, कैसे तुम्हारी शरण पाऊं? मन बहुत उखड़ा, कुछ दिन घर आकर फिर से रहे। शिवरतनसिंह, त्रिलोकीनाथ चोपड़ा, महाशय जी और बीमार मित्र प्रभुदयाल शास्त्री से भी मिले। अब उनका मन कहीं नहीं लगता था। अयोध्या गये, बनारस, मथुरा, हरिद्वार गए, कहीं चैन नहीं मिला। फिर से लौटकर घर आने की सोच ही रहे थे कि एक दिन धर्मशाला के पते पर उन्हें खोखा का तार मिला: "बर्दवान में प्रभा का विवाह निश्चित, तुरन्त आइए।"

घर आए। खोखा ने उन्हें विपिन मामा का पत्र और तार दिखाया। बर्दवान के राजा साहब के एक योग्य और युवा सचिव बड़ी छोटी उम्र में ही विधुर हो गये थे। राजा साहब उसे बैरिस्टरी पास करने के लिए राज्य के खर्च से विलायत भेजना चाहते थे ताकि लौटकर वह राज्य के लिए कानूनोपयोगी साबित हो।

लेकिन राजा साहब यह भी चाहते थे कि उसका विवाह करके उसे पत्नी सहित ही विलायत भेजा जाये, ताकि वह वहां किसी प्रकार से दुश्चरित्र न हो सके। संयोग से यह बात राजा साहब ने एक कार्यवश बर्दवान गए हुए विपिन बाबू के सामने ही कही। विपिन बाबू बोले : "मेरी भांजी है यौर हाइनेस, और उम्र मे भी बड़ी है। कलकत्ते मे डाक्टरी पढ़ने के इरादे से आई थी मगर अभी तक चूंकि यहां के मेडिकल कालेज मे लड़कियों को डाक्टरी नही पढाई जाती, इसलिए वह भर्ती न हो सकी। और उधर मेरी वाइफ की डेथ-वेथ हो जाने से घर में बहुत परेशानी थी इसलिए मैंने उसे यही रोक लिया।"

खन्ना जी ने लड़की के भाई और पिता का भी हवाला दिया। राजा वनबिहारी कपूर ने अपने सचिव चि० चन्द्रनारायण मेहरोत्रा को विपिन बाबू के साथ कलकत्ते जाने की आज्ञा दी पर यह न बतलाया कि वह किसलिए जा रहा है। चन्द्रनारायण खन्ना जी के घर ही मेहमान हुआ, वहीं प्रभा से देखी-देखा हुई। पिता के इशारे पर नितीन्द्र ने फुफेरी बहन से बात चलाई, उसकी सहमति पाकर विपिन बाबू ने चन्द्रनारायण से बातें की। रोक की रसम चट-पट हुई। बड़ी मिठाइया, कीमती अगूठी, कपड़े आदि देकर चन्द्रनारायण को विदा किया। राजा साहब ने तुरन्त ही चन्द्र के प्रौढ माता और पिता को प्रभा के लिए जड़ाऊ कंगनों के साथ भेजा। 12 अप्रैल को शादी का दिन तय हुआ था।

रायसाहब ने चिट्ठी पढ़ी। एक जगह बेटी की चिन्ता से मुक्त होकर मन जहा हल्का हुआ, वही दूसरी जगह विपिन के दूसरे भारी एहसान के बोझ से दब भी गया। खोखा बोला : "आज इक्कीस मार्च तो हो ही गई है, शादी के, दिन ही कितने बचे हैं? आप कल कौशल्या और गुड्डू को लेकर कलकत्ते चले जाइए, मैं ग्यारह अप्रैल की सुबह पहुंच जाऊंगा, और तेरह या चौदह अप्रैल को वहा से चल भी दूगा। आप आज्ञा करेंगे तो कौशल्या और गुड्डू को साथ ले जाऊंगा नही तो—"

"नही-नहीं।"

"मैं समझा नही, पापा जी?"

"मेरा जाना-आना अब हो नही सकेगा, भाई। मन को अब किसी तरह दूसरे छोर पर खीच ले जाना चाहता हूँ। तुम दोनों चले जाओ। मैं यही रहूगा बल्कि यहां नही, चांदको जी में ही रहूंगा। कोठी की देखभाल किसी मातबर नौकर चपरासी के जिम्मे कर जाना। मुझसे अब कुछ सम्हलता नही है भैया, मेरा जी भी अब कही नही लगता है।"

खोखा निराश हो गया। दो क्षण मौन रहकर बोला : "तब फिर मैं ऐसा करता हूं कि कल अपने अस्पताल के चपरासी के साथ इनको और गुड्डू की केयरटेकर गंगा बाई को कलकत्ते भेज दू। एक आध नौकर भी—मैं समझता हूं, पचम को भेजना ज्यादा अच्छा होगा।"

"ठीक है, बुद्धू मेरे साथ ही चाद को जी चला जायगा, मगर यहां तुम्हारी देखभाल कौन करेगा, बेटे?"

"उसकी चिन्ता न कीजिए, खाना बनाने वाली मिसराइन तो है ही। बाहर का कोई काम निकला तो माली से करवा लूगा या अपने कम्पाउण्डर रामभरोसे से कह दूंगा, कोई न कोई एवजी प्रबन्ध हो ही जायगा।"

रायसाहब फिर चांदको जी लौट आये। फिर से उनका कुटियानुमा पक्का घर धोया गया। बगीचे की सब्जी और फूलों का उपयोग चूंकि पण्डाजी के परिवार वाले भी करते थे, इसलिए उस जगह का रखरखाव और सब तरह से ठीक-ठाक था। यदि ठीक नही था तो केवल रायसाहब बाबू बंसीधर टण्डन उर्फ तनकुनजी का मन ही। अपने हरिद्वार

प्रवास काल में धार्मिक पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते इतने ऊब गए थे कि इस बार अपने घरेलू पुस्तकालय से सर वाल्टर स्काट और चार्ल्स डिकेन्स के कुछ उपन्यास ले आए थे। श्रीकृष्ण शरण मम, ऊ नमः भगवते वासुदेवाय, ॐ नमः शिवाय। जिस मन्त्र की तरफ सूनेपन की लहर दौड़ गई उसे जपना, उपन्यास पढ़ना, चमेली की याद करना, बस यही उनका दैनिक कार्यक्रम था। कहां तो अमावस के दिन हैदरीखां की ललकौनी लेकर दर्शन के लिए यहां आते थे और कहां अब यहां रहते हुए भी नियमित रूप से मां के दर्शन नही करते। निष्क्रियता, आलस्य और उदासी का एक घटाटोप उन पर पड़ा हुआ है। बहुत ऊबते हैं तो दो आंसू टपकाकर बुदबुदाते है कि प्रभु या तो मौत दो या गुरु दो। अब या तो शान्ति की कामना है या एक दम शान्त हो जाने की, और कुछ नही चाहता हूं।

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं यतिक्षय यौवनम्,
प्रत्यायान्ति गता. पुनर्नदिवसाः कालोजगत् भक्षकः।'

सन् दो का दशहरा, दीवाली आते न आते तक लखनऊ शहर भी प्लेग की चपेट मे आ गया। हुसैनगंज, सआदत गज और अहियागंज क्षेत्र इसकी विशेष चपेट में थे। वैसे प्लेग सारे शहर मे फैला गया था। डा० देशदीपक टण्डन अपने स्वयसेवक साथियो को उत्साह दे-देकर प्लेग ग्रस्त नगर की सेवा में संयुक्त कर रहे थे। तरह-तरह की अफवाहें शहर मे फैली हुई थी :

"भैया, ये सब बोतल वालों की करतूत है। जहां बोतल छिड़की कि प्लेग फैला। मरो सालो हिन्दोस्तानियो, हम तो राज करेंगे। आई ओप डामफूल, बोल गई माई लाट की कुकड़ू कूं।"

"अरे क्या आए-वांए-शाय बक रहे हो खलीफा? जान आफत में पड़ी हैगी मुसरी। हमने खोखा से पुछवाया रहा कि क्या बोतल वाली खबर सच्ची है। मगर उसने इसे कोरी गप्प बतलाया। हमाई समझ मे नही आता लल्लो बाबू। बात इतनी जोर से फैली है कि एकाएक उसे झुठलाने को जी नही चाहता है।"

कुजू खलीफा बोले : "जो चाहे या न चाहे, होयगा वही जो राम रचि राखा। मेरी जान मे तो सब साले घरवालों को पिलाओ भंग और सुलाय दो। जिस जिसके अंग में भग भवानी रमती रहेगी वहा प्लेग साला घुस नही पायगा।"

जुगलू रस्तोगी बोले : "ई खलीफा तो पूरे भंगर हैंगे, कहत हैंगे सबको भंग के घोरे पर दौराओ। वाह, क्या खियाल हैगा इनका।"

कुजू दुबे बोले. "अरे यार ब्योहार की बात करो। यह बोतल छिड़कने की बात गप्प नही है, बिलैती जासूसन का काम है। मगर गुमानी, सोचो तो, हमारे भारतवर्ष में हमारे सब ऋषियो, मुनियों का बंस लोप हो जावेगा तो फिर क्या होयगा?"

लल्लो बोले : "अरे होयगा क्या, जब यहां कोई रहेगा नही तो सब घर-द्वार रुपया पैसा इनका है। ससरा बित्ता भर का इनका टापू हैगा जिसे ग्रेट ब्रिटेन कहते हैं, इनके बाल बच्चे होंगे तो रहेंगे कहां साले, इसीलिए हमे मार कर जमीनें खाली कराना चाहते हैं साले।"

सुनकर कुजू खलीफा को भांग भड़क उठी। जोरदार आवाज में अंग्रेज जाति को गालियां देते हुए वो तखत से उठ खड़े हुए और बोले : "कलाकोठी में एक मौनी बाबा रहते हैं। बारा बरस से मौन तपिश्या मे हैं। उनको जाकर पटाता हू कि गुरु पब्लिक की भलाई के लिए एक बार मू से बोल दो कि जाओ सालो तुम्हारा बंस नास हुइ जाय। बस, खतम। जाता हूं उन्ही महात्मा के चरन चापूंगा।"

कुंजू खलीफा इस तैश में उतरे कि जैसे अभी ही इस प्लेग का अंत ला देंगे। लेकिन बोतल की समस्या उनके जाने के बाद भी गम्भीरता से छिडी रही। दुबे जी बोले : "भई पहरा देना शुरू करो, अगर यह बात सच है तो जहां दो चार बोतल वाले पकड़े गए और उनकी अच्छी खासी धुनाई की गई तो मामला ठडा पड़ जायेगा।"

बोतल छिड़कने के भय के साथ ही साथ महल्ले-महल्ले मे दिन-रात पहरा देने की बात की सलाह भी शहर भर में फैल गयी। इस गप्प के प्रसाद से कई टोले-महल्लो में रात-रात भर पहरे दिये जाने लगे। बोतल वाले तो उन्हे न मिले, हा, दो-चार चोरो सेंधमारों को उन्होंने अवश्य दबोच लिया। दिन मे गली मे एक पागल फकीर इधर-उधर टोह लगाता घूम रहा था, उसे देखा तो लोगों ने बोतलवाला समझ कर इतना मारा कि उसके प्राण ही निकल गए। इन बोतलधारियो की पकड़-धकड़ से प्लेग तो कम न हुआ, हां, कुछ दिनो के लिए लखनऊ मे चोरी चकारी अवश्य बन्द हो गई।

डा० टण्डन और महाशयजी शहर भर मे अपने सेवा सगठन को आगे बढा रहे थे। नगर मे संयोग से मरने वालो की संख्या मे हिंदू अधिक और मुसलमान प्राय. कम होते थे। लगभग बीस आदमी नित्य प्लेग के शिकार हो रहे थे। डाक्टर टण्डन के अथक प्रयत्नो से एक दिन तैंतीस लोग प्लेग ग्रस्त हुए लेकिन उनमे से आठ रोगियो को उपचार लग गया और वे जिन्दा रहे। इसी प्रकार डाक्टर टण्डन के अथक परिश्रम से कुछ मरीज तो बच जाते थे, लेकिन अधिकतर लाशें ही उठती थी। एक दिन नगर के आर्यवीर स्वयं सेवक दल के अधिकाश सदस्य थकन से चूर होने के कारण न आ सके। महाशयजी अजब चिन्ता मे थे। अहियागंज की एक गली मे तीन घरो मे प्लेग की लाशें उठाने की नौबत आ गई थी। कैसे होगा? वह विचार कर ही रहे थे कि एक चमचमाते सावले बदन का लगोटीधारी साधु, जिसके पोपले मुह और माथे की गहरी रेखाओ के अतिरिक्त बुढ़ापा और कही नजर ही नही आता था, महाशयजी के सामने आ गया।

दाढी-बाल बढाये, हट्टे-कट्टे प्रौढ़ ब्रह्मचारी! महाशय मुकुन्दीलाल ने सामने वाले वृद्ध महाशय को देखा। वृद्ध मुस्कुराया, बोला : "कहो रामजी, कौनो चिन्ता मा पड़े हो? हम तुम्हार कुछ सेवा करी?"

"अरे आप क्या करेंगे महाराज, आज तो बजरंगबली रूपी दयानन्द गुरु ने कठिन परीक्षा ले रखी है। स्वयं सेवक कम आये है, लाशें कैसे उठेंगी?"

साधु मुस्कुराये पोपले मुंह से कहा : "अरे बजरगबली न सही, हम तुम उनके दुइ बानर तो हैं। कफन उफन मा बांधि कै दुई लासन का तो हम लटकाय लेंगे रामजी, एक तुम उठाय लो। दुलकी चाल दौड़त भये अभी गुल्लाले पहुंचाय देब। तब लग और काम आवै का है। राम जी परीछा ही परीछा ले रहे हैं। आव चलौ, देर न करौ, कहां हैं प्लेग के सब?"

बुड्ढे बजरग बली ने प्रौढ बजरंग बली को ऐसी प्रेरणा दी कि कर्म संजीवनी बूटी उपजाने वाले द्रोणाचल के द्रोणाचल उनके हाथों पर उठ आये। एक साधु और एक अर्ध साधु का निष्काम कर्मोत्साह उमड़ पडा।

हेल्थ आफिसर डाक्टर किशोरी लाल ने यह सलाह दी कि गोमती के किनारे खुली जगहों पर कुटिया बना कर घनी आबादी के लोगो को वहा लाकर रखा जाय। इस सरकारी हुकुम का बड़ा विरोध हुआ। नखास की एक तवायफ का भाई हिदायतउल्ला इस विरोध का सरगना था, वह जगह-जगह लोगो की भीड़ इकट्ठा करके सरकार के खिलाफ मजाकिये गाने सुनाता था, जिसमे एक बहुत चला---रेती पर बगला छवा दे किशोरी लाल।

जब उसके गीतों का बड़ा जोर बधा तो सरकार ने उसको काबू मे रखने के लिए

दो कांस्टेबिल लगा दिये। तब सबसे कहता : "मल्का मेहरबान है। यह दो खिदमगार दिए हैं।"

चौक वाले घर मे गुमानी-बौटी की पहली 'राम-नाम सत्त' हुई। सबके मना करते हुए भी सआदतगज मे अपनी समधिन का गिलटी वाला बुखार देखने गयी थी और स्वयं भी उसे घर लेकर लौटी। खोखा को जैसे ही खबर पड़ी वैसे ही पहुंच गया, बहुत उपचार किया। मुसद्दीमल की हवेली के कोने-कोने मे कण्डो का धुआ हुआ, ज्वालाजी की धूप बत्तियां जलायी गयी, जगह-जगह नीम की पत्तियां डाली गयी, सबको नीम का काढ़ा पिलाने का हुकुम हुआ, मोहरियो मे फिनैल का छिड़काव, छोटे-बड़े सबकी जेब मे नेप्थलीन की गोलियां डलवाई गयी। सारे डाक्टरी हुकुम फौज के जनरल की तरह लगाय गये और उनका तुरन्त पालन भी किया गया। गनेसो छुट्टी लेकर अपने परिवार के साथ अपनी ससुराल कन्नौज चले गये। महेसो का परिवार अलीगज मे एक जान-पहचान के ठाकुर साहब की बगिया मे पहले ही जा चुका था। बाकी सब घर पर ही थे लेकिन दैव संयोग से गुमानी-बौटी के अलावा एक को छोडकर और किसी को आच नही आई।

रायसाहब तनकुन को खबर लगी कि छोटी भाभी को प्लेग की गिलटी निकली है, यह सुनते ही वह रुक न सके। हालाकि इधर से खोखा और कौशल्या ने भी संदेसा कहलवाया था कि आप न आइएगा, मगर संदेसा देने वाला और रायसाहब एक दूसरे की पकडाई मे न आ सके। इधर सदेसिया पहुंचा को बुद्ध ने कहा कि साहब तो चौक की हवेली मे गए हैं। उधर रायसाहब चौक पहुचे तो छोटी भाभी की अन्तिम सांसें चल रही थीं। गुमानी अपनी पत्नी को उनके अतिम क्षणो मे देखने के लिए विकल थे किंतु खोखा के कड़े आदेश के कारण वह न जा सके। दालान मे बार-बार तखत से उठकर इधर-उधर टहलने लगते और उनकी नजर कोने वाले कमरे की ओर बरबस उठ जाती, जहां उनकी अखंड सौभाग्यवती अतिम सासें ले रही थी। तनकुन ने प्रवेश किया, तो गुमानी उन्हे देखते ही लिपट गए, फफक कर रो पड़े : "खोखा, हमे देखन नही देत हैगा, एक बार हमे दिखाए दो अपनी भाभी को।"

तनकुन भाई को तखत पर बिठलाकर आगे बढ़े। गिलटी पर आपरेशन किए गए हाथ पर पट्टी बंधी थी और डाक्टर टंडन अपनी नाक और मुंह पर पट्टी लपेटे हुए पलंग से कुछ दूर खडे हुए अपनी ताई को एकटक निहार रहे थे कि अचानक कमरे मे पापा घुस आए। लगभग उन्ही क्षणो मे गुमानी बौटी ने पति को छोड़कर पतिलोक लाभ किया। डाक्टर टडन लाश के पास झुके, नब्ज देखी, आंखें देखी—"फिनिश्ड,···आई एम सारी, पापा। कुड्ट सेव हर।"

तनकुन अपने आपको रोक न सके, सद्यः मृत भाभी के पैताने पर बैठकर एक हाथ उनकी टाग पर रख कर 'हाय भाभी' कह कर चीख पड़े। बाहर के सब लोग दौड़े-दौड़े धूप के गंध और धुए भरे कमरे मे आए। तनकुन को अपनी इन भाभी से आरंभ ही से अधिक लगाव रहा। बड़के भैय्ये की पत्नी उनसे चार साल बड़ी थी और उनका मिजाज भी बहुत रुखा था। छुटके भैय्ये की पत्नी आयु मे लगभग बराबर की थी और पहले उनका स्वभाव भी अच्छा था, बाद मे पति के अल्पायु मे मरने और हर्रो के त्याग भरे आर्यसमाजी जीवन को अपना लेने के कारण उनमे चिड़चिड़ापन बहुत बढ गया था। लेकिन गुमानी बौटी एक तो तनकुन से उमर मे एक साल छोटी थीं, दूसरे, जिस दिन से घर मे आईं उसी दिन से देवर भौजाई का नेह नाता जुड गया था। वे उन्हे खूब चिढ़ाते और जब वह चिढ उठती तो उनकी बातें सुन-सुनकर अपने भाई के साथ बैठे मद-मंद मुस्कुराया करते थे। तनकुन और गुमानी भैये सहारा देकर कमरे से बाहर ले जाए गए और तखत पर बैठा दिए गए।

परतब्बे और काशी मुर्दनी के लिए चार लोगों को इकट्ठा करने और सामान लेने के लिए गए। घर में कोई बड़ी-बूढ़ी तो थी नही, तीनों बहुएं हाय भाभी, हाय चाची, की गुहार करने लगी। हर्रो कौशल्या को लाने नजरबाग गया।

डाक्टर देशदीपक टंडन के आदेश से लाश के आस-पास बहुत सारी नेप्थलीन की गोलियां और नीम के पत्ते रखकर महकते धुएं के नए प्रबंध के साथ कमरा बंद कर दिया गया था। स्त्रियो को आदेश था कि दालान मे बैठकर रोओ-राओ। किसी के घर मौत हो तो मोहल्ले वालों का यह सनातन नियम रहा है कि जात-गैर जात, पास-पड़ोस के लोग खबर सुनते ही दौड़े चले आते थे, मगर प्लेग ने मनुष्य को इतना डरा दिया था कि वह चूहों से भी अधिक डर-दुबक कर अपने-अपने स्थानों पर बैठा रहता था। फिर भी जस-तस आठ-दस बिरादरी वाले जवान और दो-चार सगे संबंधी प्रौढ़ प्रौढ़ाएं जुट ही गईं। चौथा पहर ढलते न ढलते तक लाश घर से निकाल दी गई। केवल गुमानी और तनकुन को उनके लड़के-भतीजों ने जबरदस्ती घर ही पर रोक दिया। नौकर को आदेश दे गए कि नीम उबाल कर गुनगुने पानी से इन दोनों को टीले पर ही ले जाकर नहला दो। औरतो के लिए भी गोमती न जाने के आदेश डाक्टर साहब दे गए थे। उन्हें भी पास ही के एक सूने शिवाले में जाकर नहाने का आदेश दिया गया था।

रात चढ़े ताई को गुल्लाले पर फूंक-फांक कर जब लौटे तो खोखा का यह विचार था कि पापा जी और कौशल्या को लेकर तुरंत ही नजरबाग चल देंगे, लेकिन पता लगा कि पापा को तेज बुखार चढ आया है। दिन भर के थके-मांदे, धीर, गंभीर और साहसी होने पर भी डाक्टर टंडन के छक्के एक बार तो छूट ही गए। प्लेग की गिलटी ने बांह में उभरना शुरू कर दिया था। डाक्टर ने तत्काल उसमें चीरा लगाकर गंदे खून को उसमें से बाहर निकालना शुरू कर दिया। रक्त बहा और फिर बहता ही रहा, और यह दूसरी चिंता डाक्टर को और भी परेशान कर गई। किसी तरह खून रोका, घाव मे दवाएं भर कर पट्टी बांधी, बुखार भी कुछ हल्का हुआ। सबने क्षण भर के लिए चैन की सांस ली। सारा घर थक चुका था, पड़ोस के घर मे पूड़ियां बनकर आई थी, भूख का समय भी हो गया था। काशी ने अपनी पत्नी से कहा : "सबके लिए पत्तलों पर पूरी साग परोसो।"

रायसाहब तनकुन का ज्वर फिर एकाएक तेज हो गया। वह जोर-जोर से चिल्ला उठते : "आई हेट यू, आई हेट यू, गो, गो अवे।"

फिर कहा का खाना और कहां का पीना। खोखा पिता को देखने लगा, बुखार बहुत तेज हो गया था।

काशी अपने बाप को उठाने गया : "अब सो जा बाबू।"

गुमानी बिलख पड़े, बोले : "अरे बेटा, कैसे सोएंगे। कैसे नीद आएगी, हमे सुलाने वाली तो चली गई। अब ये मैया भी चला जाएगा। हाय, एक चना दो दाल, जिसने हमरे खानदान का नाम ऊंचा किया···"

हर्रो और परतब्बे भी अपने गुमानी चाचा को समझाने लगे, लेकिन तनकुन की हालत बिगड़ती ही चली गई। कुशल सर्जन जिसकी उंगलियो से संचालित छुरी ने नाजुक से नाजुक आपरेशन करके इतना यश कमाया था, प्लेग की गिलटियों मे भी कई जगह सफल आपरेशन करके उसने लोगो के प्राण बचाए थे, उसी के हाथों पिता की कोई ऐसी नस औचक मे कट गई कि खून बहना बन्द न हुआ। डाक्टर उसे रोकने के लिए जितने ही प्रयत्न करते, वह क्षणिक ही सिद्ध होते। पट्टी फिर-फिर लाल होकर बिस्तर पर टपकने लगती। रात के दो बजकर सत्तावन मिनट पर रायसाहब बसीधर टंडन 'हैं' से 'थे' हो गए।

यह भी एक दुःसंयोग की बात थी कि गुमानी बौटी की शवयात्रा मे जाने वाले दो

व्यक्ति और भी उसी रात बीमार पड़े थे। सबेरे स्व० तनकुन की लाश को उठाने के लिए कोई आ नहीं रहा था। खोखा ने हरों को महाशयजी की तलाश मे भेजा, और सब घर वालों को, विशेष रूप से अपने गुमानी ताया जी को बहुत धीरज के साथ समझाते रहे : "प्लेग ईश्वर नहीं है जो सदा रहेगा। गंदगी और सीलन से बचो, ईश्वर पर भरोसा रखो, प्लेग तुम्हारा कुछ न कर सकेगा।"

किंतु खोखा की यह आश्वासन भरी बातें कौशल्या के मन पर अधिक प्रभाव न डाल सकी। ससुर के जाने के साथ ही साथ बहुत पहले स्वर्गवासिनी हो चुकी सास की याद भी उसे इस समय जीवन्त होकर सता रही थी। लाहौर में सकट की घड़ियों के बाद सुख और नया सौभाग्य लेकर जब वह यहा आई थी तो इन्ही दोनो स्वर्गीय आत्माओं ने उसे अपार स्नेह दिया था। वह बहुत विकल थी, आंसू रुकते न थे, रह-रह कर पल्ले से अपना मुंह ढक लेती थी।

महाशयजी के साथ वह लंगोटी धारी वृद्ध साधु भी था जिसके निष्काम उत्साह को देखकर स्वयंसेवक संगठन के युवा भी अपनी थकन पर लज्जित होते थे। पिछले चार-पांच दिनो मे उस पोपले मुंह वाले पहलवान जैसे साधु से महाशय मुकुंदीलाल का बड़ा सेवा-धर्मी याराना-सा हो गया था। महाशयजी बोले : "रायसाहब के इस तरह अचानक न रहने से मेरा मन बहुत खिन्न हुआ, भैया। पर ये जो हमारे साथ पोपले बजरग बली आय गए हैं—ये भैया अपनी बात के आगे किसी की नही मानते, कहने लगे जो समय शोक में लगा रहे हो वह काम में लगाओ। चलो-चलो।"

साधु बोले : "यह तो हम अबहीं भी कह रहे हैं रामजी। जो क्षण काम से हटा सो क्षण रामजी के दर्सन से भी हट गया। (डा० टंडन की ओर देखकर) क्यो रामजी, हम कुछ झूठ कहते हैं ?"

देशदीपक टंडन चमचमाते, गठीले बदन के दंतहीन मुख को देखने लगे। छोटी-छोटी आंखों की काली पुतलियों मे ऐसी भीतरी चमक थी कि डाक्टर सुध-बुध खोकर उसे देखते ही रहे। लंगोटी धारी साधु आगे बढा, बड़े प्यार से उनके कंधे पर हाथ रखकर बोला : "कौन कहत है कि तुम नास्तिक हो ?"

खोखा के मुग्धाकर्षण भाव को एकाएक झटका लगा। साधु बोला : "आप रामजी के बड़े सेवक हैं।"

दु:ख और अवसाद भरे क्षणो मे यह रामजी और रामजी के सेवक वाली बातें खोखा के चिंता व्यस्त मन को चिढा गई, बोला : "मैं राम वाम मे विश्वास नहीं करता बाबा, और इस समय यह आपका धार्मिक पंवाड़ा सुनने का मेरे पास टाइम भी नहीं है। क्षमा कीजिएगा।"

साधु चुप होकर अलग हट गया।

शव यात्रा के लिए साधन जुटे, जिस घर में रायसाहब बनने वाले तनकुन ने जन्म पाया था, जिस घर को विद्रोह वश छोड़कर वे एक बार निकले थे, दूसरी बार स्वेच्छा से यह घर छोड़कर अलग घर बसाया था, फिर चांदकों जी मे रहने लगे। कहां-कहां भटके। मगर उन्होंने अन्त वही पाया जहां उन्होंने अपना आदि पाया था।

शवयात्रा चली, गुमानी का बिलखना गली पड़ोस वालों का कलेजा भी हिला गया, लेकिन उनके लिए तथा घर की स्त्रियों के लिए डा० टंडन का आदेश कल की तरह ही हुआ। गुमानी शवयात्रा में शामिल न हो पाए। गलियों से गुजर कर शाह गंगापरसाद की धर्मशाला, पीर बुखारे होकर के माश गुल्लाले के उस मोड़ पर आई जहां अभी कुछ ही वर्षों पहले विलायत की नकल पर एक विशाल घंटाघर बना था। साधु महाशयजी के साथ ही

कंधा देने वालों में आगे चल रहे थे, सहसा एक ओर उनकी दृष्टि गई। एक दूसरे व्यक्ति को अर्थी थमाकर वह शव-यात्रा के पीछे विचार मग्न चलते हुए डा० टंडन के पास पहुंचे, बोले : "रामजी तू डाक्टर बा, चल-चल, तोहे राम जी बुलावत हैं।"

डा० टंडन एकाएक चौंक गए, समझ में कुछ न आया किंतु साधु उन्हें हाथ पकड़ कर प्रायः घसीटता-सा उस पेड़ के तले ले गया जहां एक गरीब बूढ़ा बेहोश पड़ा था। देखने में मुसलमान जैसा किसी देहात मे रहने वाला व्यक्ति लगा। साधु उसके पास ले गया, बोला, "डाक्टर जी इसे देखो।"

डाक्टर ने झुककर देखा, बोला : "क्या देखूं बाबा, यह तो मर चुका है।"

"हां, हमहूं का ऐसने आभास भया रहा, तबही तो दौड़े आए रामजी। यही केर सदगती करें का चही रामजी।"

"परंतु कैसे होगा, महाराज कौन इसे ढोकर ले जाएगा? फिर मुसलमान है, इसे तो कब्र चाहिए।"

"आऽरे, जब मरिगा तब कहां हिंदू, कहा मुसलमान और कहां किरिस्टान। मनुष्य जब जन्मत है और जब मरत है तब मनुस्यै होत है रामजी। कि झूठ कहा?"

"सच कहा आपने।"

"ए रामजी तुम ई जो आधा कोरा कपड़ा ओढ़े हो न, उई हमका दै दो।"

साधु अजब पहेली-सा लगा किन्तु खोखा ने अपने नंगे बदन पर लपेट रखा कोरा कपड़ा साधु को दिया। साधु ने कपड़े के एक छोर पर गांठ बांधी, फिर उसमें बुड्ढे की लाश लपेट कर दूसरे छोर पर उमेठन देकर लाश को अपने कंधे पर उठाया। तनिक मुस्कुराती हुई पैनी नजरों से डाक्टर को देखा और लाश को उठाए-उठाए तेज कदम भाव भरे स्वर मे गाते हुए चले—

चाहता नही मैं राज्य स्वर्ग या पुनर्जन्म
चाहता हूं राम दीन दुखियों की पीड़ा हरूं।

पीठ पर लाश उठाए एक नजर पीछे डालते हुए डाक्टर को देखा।

खोखा को ऐसा लगा कि जैसे उनकी आंखों से दो ज्योति रेखाएं बढ़ते हुए उसकी आंखों में सीधे समा रही हैं। मृत्यु के महालोक में साक्षात् जीवन तक पहुंचने के लिए मानो वह ज्योति का पुल उसके रास्ते को सुगम बना रहा था।

14-3-1985 : 12.06 मिनट
आल्हों का मेला, गढ़वार.